Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अमृतसागर

1929

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

In Public Domain. Chambal Archives: Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अमृतसागर

अर्थात्

अमृतरूपी ओषधियों का सागर।

चरक, सुश्रुत, वाग्भट, भावप्रकाश, चक्रदत्त, भैषज्यरत्नावली इत्यादि उत्तमोत्तम वैद्यक-ग्रंथों के अवलम्बन से सद्वैद्यों द्वारा बनाया गया।

प्रकाशक

नवलकिशोर-प्रेस, लखनऊ

मुद्रक

श्रीकेसरीदास सेठ

सत्रहवीं बार] सर्वाधिकार सुरक्षित [सन् १९२९ ई०

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अमृतसागर की भूमिका।

बहुत दिन व्यतीत हुए कि जयपुर के महाराजा श्रीयुत सवाई प्रतापसिंह ने, जिनका प्रताप और ऐश्वर्य सम्पूर्ण देशों में विख्यात है, अपने बड़े-बड़े विद्वान् वैद्यों के द्वारा वैद्यक के चरक, सुश्रुत, वाग्भट्ट, भावप्रकाश, आत्रेय आदि अनेक प्रामाणिक ग्रन्थों से सार बातें निकालकर अमृतसागर नाम ग्रन्थ रचा। उसमें सम्पूर्ण रोगों की उत्पत्ति, लक्षण, यत्न नाना प्रकार से अन्य आर्ष ग्रन्थों के प्रमाणों सहित लिखी हैं परन्तु वह जयपुर की बोली में रचा गया था, इस कारण सबको उपकारी न हुआ, क्योंकि उस बोली के जाननेवाले जयपुर के सिवाय और कहीं नहीं हैं। उसे अब सब छोटे-बड़े और खासकर अवध के ताल्लुक़ेदार और पण्डित लोगों को इसी ग्रन्थ के द्वारा वैद्यक की सर्व चिकित्सा में प्रवीण होने के निमित्त अयोध्या के स्वामी स्वर्गवासी महाराजा मानसिंह कायमजङ्ग प्रतापी—जोकि वैद्यकादि सब शास्त्रों में अत्यन्त कुशलबुद्धि थे—की अनुमति से पण्डित कालीचरण के द्वारा मैंने (स्वर्गीय मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., सम्पादक अवध अख़बार) उसकी सब बोलियों को सुधार और दिल्ली, आगरे की खड़ी बोली में, जिसको सब देश के मनुष्य जानें, तय्यार कर अपने यंत्रालय में छपवाया। यह ऐसा ग्रन्थ है कि मनुष्य इसी एक ग्रन्थ को पढ़कर वैद्यक और मंत्र, यंत्र, तंत्र और सब रसों के शोधन, मारण, खाने का प्रमाण और अनोपानसहित विधि और अनेक भूत, प्रेत, पिशाचादि बालग्रहों के नाना रोगों की अनेक विधियां जान सकता है। आदि से ही यत्नसहित नाड़ी, मूत्र आदि से रोगी के रोग की परीक्षा, उत्पत्ति और लक्षण ऐसे लिखे हैं कि थोड़ी बुद्धिवाला भी जानकर वैद्य हो सकता है।

In Public Domain. Chambal Archives Trust

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

इससे पहिले यह पुस्तक कई बार इस यंत्रालय में मुद्रित हुई और विद्वज्जनों ने इसे ग्रहण किया। अन्त में बड़े-बड़े विद्वान् वैद्यों की यह इच्छा हुई कि और पुस्तकों में जो इससे विशेष बातें लिखी हैं, वे भी इस विचित्र पुस्तक में छापी जावें और सम्पूर्ण वैद्यक के आशय इसी दिव्य पुस्तक में संग्रह किये जावें।

यह अमृतसागर अब ऐसी पुस्तक हो गई कि जैसे नाम है वैसा ही गुण है। हमने इसके बनवाने, दुरुस्त कराने और छपवाने में जो परिश्रम किया, उसे हमारा मन ही जानता है, इस पर भी ऐसी सस्ती है कि जिसे लोग सुगमता से मोल ले सकते हैं। इस वैद्यक की पुस्तक के होते हुए दूसरी किसी पुस्तक के अवलोकन की कुछ भी आवश्यकता नहीं है।

कोई रोग अथवा किसी रोग का लक्षण ऐसा नहीं है कि जो इस पुस्तक में न हो। इससे आशा है कि विद्वान् लोग इस हमारे परिश्रम को देखकर प्रसन्न होंगे और हमको आशीर्वाद देंगे। हमें यह भी आशा है कि यह दिव्य पुस्तक शीघ्र ही बिके और संसार का उपकार हो—ईश्वर हमारा अभीष्ट सिद्ध करे।

प्रकाशक.

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अमृतसागर का सूचीपत्र।

विषय	पृष्ठ
रोगविचार	१
सर्वरोगों की परीक्षा	२
नाड़ीपरीक्षा व पहिचान... ...	२
मूत्रपरीक्षा	४
रोगी की परीक्षा व स्वप्नपरीक्षा ...	५
दूतपरीक्षा	६
शकुनपरीक्षा	७
कालज्ञान	७
औषधविचार, देश विचार ...	८
काल विचार, अवस्था विचार ...	९
अर्थ विचार	९
कर्म विचार, अग्निबल विचार ...	१०
रोगी की असाध्य परीक्षा ...	११
रोगों की साध्य परीक्षा... ...	११
रोगों का भेद	११
रोगों का पृथक् २ लक्षण ...	११
प्रकारान्तर से समस्त रोगोत्पत्ति को अन्य विधि	१३
चौदह वेगों का निरूपण... ...	१३
मल रोकने के रोग	१३
मूत्र, डकार, छींक, तृषा रोकने के रोग	१४
क्षुधा, नींद रोकने के रोग ...	१४
खांसी, श्रम, श्वास, उबासी, आँसू रोकने के रोग	१५
वमन, कामदेव रोकने के रोग ...	१६
ज्वरका वर्णन—	
ज्वर की उत्पत्ति	१६
ज्वरमात्र का सामान्य लक्षण ...	१६
ज्वर का पूर्वरूप	१६
ज्वर के विशेष लक्षण	१७
सामान्य ज्वरमात्र का यत्न ...	१७
वातज्वर के यत्न	१७
वातज्वर के दूर करने का दूसरा क्वाथ	१७
पित्तज्वर के लक्षण व यत्न	१८
कफज्वर के लक्षण व यत्न ...	२०
शीतभञ्जी रस	२१
वातपित्तज्वर के लक्षण व यत्न ...	२१
वातकफज्वर के लक्षण व यत्न ...	२२
वातकफज्वर का यत्न	२२

विषय	पृष्ठ
कफपित्तज्वर के लक्षण	२३
कफपित्तज्वर का यत्न	२३
सन्निपातज्वर की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	२४
सन्निपातज्वर का लक्षण व यत्न ...	२५
सन्निपातविनाशक नास	२६
सन्निपातनाशक अञ्जन	२६
,, पञ्चवक्त्रनामक रस ...	२७
सन्निपातनाशक स्वच्छन्द भैरवरस ...	२७
सन्निपातमें उपजे शीतका उबटना ...	२७
महासन्निपात व सन्निपातनाशक यत्न	२८
त्रयोदश सन्निपातों के नाम ...	२८
संधिग सन्निपात का लक्षण व यत्न ...	२९
अन्तक सन्निपात का लक्षण ...	२९
रुग्दाह सन्निपात का लक्षण ...	२९
रुग्दाह का यत्न	३०
चित्तभ्रम सन्निपात का लक्षण उपाय	३०
शीताङ्ग सन्निपात का लक्षण, यत्न ...	३०
तन्द्रिक सन्निपात का लक्षण, यत्न ...	३१
कण्ठकुब्ज सन्निपात का लक्षण, यत्न...	३१
कर्णक सन्निपात के लक्षण ...	३१
कर्णक सन्निपात का यत्न ...	३२
भग्ननेत्र सन्निपात का लक्षण, यत्न ...	३२
रक्तष्ठीवी सन्निपात का लक्षण, यत्न ...	३२
प्रलाप सन्निपात का लक्षण, यत्न ...	३३
जिह्वक सन्निपात का लक्षण, यत्न ...	३३
अभिन्यास सन्निपात का लक्षण ...	३३
तथा यत्न	३४
सर्व सन्निपात दूरकरने का अञ्जन ...	३४
सर्व सन्निपात दूर करने का नास ...	३४
अष्टज्वरविनाशक चिन्तामणिरस ...	३४
मृतसंजीविनी गुटिका	३४
कालारिरस, त्रिपुरभैरवरस ...	३५
संज्ञाकरणरस, ब्रह्मास्त्ररस ...	३६
आगन्तुक ज्वरोत्पत्ति, लक्षण ...	३६
शस्त्राघातोत्पन्न ज्वर का लक्षण, यत्न	३६
भूतादि लगने से उत्पन्न ज्वर लक्षण, यत्न	३७
भूतादि झाड़ने व बकुराने का मन्त्र ...	३७
भूतादि उतारने का नास, अञ्जन, तन्त्र	३८
क्रोधज्वर का लक्षण, यत्न ...	३८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

विषय	पृष्ठ
मानसज्वरोत्पत्ति लक्षण, यत्न ...	३८
कामज्वर का लक्षण	३८
कामज्वर का यत्न	३९
स्त्री के कामज्वर का लक्षण, यत्न ...	३९
भयज्वर का लक्षण, यत्न ...	३९
विषमज्वर का लक्षण	३९
विषमज्वर का यत्न	४०
जीर्णज्वर का लक्षण, यत्न ...	४१
लाक्षादि तैल	४१
अजीर्णज्वर का लक्षण	४२
अजीर्णज्वर का यत्न	४३
दृष्टिज्वर का लक्षण, यत्न ...	४३
बिगड़े रुधिर के ज्वर का लक्षण, यत्न	४३
मलज्वर का लक्षण, उपाय ...	४३
गर्भिणी के ज्वर का यत्न ...	४४
प्रसूतिका के ज्वर का लक्षण, उपाय	४४
बालक के ज्वरकी उत्पत्ति, लक्षण, यत्न	४४
पेट के कीड़े दूर करने का यत्न ...	४५
कासज्वर का लक्षण, यत्न ...	४५
ज्वरों के दश उपद्रव व लक्षण ...	४५
इकट्ठे हुए ज्वरातीसार का यत्न ...	४६
ज्वर में अधिक तृषा व खांसी का यत्न	४६
ज्वर में श्वास, हिचकी का यत्न ...	४६
ज्वर में वमन का यत्न व मूर्च्छा का उपाय	४७
ज्वर में बद्धकोष्ठ व अफरा का उपाय ...	४७
ज्वर में मुखशोष व जीभ में विरसता का यत्न	४७
ज्वर में निद्रा आने का उपाय ...	४७
उतरे हुए ज्वर का लक्षण ...	४७

अतीसारका वर्णन—

विषय	पृष्ठ
अतीसार रोगोत्पत्ति के लक्षण व उपाय	४८
अतीसार का स्वरूप, पूर्वरूप ...	४८
वातातीसार का लक्षण	४८
तथा यत्न	४९
पित्तातीसार का लक्षण, उपाय ...	४९
रक्तातीसार का यत्न	४९
पकीहुई गुदा का यत्न	५०
श्लेष्मातीसार का लक्षण, यत्न ...	५०
सन्निपातातीसार का लक्षण ...	५०
सन्निपातातीसार का यत्न ...	५१
शोकातीसार का लक्षण	५१
आमातीसार का लक्षण, यत्न ...	५१
पक्वातीसार का यत्न	५२
शोफीतीसार का यत्न	५२
अतीसार में वमन का उपाय ...	५२
मोढ़ानिबाही अतीसार का लक्षण ...	५२
चारभाँति मोढ़ानिबाहियों का यत्न ...	५३
आमातीसार का यत्न	५३
अतीसार का असाध्य लक्षण ...	५४
जाते हुए अतीसार का लक्षण ...	५५
संग्रहणी रोगोत्पत्ति, लक्षण व यत्न ...	५५
संग्रहणी का लक्षण	५५
वातिक संग्रहणी के सोत्पत्ति लक्षण ...	५५
वातिक संग्रहणी का यत्न ...	५६
पैत्तिक संग्रहणी के सोत्पत्ति लक्षण ...	५६
पैत्तिक संग्रहणी का यत्न... ...	५७
कफकी संग्रहणी के सोत्पत्ति लक्षण, यत्न	५७
सान्निपातिक संग्रहणी का लक्षण, यत्न	५८
त्रिदोषज संग्रहणी के भेद व आमवातिक संग्रहणी के लक्षण ...	५९
संग्रहणी भेद घटीयन्त्र का लक्षण ...	५९
संग्रहणी का विशेष यत्न ...	५९
बवासीर की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न ...	६०
सम्पूर्ण बवासीर का पूर्वरूप ...	६०
वातकी बवासीर का लक्षण, यत्न ...	६१
पैत्तिक बवासीर का लक्षण ...	६३
रुधिर की बवासीर का लक्षण ...	६३
बवासीर के रुधिर थँभने की औषध	६३
रुधिर रुकने का दूसरा यत्न ...	६४
बवासीर के मस्से दूर करने की औषध	६४
पैत्तिक व खूनी बवासीर का यत्न ...	६४
कफकी बवासीर का लक्षण ...	६५
कफकी बवासीर का यत्न ...	६५
सान्निपातिक बवासीर का लक्षण, यत्न	६६
शिवमतनिर्मित लोहसार ...	६७
मस्से का यत्न	६९
बवासीर का असाध्य लक्षण ...	६९
अजीर्णज्वर की उत्पत्ति व मन्दाग्निका लक्षण	७०

In Public Domain. Digitized by eGangotri

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अमृतसागर का सूचीपत्र।

विषय	पृष्ठ
तीक्ष्णाग्नि, विषमाग्नि, समाग्नि का लक्षण	७०
भस्मकरोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	७१
अजीर्णरोग की उत्पत्ति	७१
अजीर्ण का सामान्य लक्षण व भेद ...	७१
आमाजीर्ण का लक्षण	७२
विष्टब्ध अजीर्ण का लक्षण ...	७२
रसशेष अजीर्ण का लक्षण व उपद्रव ...	७२
विसूचिका का लक्षण	७३
आलस्य का लक्षण	७३
विलम्बिका का लक्षण	७३
जातेहुए अजीर्ण का लक्षण ...	७३
मन्दाग्नि आदि ले अजीर्ण व विसूचिका का यत्न	७३
विसूचिका का यत्न	८०
अलसविलम्बिका का यत्न ...	८१
कृमिरोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न ...	८२
भीतर के कृमि की उत्पत्ति ...	८२
उदर में गिड़ोला आदि कृमियों के लक्षण	८२
कृमिरोग विनाशक यत्न	८२
शिर में जूं व लीखों का विनाशक यत्न	८३
गुदा में पड़े हुए चुन्नों का यत्न ...	८३
पाण्डुकामला, हलीमक रोगों की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न ...	८३
पाण्डुरोग की उत्पत्ति	८४
पाण्डुरोग के पूर्वरूप का लक्षण ...	८४
वातिक पाण्डुरोग का लक्षण ...	८४
पैत्तिक पाण्डुरोग का लक्षण ...	८४
कफज पाण्डुरोग का लक्षण ...	८४
सान्निपातिक पाण्डुरोग का लक्षण ...	८४
पाण्डुरोग का असाध्य लक्षण ...	८५
कामलारोग का लक्षण	८५
हलीमकरोग का लक्षण	८५
पाण्डुरोग का यत्न	८५
रक्तपित्त की उत्पत्ति का लक्षण ...	८७
रक्तपित्त का पूर्वरूप	८७
कफज रक्तपित्त का लक्षण ...	८७
वातज रक्तपित्त का लक्षण	८७
पैत्तिक रक्तपित्त का लक्षण	८८
रक्तपित्त का उपद्रव, यत्न	८८

विषय	पृष्ठ
राजरोग व शोषरोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	९०
राजरोग की उत्पत्ति	९०
राजरोग का पूर्वरूप ... ... तथा लक्षण	९० ९१
वातिक राजरोग का लक्षण ...	९१
पैत्तिक राजरोग का लक्षण ...	९१
कफज राजरोग का लक्षण ...	९१
हृदय में चोट लगने से उपजे राजरोग का लक्षण	९१
राजरोगी की अवधि	९१
साध्य राजरोग का लक्षण ...	९१
अधिक मैथुन से उपजे शोषरोग का लक्षण	९२
जराशोषी का लक्षण	९२
मार्गशोष का लक्षण	९२
गम्भीरादि व्रण से उपजे शोष का लक्षण	९२
राजरोग व शोषरोग का यत्न ...	९२
मधुपक्व हड़की क्रिया	९६
अगस्त हड़की विधि	९८
कासरोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	९९
खांसी का पूर्वरूप	१००
वात, पित्त की खांसी का लक्षण ...	१००
कफ की खांसी का लक्षण ...	१००
क्षतज खांसी की उत्पत्ति व लक्षण	१००
क्षयीरोग से उपजी खांसी का लक्षण	१०१
खांसी का असाध्य लक्षण ...	१०१
खांसीरोग का यत्न	१०१
कटेली का अवलेह	१०३
हिचकीरोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	१०४
हिचकी का स्वरूप	१०४
हिचकी का पूर्वरूप	१०५
अन्नजा हिचकी का लक्षण ...	१०५
यमला हिचकी का लक्षण ...	१०५
क्षुद्रा हिचकी का लक्षण ...	१०५
गम्भीरा हिचकी का लक्षण ...	१०५
महती हिचकी का लक्षण ...	१०५
असाध्य हिचकी का लक्षण ...	१०५
हिचकी का यत्न	१०५

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

विषय	पृष्ठ
श्वासरोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	१०७
श्वासरोग का पूर्वरूप, उत्पत्ति ...	१०७
महाश्वास का लक्षण	१०७
ऊर्ध्वश्वास का लक्षण	१०७
छिन्नश्वास का लक्षण	१०८
तमकश्वास का लक्षण	१०८
क्षुद्रश्वास का लक्षण	१०८
श्वासरोग का यत्न	१०९
स्वरभेद रोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	१११
वातिक स्वरभङ्ग का लक्षण ...	१११
पैत्तिक, कफज, सान्निपातिक, क्षयी रोगज स्वरभङ्ग का लक्षण ...	१११
शरीर के मोटेपन से उपजे स्वरभङ्ग का लक्षण	११२
स्वरभङ्ग का यत्न	११२
अरोचकरोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	११३
वातिक अरुचि का लक्षण ...	११३
पैत्तिक, कफज व शोकादि से उपजी अरुचि का लक्षण	११४
अरुचि का स्वरूप	११४
भक्तद्वेष का लक्षण	११४
भक्तद्वेष का यत्न	११४
छर्दिरोग की उत्पत्ति, लक्षण, यत्न ...	११६
छर्दि का पूर्वरूप	११६
वातिक, पैत्तिक छर्दि के लक्षण ...	११६
कफज और सान्निपातिक छर्दि के लक्षण	११७
सूगली वस्तुदर्शन से उपजी छर्दि का लक्षण	११७
छर्दिरोग का यत्न	११७
तृषारोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	११८
तृषारोग का स्वरूप	११८
वातकी तृषा का लक्षण... ..	११८
पैत्तिक, कफज व शस्त्राघात से उपजी तृषा का लक्षण	११९
क्षीणता की तृषा के लक्षण ...	११९
भोजनान्त में उपजी तृषा का लक्षण	११९
तृषा का उपद्रव व यत्न ...	११९
पैत्तिक, कफज, क्षीणता की तृषा का यत्न	१२०
शस्त्रप्रहार से उपजी तृषा का यत्न ...	१२०
श्रम की तृषा का यत्न	१२०
दुर्बल मनुष्य की तृषा का यत्न ...	१२१
मूर्च्छा, मोह, भ्रम, तन्द्रा, निद्रा और संन्यासरोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	१२१
मूर्च्छा के सामान्यस्वरूप ...	१२१
मूर्च्छा का पूर्वरूप	१२१
वातकी मूर्च्छा का लक्षण ...	१२१
पैत्तिक, कफज व रुधिर की मूर्च्छा का लक्षण	१२२
मद्य की मूर्च्छा का लक्षण ...	१२२
विषकी मूर्च्छा का लक्षण ...	१२३
भ्रम, तन्द्रा, निद्रा, संन्यास का लक्षण	१२३
मूर्च्छा का यत्न	१२३
पित्त की मूर्च्छा का यत्न ...	१२३
रुधिर, मद्य, विषज की मूर्च्छा का यत्न	१२४
घुमनी, तन्द्रा का यत्न	१२४
मदात्यय रोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	१२५
सविधि मद्यपान का फल ...	१२६
वात के मदात्यय का लक्षण ...	१२६
पैत्तिक, कफज, परममद, पानाजीर्ण, पानविभ्रम मदात्यय का लक्षण...	१२७
असाध्य मदात्यय का लक्षण ...	१२७
मदात्यय आदि रोगों का यत्न ...	१२८
पित्त के मदात्यय का यत्न ...	१२८
कफज, सान्निपातिक मदात्यय का यत्न	१२९
पानविभ्रम का यत्न	१२९
धतूरे के फल व भंग के मद का यत्न	१२९
विषके मद का यत्न	१२९
दाहरोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न ...	१३०
पित्त के दाह का लक्षण	१३०
दुष्टरुधिर से उपजे दाह का लक्षण ...	१३०
शस्त्रादिकों से निकले रुधिर से पूर्ण हुए कोष्ठदाह का लक्षण ...	१३०
मद्यादिपान से उपजे दाह का लक्षण	१३०
पित्त रोक्के व धातुक्षय के दाह का लक्षण	१३०
मर्माघात से उपजे दाह का लक्षण ...	१३१

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

विषय	पृष्ठ
दाहका असाध्य लक्षण	१३१
दाह का यत्न	१३१
रुधिर बिगड़ने से उपजे दाह का यत्न	१३१
उन्माद रोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	१३२
उन्माद का स्वरूप	१३२
उन्माद का पूर्वरूप	१३२
वात के उन्माद का लक्षण ...	१३२
पैत्तिक, कफज उन्माद का लक्षण ...	१३३
मनोदुःख से उपजे उन्माद का लक्षण	१३३
विष खाने के उन्माद का लक्षण ...	१३४
उन्मादमात्र का असाध्य लक्षण ...	१३४
भूतादि लगने से उपजे उन्माद का लक्षण	१३४
देवावेश, असुरावेश उन्माद का लक्षण	१३४
गन्धर्वावेश, पितृदोष उन्माद का लक्षण	१३५
सतीदोष का लक्षण	१३५
क्षेत्रपाल दोष से उपजा उन्माद ...	१३५
बीजासणीदेवी से, कामणदोष से उपजे उन्माद का लक्षण ...	१३५
शाकिनी डाकिनी लगने से उपजे उन्माद का लक्षण	१३६
कुगति से भये प्रेत से उपजे उन्माद का लक्षण	१३६
राक्षस, ब्रह्मराक्षस के लगने से उपजे उन्माद का लक्षण	१३६
पिशाच लगने से उपजे उन्माद का लक्षण	१३६
उन्माद का असाध्य लक्षण ...	१३६
भूत, प्रेत आदि लगने का प्रकार ...	१३७
उन्मादआदिकों का यथा यत्न ...	१३७
शास्त्रानुसार भूतादि उन्माद के मन्त्र व तन्त्र	१३९
शिवकथित उड्डीस-शाबर मन्त्र ...	१३९
शाकिनी व डाकिनी बकुराने का मन्त्र	१४०
डाकिनी के चोट लगने का मन्त्र ...	१४१
डाकिनी दोष दूर होने का भाड़ा ...	१४१
डाकिनी दूर होने का यन्त्र ...	१४१
प्रत्यक्ष हाजरायत मन्त्र का न्यास व ध्यान	१४२

विषय	पृष्ठ
हाजरायत का यन्त्र	१४२
मृगीरोग की उत्पत्ति व लक्षण ...	१४३
मृगी का पूर्वरूप व लक्षण ...	१४३
वातिक, पैत्तिक, कफज, सान्निपातिक मृगी का लक्षण	१४४
मृगी का असाध्य लक्षण ...	१४४
मृगी का समय व यत्न	१४४
वातव्याधि की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	१४६
वा व्याधि के सब रोगों के लक्षण व यत्न	१४७
शिरोग्रह का लक्षण ... ... तथा यत्न	१४७ १४८
अल्पकेशों की चिकित्सा ...	१४८
जँभुवाई का लक्षण	१४८
अधिक जँभुवाई का यत्न ...	१४८
हनुग्रहरोग का लक्षण ... ... तथा यत्न	१४८ १४९
जिह्वास्तम्भ का लक्षण व यत्न ...	१५०
गूंगापन गिनगिना बकाई खानेका लक्षण	१५०
गूंगापन आदिकों का यत्न ...	१५०
सरस्वती के मन्त्र का विधान ...	१५०
प्रलाप व वाचाल का लक्षण व यत्न ...	१५१
जीभ के रसाज्ञान का लक्षण व यत्न	१५१
त्वचाशून्य का लक्षण ... ... तथा यत्न	१५१ १५२
अर्दितरोग का लक्षण	१५२
वातिक, पैत्तिक, कफज अर्दितरोग का लक्षण	१५२
अर्दितरोग का असाध्य लक्षण ... तथा यत्न	१५२ १५३
वायु, पैत्तिक, कफज के अर्दितरोग का यत्न	१५३
मन्यास्तम्भ का लक्षण व यत्न ...	१५३
बाहुशोष का लक्षण व यत्न ...	१५४
अपबाहुक रोग का लक्षण व यत्न ...	१५४
विश्वाचीरोग का लक्षण व यत्न ...	१५४
ऊर्ध्ववातरोग का लक्षण व यत्न ...	१५५
आध्मानरोग का लक्षण व यत्न ...	१५५
प्रत्याध्मान का लक्षण व यत्न ...	१५६
ष्ठीवतष्ठीला व प्रत्यष्ठीला का लक्षण व यत्न	१५६
तूनी व प्रतितूनी का लक्षण व यत्न ...	१५७

In Public Domain. Sarayu Trust, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

विषय	पृष्ठ
त्रिकशूल का लक्षण व यत्न ...	१५७
बस्तिवात का लक्षण व यत्न ...	१५८
मूत्रावरोध का यत्न	१५८
गृध्रसीरोग का लक्षण व यत्न ...	१५८
खोड़ा व पंगुला रोग के लक्षण व यत्न	१५९
कलापखंजरोग का लक्षण व यत्न ...	१६०
क्रोष्टुशीर्षकरोग का लक्षण व यत्न ...	१६०
पैर दुखने का यत्न	१६०
खल्ली का यत्न	१६०
वातकण्टकरोग का लक्षण व यत्न ...	१६१
पाददाह का लक्षण व यत्न ...	१६१
पादहर्ष का लक्षण व यत्न ...	१६१
पैरों के हड़फूटन का यत्न ...	१६१
पित्त समेत वातादेपरोग का लक्षण	१६२
केवल वातादेप का लक्षण ...	१६२
चोट लगने से उपजे वातादेप का लक्षण व यत्न	१६२
अन्तरायामरोग का लक्षण ...	१६२
बाह्यायाम धनुस्तम्भरोग का लक्षण	१६३
कुब्जकरोग का लक्षण	१६३
अपतन्त्ररोग का लक्षण ...	१६३
तथा यत्न	१६४
अपतानकरोग का लक्षण व यत्न ...	१६४
पक्षाघात का लक्षण	१६४
पक्षाघात का साध्यासाध्य लक्षण व यत्न	१६५
निद्रानाशरोग का यत्न	१६६
सर्वाङ्ग में उपजे वात का लक्षण व यत्न	१६६
सातों धातुओं में प्राप्त वात का पृथक् पृथक् लक्षण	१६६
रुधिर में प्राप्त वात का लक्षण ...	१६६
मांस, मेद में प्राप्त वात का लक्षण ...	१६७
हाड़ों में प्राप्त कुपित धात का लक्षण	१६७
वीर्य में प्राप्त वात का लक्षण ...	१६७
इन सबों का यत्न	१६७
कोष्ठगत वात का लक्षण व यत्न ...	१६७
आमाशय में प्राप्त वात का लक्षण ...	१६७
तथा यत्न	१६८
पक्वाशयगत वात का लक्षण ...	१६८
गुदागत दुष्ट वात का लक्षण व यत्न	१६८

विषय	पृष्ठ
हृदयगत वात का यत्न	१६८
कर्णादिकों में प्राप्त वातका लक्षण व यत्न	१६८
शरीर की नसों में प्राप्त वात का लक्षण व यत्न	१६८
सन्धिगत वात का लक्षण व यत्न ...	१६९
वातव्याधि का सामान्य यत्न—	
नारायण तैल की विधि	१६९
योगराज गुग्गुल की विधि ...	१६९
विषगर्भ तैल	१७१
लक्ष्मीविलास महासुगन्ध तैल ...	१७१
विजयभैरव तैल की विधि ...	१७२
विजयभैरव रस	१७३
वातारि रस	१७३
समीरपन्नग व समीरगजकेसरी रस ...	१७४
वृद्धचिन्तामणि रस	१७४
अमृतनाम गुटिका	१७४
राक्षसनामक रस	१७५
वङ्गेश्वर रस	१७५
हरताल गुटिका	१७५
लहसुनपाक की विधि	१७६
ऊरुस्तम्भरोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	१७६
ऊरुस्तम्भरोग का पूर्वरूप ...	१७७
ऊरुस्तम्भ का असाध्य लक्षण ...	१७७
ऊरुस्तम्भ का यत्न	१७७
आमवातरोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	१७८
आमवात के लक्षण	१७८
बढ़ेहुए वात का लक्षण	१७८
तथा यत्न	१७९
महारास्नादि क्वाथ	१७९
अजमोदादिक चूर्ण	१७९
शुण्ठीपाक	१७९
मेथीपाक	१८०
बृहत्सैन्धवादि तैल	१८०
आमवातादि रस	१८१
व्याधिशार्दूल गुग्गुल	१८१
आमवातारि गुटिका	१८१
द्वात्रिंशत् गुग्गुल	१८२
सिंहनाद गुग्गुल	१८२
वातेश्वर रस	१८३

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

विषय	पृष्ठ
पित्तव्याधि की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	१८३
पित्तरोगों का सामान्य यत्न	१८४
कफके बीसरोगों का लक्षण ...	१८४
कफके बीसरोगों का सामान्य यत्न...	१८५
वातरक्त की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न ...	१८५
वातरक्त का स्वरूप व पूर्वरूप ...	१८५
वाताधिक, रक्ताधिक, वातरक्त का लक्षण	१८६
पित्ताधिक, कफाधिक, वातरक्त का लक्षण	१८६
हाथों में उपजे वातरक्त का लक्षण ...	१८६
वातरक्त का असाध्य लक्षण व उपद्रव	१८७
वातरक्त का यत्न	१८७
शूलरोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न ...	१९०
वातज शूलोत्पत्ति का लक्षण ...	१९०
पैत्तिक, कफज शूल की उत्पत्ति, लक्षण	१९०
सन्निपात के शूल का लक्षण ...	१९१
आम, वायु, कफ, पित्तके शूलका लक्षण	१९१
शूलरोग का उपद्रव	१९१
शूलभेद परिणामशूल का लक्षण ...	१९१
इस पूर्वोक्त का पुनर्लक्षण ...	१९१
अंगद्रव, जरत्पित्त शूल का लक्षण ...	१९१
शूलरोग का यत्न	१९२
कफके शूल का यत्न	१९२
पसली के शूल का यत्न	१९८
उदावर्त रोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	१९८
अधोवायु आदिले तेरह वेगों का लक्षण	१९८
मलावरोध, मूत्रावरोध, जृम्भावरोध उदावर्त का लक्षण	१९९
आंसू, छींक, डकार, छर्दि रोकने के उदावर्त का लक्षण	१९९
शुक्र, क्षुधा, तृषा, श्वास रोकने के उदावर्त का लक्षण	२००
निद्रा रोकने के उदावर्त का लक्षण ...	२००
उदावर्त की उत्पत्ति व सामान्य लक्षण	२००
उदावर्त का विशेष लक्षण ...	२००
क्रम से उदावर्त का यत्न ...	२०१
मल, मूत्र रोकने के उदावर्त का यत्न ...	२०१
जँभाई, आंसू, छींक रोकने के उदावर्त का यत्न	२०१

विषय	पृष्ठ
डकार, छर्दि, शुक्र रोकने के उदावर्त का यत्न	२०२
क्षुधा, तृषा, श्रम, श्वास, निद्रा रोकने के उदावर्त का यत्न	२०२
रूखे भोजन से उपजे उदावर्त का यत्न	२०२
आनाह रोग की उत्पत्तिका लक्षण व यत्न	२०४
मल बढ़ने के अफरा का लक्षण ...	२०४
अफरे का यत्न	२०४
गुल्म रोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	२०४
गुल्म का सामान्य लक्षण ...	२०५
वायुगोले की उत्पत्ति व लक्षण ...	२०५
वायु के गुल्म का लक्षण ...	२०५
पैत्तिक गोले की उत्पत्ति तथा लक्षण ...	२०५
कफज गोले की उत्पत्ति व लक्षण ...	२०६
रजोधर्म से उपजे गुल्म का लक्षण ...	२०६
गुल्म रोग का असाध्य लक्षण ...	२०६
गोले का असाध्य लक्षण व यत्न ...	२०६
तथा यत्न	२०७
पित्त, वात, कफ के गोले का यत्न ...	२०७
योनिगत शूल का यत्न	२१०
यकृत् रोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	२१३
प्लीहा रोग की उत्पत्ति व लक्षण ...	२१३
वात, पित्त, कफके फिया का लक्षण ...	२१३
फिया का यत्न	२१३
हृद्रोगकी उत्पत्ति, सामान्य लक्षण व यत्न	२१६
वात के हृद्रोग का लक्षण ...	२१६
पैत्तिक, कफज, कृमिज हृद्रोग का लक्षण	२१७
हृद्रोग के उपद्रव व यत्न ...	२१७
मूत्रकृच्छ्र की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न ...	२१९
मूत्रकृच्छ्र का सामान्य लक्षण ...	२१९
वात, पित्त, कफज के मूत्रकृच्छ्र का लक्षण	२१९
चोट लगने से उपजे मूत्रकृच्छ्र का लक्षण	२१९
मल रोकने से उपजे मूत्रकृच्छ्र का लक्षण	२२०
वीर्य रोकने से उपजे मूत्रकृच्छ्र का लक्षण	२२०
पथरी से उपजे मूत्रकृच्छ्र का लक्षण...	२२०
शर्करा का उपद्रव	२२०

In Public Domain. Sarayu Trust. Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri. Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

विषय	पृष्ठ
मूत्रकृच्छ्र का यत्न	२२०
चोट लगने के मूत्रकृच्छ्र का यत्न ...	२२१
मल रोकने के मूत्रकृच्छ्र का यत्न ...	२२१
कष्ट से रुधिर मूतने का यत्न ...	२२१
शुक्र रोकने के मूत्रकृच्छ्र का यत्न ...	२२३
मूत्राघात रोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	२२३
मूत्राघात की उत्पत्ति और लक्षण ...	२२४
वातकुण्डलिका का लक्षण ...	२२४
अष्ठीला, वातबस्तिका, मूत्रातीत का लक्षण	२२४
मूत्रजठर, मूत्रोत्संग का लक्षण ...	२२५
मूत्रक्षय का लक्षण	२२५
मूत्रग्रन्थि रोग का लक्षण ...	२२५
मूत्रशुक्र रोग का लक्षण ...	२२५
उष्णवात रोग का लक्षण ...	२२५
मूत्रसाद रोग का लक्षण ...	२२६
विड्विघात रोग का लक्षण ...	२२६
बस्तिकुण्डल रोग का लक्षण ...	२२६
मूत्राघात रोग का यत्न	२२६
मूत्ररोध रोग का लक्षण ...	२२८
बहुत गर्म उतरते हुए मूत्र का यत्न ...	२२८
अश्मरी रोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	२२८
पथरी की उत्पत्ति व पूर्वरूप ...	२२८
पथरी रोग का सामान्य लक्षण ...	२२९
अधिक वातवाली पथरी का लक्षण ...	२२९
कफपित्त की पथरी का लक्षण ...	२२९
कफ की पथरी का लक्षण ...	२२९
शुक्र रोकने की पथरी का लक्षण ...	२२९
पथरी का उपद्रव व यत्न ...	२३०
प्रमेह की उत्पत्ति व लक्षण ...	२३२
कफ पित्त वात प्रमेह की संप्राप्ति ...	२३२
बीस भांति के प्रमेहों के नाम ...	२३२
प्रमेह का पूर्वरूप	२३३
प्रमेह का सामान्य लक्षण ...	२३४
उदक, इक्षु, सान्द्र, सुरा, पिष्टप्रमेह का लक्षण	२३४
शुक्र, सिकता, शीत, शनैःप्रमेह का लक्षण	२३४
लाला, क्षार, नील, काला, हारिद्र, माञ्जिष्ठ, रक्त प्रमेह का लक्षण ...	२३५

विषय	पृष्ठ
वाताद्यवसा, मज्जा, क्षौद्र प्रमेह का लक्षण	२३५
कफ, पित्त, वायु के प्रमेह का उपद्रव	२३५
प्रमेह का असाध्य लक्षण ...	२३५
आत्रेयजी के मत से छह प्रमेहों के नाम	२३६
पूय, तक्र, पिड़िका प्रमेह का लक्षण ...	२३६
शर्करा, घृत, अतिमूत्र प्रमेह का लक्षण	२३६
प्रमेही पुरुषों के दश जातिवाली पिड़िकाओं के नाम	२३६
पिड़िका का लक्षण	२३६
शराविका, कच्छपिका, जालिनी, विनता का लक्षण	२३७
अलजी, मसूरिका, सर्षपिका, पुत्रिणी, विदारिका का लक्षण ...	२३७
विद्रधि का लक्षण	२३८
दशपिड़िकाओं के उपद्रव ...	२३८
पिड़िका का असाध्य लक्षण ...	२३८
गये प्रमेह का लक्षण	२३८
रक्तपित्त रक्त प्रमेह का भेद ...	२३८
प्रमेह रोग का यत्न	२३८
कफज दश प्रमेहों का काढ़ा ...	२३९
जल, रक्त प्रमेह का यत्न ...	२३९
क्षार, तक्र, शुक्र प्रमेह का यत्न ...	२३९
घृत, इक्षु, पित्त प्रमेह का यत्न ...	२४०
मधु प्रमेह का यत्न	२४०
चन्द्रप्रभा गुटिका	२४१
मधु प्रमेह का यत्न	२४१
वंगेश्वर रस की क्रिया	२४२
सुपारी पाक	२४२
गोखुरू पाक	२४३
घृत प्रमेह का यत्न	२४४
आत्रेय के मत से प्रमेहपिड़िकाओं का लक्षण व यत्न	२४५
पिड़िका का यत्न	२४५
इन्द्रिय के ऊपर पड़ी राद का यत्न ...	२४५
इन्द्रिय के ऊपर वातपिड़का का यत्न	२४५
पैत्तिक पिड़िका का यत्न ...	२४५
इन्द्रिय की फुंसियों के पकजाने का यत्न	२४५
रसरत्नाकर का यत्न	२४६
मूत्रप्रमेह का यत्न	२४६

In Public Domain. Digitized by eGangotri

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

विषय	पृष्ठ
मेदरोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न ...	२४६
मेद के अन्य दोष व स्थान ...	२४६
स्थूल का लक्षण	२४७
मेदवाले रोगी का यत्न	२४७
देहमें पसीनेसे दुर्गन्ध के विनाश का यत्न	२४८
कांख में आती बास का यत्न ...	२४८
शरीर की दुर्गन्ध दूर करने का यत्न ...	२४९
स्त्री का अच्छा रंग करने का लेप ...	२४९
कांखकी दुर्गन्ध दूर करने का दूसरा यत्न	२४९
शरीर की दुर्गन्ध दूर होने का यत्न ...	२४९
कार्श्यरोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	२४९
कार्श्यरोग का लक्षण	२५०
क्षीणमनुष्यों में अनेक रोगों का होना	२५०
कृशनाम क्षीणता का यत्न ...	२५०
क्षीणता का असाध्य लक्षण ...	२५०
उदररोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न ...	२५०
उदररोग की उत्पत्ति	२५१
उदररोग का सामान्य लक्षण ...	२५१
आठ प्रकार के उदर रोग ...	२५१
वातोदर, पित्तोदर, कफोदर का लक्षण	२५१
दूष्योदर का लक्षण	२५२
प्लीहोदर, बद्धगुदोदर, क्षतोदर का लक्षण	२५२
जलोदर का लक्षण	२५३
उदररोगों का असाध्य लक्षण ...	२५३
पुनः असाध्य लक्षण	२५३
वातोदर का यत्न	२५३
पित्तोदर, कफोदर, सान्निपातिकोदर का यत्न	२५४
नारायण चूर्ण	२५५
जलोदर का यत्न	२५६
शोथरोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	२५७
शोथ का पूर्वरूप व सामान्य लक्षण ...	२५८
पित्त, कफ की सूजन का लक्षण ...	२५८
चोट लगने की सूजन का लक्षण ...	२५९
विषैले जानवर से उपजी सूजन का लक्षण	२५९
विषैले जानवर के मूत्रादिकों के स्पर्श से उपजी सूजन का लक्षण ...	२५९
सूजन का उपद्रव	२५९

विषय	पृष्ठ
सूजन का कष्टसाध्य लक्षण ...	२५९
सूजनका पुनः असाध्य लक्षण ...	२५९
शोथरोग का यत्न	२५९
कफ की सूजन का यत्न	२६०
भिलावें की सूजन का यत्न ...	२६०
शोथरोग का सामान्य यत्न ...	२६०
फोते की सूजन का यत्न ...	२६०
शोथगत दाहविनाशक लेप ...	२६१
अन्त्रवृद्धिरोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	२६२
अन्त्रवृद्धि का सामान्य लक्षण ...	२६२
वातज, पैत्तिक, कफज अन्त्रवृद्धि का लक्षण	२६२
रक्तदोष से उपजी अन्त्रवृद्धि का लक्षण	२६२
मेद की अन्त्रवृद्धि का लक्षण ...	२६३
मूत्र रोकने की अन्त्रवृद्धि का लक्षण	२६३
सामान्य अन्त्रवृद्धि की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	२६३
अन्त्रवृद्धि का यत्न	२६३
उतरे हुए गोशा का यत्न ...	२६४
अन्त्रवृद्धि की औषध	२६४
बदरोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न ...	२६५
गलगण्डादिरोगों की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	२६५
गलगण्ड का सामान्य लक्षण ...	२६५
वायु के गलगण्ड का लक्षण ...	२६५
कफ के गलगण्ड का लक्षण ...	२६६
मेद के गलगण्ड का लक्षण ...	२६६
गलगण्ड का असाध्य लक्षण ...	२६६
गण्डमाला का लक्षण	२६६
अपची का लक्षण	२६६
अपची का असाध्य लक्षण ...	२६७
ग्रन्थिरोग का लक्षण	२६७
वायु, पित्त, कफ, मेद, नसों की गांठि का लक्षण	२६७
मर्मस्थानों का निरूपण	२६८
अर्बुदरोग की उत्पत्ति	२६८
रक्तार्बुद का लक्षण	२६८
मांसार्बुद की उत्पत्ति, लक्षण ...	२६८

In Public Domain, Chamba Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

विषय	पृष्ठ
अर्ध्वबुद का लक्षण	२६८
अर्बुदरोग के न पकने का कारण ...	२६९
गलगण्डादिरोगों का क्रम से यत्न ...	२६९
अपची, गांड, अर्बुदरोग का यत्न ...	२७०
श्लीपदरोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	२७१
वायु के श्लीपद का लक्षण ...	२७१
पित्त, कफ के श्लीपद का लक्षण ...	२७२
सन्निपात के श्लीपद का लक्षण ...	२७२
श्लीपद का उपाय	२७२
विद्रधिरोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	२७३
वायु, पित्त की विद्रधि का लक्षण ...	२७३
कफ की विद्रधि का लक्षण ...	२७४
सन्निपात की विद्रधि का लक्षण ...	२७४
चोट लगने से उपजी विद्रधि का लक्षण	२७४
रक्त की विद्रधि का लक्षण ...	२७४
साध्यासाध्य के लिये अन्तरविद्रधि का लक्षण	२७४
गुदा की विद्रधि का लक्षण ...	२७५
असाध्य विद्रधि का लक्षण ...	२७५
अन्तर्गत विद्रधि का असाध्य लक्षण	२७५
कष्टसाध्य विद्रधि का लक्षण ...	२७५
विद्रधियों का यत्न	२७६
व्रणशोथरोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	२७७
अपक्व, परिपक्व व्रणशोथ का लक्षण	२७७
परिपाक अवस्था में मतान्तर का लक्षण	२७८
व्रणों के कच्चे पक्के ज्ञान के लिये वैद्य के गुण दोष	२७८
व्रणरोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न ...	२७८
वायु, पित्त के व्रण का लक्षण ...	२७८
कफ के व्रण का लक्षण	२७९
रुधिर के व शुद्धव्रण का लक्षण ...	२७९
दुष्टव्रण का लक्षण	२७९
अङ्कुरित शुद्धव्रण का लक्षण ...	२७९
भली भाँति भरते हुए व्रण का लक्षण	२७९
व्रण के सुख साध्यादिक लक्षण ...	२७९
पुनः व्रण का असाध्य लक्षण ...	२८०
तलवार आदि लगने से व्रण की उत्पत्ति, लक्षण	२८०

विषय	पृष्ठ
छिन्न, भिन्न व्रण का लक्षण ...	२८०
विद्धव्रण का लक्षण	२८१
तीर आदि समेत स्राव का लक्षण ...	२८१
तीर समेत कोष्ठव्रण का लक्षण ...	२८१
असाध्य कोष्ठ में रहे रुधिर व मल का लक्षण	२८१
क्षत, पिच्चितव्रण का लक्षण ...	२८१
घृष्टव्रण का लक्षण ...	२८२
मांस, नस व मर्मस्थान में लगी चोट का सामान्य लक्षण	२८२
व्रण बिंधे मर्मादिकों का पृथक् २ लक्षण	२८२
व्रण के षोड़श उपद्रवों का निरूपण ...	२८२
अग्निदग्ध की उत्पत्ति व लक्षण ...	२८३
मृष्टदग्ध, दुर्दग्ध, सम्यक्दग्ध, अतिदग्ध का लक्षण	२८३
दोषों से उपजे व्रण का यत्न ...	२८३
वायुशोथ विनाशक लेप	२८३
पित्त की सूजन का लेप	२८४
कफ की सूजन का लेप	२८४
औषधियों के जल से गुनगुने तरेड़ा देना	२८४
पित्तशोथनाशक तरेड़ा	२८४
कफ की सूजन का तरेड़ा ...	२८४
कच्चे व्रण के पकाने की औषधं ...	२८५
व्रणशोथ विनाशक लेप	२८५
व्रण पकाने की विधि	२८५
पके व्रण में चीरा देने की विधि ...	२८५
चीरा लगाने में वर्जित मनुष्य ...	२८६
रादयुत व्रण का पीड़न	२८६
व्रण का शोधन	२८६
व्रणारोपण नाम अङ्कुर लाने का यत्न	२८७
व्रण में दाहशूलनाशक लेप ...	२८७
व्रण के कृमि दूर होने का लेप ...	२८७
छूत से खाज, पीड़ा व कीड़ा से युत व्रण की धूनी	२८८
व्रण भरने का मरहम	२८८
तलवार आदि लगने से उपजे व्रण का यत्न	२८८
छः भाँति अग्निदग्धों का यत्न ...	२९०
दुर्दग्ध, सम्यक्दग्ध, अतिदग्ध का यत्न	२९०

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

विषय	पृष्ठ
तैलादि से दग्ध का यत्न ...	२६१
व्रणग्रन्थिरोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	२६१
व्रणग्रन्थि का यत्न	२६१
भग्नरोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न ...	२६१
टूटी सन्धि का सामान्य लक्षण ...	२६२
उत्पिष्टसन्धि, विश्लिष्टसन्धि, विवर्तितसन्धि, तिर्यक्गतसन्धि, क्षिप्तसन्धि, अधःसन्धि टूटने का लक्षण	२६२
सन्धि विना टूटे हाड़वाले नल कपालादिकों का लक्षण	२६२
हाड़ टूटने के बारह भेद	२६२
टूटे हाड़ का लक्षण	२६३
भग्नरोग का कष्टसाध्य लक्षण ...	२६३
भग्नरोग का असाध्य लक्षण ...	२६३
शरीर में प्रतिस्थान लगी चोट का चिह्न	२६३
भग्नरोग का यत्न	२६३
मुद्गर आदि से लगी चोट का यत्न	२६५
नाड़ीव्रण की उत्पत्ति व लक्षण ...	२६५
वायु के नाड़ीव्रण का लक्षण ...	२६५
पित्त, कफ के नाड़ीव्रण का लक्षण ...	२६५
सन्निपात के नाड़ीव्रण का लक्षण ...	२६६
शस्त्रादिकों की चोट लगने से उपजे नाड़ीव्रण का लक्षण... ...	२६६
कष्टसाध्य असाध्य नाड़ीव्रण का लक्षण	२६६
नाड़ीव्रण का यत्न	२६६
सफ़ेद मरहम की विधि ...	२६७
बेवांई से फटे हाथ पांव आदि का मरहम	२६८
नींब का मरहम	२६६
व्रणत्वचा का वर्ण अच्छे करने की औषध	२६६
भगन्दररोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	२६६
वातज शतयोनिक भगन्दर का लक्षण	२६६
पित्तज उष्ट्रग्रीव भगन्दर का लक्षण ...	३००
कफज परिस्रावि भगन्दर का लक्षण ...	३००
सान्निपातिक शम्बुकावर्त भगन्दर का लक्षण	३००
शस्त्रादिकों की चोट से उपजे भगन्दर का लक्षण	३००
भगन्दर का कष्टसाध्य लक्षण ...	३००

विषय	पृष्ठ
भगन्दर का यत्न	३००
रूपराज व रविसुन्दर रस की विधि...	३०२
उपदंशरोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	३०२
वातज, पित्तज उपदंश का लक्षण ...	३०३
कफज उपदंश का लक्षण ...	३०३
उपदंश का असाध्य लक्षण ...	३०३
लिङ्गार्श का लक्षण	३०३
उपदंश का यत्न	३०४
शूकरोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न ...	३०५
सर्षपिका शूकरोग का लक्षण ...	३०५
अष्ठीलिका शूकरोग का लक्षण ...	३०५
ग्रथित, कुम्भिका, अलजी, मृदित, संमूढपिडिका शूकरोग का लक्षण ...	३०६
अवमन्थ, पुष्करिका, स्पर्शहानि, उत्तमा शूकरोग का लक्षण	३०६
शतयोनिक, त्वक्पाक, शोणितार्बुद, मांसार्बुद, शूकरोग का लक्षण ...	३०७
मांसपाक, विद्रधि, तिलकालक शूकरोग का लक्षण	३०७
शूकरोग का असाध्य लक्षण व यत्न ...	३०७
कुष्ठरोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न...	३०८
अठारह प्रकार के कोढ़ों का नाम ...	३०८
कुष्ठरोग का पूर्वरूप व सामान्य लक्षण	३०६
महाकुष्ठ कापालिक कोढ़ का लक्षण	३०६
औदुम्बर, मण्डल, सिध्म (विभूति) कोढ़ का लक्षण	३१०
काकण, पुण्डरीक, ऋक्षजिह्व कोढ़ का लक्षण	३१०
एकादश क्षुद्र कुष्ठान्तर्गत एक कुष्ठ का लक्षण	३१०
गजचर्म, चर्मदल, विचर्चिका, पामा कोढ़ का लक्षण	३११
दाद कोढ़ का लक्षण	३११
दादभेद कच्छु दाद का लक्षण ...	३११
विस्फोटक, किटिभ, वैपादिक कोढ़ का लक्षण	३११
अलस, शतारु कोढ़ का लक्षण ...	३१२
शरीर की सात धातुओं में प्राप्त कोढ़ के पृथक् २ लक्षण	३१२
रसधातु में प्राप्त हुए कोढ़ का लक्षण	३१२

In Public Domain. Sarayu Trust. Digitized by eGangotri Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

विषय	पृष्ठ
रुधिर में प्राप्त हुए कोढ़ का लक्षण ...	३१२
मांस में प्राप्त हुए कोढ़ का लक्षण ...	३१२
मेद में प्राप्त हुए कोढ़ का लक्षण ...	३१२
हाड़मींगी में प्राप्त हुए कोढ़ का लक्षण	३१२
वीर्य में प्राप्त हुए कोढ़ का लक्षण ...	३१२
कोढ़ का साध्यासाध्य लक्षण ...	३१३
कोढ़ का असाध्य लक्षण ...	३१३
श्वित्रकोढ़ की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	३१३
श्वित्रकोढ़ का साध्यासाध्य लक्षण ...	३१३
पुनः कोढ़ का असाध्य लक्षण व यत्न	३१३
विभूति का यत्न	३१६
चर्मदल, पामाकोढ़ का यत्न ...	३१६
कच्छु दाद की औषध	३२०
दाद का यत्न	३२०
श्वित्रनामक कोढ़ का यत्न ...	३२१
हरताल मारने की विधि	३२१
दाद का यत्न	३२३
कोढ़ दूर करने का लेप	३२३
म्ड्रालेप	३२३
शीतपित्तादिक का पूर्वरूप ...	३२४
शीतपित्त उर्दद का लक्षण ...	३२४
कोढ़, उत्कोढ़ का लक्षण	३२४
शीतपित्त उर्दद कोढ़ उत्कोढ़ का यत्न	३२४
अम्लपित्त की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	३२६
अम्लपित्त का लक्षण	३२६
ऊर्ध्वगामी, अधोगामी अम्लपित्त का लक्षण	३२७
भोजनान्त में अम्लपित्त का लक्षण ...	३२७
अम्लपित्त में अन्य दोषों का मिलाप	३२७
दोषभेदों का निरूपण	३२७
अम्लपित्त का साध्यासाध्य लक्षण ...	३२८
अम्लपित्त का यत्न	३२८
विसर्परोग की उत्पत्ति, लक्षण ...	३२८
वायु, पित्त, कफ, सन्निपात के विसर्प का लक्षण	३२९
वातपित्त के विसर्प रोग का लक्षण ...	३२९
वातकफ, कफपित्त के विसर्परोग का लक्षण	३३०
शस्त्रादिक के घाव से उपजे विसर्प रोग का लक्षण	३३१

विषय	पृष्ठ
विसर्परोग का उपद्रव	३३१
विसर्परोग का साध्यासाध्य लक्षण	३३१
विसर्परोग का यत्न	३३१
वायु के विसर्परोग का यत्न ...	३३१
पित्त के विसर्परोग का यत्न ...	३३१
कफ के विसर्परोग का यत्न ...	३३२
दशाङ्ग लेप	३३२
बालारोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न ...	३३२
बाला का यत्न	३३३
विस्फोटकरोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	३३४
विस्फोटकरोग का लक्षण ...	३३४
वायु, पित्त के विस्फोटक का लक्षण ...	३३४
कफ, वातपित्त, वायुकफ, पित्तकफ, सन्निपात, रुधिर के विस्फोटक का लक्षण	३३५
विस्फोटक के उपद्रव	३३५
विस्फोटक का साध्यासाध्यलक्षण व यत्न	३३५
फिरंगरोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	३३६
बहिर्गत शरीर की त्वचा का लक्षण ...	३३७
शरीर की सन्धियों व नसों में धँसे का लक्षण	३३७
शरीर के बाहर हुए का लक्षण ...	३३७
फिरंगवायु का उपद्रव व यत्न ...	३३७
संप्रसारणगुटिका	३३८
रसकपूर मुख आये हुए का यत्न ...	३४०
मसूरिका की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न ...	३४१
वायु की मसूरिका का लक्षण ...	३४१
पित्त, कफ, रुधिर, सन्निपात, चर्म की मसूरिका का लक्षण	३४१
रोम में प्राप्त हुई रोमान्तिकानामक मसूरिका का लक्षण	३४१
रस रुधिर में प्राप्त मसूरिका का लक्षण	३४१
मांस, मेद, हाड़, मज्जा, शुक्र में प्राप्त हुई मसूरिका का लक्षण ...	३४२
मसूरिका का साध्य लक्षण	३४२
मसूरिका का असाध्य लक्षण व यत्न ...	३४२
वायु, पित्त, कफ की मसूरिका का यत्न	३४३
रुधिर की मसूरिका का यत्न	३४३

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

विषय	पृष्ठ
सर्व मसूरिकामात्र का यत्न ...	३४३
मसूरिका से उपजे कण्ठव्रण का यत्न	३४३
मसूरिका में चिपटी आँखों का यत्न...	३४४
मसूरिका में नेत्रव्रण का यत्न ...	३४४
मसूरिका भेद शीतला का स्वरूप ...	३४४
शीतला का यत्न	३४४
शीतलावाले की रक्षा	३४४
शीतलास्तोत्र	३४५
शीतला का अन्य भेद	३४५
अथ क्षुद्ररोगों की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न—	
अजगल्लिका, यवप्रच्छा, अन्त्राल, विवृता, कच्छपिका, वाल्मीकि नाम फुंसी का लक्षण ...	३४६
इन्द्रवृद्ध, गर्दभिका, पाषाणगर्दभिका, पनसिका, जालगर्दभिका, इरिवेल्लिका, कांखोलाई, अग्निरोहिणी फुंसी का लक्षण	३४७
चिप्प, कुनखरोग, अनुशयी, विदारिका, शर्करा, शर्करार्बुद, बेंवाई फुंसी का लक्षण	३४८
कदर, खरवा, इन्द्रलुप्त, अरूंषिका का लक्षण	३४९
यौवनावस्था में सफ़ेद बालों का लक्षण	३४९
लहसुन, मस्सा, तिल का लक्षण ...	३४९
न्यच्छ, लिङ्गवर्तिका, अवपाटिका, निरुद्धप्रकाश, मणि, सन्निरुद्ध गुदा का लक्षण	३५०
वृषणकच्छु, गुदभ्रंश, शूकरदंष्ट्ररोग का लक्षण	३५१
क्षुद्ररोगों का यत्न	३५१
इरिवेल्लिका फुंसी का लक्षण ...	३५१
पनसिका, पाषाणगर्दभिका, वाल्मीकि, कांखोलाई, अग्निरोहिणी, अवपाटिका फुंसी का यत्न	३५२
निरुद्धप्रकाश, संनिरुद्धगुदा, वृषणकच्छू, गुदभ्रंश(कांचरोग)शूकरदंष्ट्र का यत्न	३५३
अलस नाम खार, बेंवाई, कदररोग का यत्न	३५४
तिल, मस्सा का यत्न	३५४
जतुमणिनाम लहसुन का यत्न ...	३५५
चेप, कुनखरोग का यत्न ...	३५५
मस्सा, तिल, लहसुन का दूसरा यत्न	३५५
खर्जुली का यत्न	३५५
चेप का और यत्न	३५६
यौवनावस्था में सफ़ेद बालों का यत्न	३५६
इन्द्रलुप्त (उदरी लागी) का यत्न ...	३५७
चेप का यत्न	३५७
मस्तक के रोगों की उत्पत्ति, लक्षण ...	३५७
वायु, पित्त के शिरोरोग के लक्षण ...	३५७
कफ, सन्निपात, रुधिर, क्षीणपने व कृमि से उपजे शिरोरोग का लक्षण	३५८
सूर्यावर्तरोग का लक्षण	३५८
अनन्तवात शिरोरोग का लक्षण ...	३५८
शङ्खनाम कनपटी दूखने का लक्षण ...	३५९
अर्धावभेदक शिरोरोग का लक्षण ...	३५९
वायुशिरोरोग का यत्न	३५९
शिरोवस्ति का निरूपण	३५९
पित्त, रुधिर, कफ, सन्निपात की मस्तकपीड़ा का यत्न	३६०
षड्बिन्दुतैल...	३६०
कृमि से उपजी मस्तकपीड़ा का यत्न ...	३६१
सूर्यावर्त (आधाशीशी) का यत्न ...	३६१
अर्धमस्तक दूखने का यत्न ...	३६१
अनन्तवायु शिरोरोग का यत्न ...	३६१
पथ्यादि क्वाथ	३६१
कनपटी दूखने का यत्न	३६२
आधाशीशी का अन्य यत्न ...	३६२
आधाशीशी का पुनर्यत्न	३६२
कपाल के कीड़े का यत्न	३६३
मस्तक के केश बढ़ने का यत्न ...	३६३
मस्तकपीड़ा का अन्य यत्न ...	३६३
आधाशीशी का मन्त्र	३६३
आधाशीशी का दूसरा मन्त्र ...	३६४
नेत्र के रोगों की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	३६४
नेत्र के रोगों की उत्पत्ति... ...	३६४
दृष्टिरोग का लक्षण	३६५
प्रथम, दूसरे, तीसरे पटल में उपजे रोग का लक्षण	३६५
चौथे पटल में उपजे रोग का लक्षण	३६६

In Public Domain. CC-0. Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

विषय	पृष्ठ
मोतियाबिन्द का लक्षण	३६६
वायु, पित्त, कफ से उपजे लिङ्गनाश का लक्षण	३६६
सन्निपात, रुधिर से उपजे लिङ्गनाश का लक्षण	३६७
परिम्लायिन से उपजे लिङ्गनाश का लक्षण	३६७
लिङ्गनाश का स्वरूप	३६७
नेत्रमण्डलों का अलग २ लक्षण ...	३६७
सन्निपात, रुधिर के नेत्रमण्डल का लक्षण	३६७
परिम्लायिन के नेत्रमण्डल का लक्षण	३६८
पित्तविदग्ध दृष्टि का लक्षण ...	३६८
तीसरे पटल में प्राप्त दुष्ट पित्त का लक्षण	३६८
कफविदग्ध दृष्टि का लक्षण ...	३६८
नक्तान्धनाम (रतौंधी) का लक्षण ...	३६८
धूमदर्शीरोग का लक्षण	३६८
हृस्वजात्यरोग का लक्षण	३६८
नकुलान्धरोग का लक्षण	३६८
गम्भीररोग का लक्षण	३६९
विना कारण ही लिङ्गनाश का लक्षण	३६९
नेत्रमण्डल में उपजे रोगों के नाम ...	३६९
सव्रण शुक्र का लक्षण	३६९
सव्रण शुक्र का असाध्य लक्षण ...	३६९
अव्रण शुक्र का लक्षण	३६९
अव्रण शुक्र का कष्टसाध्य लक्षण ...	३६९
अव्रण शुक्र का असाध्य लक्षण ...	३७०
अक्षिपाकात्यय नेत्ररोग का लक्षण ...	३७०
अजकाजात नेत्ररोग का लक्षण ...	३७०
नेत्र के सफ़ेद भाग में ११ रोगों का निरूपण	३७०
प्रस्तार्म, शुक्लार्म, रक्तार्म नेत्ररोग का लक्षण	३७०
अधिमांसार्म, स्नाय्वर्म, शुक्ति, अर्जुन, पिष्टक नेत्ररोग का लक्षण ...	३७१
शिराजाल, शिरापिडिका, बलासग्रथित नेत्ररोग का लक्षण ...	३७१
नेत्र के मर्मस्थानों में २१ रोगों का निरूपण	३७१

विषय	पृष्ठ
उत्संगपिडिका कुम्भिका नाम नेत्ररोग का लक्षण...	३७२
पोथकी, वर्त्मशर्करा, अर्शोवर्त्मा, शुष्कार्शनाम नेत्ररोग का लक्षण ...	३७२
अञ्जननामिका, बहुलवर्त्मा, वर्त्मबन्ध, क्लिष्टवर्त्मा नाम नेत्ररोग का लक्षण	३७३
वर्त्मकर्दम, श्यामवर्त्मा, प्रक्लिन्नवर्त्मा, अक्लिन्नवर्त्मनाम नेत्ररोग का लक्षण	३७३
वातहतवर्त्मा, वर्त्मार्बुद, शोणितार्श नाम नेत्ररोग का लक्षण ...	३७४
लगण, विषवर्त्मा, कुंचन नाम नेत्ररोग का लक्षण	३७४
नेत्र की बाफणी का रोग ...	३७४
पद्मकोपरोग का लक्षण... ...	३७५
पद्मशान्ति बाफणीरोग का लक्षण ...	३७५
नेत्रकी सन्धियों में नवरोगों का निरूपण	३७५
पूयालस नाम नेत्रसन्धिरोग का लक्षण	३७५
उपनाह नाम नेत्रसन्धिरोग का लक्षण	३७५
पित्त, कफस्रावनेत्रसंधिरोग के लक्षण	३७५
सन्निपात, रक्त, पर्वणीस्राव नाम नेत्रसन्धिरोग का लक्षण ...	३७६
अलज नाम नेत्रसन्धिरोग का लक्षण	३७६
जन्तुग्रन्थिनाम नेत्रसन्धिरोगकालक्षण	३७६
नेत्रके समस्तरोगोंकी संख्या व उनके नाम	३७६
नेत्र की वायु के अभिष्यन्द (नेत्रपीड़ा) का लक्षण	३७६
पित्त, कफ के अभिष्यन्द का लक्षण	३७७
रक्ताभिष्यन्द का लक्षण	३७७
वायु, पित्त, कफ के अधिमन्थ का लक्षण	३७७
रक्त के अधिमन्थ का लक्षण ...	३७८
सशोथ पाक, अशोथपाक, हताधिमन्थ, वातपर्याय,शुष्काक्षिपाक का लक्षण	३७८
अन्यतोवात, अम्लाध्युषित नेत्ररोग का लक्षण	३७९
शिरोत्पात, शिरोहर्ष, रोगयुक्त नेत्ररोग का लक्षण	३७९
नीरोग नेत्रों का लक्षण	३७९
समस्त नेत्ररोगों का यत्न	३८०
दूखती हुई आँखों का यत्न ...	३८०

In Public Domain, Chambal Archives, [illegible]

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

विषय	पृष्ठ
दूखती हुई आँखों का लेप ...	३८०
नेत्रों के अच्छे होने का दूसरा लेप ...	३८०
नेत्रों की पीड़ा तत्काल दूरकरनेवालालेप	३८०
नेत्रों के अच्छे होने का अन्य लेप ...	३८०
दूखते नेत्रों के अच्छे होने की पोटली	३८१
नेत्रोंके अच्छे करने के यत्न ...	३८१
गर्मी से दूखती हुई आँखों का सेंक	३८१
आश्चोतन की विधि	३८२
वायु से दूखती हुई आँखों का लेप ...	३८२
रक्त, पित्त, वात से दूखती आँखों का यत्न	३८२
गर्मीसे नेत्रोंमें रूलेसे चलते हुओं का यत्न	३८२
नेत्रों में रूला, सूजन व खाज का यत्न	३८३
नेत्रों की गुहानी का यत्न ...	३८३
नेत्ररोग के तर्पण की विधि व अञ्जन	३८३
लेखनी गुटिका	३८३
दन्तवर्ति, रोपणी गुटिका व स्नेह की गुटिका	३८४
फूले के दूर करने व निद्रानाशक अञ्जन	३८४
तन्द्रा दूर होने का अञ्जन ...	३८५
रसाञ्जन गुटिका	३८५
मोतियाबिन्दु दूर होने का अञ्जन ...	३८५
नेत्रों में पानी पड़नेके दूर करने का अञ्जन	३८५
नेत्र निर्मल करने का अञ्जन ...	३८५
मोतियाबिन्दु व काच आदि के दूर होने का अञ्जन	३८५
नेत्रों के सब रोग दूर होने का अञ्जन	३८६
नेत्रों के सब रोग दूर होने का यत्न	३८६
नेत्रों की दृष्टि करनेवाली शलाका	३८६
नयनामृत अञ्जन	३८७
सर्पादि के विष दूर होने का अञ्जन ...	३८७
शाहहुजूरी का बताया आँखें अच्छे होने का नुसखा	३८७
वाग्भट्टमतानुसार मोतियाबिन्दुकायत्न	३८७
पके मोतियाबिन्दु का लक्षण ...	३८७
पाण्डुरोग दूर करनेवाला अञ्जन ...	३८८
नारायणाञ्जन	३८८
नयनामृतगुटिका	३८८
नेत्रों की बाफणी आने का अञ्जन ...	३८८
शीतला के फूले दूर होने का अञ्जन	३८८
सबलवायु के दूर होने का अञ्जन	३९०

विषय	पृष्ठ
फूला व धुन्ध दूर होने का यत्न ...	३९०
चन्द्रोदय, चन्द्रप्रभागुटिका ...	३९०
द्वादशामृतहरीतकी	३९०
त्रिफलादिघृत	३९१
गर्मी के विकार दूर होनेका अञ्जन व लेप	३९१
सुश्रुतमतानुसार कान के २८ रोगों का निरूपण	३९२
कर्णशूल, कर्णनाद, बधिर का लक्षण	३९२
बधिर का असाध्य लक्षण ...	३९२
कर्णदवेंडरोग का लक्षण	३९२
कर्णस्राव, कर्णकण्डू का लक्षण ...	३९३
कर्णगूथ, कर्णप्रतिनाद, कृमिकर्ण, कर्णविद्रधि, कर्णपाक, पूतिकर्णका लक्षण	३९३
कर्णपालीमें ५ रोगों व परिपोटककालक्षण	३९४
उत्पात, उन्मन्थक, दुःखवर्धन, परिलोहित का लक्षण	३९४
कर्णरोग का यत्न	३९५
कान के शूल दूर करने का यत्न ...	३९५
बधिरपना आदि कर्णरोगनाशक तेल	३९५
रादबहतेहुए कान के अच्छे होनेका तेल	३९६
कानमें पड़े व्रण के दूर करने का तेल	३९६
कानमें पड़े कृमियोंके दूर करने का यत्न	३९६
बधिरपने के दूर करने का तेल ...	३९७
कानकी पीड़ा दूर होने का तेल ...	३९७
कानके सब रोगों के दूर होने का तेल	३९७
राद बहते कानके अच्छे होनेकी औषध	३९७
लौर पके कान के अच्छे होने का यत्न	३९८
परिपोटक अच्छे होने का तेल ...	३९८
नासिकारोगों की उत्पत्ति, लक्षण, यत्न, संख्या व नाम	३९८
पीनस का लक्षण	३९८
पूतिनास, नासापाक का लक्षण ...	३९९
पूयरक्त का लक्षण	३९९
क्षवथु नाम छींक बहुत आने का लक्षण	३९९
क्षवथु का अन्य, क्षवथुभ्रंश, दीप्तरोग-लक्षण	३९९
प्रतिनाह, परिस्राव का लक्षण ...	४००
नासासंशोष, प्रतिश्याय, पीनस के पूर्वरूप, वायु के पीनस, पित्त की पीनस का लक्षण	४००

In Public Domain. Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

विषय	पृष्ठ
कफकी पीनस, सन्निपात की पीनस, दुष्टपीनस, रुधिरकी पीनस, पीनस का असाध्य लक्षण	४०१
पीनसवाले की नाक में पड़े कृमियों का लक्षण	४०१
पीनस के कच्चेपने का लक्षण ...	४०२
पके पीनस का लक्षण	४०२
नाक के रोगों का यत्न	४०२
व्योषादिगुटिका	४०२
पीनस दूर होने का तेल	४०३
अधिक छींक आने का यत्न ...	४०३
पीनस के दूर होने का चूर्ण ...	४०३
पीनस के दूर होने का तेल ...	४०३
नाक में अर्श नाम मस्सा के दूर होने का तेल	४०३
मुखरोगों की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	४०४
ओठरोगों की उत्पत्ति व संख्या ...	४०४
वायु, पित्त, कफ, सन्निपात के ओठ-रोग का लक्षण ...	४०४
रुधिरकोप, मांसकोप, मेदकोप के ओठरोग का लक्षण ...	४०५
चोट से उपजे ओठरोग का लक्षण ...	४०५
ओठों के रोगों का यत्न	४०५
प्रतिसारिणी विधि	४०६
ओठों में बहुत से पड़े व्रणों का यत्न	४०६
मसूढ़े के रोगों के नाम व संख्या ...	४०६
शीताद मसूढ़े के रोग का लक्षण ...	४०६
दन्तपुप्पुट मसूढ़े के रोग का लक्षण ...	४०६
दन्तवेष्टरोग का लक्षण ...	४०६
सौषिर मसूढ़े के रोग का लक्षण ...	४०७
महासौषिररोग का लक्षण ...	४०७
परिदर मसूढ़े के रोग का लक्षण ...	४०७
उपकुश मसूढ़े के रोग का लक्षण ...	४०७
वैदर्भ मसूढ़े के रोग का लक्षण ...	४०७
खल्लीवर्धन मसूढ़े के रोग का लक्षण	४०७
अधिमांस मसूढ़े के रोग का लक्षण ...	४०७
तन्तविद्रधि मसूढ़े के रोग का लक्षण	४०८
शीताद, दन्तपुप्पुट, चलदन्त मसूढ़े के रोग का यत्न	४०८
सौषिर, परिदर मसूढ़े रोग का यत्न ...	४०९
मसूढ़े में पड़े हुए व्रणों का यत्न ...	४०९
खल्लीवर्धन मसूढ़े के रोग का यत्न ...	४०९
मसूढ़े की नसों में पड़े हुए पांच व्रणों का यत्न	४०९
दाँतों के रोगों के नाम व संख्या ...	४१०
दालन, कृमिदन्तक, भञ्जनक, दन्तहर्ष, दन्तशर्करा, कापालिक ...	४१०
श्यावदन्तक, करालनाम दाँत के रोगों का लक्षण	४११
ग्रन्थान्तर से हनुमोक्ष दाँत के रोग का लक्षण	४११
दन्तरोगों का दूर करनेवाला लाक्षादि तैल	४११
कृमिदन्तरोगके दूर होने का यत्न ...	४११
खट्टे रहनेवाले दाँतों का यत्न ...	४१२
दाँतके सब रोग दूर होने की औषध...	४१२
दाँतों के पुष्ट करनेवाली मिस्सी ...	४१२
दाँतों के सर्व विकारदूर होने की औषध	४१२
दाँतों के दुखने की और औषध ...	४१२
जीभ के रोगों की उत्पत्ति, नाम व संख्या	४१३
वायु से उपजे जिह्वारोग का लक्षण	४१३
पित्त, कफके जीभरोग का लक्षण ...	४१३
आलस जीभरोग का लक्षण ...	४१३
उपजिह्वा का लक्षण	४१३
जीभके रोगों का यत्न	४१३
तालुरोगों के नाम व संख्या ...	४१४
गलशुण्डी, तुण्डकेरी, ध्रुव, कच्छप, ताल्वर्बुद	४१४
मांससंघात, तालुपुप्पुट का लक्षण ...	४१५
तालुपाकरोग का लक्षण ...	४१५
तालुके रोगों का यत्न	४१५
गलरोगों के लक्षण, यत्न, नाम व संख्या	४१५
वायु की रोहिणी का लक्षण ...	४१५
पित्त, कफ की रोहिणी का लक्षण ...	४१५
सन्निपात, रुधिर की रोहिणी का लक्षण	४१६
कण्ठशालूक, अधिजिह्वा, वलय का लक्षण	४१६

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

विषय	पृष्ठ
बलास, एकवृन्द, वृन्द का लक्षण ...	४१७
शतघ्नी, गिलायु, गलविद्रधि ...	४१७
गलौघ नाम गलरोग का लक्षण ...	४१८
स्वरघ्न, मांसतान, विदारी नाम गल... रोग का लक्षण	४१८
गलरोगों का यत्न	४१८
गल के सर्वरोगों का यत्न ...	४१८
पित्त के गलरोग का यत्न ...	४१९
कफ के गलरोग का यत्न ...	४१९
कण्ठ के रोगों का यत्न	४१९
समस्त मुखरोगों की उत्पत्ति, लक्षण, यत्न व संख्या	४२०
वायु, पित्त, कफके मुखरोग का लक्षण	४२०
मुखरोग का असाध्य लक्षण ...	४२०
समस्त मुखरोगों का यत्न ...	४२०
पित्त, कफ के मुखरोगों के छालों का यत्न	४२०
सन्निपात के मुखरोगों के छालों का यत्न	४२१
हलते व पिराते हुए दाँतों की औषध	४२१
जीभरोग की पुनः औषध ...	४२२
गल के सब रोग दूर करने की गोली	४२२
मुखपाक दूर करने की गोली ...	४२२
दूसरी खैरसार की गोली ...	४२२
दाँत में रुधिर निकलने की औषध ...	४२२
मुखपाक की और औषध ...	४२३
मुख के ऊपर छाया दूर करने का यत्न	४२३
स्थावर, जंगम विषों से उपजे रोगों की उत्पत्ति, लक्षण, यत्न व संख्या ...	४२३
स्थावरविष खाने से उपजे रोगों का निरूपण	४२४
वृक्षादिकों की जड़ के विष के खाने का लक्षण	४२४
वृक्ष के पत्रविष खाने का लक्षण ...	४२४
वृक्षादिक के फलविष खाने का लक्षण	४२४
वृक्षपुष्प खाने वा सूंघने से उपजे रोग का लक्षण	४२४
वृक्षादिक के बक्कल खाने या लगने के विष का लक्षण	४२४
वृक्षादिक के दूधविष खाने का लक्षण	४२४

विषय	पृष्ठ
हरतालादि धातुविष खाने का लक्षण	४२५
कन्दविष सींगीमुहरा आदि खाने का लक्षण	४२५
स्थावरविषमात्रके शुद्ध खाने का गुण	४२५
स्थावरविष खाने से उपजे रोगों का निरूपण	४२५
विषपानी के बुझे शस्त्र के लगने का लक्षण	४२५
विष देनेवाले के जानने का लक्षण ...	४२५
जंगमविष सर्पादि काटने से उपजे रोगों का सामान्य लक्षण	४२६
भोगी नाम सर्प के काटने के पृथक् २ लक्षण	४२६
देशविशेष व कालविशेष में सर्पादि काटने का लक्षण	४२६
दर्वीकर सांपके काटने का लक्षण ...	४२६
दूसरे विषों का लक्षण	४२७
मूसे के विष का लक्षण	४२७
प्राणहर मूसे के विष का लक्षण ...	४२७
गिरगिट के बिष का लक्षण ...	४२७
बिच्छू काटने के विष का लक्षण ...	४२७
बिच्छू के काटने का असाध्य लक्षण ...	४२८
विषैले मेंढक के काटने के विष का लक्षण	४२८
विषैलीमछली के काटने के विषका लक्षण	४२८
विषैली जोंक के काटने का लक्षण ...	४२८
विषैली विषखपरी के काटने का लक्षण	४२८
कनसलाई के काटने का लक्षण ...	४२८
मच्छर के विष का लक्षण ...	४२८
वनमच्छर के काटने का लक्षण ...	४२८
विषैली मक्खी के काटने का लक्षण	४२८
सिंह बघेरा व चीता के काटने का लक्षण	४२९
बावले श्वान के काटने का लक्षण ...	४२९
बावले श्वानादिक के काटने का लक्षण	४२९
बावले श्वानादिक के काटने का असाध्य लक्षण	४२९
स्थावर विषमात्र का यत्न ...	४२९
विष के दूर करने का लेप ...	४३०

जंगम विष का यत्न।

मृत्युपाशच्छेदवृत	४३०

CC-0. Public Domain. Agambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

विषय	पृष्ठ
सर्पविषके दूर करने का यत्न	४३०
बिच्छू के विष का यत्न	४३०
बिच्छू के विष दूर होने का मन्त्र	४३१
कनेरविष के दूर करने का यत्न	४३१
आकविष दूर होने का यत्न	४३१
कौंच विष दूर होने का लेप	४३१
भिलावां, मक्खी विष दूर होने का लेप	४३१
भौंरा, मूसा, मेंढक, कनसलाई, सर्पविष, बावले कुत्ते के विष दूर होने का यत्न	४३२
स्यार, श्वानविष दूर करने का मन्त्र	४३३

अथ स्त्रियों के प्रदर आदि रोगों की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न।

प्रदररोग की उत्पत्ति	४३३
प्रदररोग का सामान्य लक्षण	४३४
वायु, पित्त, कफ, सन्निपात के प्रदररोग का लक्षण	४३४
रुधिर के बहुत जाने का उपद्रव	४३४
प्रदर का असाध्य लक्षण	४३५
शुद्ध आर्तव नाम स्त्री के धर्म का लक्षण	४३५
प्रदररोग का यत्न	४३५
स्त्रियों के प्रदरभेद सोमरोग का लक्षण	४३६
सोमरोग का सामान्य लक्षण व यत्न	४३६
सफ़ेद प्रदर का यत्न	४३६
मूत्रातीसार का लक्षण व यत्न	४३६
प्रदर का अन्य यत्न	४३७
स्त्रियों के योनिरोग की उत्पत्ति, लक्षण, यत्न व संख्या	४३७
स्त्रियों की योनि का लक्षण	४३७
योनिकन्दरोग की उत्पत्ति, लक्षण	४३८
योनिकन्दरोग का स्वरूप	४३८
वायु के योनिकन्द का लक्षण	४३८
पित्त के योनिकन्द का लक्षण	४३९
बन्ध्या स्त्री का यत्न	४३९
बांझ स्त्री के पुत्र होने का यत्न	४३९
स्त्रीधर्म नहीं होने का यत्न	४३९
गर्भ नहीं रहने की औषध	४४०
स्त्रीयोनि के रोगों का क्रम से यत्न	४४१
योनिसंकोचन की औषध	४४१
योनि के सब रोगों के दूर होने का फलघृत	४४२
योनिकन्द का यत्न	४४२
गर्भिणी स्त्री के रोगों का यत्न	४४२
गर्भिणी स्त्री के ज्वर का यत्न	४४२
गर्भिणी स्त्री की संग्रहणी का यत्न	४४३
स्त्रीगर्भ गिरने व गर्भस्राव की उत्पत्ति, लक्षण	४४३
गर्भ गिरने व गर्भस्राव का पूर्वरूप	४४३
स्रवते गर्भ के थँभने का यत्न	४४३
गर्भपात का उपद्रव	४४३
पड़ते गर्भ के थँभने का यत्न	४४४
गर्भिणी के अफरा होने का यत्न	४४४
गर्भिणी के मूत्र न उतरने का यत्न	४४४
प्रतिमासऔषध सेवन से गर्भ का न गिरना व आठवें महीने का यत्न	४४४
नवयें, दशयें महीने का यत्न	४४५
वायु से गर्भ सूखने का यत्न	४४५
गर्भगत बालक के होने का महीना	४४५
स्त्रीके सुखपूर्वक प्रसव होने का यत्न	४४५
सुख से तत्काल प्रसव करने का मन्त्र व यन्त्र	४४६
मूढ़गर्भ की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	४४६
गर्भ में दुष्ट पवन से बालक का चार प्रकार या आठ प्रकार से रहना	४४६
कीलक का लक्षण	४४७
मूढ़गर्भ का असाध्य लक्षण	४४७
पेट में मृतक बालक का कारण	४४७
गर्भिणी स्त्री का असाध्य लक्षण	४४८
मूढ़गर्भ का यत्न	४४८
गर्भ में मरे बालक का यत्न	४४८
गर्भ में मृतक बालक का अन्य यत्न	४४८
मकल्लक रोगकी उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	४४९
सूतिकारोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	४५०
पञ्चजीरक पाक	४५०
सौभाग्यशुण्ठी पाक	४५१
स्तनरोग का लक्षण, यत्न	४५१
स्तनपीड़ा का यत्न	४५२
विधवागर्भ निवारण व गर्भपातन का यत्न	४५२

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

विषय	पृष्ठ
बालकके रोगोंकी उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	४५३
बालग्रहों के नामों का निरूपण ...	४५३
नवग्रहों की उत्पत्ति	४५३
बालग्रहोंका बाल दुःख देने का कारण	४५३
बालकों पैं लगे बालग्रहों का लक्षण	४५३
बालग्रहों का विशेष लक्षण ...	४५४
विशाखग्रह का लक्षण	४५४
शकुनी ग्रह का लक्षण	४५४
लगेहुए रेवतीग्रह का लक्षण ...	४५४
लगेहुए पूतनाग्रह का लक्षण ...	४५५
लगेहुए गन्धपूतनाग्रह का लक्षण ...	४५५
शीतपूतना के दोष का लक्षण ...	४५५
नैगमेयग्रह के दोष का लक्षण ...	४५५
सामान्यग्रह के दोषों का यत्न ...	४५५
स्कन्द आदि बालग्रहों का विशेष यत्न	४५६
स्कन्दापस्मार के दोष का यत्न ...	४५६
शकुनीग्रह दूर होने का यत्न ...	४५६
रेवतीग्रह का यत्न	४५७
पूतनाग्रह का यत्न	४५७
गन्धपूतनाग्रह का यत्न	४५७
शीतपूतनाग्रह का यत्न	४५८
मुखमण्डिकाग्रह का यत्न ...	४५८
स्नान कराने का मन्त्र	४५९
नैगमेयग्रह का यत्न	४५९
उतारे का मन्त्र	४५९
पहिले दिन, मास व वर्ष में मन्दानाम मातृका के लक्षण	४५९
उतारे का मन्त्र	४६०
दूसरे दिन, मास व वर्ष में शुभदानाम मातृका का लक्षण	४६०
उतारे का मन्त्र	४६०
तीसरे दिन, मास व वर्ष में बालघातिनी पूतना का लक्षण ...	४६०
उतारे का मन्त्र	४६१
चौथेदिन, मास व वर्ष में मुखमण्डिका नाम मातृका का लक्षण ...	४६१
उतारेका मन्त्र	४६१
पांचवेंदिन, मास व वर्ष में पूतना नाम मातृका का लक्षण ...	४६१
बालक के अच्छे होने का उतारा ...	४६१
उतारे का मन्त्र	४६२
छठेदिन, मास व वर्ष में शकुनी नाम मातृका का लक्षण	४६२
उतारे का मन्त्र	४६२
सातवेंदिन, मास व वर्ष में शुष्करेवती नाम मातृका का लक्षण ...	४६२
उतारे का मन्त्र	४६२
आठवेंदिन, मास व वर्ष में मातृका का लक्षण, उतारे का मन्त्र ...	४६३
नवयेंदिन, मास व वर्ष में सूडिका नाम मातृका का लक्षण ...	४६३
उतारे का मन्त्र...	४६३
दशवेंदिन, मास व वर्ष में क्रिया नाम मातृका का लक्षण ...	४६३
उतारे का मन्त्र	४६४
ग्यारहवेंदिन, मास व वर्ष में पिपीलिका नाम मातृका का लक्षण ...	४६४
बालसौख्य के लिये बलि	४६४
उतारे का मन्त्र	४६४
बारहवेंदिन, मास व वर्ष में कामुका नाम मातृका का लक्षण ...	४६४
उसके उतारे की विधि	४६४
उतारे का मन्त्र	४६४
वायुरोगों की उत्पत्ति और लक्षण...	४६४
तालुकण्टक का लक्षण	४६५
महापद्मरोग का लक्षण	४६५
कुकूणकरोग का लक्षण	४६५
तुण्डिकुदार्पाकरोग का लक्षण ...	४६६
अहिपूतनारोग का लक्षण ...	४६६
अजगल्लारोग का लक्षण	४६६
पारिगर्भिकरोग का लक्षण ...	४६६
बालक के दांतों का रोग ...	४६६
बालकों के रोगों के यत्न	४६६
बालकों के ज्वर, ज्वरातीसार, अतीसार, भयंकर अतीसार तथा आमातीसार, रक्तातीसार, सर्वातीसार का यत्न	४६७
बालक का साढ़ानिवाही, संग्रहणी, खांसी का यत्न	४६८
खांसी का अन्य यत्न	४६८

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

विषय	पृष्ठ
खांसी और श्वास का यत्न ...	४६८
बालक की छर्दि, दूध गिराने का यत्न	४६८
बालक के अफरा शूल, मूत्रबन्द, अधिक लार पड़ने, मुँह में छाले पड़ने, नाभि सूजन, नाभि पकने, गुदा पकने का यत्न	४६९
बालक के दोहरे दाँतों का यत्न ...	४६९
बाजीकरण और नपुंसक के लक्षणादि	४७०
नपुंसकपने का यत्न	४७०
गोखुरादि चूर्ण	४७०
सुपारीपाक	४७१
आम्रपाक	४७१
हथरस आदि से नपुंसक होने का यत्न	४७२
चन्दनादि तैल	४७२
वानरीगुटिका	४७२
नपुंसकपने के दूर करने का यत्न ...	४७३
मदनमञ्जरीगुटिका	४७३
लिङ्गलेप की लिङ्गार्जुनगुटिका ...	४७४
लिङ्गलेप की पट्टी	४७४
नपुंसकपना दूर करने की अन्य औषध	४७४
दूसरी औषध	४७४
तीसरी, चौथी, पांचवीं, छठी औषध	४७५
सातवीं, आठवीं, नवीं औषध ...	४७६
खाने का औषध	४७६
दूसरी औषध	४७७
नपुंसकता दूर होने का लेपन ...	४७७
खाने की औषध	४७७
तिला हथरस और सुस्ती का ...	४७८
तिला दूसरा	४७८
तिला तीसरा, चौथा तथा नसें जुड़ने की पोटली सेंक ...	४७९
नामर्द के वास्ते लेप	४८०
पुनः लेप	४८०
खाने की औषध...	४८०
सूखी हुई इन्द्रिय की औषध ...	४८१
इन्द्रिय के बाँकपन जाने की औषध	४८२
स्तम्भन की औषध	४८२
दूसरी औषध	४८२
तीसरी, चौथी, पांचवीं, छठी विधि	४८३
बन्धेजकी सातवीं, आठवीं, नवीं विधि	४८४
बन्धेज की दशवीं, ग्यारहवीं, बारहवीं विधि	४८५
मदनगुटिका तेरहवीं, चौदहवीं औषध	४८६
बच्छनाग शोधन क्रिया	४८६
शिंगरफ शोधन विधि	४८६
बन्धेज की पन्द्रहवीं विधि ...	४८६
बन्धेज की सोलहवीं, सत्रहवीं विधि	४८७
बन्धेज की अठारहवीं विधि ...	४८८
बन्धेज पर माजून	४८८
बन्धेज पर दूसरी माजून... ...	४८८
बन्धेज पर तीसरी माजून ...	४८९
धातुपुष्ट के यत्न	४९०
धातुपुष्ट की दूसरी, तासरी विधि...	४९०
धातुपुष्ट की चौथी, पांचवीं विधि...	४९१
धातुपुष्ट की छठी, सातवीं, आठवीं, नवीं विधि	४९२
धातुपुष्ट की दशवीं विधि ...	४९३
धातुपुष्ट की ग्यारहवीं, बारहवीं, तेरहवीं विधि	४९४
धातुपुष्ट की चौदहवीं विधि ...	४९५
शरीर की पुष्टाई का यत्न... ...	४९६
मृगाङ्क की विधि	४९६
मृगाङ्क मारण की द्वितीय विधि ...	४९६
मृगाङ्क के खाने की विधि ...	४९७
रूपरस की विधि	४९७
रूपरस की दूसरी, तीसरी विधि...	४९७
चौथी, पाचवीं, छठी विधि ...	४९८
सातवीं विधि	४९९
तांबेश्वरकी विधि	४९९
दूसरी विधि	४९९
तीसरी विधि	५००
चौथी, पांचवीं, छठी विधि ...	५०१
सातवीं, आठवीं, नवीं, दशवीं विधि	५०२
नागेश्वर की विधि	५०३
दूसरी, तीसरी विधि	५०३

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

विषय	पृष्ठ
बङ्गेश्वर की विधि	५०४
दूसरी विधि	५०४
तीसरी, चौथी, पांचवीं, छठी, सातवीं विधि	५०५
सार की विधि	५०६
दूसरी विधि	५०६
रसमारण विधि	५०६
दूसरी विधि	५०७
उपधातुओं के मारण की विधि ...	५०७
सोनामक्खी का शोधन व मारण ...	५०७
अभ्रकशोधन, मारण विधि ...	५०७
अभ्रक की दूसरी, तीसरी विधि ...	५०८
चौथी, पांचवीं विधि	५०९
हरताल का शोधन	५०९
हरताल का मारण	५०९
हरताल की दूसरी, तीसरी विधि...	५१०
चौथी, पांचवीं, छठी विधि ...	५११
सातवीं, आठवीं विधि	५१२
नवीं, दशवीं, ग्यारहवीं विधि ...	५१३
बारहवीं, तेरहवीं विधि ...	५१४
हरताल के गुण	५१४
चौदहवीं विधि	५१४
चन्द्रोदय की विधि	५१५
स्वर्णभस्म	५१५
सुवर्ण के शोधन मारण की क्रिया...	५१७
रससिन्दूर की विधि	५१७
पारा मारने की विधि	५१८
दूसरी, तीसरी विधि	५१९
वसन्तमालती रस की क्रिया ...	५१९
शिंगरफशोधन विधि	५२०
शिंगरफमारण विधि	५२०
दूसरी विधि	५२०
तीसरी, चौथी विधि	५२१
सुम्बलखार मारण विधि ...	५२१
पीतल, कांसा मारने की विधि ...	५२२
कनकसुन्दर, बड़वानल, वह्नि रस...	५२२
शंखली तथा शंखद्रावरस ...	५२३
शीतारिरस व पंचामृत पर्पटीरस	५२३
विलासिनीवल्लभ रस	५२४
हीरा की शोधन मारण विधि ...	५२४

विषय	पृष्ठ
वैक्रान्ति, सर्वरत्न, शिलाजीत की शोधन मारण विधि	५२५
तूतिया, सुरमा, मैनसिल शोधन मारण विधि	५२६
खपरिया शोधन विधि	५२६
सर्वधातुओं के सत निकालनेकी विधि	५२६
गन्धक शोधन विधि	५२६
शिंगरफसे पारा निकालने की विधि	५२७
पारे के मुखकरण विधि	५२७
द्वितीय ज्वरांकुश तथा ज्वरारि रस	५२७
शीतज्वरारि रस, ज्वरघ्नगुटिका ...	५२८
लोकनाथ रस	५२८
मृगाङ्कपोटली रस	५३०
कफक्षयी पर हेमपोटली रस ...	५३१
कासपर हेमगर्भ रस	५३१
द्वितीय आनन्दभैरव रस ...	५३२
सन्निपात पर लघुसूचिकाभरण, जलबुन्द रस	५३२
सन्निपात पर पञ्चवक्त्र, उन्मत्त रस...	५३३
शूल पर नाराच रस	५३३
शूल पर इच्छाभेदी रस... ...	५३३
क्षयीपर राजमृगाङ्क रस... ...	५३४
खराग्नि रस, स्वयमग्नि रस ...	५३४
श्वास पर सूर्यावर्त रस	५३४
द्वितीय स्वच्छन्दभैरव रस ...	५३५
अश्मरी पर त्रिविक्रम रस ...	५३५
महाहरतालेश्वर रस	५३५
उदयादित्य रस...	५३६
कुष्ठपर सर्वेश्वर रस, मेहबद्ध रस, जलोदर पर वन्य रस... ...	५३७
विद्याधर रस, त्रिनेत्र रस, गजकेशरी रस, अधितुण्डी रस	५३८
अजीर्णकण्टक रस, सोपानभैरव रस	५३९
वातनाशकरस, कनकसुन्दर रस ...	५३९
भैरव रस, ग्रहणीकपाट रस ...	५४०
वज्रकपाट रस, मदनकामदेव रस ...	५४१
कन्दर्पसुन्दर रस, लोहरसायन ...	५४२

आसव बनाने की विधि।

दशमूलासवकी विधि	५४३
मूसलीपाक बनाने की विधि ...	५४४

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

विषय	पृष्ठ
शिलाजीत शोधने की विधि ...	५४५
जवाखार, चनाखार आदि ले समस्त खारों के बनाने की विधि ...	५४६
स्नेह विधि	५४६
स्नेहभेद, स्नेहपान, स्नेहमात्रा प्रकार, मात्रा प्रमाण	५४७
अल्पादि मात्राओं का गुण ...	५४८
दोषोचित अनुपान	५४८
स्नेह पान समय	५४८
स्नेह पानानुपान	५४९
स्नेह यवागू	५४९
धारोष्ण दुग्ध विधि	५४९
स्नेह गुणादि लक्षण	५५०
स्नेह बहुत पीने के उपद्रव ...	५५०
स्नेहरूक्ष, रूक्षस्निग्ध प्रतीकार ...	५५०
स्नेह सेवनगुण	५५०
स्वेद विधि	५५०
महासाल्वण स्वेद	५५१
शरद् वसन्तआदिकों में कफी आदि रोगियों को वमन कराने का निषेध विधान	५५१
वमन की विधि	५५१
गण्डूष विधि	५५२
स्नेह का गण्डूष भेद	५५२
गण्डूष और कवल की रीति ...	५५२
उभय द्रव्य प्रमाण	५५२
वात, पित्त शमन स्नेह गण्डूष ...	५५३
व्रणादि, विषादि पर गण्डूष ...	५५३
दन्तपुष्टिकारक व मुखशोष पर गण्डूष	५५३
कफदोष पर, कफ रक्त पित्त पर गण्डूष	५५३
मुखरोग पर गण्डूष	५५४
विशेष विधान, कवल विधान, प्रतिसारण प्रकार, प्रतिसारण चूर्ण	५५४
गण्डूषादि हीन वृद्ध होने से उपद्रव	५५४
सम्यक् गण्डूष लक्षण	५५४
विरेकनाम जुलाब की विधि ...	५५५
मृदु, मध्यम, तीक्ष्ण जुलाब ...	५५५
पुनः जुलाब लेने की विधि ...	५५५
छओंऋतुओं के पृथक् २ जुलाब...	५५६
वर्षा, शरद्, हिम, शिशिर ऋतु का जुलाब	५५६
अभयादिमोदक	५५७
जुलाब लेनेवाले का कर्तव्य ...	५५७
अच्छा जुलाब होने का लक्षण ...	५५८
छओं ऋतुओं में हड़ खाने की विधि	५५८
बस्तिकर्म की विधि	५५८
अनुवासनबस्ति देने का तेल ...	५६०
निरूहबस्ति करने का विधि ...	५६०
उत्क्लेशनबस्ति, दोषहरबस्ति, लेखनबस्ति, शोधनबस्ति, शमनबस्ति, बृंहणबस्ति, पिच्छिलबस्ति विधि	५६१
निरूहबस्ति के तोल का प्रमाण ...	५६२
मधुतैलबस्ति, स्थापनबस्ति, सिद्धिबस्ति, फलबस्ति की विधि ...	५६२
हुक्का आदि धूमपान की विधि ...	५६३
अपराजित धूप	५६३
माहेश्वर धूप	५६३
रुधिर छुड़ाने की विधि	५६४
शुद्ध रुधिर का स्वरूप	५६४
वायु, पित्त, कफ से दुष्ट हुए रुधिर का लक्षण	५६४
सन्निपात व विष से दुष्ट हुए रुधिर का लक्षण	५६५
इतने रोगों में रुधिर कढ़ाना ...	५६५
इतने रोगवालोंको फस्त नहीं लगाना	५६५
बहुत रुधिर निकलने पर इन वस्तुओं से यत्न करना ...	५६६
फस्त छुड़ाने से अधिक रुधिर निकलने पर इतने रोगों का होना	५६६
रुधिर छुड़ाने का कुपथ्य ...	५६७

अवलेह विधि।

अनुभूतावलेह कल्पना	५६७
हिचकी व कास श्वास पर भटकटैयावलेह	५६८
क्षयादिपर च्यवनप्राशावलेह ...	५६८
रक्तपित्त पर कूष्माण्डपाक ...	५६९
अर्शपर खण्डकूष्माण्डावलेह ...	५७०
क्षयीपर अगस्त्यहरीतकी ...	५७०

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

विषय	पृष्ठ
श्वासकास सहित कफज्वर पर अवलेह	५७९
श्वासपर अवलेह	५७१
आसव कल्पना	५७१
शीधु मद्यभेद	५७१
रक्तपित्तपर खसासव	५७२
क्षयीपर पिप्पल्यासव	५७२
पाण्डुपर लोहासव	५७३
ज्वरपर कुरैयारिष्ट	५७३
विद्रधिपर विडङ्गारिष्ट	५७३
प्रमेह पर देवदारुअरिष्ट ...	५७४
कुष्ठपर खदिरारिष्ट	५७४
क्षयीपर बब्बूलारिष्ट	५७५
उरःक्षत पर द्राक्षारिष्ट... ...	५७५
अर्शपर रोहितारिष्ट	५७५
क्षयी प्रमेहपर दशमूलारिष्ट ...	५७६
घृत और तैल का साधन ...	५७७
पिलही पर क्षार	५७८
संग्रहणी व अतीसार पर चाङ्गेरीघृत	५७८
अतीसार पर मसूर घृत ...	५७९
रक्तपित्तपर कामदेव घृत ...	५७९
अपस्मार पर कल्याण घृत ...	५८०
वातरक्तपर अमृतादि घृत ...	५८०
वात कुष्ठादिपर महातिक्तादि घृत ...	५८०
कुष्ठ, दाह व खाजपर कसीसादि घृत	५८१
घावपर जाती घृत	५८१
उदररोग पर विन्दु घृत ...	५८१
नेत्रों पर त्रिफला घृत	५८२
घावपर गोर्यादि घृत	५८२
शिरोरोग पर मयूर घृत ...	५८२
बन्ध्या के लिये फलघृत... ...	५८३
योनिदोषपर त्रिफलादि घृत ...	५८३
विषपर पञ्चतिक्त घृत	५८३
कुष्ठपर भूनिम्बादि घृत ...	५८४
विन्दु घृत	५८४
अनुभूत तैलप्रकरण।	
लाक्षादि तैल	५८४
वायुपर नारायण तैल	५८५
वातपर बरियारा तैल	५८६
प्रसारिणी तैल	५८६

विषय	पृष्ठ
वायुपर माष तैल	५८६
शतावरि तैल	५८७
अर्शपर कसीस तैल	५८७
वातरक्त पर पिण्ड तैल... ...	५८८
कण्डू पर मदार तैल	५८८
कुष्ठपरे मरिच तैल	५८८
धातुपर त्रिफला तैल	५८८
पलित पर निम्ब तैल	५८८
इन्द्रलुप्तपर करञ्ज तैल	५८९
पलित पर नीलकादि तैल ...	५८९
पलितपर भृङ्गराज तैल ...	५८९
मुख व दन्त रोगपर हरिमेदादि तैल	५८९
कर्णशूल पर हिंगु तैल	५९०
वातपर पञ्चस्नेही तैल	५९०
झोलापर अठरंगा तैल	५९०
बधिरत्वपर बेल तैल	५९१
कान बहने पर क्षार तैल ...	५९१
मधुसूक्त की विधि	५९१
पीनस पर पाढ़ादि तैल ...	५९१
नाक रोगपर भटकटैया तैल ...	५९१
छिक्का पर कूट तैल	५९२
नासार्श पर बृहद्धूमादि तैल ...	५९२
सब कोढ़ों पर तैल	५९२
रोमशातन पर कनेर का तैल ...	५९२
पित्तज्वर पर तैल	५९२
अन्य लाक्षादि तैल	५९२
विजय नारायण तैल	५९३
मरिचादि बृहत्तैल	५९३
काथ (काढ़ा) स्वरस विधि।	
अनेक रोगों पर अनुभूत काढ़े ...	५९४
स्वरस विधि...	५९४
रक्तपित्तादि पर वासास्वरस ...	५९४
कमल पर त्रिफलादिस्वरस ...	५९४
विषमज्वर पर तुलस्यादिस्वरस ...	५९४
रक्तातीसार पर जवादिस्वरस ...	५९५
अतीसार पर बबूरादिस्वरस ...	५९५
अण्डकोश व श्वास पर अर्द्रकस्वरस	५९५
पार्श्वादि शूलपर बीजपूरस्वरस ...	५९५
पित्तशूल पर शतावरिरस ...	५९५
प्लीहा पर भिङ्गुवारिरस	५९५

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

विषय	पृष्ठ
गण्डमाला, अपची पर मुण्डीस्वरस	५९५
सूर्यावर्तादि पर मुण्डीस्वरस ...	५९५
उन्माद पर ब्राह्म्यादिस्वरस ...	५९५
घावपर बरियारे का स्वरस ...	५९६
पुटपाक स्वरस विधि	५९६
सर्वातीसार पर कुरैया पुटपाक ...	५९६
चावल धोने की क्रिया	५९६
पुनः पुटपाक	५९६
पुनः पुटपाक	५९७
अन्य पुटपाक	५९७
उबाकी पर बिजौरापुटपाक ...	५९७
रक्तपित्त कास, ज्वर पर वासा पुटपाक	५९७
कास श्वास पर भटकटैयापुटपाक ...	५९७
कास श्वास पर विभीतकपुटपाक ...	५९७
आमातीसार पर शुण्ठीपुटपाक ...	५९७
बवासीर पर सूरणपुटपाक ...	५९८
हृदयशूल पर हरिणश्रृंगपुटपाक ...	५९८
काथ	५९८
काथ में मधु और मिश्री डालने का प्रमाण	५९८
ज़ीरा आदि अनेक वस्तु डालने का प्रमाण	५९८
सर्व ज्वरों पर गुर्चादि काढ़ा ...	५९८
वातज्वर पर गुर्चादि पाचन ...	५९९
वातज्वर पर काढ़ा	५९९
वित्तज्वर पर कटुफलादि पाचन ...	५९९
पित्तज्वर पर पित्तपापड़ादि काथ ...	५९९
कफज्वर पर बिजौरा पाचक ...	५९९
वातज्वर पर पित्तपापड़ा काथ ..	५९९
वातज्वर पर छोटी भटकटैया काथ ...	६००
कफ वातज्वर पर अमलतासादि काथ	६००
अमृताष्टक काथ	६००
सर्वज्वरों पर भटकटैयादि काथ ...	६००
वातकफ पर दशमूल काथ ...	६००
सन्निपातज्वर पर हरीतकी काथ	६००
पुनः भूनिम्ब दशमूल काथ ...	६०१
कासज्वर पर कायफल काथ ...	६०१
अन्य काथ	६०१

विषय	पृष्ठ
सर्व शीतज्वरों पर भटकटैया काथ ...	६०१
त्रिषमज्वर पर मोथा काथ ...	६०१
नित्य आते ज्वरपर पटोल काथ ...	६०१
तृतीयज्वर पर गुडूच्यादि काथ ...	६०२
चातुर्थिक ज्वर पर देवदारु काथ ...	६०२
ज्वरातीसार पर गुडूच्यादि काथ ...	६०२
अन्य काथ	६०२
आमशूल पर धान्यपञ्चक काथ ...	६०२
आमातीसार पर कुरैया काथ ...	६०२
कुटजाष्टक काथ	६०२
अतीसार पर हाऊबेर काथ ...	६०३
बालकों के सर्वातीसार पर काथ ...	६०३
संग्रहणी पर वनउर्दी काथ ...	६०३
चतुर्भद्र काथ	६०३
सर्वातीसार पर इन्द्रयव काथ ...	६०३
कृमि पर त्रिफला काथ	६०३
कमल पर त्रिफलादि काथ ...	६०४
पाण्डु पर गदापुरैना काथ ...	६०४
रक्तपित्त पर रूसा काथ	६०४
कासज्वर पर रूसा काथ ...	६०४
कास, श्वास पर क्षुद्रादि काथ ...	६०४
हिक्का पर मेवड़ी काथ	६०४
उबकाई पर बिल्वादि काथ ...	६०४
गृध्रसी वायु पर दशमूल काथ ...	६०४
वायु पर रास्नापञ्चक काथ ...	६०५
सम्पूर्ण वायु पर महारास्नादि काथ	६०५
छाती की पीड़ा पर एरण्ड काथ ...	६०५
वातशूल पर शुण्ठी काथ ...	६०६
पित्तशूलपर त्रिफला काथ ...	६०६
कफ शूल पर एरण्डमूल काथ ...	६ ६
हृदयरोगपर दशमूल काथ ...	६०६
मूत्रकृच्छ्र पर हरीतकी काथ ...	६०६
मूत्ररोग पर अर्जुन काथ ...	६०६
अश्मरी शर्करादिपर एला काथ ...	६०६
मूत्रकृच्छ्र पर गोखुरू काथ ...	६०७
मूत्रकृच्छ्रपर त्रिफला काथ ...	६०७
प्रमेह पर त्रिफला काथ ...	६०७
प्रदर पर दारुहल्दी काथ ...	६०७
तक्षवणादि पर वटादिक काथ ...	६०७
मेदरोगपर बेल काथ	६०७

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

विषय	पृष्ठ
उदररोग पर चाव काथ...	...६०८
पेट फूलने पर गदापुरैना काथ	... ६०८
पिलही पर हरीतकी काथ	... ६०८
शोथ पर गदापुरैना काथ	... ६०८
अण्डवृद्धि सूजन पर त्रिफला काथ	६०८
आंतवृद्धि पर रासन काथ	... ६०८
गण्डमाला पर कचनार काथ	... ६०८
फ़ीलपांव पर सहोड़ा काथ	... ६०८
अन्तर्विद्रधि पर गदापूर्ण काथ	... ६०९
वरुणादिगण काथ	... ... ६०९
भगन्दर पर खदिरादि काथ	... ६०९
गर्मी पर पटोलादि काथ...	... ६०९
रक्तपित्तातीसार पर मोथादि प्रमथ्या	... ... ६०९
यवागू विधान	... ... ६०९
यूषक विधि	... ... ६१०
सन्निपात पर सप्तमुष्टि यूष	... ६१०
पानादि कल्पना	... ... ६१०
ज्वर तृषा पर उशीरादि पान	... ६१०
उष्णोदक	... .. ६१०
क्षीरपाक विधि	... ... ६१०
अन्नप्रकार	... ... ६१०
पयप्रकार	... ... ६११
भातविधि	... ... ६११
यवमण्ड	... ... ६११
लाजामण्ड	... ... ६११
अजीर्ण से उत्पन्न हुए ज्वर पर काथ	६११
सन्निपात पर काढ़ा	... ... ६१२
सन्निपात पर कायफलादि काथ	... ६१२
वातरक्त पर गुडूच्यादि काथ	... ६१२
श्वेत दाग जाने का काढ़ा	... ६१२
वातरक्त कुष्ठ पर लघुमञ्जिष्ठादि काथ	६१३
सर्व कुष्ठवृद्धि पर मञ्जिष्ठादि काथ	६१३
शिरःशूल, नेत्रपर हरीतकी काथ	... ६१३
नेत्ररोग पर अरूसादि काथ	... ६१३
तद्पर पिप्पल्यादि क्वाथ	... ६१४
सन्निपात पर अन्यकाढ़ा	.... ६१४
सन्निपात पर चित्रकादि काढ़ा	... ६१४
अतीसार पर काढ़ा	... . ६१४
प्रसूति पर काढ़ा	... ... ६१५

विषय	पृष्ठ
श्वेत कुष्ठ पर काढ़ा	... ... ६१५
ज्वर पर काथ	... ... ६१५
क्रम से वात, पित्त, कफज्वर पर काथ	६१५
अन्य काथ तीन प्रकार के	... ६१६
ज्वर में मुख का कड़ापन जाने का काथ	... ... ६१६
मुखरोग व खांसीपर काथ	... ६१६
बुद्धिभ्रंश, पसीना, शीत व अनर्थ बोलने पर काथ	.... ६१७
प्रसूता वातव्याधिहरण काथ	... ६१७
सकल सन्निपात पर काथ	... ६१७
हिचकी, प्यास, वमन व जलन पर काथ	... ... ६१८
पञ्चमूलादि काथ, शोकातीसार काथ, श्वासहरण काथ, कास-हरण काथ	... ... ६१८
बालातीसार में काथ	... ... ६१९
फाण्ट विधि	... . ६१९
पित्तज्वर पर मधूक फाण्ट	... ६१९
प्यास पर आम्रादि फाण्ट	... ६१९
पैत्तिक तृषा पर मधूक फाण्ट	... ६१९
मन्थ फाण्ट भेद	... ... ६१९
उबकाई पर मसूरादि मन्थ	... ६२०
तृष्णा पर यवमन्थ	... ... ६२०
हेमविधि	... . ६२०
रक्तपित्त पर आम्रादि हेम	... ६२०
तृष्णा पर मरीच्यादि हेम	... ६२०
पित्त पर नीलकमलादि हेम	... ६२०
जीर्णज्वर पर गुडूच्यादि हेम	... ६२०
रक्तपित्तपर धनियां हेम...	... ६२१
कल्कविधि	... ... ६२१
पाण्डु पर वर्धमान पीपल	... ६२१
घाव पर निम्बकल्क	... .. ६२१
गृध्रसी पर बकायनकल्क	... ६२१
वातरोग पर दूसरा कल्क	... ६२१
ऊरुस्तम्भ पर पिप्पल्यादिकल्क	.. ६२२
परिणामशूल पर विष्णुक्रान्ताकल्क	६२२
रक्तार्श पर चिरचिरादि कल्क	६२२
रक्तातीसार पर बेरकल्क	... ६२२
रक्तक्षयपर लाहीकल्क...	... ६२३

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

विषय	पृष्ठ
रक्तप्रदरपर चौराईकल्क ...	६२३
अतीसार पर अङ्कोलकल्क	६२३
विषपर खिरसा कल्क ...	६२३
दीपन पाचनपर हरीतकीकल्क	६२३
कृमिपर निशोतकल्क ...	६२३
चूर्णविधि—	
नवदुर्गा चूर्ण ...	६२३
दूसरा चूर्ण ...	६२४
तीसरा चूर्ण ...	६२४
बाई का चूर्ण ...	६२४
दूसरा चूर्ण ...	६२४
अग्निदीपक चूर्ण ...	६२५
नागरादि चूर्ण ...	६२५
अमृत चूर्ण ...	६२५
ज्वरका चूर्ण ...	६२५
आमवात व शूल का चूर्ण ...	६२५
हिंग्वष्टक चूर्ण ...	६२५
वायु का चूर्ण ...	६२६
वायु का दूसरा, तीसरा चूर्ण ...	६२६
सुदर्शन चूर्ण ...	६२६
लवंगादि चूर्ण, भास्कर चूर्ण, चन्द-नादि चूर्ण, गंगाधर चूर्ण ...	६२७
नागकेसरादि चूर्ण, दूसरा चूर्ण, पुरुष चूर्ण, कर्पूरादि चूर्ण... ...	६२८
तालीसादि चूर्ण, अजवायनादि चूर्ण, वायखाण्डव चूर्ण, एलादि चूर्ण	६२९
सरस्वती चूर्ण, सिद्धार्थ चूर्ण, पेट के दुःख का चूर्ण, निम्बादिक चूर्ण, शृंगादिक चूर्ण	६३०
पथरीमूत्रकृच्छ्र का चूर्ण, अग्निमुख चूर्ण, भगन्दरविजय चूर्ण ...	६३१
अतीसार का चूर्ण, संग्रहणी व अती-सार का चूर्ण	६३२
वायुशूल का चूर्ण, कालचूर्ण का विधि, शीतज्वर का चूर्ण, तालीसादि चूर्ण	६३२
तुम्बरु आदि चूर्ण, गुडूच्यादि चूर्ण, तालीसादिचूर्ण, अतीसारपरचूर्ण, तेरहों सन्निपात पर सिद्धार्थचूर्ण	६३३
आमातीसार पर चूर्ण	६३४
द्वितीय चूर्ण	६३४

विषय	पृष्ठ
सर्वरोगपर हिंग्वष्टक चूर्ण ...	६३४
दूसरा हिंग्वष्टक चूर्ण	६३४
सर्वरोगपर द्वितीय तालीसादि चूर्ण	६३४
सर्वप्रमेहों पर मिरचादि चूर्ण, पुष्टि-करण चूर्ण	६३५
मधुयष्टी चूर्णविधि, प्रमेहनाशन चूर्ण, खण्डादि चूर्ण, असगन्धादि चूर्ण	६३६
प्रसूतिका चूर्ण, श्वेतकुष्ठ का चूर्ण, लाही चूर्ण	६३७
बृहन्निम्बादि चूर्ण, त्रिकुटादि चूर्ण,	६३८
रुचिक्यादि चूर्ण, शुण्ठ्यादि चूर्ण	६३८
बृहद्वडवानल चूर्ण, अमलोत्तम लवण भास्कर चूर्ण	६३९
संचलक्रिया	६३९
वायुशूलका चूर्ण, सामुद्र चूर्ण, पाचक चूर्ण, चित्रादि चूर्ण, कण्टक चूर्ण, मन्दाग्निनाशक चूर्ण	६४०
कण्डूनाशन चूर्ण, प्लीहानाशक चूर्ण, अग्निकर चूर्ण, अफरेका चूर्ण, हड़क्रिया	६४१
अपूर्व चूर्ण, ज्वर पर पीपल चूर्ण ...	६४२
प्रमेहपर त्रिफला चूर्ण, त्रिकुटा चूर्ण, कफादि पर पञ्चकोल चूर्ण ...	६४२
त्रिगन्ध चूर्ण, जीवनीयगण, विड्मूत्र पर लवणपञ्चक चूर्ण, वृद्ध सुद-र्शन चूर्ण...	६४३
कासश्वासज्वर पर त्रिफलादि चूर्ण	६४४
कफज्वरपर कायफलादि चूर्ण, बालक को खांसी व ज्वरपर काकड़ा-शिंगी आदि चूर्ण, आमातीसार पर शुण्ठ्यादि चूर्ण, आमवात पर हरीतक्यादि चूर्ण	६४४
सर्वातीसार पर लघुगङ्गाधर चूर्ण, अतीसार पर अन्य वृद्ध गंगाधर चूर्ण, ग्रहणी पर कपित्थाष्टक चूर्ण, ग्रहणी पर दाडिमाष्टक चूर्ण ...	६४५
अतीसार पर वृद्धदाडिमाष्टक चूर्ण, सुकुमार लवङ्गादि चूर्ण, जातीफ-लादि चूर्ण	६४६
अरुचि पर महाखाण्डव चूर्ण ...	६४७

In Public Domain, CC-0. Indira Gandhi National Centre for the Arts, New Delhi.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

विषय	पृष्ठ
उदररोगपर नारायणचूर्ण व अनुपान	६४७
अजीर्णपर हबुषादि चूर्ण ...	६४८
शूलादिपर पञ्चसमचूर्ण, नाराच चूर्ण, प्लीहादि पर लवण त्रितयादि चूर्ण	६४८
शूलपर तुम्बुरुआदि चूर्ण ...	६४९
मन्दाग्निपर चित्रकादि चूर्ण, मन्दाग्नि पर अग्निदीपन चूर्ण, वातादि पर अजमोदचूर्ण	६४९
शूलादि पर हिंग्वादि चूर्ण, अरुचिपर जवानीखांड़ चूर्ण, अरुचिपर तालीसादि चूर्ण	६५०
कासक्षय पित्तादिपर सितोपलादि चूर्ण	६५०
ग्रहणीगुल्मपर लवणभास्कर चूर्ण, वात-पित्त कफच्छर्दि पर पलादि चूर्ण, कुष्ठपर निम्बचूर्ण ...	६५१
पुष्टिपर शतावरि, अश्वगन्धादिचूर्ण	६५२
धातुवृद्धिपर नवायसादि चूर्ण ...	६५२
स्तम्भनपर अकरकरादि चूर्ण ...	६५२
चन्द्रकलाभिध चूर्ण	६५३
अन्य २ चूर्ण	६५३
अन्य २ चूर्ण, चिन्तामणि चूर्ण ...	६५४
अन्य ३ चूर्ण	६५४
लोलिंबराज चूर्ण	६५४
अमलवेत चूर्ण ...	६५५
संचूलक्रिया	६५५
वटिका-मोदकादि विधान—	
वटी कल्पना...	६५५
अर्शपर इन्द्रारुकी गुटिका ...	६५६
कासपर मरिचादि गुटिका ...	६५६
श्वासपर गुड़ादि गुटिका ...	६५६
प्लीहपर आंवलादि वटी ...	६५६
सन्निपातपर संजीविनी गुटिका ...	६५७
पीनसादिपर त्रिकुटादि वटी ...	६५७
अर्शपर वृद्धदारुमोदक व सूरनवटिका	६५७
कामलादिपर मण्डूरवटी ...	६५८
चन्द्रप्रभा गुटिका	६५८
गुल्मपर कांकायन गुटिका ...	६५८
वातरोगपर कैशोर गुग्गुल ...	६५९

विषय	पृष्ठ
भगन्दरपर त्रिफला गुग्गुल ...	६६०
प्रमेह पर गोक्षुरादि गुग्गुल ...	६६०
कुष्ठपर त्रिफलामोदक	६६०
गण्डमालापर कचनार गुग्गुल ...	६६०
धातुपुष्टपर माषादि मोदक ...	६६१
सूरन वटिका व आदित्यवटी ...	६६१
कासश्वासपर गुटिका, लवङ्गादि गुटिका	६६२
सन्निपात पर गोली	६६२
सन्निपात पर दूसरी गोली ...	६६२
अन्य वटिका	६६२
दाहयुक्त अतीसारपर गोली ...	६६३
अतीसारपर लीलावती गोली ...	६६३
अजमोदादि गुटिका ...	६६३
अपर अजमोदादि गुटिका पुष्टिपर...	६६३
आमवातपर जमालगोटे की गोली ...	६६४
भूख बढ़ने की गोली	६६४
कफ व भूखपर चित्रकादि गोली ...	६६४
मुखपाकपर खैरसार गोली ...	६६५
पाचक की गोली	६६५
शङ्खवटी	६६५
गन्धकवटी	६६६
लेपन विधान—	
दोषघ्न लेप, दशाङ्ग लेप, विषघ्न लेप	६६६
अन्य लेप, कान्तिकारक लेप ...	६६७
तरुण पिटिकापर लेप	६६७
पुनः तरुण पिटिकापर लेप, व्यङ्गरोग पर लेप, मुख की झाईंपर लेप ...	६६७
रूखीपर लेप, दारुण रोग पर लेप, इन्द्रलुप्तपर लेप	६६८
केशवर्धन लेप, बालों के उगने का लेप, इन्द्रलुप्तपर द्वितीय लेप, कृष्णकरण लेप	६६८
लोमशातन प्रकार—	
बाल गिराने का लेप	६६९
सफ़ेद कुष्ठपर लेप	६६९
सेहुआंपर लेप	६७०
नेत्रपर लेप	६७०
खुजलीपर लेप, सूखी खाजपर लेप...	६७०

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

विषय	पृष्ठ
रक्तपित्तपर लेप, उदररोगपर लेप, वातविसर्प पर लेप, पित्तविसर्प पर लेप	६७१
कफविसर्पपर लेप, पित्त वातरक्त पर लेप, नाकरक्तस्रावपर लेप ...	६७१
वातज शिरपीड़ापर लेप, पित्तज शिरोरोगपर लेप, कफसंभव शिर-पीड़ापर लेप, सूर्यावर्त पर लेप, शङ्खक अनन्तवात व शिरोरोग पर लेप, पित्तशोथपर लेप ...	६७२
कफशोथपर लेप, आगन्तुक व रक्त-शोथपरलेप, व्रण पकानेपरलेप व्रण फोड़ने पर लेप, व्रणशोधन लेप, पुनः व्रणशोधन पर लेप ...	६७३
कृमिनिवारण लेप, व्रणशोधन रोपण पर लेप, पेटपीड़ा पर नाभिलेप, वातविद्रधि पर लेप	६७४
पित्तविद्रधिपर लेप, कफविद्रधि पर लेप, आगन्तुकविद्रधि पर लेप वातज गलगण्ड पर लेप ...	६७४
कफज गलगण्ड पर लेप, अपची पर लेप, गण्डमाला-अर्बुद व गल-गण्ड पर लेप, अपबाहुक पर लेप...	६७५
फ़ीलपाँव पर लेप, उपदंश पर लेप, कुरण्डरोगपर लेप	६७५
अग्निदग्ध पर लेप, योनिसंकीर्ण लेप, पुरुष की इन्द्रिय कठोर करने का लेप, योनिद्रव लेप	६७६
देहदुर्गन्धनिवारण लेप	६७६
वशीकरण लेप	६७७
षड्ऋतुवर्णन—	
षड्ऋतुवर्णन	६७७
छओं ऋतुओं में वातादिका संचय, प्रकोप, शान्ति	६७७
वात, पित्त, कफकोपकारी आहार व विहार	६७८
हिम, शिशिर ऋतु के आहार व विहार	६७८
वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा ऋतु के आहार व विहार	६७९
वर्षा में कुपथ्य व शरद् के आहार व विहार	६७९
दिनचर्यानिरूपण	६८०
स्नान के गुण	६८०
रात्रिचर्यानिरूपण	६८२
प्राणहारक षड्वस्तुओं का वर्णन ...	६८३
तत्काल आनन्ददायक षड्वस्तु ...	६८३
षड् ऋतुओं में स्त्री संभोग ...	६८३
इतनी स्त्रियों से संभोग न करे ...	६८३
भययुक्तादि पुरुषों को नहीं मैथुन करना	६८३
अतिमैथुन से अनेक रोगों का होना	६८४
कलाआदिकों का निरूपण ...	६८४
कला का स्वरूप	६८४
सात आशयों का निरूपण ...	६८५
सात धातुओं का वर्णन ...	६८५
सात उपधातुओं का निरूपण ...	६८५
सात त्वचाओं का निरूपण ...	६८६
तीनों दोषों का स्वरूप... ...	६८६
पित्त, कफ का स्वरूप	६८७
स्नायुओं, हाड़ों, मर्मस्थानों, नसों व धमनी नाड़ी का स्वरूप ...	६८७
मांसकी पिण्डी का स्वरूप ...	६८८
कण्डरा का स्वरूप	६८८
रसरन्त्रों का स्वरूप	६८८
सृष्टि के उपजाने का कथन ...	६८९
दश इन्द्रियों का स्वरूप ...	६९०
पञ्चतन्मात्राओं का निरूपण ...	६९०
ज्ञानेन्द्रियों का विषय	६९०
कर्मेन्द्रियों का विषय	६९०
प्रकृतिनाम	६९०
आहार, परिपाक, गर्भ की उत्पत्ति और बालक के पोषणादिका लक्षण	६९१
बालक को औषध देने की मात्रा ...	६९२
वायुकी प्रकृति का लक्षण	६९३
पित्तकी प्रकृति का लक्षण ...	६९३
कफकी प्रकृति का लक्षण ...	६९४
मेद व शरीर का संक्षेप निरूपण ...	६९४

इति श्रीशङ्खिधरसुकुलसंकलितममृतसागरस्य सूचीपत्रं समाप्तिं पफाणेति शम् ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

इस ग्रन्थ की प्रसिद्ध-प्रसिद्ध औषधों का सूचीपत्र।

रस।

नाम रस	पृष्ठ
शीतभञ्जी रस	२१
उन्मत्त रस	२६
भैरवाञ्जन रस	२६
पञ्चवक्त्र रस	२७
स्वच्छन्दभैरव रस	२७
चिन्तामणि रस	३४
कालारि रस	३५
त्रिपुरभैरव रस	३५
संज्ञाकरण रस	३६
ब्रह्मास्त्र रस	३६
ज्वरांकुश रस	४०
वसन्तमालिनी रस	४१
गन्धार रस	५४
संग्रहणीकपाट रस	५८
बीजबोलबद्ध रस	६५
कुठार रस	६७
शिवजी के मत से लोह-सार रस	६७
पर्पटी रस	६९
क्रव्यादि रस	७५
ज्वालानल रस	७६
रामबाण रस	७६
क्षुद्रबोध रस	७७
अजीर्णकण्टक रस	७७
क्षुधासागर रस	७८
अमृतहरीतकी रस	७८
अग्निकुमार रस	८०
पुनर्नवादि मण्डूर रस	८५
राजमृगाङ्क रस	९३
कुमुदेश्वर रस	९३
कपर्दिकेश्वर रस	९५
शुद्ध शिलाजीत	९५
पञ्चामृत रस	९७
आनन्दभैरव रस	१०४
श्वासकुठार रस	१०९
सूर्यावर्त रस	११०
महोदधि रस	११०
अमृतार्णव रस	११०
मेघडम्बर रस	१११
अग्निकुमार रस	११५
चन्द्रकला रस	१३१
महानाराच रस	१५५
विजयभैरव रस	१७३
वातारि रस	१७३
समीरपन्नग रस	१७४
समीरगजकेसरी रस	१७४
वृद्धचिन्तामणि रस	१७४
राक्षस रस	१७५
वंगेश्वर रस	१७५
आमवातारि रस	१८१
वातेश्वर रस	१८३
तालकेश्वर रस	१८९
शूलगजकेसरी रस	१९५
गन्धकरसायन रस	१९५
तारामण्डूर रस	१९६
शूलगजकेसरी रस	१९७
अग्निमुख रस	१९७
शंखवटी रस	१९७
शूलदावानल रस	१९८
नाराच रस	२०३
त्रिद्याधर रस	२१०
गुग्गुलकुठार रस	२१०
वंगेश्वर रस	२१२
तक्रसंधान रस	२१५
कूष्माण्ड रस	२२२
लघुलोकेश्वर रस	२२२
वंगेश्वर रस	२४२
मेघनाद रस	२४४
हरिशंकर रस	२४४
प्रमेहकुठार रस	२४४
तालक रस	२४६
वडवानल रस	२४७
उदरारि रस	२५६
उदयभास्कर रस	२५७
रूपराज रस	३०२
रविसुन्दर रस	३०२
गलितकुष्ठारि रस	३१८
फिरंगगजकेसरी रस	३३९
मृगाङ्क रस	४९६
रूप रस	४९७
ताम्रेश्वर रस	४९९
नागेश्वर रस	५०३
वंगेश्वर रस	५०४
सार रस	५०६
अभ्रक रस	५०७
चन्द्रोदय रस	५१५
कनकसुन्दर रस	५२२
वडवानल रस	५२२
वह्नि रस	५२२
शंखला रस	५२३
शंखद्राव रस	५२३
शीतारि रस	५२३
ज्वरांकुश रस	५२७
ज्वरारि रस	५२७
शीतज्वरारि रस	५२८
लंकनाथ रस	५२८
मृगाङ्कपोटली रस	५३०
हेमपाटली रस	५३१
हेमगर्भ रस	५३१
आनन्दभैरव रस	५३२
लघुसूचिकाभरण रस	५३२
जलबुन्द रस	५३२
पञ्चवक्त्र रस	५३३
उन्मत्त रस	५३३
नाराच रस	५३३
इच्छाभेदी रस	५३३
राजमृगाङ्क रस	५३४
खराग्नि रस	५३४
स्वयमग्नि रस	५३४
सूर्यावर्त रस	५३४
द्वितीय स्वच्छन्द भैरव रस	५३५
त्रिविक्रम रस	५३५
महाहरतालेश्वर रस	५३५
कुष्ठकुठार रस	५३६
उदयादित्य रस	५३६
सर्वेश्वर रस	५३७

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

नाम रस	पृष्ठ
मेहबद्ध रस	५३७
वन्य रस	५३७
विद्याधर रस	५३८
त्रिनेत्र रस	५३८
गजकेसरी रस	५३८
अधितुण्डी रस	५३८
अजीर्णकंटक रस	५३९
मांपानभैरव रस	५३९
वातनाशक रस	५३९
कनकसुन्दर रस	५३९
भैरव रस	५४०
ग्रहणीकपाट रस	५४०
वज्रकपाट रस	५४१
मदनकामदेव रस	५४१
कन्दर्पसुन्दर रस	५४२
लोहरसायन रस	५४२

इति।

—:०:—

गुटिका।

नाम गुटिका	पृष्ठ
मृतसञ्जीवनी गुटिका	३४
अभ्रक गुटिका	५८
बृहत्सारण मोदक गुटिका	६२
प्राणदा गुटिका	६६
लवङ्गामृत गुटिका	७८
संजीवनी गुटिका	८०
एलादि गुटिका	८९
शृङ्गाराभ्रक गुटिका	९६
कर्पूरादि गुटिका	१०३
अमृतनाम गुटिका	१७४
हरताल गुटिका	१७५
आमवातारि गुटिका	१८१
चित्रकादि गुटिका	१९४
शूलनाशक गुटिका	१९४
कूटादि गुटिका	१९४
शूलगजकेसरी गुटिका	१९५
सौवर्चलादि गुटिका	१९६
हिंग्वादि गुटिका	१९६
कांकायन गुटिका	२०९
चन्द्रप्रभा गुटिका	२४१
पञ्चानन गुटिका	२४३
संप्रसारण गुटिका	३३८
लेखनी गुटिका	३८३
रोपणी गुटिका	३८४
स्नेह गुटिका	३८४
रसाञ्जन गुटिका	३८५
नयनामृत गुटिका	३८९
चन्द्रोदय गुटिका	३९०
चन्द्रप्रभा गुटिका	३९०
व्योषादि गुटिका	४०२
भद्रमुस्तादि गुटिका	४०८
वानरी गुटिका	४७२
मदनमञ्जरी गुटिका	४७३
लिङ्गार्जुन गुटिका	४७४
ज्वरघ्न गुटिका	५२८
इन्द्रारुणी गुटिका	६५६
मरिचादि गुटिका	६५६
गुड़ादि गुटिका	६५६
संजीवनी गुटिका	६५७
मण्डूर वटी	६५८
चन्द्रप्रभा गुटिका	६५८
कांकायन गुटिका	६५८
अजमोदादि गुटिका	६६३

इति।

चूर्ण।

नाम चूर्ण	पृष्ठ
षोडशाङ्ग चूर्ण	४०
निम्बादि चूर्ण	४२
सुदर्शन चूर्ण	४२
लघु गंगाधर चूर्ण	५२
लाही चूर्ण	५६
कपित्थाष्टक चूर्ण	५९
विजयनाम चूर्ण	६६
हिंग्वष्टक चूर्ण	७४
अग्निमुख चूर्ण	७४
वैश्वानर चूर्ण	७४
लवणभास्कर चूर्ण	७४
वडवानल चूर्ण	७५
क्रव्यादि चूर्ण	७८
राजवल्लभ चूर्ण	७९
जीरकादि चूर्ण	७९
अजमोदादि चूर्ण	७९
कर्पूरादि चूर्ण	९३
महाताजीसादि चूर्ण	९५
शुंठ्यादि चूर्ण	९६
लवङ्गादि चूर्ण	९६
द्वितीय एलादि चूर्ण	१०७
चव्यादि चूर्ण	११३
दाडिमादि चूर्ण	११५
बृहदेलादि चूर्ण	११५
सारस्वत चूर्ण	११७
विश्वाद्य चूर्ण	१३८
अजमोदादि चूर्ण	१७९
कूष्माण्डक्षार चूर्ण	१९३
पञ्चसम चूर्ण	१९३
शूलनाशन चूर्ण	१९४
नारायण चूर्ण	२०३
हिंग्वादि चूर्ण	२०७
वज्रक्षार चूर्ण	२०८
हिंगुद्वादश चूर्ण	२११
वचादि चूर्ण	२११
हरीतक्यादि चूर्ण	२१८
न्यग्रोधाद्य चूर्ण	२४०
प्रमेहारि चूर्ण	२४१
कूटादि चूर्ण	२५३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

नाम चूर्ण	पृष्ठ	नाम चूर्ण	पृष्ठ	नाम चूर्ण	पृष्ठ
नारायणचूर्ण	२५५	पीनस दूर होने का चूर्ण	४०३	प्रकार के गुणकारी चूर्ण ६२३ से ६५५ तक	
उदरामयहर चूर्ण	२५६	प्रतिसारण चूर्ण	५५४	इति।	
पिप्पल्यादि चूर्ण	२७३	अनेक रोगों पर सर्व		—:०:—	
अम्लपित्त चूर्ण	३२८				

क्वाथ।

नाम क्वाथ	पृष्ठ	नाम क्वाथ	पृष्ठ	नाम क्वाथ	पृष्ठ
पञ्चभद्र क्वाथ	२१	कणादि क्वाथ	२०६	पुनर्नवादि क्वाथ	२६१
बृहत् क्षुद्रादि क्वाथ	४०	गोक्षुरादि क्वाथ	२२०	लघुमञ्जिष्ठादि क्वाथ	३१६
आरग्वधपञ्चक क्वाथ	४४	हरीतक्यादि क्वाथ	२२१	मध्यमंजिष्ठादि क्वाथ	३१६
दशमूल क्वाथ	४४	तृणपञ्चक क्वाथ	२२१	बृहन्मंजिष्ठादि क्वाथ	३१७
महारास्नादि क्वाथ	१७०	शुण्ठ्यादि क्वाथ	२३०	अनेक रोगों पर सर्व प्रकार के गुणकारी क्वाथ ५९४ से ६१९ तक	
द्वितीय महारास्नादि क्वाथ	१७९	एलादि क्वाथ	२३०		
		पथ्यादि क्वाथ	२६०		

अवलेह।

नाम अवलेह	पृष्ठ	नाम अवलेह	पृष्ठ	नाम अवलेह	पृष्ठ
कूष्माण्डावलेह	८९	गुडाद्यमण्डूर	१९५	लेह	२३०
च्यवनप्राशावलेह	९४	तारामण्डूर	१९५	भटकटैयाअवलेह	५६८
अदरकअवलेह	९७	क्षाराष्टक	२०७	द्वितीय च्यवनप्राशावलेह	५६८
कटेलीअवलेह	१०३	क्षार के पट्टे का आसव	२०८	कफज्वर अवलेह	५७०
भारंगीअवलेह	१०९	सीपप्रयोग	२०९	श्वासनाशक अवलेह	५७१
कल्पका अवलेह	१५१	वरणादि गुड़का अव·			

तैल।

नाम तैल	पृष्ठ	नाम तैल	पृष्ठ	नाम तैल	पृष्ठ
लाक्षादि तैल	४१	बृहत्सैन्धवादि तैल	१८०	मनःशिलादि तैल	३५२
प्रसारणी तैल	१४९	अमृतादि तैल	२६९	मूषक तैल	३५३
माषादि तैल	१५४	चक्रमर्दन तैल	२७०	षड्बिन्दु तैल	३६०
महाबला तैल	१६२	गुंजा तैल	२७०	बिल्व तैल	३९५
ग्रन्थकादि तैल	१६५	चन्दनादि तैल	२७०	व्याघ्र तैल	४०३
नारायण तैल	१६९	शुण्ठ्यादि तैल	२७०	शिग्रु तैल	४०३
अष्टांग तैल	१७०	निर्गुण्डी तैल	२९७	सहचरादि घृत तैल	४०८
विषगर्भ तैल	१७१	लघुमरिचादि तैल	३१७	चन्दनादि तैल	४७२
लक्ष्मीविलास महासुगन्ध तैल	१७१	मरिचादि तैल	३१७	अनेक प्रकार के गुणकारी तैल ५८४ से ५९३ तक	
विजयभैरव तैल	१७२	अर्क तैल	३२०		
		कक्षराक्षसनाम तैल	३२०		

घृत।

नाम घृत	पृष्ठ	नाम घृत	पृष्ठ	नाम घृत	पृष्ठ
कल्याण घृत	१३८	कुलत्थाद्य घृत	२३१	भूनिम्बादि घृत	३०४
सारस्वत घृत	१५०	नाराच घृत	२५५	मृत्युपाशच्छेद घृत	४३०
शुष्कमूलकाद्य घृत	२०३	बिन्दु घृत	२५७	फल घृत	४४२
महारोचक घृत	२१५	जात्यादि घृत	२८९	क्षार घृत	५७८
धान्यगोक्षुर घृत	२२६	सिक्थादि घृत	२९०	अनेक रोगोंपर अनेक घृत ५७८ से ५८४ तक	
चित्रकाद्य घृत	२२७	स्वर्जिका घृत	२९७		

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

गूगल।

नाम गूगल	पृष्ठ	नाम गूगल	पृष्ठ	नाम गूगल	पृष्ठ
त्रयोदशांग गूगल	१५७	किशोर गूगल	१८८	नवकाषिक गूगल	३०१
योगराज गूगल	१६९	गोक्षुरादि गूगल	२२२	स्वायम्भुव गूगल	३१४
व्याधिशार्दूल गूगल	१८१	अमृत गूगल	२४८	द्वितीय किशोर गूगल	३१५
द्वात्रिंशक गूगल	१८२	कचनार गूगल	२६९	इति।	
सिंहनाद गूगल	१८२	अमृतादि गूगल	२९०	——	

पाक।

नाम पाक	पृष्ठ	नाम पाक	पृष्ठ	नाम पाक	पृष्ठ
लहसुन पाक	१७६	पंचजीरक पाक	४५०	वासापुटपाक	५९७
शुण्ठी पाक	१७९	सौभाग्यशुण्ठी पाक	४५१	भटकटैया पुटपाक	५९७
मेथी पाक	१८०	रतिवल्लभपूगी पाक	४७१	विभीतपुटपाक	५९७
हरिण के सींग का पुट-पाक	२१७	मूसली पाक	५४४	शुण्ठीपुटपाक	५९७
सुपारी पाक	२४२	कुरैया पुटपाक	५९६	शूरणपुटपाक	५९८
गोखुरू पाक	२४३	अन्य पुटपाक	५९७	हरिणशृंगपुटपाक	५९८
		बिजौरापुटपाक	५९७	इति।	

गोली।

नाम गोली	पृष्ठ	नाम गोली	पृष्ठ	नाम गोली	पृष्ठ
अग्नितुण्डावली गोली	७६	मदनफलवर्त्ति	२०३	जमालगोटा की गोली	६६४
गन्धक वटी	७९	गुडाष्टक	२०३	क्षुधावृद्धि गोली	६६४
मधुपक्व हड़	९६	हरिद्राखण्ड	३२१	चित्रकादि गोली	६६४
अगस्त्य हड़ की विधि	९८	मलहर मलहम	३३९	खैरसारादि गोली	६६५
लवङ्गादि गोली	१०१	बिच्छू का मन्त्र	४३१	पाचक गोली	६६५
शूलदावानल गोली	१९४	सन्निपातनाशक गोली	६६२	शंखवटी	६६५
शंखद्राव	१९५	दाहयुक्त अतीसार-नाशक गोली	६६३	गन्धकवटी	६६६
बीजपूरादि योग	१९६	लीलावती गोली	६६३	इति।	
हिंग्वादिफलवर्त्ति	२०२			——	

लेप।

नाम लेप	पृष्ठ	नाम लेप	पृष्ठ	नाम लेप	पृष्ठ
कफवायु की सूजन दूर करने का लेप	२८३—२८४	का लेप	२८७	६६६ से ६६७ तक इति।	
व्रणके शोथ दूर करने का लेप	२८५	दशांग लेप	३३२		
व्रण के कृमि दूर करने		सूतक लेप	३३८	अनेक रोगों पर बहुत से फाण्ट, मन्थ और कल्क ६१९ से ६२३ तक हैं।	
		लेपन विधान जिसमें अनेक प्रकार के रोगों पर लेप हैं			

इति।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अमृतसागर ॥

श्रीमन्महाराजाधिराज महाराज राजेन्द्र महाराज श्रीसवाई प्रतापसिंहजी ने संसार की भलाई के विचार से मनुष्यों के रोग दूर करने के लिये कृपापूर्वक चरक, सुश्रुत, वाग्भट्ट, भावप्रकाश और आत्रेय प्रभृति वैद्यक के समस्त ग्रन्थों का सार लेकर जयपुर की बोली में अमृतसागर की रचना की; जिसमें संक्षेप से रोगों के निदान भी हैं। उसीको हिन्दीभाषा में अनेक प्रकार की अनुभूत ओषधियों के विचारपूर्ण यत्नों सहित लिखते हैं ॥

अथ प्रथम रोगविचार ॥

अनेक प्रकार की पीड़ा को रोग कहते हैं। रोग दो प्रकार के हैं। एक कायिक, दूसरे मानसिक। काया में रहे सो कायिक, उसका नाम व्याधि है। मनमें रहे सो मानसिक, उसका नाम आधि है। ये दोनों शरीर में किसी प्रकार के कुपथ्य से वात, पित्त, कफरूप दोष और मिथ्याहार-विहार के होने से सब रोगों को उपजाते हैं। वात, पित्त, कफ कई प्रकार के कुपथ्य से बिगड़कर देह को बिगाड़ते हैं और येही अच्छे प्रकार पथ्य के सेवन से शरीर को पुष्ट भी करते हैं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ प्रथम सर्वरोगों की परीक्षा ॥

नाड़ीपरीक्षा १, मूत्रपरीक्षा २ और रोगों के वृत्तान्त आदि से रोगों की परीक्षा तीन प्रकार की है और रोगों के निदान से भी इन तीनों प्रकार के रोगों का ज्ञान होता है ॥

अथ नाड़ीपरीक्षा ॥

पुरुष रोगी होय तो उसके दाहिने हाथ की और स्त्री रोगिणी होय तो उसके बायें हाथकी नाड़ी देखे परन्तु वैद्यको उचित है कि एकाग्र और प्रसन्नचित्त होकर विचारपूर्वक रोगी के हाथ को हिलने न दे इसी प्रकार अंगूठे के समीप धमनी नामक जीवकी साक्षी नाड़ी है वह जीव के सब दुःख सुखको बताती है, उसको वैद्य अच्छे प्रकार अपनी तीन अंगुलियों से देखे; जैसे राग के जाननेवाले को वीणाकी तांत से सब राग विदित होजाते हैं, इसीप्रकार नाड़ी भी शरीर के सब दुःख सुख को बताती है। और जो तत्काल स्नान करके आया हो, तत्काल भोजन किया हो, शरीर में तेल लगाया हो, सोते से उठा हो, दौड़ता आया हो और भूखा, प्यासा, कामातुर, मल मूत्र आदि से वेगयुक्त हो उस पुरुष की नाड़ी ग्रन्थ के मत से नहीं देखनी चाहिये। यदि देखे तो वैद्यको रोगीके रोगका यथार्थ ज्ञान नहीं होता है। जैसे वैद्य रोगी के हाथ की नाड़ी देखे तैसेही रोगी के पैरकी भी नाड़ी देखे। शास्त्र की परिपाटी और अपनी बुद्धि के प्रभाव से जैसे जौहरी अपने अभ्यास के बल से हीरा आदि रत्नों के सच्चे झूठे और मोल को कह देता है तैसेही सद्वैद्य भी शास्त्र के अभ्यास के बल से रोगी के रोग की साध्यता और असाध्यता और शरीर के दुःख सुख की चेष्टा को जान लेता है ॥

अथ नाड़ी की पहिंचान ॥

अंगूठे से लगी हुई तीन अंगुलियों में पहिली अंगुली के नीचे वायुकी मुख्य नाड़ी चलती है। बीच की अंगुली के नीचे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पित्तकी और पिछली अंगुली के नीचे कफकी नाड़ी चलती है। जैसे सर्प जोंक आदि जीव टेढ़े चलते हैं तैसेही वायुकी नाड़ी भी बांकी और तिरछी चलती है और जैसे काक, कुलंग, मेंढक आदि फुदकते और शीघ्रतायुक्त चलते हैं तैसेही पित्तकी नाड़ी उतावली और फुदकती चलती है और जैसे राजहंस, मोर, बतक, मुर्गा, कबूतर आदि जीव मन्द मन्द चलते हैं तैसेही कफ की नाड़ी भी मन्द मन्द चलती है और जो बारबार सर्प और मेंढककीसी गति चलै उसको वात पित्त की नाड़ी जानिये और जिस नाड़ी की सर्प और हंसकीसी गति हो उसको वात कफ की जानिये और वानर, मेंढक, हंस इन तीनोंकीसी गतिहो उसको पित्त कफ की जानिये और जैसे खाती चीरे हुए काष्ठको अत्यन्त वेगसे काटता है तैसेही जिस पुरुष की नाड़ी चलै और चलने से रहजाय और फिर चलनेलगे उस नाड़ी को सन्निपात की जानिये और मन्द मन्द टेढ़ीमेढ़ी व्याकुलतापूर्वक स्थिर अस्थिर हो वह धमनी नाड़ी जीवकी है, वही नाड़ी सूक्ष्म होजाने से पुरुष को मारै है उसी नाड़ी को सन्निपातकी जानिये और जिस पुरुष के ज्वरका कोप होय उसकी नाड़ी बहुत गरम और जल्दी जल्दी चलै है और जिस रोगी की नाड़ी एक ढंग से अपने स्थान पर चले वह रोगी नहीं मरता और कामातुर पुरुष की नाड़ी शीघ्रतायुक्त चलती है क्रोधी की और चिन्तावान् पुरुष की नाड़ी क्षीण चलती है और कई प्रकारसे भयभीत हुए पुरुष की नाड़ी महाक्षीण चलती है और मन्दाग्नि और क्षीणधातुवाले पुरुष की नाड़ी महामन्द चलती है और रुधिर के विकारवाले पुरुष की नाड़ी कुछएक गरम और भारी चलती है और जिस पुरुष के पेटमें आंवका विकार होवे तिसकी नाड़ी अत्यन्त भारी चलती है और जिस पुरुष को भूख बहुत लगी होय उसकी नाड़ी चपल होती है और जो पुरुष आहार बहुत करता हो उसकी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

नाड़ी हलकी और उतावली चलती है और जिस पुरुष ने भोजन किया होय उसकी नाड़ी धीमी चलती है और जिस पुरुष के मल का उत्पात हुआ हो उसकी नाड़ी बहुत उतावली चलती है सुखी मनुष्य की भी नाड़ी धीमी और बलयुक्त चलती है। नाड़ी की परीक्षा अनेक प्रकार की है, बुद्धिमान् सद्वैद्य अपनी बुद्धि से नाड़ी के द्वारा शरीर का सब दुःख सुख विचार ले, जैसे योगी को योग के अभ्यास करके ब्रह्म का साक्षात् ज्ञान होजाता है तैसेही सद्वैद्य को नाड़ी के अभ्यास करके शरीर के सब रोग और सुख दुःख का ज्ञान होजाता है-इति नाड़ी परीक्षा॥

अथ मूत्रपरीक्षा॥

वैद्य को उचित है कि चार घड़ीके तड़के रोगीको उठाकर कांच के सफ़ेद बासनमें अथवा कांसीके पात्र में प्रथम धार छोड़कर मुतावे पीछे उस बासनको कपड़े से ढककर रक्खे सूर्योदय होने के पीछे वैद्य उसकी परीक्षा करे। यदि रोगी का मूत्र पानी के सदृश हो, बहुत हो, कुछ एक नीला भी होय तो वायुके विकार का मूत्र जानिये। और जो मूत्र लाल कुसुम के सदृश होकर गर्म अथवा पीला टेसूके फूलके रंग के सदृश और थोड़ा उतरे तो गर्मी के रोग का मूत्र जानिये। जिस रोगी का ठण्ढा और सफ़ेद और चिकना मूत्र उतरे उसे कफ का रोगी जानिये और चार घड़ीके तड़के का रोगी का मूत्र चार घड़ी तक धूपमें रखने के पीछे वैद्य उसमें तेलकी बूंद डाले जो तेलकी बूंद मूत्रके ऊपर फैलजाय तो उस रोगी को साध्य जानिये और वह अच्छा होजाय और जो तेलकी बूंद मूत्र के ऊपर न फैले और स्थिर होकर रहजाय तो उस रोगीको कष्टसाध्य जानिये और जो वह बूंद मूत्रमें डूबजाय अथवा चक्र के सदृश घूमने लगे तो वह रोगी अवश्य मरे और जिस रोगीके मूत्रमें तेलकी बूंद पड़ते ही छिद्र हो जाय अथवा खड्ग व दण्ड व धनुष के सदृश तेलकी बूंदका आकार होजाय तो

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

वह भी रोगी अवश्यही मरे और रोगी के मूत्रके ऊपर तेल की बूंद तालाबके आकार होजाय अथवा हंस के आकार होय तथा पद्म, हस्ती, छत्र, चमर, तोरणके आकार बन्द होजाय तो वह रोगी नीरोग होय और जिसका मूत्र सरसोंके तेलके सदृश होय उसको वातपित्तका रोग जानिये और जिसका काला और बुद्बुदे लियेहुए होय तिसको सन्निपातका रोग जानिये और मूतते हुए जिस रोगी की लाल धार उतरे उसको महारोगी जानना और जिसकी धार काली निकले वह रोगी मरजाय और जिसके मूत्रमें बकरी के मूत्रकीसी बास आवे उसको अजीर्ण का रोग जानिये और जिसका मूत्र गर्म और लाल अथवा केसर सा पीला होय तिसको ज्वरका रोग जानिये और जिसका कुयें के पानीके सदृश मूत्र उतरे उसके लिङ्गरोग जानिये—इति मूत्रपरीक्षा ॥

अब रोगों का वृत्तान्त और प्रसङ्ग कहते हैं ॥

अथ रोगी की परीक्षा ॥

देखने, स्पर्श करने और पूछने से; तथा स्वप्न, दूत, शकुन, कालज्ञान, औषध, देश, काल, अवस्था तथा अग्निबल के विचार से एवं साध्य-असाध्य आदि प्रकारोंसे रोगी की परीक्षा करनी उचित है सो क्रमपूर्वक लिखते हैं। पीलिया आदि कई एक रोग तो रोगी के देखनेसे ही वैद्यको विदित होते हैं और ज्वर आदि कई एक रोग रोगी के स्पर्श किये बिना नहीं जाने जाते। उदरशूल, मस्तकपीड़ा, बवासीर, उपदंश अर्थात् गरमी, सूज़ाक, हौलदिल और भूतादिक का लगना, प्रमेह आदि कई एक रोग रोगी के विना कहे वैद्य यथार्थ नहीं जानसक्ता ॥

अथ स्वप्नपरीक्षा ॥

रोगी को ऐसे स्वप्न देखने अच्छे नहीं होते। जैसे कि रोगी स्वप्न में नंगा, मुण्डित, लाल और काला वस्त्र पहिरे हुए मनुष्य को देखे अथवा नकटा, बूचा और काले हथियार तथा फांसी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

लिये मारते हुए पुरुष को देखे तो वह रोगी असाध्य होता है और भैंसा, ऊंट, गधा इनपर चढ़ा हुआ दक्षिण दिशा को जाता हुआ स्वप्नमें रोगी मनुष्य देखे तो वह अच्छा नहीं होय और ऊंचे से नीचे गिरे जलमें डूब जाय और अग्नि भभकती जाय और सिंह आदि कोई हिंसक जीव उसको खाता होय, दीपक को बुझता देखे, तेल, मदिरा पीता देखे और पकवान खाय और कुयें में गिरे ऐसा स्वप्न रोगी को होय तो वह रोगी असाध्य होता है और यदि ऐसा स्वप्न देखे भी तो स्वप्न देखनेवाला किसी से कहै नहीं प्रातःकाल उठतेही भस्मादिक से स्नान करे और उस स्वप्नके सदृश हवन, दान, पाठ आदि करे तो स्वप्न-दोष दूर होय और रोगी को स्वप्नमें देवता, राजा, याचक, मित्र, ब्राह्मण, गौ, अग्नि, तीर्थ दीखें तो वह रोगी जल्दी अच्छा होय और स्वप्न में कीचड़ को उलांघ जाय और शत्रु को जीते एवं महल, रथ, पर्वत आदिके ऊपर चढ़े तो वह रोगी जल्दी अच्छा हो और स्वप्न में श्वेतवस्त्र धारे तथा मांस, मीन, फल खाय तो वह रोगी जल्दी अच्छा होय और स्वप्न में अगम्या से गमन और शरीरमें विष्ठाका लेप करे, रोवे और अपनी मृत्यु देखे तथा कच्चा मांस खाय तो वह रोगी शीघ्र अच्छा होय एवं जोंक, सर्प, भौंरा, मक्खी जिसको स्वप्न में काटें वह रोगी भी शीघ्र अच्छा होय और जो यह स्वप्न अच्छे भले नीरोगी मनुष्यको होयँ तो शुभ जानिये॥

अथ दूतपरीक्षा॥

वैद्यके बुलाने के लिये जो दूत भेजे वह काना, कूबड़ा, नकटा आदि न हो क्योंकि ऐसे के भेजने से वह रोग जल्दी अच्छा नहीं होता और जो निर्मल वस्त्र पहिरे और सुखपूर्वक घोड़े रथ आदि पर चढ़कर वैद्यकी भेंटके लिये उत्तम वर्ण का अच्छा चेष्टा-वान् चतुर पुरुष जिसका बायां स्वर चलता होय वैद्य के पास अकेला जाय तो वह रोगी शीघ्र अच्छा होय—इति दूतपरीक्षा॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ शकुनपरीक्षा ॥

जो वैद्य रोगीकी चिकित्सा करने को जाता होय उसको उस समय सम्मुख शीतल शकुन मिलें तो अच्छा और जो अग्नि आदिले गर्म शकुन मिलें तो रोगी अच्छा न होय और जो दूत वैद्यके बुलाने को जाता होय उसको जल आदि शीतल शकुन सम्मुख मिलें तो रोगी अच्छा नहीं होय और अग्नि आदि गर्म वस्तु मिलें तो रोगी जल्दी अच्छा होय—इति शकुनपरीक्षा ॥

अथ कालज्ञान ॥

जिस रोगी को रात्रिमें गर्मी और दिनमें शीत लगे और कण्ठ में कफ बोले वह रोगी निश्चय मरे और जिस रोगी के नाक का अग्रभाग शीतल होय और उसके हाथ, पैर, हृदय भी शीतल होयँ और शिरमें शूल होय वह रोगी भी निश्चय मरे और जिस रोगीकी कान्ति, तेज, लज्जा जाती रहे और स्वभावमें अधिक क्रोध होजाय वह रोगी छः महीनेमें मरे और जिस रोगी का अंग कांपता होय और गति भंग होय और शरीर का रंग और का और होजाय और सुगन्ध और दुर्गन्ध का ज्ञान न रहे वह रोगी निश्चय मरे तथा वृक्ष और वृक्ष की डालियों में रोगी को अग्निसी दीखे वह भी छः महीने में मरे और जो रोगी काम करके हीन होय और प्रस्वेद नहीं आवे वह तीन महीने में मरे और जो रोगी कानके छिद्रोंको बन्द करे पीछे कानका घूंघूं शब्द न सुने वह रोगी निश्चय मरे एवं जिस रोगी की आंख, देह और मुखका वर्ण और का और होजाय वह भी निश्चय मरे तथा जिस रोगी को अपनी जीभ और नासिका का अग्रभाग और भृकुटीका मध्य दीखे नहीं वह निश्चय मरे और जिस रोगी के नाक का अग्रभाग टेढ़ा होजाय और नेत्र लाल होजायँ वह रोगी भी अवश्य मरे तथा जिस रोगीकी इन्द्रियां अपने अपने विषय को ग्रहण नहीं करें वह भी निस्संदेह मरे और जिस रोगी की बोलने से वाणी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

थकजाय और सामर्थ्य घटजाय वह भी अवश्य मरजाय और जिस रोगी को कांच तथा जल में अपनी छाया दीखे नहीं वहभी अवश्य मरे और जिसका मुख लाल कमल के सदृश होजाय और जीभ काली होजाय और शरीरमें पीड़ा उठआवे वह रोगी अवश्य मरे और जिस रोगीका हृदय, नाभि, कन्धा कांपने लगे वह निश्चय मरे और जिस पुरुष के श्लेषा, शतभिषा, आर्द्रा, स्वाती, मूल, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़, पूर्वाभाद्रपद, भरणी इन नक्षत्रों में और रवि, शनि, मंगलवार और चौथ, छठ, द्वादशी तिथियों में रोग उत्पन्न होय तो वह रोगी निश्चय मरे और जिस रोगी को दूसरेकी आंख की पुतली में अपना स्वरूप नहीं दीखे वह निश्चय मरे और जिस रोगीका सूर्योदयमें दाहिना और सायंकाल को बायां स्वर चले वह नहीं मरे—इति कालज्ञान ॥

अथ औषधविचार ॥

वैद्यको उचित है कि औषध का गुणागुण विचार रोगी के रोगके प्रमाणसदृश औषध दे । जो रोग थोड़ा होय तो अधिक औषध न दे और जो अधिक रोग होय तो थोड़ी न दे तथा जो कड़वी कसैली औषध रोगी न खाय और उससे द्वेष करे ऐसा रोगी जीवे नहीं—इति औषधविचार ॥

अथ देशविचार ॥

देश तीन प्रकार का है । अनूप १ साधारण २ जांगल ३ जहां बहुतसा जल सदैव बहता होय और जिस देश में कफकी आधिक्यता होय (जैसे पूर्वदेश) उसको तथा इसी प्रकार के लक्षण जहां कहीं और देश में होयँ उसको भी अनूप कहिये और जिस देश में वात, पित्त, कफ बराबर होयँ उसको साधारण और जिस देशमें वायु अधिक होय तिसको जांगल कहिये । और जिस देश में जो मनुष्य उत्पन्न होय उसकी उसी देश के अनुसार प्रकृति होती है—इति देशविचार ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ कालविचार ॥

काल तीन प्रकार का होता है। शीतकाल १ उष्णकाल २ वर्षाकाल ३ सो इनका विचार लिखते हैं। शीतकाल में शीत थोड़ा पड़े या बहुत पड़े, तो रोग उत्पन्न हो और शीतकाल में गर्मी का पड़ना भी विपरीत है, यह भी अच्छा नहीं। इसमें भी रोग होता है। इसीप्रकार उष्णकाल में उष्णता थोड़ी अथवा अधिक पड़े अथवा शीत पड़े तो रोगकी उत्पत्ति होय। ऐसेही वर्षाकाल में वर्षा थोड़ी अथवा बहुत हो या नहीं हो तो मनुष्यों के रोग पैदा हों—इति कालविचार ॥

अथ अवस्थाविचार ॥

अवस्था तो कई प्रकार की हैं परन्तु उनमें तीन मुख्यहैं। एक बाल, दूसरी तरुण, तीसरी वृद्ध तिनमें उत्तम, मध्यम, अधम मनुष्य होते हैं उनके जो रोग उत्पन्न होयँ तिनकेही शरीर और अवस्थाके अनुरूप विचारकर औषध करे—इति अवस्थाविचार॥

अथ अर्थविचार ॥

अर्थ पांच प्रकारके हैं। शब्द १, स्पर्श २, रूप ३, रस ४, गन्ध ५ शब्दका स्थान कान, स्पर्शका स्थान त्वचा, रूपका स्थान नेत्र; रसका स्थान जीभ, गन्धका स्थान नासिका में होता है सो शब्दकी सामर्थ्य घटने से थोड़ा सुने या अधिक सुने अथवा मिथ्या सुने वा कुछका कुछ सुने तथा स्पर्श की सामर्थ्य क्षीण होने पर थोड़ा स्पर्श करे अथवा मिथ्या स्पर्श करे वा कुछका कुछ स्पर्श करे, देखनेकी सामर्थ्य न्यून होनेपर थोड़ा देखे अथवा मिथ्या देखे वा कुछका कुछ देखे, छहों रसके खाने की सामर्थ्य थकने से थोड़ा खाय अथवा बहुत खाय या मिथ्या खाय वा कुछका कुछ खाय और सूंघने की सामर्थ्य घटने से थोड़ा सूंघे अथवा बहुत सूंघे या मिथ्या सूंघे वा कुछका कुछ सूंघे तो निश्चय रोग की उत्पत्ति

In Public Domain, Chamoli Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

होय और इन पांचों के भली प्रकार साधन करने से मनुष्य सदैव नीरोग रहता है—इति अर्थविचार ॥

अथ कर्मविचार ॥

कर्म तीन प्रकारका है। कायिक १, मानसिक २, वाचिक ३, काया में रहे सो कायिक और मनमें रहे सो मानसिक तथा वचन में रहे सो वाचिक। काया की कर्म सामर्थ्य थकने से थोड़ा कर्म करे अथवा बहुत कर्म करे या कुछ का कुछ कर्म करे और मनकी सामर्थ्य घटने से थोड़ी इच्छा होय वा बहुत होय अथवा कुछकी कुछ होय और बोलने की सामर्थ्य घटने से थोड़ा बोले अथवा मिथ्या बोले वा कुछका कुछ बोले तो मनुष्य के रोगकी उत्पत्ति होय और इन तीनों कर्मों को मनुष्य सदैव अच्छेप्रकार से एकसा बर्तता रहे तो वह मनुष्य सदैवही नीरोग रहे—इति कर्मविचार॥

अथ अग्निबलविचार ॥

अग्नि पांच प्रकारकी है। मन्दाग्नि १, तीक्ष्णाग्नि २, विषमाग्नि ३, समाग्नि ४, भस्माग्नि ५, जिसकी कफप्रकृति होती है उसके मन्दाग्नि होती है वह कफके रोग उत्पन्न करती है सो अच्छी नहीं १ जिसकी पित्तप्रकृति होय उसके तीक्ष्णाग्नि होती है सो अच्छी है, खायाहुआ सब पचादेती है परन्तु गर्मी के रोग को उत्पन्न करती है २ जिसकी वातप्रकृति होय उसके विषमाग्नि होती है वह वायुके रोगोंको उत्पन्न करती है, कभी अन्न पचाती है और कभी अन्न नहीं पचाती है ३ चौथी समाग्नि है वह सम्पूर्ण अग्नियोंसे श्रेष्ठ है, अच्छे प्रकार मनुष्य भोजन करे उसको पचा देती है और कोई रोगको नहीं उत्पन्न करती ४ पंचम भस्माग्नि है जो भस्मक रोगको उपजाती है। कभी औषधके संयोगसे शरीर में कफ का घटना और पित्त का अग्निरूप बढ़नाही वायु के संयोगसे प्रेरित महातीव्र अग्नि उपजाताहै तब वह भस्मक अग्नि होजाती है। भस्मक अग्निवाला जब समयपर भोजन न पावे तब

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

प्यास, पसीना, दाह, मूर्च्छा आदि से मरजाता है ५–इति अग्निबलविचार ॥

अथ रोगी की असाध्यपरीक्षा ॥

जिस रोगी को रात्रिमें निद्रा नहीं आवे, कण्ठ में कफ बोले, शरीरमें दाह हो, नाड़ी मन्द होय, बोलनेमें जीभ थकजाय, सब इन्द्रियां अपने २ धर्मों को छोड़दें वह रोगी अवश्य मरे और जिस रोगी की मन्दाग्नि होकर प्रकृति बिगड़जाय उसको भी असाध्य जानिये। जिसकी आंखें लाल होजायँ, श्वास उठं आवे, हृदयमें शूल होय, तन्द्रा, हिचकी, तृषा बहुत होय, बहुत सोवे, अत्यन्त दाह होय, पसीना अधिक और चिकना आवे वह रोगी निश्चय मरे–इति रोगी की असाध्यपरीक्षा ॥

अथ रोगी की साध्यपरीक्षा ॥

जिस रोगी की प्रकृति ठिकाने रहे, अग्नि तीव्र होय और किसी भांति के रोगका उपद्रव न होय, एकही दोष का कोई रोग होय तथा उसकी चिकित्सा के चार उपाय मिलें, एक तो अच्छा सद्वैद्य, दूसरे वैसेही रोगकी दूर करनेवाली औषध, और वैसाही चतुर चाकर मिले एवं वैसाही रोगी द्रव्यवान्, जितेन्द्रिय तथा रोगके घटने बढ़नेका जाननेवाला हो तो उसको साध्य जानिये–इति रोगीकी साध्यपरीक्षा ॥

अथ रोगों का भेद ॥

जो रोग कायामें रहे उसका नाम व्याधि है और वह चौदह प्रकार का है। सहज रोग १ गर्भज रोग २ जातजात रोग ३ पीड़ाजनित ४ कालजनित ५ प्रभावजनित ६ स्वभावजनित ७ देशजनित ८ आगन्तुक रोग ९ कायिक रोग १० आन्तर रोग ११ कर्मज रोग १२ दोषज रोग १३ कर्मदोषज रोग १४ ॥

अथ रोगों का पृथक् पृथक् लक्षण ॥

माता, पिता के वीर्यदोष से उसकी सन्तान के भी वही रोग

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

होजाते हैं--जैसे बवासीर, कोढ़ आदि। ये सहज रोग हैं १ गर्भ में ही कुबड़ा, पंगुला, छःअंगुली, रावण, खंजा आदि रोग होयँ उनको गर्भज कहते हैं २ गर्भ में माता के मिथ्या आहार और विहार के करने से बालक के रतुआ और बुरा शरीर गूंगापन आदि जो रोग होयँ उनको जातजात कहिये ३ शस्त्रादिक के प्रहार से उपजे अस्थिभंग, पीड़ा आदि रोगों को पीड़ाजनित समझना चाहिये ४ शीतकाल में अधिक शीत और उष्णकाल में अधिक धूप एवं वर्षा में अधिक भीजनेआदि से उत्पन्न रोगों को कालज कहते हैं ५ देवता, गुरु और बड़ों के शाप से तथा ग्रहों की प्रतिकूलता से उत्पन्न रोगों को प्रभावज कहिये ६ क्षुधा, तृषा, जरा आदि से उत्पन्न रोगों को स्वभावज कहते हैं ७ भूतादिक और काम, क्रोध, राग, द्वेष, लोभ मोहादिक के शरीर में प्रवेश करने से उत्पन्न हुए रोगों को आगन्तुक कहते हैं ८ ज्वरादि विष पर्यन्त मुख्यरोग कायिक कहाते हैं ९ हौलदिली आदि अर्ध-विक्षिप्त रोगोंको आन्तर कहिये १० जिस देश में काले ही काले और लाल ही लाल एवं भूरे ही भूरे मनुष्य उपजें उसको दे-शज कहिये ११ पूर्वजन्ममें अथवा इस जन्ममें ब्रह्महत्यादिक पापसे उपजे रोगोंको कर्मज कहते हैं १२ वात, पित्त, कफसे उपजे रोग को दोषज कहिये १३ ब्रह्महत्यादिक पापों और वात, पित्त, कफादिक दोषों के मिलनेसे कर्मदोषज रोग उत्पन्न होते हैं १४॥

अब यही सम्पूर्ण रोग दो प्रकार के हैं एक साध्य, दूसरे असाध्य। वे साध्यभी दो प्रकार के हैं एक कष्टसाध्य; जो बहुत यत्नसे जैसे तैसे अच्छा होता है, और दूसरा थोड़े ही यत्न करने से अच्छा होताहै वह सुखसाध्य है। दूसरे असाध्य रोग भी दो प्रकार के हैं एक याप्य; जो गम्भीरादिक, बवासीर, मिरगी, अर्धांग, क्षयी, श्वासादिक और जिसमें अधिक रोग मिले हों वह पुरुष औषध खाया करे, पथ्यसे चले, सद्वैद्यके कहनेके अनुसार बर्ते जहांतक

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

रोगका अन्त होय इन रोगों को याप्य कहते हैं। और एक ऐसा रोग उत्पन्नहो जिसकी चिकित्साही न हो वह मारही डाले है और वह महाअसाध्य और अप्रतीकार है और रोगके भेद तो अनन्त हैं जिनका पार नहीं उन रोगों का ज्ञान तो ईश्वरही को है परन्तु सद्वैद्यभी शास्त्रबल और अपनी बुद्धिमत्तासे इन सब रोगों को १४ वेगों के अन्तर्गतही जानलें—इति रोगभेद ॥

अथ प्रकारान्तर से संपूर्ण रोगों के उत्पन्न होने की औरही विधि ॥

जो मनुष्य सब बातों से सावधान है और १४ प्रकार के वेगोंमें से किसी वेग को वृथा प्रकट नहीं करताहै और स्वतः सिद्ध प्रकट हुए को रोंकता नहीं है और उसका कार्य करता है उस मनुष्य के रोग नहीं होते हैं। और जो उन चौदहको वृथा प्रकट करताहै और उनके प्रकट होनेसे उनको धारण करताहै तो रोग अवश्य होते हैं॥

अथ १४ वेग ॥

अधोवायु १ दिशाबाधा २ मूत्रबाधा ३ डकार ४ छींक ५ तृषा ६ क्षुधा ७ नींद ८ कास ९ खेदका श्वास १० जंभाई ११ आंसू १२ वमन १३ कामदेव ये १४ वेग हैं इन वेगों को वृथा रोंके और इनसे उत्पन्न हुए वेगको धारण करे तो निश्चय मनुष्य के रोग उत्पन्न होयँ वे क्रमसे कहेजाते हैं। जो पुरुष अधोवायु को रोंके उसके गोला, उदर में अफरा और पीड़ा ये रोग होते हैं तथा उसके अधोवायु अच्छेप्रकार से नहीं होती है और मूत्र-कृच्छ्र और बद्धकोष्ठ और नेत्ररोग और मन्दाग्नि और हृदय-पीड़ादि रोग होते हैं—इति अधोवायु रोंकने के रोग १ ॥

अथ मलके रोंकने के रोग ॥

जो पुरुष मलकी बाधा को रोंके उसके हाथ पैर में हड़फूटन, पीनस, मस्तकपीड़ा और वायुकी ऊर्ध्वगति, अधोवायुकी प्रवृत्ति अच्छेप्रकारसे नहीं होती तथा हृदयपीड़ा, उदावर्त, वायुगोला,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

उदररोग, उदरपीड़ा, मूत्रकृच्छ्र, बद्धकोष्ठ, नेत्ररोग, मन्दाग्नि ये रोग होते हैं—इति मलके रोंकनेके रोग २॥

अथ मूत्र रोंकने के रोग॥

जो मनुष्य मूत्रकी बाधाको रोंके उसके ये रोग होते हैं। अंग में हड़फूटन, पथरी, लिङ्गेन्द्रिय और काले बालों की सान्धि में पीड़ा तथा वायुगोला आदि जो मलके रोंकने से रोग कहे हैं वे मूत्र के रोंकने से उत्पन्न होते हैं—इति मूत्र रोंकने के रोग ३॥

अथ डकार रोंकने के रोग॥

जो मनुष्य आती हुई डकार को रोंकते हैं उनके इतने रोग होते हैं। अरुचि, शरीर कांपै, हृदय रुके, अफरा, खांसी, हिचकी इत्यादि—इति डकार रोंकने के रोग ४॥

अथ छींक रोंकने के रोग॥

जो मनुष्य छींकके वेगको रोंके उसके ये रोग उत्पन्न होते हैं। मथवाय और शरीर की सम्पूर्ण इन्द्रिय दुर्बल होजायँ तथा गर्दन मुड़ै नहीं, मुख टेढ़ा होजाता है—इति छींक रोंकने के रोग ५॥

अथ तृषा रोंकने के रोग॥

तृषा रोंकनेवाले के ये रोग होते हैं। मुख सूखै, सब अङ्गों में हड़फूटन, बधिरता और मोह, भ्रम हो तथा हृदय दूखे—इति तृषा रोंकने के रोग ६॥

अथ क्षुधा रोंकने के रोग॥

जो पुरुष भूखके वेगको रोंके उसके सब अंग टूटने लगें, अरुचि होय और सर्व वस्तुओं के ऊपर ग्लानि, शरीरकृश, शूल, भ्रम तथा विना ही श्रम किये श्रम और सब इन्द्रिय शिथिल एवं शरीर का वर्ण औरका और होजाय—इति क्षुधा रोंकने के रोग ७॥

अथ नींद रोंकने के रोग॥

जो मनुष्य आती हुई नींदको रोंके उसके ये रोग उत्पन्न होते

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

हैं। मोह, मस्तक और नेत्र भारी, आलस्य, उबासी, अङ्गपीड़ा इत्यादि–इति नींद रोंकने के रोग ८॥

अथ खांसी रोंकने के रोग॥

जो मनुष्य खांसी को रोंके उसके खांसी, श्वास, अरुचि, हृदयरोग, हिचकी आदि रोगों की वृद्धि होती है–इति खांसी रोंकने के रोग ९॥

अथ श्रमके श्वास रोंकने के रोग॥

जो पुरुष श्रमके श्वासों को रोंके उसके इतनें रोग होते हैं। वायुगोला, हृदयरोग, मोह, प्रमेह–इति श्वास रोंकनेके रोग १०॥

अथ उबासी रोंकने के रोग॥

जो मनुष्य आवती उबासी को रोंके उसके मस्तकपीड़ा, इन्द्रियों की दुर्बलता और गर्दन व मुख टेढ़ा होजाता है–इति उबासी रोंकने के रोग ११॥

अथ आंसू रोंकने के रोग॥

जो पुरुष आंसू रोंके उसके पीनस, नेत्ररोग, मस्तक, हृदय और गर्दन में पीड़ा तथा अरुचि, भ्रम, वायुगोला होता है–इति आंसू रोंकने के रोग १२॥

अथ वमन रोंकने के रोग॥

जो मनुष्य आते हुए वमन के वेग को रोंके उसके रतुआ, पित्ती, कोढ़, नेत्ररोग, खाज, पाण्डुरोग, ज्वर, खांसी, श्वास, हृदयशूल, मुखकील अथवा मुखछाया ये रोग होते हैं–इति वमन रोंकने के रोग १३॥

अथ कामदेव रोंकने के रोग॥

जो पुरुष कामदेव के वेगको रोंके उसके सूजाक, प्रमेह, लिङ्गेन्द्रियमें पीड़ा और लिङ्गशोथ, चिन्ता, भोजन में अरुचि इतने रोग होते हैं १४–इति सर्व रोग उत्पन्न होने के हेतु॥

इति प्रथमस्तरङ्गः॥ १॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कायिक रोगों के राजा ज्वर का वर्णन ॥

अथ ज्वरकी उत्पत्ति ॥

दक्षप्रजापतिके यज्ञमें सती के तनुत्याग करने से; त्रिलोकीनाथ शिवजी ने कोप कर सहायकसहित दक्ष के मारने और यज्ञविध्वंस करने के लिये; अपने तीसरे नेत्रसे एक वीरभद्र नाम गण उत्पन्न किया। उस गणने शिवजी की आज्ञा पाकर दक्षप्रजापति को मारा और यज्ञविध्वंस कर यज्ञ की सब सामग्री खाई तब शिवजी ने वीरभद्र का नाम ज्वर रक्खा। वह ज्वर मनुष्य के मिथ्याहार-विहार से नाभि और हृदय के मध्य में स्थित आमाशय में रहनेवाले वात, पित्त, कफों को रोगी के शरीर में दुष्ट करता है और आमाशय के स्थानवाले आहार से उपजे हुये रस को भी बिगाड़ता है तथा आमाशय में स्थित अग्नि को उदर में से बाहर निकालकर रोगी के सम्पूर्ण शरीर को, अग्निके स्वरूप को गर्म करता है; वही ज्वररूप होकर शरीर के पराक्रम को खाता है। वह ज्वर आठ प्रकार का है। वातज्वर १ पित्तज्वर २ कफज्वर ३ वातपित्तज्वर ४ वातकफज्वर ५ कफपित्तज्वर ६ सन्निपातज्वर ७ आगन्तुकज्वर ८। इनके पृथक् पृथक् लक्षण इसप्रकार हैं ॥

अथ ज्वरमात्रका सामान्य लक्षण ॥

जिसके शरीरमें एकसाथही ये लक्षण होयँ उसके ज्वर कहना चाहिये—शरीर गर्म होआवे, पसीना न आवे, क्षुधा जाती रहे, सब अंग जकड़ा हो, मस्तकमें शूल होय, हाथ-पैरोंमें हड़फूटन और कहीं मन नहीं लगे इत्यादि ॥

अथ ज्वरका पूर्वरूप ॥

हाथ-पैरों में हड़फूटन, मस्तक भारी होय और जँभाई आवे, विना शूलके शरीर में खेद हो ऐसे लक्षण जिस मनुष्यके हों तो जानना कि ज्वर आवेगा—ये लक्षण वैद्य को जानने चाहिये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ ज्वरके विशेष लक्षण ॥

प्रथम वातज्वर के लक्षण—शरीर कांपे, ज्वरका विषमवेग होय, कण्ठ तथा ओष्ठ सूखें, नींद और छींक न आवे, शरीर रूखा होय, माथभारी, शरीर में पीड़ाहो, मुखसे छओं रसोंका स्वादु जाता रहे, दिशा न उतरे, पेटमें शूल और अफरा होय तथा उबासी बहुत सी आवें तो वातज्वर जानिये ॥

अथ सामान्य ज्वरमात्रका यत्न ॥

गर्मपानी पिलावे, मल और बलके सदृश हलका लंघन तथा लघुपथ्य करावे और निर्वातस्थान में रक्खे, अच्छे महीन वस्त्रपर सुलावे तो ज्वर जाय, और तीन दिनतक ज्वरमें कड़वी, कषैली, जुलाब आदि की कोई औषध न दे। यही यत्न कीजिये तदनन्तर २ माशे सोंठि १० माशे धनियां इनका क्वाथ कर पिलावे तो ज्वर जातारहे और भूखभी लगे १ ॥

अथ वातज्वर के यत्न ॥

वातज्वरवाले को और तीक्ष्ण जठराग्निवाले को तथा गर्भिणी स्त्री, दुर्बल मनुष्य, बालक, वृद्ध और भयभीत इतने मनुष्यों को लंघन नहीं करावे लघुपथ्य दे। वातज्वरवाले को चिरायता, नागरमोथा, नेत्रबाला, दोनों कटैया, गुरच, सोंठि इन सब औषधों को छदाम छदामभर लेके जवकुटकर पांच दिनतक क्वाथ दे तो वातज्वर जाय २ ॥

अथ वातज्वर दूर करने का दूसरा क्वाथ ॥

सोंठि, नींबकी छाल, धमासा, पाढ़, कचूर, अडूसा, अरंडकी जड़, पुष्करमूल इन सब औषधों को जवकुटकर छदाम छदाम भर लेकर क्वाथ दे तो वातज्वर दूर होय ३ और हिंगुलेश्वर रससे वातज्वर तत्काल दूर होता है शिंगरफ, पीपरि, शोधा हुआ सिंगीमोहरा इन तीनों को बराबर ले पानी में महीन पीस आध आध रत्तीकी गोली बनाकर प्रतिदिन एक एक खाय तो पांच गोलियों

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

में वातज्वर निश्चय जाय। और मूंग, मसूर, कुलत्थ, मोठ इन सबकी दालका पानी पथ्यमें दे। शतावरि, गुरच ये दोनों छदाम छदाम भर ले क्काथकर उसमें छदामभर पुराना गुड़ डालकर पांच दिनतक खाय तो वातज्वर जाय तथा मुनक्का, किशमिश, पीपरि, पित्तपापड़ा, सौंफ ये सब छदाम छदाम भर लेकर क्काथ करके दे तो वातज्वर जाय ४ इति वातज्वर के यत्न ॥

अथ पित्तज्वर के लक्षण ॥

नेत्रों में दाहहो, मुख कडुआ रहे, तृषा अधिक हो, चक्कर आवे, बहुत बके, शरीर गर्म रहे, ज्वरका वेग बहुत हो, मल पतला हो और वमन होय, नींद नहीं आवे, मुखसूखे और पकजाय, पसीना आवे, नेत्र तथा मल मूत्र पीले हों ये लक्षण जिस पुरुष के होयँ उसके पित्तज्वर जानिये ॥

अथ पित्तज्वरका यत्न ॥

नागरमोथा, धमासा, पित्तपापड़ा, नेत्रबाला, चिरायता, नींब की छाल इन सब औषधों को छदाम छदाम भर ले, जवकुटकर क्काथ दे तो पित्तज्वर दूर होय १ अथवा गर्म पानीके साथ खैरसार का चूर्ण छदामभर और दो माशे कुटकी तथा दो टंक * मिश्री इनका चूर्ण करदे तो पित्तज्वर जाय २ अथवा १ टंक चंदन १ टंक खस इनको महीन पीस फालसे के चार पैसेभर शर्बत में दो पैसे भर मिश्री डालके पिये तो पित्तज्वर दूर होय। यह यत्न त्रिसती नाम ग्रन्थ में लिखाहै ३ अथवा चावलकी खीलके पानीमें मिश्री मिलाकर पिये तो पित्तज्वर दूर होय ४ अथवा कुटकी, अमिलतास की गिरी, नागरमोथा, हड़की छाल, पित्तपापड़ा इन सबको छदाम छदाम भर ले कूटकर काढ़ा दे तो यह पित्तज्वर, तृषा, दाह, मूर्च्छा, प्रलाप, घुमनी इन सब रोगों को दूर करता है यह वैद्यविनोद में लिखा है ५ अथवा गेहूं के आटेको खूब भिजो-

* चार माशे का एक टंक होता है इसको शाण और धरण भी कहते हैं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कर उसमें मिश्री डालकर पतला हरीरा कर दे तो पित्तज्वर दूर होय ६ तथा मीठे अनारका शर्बत दे तो पित्तज्वर दूर होय ७ अथवा महासुन्दरी सर्वगुणसम्पन्ना १६ वर्षकी स्त्री से संभोग करे तो दाहकी व्यथा दूर हो एवं तोता, मैना और बालककी वाणी तथा मनोहर बाग, फूलों का हार, कमलका फूल, मनोहर शृंगार की कथा, कपूरका लगाना, सुन्दर स्त्रियोंका संग, फुहारा आदि सब दाहकी व्यथा को दूर करते हैं ८ अथवा फालसे के शर्बत में सैंधव नोन डालकर पिये तो पित्तज्वर जाय ९ अथवा मूंगकी दाल के पानी में मिश्री मिलाकर पिये तो पित्तज्वर दूर होय १० अथवा मुनक्का, किशमिश का शर्बत मिश्री मिलाकर पिये तो पित्तज्वर जाय ११ अथवा पित्तपापड़ा, नागरमोथा, चिरायता इन सबको ५ टंक ले क्काथकर ३ दिन पिये तो पित्तज्वर जाय। ये सब ज्वर के यत्न तिमिरभास्कर में लिखे हैं १२ अथवा रक्तचन्दन, पद्माक, धनियां, गुरच, नींबकी छाल इन सब औषधों को छदाम छदाम भर ले जवकुटकर ५ दिन काढ़ा पिये तो पित्तज्वर, दाह, तृषा, वमनादि सब दूर होयँ यह यत्न लोलिम्बराज में लिखा है १३ और यही पित्तज्वर बहुत दाहकारक हो तो कमल के फूलों की शय्यापर अथवा केलेके पत्तोंपर सुलावे तो दाहज्वर दूर होय १४ अथवा अच्छे सघन जंगलमें खसकी टट्टियोंमें खसकेही पंखे की वायु करे तो दाहज्वर दूर होय। यह यत्न लोलिम्बराजमें लिखा है १५ अथवा गुलाबके फूलकी पखुड़ी को तिल में पांच सात पुट दे और उसका तेल चमेली के सदृश निकाले उसको हकीम गुलाबरोगन कहते हैं और वैद्य गुलाबका तेल बोलते हैं, उसके मर्दनसे दाहज्वर बन्द होताहै १६ अथवा १०० या १००० बार का धोयाहुआ घी देहमें मले तो दाहज्वर की व्यथा तत्काल दूर होय १७ अथवा नींबके कोमल पत्तोंको पीसकर उसमें पानी डाल बिलोयकर झाग उठाय दाहज्वरवाले के

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

शरीर में लेप करे अथवा उन भागों में बहेड़ेकी मींगी मिलाकर लेप करे तो दाह की व्यथा तत्काल दूर होय १८ ये यत्न वैद्यजीवन और वैद्यविनोदमें लिखे हैं-इति पित्तज्वर और दाहज्वर के लक्षण और यत्न ॥

अथ कफज्वरका लक्षण और यत्न ॥

अन्न में अरुचि, शरीर भारी और रोमांच होय और मूत्र तथा नख सफ़ेद हों, नींद बहुत आवे, शरीर ठंढा और मुख मीठा होय, ज्वर का वेग कम हो, आलस्य, श्वास, खांसी, पीनस आदि लक्षण जिसमें हों उसको कफज्वर जानिये ॥

अथ कफज्वर के यत्न ॥

नींबकी छाल, सोंठि, गुरच, कटैया, पुहकरमूल, कुटकी, कचूर, अड़ूसा, कायफल, पीपरि, शतावरि इन सबको छदाम छदाम भर ले जवकुटकर ७ दिन क्वाथ दे तो कफज्वर दूर होय १ अथवा कायफल, पीपरि, काकड़ासिंगी, पुहकरमूल इन सब औषधों को कपरछान करके छदामभर शहद में चटावे तो कफज्वर, श्वास, कासआदि दूरहोयँ। यह यत्न वैद्यविनोदमें कहा है २ और कफज्वरवाले को गर्म (सेर भर का तीनपाव) पानी करके थोड़ा थोड़ा पिलावे और १२ लंघन करावे पीछे मूंग, मोठ अथवा कुलत्थके पानीका पथ्य करावे तथा दिनमें सोने न दे और बिजौरा के भीतरके जीरे में सैंधवनोन, अद्रक मिलाके पथ्यमें दे अथवा यह पाचनवस्तु दे सोंठि, मिरच, पीपरि, चित्रक, पीपलामूल, दोनों जीरे, लवंग, इलायची, भुनी हुई हींग, अजवायन, अजमोद इन सबको समान ले चूर्ण करके छदामभर गर्म जल से दे तो पाचन होय, कफज्वर जाय, भूखलगे ३ अथवा कटेरी, गुरच, सोंठि, पुहकरमूल, अड़ूसा, इन सबको धेले धेले भर ले जवकुट कर ७ दिनतक क्वाथ दे तो कफज्वर जाय। यह क्षुद्रादि क्वाथ है ४ अथवा कटेरी, पीपरि, काकड़ासिंगी, गुरच, अड़ूसा इन सब

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

औषधों को २ टंक लेके क्काथकर १० दिन दे तो कफज्वर, श्वास, कास, मन्दाग्नि ये सब दूर होयँ ५ अथवा अडूसे का काढ़ा छ-दामभर तौलके प्रमाण १० दिन दे तो कफज्वर निश्चय तत्काल जाय ६ अथवा २ रत्ती शीतभंजीरस; अडूसा और सोंठिके क्काथ के अनुपानसे ७ दिन दे तो कफज्वर निश्चय तत्काल दूर होय॥

अथ शीतभंजीरस॥

शिंगरफ से निकाला हुआ शुद्धपारा ५ टंक, शोधी हुई गन्धक ५ टंक; ताम्रेश्वर ५ टंक, सिंगीमुहरा २ टंक, सोंठि ५ टंक, मिरच ५ टंक, पीपरि ५ टंक, शोधाहुआ सुहागा ५ टंक इन सबको महीन पीस चित्रकके रसकी ३ पुट दे पीछे अद्रक के रसकी ७पुट देकर पानके रसकी ३ पुट देवे और एक एक रत्तीकी गोलियां बनावे यह शीतभंजीरस है। इससे कफज्वर, शीताङ्ग और सर्ववायु के रोग दूर होते हैं ७ इति कफज्वर के लक्षण और यत्न॥

अथ वातपित्तज्वरके लक्षण और यत्न॥

जिस मनुष्य के वातपित्तज्वर, मूर्च्छा, घुमनी, दाह हो और निद्रा न आवे, मस्तक पीड़ा करे तथा कण्ठ, मुख सूखे, वमन, रोमांच, अरुचि और अँधेरा होजाय, सब अंग में पीड़ा होय तथा जंभाई आवे और बकवाद करे। यह लक्षण जिस ज्वर में होय उसको वातपित्तज्वर कहिये॥

अथ वातपित्तज्वरके यत्न॥

खरैटी, गुरच, अरण्डकी जड़, नागरमोथा, पद्माक, भारंगी, पीपरि, खस, रक्तचन्दन इन सब औषधों को ५ माशे के प्रमाण ले पीछे जवकुटकर छदाम छदाम भरका क्काथ १२ दिनतक दे तो वातपित्तज्वर दूर होय १ अथवा गुरच, नागरमोथा, पित्तपा-पड़ा, चिरायता, सोंठि इन सबको बराबर ले जवकुटकर छदाम छदाम भरका क्काथ १२ दिन दे तो वातपित्तज्वर दूर होय। यह

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पंचभद्र नाम क्काथ है २ अथवा गुरच, पित्तपापड़ा, सोंठि, नागरमोथा, अड़ूसा इनको बराबर ले जवकुटकर छदामभरका क्काथ दे तो वातपित्तज्वर जाय ३ अथवा परवरके पत्ते, नींबकी छाल, गुरच, कुटकी इन सबको बराबर ले छदामभर क्काथ १२ दिन तक दे तो वातपित्तज्वर दूर होय ४ अथवा महुआ, मुलहठी, लोध, गौरीसर, नागरमोथा, आमिलतासकी गिरी इन सबको बराबर लेके जवकुटकर छदामभरका क्काथ १२ दिनतक दे तो वातपित्तज्वर जाय ५ अथवा चावल की खीलके पानीमें मिश्री और शहद मिलाकर १० दिन दे तो वातपित्तज्वर जाय ६ अथवा सोंठि, मिरच, पीपरि इनको बराबर ले सबकी बराबर मिश्री मिलाय चूर्णकर प्रतिदिन धेलेभर शहद के साथ १० दिनतक खाय तो वातपित्तज्वर दूर होय—इति वातपित्तज्वर के यत्न ॥

अथ वातकफज्वरके लक्षण व यत्न ॥

खांसी, अरुचि, सन्धि सन्धि और मस्तक में पीड़ा तथा पीनस, सन्ताप, अङ्गकम्प, शरीर में भारीपन और निद्रा आवे नहीं पसीना, श्वास और उदर में शूल होय तथा नाड़ी सर्प अथवा हंसकी गति चले, धूसर अथवा श्वेत और चिकना सुरमे के सदृश मूत्र और काला और चिकना मल होय, आंखें धूसरी और मुख कषैला अथवा मीठा और जीभ काली अथवा श्वेतहो, कण्ठ में कफ और भारीबोल, शरीर ठंढा ये लक्षण जिसमें होयँ उसको वातकफज्वर जानिये। ये लक्षण ज्वरतिमिरभास्कर में लिखे हैं १॥

अथ वातकफज्वर का यत्न ॥

इस ज्वरवालेको १० लंघन करावे और अधौटा पानी पिलावे तथा १० दिन पीछे चिरायता, नागरमोथा, गिलोय, सोंठि ये सब बराबर ले जवकुटकर छदामभर का क्काथ दे पीछे उसको पथ्य दे तो कोई उपद्रव नहीं उठे और तीन दिन पीछे कायफल, देवदारु, भारंगी, नागरमोथा, धनियां, पित्तपापड़ा, हड़की

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

छाल, सोंठि, कंजाकी जड़ ये सब औषध बराबर ले जवकुटकर २ टंकका काढ़ा करके दे तो वातकफज्वर, खांसी, सूजन, श्वास इन सबको दूर करे १ अथवा नागरमोथा, पित्तपापड़ा, सोंठि, गुरच, धमासा इन सबको बराबर लेके जवकुटकर छदामभर का क्वाथ १० दिन तक दे तो वातकफज्वर; वमन, मुखशोष इत्यादि दूर होयँ २ अथवा छोटी कटैया, सोंठि, पीपरि, गुरच ये सब छदाम छदाम भर ले काढ़ाकर दे तो वातकफज्वर जाय ३ अथवा सरिवन, पिथवन, दोनों कटैया, गोखरू, बेलगिरी, सोनापाढ़ा, अरलू, खम्हारि, पाढ़ ये दशमूल हैं इनको कूटकर क्वाथ करे और पीपरि मिलाकर १० दिन तक दे तो वातकफज्वर दूर होय ४ यदि ज्वर में मुख और तालू सूख जाय, जीभ लठरा जाय तो बिजौरा के जीरे में सैंधवनोन और मिरच लगाय जीभ में लेप करे तो मुख और तालूका शोष और जीभकी लठरता दूर होय ५ अथवा चिरायता, गिलोय, देवदारु, कायफल, बच यह बराबर ले छदामभरका क्वाथकर दे तो वातकफज्वर जाय ६ यह यत्न ज्वरतिमिरभास्कर में लिखा है—इति वातकफज्वर यत्न॥

अथ कफपित्तज्वर के लक्षण॥

कफ से मुख और जीभ लिपी हो तथा तंद्रा, मोह, खांसी, अरुचि, तृषा अधिक हो, बारंबार शरीर में दाह और शीत, पीड़ा हो, हृदय दूखे, घुमनी आवे, क्षुधा न लगे, शरीर जकड़ासा होजाय, नाड़ी हंस की अथवा मेढ़क की गति चले, मूत्र श्वेत ललाई लिये चिकना हो और मल भी ललाई लिये हो तथा नेत्र मेढ़कके रंग के सदृश हों, मुख मीठा अथवा कड़ुवा रहे जीभ ललाई लिये श्वेत हो। जिस मनुष्य के ये लक्षण हों उसके कफपित्तज्वर जानिये। यह लक्षण ज्वरतिमिरभास्करमें लिखा है १॥

अथ कफपित्तज्वर का यत्न॥

इस ज्वरवाले को १४ लंघन करावे और अष्टावशेष जल

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पिलावे तथा गुरच, रक्तचन्दन, सोंठि, नेत्रबाला, दारुहल्दी इन औषधों को बराबर लेके जवकुटकर छदाम भर का काढ़ा १० दिन तक दे तो कफपित्तज्वर दूर होय १ अथवा नींब की छाल, रक्तचन्दन, पद्माक, गुरच, धनियां इन औषधोंका काढ़ा १० दिन दे तो यह ज्वर और दाह, तृषा, वमन सब दूर होयँ २ अथवा गुरच, इन्द्रयव, नींबकी छाल, परवरके पत्ते, कुटकी, सोंठि, सफ़ेद चन्दन, नागरमोथा, पीपरि इन सबको बराबर ले महीन चूर्ण-कर ४ माशे अष्टावशेष जलके साथ दे तो ज्वर, श्वास, गर्मी, हृदयशूल, अरुचि, खांसी आदि रोगों को यह चूर्ण दूर करे ३ अथवा गुरच, दोनों कटैया, कचूर, दारुहल्दी, पीपरि, अड़ूसा, परवरके पत्ते, नींबकी छाल, चिरायता इन सब औषधों को समान लेके जवकुटकर छदामभर का काढ़ा दोनों समय १० दिन तक दे तो पित्तकफज्वर दूर होय ४ अथवा किशमिश, अमिलतासकी गिरी, धनियां, कुटकी, नागरमोथा, पिपलामूल, सोंठि, पीपरि इन सबको बराबर लेके ११ दिन तक काढ़ा दे तो शूल, भ्रम, मूर्च्छा, अरुचि, छर्दि, पित्तकफज्वर इतने रोगों को दूर करे ५ अथवा शिंगरफका निकालाहुआ पारा ५ टंक, शोधीहुई गन्धक ५ टंक, कालीमिरच ५ टंक, शोधाहुआ सुहागा ५ टंक इन सबको महीन पीस अदरख के रसकी ७ पुट दे फिर पानके रसमें ७ पुट दे तदनन्तर ४ रत्तीप्रमाण की गोली बांधकर एक गोली प्रति-दिन दोनों समय ७ दिन तक खाय तो निश्चय कफपित्तज्वर दूर होय ६ इति कफपित्तज्वर का यत्न ॥

अथ सन्निपातज्वर की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

जो मनुष्य बहुत चिकना, खट्टा, अधिकगर्म, चरफरा, मीठा, रूखा भोजन करे और विरुद्ध वस्तु खाय अथवा अधिक भोजन करे तथा बुरा पानी पिये और क्रोधवती रुगैली स्त्री के साथ प्रसङ्ग करे और दुष्ट अथवा कच्चा मांस खाय और ठण्ढ, धूप,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

देश, ऋतु, ग्रहकी विपरीततासे मनुष्यको सन्निपातरोग होताहै ॥

अथ सन्निपातका लक्षण ॥

अकस्मात् कभी दाह, कभी शीत लगे, स्वभाव बदल जाय और सब इन्द्रियां अपने अपने धर्मको छोड़दें, शरीर के हाड़ हाड़ तथा सन्धि सन्धि और माथे में अधिक पीड़ा हो, नेत्रों में जल आवे, काले और लाल होजायँ, कानों में शब्द और पीड़ा हो, कण्ठ में कांटे पड़जायँ तथा तन्द्रा, मोह, श्वास, कास, अरुचि, भ्रम हो और जीभ काली और खरखरी होकर लठरा जाय तथा रुधिर मिला हुआ कफ थूके, दिनमें सोवे, रात्रिमें जागे, पसीना बहुत आवे अथवा नहीं आवे, अकस्मात् गावे, नाचे, हँसे, रोवे, माथा धुने, तृषा अधिक लगे, हृदय दूखे, मल-मूत्र उतरे नहीं और जो उतरे तो थोड़ा उतरे, शरीर कृश होजाय, कण्ठमें कफ घरघराय, गूंगा होजाय, ओष्ठआदि अङ्ग पकजायँ, पेट भारी हो, नाड़ी की गति महामन्द, शिथिल, सूक्ष्म, टूटीसी हो और मूत्र हल्दी सा या काला अथवा रुधिरके समान और मल काला श्वेतता लिये हो अथवा शूकरके मांससदृश हो। इतने लक्षण जिसमें हों उसके सन्निपातज्वर कहिये। जो वैद्य औषध, रस और यन्त्र, मन्त्र, तन्त्रसे सन्निपातज्वर को दूर करे उस वैद्यसे धन देकर भी रोगी उऋण नहीं होताहै—इति सन्निपातज्वरलक्षण ॥

अथ सन्निपातज्वर का यत्न ॥

सन्निपातज्वरवाले को अर्धावशेष अच्छे कुएँके जलमें १ टंक सोंठि डालकर दिनका औटा दिनमें और रात्रिका औटा रात्रिमें पिलावे और चतुर मनुष्य पास रहे और निर्वातस्थानमें रक्खे, शीतलयत्न कभी न करे और शिवआदिका पूजन, हवन, मन्त्र, मणिधारण, दानादिक करे अथवा सात दिन पीछे कायफल, पिपलामूल, इन्द्रयव, भारंगी, सोंठि, चिरायता, कालीमिरच, पीपरि, काकड़ासिंगी, पुहकरमूल, रास्ना, दोनों कटैया, अजमोदा, बाल-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

छड़, बच, पाढ़, चव्य इन सब औषधों को समान ले जवकुट-कर २ टंकका क्वाथ दोनों समय दे तो सन्निपात और सर्ववस्तु की अज्ञानता तथा अधिक प्रस्वेद, शीताङ्ग और विक्षिप्तता, उदरशूल, अफरा, वात और कफके रोग तथा सुआ रोग इन सब रोगोंको यह क्वाथ दूर करता है १ अथवा आककी जड़, जवासा, चिरायता, देवदारु, रास्ना, निर्गुण्डी, बच, अरणी, सहँजना, पीपरि, पिपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठि, अतीस, जलभांगरा इन सबको बराबरले जवकुटकर २ टंक प्रमाणका काढ़ा दोनों समय दे तो महासन्निपातज्वर, धनुर्वात और जबड़ा मिच गया हो तिसको और सुआका रोग, श्वास, खांसी और वायुके रोगों को यह काढ़ा दूर करता है। यह यत्न लोलिम्बराजमें लिखा है २ सन्निपातमें जीभ जड़ होगई हो तो बिजौरा की केसर में सेंधानोन और मिरच मिलाके लेप करे तो जीभकी जड़ता दूर हो ३ अथवा जिस सन्निपात में ज्ञान जाता रहा हो तो बच, महुआ, सेंधानोन, मिरच, पीपरि ये सब बराबर ले गर्मजल में महीन पीस नास दे तो ज्ञान होजावे ४ ॥

अथ सन्निपातके दूर करनेकी नास ॥

पारा ५ टंक, गन्धक ५ टंक इन दोनोंकी कजली खरलमें करे पीछे दोनोंकी बराबर सोंठि, मिरच, पीपरि महीन पीस मिलाय धतूरे के फलके रसकी ३ पुट देकर एक दिन खरल करे। यह उन्मत्तनाम रस है इसकी नास दे तो सन्निपात दूर होवे ५ ॥

अथ सन्निपात दूर करनेका अञ्जन ॥

जमालगोटेकी मींगी १० टंक, कालीमिरच १ टंक, पिपलामूल १ टंक इन तीनोंको जंभीरी नींबूके रसमें ७ दिन तक खरल करे पीछे इसका अञ्जन दे तो सन्निपात दूर हो ६ अथवा पारा, गन्धक, कालीमिरच, पीपरि ये सब बराबर ले और इन चारों का चतुर्थांश जमालगोटा लेकर खरल में पारा, गन्धककी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

महीन कजली करे पीछे इन दोनों को कजली में मिलाय सबको जंभीरी के रसमें आठ दिन तक खरल करे फिर इसका अञ्जन दे तो सन्निपात दूर हो। इस अञ्जन का नाम भैरवाञ्जन है। यह वैद्यरहस्य में लिखाहै ७ अथवा सिरसके बीज, पीपरि, कालीमिरच, सेंधानोन, लहसन, मैनसिल, बच ये बराबर ले महीन पीस गोमूत्रमें एक दिन खरल कर अञ्जन करे तो सन्निपात दूर हो ८ ॥

अथ सन्निपात दूर होनेका पञ्चवक्त्रनाम रस ॥

सिंगरफका निकाला हुआ पारा ५ टंक, शोधी हुई गन्धक ५ टंक, शोधा हुआ सिंगीमुहरा ५ टंक, शोधा हुआ सुहागा ५ टंक, पीपरि ५ टंक, कालीमिरच ५ टंक, पारा और गन्धककी कजली करे पीछे कजलीमें इन सब औषधोंको मिलाय धतूरेके बीजके तेलमें ४ घड़ी खरल करके १ रत्तीके प्रमाण गोली बांधे। एक गोली अदरखके रसमें दे तो सन्निपात जाय। इसके ऊपर दही, भात खवावे। यह यत्न वैद्यरहस्यमें लिखा है ९ ॥

अथ सान्निपात दूर होनेका स्वच्छन्दभैरवरस ॥

सिंगरफका निकाला हुआ पारा ५ टंक, शोधी हुई गन्धक ५ टंक, शोधा हुआ सिंगीमुहरा ५ टंक, जायफल २ टंक, पीपरि १० टंक, पारा और गन्धककी कजली करे पीछे इन सब औषधों को इसमें मिलावे और अदरखके रसमें १ दिनतक खरल करे पीछे १ रत्तीके प्रमाण दे तो सन्निपातज्वर, शीतज्वर, विसूचिका, विषमज्वर, मन्दाग्नि, माथेका रोग इन सबको यह रस दूर करता है। यह वैद्यरहस्य में लिखा है १० ॥

अथ सन्निपातमें उत्पन्न शीत का उबटना ॥

मिरच, पीपरि, सोंठि, हड़का छिलका, पठानीलोध, पुहकरमूल, चिरायता, कुटकी, कूट, कचूर, इन्द्रयव इन सबको बराबर ले महीन पीस मर्दन करे तो पसीना और शीताङ्गको दूर करे ११ अथवा पारा ५ टंक, सिंगीमुहरा ५ टंक, मिरच १० टंक, धतूरे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

के फलकी राख ४० टंक इन सबको महीन पीसकर शरीरमें मर्दन करे तो पसीना, शीताङ्ग, सन्निपात दूर हो १२॥

अथ महासन्निपात दूर करने का यत्न॥

पारा, सिंगीमुहरा, कालीमिरच, नीलाथोथा, नौसादर इन सबको बराबर ले महीन पीस धतूरे और लहसनके रस में रोटी करे, वह रोटी क्षौर कराके रोगीके शिरपर एक पहर तक रक्खे जब शरीरमें ताप होआवे और चैतन्य होजाय तो वह पुरुष जीवे और जो तापयुक्त और चैतन्य न हो तो निश्चय वह मनुष्य मरे १३ अथवा लहसन, राई, सहँजने की जड़ इन सबको गौके मूत्रमें महीन पीस रोटी करे, वह रोटी दोपहर तक क्षौर कराके मस्तक पर रक्खे जो चैतन्यता और ताप न हो तो वह न जीवे। यह यत्न वैद्यविनोदमें लिखा है १४॥

अथ सन्निपात दूर करनेका यत्न॥

महाभयंकर सन्निपातवाले को बिच्छूसे कटवावे तो सन्निपात दूर हो १५ और सन्निपातवाले को सर्पसे भी कटाना लिखा है परन्तु लोकविरुद्ध है इससे यह चिकित्सा न करे १६ अथवा सन्निपातवाले को लोहे की शलाका अत्यन्त गर्मकर उसके पगथली, भौंह और ललाट के मध्य में दाग दे तो सन्निपात जाय। यह वैद्यविनोद में लिखा है। मन्त्र, यन्त्र आदिके साधन से भी सन्निपात दूर होता है और सुश्रुत, चरक, वाग्भट्ट के मतसे तो सन्निपातज्वर एकही प्रकारका है परन्तु अन्य ऋषियों के मतसे ५२ प्रकारका है उनमें १३ मुख्य हैं। उनका पृथक् पृथक् नाम, लक्षण और यत्न लिखते हैं १७॥

अथ १३ सन्निपातों के नाम॥

सन्धिग १ अन्तक २ रुग्दाह ३ चित्तभ्रम ४ शीताङ्ग ५ तन्द्रिक ६ कण्ठकुब्ज ७ कर्णक ८ भग्ननेत्र ९ रक्तष्ठीवी १० प्रलाप ११ जिह्वक १२ अभिन्यास १३ अब इनकी आयुर्बल

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कहते हैं। सन्धिग ७ दिन, अन्तक १० दिन, रुग्दाह २० दिन, चित्तभ्रम ११ दिन, शीताङ्ग १५ दिन, तन्द्रिक २५ दिन, कण्ठ-कुब्ज १३ दिन, कर्णक ३० दिन, भग्ननेत्र ८ दिन, रक्तष्ठीवी १०दिन, प्रलाप १४ दिन, जिह्वक १६ दिन, अभिन्यास १५ दिन रहते हैं। इति आयुर्बल॥ इनमें जो कुछ उपद्रव उठ आवे तो मनुष्य तत्कालही मरजाय और सन्निपातज्वरवालेका शीतल यत्न न करे तथा दिन में सोने न दे, अर्द्धावशेष जल पिलावे और आंव, कफ घटे ऐसा यत्न करे एवं सन्निपात के दोषसदृश लंघन करावे॥

अथ सन्धिगसन्निपातका लक्षण॥

शरीरकी सन्धि सन्धि में शूल और सूजन हो, पेट भारी रहे, अङ्ग शिथिल पड़जाय, बल जाता रहे, वात-कफका कोप बहुत हो, नींद न आवे ये लक्षण सन्धिगसन्निपातके जानिये॥

अथ सन्धिगसन्निपातका यत्न॥

रास्ना, हड़की छाल, गुरच, सहँजना, चित्रक, लजालू, सोंठि, देवदारु, कुटकी, कचूर, अड़ूसा, बायबिड़ंग, सरिवन, पिथवन, दोनों कटैया, बेलागिरी, अरणी, अरलू, खँभारि, पाढ़, पीपरि ये सब बराबर ले जवकुट कर २ टंकका काढ़ा कर दोनों समय दे तो सर्वलक्षणसंयुक्त सन्धिगसन्निपात दूर हो १॥

अथ अन्तकसन्निपातका लक्षण॥

शरीरमें दाह, कम्प, मस्तकपीड़ा हो, खांसी और हिचकी आवे, बके बहुत, ज्ञान जाता रहे, श्वास हो ये लक्षण जिसमें हों उसके अन्तकसन्निपात कहिये। न इस रोगकी औषध है और न रोगी जीताही है २॥

अथ रुग्दाहसन्निपातका लक्षण॥

शरीर में दाह और व्याकुलता हो, उदर में शूल चले, तृषा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अधिक लगे ये लक्षण जिसमें हों उसके रुग्दाहसन्निपात जानिये। यह भी असाध्य है॥

अथ रुग्दाहका यत्न॥

हड़की छाल, पित्तपापड़ा, नींबकी छाल, कुटकी, देवदारु, अमिलतासकी गिरी, मुनक्का, किशमिश, नागरमोथा ये सब बराबर ले जवकुटकर २ टंकका क्वाथ दोनों समय १५ दिन दे तो रुग्दाहसन्निपात जाय ३॥

अथ चित्तभ्रमसन्निपातका लक्षण॥

भ्रम, मद, ताप, मोह, श्वास ये हों और विक्षिप्त के से नेत्र होजायँ तथा हँसे, गावे, नाचे ये लक्षण जिसमें हों उसके चित्तभ्रमसन्निपात जानिये॥

अथ चित्तभ्रमसन्निपातका यत्न॥

ब्राह्मी, बच, लजालू, त्रिफला, कुटकी, खरैटी, अमिलतास की गिरी, नींबकी छाल, नागरमोथा, कड़ुवी तोरईकी जड़, मुनक्का, किशमिश, सरिवन, दोनों कटैया, गोखरू, बेलगिरी, अरणी, अरलू, खँभारि, पाढ़ ये सब बराबर ले जवकुटकर २ टंकका काढ़ा दोनों समय ११ दिन दे तो चित्तभ्रमसन्निपात दूर हो ४॥

अथ शीताङ्गसन्निपातका लक्षण और यत्न॥

सम्पूर्ण शरीर शीतल ओला सा होजाय और कांपे, हिचकी आवें, अङ्ग शिथिल होजाय, श्वास, खांसी और वमन हो, मुखमें से लार पड़े ये लक्षण जिसमें हों उसके शीताङ्गसन्निपात जानिये। यह भी महाअसाध्य है, इस सन्निपातवाला जीता नहीं तथापि यत्न कहते हैं। इस सन्निपातवाले को बिच्छू से कटावे और सिंगीमुहरा तेल में मिलाय अच्छेप्रकार मर्दन करे और सिंगीमुहरा, लहसन, राई इनको गोमूत्रमें पीस रोटीकर रोगीका क्षौर कराय उसके शिरपर धरे, जबतक शरीर गर्म न हो तबतक रोटी माथेपर रक्खे जो ताप न आवे तो वह रोगी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मरजाय। अब उसका उबटना कहते हैं। पारा ५ टंक, सिंगीमुहरा ५ टंक, कालीमिरच ५० टंक, धतूरेकेफलकी राख ४० टंक इनको महीन पीस शरीर में मर्दन करे तो शीताङ्गसन्निपात दूर हो ५॥

अथ तन्द्रिकसन्निपात का लक्षण॥

तन्द्रा हो, ज्वर का वेग और तृषा अधिक हो, जीभ काली और खरखरी हो, श्वास, अतीसार, दाह, कान में पीड़ा ये लक्षण जिसके हों उसके तन्द्रिकसन्निपात जानिये॥

अथ तन्द्रिक का यत्न॥

भारंगी, गुरच, नागरमोथा, कटैया, हड़की छाल, पुहकरमूल इनको बराबर ले जवकुट कर २ टंकका काढ़ा १५ दिन तक दे तो तन्द्रिकसन्निपात दूर हो ६॥

अथ कण्ठकुब्जसन्निपातका लक्षण॥

माथा बहुत दूखे, दाह और डाढ़में पीड़ा हो, शरीर बहुत गर्म रहे, मूर्च्छा हो, गला रुके और पकजाय, वातसे शरीर में पीड़ा हो तथा बके ये लक्षण जिसके हों उसके कण्ठकुब्जसंन्निपात जानिये। यह कष्टसाध्य है॥

अथ कण्ठकुब्जका यत्न॥

क्राकड़ासिंगी, चित्रक, हड़की छाल, अड़ूसा, कचूर, चिरायता, भारंगी, दारुहल्दी, कटैया, पुहकरमूल, नागरमोथा, कुड़ा की छाल, इन्द्रयव, कुटकी, कालीमिरच इन सबको बराबर लेके जवकुट कर २ टंकका काढ़ा दोनों समय ८ दिन तक दे तो कण्ठकुब्जसन्निपात जाय ७॥

अथ कर्णकसन्निपातका लक्षण॥

कण्ठमें पीड़ा और शरीर खेदयुक्त तथा अतिगर्म रहे, खांसी, श्वास, कर्णमूलमें सूजन और बहुत पीड़ा ये लक्षण जिसमें हों उसके कर्णकसन्निपात जानिये॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ कर्णकसन्निपात का यत्न ॥

रास्ना, असगन्ध, नागरमोथा, दोनों कटैया, भारंगी, काकड़ासिंगी, हड़की छाल, बच, पुहकरमूल, कुटकी इन सबको बराबर ले जवकुट कर २ टंक का काढ़ा दोनों समय २० दिन तक दे तो कर्णकसन्निपात जाय ॥

तथा दूसरा यत्न ॥

हल्दी, हिंगणबेटकी जड़, कूट, सहँजनेकी जड़, सेंधानोन, दारुहल्दी, देवदारु, इन्द्रायणकी जड़ इन औषधोंको बराबर ले जवकुट कर आकके दूध में महीन खरल करे और कर्णमूल में ठंढाही लेप करे तो कर्णमूल बैठ जाय तथा कर्णमूल का रोग दूर हो। अथवा कर्णमूल के उठतेही जोंक लगावे और कर्णमूलके मुवाफ़िक़ रुधिर कढ़ावे तो कर्णमूल निश्चय अच्छा हो ८॥

अथ भग्ननेत्रसन्निपातका लक्षण ॥

जिस रोगीका स्मरण जाता रहे, ज्वरका वेग, बांके और चञ्चल नेत्र, भ्रम और कम्प हो, बकने लगे ये लक्षण जिसमें हों उसके भग्ननेत्रसन्निपात जानिये। यह भी असाध्य है ॥

अथ भग्ननेत्रसन्निपातका यत्न ॥

दारुहल्दी, परवरके पत्ते, नागरमोथा, कटैया, कुटकी, हल्दी, नींबकी छाल, त्रिफला इन सबको बराबर ले ३ टंक का काढ़ा दोनों समय १५ दिन तक दे तो भग्ननेत्रसन्निपात दूर हो ९ ॥

अथ रक्तष्ठीवीसन्निपात का लक्षण ॥

लोहू थूके, तृषा अधिक हो, मोह, श्वास, उदरशूल, भ्रम, वमन, अफरा ये लक्षण जिसमें हों उसके रक्तष्ठीवीसन्निपात जानिये। यह महाअसाध्य है ॥

अथ रक्तष्ठीवीसन्निपात का यत्न ॥

नागरमोथा, पद्माक, पित्तपापड़ा, रक्तचन्दन, महुआ, नेत्र-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बाला, शतावरि, सफ़ेद चन्दन, बकाइन की छाल इन सबको बराबर ले जवकुटकर २ टंक का काढ़ा १५ दिन तक दे तो रक्तष्ठीवीसन्निपात जाय। अथवा दूबका रस और अनार के फूलों के रस की नास दे तो रक्तष्ठीवीसन्निपात दूर होय १० ॥

अथ प्रलापसन्निपात का लक्षण ॥

शरीर कांपे, बहुत गर्म रहे और बके, दाह हो, ज्वर का वेग अधिक हो, संज्ञा जाती रहे, सब अंग विकल होजायँ ये लक्षण प्रलापसन्निपात के जानिये ॥

अथ प्रलापसन्निपात का यत्न ॥

नागरमोथा, नेत्रबाला, सरिवन, पिथवन, दोनों कटैया, बेलगिरी, अरलू, खम्हारि, पाढ़, सोंठि, पित्तपापड़ा, सफ़ेद चन्दन, अड़ूसा इन सबको बराबर ले जवकुटकर २ टंक का काढ़ा दोनों समय १० दिन तक दे तो प्रलापसन्निपात दूर होय ११ ॥

अथ जिह्वकसन्निपात का लक्षण ॥

श्वास, कास और ताप होय, जीभ लठराजाय और कांटेभी पड़जायँ, गूंगा और बहिरा होजाय, बल जाता रहे ये लक्षण जिह्वकसन्निपात के जानिये। यहभी कष्टसाध्य है ॥

अथ जिह्वकसन्निपात का यत्न ॥

खुरासानी बच, कटैया, जवासा, रास्ना, गुरच, नागरमोथा, सोंठि, कुटकी, काकड़ासिंगी, पुहकरमूल, ब्राह्मी, भारंगी, नींब की छाल, अड़ूसा, कचूर ये सब बराबर ले जवकुटकर २ टंक का काढ़ा १० दिन तक दे तो जिह्वकसन्निपात दूर होय १२ ॥

अथ आभिन्यासन्निपात का लक्षण ॥

नींदआवे नहीं, श्वास बहुत शीघ्र चले, शरीर कांपे, सब चेष्टा जाती रहे, घोंघों बोले, काष्ठवत् जड़ होजाय ये लक्षण आभिन्यासन्निपात के हैं। यह महाअसाध्य और मृत्युरूप है ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ अभिन्यासस्रन्निपात का यत्न ॥

भारंगी, रास्ना, परवर के पत्ते, देवदारु, हल्दी, सोंठि, मिरच, पीपरि, अडूसा, इन्द्रायण की जड़, चिरायता, नींब की छाल, नेत्रबाला, कुटकी, बच, पाढ़, सोनापाठ, दारुहल्दी, कटैया, गुरच, निसोत, झाऊ की जड़, पुहकरमूल, सफ़ेद कटैया, नागरमोथा, जवासा, इन्द्रयव, त्रिफला, कचूर इनसबको बराबर ले जवकुटकर २ टंक का काढ़ा १७ दिन तक दे तो अभिन्यास-सान्निपात दूर होय १३ ॥

अथ सर्वसन्निपात दूर करने का अञ्जन ॥

लहसुन, पीपरि, मिरच, बच, अरलू के बीज, सेंधानोन इन सबको बराबर ले गोमूत्र में महीन पीस नेत्रों में अञ्जन करे तो सब सान्निपातदूर होयँ १४ ॥

अथ सर्वसन्निपात दूर करने का नास ॥

कालीमिरच, महुआ, सेंधानोन, चित्रक, कायफल, पीपरि इन सबको बराबर ले महीन पीस गर्म पानी में नास दे तो सर्वसन्निपात दूर होयँ १५ ॥

अथ आठोंज्वर के दूर करने का चिन्तामणि रस ॥

शिंगरफ़ का निकालाहुआ पारा, शोधी हुई गन्धक, अभ्रक, ताम्रेश्वर, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, हड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला, शोधाहुआ जमालगोटा इन सबको बराबर ले दूधघल के पत्तों के रस में खरलकर दोपहर पीछे धूप में सुखाय १ रत्तीके प्रमाण गोली बांधे १ गोली दे तो आठोंज्वर दूरहोयँ और उदरशूल, अजीर्ण, आमवात येभी सब दूरहोयँ। यह वैद्यरहस्य और वैद्यविनोदमें लिखा है १६ ॥

अथ मृतसंजीवनी गुटिका ॥

शिंगरफ़ का निकालाहुआ पारा २ टंक, शोधीहुई गन्धक

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

३ टंक, ताम्रेश्वर ४ टंक, शोधा हुआ सुहागा २ टंक, शोधा हुआ सिंगीमुहरा १टंक, कालीमिरच ४ टंक ले पहिले पारे और गन्धक की कजली करे पीछे ये सब औषधें मिलाय सबको ब्राह्मी के रसमें १ पुट देकर पीछे २ पुट अदरक के रस की दे फिर सोंठि, मिरच, पीपरि इन तीनों को औटाय १ पुट दे फिर चित्रक की १ पुट देकर इसकी १ रत्ती के प्रमाण गोली बांधे। एक गोली अदरक के रसमें दे तो सन्निपात और मूर्च्छा को दूरकरे। यह रस मृतकपुरुष को जिलाता है और आमवात, वायुशूल, स्याह दाग, विषमज्वर, मन्दाग्नि, सन्निपात इन सबको यह मृतसंजीवनी गुटिका दूर करती है। यह रसमञ्जरी में लिखा है १७॥

अथ कालारि रस ॥

शोधा पारा १२ माशे, शोधी गन्धक २० माशे, सिंगीमुहरा १२ माशे, कालीमिरच २० माशे, पीपरि ४० माशे, लवंग १६ माशे; धतूरे के बीज १३ माशे, शोधा सुहागा २० माशे, जायफल २० माशे, अकरकरा १२ माशे ले पहिले पारे और गन्धक की कजली करे; पीछे उस कजलीमें ये सब औषधें महीन पीसकर मिलावे तदनन्तर ३ दिन अदरक के रसमें खरल करे फिर ३ दिन नींबू के रसमें खरल करे फिर केले के रसमें खरलकर सबके पीछे १ रत्तीके प्रमाण गोली बांधे। एक गोली खाय तो वायु और सन्निपात रोग दूर होयँ। यह रस योगचिन्तामणि में लिखा है १८ ॥

अथ त्रिपुरभैरव रस ॥

सोंठि ४ पैसे भर, कालीमिरच ४ पैसे भर, शोधा तेलिया और सुहागा ३ पैसे भर, शोधा सिंगीमुहरा १ पैसे भर इन सबको महीन पीस ३ दिन नींबू के रसमें और ५ दिन अदरक के रस में फिर ३ दिन पानों के रस में खरल करे तदनन्तर १रत्ती

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

के प्रमाण गोली बांधे। एक गोली अदरक के रसमें दे तो सन्निपात दूर होय १९ ॥

अथ संज्ञाकरण रस ॥

शोधा सिंगीमुहरा, सेंधानोन, कालीमिरच, रुद्राक्ष, कटेली, कायफल, महुआ, समुद्रफेन ये सब बराबर ले महीन पीस आक के खार की ३ पुट दे पीछे १ या २ या ३ रत्ती कान या नाकमें रखकर फूंक दे तो संज्ञा होआवे और सन्निपात दूर होय २० ॥

अथ ब्रह्मास्त्र रस ॥

पारे की भस्म ३ टंक, शोधा गन्धक ३ टंक इन दोनों के समान शोधा सिंगीमुहरा और इनके बराबर कालीमिरच ले सबको एकरसकर करिहारी के बकले और ज्वालामुखी जड़ी के रस में और अदरक के रस में २१ पुट दे यह रस तैयार करे फिर १ रत्ती के प्रमाण में दे तो सन्निपात दूर होय २१ इति सन्निपात का यत्न ॥

अथ आगन्तुकज्वर की उत्पत्ति, लक्षण ॥

शस्त्रादिक के आघात से, भूतादिक के लगने से, विषआदि के खानेसे, आधि अर्थात् मानसीव्यथासे और राजा, गुरु, माता, पिता आदि के तिरस्कार से तथा काम, क्रोध, शोक, भय, स्नेह, द्वेष इनसे उत्पन्न आगन्तुकज्वर कहाजाता है १ ॥

अथ शस्त्रादिक के आघात से उत्पन्न हुए ज्वर का लक्षण ॥

शस्त्रादिकके लगने से उत्पन्न पीड़ा में वायु का कोप हो रुधिर को बिगाड़ताहै फिर उसके पीड़ा, सूजन और शरीर का वर्ण और का और होजाता है तदनन्तर वह वायु शरीरमें ज्वर करती है ॥

अथ शस्त्रादिक के आघात से उत्पन्न हुए ज्वर का यत्न ॥

इस ज्वरवाले को लंघन न करावे, कषैली और गर्म वस्तु खानेको न दे। मधुर और सचिक्कण वस्तु या शोरुआ खिलावे तथा सेंक और पट्टीबन्धन आदि यथायोग्य यत्न करे २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ भूतादिक के लगने से उत्पन्न ज्वर का लक्षण ॥

शरीरमें उद्वेग होय, कभी रोवे, कभी हँसे, कभी कांपे, चित्त स्थिर न रहे उसके भूतादिक का प्रवेश जानिये ॥

अथ भूतादिक का यत्न ॥

जिसके भूत लगा हो उसके बन्धन, ताड़नादिक करके मन्त्र यन्त्र तन्त्र करे और नास दे तो भूतादिक दूर हों ३ ॥

अथ भूतादिक दूर होने के कुछ अनुभूत उपाय ॥

अथ भूतादिक के झाड़ने का मन्त्र ॥

ॐनमो ॐह्रांह्रींह्रूं नमो भूतनायक समस्तभुवनभूतानि साधय साधय हुंफट् स्वाहा। यह मन्त्र पढ़के मोरपंखसे झाड़ दे तो भूतादिक भाग जायँ ॥ तथा दूसरा मन्त्र ॥ ॐनमो नारसिंहाय हिरण्यकशिपुवक्षस्थलविदारणाय त्रिभुवनव्यापकाय भूतप्रेतपिशाचशाकिनीकीलोन्मूलनाय स्तम्भोद्भवसमस्तदोषान् हन हन सर सर चल चल कम्प कम्प मथ मथ हुंफट् ठह ठह महारुद्रो जयति स्वाहा। इस नृसिंहरक्षामन्त्रको पढ़कर मोरपंखसे झाड़दे तो भूतादिक नहीं रहें ४ ॥

अथ भूतादिक के बकुराने का मन्त्र ॥

ॐनमो भगवते भूतेश्वराय किल किल तरवाय रौद्रदंष्ट्राकरालघक्काय त्रिनयनभूषिताय धगधगितपिशङ्गललाटनेत्राय तीव्रकोपानलायामिततेजसे पाशशूलखट्वाङ्गडमरुकधनुर्बाणमुद्गरभूपदण्डत्रासमुद्राव्यग्रदशदोर्दण्डमण्डिताय कपिलजटाजूटकूटार्धचन्द्रधारिणे भस्मरागरञ्जितविग्रहाय उग्रफणिपतिघटाटोपमण्डितकण्ठदेशाय जय जय भूतडामरस आत्मरूपं दर्शय दर्शय नृत्य नृत्य सर सर चल चल पाशेन बन्ध बन्ध हुंकारेण त्रासय त्रासय वज्रदण्डेन हन हन निशितखड्गेन छिन्धि छिन्धि शूलाग्रेण भिन्धि भिन्धि मुद्गरेण चूर्णय चूर्णय सर्वग्रहाणां आवेशय आवेशय। इस मन्त्रसे गौके घृतमें गुग्गुल मिलाय बहुतसी धूप दे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

और इसी मन्त्रसे उड़दोंको अभिमन्त्रित करके उसके मारे तो मनुष्य निश्चय बकुरकर जैसा होय वैसा कहे पीछे उसी मन्त्र से लिखकर नींबके पत्ते और सर्पकी कांचली मिलाकर धूप दे ५॥

अथ भूतादिक के उतारने का नास और अञ्जन॥

हींगको लहसुनके पानीमें पीसकर नास दे तथा अञ्जन करे तो भूतादिक दूर होयँ। यह तन्त्रोपचार में लिखा है ६॥

अथ भूतादिक उतारने का तन्त्र॥

तुलसीपत्र ८ कालीमिरच ८ सहदेई की जड़ रविवार को पवित्र होकर ले इन तीनों को मिलाके कण्ठ में बांधे तो भूतादिक दूर होयँ ७॥

अथ क्रोधज्वर का लक्षण॥

शरीर कांपे, मस्तक पीड़ा करे और पित्तज्वर के लक्षण मिलें उसको क्रोधज्वर जानिये॥

अथ क्रोधज्वर का यत्न॥

अच्छे शीतल वचनों से चित्तविनोदक लोभ दिलावे तो यह ज्वर दूर होय ८॥

अथ मानसज्वर की उत्पत्ति और लक्षण॥

इष्ट, मित्र, पुत्र, स्त्री, धनआदि जिसका नष्ट होगया हो अथवा राजा और बड़ों का तिरस्कार किया हो उसके अतीसार और सर्ववस्तुमें ग्लानि, चित्तभ्रम, श्वास, अश्रुपात आदिक लक्षण हों तो मानसज्वर जानिये॥

अथ मानसज्वर का यत्न॥

इस ज्वरवालेको ज्ञान और धैर्यता रखनी उचित है, मिष्टान्न और नानाप्रकार के रुचिकारी भोजन तथा व्यञ्जन खाये तो यह ज्वर दूर होय ९॥

अथ कामज्वर का लक्षण॥

जिसके कामज्वर प्रकट होय उसको भोजनादिकमें अरुचि

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

और मनमें दाह होय तथा लज्जा, निद्रा, बुद्धि, धैर्य ये सब जाते रहें, हृदय दूखे, संभोगही में ध्यान रहे, श्वास हो आवे उसके कामज्वर जानिये ॥

अथ कामज्वर का यत्न ॥

अत्यन्त सुन्दरी, सर्वगुणसम्पन्ना, नवयौवना १६ वर्ष की स्त्री से अच्छेप्रकार संभोग करे तो कामज्वर दूर होय १० ॥

अथ स्त्री के कामज्वर का लक्षण ॥

मूर्च्छा और सर्व शरीर में मरोड़ा होय, प्यास लगे, नेत्र चपल होजायँ, कुचमर्दन कराने की मनमें इच्छा होय, पसीना, हृदय में दाह तथा भोजन में अरुचि होय तथा लज्जा, निद्रा, धैर्यता जाती रहे ये लक्षण जिस स्त्री के हों उसके कामज्वर जानिये ॥

अथ स्त्री के कामज्वर का यत्न ॥

जिस स्त्री के कामज्वर हो वह अच्छे प्रकारसे सर्व अलङ्कार-युक्त हो अपने पतिसे रमण करे तो कामज्वर दूर होय ११ ॥

अथ भयज्वर का लक्षण ॥

भयज्वरवाले के प्रलाप, अतीसार, भोजन में अरुचि और चित्त स्थिर न रहे ये लक्षण होते हैं ॥

अथ भयज्वर का यत्न ॥

आनन्दकी बातें कहकर उसके भय को दूर करे तो भयज्वर जाय १२ ॥

अथ विषमज्वर का लक्षण ॥

जिस मनुष्य के ज्वर आने के पीछे किसी प्रकारके कुपथ्य से रस धातुको छोड़; रुधिरआदि धातुको प्राप्तहुआ पित्त कफ विषमज्वर को करता है १३ ॥ अथवा ज्वर आये विनाभी जिस पुरुष के ज्वर होकर शीत और दाह होआवे तथा तृषा, दाह के थोड़े बहुत का नियम और समय का भी नियम न रहे, किसी समय आजाय उसके विषमज्वर कहिये। विषमज्वर चार प्रकारका है।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

एक सन्तत जो प्रतिदिन आवे। दूसरा एकान्तरा जो एक दिन बीच देके आवे। तीसरा तिजारी जो तीसरे दिन आवे। चौथा चातुर्थिक जो चौथे दिन आवे। विषमज्वर के भेद तो बहुत हैं परन्तु चार मुख्य हैं वेही लिखे हैं १४॥

अथ विषमज्वर का यत्न॥

विषमज्वरवाले को मूँग अथवा मोठ की दाल का पानी देवे, हलका रक्खे, औटाजल पिलावे और परवर के पत्ते, हड़ की छाल, नींब की छाल, इन्द्रयव, गुरच, जवासा इन औषधों को बराबर ले जवकुटकर २ टंक का काढ़ा ७ दिन तक दे तो संततज्वर जाय १५॥ अथवा शीतज्वरवाले को बृहत्क्षुद्रादि क्वाथ दे तो शीतज्वर जाय सो लिखते हैं। कटैया, धनियां, सोंठि, गुरच, नागरमोथा, पद्माक, रक्तचन्दन, चिरायता, परवर के पत्र, अड़ूसा, पुहकरमूल, कुटकी, इन्द्रयव, नींब की छाल, भारंगी, पित्तपापड़ा इन सबको बराबर ले जवकुटकर २ टंक का काढ़ा दोनों समय १० दिन तक दे तो शीतज्वर दूर होय १६॥ अथवा षोडशाङ्ग चूर्णसेभी विषमज्वर दूर होता है सो लिखते हैं। चिरायता, नींब की छाल, कुटकी, गुरच, हड़कीछाल, नागरमोथा, धनियां, अड़ूसा, सफ़ेद कटैया, भटकटैया, काकड़ासिंगी, सोंठि, पित्तपापड़ा, शीतल मिरच के फूल, परवर के पत्ते, पीपरि, कचूर इन सबको बराबर ले महीन पीस कपड़छानकर १ टंक भर शीतल जलसे ८ दिन तक खाय तो विषमज्वर जाय १७॥ अथवा चिरायता, कुटकी, निसोत, नागरमोथा, पीपरि, बायबिड़ंग, सोंठि, नींब की छाल, हड़ की छाल इन सबको बराबर ले महीन पीस चूर्ण करके १ टंक गर्म जलसे ७ दिन तक दे तो विषमज्वर दूर होय और भूख लगे १८॥ अथवा सम्बुल को मारू बैंगन के पेट में १४ बार पकाकर भुरता करे पीछे उसके बराबर पीपरि और शिंगरफ़ ले इन तीनों की राई के बराबर गोली बांधकर १ गोली

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बताशेमें ३ अथवा ५ दिन तक दे तो यह ज्वरांकुश रस शीत-ज्वर, एकान्तरा, तिजारी इन सबको दूर करे ॥

अथ जीर्णज्वर का लक्षण ॥

२१ दिन के पीछे जिसके शरीरमें सूक्ष्म होकर ज्वर रहे और भूख जातीरहे, शरीर दुर्बल होजाय, पेट में फिया होय उसके जीर्णज्वर कहिये १९ ॥

अथ जीर्णज्वर का यत्न ॥

जीर्णज्वरादिक को दूर करनेवाला बसन्तमालिनी रस लिखते हैं। सुवर्ण के वर्क १ माशे, बूके मोती २ भाग, शिंगरफ़ ३ भाग, कालीमिरच ४ भाग, गोमूत्रमें शोधी खपरिया ८ भाग इन सब को खरल में महीन पीस पीछेसे इसके मुवाफ़िक़ गौके मक्खन में खरल करे फिर जबतक चिकनाई न मिटै तबतक नींबू के रस में खरल करे इसप्रकार इसको तैयार करके १ रत्ती या २ रत्ती पीपरि और शहद के साथ दे तो जीर्णज्वर जाय और धातु का विकार, गर्मी का रोग, संग्रहणी, मूत्रकृच्छ्र, श्वास, कास, प्रदर इन सब रोगों को अनुपान के संयोग से दूर करता है २० ॥ अथवा कटैली, गिलोय, सोंठि इन तीनों का काढ़ा १० दिन तक दे तो जीर्णज्वर जाय २१ ॥ अथवा कचूर, पित्तपापड़ा, सोंठि, नागरमोथा, कुटकी, कटैया, चिरायता इनं सबको बराबर ले जवकुट कर २ टंक का काढ़ा दोनों समय ११ दिन तक दे तो जीर्णज्वर, विषमज्वर जाय २२ ॥ यह वैद्यविनोद में लिखा है ॥

अथ लाक्षादि तैल ॥

पीपलकी लाख पाव सेर, मीठापानी ६ सेर, पठानीलोध १० टंक इनको मधुरीआंच से औटाय चतुर्थांश करके निकाले पीछे से इस रसमें गौका मट्ठा १ सेर, मीठातेल १ सेर और सौंफ, असगन्ध, हल्दी, देवदारु, सेमर, पित्तपापड़ा, कुटकी, मुरहरी, मुलहठी, नागरमोथा, रक्तचन्दन, रास्ना इन सब औ-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

षधों को दो दो टंकले महीन पीस इस तेलमें डालकर पीछे से सबको एकरस कर मधुरीआंच से औटावे; जब रस जलजाय और लस आजाय तब उतार ले फिर इस तेलका मर्दन करे तो जीर्णज्वर, विषमज्वर दोनों दूर होयँ और शरीरमें बल होय २३॥ अथवा ३ पीपरि से एक एक प्रतिदिन २१ तक बढ़ावे और एकही एक घटावे जब फिर तीनपर आजाय और पथ्यसे रहे तो इस वर्धमानपिप्पली से भी जीर्णज्वर, विषमज्वर रोग दूर होते हैं २४॥ अथवा बकरीके दूध के झागसे भी जीर्णज्वर जाता है २५॥ अथवा नींबके पत्र, त्रिफला, सोंठि, मिरच, पीपरि, अजमोद, सैंधवनोन, सोंचरनोन, बिड़नोन, जवाखार, चित्रक, चिरायता, पित्तपापड़ा इन सब औषधोंको बराबर ले महीन पीस कपड़छान कर १ टंक प्रातःकाल जलसे ले तो विषमज्वर, जीर्णज्वर दूर होते हैं। यह निम्बादिचूर्ण है २६॥ अथवा त्रिफला, दारुहल्दी, दोनों कटैया, कचूर, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, पिपलामूल, मुरहरी, गुरच, धनियां, अड़ूसा, कुटकी, सफ़ेद कटैया, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, नेत्रबाला, नींबकी छाल, पुहकरमूल, मुलहठी, अजवाइन, इन्द्रयव, भारंगी, सहँजने के बीज, फिटकरी, बच, तज, कमलगट्टा, पद्माक, चन्दन, अतीस, खरेटी, बायबिड़ंग, चित्रक, देवदारु, परवरके पत्ते, चव्य, लवङ्ग, वंशलोचन, पत्रज इन सब औषधों का आधा चिरायता ले महीन पीस कपड़छान कर ६ माशे शीतल जलसे ले तो यह विषमज्वर, जीर्णज्वर और सर्वज्वरमात्रको दूर करता है। यह सुदर्शनचूर्ण है २७॥ अथवा किसीप्रकार विषमज्वर, जीर्णज्वर न जाता दीखे तो रोगके मुवाफ़िक़ जुलाब और वमन करावे तब विषमज्वर और जीर्णज्वर दूर होयँ २८॥

अथ अजीर्णज्वर का लक्षण॥

बारंबार ढीला दस्त और खट्टी डकार आवे, वमनकी इच्छा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

रहे, उदरमें पीड़ा और अफरा तथा गुड़गुड़ाहट शब्द होय तो अजीर्णज्वर जानिये ॥

अथ अजीर्णज्वर का यत्न ॥

अजमोद, हड़की छाल, सोंचरनोन, कचूर इन सबको बराबर ले महीन चूर्णकर १ टंक गर्मपानी के साथ ले तो अजीर्णज्वर जाय २९ ॥

अथ दृष्टिज्वर का लक्षण ॥

जमुहाई बहुत आवें, उदरमें पीड़ा और हाथमें हड़फूटन हो, शरीरसे शक्ति जातीरहे तो दृष्टिज्वर जानिये ३० ॥

अथ दृष्टिज्वर का यत्न ॥

भुनीहुई हींग, कालीमिरच, पीपरि, सोंठि इनको महीन पीस गर्मपानी के साथ १ टंक ले तो दृष्टिज्वर दूर होय ३१ ॥ अथवा जहरमुहरा आदिका जल पिलावे तो दृष्टिज्वर दूर होय ३२ ॥

अथ बिगड़े रुधिर के ज्वर का लक्षण ॥

अंगमें हड़फूटन हो, मुखसे श्वास आवे, शरीर शिथिल और नेत्र लाल होयँ, तृषा, मूर्च्छा, अफरा ये लक्षण जिसमें होयँ उसके रुधिर का ज्वर जानिये ३३ ॥

अथ रुधिर के ज्वर का यत्न ॥

किशमिश, अड़ूसा, कटैया, हल्दी, गुरच, हड़की छाल इन सबको बराबर ले जवकुट कर २ टंक का काढ़ा करे जब शीतल होजाय तब धेले भर शहद मिलाय ७ दिन तक पिये तो बिगड़े रुधिर का ज्वर जाय ३४ ॥

अथ मलज्वर का लक्षण ॥

मुखशोष, दाह, भ्रम, मूर्च्छा, मस्तकपीड़ा, हिचकी, वमन, पेट में शूल ये लक्षण जिसमें होयँ उसके मलज्वर जानिये ३५ ॥

अथ मलज्वर की औषध ॥

कुटकी, पीपलामूल, नागरमोथा, हड़की छाल, अमिलतास

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

की गिरी ये सब औषधें बराबर ले जवकुट कर २ टंक का काढ़ा दे तो मलज्वर जाय। यह आरग्वधपञ्चक है ३६ ॥

अथ गर्भिणी के ज्वर का यत्न ॥

रक्तचन्दन, किशमिश, गौरीसर, खस, मुलहठी, महुआ, धनियां, नेत्रबाला, मिश्री इन सबको बराबर ले काढ़ाकर ७ दिन तक पिये तो गर्भिणी का ज्वर जाय ३७ ॥

अथ प्रसूतिका के ज्वर का लक्षण ॥

अंगमें हड़फूटन, शरीर भारी और गर्म रहे तथा कम्प, तृषा, सूजन, अतीसार ये लक्षण जिस स्त्रीके होयँ उसके प्रसूतिका ज्वर कहिये ॥

अथ प्रसूतिका के ज्वर की औषध ॥

अजमोद, सफ़ेद ज़ीरा, वंशलोचन, खैरसार, विजयसार, सौंफ, धनियां, मोचरस इन सबको बराबर ले जवकुट कर २ टंक का काढ़ा १० दिन तक दे तो प्रसूतिका का ज्वर दूर होय ३८ ॥ अथवा दशमूल का काढ़ा दे तो प्रसूतिका का ज्वर जाय। दशमूल यह हैं। सरिवन, पिथवन, दोनों कटैया, गोखुरू, बेलकी गिरी, अरणी, अरलू, खँभारि, पाढ़ा, पीपरि ये सब बराबर ले जवकुट कर २ टंक का काढ़ा १० दिन तक दे तो प्रसूतिका रोग जाय ३९ ॥

अथ बालक के ज्वर की उत्पत्ति और लक्षण ॥

बालक की माता अथवा धाय कुपथ्य करे और गरिष्ठ वस्तु खाय तो बालक के नानाप्रकार के रोग होयँ और बालक के रोने से ज्वर प्रत्यक्ष विदित होता है ॥

अथ बालक के ज्वर का यत्न ॥

बालककी माता अथवा धायको पथ्यसे रक्खे और हलका भोजन दे तथा जो माताके दूध न होय तो बकरीका दूध दे अथवा नागरमोथा, हड़की छाल, परवरके पत्ते, मुलहठी इन सबको

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बराबर ले १ माशेभरका काढ़ा ७ दिन तक दे तो बालक का ज्वर जाय १॥ अथवा खील, मुलहठी, बालछड़, महुआ इनका महीन चूर्ण कर १ माशे शहदके साथ दे तो बालक का ज्वर जाय २॥ अथवा बालकके अतीसार लिये ज्वर होय तो अतीस, बेलगिरी, इन्द्रयव, धाय के फूल, पठानी लोध, धनियां, नेत्रबाला इनका २ माशे भरका क्वाथ कर दे तो ज्वरातीसार दूर होय ३॥ अथवा बालक की नाभि पकगई हो तो घृतके सेकनेसे अच्छी होय ४॥

पेटमें कीड़े पड़जाने से उत्पन्न हुये ज्वर का लक्षण। ज्वर होय, शरीरका वर्ण औरका और होजाय, पेट में शूल और हृदय में पीड़ा, वमन, भ्रम, भोजनमें अरुचि, अतीसार आदि होते हैं॥

अथ यत्न॥

पलाश, पित्तपापड़ा, नींब की छाल, सहँजनेकी जड़, नागरमोथा, देवदारु, बायबिड़ंग इनको बराबर ले जवकुट कर २ टंक का काढ़ा ७ दिन तक दे तो पेटके कीड़े दूर होयँ १॥

अथ कालज्वर का लक्षण॥

ज्वर का अधिक वेग और ऊर्ध्वश्वास होय, शरीर की कान्ति जाती रहे, पसीना आवे, शरीर शिथिल होय, नाड़ी हाथ न लगे, सब इन्द्रियोंके धर्म जाते रहें तो कालज्वर जानिये॥

अथ कालज्वर का यत्न॥

गौ, पृथ्वी आदिका श्रद्धापूर्वक दान और विष्णु का स्मरण तथा सन्निपात का यत्न जो पीछे लिखा गया है करे॥

अथ ज्वर के १० उपद्रव॥

तृषा १ खांसी २ श्वास ३ हिचकी ४ वमन ५ अतीसार ६ अरुचि ७ बद्धकोष्ठ ८ अफरा ९ मूर्च्छा १० ये ज्वर के उपद्रव हैं॥

अथ उपद्रवों के लक्षण॥

प्रथम ज्वर होय फिर अन्यरोग होयँ और वह ज्वरका यत्न नहीं करने दे उसीको ज्वरका उपद्रव कहिये। क्षुधा, तृषा तो ज्वर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

की स्त्री हैं और कास श्वास बेटे, हिचकी और वमन बेटी, अतीसार भाई, अरुचि बहिन, बद्धकोष्ठ भानजा, अफरा श्वशुर, मूर्च्छा बांदी इनमें जो बलवान् होय उसका यत्न करे ॥

अथ ज्वर अतीसार इकट्ठे होयँ उनका यत्न ॥

सोंठि, अतीस, नागरमोथा, चिरायता, गुरच, कुड़ाकी छाल इनको बराबर ले जवकुटकर २ टंकका काढ़ा ७ दिन तक दे तो यह रोग दूर होय १ ॥ अथवा पीपरि, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठि, बेलकी गिरी, नागरमोथा, चिरायता, कुड़ाकी छाल, इन्द्रयव इन सबको बराबर ले जवकुटकर २ टंक का काढ़ा ७ दिन तक दे तो ज्वरातीसार, मुखशोष, हिचकी, तृषा, वमन, श्वास, कास ये सब दूर होयँ २ ॥

अथ ज्वर में तृषा अधिक लगे उसका यत्न ॥

धनियां, नागरमोथा, पित्तपापड़ा इनको बराबर ले जवकुटकर २ टंक का काढ़ा ३ दिन तक दे तो तृषा, दाह, अतीसार ये सब दूर होयँ ३ ॥ अथवा बरगद की कोंपल, चावल की खील, कमलगट्टा इन सबको बराबर ले महीन पीस शहद में गोली बांधकर एक गोली मुखमें रक्खे तो तृषा दूर होय ४ ॥

अथ ज्वर में खांसी होजाय उसका यत्न ॥

पीपरि, पीपलामूल, सोंठि, भारंगी, खैरसार, कटैया, अडूसा, कुलींजन, बहेड़ा इन सबको बराबर ले १ टंक का काढ़ा ७ दिन तक दे तो खांसी जाय ५ ॥

अथ ज्वर में श्वास होय उसका यत्न ॥

सोंठि, मिरच, पीपरि, नागरमोथा, काकड़ासिंगी, भारंगी, पुहकरमूल इन सबको बराबर ले १ टंक का काढ़ा ७ दिन दे तो ज्वर का श्वास दूर होय ६ ॥

अथ ज्वर में हिचकी आवे उसका यत्न ॥

जल में सैंधवनोन महीन पीस नास दे तो हिचकी दूर होय ७ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथवा मोर के पंखकी राख, जलीहुई पीपरि शहद में चटावे तो हिचकी और वमन दूर होय ८॥

अथ ज्वर में वमन होय उसका यत्न॥

१ टंक गिलोय का काढ़ा शहद मिलायकर दे तो ज्वरका वमन दूर होय ९॥ अथवा दो रत्ती मक्खीकी बीट शहदमें चटावे तो वमन दूर होय १०॥ अथवा चावलकी खील; पीपरि और शहद में चटावे तो भी वमन दूर होय ११॥

अथ ज्वर में मूर्च्छा होय उसका यत्न॥

अमिलतास की गिरी, किशमिश, पित्तपापड़ा, हड़की छाल इनको बराबर ले २ टंक का काढ़ा दे तो मूर्च्छा दूर होय १२॥

अथ ज्वर में बद्धकोष्ठ या अफरा होय उसका यत्न॥

साबुनकी बत्ती बनाके गुदामें रक्खे तो बद्धकोष्ठ और अफरा यह दोनों दूर होयँ १३॥

अथ ज्वर में मुखशोष और जीभ में विरसता का यत्न॥

मिश्री व अनारके दानों के कुल्ले करे अथवा किशमिश और अनार के दानोंके कुल्ले करे तो मुखशोष और जीभकी विरसता दूर होय १४॥

अथ ज्वर में निद्रा जाती रहे उसका यत्न॥

आलूबुखारा १ सिकी भङ्ग १ रत्तीभर शहदमें चटावे तो निद्रा आवे और अतीसार, संग्रहणी दूर होय, भूख लगे १५॥ अथवा १ टंक पीपलामूल गुड़ में खाय तो अवश्य निद्रा आवे १६॥ अथवा अरण्ड और अलसी के तेलको कांसीकी थाली में घिस अञ्जन करे तो अवश्य निद्रा आवे १७॥

अथ ज्वर उतर गया हो उसका लक्षण॥

सब शरीर हलका, मस्तकमें खुजली, ओठमें पपड़ी पड़े, सब इन्द्रिय अपने २ विषयों को ग्रहण करने लगें, शरीरकी संपूर्ण व्यथा जाती रहे, सब शरीरमें पसीना आवे, क्षुधा लगे,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

छींक आवे, मलकी प्रवृत्ति होय ये लक्षण जब होयँ तब निश्चय ज्वर गया जानिये। बुद्धिमान् पुरुष ज्वर आनेके पीछे भी जब तक शरीर में बल न आवे तबतक पथ्यसे रहे और मैथुन, व्यायाम, बोझ उठाना, अतिभोजन इत्यादि न करे—इति आठों ज्वर की उत्पत्ति लक्षण यत्न सम्पूर्ण ॥

इति द्वितीयस्तरङ्गः २ ॥

अथ अतीसार रोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

मैदा आदि गरिष्ठ वस्तु और शीतल पतली वस्तु तथा विरुद्ध वस्तु खाने, भोजन के ऊपर भोजन करने, विष खाने, मलकी बाधा रोंकने और अधिक चिकनी, रूखी, गर्म वस्तु के खाने आदि से मनुष्योंके अतीसार रोग उत्पन्न होता है ॥

अथ अतीसार का स्वरूप ॥

मनुष्यके शरीरमें इन कुपथ्योंसे जल धातु बढ़े तो उदर की अग्नि को शान्त करे और वह जल पवन से प्रेरित हो विष्ठा से मिल गुदाके मार्ग से पतला होकर नीचे अधिक उतरे उसको अतीसार जानिये। वात १ पित्त २ कफ ३ सन्निपात ४ शोथ ५ आम ६ इन भेदों से यह अतीसार छः प्रकारका है॥

अथ अतीसार का पूर्वरूप ॥

प्रथम हृदय, नाभि, गुदा, उदर, पेडू इनमें पीड़ा और सब अङ्गोंमें हड़फूटन होय तथा गुदा की पवन रुकजाय, बद्धकोष्ठ और अफरा होय, अन्न पचे नहीं तो जानिये कि मनुष्य के अतीसार होगा ॥

अथ वात के अतीसार का लक्षण ॥

कुछ एक ललाई लिये मल उतरे और मलमें झाग मिले हों तथा रूखा, थोड़ा बार बार आम सहित आवे और दिशा के समय पेडू में पीड़ा होय तो वात का अतीसार जानिये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ वात के अतीसार का यत्न ॥

खुरासानी बच, अतीस, नागरमोथा, इन्द्रयव, सोंठि ये सब बराबर ले जवकुट कर २ टंक का काढ़ा ७ दिन तक दे तो वात का अतीसार दूर होय १ अथवा इन्द्रयव, नागरमोथा, पठानीलोध, बेल की गिरी, आम की गुठली, धवई के फूल इन को महीन पीस चूर्ण कर २ टंक भैंस की छांछ में ७ दिन दे तो वायु का अतीसार दूर होय २ ॥

अथ पित्त के अतीसार का लक्षण ॥

मल पीला, लाल, हरा और दुर्गन्धयुक्त पतला हो, गुदा पकजाय, शरीर में पसीना आवे, प्यास लगे, दाह और मूर्च्छा हों ये लक्षण जिसमें हों उसके पित्त का अतीसार जानिये ॥

अथ पित्त के अतीसार का यत्न ॥

बेल की गिरी, इन्द्रयव, नागरमोथा, नेत्रबाला, अतीस इन को जवकुट कर २ टंक का काढ़ा ८ दिन दे तो पित्त का अतीसार जाय १ अथवा रसौंत, अतीस, इन्द्रयव, धाय के फूल, सोंठि इन सबको बराबर ले महीन चूर्ण कर चावल के पानी से २ टंक शहद मिलाय के ७ दिन दे तो भयंकर भी पित्त का अतीसार जाय। और पित्तातीसार का रक्तातीसारभी भेद है॥ अत्यन्त गर्म वस्तु खाने से पित्त बढ़कर रुधिर को बिगाड़ता है। तब रुधिर से मिला हुआ मल उतरताहै उसको रक्तातीसार कहते हैं ॥

अथ रक्तातीसार का यत्न ॥

कुड़ा की छाल, अनार का छिलका इन दोनों को २ टंक भर ले काढ़ा कर ५ टंक शहद मिलाय ७ दिन दे तो रक्तातीसार जाय १ अथवा कुड़ाकी छाल, अतीस, नागरमोथा, नेत्रबाला, पठानीलोध, रक्तचन्दन, धवई के फूल, अनार का छिलका, पाढ़ इन सबको बराबर ले जवकुट कर ३ टंक का काढ़ा कर उसमें २ टंक शहद मिलाय ७ दिन दे तो दाह और शूलसंयुक्त रक्ता-

In Public Domain, Chamba Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तीसार दूर होय २ अथवा सफ़ेद चन्दन १ टंक महीन पीस के २ टंक शहद और २ टंक मिश्री मिलाय ८ दिन चाटे तो रक्तातीसार दूर होय ३ अथवा मीठे अनार का पुटपाक १ टंक शहद मिलाय कर चाटे तो रक्तातीसार जाय ४ अथवा बकरी के दूध में मक्खन, मिश्री और शहद मिलायके पिये तो रक्तातीसार जाय ५ ॥

अथ गुदा पकगई होय उसका यत्न ॥

परवर के पत्ते, मुलहठी, महुआ इनको पानी में औटावे और ठंढा कर उस पानी से गुदा धोवे तो गुदा का पकना जाय १ अथवा बकरीके दूधमें मिश्री और शहद मिलायके धोवे तो भी गुदा का पकना जाय २ अथवा गेहूं के आटे में घृत मिलाय पानी से उसन उससे सुहाता २ सेंके तो गुदा का पकना अच्छा होय ३॥

अथ श्लेष्मातीसार का लक्षण ॥

जिसका मल चिकना और सफ़ेद, गाढ़ा, दुर्गन्ध लिये, शीतल, थोड़ी पीड़ा सहित उतरे और शरीर भारी रहे, भोजनमें अरुचि होय ये लक्षण जिसमें होयँ उसके श्लेष्मातीसार जानिये ॥

अथ श्लेष्मातीसार का यत्न ॥

कफातीसारवाले को दो चार लंघन करावे अथवा मूंग का थोड़ासा पथ्य दे पीछे चव्य, अतीस, कूट, कुटकी, बेलकी गिरी, सोंठि, कुड़ाकी छाल, तज इनको जवकुट कर २ टंक का काढ़ा ७ दिन दे तो श्लेष्मातीसार जाय १ अथवा सिकीहुई हींग, कालानोन, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, अतीस इन सबको बराबर ले चूर्णकर १ टंक ७ दिन दे तो श्लेष्मातीसार जाय २ ॥

अथ सन्निपातातीसार का लक्षण ॥

जिसका मल शूकर के मांस के सदृश हो और अनेक रूपका दीखे तथा तन्द्रा, तृषा, मुखशोष, भ्रम, मोह ये सब बातें जिस बालक, वृद्ध और स्त्रीके होयँ उसे असाध्य जानिये ॥

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ सन्निपातातीसार का यत्न ॥

पीपरि, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठि, खरैटी, बेलकी गिरी, गुरच, नागरमोथा, पाढ़, चिरायता, कुड़ाकी छाल, इन्द्रयव इनको जवकुट कर २ टंक का काढ़ा १० दिन दे तो सन्निपातका अतीसार जाय १ अथवा जंगीहड़, सोंठि, नागरमोथा इन सबको बराबर ले महीन पीस पुराने गुड़ में २ टंक ७ दिन खाय तब त्रिदोष का अतीसार दूर होय २ अथवा कुड़ा की छाल का पुटपाक कर रस निकाल ५ टंक शहद मिलाय के १० दिन तक दे तो सन्निपात का अतीसार जाय ३ ॥

अथ शोक के अतीसार का लक्षण ॥

पुत्र, मित्र, स्त्री, धन आदि के नाश से उपजा शोक उदर की अग्नि को मन्द करता है और शरीर के बाहर का तेज उदर में जाकर रक्त को बिगाड़ता है। वह रक्त विष्ठा से मिलके अथवा न मिलके गुदा के द्वारा गुंजा के सदृश निकले तो उसको शोकातीसार जानिये। वह शोक दूर होने ही से जाता है और इसी तरह किसी प्रकार के भय से उपजे भयातीसार को भी जानले ॥

अथ आमातीसार का लक्षण ॥

जिस पुरुष के प्रथम भोजन का अजीर्ण होय और वह पीछे गरिष्ठ वस्तु खाय तो उसके कोष्ठ में वात, पित्त, कफ ये तीनों जाकर धातु के समूह और मल को बिगाड़ते हैं और वह मल शूल संयुक्त, दुर्गन्ध लिये अनेक रंग का गुदा के द्वारा निकलता है उसको वैद्य आमातीसार कहते हैं और जो मल जल में तिरे वह आम है और जल में डूब जाय अथवा दुर्गन्धयुक्त, सफ़ेद चिकनाई लिये होना भी इसका लक्षण है ॥

अथ आमातीसार का यत्न ॥

धनियां, सोंठि, बेलकी गिरी, नागरमोथा, नेत्रबाला ये सब बराबर ले जवकुट कर २ टंक का काढ़ा ७ दिन अथवा रोग के

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सदृश १० दिन तथा १५ दिन दे तो आमातीसार और शूल ये दूर होयँ । यह धान्यपंचक है १ अथवा जंगीहड़, मोथा, सोंठि, अतीस, दारुहल्दी इन सबको बराबर ले जवकुट कर २ टंकका काढ़ा ७ दिन दे तो आमातीसार दूर होय २ अथवा जंगीहड़, अतीस, सिकीहुई हींग, सोचरनोन, सैंधवनोन इनको बराबर ले महीन पीस २ टंक गर्म पानीसे ले तो आमातीसार जाय ३॥

अथ पक्कातीसार का यत्न ॥

पठानीलोध, धवईके फूल, बेलकी गिरी, मोथा, आम की गुठली, इन्द्रयव ये सब बराबर ले महीन पीस २ टंक भैंस की छांछ (मट्ठा) से ले तो पक्कातीसार दूर होय १ अथवा अजमोद, मोचरस, सोंठि, धवई के फूल, जामुन की गुठली, आम की गुठली इन सबको बराबर ले महीन पीस २ टंक गौ की छांछ के साथ ले तो पक्कातीसार जाय । यह लघु गङ्गाधर चूर्ण है २॥

अथ शोफातीसार का यत्न ॥

सांठी की जड़, इन्द्रयव, पाढ़, बायबिड़ंग, अतीस, नागरमोथा, कालीमिरच इन सबको बराबर ले जवकुट कर २ टंक का काढ़ा ७ दिन दे तो शोफातीसार जाय १ ॥

अथ अतीसार में वमन होय उसका यत्न ॥

आम की गुठली, बेलकी गिरी इन दोनों को २ टंक ले काढ़ा कर उसमें २ टंक शहद और २ टंक मिश्री मिला के ७ दिन दे तो वमन सहित अतीसार जाय १ अथवा सिकीहुई मूंग, चांवल की खील इन दोनोंको औटाय शहद, मिश्री मिलाय ५ दिन पिये तो वमन, अतीसार, दाह, ज्वर दूर होय २ ॥

अथ अतीसार का भेद मोढ़ानिबाही है उसका लक्षण ॥

कुपथ्य के करनेवाले मनुष्य के वात बढ़कर कफ से मिलके मोढ़ानिबाही को करता है । जब पुरुष के क्षण क्षण में मरोड़ा होकर थोड़ा अथवा अधिक गुदा के द्वारा मल निकले उसको

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मोढ़ानिबाही कहते हैं। यह वात, पित्त, कफ, रुधिरके भेदसे चार प्रकारका है। जिसमें बहुत पीड़ा होकर मल उतरे उसको वायुका कहिये और जिसमें दाह अधिक होय उसको पित्तका और जिसमें कफसंयुक्त मल जाय उसको कफका कहिये तथा जिसमें रुधिर-संयुक्त मल उतरे उसको रुधिर का जानिये ॥

अथ इन चारों का यत्न ॥

बेल की गिरी, पठानीलोध, कालीमिरच इन तीनों को दो पैसेभर ले महीनपीस १ टंक शहद में चाटे तो मोढ़ानिबाही दूर होय १ अथवा धाय के फूल २ टंक महीन पीस दहीके साथ ७ दिन खाय तो मोढ़ानिबाही जाय २ अथवा कैथ का रस ५ टंक शहद में ७ दिन खाय तो मोढ़ानिबाही दूर होय ३ अथवा २ टंक पठानीलोध दही के साथ ७ दिन खाय तो मोढ़ानिबाही जाय। ये सब लक्षण और यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं ४ ॥

अथ आमातीसार का यत्न ॥

हड़की छाल महीन पीस २ टंक शहदमें ५ दिन खाय तो आमातीसार जाय १ अथवा भांगरे का रस ५ टंक दही के साथ ७ दिन खाय तो सब प्रकारके अतीसार दूर होयँ२ अथवा २टंक राल में १० टंक मिश्री मिलाय १० दिन खाय तो बहुत कालका हुआ भी अतीसार जाय ३ अथवा बेल की गिरी २ टंक बकरी के दूध के साथ ७ दिन पिये तो रक्तातीसार जाय। यह वैद्यविनोद में लिखा है ४ अथवा धनियां, सोंठि, पीपरि, सेंधानोन, अज-मोद, सिकी हींग, सफ़ेद ज़ीरा इन सबको बराबर ले महीन पीस मट्ठे के साथ पिये तो अतीसार, आमशूल इत्यादि जायँ। भूख लगे और रुचि होय। यह वृन्दनाम ग्रन्थमें लिखा है ५ अथवा सोंठि को जलसे पीसकर गोला बनाय गोलेको अरण्डके पत्तों से लपेट डोरोंसे बांध कपरौटी कर मधुरी आंच में पकावे फिर उसकी मट्टी दूरकर सोंठि काढ़ ले ठण्ढीकर २टंक शहद से७दिन

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

खाय तो अतीसार जाय ६ अथवा एकभाग अफीम, दो भाग हींग, तीनभाग लवङ्ग, चारभाग मोचरस, तीनभाग मिश्री इन को महीन पीस १ या २ रत्ती सांठी चांवलके पानी में अथवा छांछ के साथ खाय तो भयंकर भी अतीसार जाय ७ अथवा नागरमोथा, मोचरस, पठानीलोध, धायके फूल, बेलकी गिरी, इन्द्रयव, अफीम, शोधापारा, शोधीगन्धक इन सबको बराबर ले पहिले पारे और गन्धक की खरलमें कजली करे पीछे इन सब औषधों को उस कजलीमें मिलाय ३ रत्तीके प्रमाण छांछमें खाय तो अतीसार, मोढ़ानिबाही, संग्रहणी ये सब दूर होयँ। यह गन्धार रस है ८ अथवा सोंठि, जायफल, अफीम, कच्चे अनारका गूदा इन सबको बराबर ले इकट्ठी कर कच्चे अनार में भरे पीछे उसका पुटपाक कर उसकी गोली घुँघचिलके प्रमाण बनाकर एक गोली गौकी छांछमें ७ दिन खाय तो पक्कातीसार दूर होय ९ अथवा अफीम को ठीकरेमें मधुरी आंचसे सेंककर प्रमाण से दे तो अतीसार निश्चय दूर होय १० अथवा जायफल, लवङ्ग, धवई के फूल, बेलकी गिरी, नागरमोथा, सोंठि, मोचरस, शिंगरफ़, अफीम इन औषधों को बराबर ले महीन पीस पोस्ता के छिलके के पानी में १ या २ रत्ती के प्रमाण गोली बांधे एक गोली चांवल के पानी या छांछ के साथ खाय तो निश्चय सर्व अतीसार जायँ ११ अथवा जायफल, छोहारा, अफीम इन तीनों को बराबर ले पीछे पानके रसमें एकरत्ती प्रमाण गोली बांधे एक गोली छांछ के साथ ७ दिन खाय तो भयंकर भी अतीसार दूर होय १२ और जिसके अतीसार होय वह नवीन अन्न, गर्म वस्तु, भारी और चिकना भोजन, धूप, खेद, मैथुन, स्नान, चिन्ता आदि न करे। यह वैद्यरहस्य में लिखा है १३॥

अथ अतीसार का असाध्य लक्षण॥

शूकरमांस के सदृश मल होय और प्यास, दाह, अरुचि,

In Public Domain, Chamba Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

श्वास, हिचकी, पसली में शूल, मूर्च्छा इत्यादि होयँ तथा किसी बात में मन न लगे, गुदा पक जाय, अग्नि मन्द होजाय, ज्वर भी रहे, मूत्र बन्द होय, शरीर निर्बल होजाय ये लक्षण जिस पुरुषमें होयँ वह पुरुष मरजाय १४॥

अथ अतीसार जाता रहा हो उसका लक्षण॥

जिसके दिशा आये विना मूत्र उतरे, गुदा की पवन अच्छे प्रकार से चले और कोठा हलका होय यह लक्षण होयँ तो अतीसार रोग दूर हुआ जानिये—इति अतीसार की उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

अथ संग्रहणी रोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न॥

प्रथम मनुष्य के अतीसार होके जाता रहा हो फिर उस मनुष्य के कुपथ्य करने से मन्द हुई जो अग्नि सो उदर में रहनेवाली जो छठी कला जिसका नाम संग्रहणी है और वही कला अग्निका स्थान है और खायेहुए अन्नादिकको ग्रहण करतीहै वह मन्दाग्नि उस कला को बिगाड़कर कच्चे अन्नको ग्रहण कर पक्के अन्नको गुदा के द्वारा निकालती है इसी हेतु से वैद्यलोग उसका नाम संग्रहणी कहते हैं इस संग्रहणी कलामें अग्निही का बल है सो वह कला अग्निकोही बिगाड़ती है॥

अथ संग्रहणी का लक्षण॥

प्रथम वात, पित्त, कफ, सन्निपात इन भेदों से संग्रहणी ४ प्रकारकी है ये जो वात, पित्त, कफ हैं सो अधिक कुपथ्य से और अधिक भोजन करने से कच्चेही अन्नको गुदाके द्वारा निकालते हैं अथवा पक्के अन्नको निकालें तो भी कभी पीड़ा, कभी मल पतला और कभी बँधा उतरे यही संग्रहणी का लक्षण है॥

अथ वात की संग्रहणी की उत्पत्ति और लक्षण॥

जो पुरुष बादीवस्तु को अधिक सेवन करे और मिथ्या आहार और मैथुनादिक अधिक करे तिस पुरुष के वात कुपित

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

होकर जठराग्नि को बिगाड़ वातकी संग्रहणी को करता है सो जिस पुरुष के अर्धपक्व अन्न पचे और कण्ठ सूखे, क्षुधा तृषा लगे, कानों में शब्द होय तथा पसली, जंघा, पेड़ू और कांधों में पीड़ा होय अथवा कभी कभी विसूचिका भी हो आवे, हृदय दूखे, शरीर दुर्बल होजाय, जिह्वा का स्वाद जाता रहे, मीठे आदि रसों के खाने की इच्छा रहे और भोजन करे तो जिह्वा आनन्द पावे तथा उदर में गोला फियाका आकार होय, पैर दुखने लगें और थोड़ा सा शीघ्रता समेत पवन सरे, बारम्बार दिशा जाय एवं श्वास, कास भी होय ये सब लक्षण वातकी संग्रहणी के हैं १ ॥

अथ वात की संग्रहणी का यत्न ॥

सोंठि, गुरच, नागरमोथा, अतीस इन सबको बराबर ले जवकुट कर २ टंक का काढ़ा १५ दिन दे तो आम समेत वात की संग्रहणी जाय और भूख बढ़े १ अथवा गौके मट्ठे में सोंठि, पीपलामूल, पीपरि, चित्रक, चव्य इन सबको बराबर ले चूर्ण कर २ टंक प्रतिदिन मट्ठे में मिलाके पिये और मट्ठेकाही खूब सेवन करे तो वात की संग्रहणी अवश्य जाय २ अथवा शोधी गन्धक १ तोला, शोधा पारा ६ माशे दोनों की कजलीकर पीछे से सोंठि, कालीमिरच, पीपल ये तीनों २ तोले, पांचो नोन डेढ़ तोले, भुना अजमोद १ तोला, भुना जीरा १ तोला, भुनी हींग १ तोला, भुना सुहागा १ तोला, सब औषधों से आधी भुनी हुई भंग इन सबको महीन पीस पारे और गन्धककी कजली में मिलावे फिर उस सब मिले हुएको २ दिन खरल करे तो यह लाही चूर्ण होय। इसको २ तथा ४ माशे गौके मट्ठेमें दे तो वात की संग्रहणी, मन्दाग्नि, अतीसार, बवासीर, पेटके कृमि और क्षयी इनको यह लाहीचूर्ण दूर करे ३ ॥

अथ पित्त की संग्रहणी की उत्पत्ति, लक्षण ॥

जो पुरुष मिरच आदि गर्म वस्तु और तीखी, खट्टी, खारी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अधिक खाय उसका पित्त बिगड़कर जठराग्नि को बुझा देताहै और नीला, पीला, पतला, जलसहित कच्चा मल निकले तथा खट्टी डकार आवे, हृदय और कंठमें दाह, अन्नमें अरुचि होय, तृषा लगे ये लक्षण जिसमें होयँ उसके पित्तकी संग्रहणी जानिये २॥

अथ पित्त की संग्रहणी का यत्न॥

रसौंत, अतीस, इन्द्रयव, तज, धायके फूल इन सबको बराबर ले महीन पीस चूर्णकर २ टंक गौके मट्ठे से अथवा शहद सें वा चावलके पानीके साथ १५ दिन खाय तो पित्तकी संग्रहणी जाय १ अथवा जायफल, चित्रक, सफ़ेद चन्दन, बायबिड़ंग, इलायची, भीमसेनीकपूर, बंशलोचन, ज़ीरा सफ़ेद, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, तगर पत्रज, लवङ्ग इन सबको बराबर ले महीन पीस सबकी दूनी अथवा बराबर मिश्री और विना सेंकी भंग मिलाकर सबको महीन पीस ४ अथवा ६ माशे गौके मट्ठे के साथ १५ दिन ले तो पित्तकी संग्रहणी जाय २ यह वैद्य-रहस्य में लिखा है॥

अथ कफ की संग्रहणी की उत्पत्ति, लक्षण॥

भारी, अतिचिकनी और शीतल वस्तु को जो मनुष्य भोजन करके सोजाय; उस पुरुष के कफका कोप होने से अन्न आधा पचे, हृदय दूखे, वमन और अरोचकता होय तथा मुख मीठा रहे, खांसी और पीनस होय, पेट भारी रहे, मीठी डकार आवे, स्त्री प्यारी न लगे, आमसहित मल उतरे, बल विना शरीर पुष्ट दीखे; आलस्य अधिक आवे जिसमें ये लक्षण होयँ उसके कफ की संग्रहणी जानिये ३॥

अथ कफ की संग्रहणी का यत्न॥

हड़ की छाल, पीपरि, सोंठि, चित्रक, कालानोन, कालीमिरच इन सबको बराबर ले महीन पीस चूर्णकर २ टंक प्रतिदिन मट्ठेके साथ १५ दिन खाय तो कफ की संग्रहणी जाय॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ सन्निपात की संग्रहणी का लक्षण ॥

जिसमें वात, पित्त, कफ इन तीनोंके सब लक्षण मिलें उसको सन्निपात की संग्रहणी जानिये ४ ॥

अथ सन्निपात की संग्रहणी का यत्न ॥

बेल की गिरी, मोचरस, नेत्रबाला, नागरमोथा, इन्द्रयव, कुड़ा की छाल इन सबको बराबर ले महीन पीस २ टंक बकरी के दूध के साथ २५ दिन पिये तो सन्निपात की संग्रहणी जाय १ अथवा अनारदाना ८ टंकेभर, कालानोन १ टंकेभर, जीरा १ टंकेभर, धनियां १ पैसेभर, सोंठि १ टंकेभर, कालीमिरच १ टंकेभर, मिश्री १ टंकेभर इन सबको महीन पीस २ टंक गौके मट्ठे के साथ १ महीने पिये तो सन्निपातकी संग्रहणी और आमातीसार, पसली की पीड़ा, अरुचि, गोला ये सब रोग दूर हों २ अथवा शोधा पारा, शोधी गन्धक, सिंगीमुहरा, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, भुना सुहागा, कांतीसार, अजमोद, अफीम इन सबको बराबर ले और सबकी बराबर अभ्रक ले फिर इन सबको चित्रकके काढ़े के रस में १ दिन खरल कर पीछे कालीमिरच के बराबर गोली बांधे। १ गोली प्रतिदिन १ महीने तक खाय तो सन्निपातकी संग्रहणी जाय। यह अभ्रकगुटिका है ३ अथवा शोधी गन्धक, पारा, अभ्रक, शिंगरफ़, कांतीसार, जायफल, बेल की गिरी, मोचरस, शोधासिंगीमुहरा, अतीस, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, धायके फूल, घृतमें सिंकीहुई हड़की छाल, कैथ, अजमोद, चित्रक, अनारदाना, इन्द्रयव, धतूरे के बीज, कंजा, अफीम ये सब बराबर ले प्रथम पारे और गन्धककी कजली करे फिर उस कजली में ये औषधियां महीन पीस मिलावे पीछे मिरच के प्रमाण पोस्तके छिलके के रसमें गोली बांधे। १ गोली नित्य १५ दिन तक दे तो सन्निपातकी संग्रहणी, अती-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सार, विसूचिका इन सबको दूर करे ४ यह संग्रहणीकपाटरस है और वैद्यरहस्य में लिखा है॥

अथ त्रिदोष की संग्रहणी के भेद और आमवात की संग्रहणी के लक्षण॥

पतला, सफ़ेद, चिकना, आमसहित मल हो और कटि में पीड़ा हो, वात अधिक सरे, कभी अच्छा होजाय और कभी महीने पन्द्रह दिन पीछे फिर होआवे अथवा सदैव बना रहे, आँत बोला करे, आलस्य आवे, शरीर दुर्बल होजाय, पेटमें पीड़ा रहे, दिनमें पीड़ा और रातिमें अच्छा होजाय ये लक्षण जिसमें हों उसको आमवातकी संग्रहणी कहिये। यह असाध्य है इसका और सन्निपातकी संग्रहणी का एकही यत्न है॥

अथ संग्रहणी का भेद घटीयंत्र है उसका लक्षण॥

शरीर सुन्न रहे, पसलीमें शूल होय, पेट बोला करे और पूर्वोक्त संग्रहणी के लक्षण भी हों उसको घटीयंत्र कहिये। यह भी असाध्य है और जो अतीसार के असाध्य लक्षण तथा अच्छे यत्न पीछे लिखे हैं सोई इस संग्रहणीके भी जानने चाहिये॥

अथ संग्रहणी का और विशेष यत्न॥

कैथ ८ भाग, मिश्री ६ भाग, अजमोद ३ भाग, पीपरि ३ भाग, बेलकी गिरी ३ भाग, धायके फूल ३ भाग, अनार का गूदा ३ भाग, तंतरीक ३ भाग, कालानोन १ भाग, नागकेसरि १ भाग, धनियां १ भाग, तज १ भाग, पत्रज १ भाग, मिस्च १ भाग, अजवाइन १ भाग, पीपलामूल १ भाग, नेत्रबाला १ भाग, इलायची १ भाग इन सबको महीन पीस गौके मट्ठेके साथ २ टंकले तो संग्रहणी, गोला इन सबको यह चूर्ण दूर करे। यह कपित्थाष्टकहै। संग्रहणीवाला इतनी वस्तु नहीं खाय—भारी वस्तु जो आम करे, भूख बन्द करे और अतीसारमें जो वस्तु वर्जित की हैं वे न करे तथा जिन वस्तुओं से भूख लगे वे खाय तो संग्रहणी जाय—इति संग्रहणीरोग की उत्पत्ति, लक्षण, यत्न॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ बवासीररोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

मनुष्य की गुदा में शङ्खकी भितरली नाभि के सदृश४अंगुल के ३ चक्र हैं। एक ऊपर का, दूसरा बीच का, तीसरा नीचेका। ऊपर के चक्रका नाम प्रवाहिनी है वह मल, पवन आदि को बाहर निकालता है और बीच का चक्र मल, पवन आदि को छुटाता है तथा तीसरा नीचे का चक्र उस मल, पवनके छोड़ने के पीछे गुदा को ज्यों की त्यों ढक देता है इन तीनों चक्रों में बवासीर उत्पन्न होती है यह बवासीर का स्थान है। पहिले में बवासीर हो तो साध्य और बीचके में हो वह कष्टसाध्य तथा भीतरके में हो वह असाध्य है। बवासीर वात १ पित्त २ कफ ३ सन्निपात ४ रुधिर ५ और एक वह जो शरीरके साथही उत्पन्न हो ६ इन भेदों से छः प्रकारकी है। बादी अथवा गरम, कफकारी, चिकनी, मीठीवस्तुओं के खाने से और वात, पित्त, कफ के करनेवाले मिथ्याआहार, मिथ्याविहार से कोपको प्राप्त वात, पित्त, कफ दोष गुदा के तीनों चक्रों के ऊपर त्वचा, मांस, मेदा को बिगाड़कर गुदा के ऊपर नानाप्रकारके मांसके अंकुरोंको मस्सेके आकार करते हैं उसको वैद्य बवासीर कहते हैं। वह छः प्रकार की है परन्तु लौकिकमें दो प्रकार की प्रसिद्ध है एक खूनी और दूसरी बादी; जिसमें बहुतसा रुधिर जाय वह खूनी और जिसमें रुधिर न जाय परन्तु पीड़ा, चिमचिमी और खुजली आदि हो वह बादी ये दोनों उन्हीं छः के भेदमें से हैं ॥

अथ संपूर्ण बवासीर का पूर्वरूप ॥

अन्न का परिपाक अच्छेप्रकार न हो और कोखही में रहे, बद्धकोष्ठ तथा मन्दाग्नि हो, डकार बहुत आवें, शरीर कृश होजाय, कोख में अफरा हो, अङ्ग में पीड़ा रहे ये लक्षण जिसके हों उस पुरुष के जानिये कि बवासीर होगी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ वात की बवासीर का लक्षण ॥

जिसकी गुदा के मस्से चिमचिमी और ललाई लिये, खरदरे, कठोर, बाँके, तीक्ष्ण, फटेमुखके गुदाके ऊपर हों और छोटे बेर, कपास अथवा कदमके फूलके सदृश हों तथा शिर, पंसली, कन्धे, कटि, जंघा, पेडू इनमें व्यथा हो और छींक, डकार आवे नहीं, हृदय दूखे, भूख लगे नहीं तथा कास, श्वास, मन्दाग्नि, कर्ण में शब्द, भ्रम, वायुगोला, फिया, उदररोग जिसमें ये लक्षण हों उसके वात की बवासीर जानिये ॥

अथ वात की बवासीर का यत्न ॥

जिमींकन्द को मिट्टी में लपेट, भाड़ में खूब भरता कर, तेल अथवा घृतसे लपेट १ टकेभर नित्य ३१ दिन खाय तो वात की बवासीर अवश्य दूर हो। यह भावप्रकाश में लिखा है १ अथवा आक के नवीन पत्रों में पांचोंनोन और तेल, खटाई प्रमाण से लगावे और उन्हें जलाय राख करे पीछे गरम पानी से वह राख १. टंक या २ टंक १५ दिन खाय तो वात की बवासीर जाय। यह वैद्यविनोदमें लिखा है २ अथवा गौ के मट्ठे में सेंधानोन प्रमाणसे मिलाय अच्छेप्रकार बहुत दिन सेवन करे तो वात की बवासीर जाय और शरीर पुष्ट रहे। यह भावप्रकाश में लिखा है ३ अथवा हड़की छाल ५ टकेभर, चित्रक १ टकेभर, सोंठि १ टकेभर, शोधा भिलावां ५ टकेभर, कालीमिरच १ टकेभर, पीपलामूल १ टकेभर, पीपरि १ टकेभर, सफ़ेद ज़ीरा १ टकेभर, चव्य १ टकेभर, पकाया जिमींकन्द पावभर, जवाखार ४ टकेभर इन सबको ले महीन पीस सबसे दूना गुड़ मिलाय १टकेभर के प्रमाणकी गोली बांधे। एक गोली प्रतिदिन खाय तो वातकी बवासीर निश्चय जाय। यह गुड़ कांकायन मुनि ने कहा है ४ अथवा बन्दाल के पत्तों को औटाय उसके पानीसे शौच ले तो बवासीरके मस्से जायँ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथवा बन्दालके ढूँढ़ों की धूनी दे तो मस्से दूर हों ५ अथवा सेंधानोन और बन्दाल के ढूँढ़ों को कांजी में पीस बवासीर में लेप करे तो मस्से जायँ ६ अथवा नींब के पत्ते और कनेर के पत्ते, गुड़, कड़वी तोंबी की जड़ इन सबको कांजी के पानी में पीस मस्सों में लेपकरे तो मस्से दूर हों ७ अथवा हल्दी, कड़वी तोरई की जड़, आकके पत्ते, सहँजनेकी जड़ इनको कांजीके पानी में महीनपीस लेपकरे तो मस्से दूर हों ८ अथवा अरण्ड की जड़, मुलहठी, रास्ना, अजवाइन, महुआ इनको कांजी में पीस गरमकर लेपकरे अथवा इससे सेंककरे तो मस्से की चिम-चिमी जाय और मस्से झड़पड़ें। यह वैद्यरहस्य और वैद्य-विनोदमें लिखा है ९ अथवा हीराकसीस, सेंधानोन, पीपरि, सोंठि, कूट, करिहारी की जड़, पाषाणभेद, कनेर की जड़, बाय-बिड़ंग, दात्यूणी, चित्रक, हरताल, सत्यानासी की जड़ इन सबको बराबर ले महीन पीस इनका तिगुना तेल लेकर थूहर और आकका दूध तथा गोमूत्र ये तीनों तेल से चौगुने ले इन सबको इकट्ठा कर पकावे जब ये जलजायँ और तेल ऊपर आरहे तब उतारकर तेल निकाल मस्सों में मर्दन करे तो मस्से दूर हों, बवासीर जाय और बली दूखे नहीं। यह क्षारतैल वैद्यरहस्य में लिखा है १० अथवा पकाया जिमींकन्द १६ भाग, चित्रक ८ भाग, सोंठि ८ भाग, कालीमिरच ४ भाग, त्रिफला २ भाग, पीपलामूल ८ भाग, शोधा भिलावां ८ भाग, शतावरि ८ भाग, बिधारा १६ भाग, भंग ८ भाग, इलायची ४ भाग, बायबिड़ंग ८ भाग इन सबको महीन पीस सब औषधोंसे दूना गुड़ मिलाय १६ माशे के प्रमाण गोली बांधे और नित्य १ गोली ३० दिन तक खाय तो बवासीर, हिचकी, श्वास, कास, राजरोग, प्रमेह, फिया इन सब रोगों को यह बृहत्सूरणमोदक दूरकरता है। यह वैद्यरहस्य में लिखा है ११ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ पित्त की बवासीर का लक्षण ॥

मस्सों का मुँह नीला, लाल, पीला, सफ़ेदी लिये हो और उन मस्सों में से गरम गरम महीन धार से रुधिर निकले और महीन कोमल मस्से हों तथा उन मस्सों का मुँह जोंक कासा हो और शरीर में दाह, ज्वर, मूर्च्छा और अरुचि हो तथा नीला, पीला, लाल मल उतरे और त्वचा, नख, नेत्र जिसके पीले हों ये लक्षण जिसमें हों उसके पित्त की बवासीर जानिये ॥

अथ रुधिर की बवासीर का लक्षण ॥

गुदा के मस्से घुँघचिल के रंग के सदृश हों और मस्सों से रुधिर की धार गरम और बहुत गिरे तथा गाढ़ा कच्चा लोहू निकले अथवा रुधिर के बहुत जानेसे उसका शरीर ढाकके फूलके सदृश होजाय और उसका बल, बरण, उत्साह, पराक्रम सब जाता रहे, शरीर सूख जाय, अधोवायु अच्छे प्रकार नहीं सरे, मस्सों में से रुधिर निकलते हुए झाग हों और कटि, जंघा, गुदा में पीड़ा हो, शरीर दुर्बल होजाय तो रुधिर की बवासीर में वायुका भी मेल जानिये। जिसका मल चिकना, भारी और ठण्ढा हो तथा मस्सों में से रुधिरकी धार मोटी और गरम पड़े और गुदा में कफ ऐसा लगा रहे तो कफसंयुक्त रुधिर की बवासीर जानिये ॥

अथ बवासीर के रुधिर थँभने की औषध ॥

बड़ के पत्ते और सूखे आमले चार चार पैसेभर लेकर पावभर गौ के मक्खन को लोहे की कढ़ाई में खूब तप्त करे फिर इन दोनों वस्तुओं को घृत में डाले जब ये तीनों जलजायँ तब उतार ठंढीकर धातुके बासनमें भररक्खे फिर इनसबको खरलमें डाल महीनपीस एक रस करे पीछे बवासीरवाले रोगीको ९ माशे प्रतिदिन प्रातःकाल २१ दिन दे फिर पानीका कुल्लाकरे कुल्ले का पानी पीवे नहीं और गरम वस्तु, बाजरा, करेला, मिरच, पेड़ा, अचार, बैंगन, टींट, उर्द आदि न खाय तो बवासीर का रुधिर थँभिजाय १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ रुधिर रुकने का दूसरा यत्न ॥

निंबौली की मींगी, एलुआ इन दोनों को बराबर ले खरल में पानीसे महीन पीस १ रत्तीप्रमाण गोली बांधे। १ गोली रसौंत के पानीमें प्रतिदिन प्रातःकाल ११ दिन ले तो बवासीर का रुधिर निश्चय थँभै २ ॥

अथ बवासीर के मस्से दूर करने की औषध ॥

रसौंत, चीनियांकपूर, निंबौलीकी मींगी इन तीनों को पानीसे महीन पीस लेप करे तो मस्से दूर हों ३ ॥

अथ पित्त और रुधिर की बवासीर का यत्न एकही है सो लिखते हैं ॥

रसौंत को महीन पीस २ टंक पानीमें चार घड़ी भिजोकर फिर उस पानी को छान प्रतिदिन २ महीने पिये तो पित्त और रुधिर की बवासीर अवश्य जायँ ४ अथवा पीपल की लाख, हल्दी, मुलहठी, मंजीठ, कमलगट्टे की मींगी इन सबको बराबर ले महीन पीस १ टंक नित्य ४९ दिन तक ले तो दोनों बवासीर जायँ ५ अथवा नागकेसर, मक्खन, मिश्री ५ टंक प्रतिदिन बकरी के दूधमें ४९ दिनले तो दोनों बवासीर जायँ ६ अथवा नागकेसर, मिश्री ५ टंक ४९ दिनले तो दोनों बवासीर जायँ ७ अथवा १०० टकेभर कुड़ाकी छाल पीस १६ सेर पानी में औटावे जब उसका आठवांभाग रहे तब उतार रस छान ले फिर उस रसमें नागरमोथा १ टकेभर, सोंठि १ टका, कालीमिरच १ टका, पीपरि १ टका, त्रिफला ३ टका, रसौंत २ टका, चित्रक २ टका, इन्द्रयव २ टका, बच १ टकाभर इन सबको महीन पीस गुड़ की चाशनी में मिलावे फिर उसमें पावभर गौ का घृत मिलावे फिर उसको पावभर शहद में मिलाकर १ टकेभर प्रतिदिन खाय तो दोनों प्रकारकी बवासीर, अम्लपित्त, अतीसार, पाण्डुरोग, संग्रहणी, क्षीणता, सूजन इन सब रोगों को पृथक् पृथक् अनोपान से और ऊपर मट्ठे के सेवन से दूर करताहै। यह

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कुड़ा की छाल का अवलेह है ८ अथवा बकायन के फल ६ तथा ८ प्रतिदिन मिश्रीके साथ १ महीने तक ले तो दोनों प्रकार की बवासीर जायँ ९ अथवा सतगिलोय, शोधा पारा, शोधी गन्धक, बीजबोल, मोचरस ये सब औषध बराबर ले मिलायके ३ माशे प्रतिदिन शहदके साथ २१ दिन खाय तो दोनों बवासीर, अतीसार, प्रमेह, प्रदर, भगन्दर ये सब रोग जायँ। यह बीजबोलबद्धरस है १० अथवा वसन्तमालिनीरस २ रत्ती, पीपरि २ तथा ४ शहद और मिश्री के साथ २५ दिन ले तो दोनों बवासीर और संग्रहणी जायँ। यह यत्न वैद्यरहस्य में लिखा है ११ अथवा बवासीर से बद्धकोष्ठ होकर मस्सा ऊँचा होआवे और खुजली हो तथा रुधिर बहे उस मस्से में जोंक लगाकर रुधिर निकलवा डाले तो बवासीर जाय इसके समान और कोई यत्न नहीं है। यह वैद्यरहस्य में लिखा है १२ पित्त और रुधिर की बवासीर को खूनीबवासीर और सबको बादी जानिये॥

अथ कफ की बवासीर का लक्षण॥

गुदा का मस्सा मोटा और मन्द मन्द पीड़ा सहित ऊँचा और भारी, कफसे लिपटा हो, खुजली अधिक हो, प्यास लगे, पेड़ू में अफरा और गुदा में खाज बहुत हो तथा कास, श्वास, हृदयपीड़ा, अरुचि, पीनस, मूत्रकृच्छ्र, मन्थवायु, मन्दाग्नि ये सब हों और शीत लगे तथा कफ से लिपटा मल उतरे और गुदा के मस्से से रुधिर नहीं निकले एवं शरीर का रंग पीला, चिकना, आमवातयुक्त हो ये लक्षण जिसके हों उसके कफ की बवासीर जानिये॥

अथ कफ की बवासीर का यत्न॥

१ टकेभर अदरकका काढ़ा २१ दिन ले तो कफकी बवासीर जाय १ अथवा हल्दीमें थूहरके दूधकी ७ पुटदे मस्सेमें लेप करे तो मस्से दूर हों २ अथवा त्रिफला, दशमूल, चित्रक, काला

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

निसोत, दात्यूणी ये पांचों सेरभर ले कूटकर २० सेर पानी में २१ दिन रक्खे और औषधों के साथ ७ सेर गुड़भी जलमें डाले फिर यन्त्रके द्वारा मदिराके सदृश अर्क निकाले पीछे १ टंकभर प्रतिदिन ले तो कफकी बवासीर जाय। यह दात्यूणी का अर्क है और वृन्दनाम ग्रन्थ में लिखा है ३ ॥

अथ सन्निपात की बवासीर का लक्षण ॥

वात, पित्त, कफ के मिले हुए जो लक्षण हैं वही इसके भी जानना ॥

अथ सन्निपात की बवासीर का यत्न ॥

अदरक ३ टका, कालीमिरच १ टका, पीपरि पावभर, चव्य १ टका, नागकेसर १ टका, पीपलामूल १ टका, चित्रक १ टका, इलायची १ टका, अजमोद १ टका, जीरा १ टकाभर इन सब औषधों को महीन पीस ३० टकेभर गुड़में २ टंक के प्रमाण गोली बांधे फिर प्रातःकाल १ गोली खाकर भोजन करे और पथ्य से रहे तो सन्निपात की बवासीर, मूत्रकृच्छ्र, वातका रोग, विषमज्वर, पाण्डुरोग, गोला, फिया, कास, श्वास, वमन, अतीसार, हिचकी इन सब रोगों को पृथक् पृथक् अनोपानसे तत्काल दूर करे जैसे तेलमें जल डालतेही क्षणभर में फैलजाताहै वैसेही औषधभी अनोपानके बल से फैलजाती है। यह प्राणदागुटिका सर्वसंग्रह में लिखीहै १ अथवा त्रिफला, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, तज, पत्रज, इलायची, बच, भुनी हींग, पाढ़, सज्जी, जवाखार, दारुहल्दी, चव्य, कुटकी, इन्द्रयव, सौंफ, पांचोंनोन, पीपलामूल, बेलकी गिरी, अजमोद इन सबको बराबर ले महीन पीस गरम जलसे २ टंक प्रतिदिन ले तो सन्निपातकी बवासीर, श्वास, शोष, हिचकी, खांसी, भगन्दर, पसलीका शूल, गोला, उदररोग, प्रमेह, पाण्डुरोग, अन्त्रवृद्धि, संग्रहणी, विषमज्वर, जीर्णज्वर, उन्माद इन सब रोगों को पृथक् पृथक् अनोपान से यह विजय

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

नाम चूर्ण दूर करता है। यह भावप्रकाश में लिखा है २ अथवा शोधा पारा १ टंकाभर, शोधी गन्धक १ टंका, तामेश्वर ३ टंका, कान्तीसार १ टंका, सोंठि २ टंका, कालीमिरच २ टंका, पीपरि २ टंका, शोधा सिंगीमुहरा १ टंका, दात्यूणी १ टंका, चित्रक २ टंका, सुहागा २ टंका, बेलकी गिरी १ टंका, जवाखार १ टंका, सेंधानोन ५ टंका, गोमूत्र ३२ टंका, थूहरका दूध ३२ टंकेभर इन सबको इकट्ठाकर कढ़ाई में मधुरी आंच से पकावे जब उसकी पिण्डी बँधजाय तब २ माशे के प्रमाण गरम पानी से ले तो असाध्य भी सन्निपातकी बवासीर जाय। यह कुठार रस है और योगतरङ्गिणी में लिखा है ३ ॥

अथ शिवजी के मत से बवासीर आदि सर्वरोगहारक लोहसार ॥

बवासीर को महाअसाध्य रोग जान मनुष्यों के रोग दूर करने के अर्थ नारदजी ने श्रीमहादेवजी से पूछा कि महाराज, सुम्बल आदिके लगाने से गुदाके मस्से दूर होते हैं परन्तु उस से मनुष्य मर मरकर कठिनतासे बचे हैं इससे बवासीर दूर होने के लिये अन्य कोई सुगम उपाय बताइये। महादेवजी ने बहुत करुणाकर नारदजी को इन सबके बनाने की क्रिया बताई जिसके करने से बवासीर आदि अनेक रोग दूर होते हैं सो लिखते हैं। कान्तीलोह अथवा गजबेलका लोह ले उसके पत्र कराकर उनको तेल, तक्र, गोमूत्र, कांजी, त्रिफला इनमें सात सात बार पहिले शोधे पीछे उसको रितवाय उसकी बराबर मैनसिल, सोनामक्खी ले फिर इन दोनों को रेतेहुए लोहके सरवे में रखकर चित्रककी छालके रससे उन दोनोंको उसमें सानकर प्रमाण सदृश रेतेहुए लोहमें उन दोनों को डाल सरवेको बन्द कर लुहारी कोयलों में धौंकनीसे खूब फूँके जब वे दोनों जल जायँ और बास आनी बन्द होजाय तब उनको निकाले इसी प्रकार उसको १० बार फूँके फिर त्रिफलेके रस से पारे और उस रेते लोहेके आठवें भागको

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

चुरावे इस विधिसे चार बार और भस्म करे तदनन्तर उन सबको खरलमें महीन पीसे जब वह लोहसार पानीमें तिरनेवाला होजाय तब उस लोहके सरवेमें उस सारको विषखपरेके रसकी १ पुट उसी विधिसे दे फिर त्रिफले की १ पुट दे, अद्रककी १० पुट, जिमींकन्दकी १० पुट, छीलेके रसकी १० पुट, थूहरके दूधकी १० पुट, सांठी के रसकी १० पुट, शतावरिकी १० पुट, गिलोय के रसकी २० पुट, जामुन के बकलेकी ७ पुट, गूलरके छिलकेकी ७ पुट, ग्वारके पट्ठेकी १० पुट, तेंदूकी ७ पुट, आमलेके रस की २० पुट, नींबूके रसकी २० पुट, छीलेके बकलेके रसकी १० पुटदे सारका १२भाग सिंगरफ डालकर उसको ग्वारके पट्ठेके रसमें मिलावे और उसकी पुट दे फिर उसमें घृत की १० पुट और शहदकी १० पुट देवे हरएक पुटमें खरल करता जाय इसीप्रकार इस सारको सिद्ध करे पीछे इस सारको १ रत्तीके प्रमाण शहद और पीपरिके साथ ले और शिवजीका पूजन करे ॥ ओं अमृतं भक्षयामि स्वाहा ॥ इस मन्त्रसे खाय और इसकी परममात्रा चढ़ती बलानुसार ले तो ३ रत्ती प्रभातकालही ले और इसके ऊपर खरैटीका काढ़ाले इसी प्रकार तीन महीने तक इसका सेवन करे तो बवासीरमात्र दूरहोकर वह पुरुष तरुण होजाय और मन्दाग्नि, श्वास, कास, पाण्डुरोग, वात,रक्त,मूत्रकृच्छ्र,अण्डवृद्धि आदि असाध्य रोग भी जायँ और बल, वर्ण बहुत बढ़े, शरीर में पुष्टता हो, आयुर्बल बढ़े, सर्व रोगमात्र जायँ। इसका सेवन करनेवाला पेठा, तेल, उरद, राई, मदिरा, खटाई इतनी वस्तु न खाय यह विधि आत्रेय और भावप्रकाश में लिखी है ४ अथवा बड़ी हड़की छाल २ टंक, पुराना गुड़ २ टंक इन दोनों को मिलाय जलसे प्रतिदिन ले ऊपर से गौके मट्ठेका सेवन करे तो बवासीर जाय ५ अथवा आंधी झाड़ा, नीलोफरकी जड़, खरैटी, दारुहल्दी, पिथवन, गोखुरू, इन्द्रयव, सारिवाके फूल, बड़का अंकुर, गूलरका अंकुर और पीपल के

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कोमल पत्र इन सब औषधों को दो दो टके भर ले जवकुट कर २ टंकका काढ़ा कर छानले फिर जीवन्तीकी जड़, कुटकी, पीपलामूल, कालीमिरच, सोंठि, देवदारु, शतावरि, चन्दन, रसौंत, कायफल, चित्रक, मोथा, प्रियंगु, खरैटी, सरिवन, कमलगट्टेकी मींगी, मंजीठ, कटेली, बेलकी गिरी, मोचरस, पाढ़ इन सबको धेले धेले भर ले महीन पीस चार सेर इनके काढ़ेका रसले उसमें गौका घृत १ सेर डाल दोनों को कढ़ाईमें चढ़ाकर औटावे जब काढ़ा जलजाय और घृत रहजाय तब उतार छानकर टकेभर प्रतिदिन खाय तो बवासीर जाय ६ अथवा शोधा पारा, शोधी गन्धक दोनों को बराबर ले कजली करे फिर कजली को घृत से चुपड़े और उन दोनों से दूना बीजबोल कजली में डाल रगड़कर टिकड़ी बांधे फिर टिकड़ीको लोहेके पात्रमें आंच देकर पतली करके केलेके पत्ते पर डालकर उसकी पपड़ी करे। इसका नाम पर्पटीरस है इस रसका सेवन ३ रत्ती नित्य १५ दिन करे तो सन्निपातकी बवासीर जाय। यह वैद्यविनोद में लिखा है ७ और गुदाके मस्सेके सिवाय और शरीर में किसी ठिकानेपर मस्सा हो जिसको चर्मकील कहते हैं उसको अग्निसे और क्षारसे दूर करे॥

अथ मस्से का यत्न॥

खाने का चूना, सज्जी, सुहागा, नीलाथोथा इन सबको बराबर ले नींबूके रसमें ३ दिन तक भिजोवे फिर मस्सेमें लगावे तो मस्सा अवश्य दूर हो ८ अथवा शीशेकी गोलीको गौके घृत में घिस बवासीरके मस्सेपर १० दिन लगावे तो बवासीर दब जाय ९ अथवा विष्णुकान्तजड़ी २ टंक, कालीमिरच २० टंक, भङ्ग आधमाशे प्रतिदिन घोटकर पिये तो बवासीर दबी रहे १०॥

अथ बवासीर का असाध्य लक्षण॥

जिसकी बवासीरमें सूजन, अतीसार, वमन, अङ्गमें पीड़ा, तृषा, ज्वर, अरुचि, मन्दाग्नि, गुदाका पकना, हृदयमें शूल ये

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

लक्षण हों वह निश्चय मरजाता है और बवासीरवाला मलमूत्र का रोंकना, स्त्री से अधिक प्रसङ्ग, घोड़ेकी सवारी, उकड़ूबैठकर करेला, बाजरा आदि गर्म वस्तुका खाना आदि न करे—इति बवासीरका उत्पत्ति, लक्षण और यत्न सम्पूर्ण ॥

इति तृतीयस्तरङ्गः ३ ॥

अथ अजीर्णज्वर की उत्पत्ति ॥

प्रथम मनुष्य के मन्दाग्नि १ तीक्ष्णाग्नि २ विषमाग्नि ३ समाग्नि ४ इन भेदों से चार प्रकारकी जठराग्नि होती है। जिस पुरुषकी कफप्रकृति हो उसके मन्दाग्नि १ और जिसकी पित्त-प्रकृति हो उसके तीक्ष्णाग्नि २ तथा जिसकी वातप्रकृति हो उसके विषमाग्नि ३ और जिसकी वात, पित्त, कफ तीनों से मिली प्रकृति हो उसके समाग्नि जानिये ४ ॥

अथ मन्दाग्नि का लक्षण ॥

मन्दाग्निवाले के थोड़ा हितकारी भी खाया हुआ भोजन अच्छे प्रकार नहीं पचता और उसका शिर, उदर भारी रहे, अङ्गमें हड़फूटन रहे १ ॥

अथ तीक्ष्णाग्नि का लक्षण ॥

अत्यन्तभी भोजन किया हुआ अच्छे प्रकार पच जाता है। यह अग्नि अच्छी होती है २ ॥

अथ विषमाग्नि का लक्षण ॥

कभी अच्छे प्रकार और कभी बुरे प्रकार भोजन पचे और अफरा, पेटमें शूल, उदरभारी, अतीसार, पेट बोला करे ये लक्षण हों तो विषमाग्नि जानिये ३ ॥

अथ समाग्नि का लक्षण ॥

जिसके समाग्नि होती है उसके प्रमाणका भोजन और अजीर्णमें भी बहुत खाया भारी अन्न पचजाता है। यह समाग्नि

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तीनों अग्नियों में श्रेष्ठ है। इस अग्निसे किसीप्रकार का विकार नहीं होता और लगीभूखको किसी कारणसे रोंके तो भी तत्काल रोगको नहीं उपजाती है और तीक्ष्णाग्नि भूखको रोंकतेही तत्काल पित्त के रोगको उत्पन्न करती है इस हेतुंसे समाग्निश्रेष्ठ है ४ और मन्दाग्निसे कफका रोग और तीक्ष्णाग्नि से पित्त का रोग और विषमाग्नि से वायु का रोग होता है तथा समाग्निसे कोई भी रोग नहीं होता है ॥

अथ भस्मक रोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

तीखी वस्तु आदि ले जो रूखा अन्न खाय उसके कफ घटता और वात, पित्त बढ़ता है तब पित्त पवन से प्रेरित होकर रोगरूप भष्मक अग्निको उत्पन्न करता है उस समय जो खाया जाय वह एक क्षणमात्रमें भस्म होजाता है इसको भस्मक रोग कहते हैं। यह तृषा, दाह, मूर्च्छाको प्रकट कर कियेहुए भोजन और सब धातुओंको खाकर मनुष्योंको मारडालता है ५ ॥

अथ अजीर्णरोग की उत्पत्ति ॥

बहुत जल पिये, विषमाशनसे अर्थात् समय, कुसमय भोजन करे, मल और मूत्रके वेगको रोंके, दिनमें सोवे, रात्रि में जागे ऐसे पुरुष को पथ्यका भी भोजन अच्छेप्रकार नहीं पचता अथवा अष्टप्रहर ईर्षा, भय, क्रोध, लोभ अथवा कोई रोग, दीनता, रुचिकारक भोजनकी अप्राप्ति इतनी बातों से मनुष्यको अच्छे प्रकार अन्न नहीं पचता है ॥

अथ अजीर्ण का सामान्य लक्षण ॥

मन में ग्लानि, शरीर भारी, उदरमें अफरा, प्रमेह रहे, गुदा की वायु अच्छेप्रकार न बहे, बद्धकोष्ठ हो, बारम्बार पतले मलकी प्रवृत्ति हो जिसमें ये लक्षण हों उसे अजीर्ण जानिये १ ॥

अथ अजीर्ण का भेद ॥

अजीर्ण छः प्रकारका है एक तो वह जो मीठा अर्थात् कच्चाही

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अन्न गुदाके द्वारा जाय और कफप्रकृति लिये मन्दाग्नि हो उसको आम कहते हैं १ दूसरा जो कुछ खटाई लिये मल जाय और पित्तप्रकृति लिये तीक्ष्णाग्नि हो उसको विदग्ध कहते हैं २ तीसरा वह जो खाया हुआ अन्न कोष्ठहीमें रहे पचे नहीं उदरमें शूल और अफरा रहे और कच्चाही अन्न गुदा के द्वारा जाय और वायुकी प्रकृतिकर विषमाग्नि हो उसको विष्टब्ध कहते हैं ३ चौथा वह जो भोजन करे और अच्छे प्रकार पचे नहीं मल पतला जाय उसको रसशेष कहते हैं ४ पांचवां वह जो भोजन एक दिन और रात्रि में पचे, दूसरे दिन भूख लगे यह अच्छा निर्दोष है इसको दिनपाक कहते हैं ५ छठा अजीर्ण जो स्वतः सिद्ध सदा रहे उसको प्रतिवासर कहते हैं ६ यह अजीर्ण बाईं करवट सोने, गर्म पानी पीने, श्रम करने और हड़के खाने से दूर होजाता है ॥

अथ आमाजीर्ण का लक्षण ॥

शरीर भारी रहे, वमनकी इच्छा रहे, जैसा भोजन करे वैसाही बना रहे, गर्मीके नानाप्रकार के रोग हों, धुएँ सहित खट्टी डकार आवे, पसीना हो १ ॥

अथ विष्टब्ध अजीर्ण का लक्षण ॥

पेटमें शूल, अफरा और वायु की नानाप्रकारकी पीड़ा होय, मल और अधोवायु रुकजाय, शरीर जकड़ा बन्द होय २ ॥

अथ रसशेष अजीर्ण का लक्षण ॥

अन्नमें अरुचि, हृदय दूखे, शरीर भारी रहे ३ ॥

अथ अजीर्ण का उपद्रव ॥

मूर्च्छा, प्रलाप, वमन, अङ्गमें पीड़ा और भ्रम ये उपद्रव होवें तो वह रोगी मरजाता है ४ मूर्ख मनुष्य अजीर्ण में पशुकी भांति भोजन करते हैं इससे उनकी वायु स्वल्प आमदोषों से बन्द होकर जब अग्निके मार्गको नहीं रोकती है तब अजीर्ण में भी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

भूख लगती है उस कच्ची भूखमें जो पुरुष भोजन करता है वह अनेक रोगयुक्त होकर मरभी जाता है ॥

अथ विसूचिका का लक्षण ॥

जिस पुरुषके मन्दाग्निमें प्रथम आमाजीर्ण हुआ और पीछे वह पशुकी भांति अधिक गरिष्ठ वस्तु खाय तो उसके विसूचिका, मूर्च्छा, अतीसार, वमन, भ्रम, पीड़ा, हड़फूटन, जम्हाई, दाह और शरीर का वर्ण औरका और होजाय, कम्प, हृदय और मस्तकमें पीड़ा, शरीर में सुई सी चुभे जिसमें ये लक्षण हों उसके विसूचिका कहिये। लौकिकमें इसको बासी कहते हैं। इसके उपद्रव से नींद न आवे, सर्वत्र अप्रीति, शरीरकम्प, मूत्र-कृच्छ्र हो, संज्ञा जाती रहे ये उपद्रव जिसमें हों वह मरजाय १॥

अथ आलस्य का लक्षण ॥

विष्टब्धवायुके अजीर्ण से पेटमें अफरा हो, आंतमें शब्द हो, पवन फिरनेसे रुककर कोखमें फिरे, मल-मूत्र और गुदाकी पवनभी रुकजाय, तृषा अधिक हो, डकारें बहुत आवें जिस पुरुष में ये लक्षण हों उसके आलस्य जानिये २॥

अथ विलम्बिका का लक्षण ॥

भोजन कियाहुआ पचे नहीं, ऊपर नीचे जाय नहीं, दांत, ओष्ठ, नख काले हों, संज्ञा जाती रहे, वमन हो, नेत्र बैठजायँ, स्वर घोंघों बोले, शरीर शिथिल होजाय जिसमें ये लक्षण हों वह प्राणी मरजाता है ३॥

अथ अजीर्ण जाता रहा हो उसका लक्षण ॥

डकारें शुद्ध आवें, शरीरमें उत्साह हो, मल-मूत्र और पवन की अच्छेप्रकार प्रवृत्ति हो, शरीर हलका हो, भूख और प्यास अच्छीतरह लगे तो जानिये कि अजीर्ण दूर हुआ है॥

अथ मन्दाग्निको आदिले अजीर्ण, विसूचिका का यत्न ॥

हड़की छाल, सोंठि इन दोनों को २ टंक ले महीन पीस

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

४ टंक गुड़के साथ जलसे प्रतिदिन दे तो आमाजीर्ण जाय, क्षुधा बढ़े १ अथवा हड़की छाल, सेंधानोन इनका सेवन प्रतिदिन करे तो अजीर्ण जाय और भूख बढ़े २ अथवा चित्रक, अजमोद, सेंधानोन, सोंठि, कालीमिरच ये सब बराबर ले महीन पीस २ टंक गौकी छाछके साथ १५ दिन ले तो क्षुधा बढ़े, मन्दाग्नि, पाण्डुरोग और बवासीर जाय ३ अथवा आमाजीर्ण हो तो खुरासानीवच और लवणकी वमनसे जाय। विदग्धाजीर्ण हो तो लंघनसे जाय। विष्टब्धाजीर्ण हो तो सेंकसे जाय। रसशेष हो तो सोने से जाय ४ अथवा सोंठि, काली मिरच, पीपरि, अजमोद, सेंधानोन, दोनों जीरे, भुनीहींग इन सबको बराबर ले चूर्णकर १ या २ टंक खिचड़ीमें घृत से मिलाय प्रथम ग्रासके साथ प्रतिदिन खाय तो अजीर्ण कभी न हो। यह हिंग्वष्टक चूर्ण है ५ अथवा जवाखार, सज्जी, चित्रक, पांचों नोन, इलायची, पत्रज, भारंगी, भुनीहींग, पुष्करमूल, कचूर, निशोत, नागरमोथा, इन्द्रयव, डांसरा(तन्तरीक), अमलबेत, जीरा, आमला, हड़की छाल, अजवाइन, पीपरि, तिलों का खार, सहँजनेका खार, छीलेका खार, सार ये सब औषधें बराबर ले महीन पीस कपरछान कर बिजौरेके रसकी ८ पुट दे सिद्धकर प्रतिदिन २ टंक जलके साथ ले तो बहुत भूख लगे और अजीर्ण, वायुगोला, उदरव्याधि, अण्डवृद्धि, वात, रक्त इन सब रोगों को यह अग्निमुख चूर्ण दूर करताहै ६ अथवा थूहर, आक, चित्रक, अरण्डका खार; सांठी, तिल, आंधीझाड़ा, छिलाकेला, डांसरा इन सबका पृथक् पृथक् खार निकाल महीन पीस अदरकके रसकी ५ पुट देकर इस वैश्वानरचूर्ण को सिद्ध करे पीछे १ टंक शीतल जल से प्रात समय ले तो अजीर्ण कभी न रहे, भूख बहुत बढ़े और पृथक् पृथक् अनोपानसे अनेक रोगों को दूर करे ७ अथवा सांभरनोन ४ पैसे भर, कालानोन २ पैसे भर,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बायबिड़ंग ५ टंक, सेंधानोन ५ टंक, धनियां ५ टंक, पीपरि ५ टंक, पीपलामूल ५ टंक, पत्रज ५टंक, कालाजीरा ५टंक, नागकेसर ५ टंक, चव्य ५ टंक, अमलबेत ५ टंक, कालीमिरच ५ टंक, जीरा २ टंक, सोंठि २ टंक, अनारदाना १० टंक, तज १ टंक, इलायची १ टंक इन सबका महीन चूर्णकर ४ माशे गौके मट्ठेसे अथवा कांजी से ले तो गोला, फिया, उदररोग, बवासीर, संग्रहणी, बद्धकोष्ठ, शूल, सूजन, श्वास, कास, आमका विकार, पाण्डुरोग, मन्दाग्नि, सब प्रकारके अजीर्ण इन सबको यह लवणभास्कर चूर्ण दूर करता है ८ अथवा सेंधानोन १ टंक, पीपलामूल २ टंक, चव्य ३ टंक, चित्रक ४ टंक, सोंठि ५ टंक, हड़की छाल ६ टंक इनसे दूनी मिश्री ले पीछे इस तौल से यह चूर्णकर २ टंक प्रतिदिन ले तो अजीर्ण दूर हो, क्षुधा बहुत लगे। यह बड़वानलचूर्ण है ९ अथवा शोधीगन्धक २ टकेभर, पारा १ टकेभर, सार ५ टंक, तामेश्वर ५ टंक पहले पारे और गन्धक की कजली करे फिर इन दोनोंको उस कजलीमें मिलावे तदनन्तर इन चारोंको लोहेके पात्रमें अग्नि पर चढ़ाकर पिघलावे फिर चतुराई से अरण्डके पत्तों पर डाले और उसको महीन पीसकर खरलमें डाल १०० टके भर जंभीरी नींबूके रस में साने फिर उसमें बिजौरेका रस १०० टके भर सुखावे तदनन्तर इसमें पीपरि, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठि इनका काढ़ा करे उस काढ़ेके ५० पुट दे फिर जब यह सब सूख जाय तब इन सबकी बराबर भुनाहुआ सुहागा डाले और सुहागे से आधा कालानोन मिलावे तथा सबकी बराबर कालीमिरच डाले फिर इसमें चनेके खार की ७ पुट दे, तैयार कर इस क्रव्यादि रसको अच्छेप्रकार सुन्दर पात्र में रख छोड़े फिर इस रसमें से २माशे ले और ऊपरसे सेंधानोन मिलाके गौका मट्ठा पिये तो अजीर्णमात्र तत्काल दूर हों और अतिगरिष्ठ भोजन कियाहुआ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

भी तत्काल पचजाय तथा शूल, गोला, अफरा, फिया, उदररोग आदि को भी यह रस दूर करता है १०—इति क्रव्यादिरस ॥

अथवा जवाखार, सज्जी, सुहागा, शोधापारा, शोधी गन्धक, पीपरि; पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठि इन सबको बराबर ले और सबकी बराबर भुनीभंग तथा भंगसे आधी सहँजने की जड़ ले फिर इनको भंगके रसमें एक दिन खरल करे पीछे सहँजनेके रसमें एक दिन खरल करे तथा चित्रकके रसमें एक दिन खरल कर धूपमें सुखावे और इसको सकोरेमें रख; कपरौटी कर फूंक दे फिर निकालकर ७ दिन अदरक के रसमें खरलकर १ अथवा २ रत्ती के प्रमाण शहद से ले और ऊपर से गुड़का क्वाथ ले तो तत्काल सब अजीर्ण और अतीसार, संग्रहणी, कफरोग, वमन, अरुचि इन सबको दूर करे और क्षुधा बढ़ावे। यह ज्वालानल रस भावप्रकाशमें लिखा है ११ अथवा शोधीगन्धक, काली मिरच, चूक, कालानोन इनको बराबर ले महीन पीस २ टंक पानीके साथ ले तो बद्धकोष्ठ दूर हो १२ अथवा पारा ५ टंक, शोधी गन्धक ५ टंक, शोधा सिंगीमुहरा ५ टंक, कालीमिरच १० टंक, जायफल २ टंक प्रथम पारे और गन्धक की कजली करें फिर उस कजलीमें इन सबको मिलाय डांसरे (तन्तरीक) के रसमें ५ दिन खरल करे फिर १ रत्ती प्रमाण ७ दिन खाय तो भूख बढ़े और अजीर्ण तत्काल मिटे यह रामबाण रस है १३ अथवा शोधा पारा, शोधी गन्धक, अजमोद, त्रिफला, जवाखार, चित्रक, सेंधानोन, सफ़ेदजीरा, कालानोन, बायबिड़ंग, सांभरनोन, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि इन सबको बराबर ले और सबकी बराबर बकायनके फल ले प्रथम पारे और गन्धककी कजली कर उसमें ये सब वस्तुएँ मिलाय जंभीरी के रसमें ७ दिन खरल करके एक रत्ती प्रमाण गोली बनावे। प्रतिदिन एक गोली खाय तो भूख बहुत लगे इसके ऊपर हड़की छाल,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सोंठि, गुड़ इनका काढ़ा ले तो सर्व रोगमात्र दूर हों। यह अग्नितुण्डावती गोली है १४ अथवा सोंठि १ भाग, काली मिरच २ भाग, पीपरि ३ भाग, सेंधानोन ४ भाग, शोधी गन्धक ५ भाग इन सबको महीन पीस नींबू के रसमें १० दिन खरल करे फिर १ रत्ती के प्रमाण गोली बांधे। एक गोली प्रतिदिन खाय तो क्षुधा बढ़े। यह क्षुद्रबोध रस है १५ अथवा बिड़नोन, कालानोन, अजवाइन, दोनोंजीरे, हड़ की छाल, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, चित्रक, अमलबेत, अजमोद, धनियां, डांसरा इनको बराबर ले महीन चूर्णकर २ टंक प्रतिदिन ले तो पत्थर भी पचजाय भोजन क्या वस्तु है १६ अथवा शोधी गन्धक, काली मिरंच, पीपरि, सोंठि, सेंधानोन, जवाखार, लवङ्ग इन सबको बराबर ले महीन पीस नींबूके रसमें १० दिन खरल करे फिर १ रत्ती प्रमाण गोली बांधे। प्रतिदिन एक गोली खाय तो क्षुधा अधिक हो १७ अथवा हड़की छाल ६ भाग, पीपरि ४ भाग, चित्रक २ भाग, सेंधानोन २ भाग इनका महीन चूर्णकर २ टंक जलके साथ खाय तो अजीर्ण जाय और क्षुधा लगे १८ अथवा भुना सुहागा २ टंक, पीपरि २ टंक, शोधा सिंगीमुहरा २ टंक, हींग २ टंक, कालीमिरच २ टंक इन सबको महीन पीस नींबूके रसमें १० दिन खरल करे फिर मटर के प्रमाण गोली बांधकर १ तथा २ गोली जल के साथ खाय तो अजीर्ण और विसूचिका दूर हों। यह अजीर्णकण्टक रस है १९ अथवा शोधा सिंगीमुहरा २ टंक, भुना सुहागा २ टंक, कालीमिरच २ टंक, सेंधानोन २ टंक इन सबको महीन पीस फिर इसमें अदरक का पावसेर रस डालकर सुखावे और दही को बांध उसका १ सेर जल ले इसमें डाल सुखाले और नींबूकाभी १ सेर रस उसमें सुखावे फिर इसकी गोली २ रत्तीके प्रमाण बांधे। एक गोली प्रतिदिन जलसे ले तो अजीर्ण, अफरा, उदररोग, गोला, फिया,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

शूल ये सब जायँ और क्षुधा बढ़े। यह क्रव्यादिरस है २० अथवा दालचीनी १० टंक, इलायची १० टंक, लवङ्ग १५ टंक, भुना सुहागा १० टंक, चित्रक १० टंक, कालीमिरच ५ टंक, सेंधानोन ३ पैसे भर इनको महीन पीस गर्म जलसे १ टंकके प्रमाण ले तो अजीर्ण तत्काल जाय। यहभी क्रव्यादिचूर्ण है२१ ये सब यत्न वैद्यरहस्यमें लिखे हैं॥ अथवा सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, त्रिफला, पांचोंनोन, भुनासुहागा, जवाखार, सज्जी, पारा, शोधीगन्धक, शोधा सिंगीमुहरा इन सबको बराबर ले पारे और गन्धककी कजली कर उस कजलीमें इन सबको मिलाय अदरक के रसकी ७ पुट देकर १ रत्ती प्रमाण की गोली बांधे। १ या २ गोली लवङ्ग के क्वाथके साथ ले तो अजीर्ण तत्काल जाय और क्षुधा बढ़े। यह क्षुधासागर रस है २२ अथवा १०० बड़ीहड़ ले गौके मट्ठेमें औटावे फिर उनकी गुठली निकाल उन हड़ोंमें सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, चव्य, चित्रक, दालचीनी, पांचोंनोन, भुनी हींग, जवाखार, सज्जी, दोनों जीरे, अजमोद, निशोत इन सबको बराबर ले महीन पीस नींबूके रसकी १० पुट दे और इनके समान चूक मिलाय ये सब औषध भरे पीछे उनको धूप में सुखाय १ हड़ प्रतिदिन खाय तो अजीर्ण, मन्दाग्नि, उदररोग, गोला, शूल, संग्रहणी, बद्धकोष्ठ, अफरा, आमवात इन सबको दूरकर क्षुधा बहुत बढ़ावे। यह अमृतहरीतकी है २३ अथवा कालीमिरच ७ टंक, अजवाइन २ टंक, चित्रक २ टंक, पीपरि ७ टंक, कालानोन २ टंक, सांभरनोन२टंक, पारा १टंक, सेंधानोन २ टंक, शोधीगन्धक १ टंक, पीपलामूल २टंक, सोंठि५पैसेभर, हड़की छाल ५ पैसेभर, बहेड़ेकी छाल ५ टंक, ज़ीरा १ टंक, चव्य ५ टंक इन सबसे आधी लवङ्ग ले पहिले पारे और गन्धक की कजली करे फिर इन औषधियोंको महीन पीस कजलीमें मिलाय अदरकके रसकी १० पुट दे और सबकी बराबर चूक मिलाय

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

२ माशे प्रमाण की गोली बांधे। १ गोली जलसे खाय तो अजीर्ण तत्काल जाय और इसका सेवन सदैव करे तो क्षुधा बढ़े और सब रोगमात्र दूर हों और शरीरपुष्टि करे। यह लवङ्गामृत गुटिका है २४ ये सब वैद्यरहस्य में लिखे हैं ॥ अथवा दालचीनी ५ टंक, लवङ्ग १० टंक, दोनों जीरे १०,टंक, सेंधानोन २० टंक, सोंठि १० टंक, कालीमिरच ५ टंक, अजमोद ५ टंक, हड़की छाल ५ टंक, पत्रज ५ टंक, डांसरा १० टंक, कालानोन १० टंक, निशोत १५ टंक, सोनामक्खी पावभर, अनारदाना आधसेर इन सबको महीन पीस नींबू के रसकी १० पुट दे फिर इन सबके बराबर चूक मिलाय सुखाय अच्छेप्रकार अमृतबान में धर रक्खे पीछे १ टंक जलसे ले तो अजीर्ण, बद्धकोष्ठ, मन्दाग्नि, उदर-रोग, वायुगोला, फिया आदि सर्वरोगों को दूर करे। इस चूर्ण का नाम राजवल्लभ है २५ अथवा हड़की छाल, पीपरि, कालानोन इन सबको बराबर ले महीन पीस २ टंक गर्म जलके साथ ले तो अफरा आदि सब अजीर्ण जायँ २६ अथवा मुनक्का, किशमिश, हड़की छाल, मिश्री इन तीनों को बराबर ले शहद मिलाकर २ टंककी गोली करे पीछे एक गोली जलसे ले तो अजीर्ण जाय। यह वृन्दनाम ग्रन्थ में लिखा है २७ अथवा जीरा, कालानोन, सोंठि, पीपरि, सेंधानोन, अजमोद, भुनीहींग, हड़की छाल इन सबको धेले धेले भर और निशोत २ टंकेभर लेकर महीन चूर्ण कर २ टंक गर्म जलसे ले तो तत्काल अजीर्ण जाय और भूख लगे यह जीरकादि चूर्ण योगतरङ्गिणीमें लिखा है २८ अथवा अजमोद, हड़की छाल, चित्रक, लवङ्ग, दालचीनी, सेंधानोन इन सबको बराबर ले महीन पीस २ टंक पानीके साथ ले तो अजीर्ण जाय और क्षुधा बढ़े। यह अजमोदादिक चूर्ण सर्वसंग्रहमें लिखा है २९ अथवा शोधी गन्धक १ टंकेभर, चित्रक २ टंक, काली मिरच २ टंक, पीपरि ५ टंक, जवाखार २ टंक, सेंधानोन १ टंक,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कालानोन १ टंक, सांभरनोन १ टंक इन सबको महीन पीस नींबूके रसमें ७ दिन खरल करे फिर १ टंकके प्रमाण गोली बांध कर एक गोली जलसे ले तो अजीर्ण, शूल, आमका दोष, गोला, अफरा आदि सब तत्काल दूर हों। यह गन्धकवटी सर्वसंग्रह में लिखी है ३०—इति मन्दाग्नि और अजीर्णका यत्न सम्पूर्ण॥

अथ विसूचिका का यत्न॥

एक लहसुनकी पोटीकी गुली, ज़ीरा, शोधी गन्धक, सेंधानोन, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, भुनीहींग इन सबको बराबर ले खरल में महीन पीस नींबूके रसकी ५० पुट दे फिर इसकी गोली छोटेबेर के प्रमाण करे। एक गोली जल से दे तो विसूचिका, अजीर्ण मिटे और क्षुधा बढ़े। यह जीरकादिक लोलिंबराज में लिखा है ३१ अथवा बायबिड़ंग, सोंठि, पीपरि, हड़की छाल, आमला, बहेड़ा, खुरासानी बच, गिलोय, शोधा भिलावां, शोधा सिंगीमुहरा (सिंगिया) इन सबको बराबर ले महीन पीस गोमूत्रमें १ दिन खरलकरके १ रत्ती प्रमाण गोली बांधे। एक गोली अदरकके रसमें दे तो अजीर्ण जाय और दो गोली दे तो विसूचिका जाय, तीन गोली दे तो सर्पका काटा अच्छा हो और चार गोली दे तो सन्निपात जाय। यह संजीवनीगुटिका है ३२ अथवा भुना सुहागा ५ टंक, पारा ५ टंक, शोधी गन्धक ५ टंक, शोधा सिंगीमुहरा ५ टंक, पीली कौड़ीकी राख २ टंक, सज्जी २ टंक, पीपरि २ टंक, सोंठि २ टंक, कालीमिरच २ टंक प्रथम पारे और गन्धककी कजली करे फिर इन सब औषधियोंको जंभीरी नींबूके रसमें ८ दिन खरल कर १ रत्तीके प्रमाण गोली बांधे। १ गोली विसूचिकावाले को दे तो विसूचिका तत्काल अच्छी हो। यह अग्निकुमार रस है ३३ अथवा आकके पत्तोंका रस १ सेर, धतूरे के पत्तों का रस १ सेर, थूहरका दूध १ सेर, सहँजने की जड़का रस १ सेर, कूट २ टकेभर, सेंधानोन २ टके भर, तेल

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

१सेर, कांजीका पानी ४सेर इन सबको इकट्ठाकर कड़ाही में मधुरी आंच से पकावे जब रसमात्र जलजाय और तेल रहजाय तब इस तेल को मर्दन करे तो विसूचिका और पक्षाघात जाय। यह वैद्यरहस्य में लिखा है ३४ अथवा कणगच अर्थात् कंजाकी जड़, आंधीझाड़ेकी जड़, नींबकी छाल, सिलोय, कुड़ाकी छाल इन सबको बराबर ले २ टंक काढ़ा ३ दिन दे तो विसूचिका जाय ३५ अथवा हड़की छाल, बच, भुनी हींग, इन्द्रयव, भांगरा, कालानोन, अतीस इनको बराबर ले महीन पीस २ टंक जलके साथ ले तो विसूचिका जाय ३६ अथवा इलायची ४ माशे, लवङ्ग ४ माशे, अफीम १ माशे, जायफल १० माशे इनको महीन पीस ४ माशे गर्मजल के साथ ले तो विसूचिका तत्काल जाय ३७ अथवा चूकको औटायके उसका १ सेर रस निकाल उसमें सेंधानोन ५ टंक, कूट १ टंक, तेल पाव भर इन सबको इकट्ठाकर मन्द अग्नि से पकावे जब रस जलजाय और तेल-मात्र रहजाय तब उसको मर्दन करे तो विसूचिका दूर होय ३८ अथवा यवका आटा ४ पैसे भर, जवाखार ५ टंक इनको मट्ठेमें पकाकर गर्म लेप करे तो पेटका शूल, विसूचिका दूर होय ३९ अथवा कड़ुवे तेलको गर्म गर्म मर्दन करे तो कोख का दर्द दूर होय अथवा विसूचिकामें तृषा बहुत बढ़े तो लवङ्ग का काढ़ा देनेसे तृषा दूर होय ४० अथवा विसूचिका बहुत बढ़े तो उसकी पसली दाग दे तो विसूचिका दूर होय ४१ अथवा बिजौराकी जड़, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, हल्दी, कणगच इनको बराबर कांजीके पानी में महीन पीस अंजन करे तो विसूचिका जाय ४२ यह सर्वसंग्रह में लिखा है—इति विसूचिका का यत्न सम्पूर्ण ॥

अथ अलसविलम्बिका का यत्न ॥

साबुन ६ टंक, नीलाथोथा १० टंक इनको जलसे महीन पीस गुदामें लगावे तो तत्काल बन्द छूटे और अलसविलम्बिका

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जाय ४३ अथवा दारुहल्दी, चोख अर्थात् सत्यानाशीकी जड़, कूट, सौंफ, हींग, सेंधानोन इनको बराबर ले कांजी के पानीमें महीन पीस गर्मकर उदरमें लेप करे तो अलसविलम्बिका दूर होय ४४ अथवा यवका आटा आधपाव उसमें १ टकेभर सज्जी डाल पकाकर कोख में गर्म गर्म लेप करे तो विसूचिका और अलसविलम्बिका दूर होय ४५ इति विसूचिका और अलसविलम्बिका का यत्न ॥

अथ कृमिरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

प्रथम कृमि दो प्रकारके हैं एक बाहरके, दूसरे भीतरके—बाहरवालोंका जन्म तो दो स्थानसे है; एक मल से उपजे, दूसरे पसीने से जैसे जूं, लीख, जमजूं ॥

अथ भीतर के कृमि की उत्पत्ति ॥

अजीर्ण में भोजन करे और प्रतिदिन मीठा, खट्टा, पतला खाय और भोजन करके परिश्रम न करे, दिन में सोवे और विरुद्ध भोजन करे तो पुरुषके पेटमें कृमि पड़जाते हैं ये कृमि गिड़ोला आदि भेदों से २० प्रकार के हैं ॥

अथ उदर में गिड़ोला आदि कृमि पड़ गये होयँ उसका लक्षण ॥

ज्वर हो आवे और शरीरका रंग और का और होजाय, पेट में शूल हो, हृदय दूखे, वमन, भ्रम, भोजनमें अरुचि, अतीसार ये लक्षण जिसके हों उसके जानियें कि पेटमें कृमि गिड़ोला हैं ॥

अथ कृमिरोग के दूर करने का यत्न ॥

खुरासानी अजवाइन २ टंक, बासी पानी से ७ दिन ले तो पेटके कृमि जायँ १ अथवा १ टंक पलाशपापड़ा को पानी में पीस २ टंक शहद डाल ५ दिन पिये तो पेटके कृमि जायँ २ अथवा २ टंक बायबिड़ंग महीन पीस शहद के साथ ७ दिन ले तो पेटके कृमि जायँ ३ अथवा बायबिड़ंग, सेंधानोन, हड़की

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

छाल, जवाखार इन सबको बराबर ले महीन पीस २ टंक मट्ठेके साथ ७ दिन पिये तो पेटके कृमि झड़पड़ें ४ अथवा १० टंक नींब के पत्तों के रस में १ टंक कालानोन मिलाय ७ दिन पिये तो पेटके कृमि जायँ ५ अथवा पारा १ टंक, शोधी गन्धक २ टंक, खुरासानी अजवाइन ३ टंक, बकायन के फल ४ टंक, पलाश-पापड़ा ५ टंक इन सबको महीन पीस २ टंक नित्य ५ टंक शहद के साथ ७ दिन खाय तो पेटके कृमि जायँ यह सर्वसंग्रह में लिखाहै ६ अथवा नागरमोथा, त्रिफला, देवदारु, सहँजने की जड़ इनको बराबर ले जवकुट कर ५ टंक का काढ़ा ७ दिन ले तो पेटके कृमि जायँ ७ अथवा बायबिड़ंग, सेंधानोन, भुनी हींग, पीपरि, कपीला (कमीला), कालानोन इन सबको बराबर ले महीन पीस २ टंक गर्म पानी से ७ दिन ले तो पेटके कृमि जायँ यह वैद्यविनोदमें लिखा है ८ ॥

अथ शिर में जूं, लीख पड़जायँ उनके दूर करने का यत्न ॥

धतूरे के पत्तों के रस में अथवा नागरबेल के पत्तों के रसमें पारा मिलाकर बालों में लेप करे तो जूं, लीख मरजायँ ॥

अथ गुदा में चुन्ने पड़ गये हों उसका यत्न ॥

हींग को जल में पीस गुदा में लेप करे तो चुन्ने जायँ १ अथवा काहू के फूल, बायबिड़ंग, करिहारी की जड़, सफ़ेदचन्दन, राल, खस, कूट, भिलावां. लोबान इन सबको बराबर मिलाय धूनी दे तो चुन्ने और घरके मच्छड़, खटमल भी जायँ यह वैद्यरहस्य और वैद्यविनोद में लिखा है २ ॥ इति कृमि रोगकी उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

अथ पाण्डु, कामला, हलीमक रोगों की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

प्रथम पाण्डुरोग वात, पित्त, कफ, सन्निपात, मट्टी खाना इन भेदों से ५ प्रकार का उत्पन्न होता है ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ पाण्डु रोग की उत्पत्ति ॥

अधिक खेद करने से, खट्टी अथवा तिक्त वस्तु खाने अथवा सोने से वात, पित्त, कफ पुरुष के रुधिर को बिगाड़ शरीर की त्वचा को पीली कर देते हैं ॥

अथ पाण्डुरोग के पूर्वरूप का लक्षण ॥

त्वचा फटने लगे, अङ्ग में पीड़ा हो, मिट्टी खाने की इच्छा रहे, नेत्रों पर कुछ सूजन हो, मल तथा मूत्र पीले हों, अन्न पचे नहीं ये लक्षण जिसमें हों तो वैद्य बतलादे कि तुम्हारे पाण्डुरोग होगा। इस पाण्डुरोग को लौकिक में पीलिया भी बोलते हैं ॥

अथ वात के पाण्डुरोग का लक्षण ॥

जिसकी त्वचा, मूत्र, नेत्र रूखे हों अथवा काले और लाल हों और शरीर में कम्प, पीड़ा, अफरा और भ्रमादिक हों तो वात का पाण्डुरोग जानिये ॥

अथ पित्त के पाण्डु रोग का लक्षण ॥

मल, मूत्र, नेत्र जिसके पीले हों, शरीर में दाह, तृषा, ज्वर हो और पतला मल, शरीर की त्वचा पीली हो तो पित्त का पाण्डुरोग जानिये ॥

अथ कफ के पाण्डुरोग का लक्षण ॥

मुख से कफ निकले, शरीर में सूजन हो, तन्द्रा, आलस्य और शरीर भारी हो, त्वचा और मूत्र, नेत्र सफ़ेद हों तो कफ का पाण्डुरोग जानिये ॥

अथ सन्निपात के पाण्डुरोग का लक्षण ॥

कषैलीमिट्टी खाने से वातका कोप और मीठी मिट्टी खाने से कफ का कोप होता है फिर वही मिट्टी सातों धातुओं को और खाये हुए भोजन को रूखा कर डालती है तथा वही मिट्टी पेट में बिगड़कर पकी हुई नसों को फुला देती है अथवा रस को बहने से रोंक देती है तब सब इन्द्रियों का बल जाता रहता है और शरीर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

का वीर्य और पराक्रमभी जाता रहता है फिर वही मिट्टी शरीर की त्वचाको पीली करके बल, वर्ण और अग्नि का नाश करदेती है तब उसे तन्द्रा, आलस्य, श्वास, कास, शूल, बवासीर, अरुचि और नेत्र, पांव, उदर, इन्द्रिय इतने अङ्गोंपर सूजन हो पेट में कृमि, अतीसार, मल, कफ, रुधिर आदिसे मिले ये सब लक्षण हों तो मिट्टी खानेका पाण्डुरोग जानिये ॥

अथ पाण्डुरोग का असाध्य लक्षण ॥

जिसके शरीरका रुधिर जातारहे, शरीर सफ़ेद होजाय तथा दांत, नख, नेत्र पीले हों और सब पदार्थ पीलेही पीले दीखें, सब शरीरमें सूजन, अतीसार और ज्वर भी हो। ऐसा पाण्डुरोग हो तो वह रोगी मरजाय ॥

अथ कामलारोग का लक्षण ॥

जो पाण्डुरोगी गर्म वस्तु बहुत खाता है उसका पित्त रुधिर और मांस को दग्ध करता है और नेत्र, त्वचा, नख, मुख आदि अंग हल्दी के सदृश पीले होजाते हैं तथा मल, मूत्र रुधिरसे उतरें, इन्द्रियों का बल जाता रहे, दाह हो, अन्न पचे नहीं, दुर्बलता और अरुचि हो ये लक्षण हों तो कामलारोग जानिये ॥

अथ हलीमकरोग का लक्षण ॥

जिस पाण्डुरोगीके वात, पित्त बढ़े और त्वचा हरी, पीली, काली होजाय और बल उत्साह जाता रहे तथा तन्द्रा, मन्दाग्नि, सूक्ष्मज्वर, दाह, तृषा, अरुचि, भ्रम हो और स्त्री का संग प्यारा न लगे, अङ्गमें पीड़ा हो तो हलीमकरोग जानिये ॥

अथ पाण्डुरोग का यत्न ॥

सारको गोमूत्र में ७ दिन पकावे फिर महीन पीस जल से १टंक गुड़के साथ ४ रत्ती प्रमाण १५ दिन तक ले तो पाण्डुरोग जाय १ अथवा माण्डूर को गोमूत्र में पकाय १ टंक गुड़के साथ १५ दिन ले तो पाण्डुरोग जाय २ अथवा सांठीकी जड़,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

निशोत, सोंठि, मिरच, पीपरि, बायबिड़ंग, दारुहल्दी, चित्रक, कूट, हल्दी, त्रिफला, दात्यूणी, चव्य, इन्द्रयव, कुटकी, पीपलामूल, नागरमोथा, काकड़ासिंगी, खुरासानी अजंवाइन, कायफल इन सबको टके टंके भर ले महीन पीसे और सबका दूना माण्डूर मिलावे फिर इन सबको अष्टगुणित गोमूत्र में पकाकर १ टंक प्रमाणकी गोली बांधे। १ गोली गौके मट्ठेके साथ मिलाके १५ दिन ले तो असाध्यभी पाण्डुरोग जाय और कामला, हलीमक, श्वास, कास, राजरोग, ज्वर, सूजन, शूल, फिया, अफरा, बवासीर, संग्रहणी, कृमिरोग, वातरक्त, कोढ़ इन सब रोगोंको यह पुनर्नवादि माण्डूररस दूर करता है ३ अथवा हड़की छाल ५ टंक, बहेड़े की छाल ५ टंक, आमला ५ टंक, सोंठि ५ टंक, कालीमिरच ५ टंक, पीपरि ५ टंक, नागरमोथा ५ टंक, बायबिड़ंग ५ टंक, चित्रक ५ टंक, मारा हुआ सार ६ पैसेभर इन सबको महीन पीसे फिर सार मिलाकर ६ रत्ती ले शहदके साथ या घृतके साथ या गौके मट्ठेके साथ अथवा गोमूत्रके साथ ले तो पाण्डुरोग, सूजन, मन्दाग्नि, बवासीर, अरुचि इन सब रोगोंको दूर करे इसके खाने की यह युक्ति है कि प्रथम दिन दो रत्ती खाय फिर प्रतिदिन २ रत्ती के हिसाब से १८ रत्ती तक बढ़ावे यह नवाशयचूर्ण है ४ अथवा अड़ूसा, गिलोय, नींबकी छाल, त्रिफला, चिरायता, कुटकी इन सबको बराबर ले जवकुटकर २ टंकका काढ़ाकर शहद मिलाय १० दिन ले तो पाण्डुरोग, रक्तपित्त, कामला, हलीमक ये सब दूर हों ५ अथवा त्रिफला, गिलोय, दारुहल्दी, नींब इनके पृथक् पृथक् रसोंमें शहद मिलाय १० दिन पिये तो पाण्डुरोग, कामला, हलीमक ये सब जायँ ६ अथवा दड़घलके रसका नेत्रोंमें अञ्जन करे तो पाण्डुरोग, कामला, हलीमक जायँ। यह वैद्यरहस्यमें लिखाहै ७ अथवा चिरायता, कुटकी, देवदारु, नागरमोथा, गिलोय, परवरके पत्ते, धमासा, पित्तपापड़ा, नींबकी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

छाल, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, चित्रक, त्रिफला, बायबिड़ंग इन सबको बराबर ले महीन पीस इनकी बराबर सार मिलाय १ टंक शहदके साथ अथवा मट्ठेके साथ प्रतिदिन खाय तो पाण्डु-रोग, कामला, हलीमक, सूजन, प्रमेह, संग्रहणी, श्वास, कास, रक्तपित्त, बवासीर, आमवात, गोला, कोढ़ ये सब दूर हों। यह अष्टादशाङ्गावलेह भावप्रकाशमें लिखाहै ८ अथवा कड़ुवी तूंबीकी गिरीके रसकी नास ले तो तत्काल पीलिया जाय। पाण्डुरोगवाला यव, गेहूं, चावल, मूंग, अरहर, मसूर ये अनाज खाय ९ ॥

इति चतुर्थस्तरङ्गः ४॥

अथ रक्तपित्त की उत्पत्ति का लक्षण ॥

बहुत धूपमें रहने, खेद करने, बहुत चलने, अधिक मैथुन और शोच करने तथा तीक्ष्ण, गर्म, खारी, कड़ुवी वस्तु अथवा नोन, खटाई के खाने से पित्त दग्ध होकर शरीरके रुधिर को दग्ध करता है तब उसका रुधिर दो प्रकार से प्रवृत्त होता है। एक ऊपर, दूसरा नीचे। ऊपर तो नाक, नेत्र, कान, मुखमें और नीचे लिङ्ग, योनि, गुदामें होकर प्रवृत्त होता है और अधिक-तर जब रुधिर कुपित होता है तो सब बालों में प्रवृत्त होता है ॥

अथ रक्तपित्त का पूर्वरूप ॥

अङ्गों में पीड़ा और वमन हो, ठण्ढा अच्छा लगे और मुख से धुआं निकले, रुधिर की बास मुख में आवे तो जानिये कि रक्तपित्त होगा ॥

अथ कफ के रक्तपित्त का लक्षण ॥

शीतल, पीला, चिकना मोर के पंख सदृश रुधिर हो तो कफ का जानिये ॥

अथ वात के रक्तपित्त का लक्षण ॥

काला, झाग समेत महीन धार लिये सूखा रुधिर हो तो वात का जानिये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ पित्त के रक्तपित्त का लक्षण ॥

कत्थेके काढ़ेके समान काला, गोमूत्र और स्याही के सदृश चिकना रुधिर हो तो पित्तका जानिये और ये सम्पूर्ण लक्षण रुधिरमें पाये जायँ तो सन्निपातका जानिये। नाक, मुख, आंख, कानमें होकर रुधिर जाय तो साध्य जानिये और गुदा, लिङ्ग, योनिमें होकर जाय तो याप्य जानिये और दोनों मार्गों से जाय तो असाध्य जानिये ॥

अथ रक्तपित्त का उपद्रव ॥

जिसका शरीर रोगों से क्षीण, वृद्ध और दुर्बल हो तथा लंघन करता हो तो असाध्य जानिये और श्वास, कास, ज्वर, वमन, मदयुक्त पाण्डुरोगीके सदृश दाह, मूर्च्छा और अधैर्यवान् के सदृश हृदयशूल, तृषा और अतीसारवालेके सदृश भोजनमें अरुचि हो तो उपद्रव जानिये। रक्तपित्तवाले को आकाश लाल दीखे, नेत्र लाल हों तथा रुधिर की डकारें आवें, सर्वत्र रुधिर सा दीखे तो असाध्य जानिये ॥

अथ रक्तपित्त का यत्न ॥

नकसीरवाले के मुखमें रुधिर जाय तो हड़, त्रिफला, निशोत, किरमाला इनका जुलाब दे तो रक्तपित्त जाय १ और नीचे के मार्ग का रक्तपित्त वमन कराने से जाता है २ अथवा खस, कमलगट्टे, अड़ूसा, गिलोय, मुलहठी, महुआ, नागरमोथा, रक्तचन्दन, धनियां इन सबको बराबर ले जवकुटकर २ टंकका काढ़ा शहद डालकर ले तो रक्तपित्त जाय ३ अथवा प्रियंगुके फूल, पठानी लोध, रसौंत, चक्कीकी मिट्टी, अड़ूसा इन सबको बराबर ले ८ टंकका काढ़ा शहद, मिश्री मिलाय १० दिन ले तो रक्तपित्त जाय ४ अथवा दूब के रसकी या अनार के फूलों के रसकी वा अमलतास के रसकी अथवा हड़ को शीतल जलमें पीस उसकी नास दे तो नकसीर बहना दूर हो ५ अथवा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दूब और आमले को पीसकर मस्तक में लेप करे तो नकसीर तत्काल बन्द हो ६ अथवा पक्का गूलर वा छुहारा या किशमिश शहद से खाय तो रक्तपित्त जाय। ये सम्पूर्ण वैद्यविनोद में लिखे हैं ७ अथवा धनियां, आमला, अडूसा, किशमिश, पित्तपापड़ा इन सब को बराबर ले ५ टंक शीतल जलमें भिगोय, पानीसे पीस, छानकर पिये तो रक्तपित्त, ज्वर, दाह, तृषा ये सब जायँ ८ अथवा मुनक्का, किशमिश, सफ़ेद चन्दन, पठानीलोध के फल, प्रियंगु इनको बराबर ले महीन पीस शहदसे १० दिन चाटे तो रक्तपित्त जाय ९ अथवा वसन्तमालिनीरस, बोलबद्ध, परपटीरस जो पीछे लिखे हैं उनसेभी नकसीर अच्छी होती है १० अथवा प्याजके रसकी नास लेनेसे नकसीर अच्छी होती है ११ अथवा १०० बारका धोया घी मस्तकमें लेप करे तो नकसीर बन्द हो १२ अथवा बड़े पक्के पेठे के बीज और छिलके दूरकर, पानीमें पकाय, ठण्डाकर गाढ़े वस्त्र में उसका जल छाने और उस जल को जुदे बासन में रक्खे तथा पेठे को कड़ाही में घी से भूने जलने न दे फिर उस पेठे के रसमें मिश्री की चाशनी करे उसमें पेठे को डाले और पीपरि २ टंक, सोंठि २ टंक, ज़ीरा २ टंक, धनियां ५ टंक, पत्रज ५ टंक, इलायची ५ टंक, काली मिरच ५ टंक, तज ५ टंक, वंशलोचन ५ टंक इन सबको महीन पीस पाव भर शहदके साथ उस चाशनीमें मिलावे फिर इसमें से १ टके या २ टकेभर प्रतिदिन खाय तो रक्तपित्त, ज्वर, तृषा, दाह, प्रदर, क्षीणता, वमन, स्वरभङ्ग, कास, क्षयी इन सब रोगों को यह कूष्माण्डावलेह दूरकर शरीर को पुष्ट करता है १३—इति कूष्माण्डावलेह॥ अथवा इलायची, पत्रज, वंशलोचन, तज, किशमिश, पीपरि इन सबको दो दो पैसेभर ले महीन पीस मिश्री, मुलहठी, किशमिश, छुहारा इन सबको टके टके भर ले महीन पीस २ टंक शहदमें मिलाय ६ माशेके प्रमाण गोली बांधे।

In Public Domain, Chamba Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

एक गोली प्रतिदिन खाय तो रक्तपित्त, कास, श्वास, पित्तज्वर, हिचकी, मूर्च्छा, मन्दाग्नि, भ्रम, तृषा, पसुलीका शूल, अरुचि, स्वरभङ्ग, क्षयी इन सबको येह एलादिगुटिका दूर कर देह को पुष्ट करती है। यह एलादिगुटिका वैद्यरहस्य में लिखी है १४–इति रक्तपित्तके यत्न सम्पूर्ण ॥

अथ राजरोग तथा शोषरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

राजरोग पांच प्रकार का है। वातका १ पित्तका २ कफका ३ सन्निपात का ४ हृदयमें चोटलगने का ५ तथा शोषरोग छः प्रकारका है। एक तो अत्यन्त स्त्रीप्रसङ्ग से, दूसरा बहुत शोच से, तीसरा गम्भीर व्रण और हृदयमें बहुत चोट लगनेसे, चौथा बहुत मार्ग चलनेसे, पांचवां अत्यन्त खेदसे और छठा वृद्धावस्था से होता है ॥

अथ राजरोग की उत्पत्ति ॥

मल, मूत्र और अधोवायु का रोंकना, वीर्यकी क्षीणता, बहुत साहस करना, सामर्थ्य से बाहर काम करना, कुसमय में अत्यन्त भोजन करना इत्यादि बातें रसकी बहनेवाली नाड़ियों को रोंक कर वीर्य को क्षीण करती हैं इसकारण से इस रोगमें कफ प्रधान है। यह कफ बहुत स्त्रीप्रसङ्ग करने से त्रिदोषरूप राजरोग होकर पैदा होता है और रसकी बहनेवाली नाड़ियों को रोंक और वीर्य को क्षीणकर पीछे सातों धातुओं को क्षीण करता है तब वह मनुष्य प्रतिदिन सूखता जाता है। यह राजरोगकी उत्पत्ति है ॥

अथ राजरोग का पूर्वरूप ॥

श्वास, अङ्गोंमें पीड़ा, खांसी में कफ थूकना, तालूमें शोष, वमन, अग्निकी मन्दता, पीनस, खांसी, अत्यन्त निद्रा, नेत्रोंमें श्वेतता, मांस खाने और मैथुन करनेकी इच्छा रहे ये लक्षण जिस मनुष्यके हों तो जानिये कि राजरोग पैदा होनेवाला है ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ राजरोग का लक्षण ॥

पसुली और कन्धोंमें सन्ताप, हाथ पैरोंमें जलन, सब अङ्ग में ज्वर रहे ये लक्षण हों तो राजरोग जानिये। अथवा भोजन-मात्र में अरुचि और श्वास, कास हों, मुखमें रुधिर आवे, स्वर-भङ्ग हो ये लक्षण हों तो राजरोग जानिये ॥

अथ वात के राजरोग का लक्षण ॥

स्वरभेद और शूल हो, कन्धे और पसुली में संकोच हो तो वातका राजरोग जानिये ॥

अथ पित्त के राजरोग का लक्षण ॥

ज्वर, दाह और अतीसार हो, मुखमें रुधिर आवे तो पित्तका राजरोग जानिये ॥

अथ कफ के राजरोग का लक्षण ॥

माथा भारी रहे, भोजनमें अरुचि, खांसी हो, कण्ठसे बोला न जाय तो कफका राजरोग जानिये। ये सम्पूर्ण मिले हुए हों तो सन्निपात का राजरोग जानिये ॥

अथ हृदय में चोट लगने से उपजे राजरोग का लक्षण ॥

जिसके शिरमें पीड़ा, मुखसे रुधिरका वमन, शरीरमें रूखापन हो उस राजरोगीको असाध्य जानिये। अथवा जिसके नेत्र श्वेत हों, अन्न में अरुचि हो, श्वासका रोग और प्रमेह बढ़जाय तथा बहुत मूत्र करे वह राजरोगी मृत्युवश होता है ॥

अथ राजरोगी की अवधि ॥

अच्छा शास्त्रज्ञ, यत्नकारक और सम्पूर्ण क्रियाकुशल, चतुर तो वैद्य मिले तथा रोगी तरुण, धनवान्, वैद्य का आज्ञावर्ती और जितेन्द्रिय हो तो हजार दिन तक जीता है ॥

अथ साध्य राजरोग का लक्षण ॥

जिसके ज्वर न हो और बलवान् हो, वैद्यकी दी हुई कड़वी,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कषैली औषध खाजाय और क्षुधा उसकी तीव्र हो तथा शरीर पुष्ट हो ऐसे रोगीका यत्न करना चाहिये १ ॥

अथ अधिक मैथुन से उत्पन्न शोषरोग का लक्षण ॥

लिङ्गेन्द्रिय और फ़ोतोंमें पीड़ा हो तथा मैथुन करने की सामर्थ्य न रहे फिर हाड़ोंका नाश हो और पीछे कहे हुए राजरोगों के भी उपद्रव हों, शरीर पीला और चिन्ताग्रस्त होजाय तथा अङ्ग शिथिल हों ये लक्षण हों तब जानिये कि इसके मैथुन करने से शोषरोग हुआ है। और शोच करनेसे उत्पन्न शोषरोगके भी यही लक्षण हैं इसमें वीर्य का क्षय नहीं है २ ॥

अथ जराशोष का लक्षण ॥

कृश होकर वीर्य, बुद्धि, बल जातेरहें, शरीरमें कम्प, भोजनमें अरुचि, घों घों बोले, कफ बहुत थूके, शरीर भारी, पीनस और शरीर रूखा हो ये लक्षण हों तो जानिये कि जराशोषी है ३ ॥

अथ मार्गशोष का लक्षण ॥

यह भी जराशोषी के लक्षणों से मिलता है परन्तु जराशोषी के हृदयमें पीड़ा नहीं होती है और मार्गशोषी के होती है ४ ॥

अथ गम्भीरादि व्रण से उत्पन्न शोषरोग का लक्षण ॥

बहुत तीरन्दाज़ी से और भारके उठानेसे हृदयमें ज़ोर आपड़ता है और अत्यन्त मैथुन करके सूखा भोजन करे उसके भी हृदयमें यह रोग पैदा होता है तथा हृदय दूखे, पसुली और अङ्ग सूखे, शरीरमें कम्प हो तथा वीर्य, बल वर्ण, अरुचि, अग्नि ये सब घट जायँ और रुधिर थूके, रुधिरही वमन करे, रुधिरही दिशा और मूत्रमें जाय, पसुली और कमर दूखे, ज्वर हो आवे, सूखकर महाकंकाल के सदृश होजाय, अतीसार और खांसी हो ये सब लक्षण हों तो व्रणशोषका रोग जानिये ॥

अथ राजरोग और शोषरोग का यत्न ॥

वंशलोचन ८ टंक, पीपरि ४ टंक, इलायची २ टंक, तज

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

१ टंक, मिश्री १६ टंक इनको महीन पीस शहद और मक्खन के साथ चाटे तो राजरोग, श्वास, पित्तज्वर, पसुलीका शूल, मन्दाग्नि, अरुचि, हाथ पैरोंकी दाह, रक्तपित्त इन सबको दूर करता है १ यह सितोपलादि अवलेह है १ अथवा गिलोय सत, सार ये दोनों १ टंक ले शहद और मक्खनके साथ चाटे तो राजरोग जाय २ अथवा माराहुआ पारा ३ भाग, सुवर्णकी भस्म १ भाग, मैनसिल १ भाग, गन्धक १ भाग इन सबको इकट्ठाकर बड़ी पीली कौड़ी में भरे फिर बकरी के दूध में सुहागे को पीस उससे कौड़ी का मुँह बन्द करे फिर कौड़ी को एक कुलढ़े में रख बन्दकर गजपुटकी आंच में फूँक दे फिर शीतल करके निकाल ले फिर इस राजमृगाङ्करस को ४ रत्तीप्रमाण १ महीने तक वर्धमानपीपरि अर्थात् ३ पीपरि से २१ तक शहद और मक्खन मिलाकर खाय तो राजरोग अवश्य जाय। यह राजमृगाङ्करस है ३ अथवा भीमसेनी कपूर ५ टंक, तज ५ टंक, कालीमिरच ५ टंक, जायफल ५ टंक, लवङ्ग ५ टंक, नागकेसर ७ टंक, पीपरि ८ टंक, सोंठि ९ टंक इन सबको महीन पीस सब * से दूनी मिश्री मिलाय शहद आदि अनेकानेक अनुपानसे १ टंक ले तो राजरोग, अरुचि, क्षयी, कास, श्वास, गोला, बवासीर, वमन और कण्ठ का रोग इन सब रोगों को यह दूर करता है। यह कर्पूरादि चूर्ण है ४ अथवा शोधा पारा ५ टंक, शोधी गन्धक ५ टंक, अभ्रक ५ टंक, शिंगरफ़ २ टंक, मैनसिल २ टंक पहले पारे और गन्धक की कजली करे फिर इसमें ये ओषधियां मिलाय इन सबका आधा सार मिलावे तदनन्तर इन सबको खरल में डाल शतावरिके रसकी १४ पुट देकर सुखा ले फिर २ रत्ती तथा ३ रत्ती मिश्री के साथ प्रातःकाल खाय तो राजरोग, वात-पित्त-कफरोग

* चीनी अथवा मिश्री किसी चूर्ण में मिलाना हो तो दूनी मिलाना चाहिये अगर गुड़ मिलाना हो तो बराबर चूर्ण के डाले। यह प्रमाण आढमक्षीका है॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

और सब ज्वरोंको दूर करता है। यह कुमुदेश्वररस वैद्यरहस्य में लिखाहै ५ अथवा चौराई के सागको रांधकर खूब घृत मिलाके नित्य भोजन करे तो राजरोग और बहुमूत्रता दूर हो ६ अथवा बड़े बड़े पक्के हरे ५०० आमलों को जलमें पकाय उनका रस निकाले उस रसमें ५० टकेभर मिश्रीकी चाशनी चांदी के पात्रमें करे फिर इस चाशनी में ये औषधें डाले—मुनक्का, किशमिश, अगर, चन्दन, कमलगट्टे, इलायची, हड़की छाल, * काकोली, क्षीरकाकोली, ऋद्धि, वृद्धि, मेदा, महामेदा, जीवक, ऋषभक, गिलोय, काकड़ासिंगी, पुष्करमूल, कचूर, अड़ूसा, बिलारीकन्द, खैरैटी, सरिवन, पिथवन, दोनों कटेली, बेलगिरी, अरणी, अरलू, खम्हारि, पाठ, नागरमोथा इन सब औषधियों को एक एक टकेभर ले अत्यन्त महीनपीसकर आमले के संयोगकी मिश्री की चाशनी में डाले फिर उस चाशनी में ६ टकेभर शहद डाले और पीपरि २ टंक, तज २ टंक, पत्रज २ टंक, नागकेसर २ टंक, इलायची २ टंक, वंशलोचन २ टंक ये सब महीन पीस डाले फिर इनको एकरस कर १। टकेभर प्रतिदिन खाय तो राजरोग, शोषरोग को दूरकर बल, कान्ति, पुष्टता और वृद्धको तरुण यह च्यवनप्राश अवलेह करताहै ७—इति च्यवनप्राश अवलेह सम्पूर्ण ॥

अथवा अड़ूसे का रस और कटेली का रस १। टकेभर ले उस में शहद १ टंक, पीपरि २ टंक मिलाकर प्रतिदिन खाय तो राजरोग दूर हो ८ अथवा मृक १ भाग, पारा १ भाग, अनबेधे मोती २ भाग, शोधी गन्धक २ भाग प्रथम पारे और गन्धककी कजली करे पीछे सब औषध मिलाय कांजी में १ दिन खरल करे फिर इसकी गोली कर एक सरवेमें धरकर कपरौटी करे और उस कपरौटी किये हुए सरवे को एक नोनसे भरी हुई हँड़िया में धर एक

* इन औषधियों के अभाव में क्रम से ये औषधियां छोड़े—शतावरि, गुखुरू, असगन्ध, वाराहीकन्द । यह पाठ भावप्रकाशका है ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दिनतक अग्नि देकर पका ले जब शीतल हो तब काढ़कर १ या २ रत्तीके प्रमाण प्रातःकाल मिश्रीके साथले तो राजरोग जाय। यह कुमुदेश्वररसं वैद्यविनोद में लिखा है ९ अथवा बड़ी पीली कौड़ी, पारा, गन्धक बराबर ले उसकी कजली कर उसको कौड़ी में भरे और उस कौड़ीके मुँहको भुने सुहागेसे बन्द करे फिर उस कौड़ीको सरवे में बन्दकर गजपुटसे फूंक दे जब शीतल हो तब निकाले। इसमें से १रत्तीप्रमाण खाय तो राजरोग, कास, श्वास, संग्रहणी, ज्वरातीसार इन सब रोगों को दूर करे। यह कपर्दिकेश्वररस रुद्रदत्तनाम ग्रन्थ में लिखा है १० अथवा राजरोग, शोषरोगवाले को दूध, मीठा अनार ये गुणकारी हैं। यह वृन्दमें लिखा है ११ अथवा शुद्ध शिलाजीतके सेवनसे राजरोग जाय। यह चरकमें लिखा है १२ अथवा तालीसपत्र १० टंक, चित्रक १० टंक, हड़की छाल १० टंक, अनारदाना १० टंक, तंतरीक १० टंक, अजमोद २॥ टंक, गजपीपरि २॥ टंक, अजवाइन २॥ टंक, झाऊकी जड़ २॥ टंक, ज़ीरा २॥ टंक, धनियां २॥ टंक, जायफल २॥ टंक, लवङ्ग २॥ टंक, तज २॥ टंक, पत्रज २॥ टंक, इलायची २॥ टंक इन सबकी बराबर मिश्री मिलाकर महीन पीस २॥ टंक प्रतिदिन बकरीके दूधमें ले तो राजरोग, क्षयीरोग, पीनस, फिया, अतीसार, मूत्रकृच्छ्र, पाण्डुरोग, वातपित्तका रोग, प्रमेह इन सब रोगोंको यह चूर्ण दूर करता है। यह महातालीसादि चूर्ण है और हारीतमें लिखा है १३ अथवा सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, तज, पत्रज, इलायची, लवङ्ग, जायफल, वंशलोचन, कचूर, बावची, अनारदाना इन सबको बराबर ले महीनपीस इनकी बराबर इसमें उत्तम सार मिलावे फिर इन सबसे दूनी मिश्री मिलाय २॥ टंक प्रतिदिन बकरी के दूधके साथ खाय तो राजरोग, मन्दाग्नि, बीस प्रकार के प्रमेह इनको दूर कर शरीर को पुष्ट करता है १४–इति शुण्ठ्यादि चूर्ण॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथवा लवङ्ग, कङ्कोल, मिरच, खस, चन्दन, तगर, कमलगट्टे, कालाजीरा, इलायची, अगर, नागकेसर, पीपरि, सोंठि, चित्रक, नेत्रबाला, भीमसेनी कपूर, जायफल, वंशलोचन इन सबको बराबर ले और सबके बराबर मिश्री मिलाय १ टंक प्रतिदिन खाय तो राजरोग, मन्दाग्नि, श्वास, हिचकी, संग्रहणी, अतीसार, भगन्दर, प्रमेह इन सबको दूर करता है १५—इति लवङ्गादि चूर्ण ॥ अथवा मारा अभ्रक २। टंके भर भीमसेनी कपूर ४ माशे, जावित्री ४ माशे, खस ४ माशे, तेजपात ४ माशे, लवङ्ग ४ माशे, तालीसपत्र ४ माशे, दालचीनी ४ माशे, दालचीनी के फूल ४ माशे, धवई के फूल ४ माशे, हड़की छाल ६ माशे, आमला ४ माशे, बहेड़े की छाल ६ माशे, सोंठि ६ माशे पहले पारे और गन्धककी कजली करे पीछे इन ओषधियोंको महीन पीस एकरस कर उसमें मिलाय पानी से चने प्रमाण गोली बांधकर ४ गोली प्रतिदिन शीतल जलसे खाय तो राजरोग, श्वास, खांसी, शूल, प्रमेह, वमन, आमपित्त, अरुचि, संग्रहणी, वातरक्त इन सब रोगों को यह गोली दूर करके शरीरको पुष्ट करती है। यह शृङ्गाराभ्रकगुटिका है १६ ॥

अथ मधुपक्के हड़ की क्रिया ॥

दशमूल, पीपरि, चित्रक, कौंचके बीज, बहेड़े की छाल, कायफल, कालीमिरच, पीपलामूल, रोहिष (रोहीड़ा), दात्यूणी, किशमिश, दोनों जीरे, हल्दी, आमला, बायबिड़ंग, काकड़ासिंगी, देवदारु, सांठीकी जड़, धनियां, लवङ्ग, किरमालाकी गिरी, गोखुरू, बिधारा, कूट, इन्द्रायण ये सब ओषधियां दो दो टंक ले जवकुटकर १६ सेर पक्के जलमें इन ओषधियों को डाले और ओषधियों के साथ चोखी मोटी ४ सेर बड़ी पक्की हड़की छाल मधुरी आंचसे मटकेमें औटावे पीछे उन हड़ों को जलसे निकाल ठंढी करे फिर चोखे शहदमें ५ दिनतक डालरक्खे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

फिर उनको शहदसे निकाल और शहदमें ऐसी डाले कि शहद में हड़ डूबी रहें फिर हड़ों समेत शहदके बासनमें तज, पत्रज, नागकेसर, इलायंची, पीपरि इन सबको महीन पीस ८ टंकेभर चूर्ण डालकर १ हड़ प्रतिदिन खाय तो राजरोग, शोषरोग, कास, श्वास, हिचकी, वमन, ज्वर, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, वातरक्त, बवासीर, संग्रहणी, रक्तपित्त, दाह, विभूति, ब्योंचा, कोच, मृगी, पाण्डु-रोग इन रोगोंको यह मधुपक्व हड़ दूरकरती है। यह धन्वन्तरि संहितामें लिखी है १७—इति मधुपक्व हड़की विधि सम्पूर्ण ॥

अथवा पुरानागुड़ पाव भर और अदरकका रस १ सेर इस रसमें मधुरी आंचसे गुड़की पतली चाशनी करे फिर तज, पत्रज, नागकेसर, इलायची, लवङ्ग, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि इन सबको २ टके भर ले महीन पीस मिलाकर १ टके भर प्रति-दिन खाय तो राजरोग, मन्दाग्नि, कास, श्वास, अरुचि इन रोगोंको दूर करता है १८—इति अदरकका अवलेह ॥

अथवा बकरी के दूधमें बराबर का पानी डालकर ३ पीपरि डाले और एक एक प्रतिदिन ३० दिनतक बढ़ावे फिर एकही एक घटावे जब पानी जलजाय और दूध रहजाय तब पहिले तो पी-परि खाय पीछे उस दूधको पिये तो राजरोग, कास, श्वास ये सब रोग जाते रहें। यह काशीनाथपद्धतिमें लिखा है १९ ॥

अथवा ४ सेर पक्की मुनक्का, किशमिश एक मन पानी में औटावे जब चतुर्थांश शेष रहजाय तब उसमें पुराना गुड़, बाय-बिड़ंग, प्रियंगुके फूल, तज, इलायची, पत्रज, नागकेसर इन सबको २ टंकेभर डालके मदिरा के यन्त्रसे इनका अर्क काढ़ कर १ टंकेभर प्रतिदिन ले तो राजरोग, कास, श्वास दूर हों २० यह किशमिशका आसव योगतरङ्गिणी में लिखा है २० अथवा मृगाङ्क १ रूपरस २ ताम्रेश्वर ३ पारेकी भस्म ४ अभ्रक ५ इन सब रसोंको बराबर भाग ले फिर इकट्ठा मिलाय इनमें पृथक् २

In Public Domain, Chandra Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

आगे लिखी हुई औषधियों की एक २ पुट दे प्रथम बायबिड़ंग की १ नागरमोथाकी १ कायफलकी १ निर्गुण्डीकी १ दशमूलकी १ चित्रककी १ हल्दीकी १ सोंठिकी १ कालीमिरच की १ पीपरि की १ पुट देकर आधी आधी रत्ती की गोली बांधे। एक गोली प्रतिदिन खाय तो राजरोग, खांसी, फिया, गोला इत्यादि जायँ। यह पंचामृतरस सारसंग्रह में लिखा है २१ अथवा बड़े शंखकी राखको गोमूत्रमें सानकर बड़ी दो प्याली बनाकर उसमें पारा ५ टंक, गन्धक ५ टंक इन दोनों की कजली करके भरे और कपरौटी कर गजपुट में फूंक दे फिर इसको प्याली समेत पीस १ रत्ती शहदके साथ खाय तो राजरोग जाय। यह रसार्णव में लिखाहै २२ अथवा गीली थूहर की लकड़ी पावभर, सेंधानोन २ तोला, कालानोन २ तोला, साँभरनोन २ तोला, बैंगन १ सेर, चित्रक २। टकेभर इन सबको इकट्ठा कर महीन पीस बड़े सरवे में रखके गजपुट से फूंक दे फिर इसमें से एक माशे भोजन के पीछे जलसे ले तो तत्काल भोजन पचे और राजरोग, श्वास, बवासीर जाय और आम तत्काल भस्म हो, शूल जाय। यह क्षुद्रादिक खार रसराजलक्ष्मी ग्रन्थ में लिखा है २३ अथवा शंखकी राखको नींबूके रसमें बुझाकर उस राखमें से १ टकेभर ले उसमें चव्य १० टंक, जवाखार १० टंक, पांचोंनोन १० टंक, भुनीहींग १० टंक, सोंठि १० टंक, कालीमिरच १० टंक, पीपरि १० टंक, पारा १० टंक, शोधीगन्धक १० टंक, शोधासिंगीमुहरा १० टंक ले पहिले पारे और गन्धककी कजली करे फिर कजलीमें ये सब औषधियां मिलाय नींबूके रसमें चनेके प्रमाण गोलीबांधे १ गोली प्रतिदिन लवङ्गके साथ खाय तो राजरोग, संग्रहणी, शूल, गोला ये सब दूर हों यह शंखवटी योगतरङ्गिणी में लिखीहै २४॥

अथ अगस्तहड़ की विधि॥

दशमूल, कौंचके बीज, शंखाहूली, कचूर, खरैटी, गजपीपरि,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

लटजीरा, पीपलामूल, चित्रक, भारंगी, पुष्करमूल ये सब औषधियां दो दो टंकेभर और बड़ीहड़ १०० लेकरइन औषधियों को जवकुट करे फिर २० सेर पानी में सब औषधियां और हड़ें मिलाके औटावे जब पानी चतुर्थांश रहे तब उसे उतार उसमें से हड़ें निकाल उनकी गुठली अलग कर पीसे और १०० टंकेभर गुड़की चाशनी कर उसमें हड़का चूर्ण मिलाय ८ टंकेभर गौका घृत मिलावे फिर १ टंक नित्य खाय तो राजरोग, शोषरोग, खांसी, श्वास, हिचकी, विषमज्वर, संग्रहणी, बवासीर, अरुचि, पीनस इतने रोगों को यह अगस्तहरीतकी दूर करके शरीर को पुष्टकरे और क्षुधा को बढ़ाय कोष्ठको शुद्ध करतीहै। यह अगस्त हड़की विधि वृन्दमें लिखी है २५—इति अगस्तहड़विधि ॥

अथवा १०० टंकेभर अड़ूसेका काढ़ाकर उसका चतुर्थांश जुदा छाने फिर उस काढ़ेमें १० टंकेभर गुड़की चाशनी बनावे और उसमें ८ टंकेभर तिलका तेल और आठ टंकेभर गौका घृत मिलाय उस चाशनीमें १०० बड़ी हड़के बक्कल का महीन चूर्ण मिलावे फिर पीपरि २॥ टंक, पीपरामूल २॥ टंक, कालीमिरच २॥ टंक, पुष्करमूल २॥ टंक, चव्य २॥ टंक, चित्रक २॥ टंक, सोंठि २॥ टंक इन सबको महीन पीस इस चाशनी में डाले फिर इन सबको इकट्ठा कर २ तोले प्रमाण नित्य खाय तो राजरोग निश्चय दूर हो और बवासीर, खांसी, स्वरभेद, सूजन, आमपित्त, पाण्डुरोग, उदररोग, मन्दाग्नि, नपुंसकता ये सब इस औषध से जाते हैं यह औषध चरक में लिखी है २५—इति राजरोग, शोषरोग, क्षयीरोगकी उत्पत्ति, लक्षण और यत्न सम्पूर्ण ॥

अथ कासरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

मुखमें धुआं और धूलजाने से, रूखा अन्न खाने से, भोजन के कुपथ्य से और मल, मूत्र, छींकके रोकनेसे, चिकनाई और मूली आदि को खाकर ऊपर जलपीने से खांसी उत्पन्न होती है। वह

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

खांसी हृदयकी प्राणपवन से मिलती है और प्राणपवन कण्ठ की उदान पवन से मिल उन दोनों पवनों को बिगाड़ती है और बिगड़ी पवन उसके शब्दको कांसीके फूटे बासनके समान करके मुखमें से वेग विलम्बसे निकालती है तब मनुष्य उसको खांसी कहते हैं। वह खांसीका रोग ५ प्रकारका होताहै। वात १ पित्त २ कफ ३ चोटलगना ४ क्षयीरोग ५ और अनुक्रम से एक २ की अपेक्षा दूसरा बलवान् जानिये ॥

अथ खांसी का पूर्वरूप ॥

कण्ठ में कांटेसे पड़कर खुजली चले, भोजन न किया जाय तब जानना कि खांसी होगी ॥

अथ वात की खांसी का लक्षण ॥

हृदय, कनपटी, माथा, उदर, पसुली इन सब में शूल हो, मुख उतर जाय और बल, पराक्रम, स्वर ये क्षीण होजायँ तथा ग्रास खाते में कण्ठ दूखे, सूखा खांसे, टूटा स्वर बोले ये लक्षण वात की खांसीके हैं ॥

अथ पित्त की खांसी का लक्षण ॥

हृदय में दाह और ज्वर हो, मुख सूखे और कड़ुआ रहे, तृषायुक्त हो, कड़ुआ कड़ुआ वमन करे, शरीर पीला होजाय ये लक्षण हों तो पित्तकी खांसी जानिये ॥

अथ कफ की खांसी के लक्षण ॥

कफ से मुख लिपा रहे, मस्तक दूखे, भोजन में अरुचि, शरीर भारी, कण्ठ में खुजली चले, कफकी गांठें थूके ये लक्षण हों तो कफकी खांसी जानिये ॥

अथ क्षतजखांसी की उत्पत्ति, लक्षण ॥

बहुत स्त्रीप्रसङ्ग करने से, बोझ उठानेसे, मार्ग चलनेसे, युद्ध करने से, घोड़े हाथी के दौड़ाने से, रूखा भोजन करने से वात हृदय में जाकर खांसी को प्रकट करताहै। प्रथम रूखा खांसे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

फिर रुधिर थूके, कण्ठ बहुत दूखे, शूल हो, सन्धियों में पीड़ा हो और ज्वर, श्वास, तृषा हो, स्वर घोंघों बोले और कबूतर की भांति बोला करे ये लक्षण हों तो क्षतजकी खांसी जानिये ॥

अथ क्षयीरोग से उपजी खांसी का लक्षण ॥

कुपथ्य और विषमाशन अर्थात् समय कुसमय भोजन आदि करे और बहुत मैथुनकर मल मूत्रको रोके, बहुत सोवे उस मनुष्य के मन्दाग्नि होकर वात, पित्त, कफ तीनोंके कोप से क्षयी रोगकी खांसी उत्पन्न होती है। वह खांसी शरीरको क्षीण करके ज्वर, दाह, मोहको करती है तब यह प्राणका नाशकरती है। सूखा खांसे, दुर्बल होता जाय, शरीरका रुधिर और मांस सूख जाय, राद थूके तब असाध्य जानिये ॥

अथ खांसी का असाध्य लक्षण ॥

वात, पित्त, कफ इन तीनोंकी खांसी साध्य और क्षतजरोग तथा क्षयीरोगकी खांसी असाध्य और बूढ़े मनुष्यकी भी खांसी असाध्य जानिये ॥

अथ खांसी रोग का यत्न ॥

लवङ्ग ५ टंक, कालीमिरच ५ टंक, बहेड़ेका छिलका ५ टंक, खैरसार ५ टंक इन सबको महीन पीस बबूलके छिलकेके काढ़ेमें २ रत्ती प्रमाण गोलीबांधे। १ या २ या ३ गोली ७ दिनतक खाय तो खांसी जाय १ यह लवङ्गादिकी गोली लोलिम्बराज में लिखी है १ अथवा पारा १ टंक, शोधा गन्धक २ टंक, पीपरि ३ टंक, हड़की छाल ४ टंक, बहेड़ेका छिलका ४ टंक, काकड़ासिंगी ५ टंक इन सबको महीन पीस बबूलकी छालके काढ़ेकी २ पुट दे १। टके भरकी गोली बांधे। १ गोली नित्य खाकर ऊपरसे सोंठिका काढ़ा पिये तो खांसी अवश्य जाय। यह रससमूह ग्रन्थ और योग-चिन्तामणि ग्रन्थमें लिखाहै २ अथवा कालीमिरच २॥ टंक, पीपरि २॥ टंक, अनारका छिलका १० टंक, गुड़ २॥ टके भर, जवाखार

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

१ टंक इन सबको महीन पीस चनेके प्रमाण गोली बांधे। २ तथा ४ गोली नित्य खाय तो खांसी जाय ३ अथवा पीपरि, पुष्करमूल, हड़की छाल, सोंठि, कचूर, नागरमोथा इन सबको महीन पीस गुड़में ६ रत्ती प्रमाणकी गोली बांधे। १ वा २ गोली खाय तो खांसी जाय ४ अथवा सोंठि के काढ़ेसें खांसी जाय ५ अथवा अदरक के रसमें शहद मिलाकर खाय तो खांसी जाय ६ अथवा कटेली, गिलोय, सोंठि, पुष्करमूल इन सबको बराबर लेकर इसमें अड़ूसा मिलाय काढ़ाकर पिये तो खांसी जाय। यह क्षुद्रादिक काढ़ा है ७ अथवा छोटी कटेली का भरता कर उसके रसमें पीपरिका चूर्ण मिलाय प्रतिदिन पिये तो खांसी जाय ८ अथवा हड़की छाल २॥ टंक, सोंठि २॥ टंक, कालीमिरच २॥ टंक, पीपरि २॥ टंक, अमलबेत २॥ टंक, चव्य २॥ टंक, चित्रक २॥ टंक, सफ़ेदज़ीरा २॥ टंक, डांसरा (तंतरीक) २॥ टंक, तज ४ माशे, पत्रज ४ माशे, नागकेसर ४ माशे इनको महीन पीस ड। गुड़में २॥ टंकके प्रमाण गोली बांधे। १ गोली प्रभात खाय तो खांसी और श्वास जाय ९ अथवा लवङ्ग २॥ टंक, पीपरि २॥ टंक, जायफल २॥ टंक, कालीमिरच ५ टंक, सोंठि ८ पैसेभर इन सबके बराबर मिश्री ले फिर सबको महीन पीस २॥ टंक जल से खाय तो खांसी, ज्वर, प्रमेह, अरुचि, श्वास, मन्दाग्नि, संग्रहणी इन सब रोगोंको यह चूर्ण दूर करताहै १०—इति लवङ्गादि चूर्ण॥ अथवा शिंगरफ़, कालीमिरच, नागरमोथा, शोधा सिंगीमुहरा इन सबको बराबर ले महीन पीस जंभीरीके रसमें अथवा अदरकके रसमें मूंगके प्रमाण गोलीबांधे। १ गोली नित्य खाय तो श्वास और खांसी जाय ११ अथवा कालीमिरच, नागरमोथा, कूट, बच, शोधा सिंगीमुहरा इन सबको बराबर ले अदरकके रसमें महीन पीस मूंगप्रमाण गोली बांधे। १ गोली नित्य खाय तो श्वास, शूल, कफके रोग, सूतिकारोग, संग्रहणी इन सब रोगों

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

को यह गोली दूर करे १२ अथवा बंग १ टंक, पीपरि २ टंक, हड़का छिलका ३ टंक, बहेड़े का छिलका ४ टंक, अड़ूसा ५ टंक, भारंगी ६ टंक इन सबकी बराबर खैरसार ले फिर सबको महीन पीस बबूलके बक्कलके काढ़ेकी २ पुट दे और शहद से चने प्रमाण गोली बांधे। १ गोली नित्य खाय तो श्वास, खांसी, क्षयी ये सब रोग जायँ १३–इति कासकर्त्तरीगुटिका॥ अथवा भीमसेनीकपूर १। टंक, कस्तूरी १। टंक, लवङ्ग १। टंक, मिरच २॥ टंक, पीपरि २॥ टंक, बहेड़े की छाल २॥ टंक, कुलींजन २ टंक, अनारका छिलका १। टंक इन सबकी बराबर खैरसार इसमें मिलाय महीन पीस पानी से चनेके प्रमाण गोली बांधे। १ गोली नित्य खाय तो खांसी जाय ये सब यत्न वैद्यरहस्य में लिखे हैं १४–इति कर्पूरादिगुटिका॥ अथवा आकके फूलके मध्य की फूली और उसकी बराबर मिरच इन दोनों को महीन पीस १ रत्ती के प्रमाण गोली बांधकर १ गोली नित्य खाय तो खांसी जाय १५ अथवा आकके फूलके बीजकी फूली और उसकी बराबर लवङ्ग ले १ रत्ती प्रमाण गोली बांधकर १ गोली नित्य खाय तो खांसी जाय। यह रुद्रदत्त में लिखी है १६ अथवा पसरकटेली के पञ्चाङ्ग में ४ सेर पानी डाल काढ़ा निकाल उस काढ़े में १०० बड़ी हड़ पकावे जब उबलजायँ तब उतार शीतल कर उनकी गुठली निकाल पीस डाले फिर १०० टकेभर पुराने गुड़की चाशनी कर उस चाशनीमें वह हड़ोंका चूर्ण मिलावे पीछे ये औषधें डाले। सोंठि १ टके भर, कालीमिरच, पीपरि, तज, पत्रज, नागकेसर, इलायची इन सबको एक एक टंक ले महीन पीस उस चाशनीमें डाले फिर आधसेर शहद मिलाके एकरस कर १ टकेभर नित्य खाय तो सब प्रकारकी खांसी जाय। यह भृगुहरीतकी है १७

अथ कटेली का अवलेह॥

४ सेर कटेलीका काढ़ा कर उस काढ़ेमें ४ सेर मिश्रीकी चाशनी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

करे और ये औषधें डाले। गिलोय १ टंकभर, चव्य १ टंक, चित्रक १ टंक, नागरमोथा १ टंक, काकड़ासिंगी १ टंक, सोंठि १ टंक, पीपरि १ टंक, धमासा १ टंक, भारंगी १ टंक, कचूर १ टंक इन सबको महीन पीस उस चाशनी में मिलावे फिर १सेर शहद और ऽ। वंशलोचन डालके १टंकभर नित्य खाय तो सब प्रकारकी खांसी जाय। यह भावप्रकाशमें लिखा है १८–इति कटेली का अवलेह॥अथवा अड़ूसेके काढ़ेमें शहद डाल पिये तो खांसी जाय १९ अथवा आकका पत्र, मैनसिल, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि इन सबको बराबर ले गुड़में गुटिका बनाकर हुक्के में पिये तो खांसी अवश्य दूर हो २० अथवा पारा, शोधी गन्धक, शिंगरफ़, शोधा सिंगीमुहरा, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, भुनासुहागा इन सबको बराबरले महीनपीस पारे और गन्धककी कजलीमें मिलाकर उस कजलीको भांगरेके रसमें १ दिन खरल करे फिर बिजौरेके रसमें ३ दिन खरल कर इसकी आधीरत्तीकी गोली करे। १ गोली नित्य १० दिन तक खाय तो खांसी, क्षयी, संग्रहणी, सन्निपात, मृगी इन रोगोंको यह रस दूर करताहै २१ इति आनन्दभैरवरस–इति खांसीरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न सम्पूर्ण॥

अथ हिचकी रोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न॥

गर्म, बादी, भारी, रूखी, सीली (ठंढी) आदि वस्तु खाने से और मुखमें रजके जानेसे, खेद करनेसे, मार्ग चलने से, मल मूत्र के रोकनेसे, भूखे रहने से मनुष्य के हिचकी, श्वास, खांसी उत्पन्न होती है॥

अथ हिचकी का स्वरूप॥

वायु दोनों पसुलियों और आंतों को दुःख देतीहुई मुखमें होकर बड़े शब्द सहित प्राणका नाश करनेवाला मुखमें से भयङ्कर शब्द निकालती है उसको मनुष्य हिचकी कहते हैं। वह

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

वात-कफ से मिलकर ५ प्रकार की हिचकी होती है। अन्नजा १ यमला २ क्षुद्रा ३ गंभीरा ४ महती ५ ॥

अथ हिचकी का पूर्वरूप ॥

कण्ठ और हृदय भारी रहे, मुख कषैला हो, कोख में अफरा हो तो जानिये कि इसके हिचकी पैदा होगी ॥

अथ अन्नजा हिचकी का लक्षण ॥

बहुत अन्न खाने और बहुत पानी पीने से कुपित हुआ वात ऊर्ध्वगामी हो मनुष्य के अन्नजा हिचकीको पैदा करता है १ ॥

अथ यमला हिचकी का लक्षण ॥

ठहर ठहर कर दो दो हिचकी आवें, शिर और कन्धों को कँपावे उसको यमला हिचकी कहिये २ ॥

अथ क्षुद्रा हिचकी का लक्षण ॥

ठहर ठहर कर मन्द मन्द कण्ठ और हृदयकी सन्धिसे चले उसको क्षुद्रा हिचकी कहिये ३ ॥

अथ गंभीरा हिचकी का लक्षण ॥

नाभि से भयङ्कर उठे और पीड़ा बहुत हो तथा अनेक उपद्रव करे उसको गंभीरा हिचकी कहते हैं ४ ॥

अथ महती हिचकी का लक्षण ॥

सर्व मर्मस्थानों में पीड़ा करती हुई तथा सब शरीर को कँपातीहुई चले उसको महती हिचकी कहते हैं ५ ॥

अथ हिचकी का असाध्य लक्षण ॥

हिचकी चलतेहुए जिसका शरीर कांप उठे और ऊँची दृष्टि होजाय तथा अँधेरी आजाय, भोजन में अरुचि हो, छींक बहुत आवें ये दोनों गंभीरा और महती हिचकी असाध्य जानिये ॥

अथ हिचकी का यत्न ॥

प्राणायामके करने से, किसी प्रकारसे भयभीत होनेसे, भयङ्कर बात के सुनने से, वात और कफकी घटानेवाली वस्तु के खाने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

से हिचकी दूर होती है १ अथवा बकरीके दूधमें सोंठि को पकाय सोंठि सहित दूध पिये तो हिचकी जाय २ अथवा बिजौरे के रसमें यवका सत्तू और सेंधानोन मिलाके खाय तो हिचकी जाय३ अथवा सोंठि, पीपरि शहद से चाटे तो हिचकी जाय ४ अथवा मक्खी की बीट दूधमें पीस नास ले तो हिचकी जाय ५ अथवा गुड़ और सोंठि पानी में पीस नास ले तो हिचकी जाय ६ अथवा कासकी जड़के रसमें शहद मिलाय नास ले तो हिचकी जाय ७ अथवा मोरके पंखकी राख शहद से चाटे तो हिचकी जाय ८ अथवा बिजौरे की केसरको सेंधानोन मिलाकर खाय तो हिचकी जाय ९ अथवा पुष्करमूल, जवाखार, कालीमिरच ये सब बराबर ले महीन पीस २॥ टंक गर्मजल के साथ ले तो हिचकी जाय १० अथवा हल्दी और उड़दोंको पीस निर्धूम अंगार पर रख हुक्केमें धुआं पिये तो भयङ्कर भी हिचकी जाय। यह वैद्यविनोद में लिखा है ११ अथवा सनकी छाल का चूर्णकर उसका हुक्का पिये तो हिचकी जाय १२ अथवा सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, जवासा, कायफल, करेलण, पुष्करमूल, काकड़ासिंगी इन सबको बराबर ले महीन पीस २॥ टंक शहद के साथ चाटे तो हिचकी, खांसी, श्वास जाय १३ अथवा पित्तपापड़ा, पीपरि ये दोनों २॥ टंक और गुड़ ५ टंक इनका काढ़ा दे तो हिचकी जाय १४ अथवा १० टंक असालूके काढ़े को छानकर पिये तो हिचकी तत्काल दूर हो। यह वैद्यरहस्य में लिखा है १५ अथवा मुलहठी १। टंक शहद के साथ चाटे तो हिचकी जाय १६ अथवा पीपरि १। टंक मिश्रीके साथ खाय तो हिचकी जाय १७ अथवा दूधमें घृत डाल गर्म गर्म पिये तो हिचकी जाय। यह सुश्रुत में लिखा है १८ अथवा बिजौरे का रस, शहद और कालानोन मिलाकर खाय तो हिचकी निश्चय दूर हो। यह वैद्यसर्वस्व में लिखा है १९ अथवा कैथ और आमलेका रस शहद मिलाकर पिये तो

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

हिचकी और श्वास जाय। यह काशीनाथपद्धति में लिखा है २० अथवा इलायची १ दालचीनी २ नागकेसर ३ कालीमिरच ४ पीपरि ५ सोंठि ६ ये वृद्धिक्रमसे ले महीन पीस घृत मिलावे और इन सबसे दूनी मिश्री मिलाय २॥ टंक जलसे ले तो हिचकी, अजीर्ण, बवासीर, श्वास और खांसी इन सब रोगों को दूर करे। यह एलादिचूर्ण वृन्द में लिखा है २१--इति हिचकीरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न सम्पूर्ण॥

अथ श्वासरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न॥

जिन वस्तुओंके खानेसे हिचकी पैदा हो उन्हीं वस्तुओंके खानेसे श्वासरोग होता है। वह ५ प्रकारका है। महाश्वास १ ऊर्ध्वश्वास २ छिन्नश्वास ३ तमकश्वास ४ क्षुद्रश्वास ५॥

अथ श्वासरोग का पूर्वरूप॥

हृदय दूखे, शूल हो, अफरा हो, मल-मूत्र न उतरे, मुखमें रसोंका स्वाद न आवे और कनपटी दूखे तो जानिये कि श्वासरोग होगा॥

अथ श्वासरोग की उत्पत्ति॥

सब शरीरमें फिरती वायु कफसे मिल सब नसों को रोकती है तब वह वायु फिरने से बन्द होकर श्वासको प्रकट करती है॥

अथ महाश्वास का लक्षण॥

जब मनुष्य श्वासयुक्त हो थकके ऊँचेप्रकार मस्त बैल के समान निरन्तर श्वास ले और जिसका ज्ञान नष्ट होगया हो, नेत्र तरतराट करें, श्वासलेते में मुख और नेत्र फट जायँ, मुखसे बोला न जाय, दुर्बल होजाय और श्वास का शब्द दूरतक सुनाई दे ये लक्षण हों तो महाश्वास जानिये। इस श्वासवाला तत्काल मरजाय १॥

अथ ऊर्ध्वश्वास का लक्षण॥

ऊर्ध्वश्वास ले नीचे आवे नहीं, कफसे मुख भरजाय, ऊँची

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दृष्टि हो, नेत्र तरतराट करें और इस श्वाससे दुःखी होकर नेत्र भ्रमता, मोह, ग्लानि हो ये लक्षण हों तो ऊर्ध्वश्वास जानिये। यह मनुष्य को मारडालता है २ ॥

अथ छिन्नश्वास का लक्षण ॥

सर्वशरीरके पांचों पवनोंसे पीड़ित मनुष्य टूटा श्वास ले अथवा दुःखित होकर श्वास नहीं ले और जिसके मर्मस्थान टूटकर अफरा होआवे तथा प्रस्वेद होकर नेत्र फटजायँ और श्वास लेते समय नेत्र लाल होजायँ, चैतन्यता जाती रहे, शरीर का वर्ण और का और होजाय वह प्राणी तत्काल मरजाय ३ ॥

अथ तमकश्वास का लक्षण ॥

शरीरकी पवन उलटी चले, नासिकाको रोंक दे तब कन्धे और शिर पकड़कर कफको प्रकट करता हुआ पवन कण्ठमें जाकर घुरघुर शब्द करे फिर प्राणनाशक श्वास प्रकट करे तब मनुष्य श्वासके वेगसे ग्लानिको प्राप्त होता है और जब उसकी अग्नि रुकजाती है तब वह मनुष्य श्वास लेते समय मोहको प्राप्त होता है तथा कफ भी छूटता है जब दुःखी होकर मुखसे कफ निकल जाय तब वह दो एक घड़ी सुख पाता है और उससे बोलाभी तभी जाता है और जब वह सोवे तब श्वास होआवे, नींद आवे नहीं, बैठेही चैन पड़े और गर्मी हुआवे, नेत्रोंपर सूजन हो, ललाट में पसीना आवे, मुख सूखे, धौंकनी के सदृश श्वास ले, मेहकी पवन और शीतल वस्तु से तथा मधुरखाने से बढ़े ये लक्षण हों तो तमकश्वासका लक्षण जानिये। यह श्वास याप्य है ४ ॥

अथ क्षुद्रश्वास का लक्षण ॥

रूखी वस्तु खानेसे, खेदसे, कोठेकी पवनसे क्षुद्रश्वास प्रकट होता है। वह मनुष्यको न तो बहुत दुःख देता है और न खान-पानकी गति रोकता है और इन्द्रियोंको भी पीड़ा नहीं करता है ये लक्षण क्षुद्रश्वासके जानिये ५ यह क्षुद्रश्वास बलवान् पुरुष के

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

हो तो साध्य है और तमकश्वास कष्टसाध्य है तथा महाश्वास और छिन्नश्वास ये प्राणके हरनेवाले हैं ॥

अथ श्वासरोग का यत्न ॥

नोनमें तेल डाल सुहाता सुहाता हृदयको सेंकें तो श्वास दबे १ अथवा अदरकका रस शहद में मिलाय चाटे तो श्वास जाय २ अथवा अदरक का रस और शहद दोनों आधसेर मिलाय १। टके भर नित्य खाय तो श्वास, कास जाय ३ अथवा दशमूल, कचूर, रास्ना, पीपरि, सोंठि, पुष्करमूल, भारंगी, काकड़ासिंगी, गिलोय, चित्रक ये सब बराबर ले २॥ टंकभर का नित्य काढ़ा ले तो कास, श्वास, पसुलीका शूल निश्चय जाय ४ अथवा पेठे की जड़का चूर्ण १ टंक गर्म जलसे ले तो श्वास, कास निश्चय जाय ५ अथवा हल्दी, कालीमिरच, किशमिश, पीपरि, रास्ना, कचूर इन सबको बराबर ले महीन पीस १ टंक गुड़ या तेलके साथ खाय तो श्वास का रोग निश्चय जाय ६ अथवा पावभर भारंगी को औटाके रस निकाले उसमें १०० टकेभर गुड़की चाशनी करे उस चाशनीके पकनेमें हड़की छालका पावभर चूर्ण डाले फिर चाशनी ठंढी हो तब ६ टकेभर शहद डाले और सोंठि, तज, पीपरि, पत्रज, नागकेसर ये सवा सवा टंक, जवाखार २ टंक महीन पीस उस चाशनीमें मिलावे फिर १ पैसेभर नित्य खाय तो श्वास, खांसी, बवासीर, गोला, क्षयी, उदरके रोग ये सब जायँ। यह भारंगी का अवलेह है। ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं ७ अथवा पारा २॥ टंक, शोधी गन्धक २॥ टंक, शोधा सिंगीमुहरा २॥ टंक, भुना सुहागा २॥ टंक, मैनसिल २॥ टंक, कालीमिरच २॥ टंक, सोंठि २॥ टंक, पीपरि २॥ टंक पहिले पारे और गन्धककी कजली करे और उसमें ये औषधें मिलावे फिर अदरक के रसकी एक पुट देके १ रत्ती नित्य खाय तो श्वास जाय ८—इति श्वासकुठाररस ॥ अथवा धतूरे के बीज १ से बढ़ा-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कर ५ तक ३० दिन खाय तो श्वासरोग जाय ९ अथवा पारा १ भाग, गन्धक आधाभाग इनके बराबर ताम्रेश्वर ले फिर इन तीनों को ग्वार के पट्ठे के रस में खरल करे फिर इसको तांबेकी डिबिया में धर बालुकायन्त्र में १ दिन पचाय सिद्धकर २ रत्ती प्रमाण पानमें रखकर खाय तो श्वासरोग जाय। यह वैद्यविनोद में लिखा है १०–इति सूर्यावर्तरस॥ अथवा काकड़ासिंगी, सोंठि, पीपरि, नागरमोथा, पुष्करमूल, कचूर, कालीमिरच इन सबको बराबर ले और सबकी बराबर मिश्री महीन पीस इस चूर्ण को २॥ टंक प्रमाण गिलोय, अड़ूसा, पीपरि, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठि इनके काढ़े के साथ ले तो श्वासरोग जाय। यह चक्रदत्त में है ११ अथवा पीपरि, पुष्करमूल, हड़की छाल, सोंठि, कचूर, कमलगट्टा इन सबको बराबर ले चूर्णकर इनके बराबर गुड़ में चने प्रमाण गोली बांधकर १ या २ या ३ गोली नित्य खाय तो श्वास जाय १२ अथवा पारा, गन्धक, शोधा सार, सोंठि, कालीमिरच, पत्रज, नागकेसर, नागरमोथा, बायबिड़ंग, सम्हालू, कबीला, पीपलामूल ये सब पारा, गन्धक, सार इन तीनों से दूनी दूनी ले फिर इन सबको महीन पीस जलपीपरि के रस में ३ पुट दे फिर इसकी चने के प्रमाण गोली बांधे। १ गोली नित्य खाय तो श्वास, कास, बवासीर, भगन्दर, हृदय और पसुली का शूल, संग्रहणी, उदररोग, प्रमेहमात्र इन सब रोगों को यह महोदधिरस दूर करता है। यह सर्वसंग्रह में लिखा है १३–इति महोदधिरस॥ अथवा पारा, शोधी गन्धक का सार, सुहागा, रास्ना, बायबिड़ंग, त्रिफला, देवदारु, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, गिलोय, कमलगट्टा, शोधा सिंगीमुहरा पहिले पारे और गन्धक की कजली करे फिर इन सबको बराबर ले महीन पीस कजली में मिलाय शहद से १ तथा २ रत्ती के प्रमाण गोली बांधे। १ गोली नित्य खाय तो श्वास जाय। यह वैद्यरहस्य

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

में लिखा है १४–इति अमृतार्णवरस॥ अथवा पारा और गन्धक बराबर ले इनकी कजलीकर चौराई के रस में ५ दिन खरल करे फिर वज्रमूसी में रखकर बालुकायन्त्र में पकावे १ दिन पीछे इसमें से २ रत्ती पान में खाय तो श्वास और हिचकी दूर हों। यह मेघडम्बररस रुद्रदत्त ग्रन्थमें लिखा है १५॥

इति पञ्चमस्तरङ्गः ५॥

अथ स्वरभेदरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न॥

मनुष्यके बहुत बोलने से, विष आदि के खाने से, उच्चस्वर के पढ़ने से, कण्ठमें किसीप्रकार की चोट लगनेसे कोपको प्राप्त हुए वात, पित्त, कफ कण्ठके स्वर की बहनेवाली नसों में रहकर स्वरभङ्ग को करते हैं। वह स्वरभङ्ग छःप्रकार का है। वात १ पित्त २ कफ ३ सन्निपात ४ शरीर के भंगपने ५ क्षयीरोग ६॥

अथ वात के स्वरभङ्ग का लक्षण॥

जिसके नेत्र, मुख, मल, मूत्र काले हों, टूटे शब्द बोले, गधे कासा शब्द हो तो वातका स्वरभङ्ग जानिये १॥

अथ पित्त के स्वरभङ्ग का लक्षण॥

जिसके नेत्र, मुख, मल, मूत्र पीले हों और बोलने के समय गलेमें दाह हो तो पित्तका स्वरभङ्ग जानिये २॥

अथ कफ के स्वरभङ्ग का लक्षण॥

सदाही कण्ठ कफसे रुका रहे और मन्द मन्द आधा बोला जाय, रात्रिमें बढ़जाय तो कफका स्वरभङ्ग जानिये ३॥

अथ सन्निपात के स्वरभङ्ग का लक्षण॥

जिसमें वात, पित्त, कफके सब लक्षण मिलें उसको सन्निपात का स्वरभङ्ग कहिये। यह असाध्य है ४॥

अथ क्षयीरोग के स्वरभङ्ग का लक्षण॥

बोलते हुए मुखमें धुआं निकले तो क्षयीरोग का स्वरभङ्ग जानिये। यहभी असाध्य है ५॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ शरीर के मोटेपन से उपजे स्वरभङ्ग का लक्षण ॥

गले में बोले, शब्द सुनाई न दे और देरसे बोले, गला जले, तृषा अधिक लगे जिसके ये लक्षण हों उसके शरीरके मोटेपनका स्वरभङ्ग जानिये। यहभी अच्छा नहीं है ६ ॥

अथ स्वरभङ्ग का यत्न ॥

वातका स्वरभङ्ग हो तो नोन, तेलकी वस्तु खानेसे जाय १ पित्तका स्वरभङ्ग घृत और शहदके खाने से जाय २ कफ का स्वरभङ्ग खारी, कड़ुवी वस्तु और शहद आदिके खानेसे जाय ३ अथवा गलेका, तालूका, मसूढ़े का रुधिर निकालने से स्वरभङ्ग जाय ४ अथवा गर्म जलके पीनेसे वातका स्वरभङ्ग जाय ५ अथवा घृत, गुड़के खाने से वातका स्वरभङ्ग जाय ६ गर्म दूध के पीने से पित्त का स्वरभङ्ग जाय ७ अथवा कटेली १०० टके भर ले और इससे आधा पीपलामूल और इससे आधी चित्रक तथा चित्रक की बराबर दशमूल ले इनको एक मन पानी में औटावे जब ४ सेर पानी रह जाय तब छानकर उस पानी में १०० टकेभर पुरानेगुड़की पतली चाशनी करे फिर उस चाशनी में ये सब औषधें महीन पीस डाले और १ सेर शहद डाले फिर २। टके तथा ३। भर नित्य खाय तो सब प्रकारका स्वरभङ्ग, श्वास, कास, मन्दाग्नि, गलेका रोग, अफरा, मूत्रकृच्छ्र इन सब रोगों को यह दूर करता है। यह कटेली का अवलेह भावप्रकाश में लिखा है ८ अथवा अजमोद, हल्दी, चित्रक, जवाखार, आमला ये सब बराबर ले महीन पीस २ टंक घृत और शहद के साथ ले तो भयंकर भी स्वरभङ्ग जाय ९ अथवा हड़की छाल, बच, पीपरि महीन पीस गर्म जलसे ले तो मेद के क्षयीरोग का स्वरभङ्ग जाय। यह वैद्यविनोद में लिखा है १० अथवा बहेड़े की छाल, पीपरि, सैंधवनोन, आमला इन सबको महीन पीस गौके मट्ठेमें अथवा गोमूत्रमें ले तो स्वरभङ्ग जाय। यह वृन्दमें लिखा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

है ११ अथवा जायफल, पीपरि, खील, बिजौरे की केसर ये सब महीन पीस शहद के साथ चाटे तो स्वरभङ्ग जाय और स्वर अत्यन्त सुन्दर सूक्ष्म होजाय। यह जायफल का अवलेह सर्व-संग्रह में लिखा है १२ अथवा कुलींजन मुखमें रखकर उसका रस पिये तो स्वरभङ्ग जाय १३ अथवा चव्य, अमलबेत, सौंठि, कालीमिरच, पीपरि, तन्तरीक, पत्रज, तज, सफ़ेद ज़ीरा, चित्रक, इलायची इन सबको बराबर ले महीन पीस २ टंक पुराने त्रि-वर्षी गुड़में ले तो स्वरभङ्ग, पीनस, कफरोग, अरुचि ये सब जायँ १४ इति चव्यादि चूर्ण॥ अथवा पारे की राख, तामेश्वर, सार इन तीनों को बराबर ले फिर इनमें कटेली के फलों के रस की २१ पुट दे फिर उसकी गोली मूंग प्रमाण बांधे। १ गोली मुखमें रक्खे तो स्वरभङ्ग दूर हो। यह गोरखनाथजी की गोली है १५ अथवा ब्राह्मी, बच, हड़ की छाल, अड़ूसा, पीपरि ये सब बराबर ले महीन पीस २ टंक शहदके साथ १४ दिन ले तो स्वरभङ्ग जाय और उसका स्वर किन्नर का सा हो। यह यत्न वैद्यरहस्यमें लिखा है १६—इति स्वरभङ्ग रोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न सम्पूर्ण॥

अथ अरोचकरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न॥

शोच, क्रोध, मोह, अतिलोभ, डरने से और चित्त के रोंकने-वाले भोजन तथा बुरे प्रकार के रूप देखने से और बुरी गन्ध के सूंघने से मनुष्य के वात, पित्त, कफ ये तीनों अरुचिनाम रोग को उत्पन्न करते हैं। वह अरुचि पांचप्रकार की है। वात १ पित्त २ कफ ३ सन्निपात ४ शोकादिक ५॥

अथ वात की अरुचि का लक्षण॥

खट्टा, कषैला मुख हो, हृदय में शूल हो, भोजन से रुचि जाती रहे तो वात की अरुचि जानिये १॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ पित्त की अरुचि का लक्षण ॥

कडुआ, खट्टा, गर्म, घिरस, नमकीन जिसके मुख का स्वाद हो, शरीर में दाह और मुख में शोष हो तो पित्तकी अरुचि जानिये २ ॥

अथ कफ की अरुचि का लक्षण ॥

मुख मीठा हो, अरुचि हो, शरीर भारी रहे, बद्धकोष्ठ हो, लार गिरे, शरीर में स्थान स्थान पर पीड़ा हो तो कफ की अरुचि जानिये ३ ये सब लक्षण मिले हों तो सन्निपात की अरुचि जानिये ४ ॥

अथ शोकादिक की अरुचि का लक्षण ॥

पेटमें क्षुधा रहे और मुख से खाया न जाय तो शोककी अरुचि जानिये ५ ॥

अथ अरुचि का स्वरूप ॥

मुखमें अन्नका ग्रास लेने से कुछ भी स्वाद न आवे तो जानिये कि अरुचि का रोग है ॥

अथ भक्तद्वेष का लक्षण ॥

भोजनका चिन्तन करे अथवा भोजनके देखने से अन्न रुचे नहीं तो उसको भक्तद्वेष जानिये। यह माधवी में लिखा है ॥

अथ भक्तद्वेष का यत्न ॥

भोजनके पहिले सैंधवनोन और अदरक खाय तो क्षुधा लगे और कण्ठ, जीभ शुद्ध होजाय १ और शहद को अदरक का रस मिलाके पिये तो अरुचि, श्वास, कास जाय २ अथवा पक्की इमली का शर्बत मिश्री डालके करे उसमें इलायची, लवङ्ग, भीमसेनी कपूरका प्रतिवास दे अर्थात् ऊपरसे भुरकी छोड़दे फिर उस शर्बत को पिये अथवा कुल्ले करे तो अरुचि जाय ३ अथवा राई, ज़ीरा, भुनी हींग, सोंठि, सैंधवनोन इन सबको महीन पीस अनुमान मुवाफ़िक़ गौके मट्ठे में डालकर पिये तो अरुचि जाय और क्षुधा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बढ़े ४ अथवा गौके दही को वस्त्रमें छानके उसमें मिश्री, इलायची, भीमसेनीकपूर *, लवङ्ग, कालीमिरच अनुमान मुवाफ़िक़ अर्थात् समभाग महीन पीस मिलाके पिये तो अरुचि तत्काल जाय ५—इति शिखरणीकी क्रिया ॥ अथवा अनारदाना २ टके भर, मिश्री ८ टंक, सोंठि १ टंक, कालीमिरच १। टंक, पीपरि १। टंक, तज २॥ टंक, पत्रज २॥ टंक, नागकेसर २॥ टंक इन सबको महीन पीस २॥ टंक प्रमाण जल से नित्य ले तो अरुचि जाय। इति दाड़िमादिचूर्ण ६ अथवा लवङ्ग, कङ्कोल, मिरच, खस, चन्दन, तगर, कमलगट्टे, कालाज़ीरा, नेत्रबाला, अगर, नागकेसर, पीपरि, सोंठि, चित्रक, इलायची, भीमसेनीकपूर, जायफल, बंशलोचन ये सब बराबर ले और इनसे आधी मिश्री ले फिर महीन पीस १ टंक नित्य जलके साथ लें तो अरुचि, मन्दाग्नि, क्षीणता, बद्धकोष्ठ, खांसी, हिचकी, राजरोग, संग्रहणी, अतीसार, प्रमेह इन सब रोगों को यह लवङ्गादिचूर्ण दूर करता है। यह सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं ७ अथवा बंशलोचन, बड़ी इलायची के दाने, अनारदाना, ज़ीरा ये सब धेले धेले भर ले और पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठि, कालीमिरच, अजमोद, तन्तरीक, अमलबेत, असगन्ध, अजवाइन, कैथकी गिरी ये भी धेले धेले भर और मिश्री ४। टकेभर ले इन सबको महीन पीस २॥ टंक प्रतिदिन जलके साथ ले तो अरुचि, श्वास, खांसी, शूल, वमन, रक्तपित्त इन सब रोगों को यह दूर करता है—यह सारसंग्रहमें लिखा है— इति बृहत्एलादिकचूर्ण ॥ अथवा जवाखार, सज्जी, भुना सुहागा, पांचोंनोन, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, त्रिफला, सार, भीमसेनीकपूर, लवङ्ग, चव्य, चित्रक, अनारदाना, तन्तरीक, अदरक ये सब बराबर ले महीन पीस अजवाइन के अर्ककी ३ पुट दे फिर नींबू के रसकी ५ पुट

* जहां पर कपूर छोड़े तो शुद्ध करके औषध में मिलावे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दे तथा अमलबेत के रसकी ३ पुट दे फिर इस रसकी चने प्रमाण गोली बांधे। १ गोली नित्य खाय तो अरुचि, मन्दाग्नि, प्रमेह, खांसी और कफके रोगों को नाना अनोपान से यह अग्निकुमाररस दूर करता है ९—इति अग्निकुमाररस ॥

अथ छर्दिरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

बहुत चिकनी और दुर्गन्धित वस्तु खाने से, पेटमें कृमि के पड़ने से, खेद करनेसे, भयसे, अजीर्ण से, आमके दोषसे, तृषा लगनेसे, दुर्गन्धि की वस्तु देखनेसे, स्त्री के गर्भ रहनेसे, अति शीघ्र भोजन करने से वात, पित्त, कफ दुष्ट होकर अङ्गों में पीड़ा करके मुख के द्वारा सब खाया पिया निकाल देते हैं इसको मनुष्य छर्दि कहते हैं। वह छर्दि पांचप्रकारकी है। वात १ पित्त २ कफ ३ सन्निपात ४ सूगली वस्तु आदि देखनेकी ५ ॥

अथ छर्दि का पूर्वरूप ॥

हृदयसे खारी और खट्टा खट्टा प्रथमही गिरे और डकार नहीं आवे, लार गिरने लगे, खारी मुख होजाय, अन्नपान के ऊपरसे रुचि जाती रहे तब जानना कि वमन होगा ॥

अथ वात की छर्दि का लक्षण ॥

हृदय और पसुली में पीड़ा हो, मुखशोष हो, मस्तक और नाभि दूखे, श्वास और स्वरभेद हो, डकार का शब्द ऊंचा हो, वमनमें झाग आवे, वमन का रंग काला और कषैला हो और बहुत वेग से वमन थोड़ा हो, दुःख बहुत पावे ये लक्षण वातकी छर्दिके जानिये १ ॥

अथ पित्त की छर्दि का लक्षण ॥

मूर्च्छा, तृषा, मुखशोष हो, मस्तक गर्म रहे, तालू और नेत्रों में गर्मी रहे, अँधेरा और घुमनी आवे और गर्म, हरा, लाल वमन करे तो पित्तकी छर्दिका लक्षण जानिये २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ कफ की छर्दि का लक्षण ॥

तन्द्रा और मुख मीठा हो, कफ डाले, निद्रा आवे, भोजन में अरुचि हो, शरीर भारी रहे, चिकनी, मीठी, ठंढी और कफयुक्त छर्दि हो, रोमाञ्च हों ये लक्षण हों तो कफ की छर्दि जानिये ३ ॥

अथ सन्निपात की छर्दि का लक्षण ॥

शूल हो, अन्न पचे नहीं, अरुचि, दाह, तृषा, श्वास, प्रमेह ये सब सदैव अधिक रहें और सलोना, खट्टा, नीला, ठंढा, गर्म लार वमन करे तो सन्निपात की छर्दि जानिये ४ ॥

अथ सूगली वस्तु के देखने से उपजी छर्दि का लक्षण ॥

उत्क्लेद होकर छर्दि करने लगजाय ५ ॥

अथ छर्दिरोग का यत्न ॥

धनियां, सोंठि, दशमूल इनका काढ़ा ले तो वात की छर्दि जाय १ अथवा घृत में सैंधवनोन डालकर पिये तो वातकी छर्दि जाय २ अथवा मूंग, आमला इन दोनों को औटाय रस निकाल घृत और सैंधवनोन डाल पिये तो वातकी छर्दि जाय ३ अथवा उरद, मूंग, मसूर, यव इनके आटे का रवाकर उसमें शहद डाल कर पिये तो पित्तकी छर्दि जाय ४ अथवा आमले के रस में चन्दन और शहद मिलाके पिये तो पित्तकी छर्दि जाय ५ अथवा गिलोय, नींबकी छाल, पटोल अर्थात् परवरकेपत्ते, त्रिफला इनका काढ़ाकर शहद डाल पिये तो पित्तकी छर्दि जाय ६ अथवा पित्तपापड़े के क्वाथ में शहद डाल पिये तो पित्तकी छर्दि जाय ७ अथवा मक्खीकी बीट, मिश्री, चन्दन, शहद मिलाके चाटे तो पित्तकी छर्दि जाय ८ अथवा खीलों का सत्तू घृत, मिश्री, शहद मिलाय खाय तो पित्तकी छर्दि जाय ९ अथवा मसूर का सत्तू मिश्री मिलाय खाय तो पित्तकी छर्दि जाय १० अथवा अनार के रस में शहद मिलाय पिये तो पित्तकी छर्दि जाय ११ अथवा चावल के पानी में शहद मिलाय पिये तो पित्तकी छर्दि जाय १२ अथवा इला-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

यची, नागरमोथा, नागकेसर, चावल की खील, गौरीसर, सफ़ेद चन्दन, बहुफली, बेरकी मींगी, लवङ्ग, पीपरि इन सबको बराबर ले महीन पीस १। टंक तथा २॥ टंक भर शहद से चाटे तो त्रिदोष की छर्दि जाय १३ अथवा पीपरि की छाल को जलाय पानी में बुझाय वह पानी पिये तो छर्दि जाय १४ अथवा बेर की मींगी, आमले की मींगी, पीपरि, मक्खी की बीट इनका काढ़ा कर उसमें शहद मिश्री मिलाय पिये तो छर्दि जाय। ये सब यत्न वैद्यविनोद में लिखे हैं १५ अथवा जामुन और आम के पत्ते पानी में औटाय उस पानी में खील का आटा डाल शहद मिलाय पिये तो भयङ्कर भी छर्दि जाय १६ अथवा सूगली वस्तु से उपजी छर्दि अच्छी वस्तुके दिखाने से जाय १७ और आमसे उपजी छर्दि लंघन करनेसे जाय। ये यत्न भावप्रकाश में हैं १८ अथवा केसर १ माशे, इलायची २ माशे, शिंगरफ़ ३ माशे इनको शहद से चाटे तो छर्दि जाय १९—इति छर्दिरोगकी उत्पत्ति, लक्षण और यत्न सम्पूर्ण॥

अथ तृषारोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न॥

भय से, खेद से, निर्बलता से बढ़ा पित्त वात से मिल तालू में जाकर रोग की उत्पत्ति करता है और जलकी लेजानेवाली नसोंको रोंककर वात, पित्त, कफ ये तीनों ७ प्रकार की तृषा को करते हैं। वात १ पित्त २ कफ ३ शस्त्रादिक के चोट लगने ४ निर्बलता ५ आम ६ भोजन करनेकी ७॥

अथ तृषारोग का स्वरूप॥

वारंवार जल पिये और तृप्ति न हो, पानी पीने की मन में इच्छाही बनी रहे तब जानिये कि तृषारोग है॥

अथ वात की तृषा का लक्षण॥

मुख उतर जाय, कनपटी और शिरमें पीड़ा होआवे, नासिका रुक जाय, मुख से रसका स्वाद जाता रहे, ठंढा पानीपीनेसे तृषा बढ़े तब जानिये कि वातकी तृषा है १॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ पित्त की तृषा का लक्षण ॥

मूर्च्छा हो, भोजन प्यारा लगे नहीं, दाह हो, शरीर में ताप हो और मल, मूत्र, नेत्र पीले हों ये लक्षण पित्त की तृषा के जानिये २ ॥

अथ कफ की तृषा के लक्षण ॥

जठराग्निको कफ रोंकता है तब वह अग्नि की गर्मी जलकी लेजानेवाली नसोंको सुखाय कफकी तृषाको उपजाती है तब मनुष्य इस तृषासे पीड़ित होकर नींद और शरीरके भारीपने को प्राप्त होता है और मुख मीठा और शरीर सूखता जाय तब जानिये कि इसके कफकी तृषा है ३ ॥

अथ शस्त्रादिक की चोट से उपजी तृषा का लक्षण ॥

शस्त्रादिक के लगने से, शरीर का रुधिर निकालने से अति पीड़ा होतीहै उससे तृषा लगती है ४ ॥

अथ क्षीणता की तृषा के लक्षण ॥

हृदय दूखे, कम्प हो, मुख सूखे, शरीर में शून्यता हो, तृषा बहुत लगे, पीते पीते तृप्ति न हो तब जानो कि क्षीणता की तृषा है ५ तथा ऐसे ही लक्षण आमकी तृषाकेभी जानिये ६ ॥

अथ भोजन उपरान्त तृषा लगे उसका लक्षण ॥

बहुत चिकना, खट्टा, नमकीन, भारी अन्न खाया हो तो तत्काल तृषा लगती है ६ ॥

अथ तृषा का उपद्रव ॥

मुख का स्वर बैठजाय तथा कण्ठ, गला, तालू सूखे और ज्वर, मोह, श्वास, खांसी ये हों तो वह तृषावाला मरजाय ॥

अथ तृषारोग का यत्न ॥

वात की तृषावाले को गर्म अन्न और अच्छा जल दे तो तृषा जाय १ अथवा दही और गुड़ मिलाकर खाय तो वात की तृषा जाय २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ पित्त की तृषा का यत्न ॥

सोने, रूपे का बुझाया पानी पिये तो पित्त की तृषा जाय ३ अथवा मिश्री के ठंढे शर्बत से पित्त की तृषा जाय ४ अथवा धनियां को रात्रि में भिजोकर प्रातःकाल घोट मिश्री मिलाकर पिये तो पित्त की तृषा जाय ५ अथवा अनार के शर्बत में मिश्री मिलाकर पिये तो पित्त की तृषा जाय ६ अथवा शीतलस्थान में रहने और भीगा वस्त्र पहिरने से पित्त की तृषा जाय ७ अथवा कपूर, चन्दन, अगर ये लगाने से पित्त की तृषा जाय ८ ॥

अथ कफ की तृषा का यत्न ॥

तीखी, कड़ुवी, गर्म वस्तु खानेसे कफ की तृषा जाती है ९ अथवा ज़ीरा, सौंठि, कालानोन इनका चूर्ण जल से ले तो कफ की तृषा जाय १० अथवा सुन्दर मद्य के पीने से कफ की तृषा जाय ११ ॥

अथ क्षीणता की तृषा का यत्न ॥

सांठे के रस से तृषा दूर होती है १२ अथवा बड़का अंकुर, मुलहठी, खील, कमलगट्टा इनको महीन पीस गोली कर मुख में रक्खे तो तृषा जाय १३ अथवा सेमर के गोंदको मुख में रक्खे तो तृषा जाय १४ अथवा बिजौरे की जड़, कैथ, अनार की जड़, सफ़ेदचन्दन, पठानीलोध की जड़ इनको जल में महीन पीस शिर में लेप करे तो तृषा, दाह, शोष ये सब जायँ १५ ॥

अथ शस्त्रप्रहार से उपजी तृषा का यत्न ॥

बकरे का रुधिर पीने से यह तृषा जाय १६ अथवा बकरे के शोरुवे में शहद मिलाकर खाय तो शस्त्रप्रहार की तृषा जाय १७ अथवा खीर में मिश्री मिलाकर खाय तो यह तृषा जाय १८ ॥

अथ आम की तृषा का यत्न ॥

खुरासानीबच और बेल के काढ़े से आम की तृषा जाय १९ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ दुर्बल मनुष्य की तृषा का यत्न ॥

दूध के पीने से इसकी तृषा जाय २० तृषा से दुःखित हो पुरुष मोह को प्राप्त होकर प्राण छोड़देता है इससे मनुष्य जलकी तृषा को न रोंके थोड़ा थोड़ा सदैव पिये। ये यत्न वैद्यविनोद और भावप्रकाशमें लिखे हैं—इति तृषारोगकी उत्पत्ति,लक्षण और यत्न

अथ मूर्च्छा, मोह, भ्रम, तन्द्रा, निद्रा, संन्यासरोग के उत्पत्ति, लक्षण, यत्न ॥

क्षीण पुरुष के, बहुत कुपथ्य करनेवाले के, मल-मूत्र रोंकने से, चोट लगने से पुरुष की बाहरवाली जो नेत्र, कर्ण आदि इन्द्रिय हैं उनमें वात, पित्त, कफ घुसकर संज्ञा करनेवाली नसों को तत्काल अन्धकार प्राप्त करते हैं तब मनुष्य को काष्ठ की भांति पृथ्वी पर डाल देते हैं उसके कुछ सुख दुःख का ज्ञान नहीं रहता है उसको वैद्य मोह और मूर्च्छा कहते हैं वह मूर्च्छा छः प्रकारकी है। वात १ पित्त २ कफ ३ रुधिर ४ मद्य ५ विष ६ फिर उसी मूर्च्छा में पित्त होता है वह मुख्य और प्रधान है॥

अथ मूर्च्छा का सामान्य स्वरूप ॥

कुपथ्य के सेवन करनेवाले और हीनपराक्रम, क्षीण, मद्यादिक के पीनेवाले पुरुष के अज्ञान का हेतु तमोगुण पित्त बढ़कर ज्ञानरूप सतोगुण और रजोगुण को आच्छादन करे और दशों इन्द्रियों के स्थानमें रहनेवाले वात, पित्त, कफ ज्ञान की करनेवाली नसों को आच्छादन कर सुख, दुःख और प्राणका हरनेवाला ऐसा अज्ञान कारण जो तमोगुण सो बढ़कर वेगसे मनुष्य को काष्ठ की भांति पृथ्वीपर डालदेता है उसको वैद्य मूर्च्छा कहते हैं २॥

अथ मूर्च्छा का पूर्वरूप ॥

हृदय दूखे, जँभाई आवे, मन में ग्लानि हो, संज्ञा घटजाय तब जानिये कि इस पुरुष के मूर्च्छा का रोग होगा॥

अथ वात की मूर्च्छा का लक्षण ॥

काला और लाल दीखकर फिर अन्धकार में प्रवेश होकर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

ज्ञान हो तदनन्तर शरीर कांपे, अङ्ग में हड़फूटन हो, हृदय दूखे, शरीर कृश होजाय, लाल और काली छाया दीखे ये लक्षण जिसके हों उसके वायु की मूर्च्छा जानिये १॥

अथ पित्त की मूर्च्छा का लक्षण॥

आकाश जिसको लाल, हरा, पीला दीखे फिर मूर्च्छा होकर पसीना आवे फिर ज्ञान होकर तृषा लगे, शरीर ठंढा प्रस्वेद से युक्त हो और लाल, पीले जिसके नेत्र हों, मुख से टूटे अक्षर निकलें, शुद्ध बोला न जाय, शरीर की कान्ति पीली हो जाय तो पित्त की मूर्च्छा जानिये २॥

अथ कफ की मूर्च्छा का लक्षण॥

मेघकी घटायुक्त आकाशसा जिसको दीखे फिर उसको मूर्च्छा आवे और देरमें ज्ञान हो तथा शरीर ठंढे पसीनेसे भरजाय और लार बहुत गिरे तो कफ की मूर्च्छा जानिये ३ और सब लक्षण मिले हों तो सन्निपात की मूर्च्छा जानिये। यह मूर्च्छा मृगी के तुल्य है सूगली वस्तु देखे विनाही होती है॥

अथ रुधिर की मूर्च्छा का लक्षण॥

मनुष्यको रुधिर की दुर्गन्ध आकर पृथ्वी और आकाश अन्धकारयुक्त दीखे तथा सर्वत्र रुधिर की बास आवे, निश्चल दृष्टि हो, श्वास अच्छीप्रकार न आवे फिर मूर्च्छा हो तो रुधिर की मूर्च्छा जानिये। इसीप्रकार चम्पे के फूल आदि के सूंघने से भी मूर्च्छा होती है यह इसका स्वभाव है॥

अथ मद्य की मूर्च्छा का लक्षण॥

अधिक मद्य पीकर मनुष्य बहुत बके और पीछे से सोजाय फिर संज्ञा जाती रहे तथा पृथ्वी पर हाथ पैर पटके, जबतक शरीर में मद्य का अमल रहे शरीर कांपे, बहुत सोवे, प्यास अधिक लगे ये लक्षण मद्य की मूर्च्छा के जानिये॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ विष की मूर्च्छा का लक्षण ॥

जिसने विष खाया हो उसका शरीर कांपे और नींद बहुत आवे, संज्ञा जाती रहे, मुख काला पड़ जाय, अतीसार हो, भोजन में रुचि जाती रहे ये लक्षण विष की मूर्च्छाकेजानिये ७ तमोगुण और पित्तकी आधिक्यता से मूर्च्छा होती है ॥

अथ भ्रम का लक्षण ॥

रजोगुण और वात-पित्त जब मिलते हैं तब भ्रम होता है॥

अथ तन्द्रा का लक्षण ॥

तमोगुण और वात-कफ जब मिलते हैं तब तन्द्रा होती है और आधे नेत्र खुले रहते हैं ॥

अथ निद्रा का लक्षण ॥

तमोगुण और कफ मिलने से मनुष्य का चित्त खेदयुक्त होता है और दशों इन्द्रियां भी खेदयुक्त होकर अपने अपने विषय को ग्रहण नहीं करें तब पुरुष सोता है ॥

अथ संन्यास का लक्षण ॥

हृदय में रहनेवाले वात, पित्त, कफ तीनों दोषों से वाणी, देह, मन की चेष्टा को ग्रहणकर निर्बल पुरुषको काष्ठ की भांति मूर्च्छित करते हैं उसको संन्यास कहिये ॥

अथ मूर्च्छा का यत्न ॥

तिल आदि के सेंकने से वात की मूर्च्छा जाय १ ॥

अथ पित्त की मूर्च्छा का यत्न ॥

शीतल शर्बतमात्रसे पित्त की मूर्च्छा जाय २ चमत्कारी मणि के धारणसे मूर्च्छा जाय ३ कपूर, चन्दन आदि शीतल वस्तु के लेपसे मूर्च्छा जाय ४ अथवा बेर की मींगी, शीतलचीनी, खस, नागकेसर ये चारों ५ टंक ले फिर शीतल जल में भिगोय शर्बत कर इसमें शहद मिश्री मिलाय पिये तो मूर्च्छा जाय ५ अथवा मीठे अनार के शर्बत में मिश्री मिलाकर पिये तो मूर्च्छा जाय ६

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथवा किशमिश के शर्बत में मिश्री मिलाकर पिये तो मूर्च्छा जाय ७ अथवा साबुन जल में घोलकर अञ्जन करे तो मूर्च्छा जाय ८ अथवा सिरस के बीज, पीपरि, कालीमिरच, सेंधानोन ये सब गोमूत्र में पीस अञ्जन करे तो मूर्च्छा जाय ९ अथवा मैनसिल, बच, लहसुन इन तीनों को गोमूत्र में पीस अञ्जन करे तो मूर्च्छा जाय १० अथवा मैनसिल, महुआ, सेंधानोन, बच, कालीमिरच ये सब बराबर ले जल में महीन पीस नास दे तो मूर्च्छा जाय ११ ॥

अथ रुधिर की मूर्च्छा का यत्न ॥

सर्व शीतल यत्नों से यह मूर्च्छा जाय १२ ॥

अथ मद्य की मूर्च्छा का यत्न ॥

सर्व शीतल यत्नों से यह भी मूर्च्छा जाती है १३ मद्य की मूर्च्छा में और थोड़ीसी मद्य पिये तो मद्य की मूर्च्छा जाय १४ ॥

अथ विष की मूर्च्छा का यत्न ॥

विष की मूर्च्छावाले को मीडक की अथवा नीलेथोथे की अथवा फिटकरी की या गर्मपानी, पीपरिआदि की किसीप्रकार वमन कराने से विष की मूर्च्छा जाय १५ अथवा पीपरि, मारा पारा, तामेश्वर, खस, नागकेसर ये सब बराबर ले इसमेंसे १ रत्तीके प्रमाण शीतल जल से दे तो सर्वप्रकार की मूर्च्छा जाय १६ ॥

अथ घुमनी का यत्न ॥

धमासे के काढ़ेमें घृत मिलाकर पिये तो घुमनी जाय १७ अथवा आमला, हड़के काढ़े में घृत डालकर पिये तो घुमनी जाय १८ अथवा सोंठि, पीपरि, सौंफ, हड़ की छाल ये सब टके टके भर ले और ६ टकेभर गुड़ लेकर पांच पांच टंक की गोलियां बनावे और एक गोली नित्य खाय तो घुमनी जाय १९ ॥

अथ तन्द्रा का यत्न ॥

सेंधानोन, कपूर, सरसों, मैनसिल, पीपरि, महुआ के फूल

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

इनको घोड़े के झाग से महीन पीस अञ्जन करे तो तन्द्रा जाय और अतिनिद्रा भी दूर होय २० अथवा सहँजने के बीज, सेंधानोन, सरसों, कूट इनको बकरे के मूत में महीन पीस नास दे तो तन्द्रा और अतिनिद्रा दोनों जायँ २१ अथवा कालीमिरचं, सहँजने के बीज, सोंठि, पीपरि ये सब बराबर ले अगस्त के रस में महीन पीस नास दे तो तन्द्रा जाय। ये सब यत्न भावप्रकाशमें लिखे हैं २२ अथवा सोंठि के रस में शहद और मिश्री मिलाकर पिये तो मूर्च्छा जाय २३ अथवा किवांच की फली लगाने से मूर्च्छा जाय २४ इति मूर्च्छा, भ्रम, तन्द्रा, संन्यासरोग के उत्पत्ति, लक्षण और यत्न सम्पूर्ण ॥

इति अमृतसागरनामग्रन्थे षष्ठस्तरङ्गः ६ ॥

अथ मदात्ययरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

जो गुण विषभक्षण में हैं वही मद्य पीने में भी हैं। बुरे प्रकार अत्यन्त कुपथ्य के साथ जो पुरुष बहुत मद्य पिये उसके मदात्यय को आदि ले बहुतसे रोग उत्पन्न होते हैं इसलिये मद्य अच्छेप्रकार से पीनी योग्य है। इसको अच्छेप्रकार पिये तो अमृतकासा गुण करे और बुरे प्रकार पिये तो रोगों को उत्पन्न करती और विषके सदृश मारडालती है इसमें दृष्टान्त है कि जैसे मनुष्य समय पर अच्छे प्रकार प्रमाण का भोजन करता है वह भोजन अमृत के तुल्य गुणदायक है और शरीर को आरोग्य करता है और उसी अन्न को पशु की सदृश थोड़े बहुत का ज्ञान न रखकर खाय तो वही भोजन उबासी को आदिले अनेक रोगों को उपजाता है और तत्काल मारता है ऐसेही मद्य और विष ये दोनों प्राण के हर्त्ता हैं परन्तु इनको युक्तिपूर्वक सेवन करे तो ये दोनों अमृत की तुल्य गुण करते हैं और सर्वरोगमात्र को दूरकर सदैव पुरुष को तरुण रखते हैं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ विधि से मद्यपीने का फल॥

प्रातःसमय शौचादिक कर, स्नान सन्ध्यासे निवृत्त हो २ टके भर रीतिसे मद्य पिये और मध्याह्न समय सचिक्कण भोजन के साथ ४ टकेभर पिये और सायङ्काल पहरभर रात्रिगये भोजन के समय ८ टकेभर मद्य पिये तो यह मद्य अमृत का सा गुण करके क्षुधा को अधिक करती है, रोग को समीप नहीं आनेदेती और अच्छे भोजन के साथ प्रसन्नचित्त होकर पिये तो जैसा मद्य में गुण कहाहै वैसाही गुण करती है। सो वे लिखते हैं॥ काम बढ़ावे, चित्त प्रसन्न रक्खे और तेज, बुद्धि, पराक्रम, स्मृति, हर्ष, सुख, भोजन, निद्रा इन सबको मद्य बढावे और अन्यथा पिये तो मदात्यय को आदिले अनेक रोगों को उत्पन्न करती है। वे भी लिखते हैं॥ बकने लगे, स्मरण जाता रहे, वाणी और शरीरकी चेष्टा विक्षिप्त की सी होजाय, आलस्य आवे नहीं, अनकहने की बातें कहे और काष्ठ के सदृश पड़ा रहे, अगम्यागमन करे, बड़ों को न माने, अभक्ष्य भोजन करे, संज्ञा जाती रहे, गुप्त बात को प्रगट कर दे और रोगों को उपजाकर शरीरकी निर्बलता करे यह अयोग्य रीति से होता है। जैसे भोजन विना किये पिये, बारंबार पियाही करे, क्रोध कर पिये, भयकर पिये, तृषायुक्त होकर पिये, खेदयुक्त हो पिये, मल-मूत्र से वेगयुक्त होकर पिये, बहुत खटाई के साथ पिये, निर्बलता में पिये, किसीप्रकार की गर्मी से पीड़ित होकर पिये तो उस पुरुष के मदात्यय को आदि ले बहुत रोग होते हैं॥

अथ वात के मदात्ययरोग का लक्षण॥

हिचकी और श्वास हो, मस्तक कांपे, पसुली में शूल हो, निद्रा आवे, बहुत बके ये लक्षण हों तो वात का मदात्यय जानिये १॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ पित्त के मदात्यय का लक्षण ॥

तृषा बहुत लगे, दाह और ज्वर हो तथा पसीना, मोह, अतीसार हो, घुमनी आवे, शरीर का हरित वर्ण होजाय तो पित्त के मदात्यय के लक्षण जानिये २ ॥

अथ कफ के मदात्यय का लक्षण ॥

वमन और अरुचि हो, नमकीन और खट्टा अच्छा लगे, तन्द्रा हो, शरीर भारी रहे ये लक्षण हों तो कफ का मदात्यय जानिये ३ और यह लक्षण मिले हों तो सन्निपात का मदात्यय जानिये ४ ॥

अथ परममद का लक्षण ॥

पीनस, मस्तक में दर्द, अङ्गों में पीड़ा हो, शरीर भारी रहे, मुंख का स्वाद जाता रहे, मल-मूत्र रुकजायँ और तन्द्रा, अरुचि, तृषा ये लक्षण हों तो परममद जानिये ५ ॥

अथ पानाजीर्ण का लक्षण ॥

अत्यन्त अफरा, वमन, दाह और अजीर्ण हो ये लक्षण हों तो पानाजीर्ण जानिये ६ ॥

अथ पानविभ्रम का लक्षण ॥

हृदय दूखे, अङ्गों में पीड़ा हो, कफ थूके, मुख से धुआं निकले, मूर्च्छा, ज्वर, वमन और मस्तक में दर्द हो, मिठाई और मद्य में रुचि न हो ये लक्षण हों तो पानविभ्रम जानिये ॥

अथ मदात्यय का असाध्य लक्षण ॥

नीचे का ओष्ठ लटकजाय, शरीर ऊपर से ठंढा लगे और भीतर दाह हो तथा मुख में तेलकी बास आवे, जीभ, ओष्ठ, दांत काले हों और नेत्र नीले, पीले और लाल होजायँ तथा हिचकी, ज्वर, वमन, पसुली में शूल, खांसी, घुमनी ये लक्षण हों तो मदात्यय असाध्य जानिये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ मदात्यय, परममद, पानाजीर्ण, पानविभ्रम आदि का यत्न ॥

दारूकी विधि से निकालेहुए सुन्दर आसवके सेवन से वात का मदात्यय जाय। यहां यह दृष्टान्त है कि अग्निके जलनेवाले को अग्निहीसे तपावे तो अच्छा हो. १ अथवा बिजौरेकी केसर, अमलबेत, मीठा बेर, मीठा अनार, अजवाइन, जीरा, सोंठि इन तीनों को महीन पीस बिजौरादिक के रसकी इनमें पुटदे फिर इस चूर्णको अनुमान मुवाफ़िक़ सुन्दर मद्यमें डालकर विधिपूर्वक पिये अथवा इसमें सेंधानोन मिलावे अथवा सत्तू के साथ मद्य पिये और पुरानी मद्य पिये अथवा कालानोन, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि इनको महीन पीस चूर्णकर अनुमान मुवाफ़िक़ मद्य में मिलाय पिये तो वात का मदात्यय जाय २ अथवा चव्य, कालानोन, भुनी हींग, सोंठि, अजवाइन इनको महीन चूर्णकर मद्यमें मिलाके पिये तो वातका मदात्यय जाय ३ अथवा लवा, तीतर, मुर्ग़े का मांस भक्षण करने से वात का मदात्यय जाय ४ अथवा सर्वगुणसम्पन्न यौवनवती १६ वर्ष की स्त्री से सम्भोग करे तो वात का मदात्यय जाय। यह यत्न भावप्रकाश में लिखा है ५ अथवा किशमिश, अनार, छुहारा, महुआ इनको दारू, मिश्री मिलाके पिये तो वात का मदात्यय जाय ६ अथवा गौका मट्ठा मिश्री मिलाके पिये तो वातका मदात्यय जाय यह सारसंग्रह में लिखा है ७ ॥

अथ पित्त के मदात्यय का यत्न ॥

सर्वशीतल यत्नोंसे पित्तका मदात्यय जाय ८ अथवा शीतल जल में मिश्री और शहद मिलाके पिये तो पित्त का मदात्यय जाय ९ अथवा मीठे अनार के रस में मिश्री मिलाके पिये तो पित्त का मदात्यय जाय १० अथवा ख़रगोश, हरिण, लवा इन का मांस खाय तो पित्त का मदात्यय जाय ११ अथवा बकरे के शोरुवे में सांठी के चावल खाने से पित्त का मदात्यय जाय १२ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ कफ के मदात्यय का यत्न ॥

चन्दन, खस इनके लेप से कफ का मदात्यय जाय १३ अथवा यव, गेहूं का पथ्य खाने से कफ का मदात्यय जाय १४ अथवा वमन और लङ्घन करने से कफ का मदात्यय जाय १५ अथवा कालानोन, ज़ीरा, अमलबेत, तज़, इलायची, काली-मिरच, मिश्री इन सबको महीन पीस जल के साथ ले तो कफ का मदात्यय जाय १६ ॥

अथ सन्निपात के मदात्यय का यत्न ॥

आमलेकें रसमें पारे और गन्धककी १ टंक कजली मिलाके पिये तो सन्निपातका मदात्यय जाय १७ ॥

अथ पानविभ्रम का यत्न ॥

किशमिशके शर्बत में अथवा कैथके शर्बत में अथवा अनार के शर्बत में शहद मिलाके पिये तो पानविभ्रम जाय। यह वृन्द में लिखाहै १८ ॥

अथ धतूरे के फ़ल के मद का यत्न ॥

पेठेके रसमें गुड़ मिलाके पिये तो धतूरे का मद जाय १९ अथवा दूधमें मिश्री डालकर पिये तो धतूरे औरभङ्गकामदजाय २०

अथ भङ्ग के मद का यत्न ॥

कपासकी जड़का रस अथवा बैंगनकी जड़का रस या पतला मट्ठा अथवा घृत या नींबका रस मिश्री के शर्बत में मिलाके पिये तो धतूरे और भङ्ग का मद जाय २१ ॥

अथ विष के मद का यत्न ॥

निंबौलीकी मींगी और नीलाथोथा १ माशा इन दोनों को पीसकर कांजीके पानी में मिलाय पिये तो सर्व विषमात्र का मद जाय। यह यत्न वैद्योपचार ग्रन्थ में है २२–इति मदात्यय, परम-मद, पानाजीर्ण, पानविभ्रम, धतूरा, भङ्ग, विषमद इन सबकी उत्पत्ति, लक्षण और यत्न सम्पूर्ण ॥

In Public Domain, Channal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ दाहरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

दाह ७ प्रकारका है। पित्त का १ दुष्ट रुधिर के बढ़ने का २ शस्त्रादिकसे निकले रुधिर से पूर्णहुए कोष्ठ का ३ मद्यादिक के पीने का ४ तृषा रोंकनेका ५ धातुक्षयका ६ मर्म की चोट लगनेका ७॥

अथ पित्त के दाह का लक्षण ॥

जिसमें पित्तज्वर के सब लक्षण मिलें उसे पित्त का दाह जानिये १ ॥

अथ रुधिर के दुष्टपनेसे उपजे दाह का लक्षण ॥

सब शरीर में दाह लगजाय और सब देह में धुआं सा निकले तथा शरीर की ताम्रकीसी आकृति हो और ताम्र के रंग सदृश नेत्र हों, मुख में रुधिर की सी गन्ध आवे और सब अङ्ग अग्नि की भांति जलें ये लक्षण हों तो दुष्ट रुधिर का दाह जानिये २॥

अथ शस्त्रादिकसे निकले रुधिर से पूर्ण हुए कोष्ठ के दाहका लक्षण ॥

जिसका रुधिरसे कोष्ठ भरजाय और दाह लगजाय तो वह असाध्य रोगी मरजाय ३ ॥

अथ मद्यादिक पीने के दाह का लक्षण ॥

हृदय की पवन पित्त और रुधिर से मिल सब त्वचा में प्राप्त होकर सब शरीरमें भयङ्कर दाह करती है ४ ॥

अथ पित्त रोंकने के दाह का लक्षण ॥

तृषाके रोंकनेसे शरीरका जल और धातु क्षीण होता है और शरीरमें गर्मी बढ़कर शरीर को दग्धकरती है तब उसका चित्त मन्द होता है और गला, तालू सूखकर जीभ को बाहर निकाल कर कांपने लगता है ५ ॥

अथ धातुक्षय के दाह का लक्षण ॥

धातुक्षयके दाहसे मूर्च्छा और तृषा होकर मुखका स्वर बैठ जाय, शरीरकी सामर्थ्य जाती रहे तो यह दाह असाध्य है ६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ मर्म की चोट लगने के दाह का लक्षण ॥

शिरसे पेडू को आदिले मर्मस्थान में चोट लगने से जो दाह उत्पन्न हो वह असाध्य जानिये ७ ॥

अथ दाह का असाध्य लक्षण ॥

शरीर ठंढा होजाय, दाह भीतर हो तो वह मनुष्य मरजाय ॥

अथ दाहका यत्न ॥

१००० बार का अथवा १०० बार का धोया घी शरीर में मर्दन करे तो शरीरका दाह जाय १ अथवा यवके सत्तू में मिश्री मिलाके खाय तो दाह जाय २ अथवा आमले के पानीमें कपड़ा भिजोकर ओढ़े तो दाह जाय ३ अथवा खस और रक्तचन्दन घिसकर शरीर में लेपन करे तो दाह जाय ४ अथवा केले के पत्तों की वा कमलकी पखुरियों की सेजपर सोवे तो दाह जाय ५ अथवा फ़व्वारा चादर आदि जलक्रीड़ा करने से दाह जाय ६ अथवा ख़सख़ाने में रहने से दाह जाता रहे ७ अथवा शीतल जल के पीने से दाह जाता रहे ८ अथवा उपवन आदि शीतल स्थान में रहने से दाह जाता रहे ९ अथवा चन्दन, पित्तपापड़ा, ख़स, कमलगट्टा, धनियां, सौंफ, आमला इनका २ टंक भर का काढ़ा कर उसमें शहद मिश्री मिलाके पिये तो दाह दूर हो। ये सब भावप्रकाशमें लिखे हैं १० ॥

अथ रुधिर बिगड़ने के दाह का यत्न ॥

फ़स्त लगवादे तो बिगड़े रुधिरका दाह दूर हो ११ अथवा पारा, शोधी गन्धक, भीमसेनी कपूर, चन्दन, ख़स, नागरमोथा ये सब बराबर ले पीछे पारे और गन्धक की कजली कर उसमें ये औषध डाले पीछे इसके जल से गोली बांधे। १ गोली मुख में रखकर चूसे तो शरीरके भीतर का दाह जाय। यह दाह के दूरकरनेका रस है १२ अथवा शोधा पारा १ तोला, तामेश्वर १ तोला, अभ्रक १ तोला, शोधी गन्धक १ तोला प्रथम पारे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

और गन्धक की कजली करे फिर ये सब औषध उसमें मिलाय नागरमोथे के रसकी १ पुटदे फिर पीपरि के रसकी १ पुटदे तदनन्तर मीठे अनार के रस की १ पुट दे तथा बड़ के अंकुरों की १ पुट दे फिर चन्दन के रसकी १ पुट दे एवं सहदेई के रस की १ पुट दे पीछे किशमिश के रस की ७ पुटदे छाया में सुखाय चनेप्रमाण गोली बांधे। १ गोली नित्य खाय तो दाह, अम्लपित्त, मूत्रकृच्छ्र, प्रदर, प्रमेह इन सब रोगों को यह चन्द्रकलारस दूर करता है १३—इति दाहरोग॥

अथ उन्मादरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यंत्र॥

विरुद्ध भोजन, अपवित्र भोजन और दुष्ट भोजन से तथा देवता, गुरु, ब्राह्मण, तपस्वी और राजा इनके तिरस्कार से एवं किसी प्रकार के भय और हर्ष से तथा धतूरा, भङ्ग आदि के खाने से भी मनुष्यों का चित्त बिगड़जाता है। वह बिगड़ा हुआ चित्त वात, पित्त, कफ इन तीनों से मिलकर पुरुष को मदयुक्त कर देताहै अर्थात् मनुष्यको गहल में करदेता है उसको लौकिक में हौलादिली कहते हैं। हौलादिलीवात १ पित्त २ कफ ३ सान्निपात ४ मनके दुःख ५ विषखाने ६ आदि छह प्रकारसे होती है॥

अथ उन्माद का स्वरूप॥

क्षीणपुरुष के विरुद्ध भोजन करने के पीछे वात, पित्त, कफ दुष्ट होकर बुद्धि को नष्टकरते हैं फिर उसके हृदय में पीड़ा करके मनके ले चलनेवाली नसों को मोहित करते हैं तब मनुष्य का चित्त डामाडोल होकर थिरनहीं रहता इसको हौलादिली कहतेहैं॥

अथ उन्माद का पूर्वरूप॥

बुद्धि स्थिर न रहे, शरीर का पराक्रम जाता रहे ये लक्षण हों तो जानिये कि पुरुषके उन्माद होगा॥

अथ वात के उन्माद का लक्षण॥

रूखी और ठंढी वस्तु, अधिक खाने, अधिक जुलाब लेने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

और धातु की क्षीणता से वात बढ़ती है फिर वह वात हृदय को बिगाड़कर बुद्धि और स्मरण को तत्काल नष्ट करती है तब मनुष्य विनाही कारण हँसे, गावे, नाचे अथवा हाथ-मुख से बन्दर कीसी चेष्टा करने लगजाय और रोने लगजाय तथा शरीर कठोर और काला, लाल पड़जाय और भोजन पचने के पीछे यह रोग अधिक बढ़े ये लक्षण हों तो वात का उन्मादजानिये १॥

अथ पित्त के उन्माद का लक्षण॥

अजीर्ण में भोजन करने और कड़ुवा, खट्टा, गर्म भोजन से पित्त बढ़कर मनुष्य के हृदय को बिगाड़कर उन्माद को करता है तब वह पुरुष किसी बातको माने नहीं और नंगा होकर सब को मारने लगे तथा शरीर गर्म होजाय, शीतल वस्तु खाने की इच्छा रहे और शरीर पीला होजाय ये लक्षण हों तो पित्त का उन्माद जानिये २॥

अथ कफ के उन्माद का लक्षण॥

क्षुधा मन्द हो और बहुत खाय, काम करने में आलस्य आवे उसका पित्त कफसे मिलकर मर्मस्थानों को बँधाता है तब पुरुष की बुद्धि और स्मरण को नाश करके उसके चित्तको बिगाड़ उन्मत्त करदेताहै तब वह पुरुष कम बोलता है और क्षुधा जाती रहे, स्त्रियां प्यारी लगें, एकान्तस्थान अच्छा लगे, नींद अधिक आवे, छर्दि हो, बल जाता रहे, नखादिक श्वेत होजायँ ये लक्षण हों तो कफ का उन्माद जानिये ३ और ये सम्पूर्ण लक्षण मिले हों तो सन्निपात का उन्माद जानिये ४॥

अथ मन के दुःख के उन्माद का लक्षण॥

चोरों के भयसे, राजा के भयसे, प्रबलशत्रु के भयसे और भयानक कर्म के भयसे अथवा धन पुत्रादिक के नाशसे, अधिक मैथुन से जब पुरुष के चित्त में चोट लगती है तब उस पुरुष के मनमें चोटलगकर मनको बिगाड़कर उन्मत्त करदेती है। वह

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पुरुष जो चाहताहै वही अस्त व्यस्त बकता है और संज्ञा जाती रहतीहै तथा गाने, हँसने लगजाय ये लक्षण हों तो मन के दुःख का उन्माद जानिये ५ ॥

अथ विष खाने के उन्माद का लक्षण ॥

लाल नेत्र हों, शरीर का बल और सब इन्द्रियों की कान्ति जाती रहे, ग़रीब होजाय, मुख काला पड़जाय ये लक्षण हों तो विष खाने का उन्माद जानिये इस उन्मादवाला मर जाय ६ ॥

अथ उन्मादमात्र का असाध्य लक्षण ॥

नीचा या ऊंचाही मुख रक्खे और शरीर का बलमात्र जाता रहे, निद्रा आवे नहीं, जागाही करे ये लक्षण हों तो वह पुरुष मरजाय ७ ॥

अथ भूतादिक के लगने से उपजे उन्माद का लक्षण ॥

जिस पुरुष के भूतादिक लगेहों उस पुरुष की वाणी मनुष्य कीसी न होकर विचित्र हो और उसका पराक्रम, शरीर की चेष्टा और उसके ज्ञान-विज्ञानभी विचित्रहों तो भूतादिक के लगने का उन्माद जानिये १ ॥

अथ जिसके शरीर में किसीदेवता का प्रवेश हो उसके उन्माद का लक्षण ॥

सब बातों से वह संतुष्ट और पवित्र रहे, अच्छे पुष्पादिक की माला धारण करे, सुन्दर अतर सूंघा करे और नेत्र बन्द न हों तथा विना पढ़ाहुआ संस्कृत बोले, शरीर में तेज बढ़े और जो मांगे उस को वरदे तथा ब्राह्मण बनजाय जिस में ये लक्षण हों उसके देवता के प्रवेश का उन्माद जानिये २ ॥

अथ जिसके शरीर में असुरने प्रवेश किया हो उसके उन्माद का लक्षण ॥

पसीना आवे और ब्राह्मण, गुरु, देवता इनमें दोष निकाले, कुटिलदृष्टि हो, किसी प्रकार का भय न हो, खोटे मार्ग में दृष्टि हो, किसी प्रकार तृप्ति न हो, भोजनादिक में दुष्टात्मा हो ये लक्षण जिसमें हों उसके असुर लगाहुआ जानिये ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ गन्धर्व लगने से उपजे उन्माद का लक्षण ॥

दुष्टात्मा हो और पुलिन वन में रहने से चित्त प्रसन्न रहे, आचार में मग्न रहे, गाना और नाचना सुहावे, थोड़ा बोले ये लक्षण हों तो गन्धर्ब लगा जानिये ४ और येही यक्षग्रह के लक्षण जानिये ५ ॥

अथ जिसके शरीर में पितृदोष हो उसका लक्षण ॥

डाभके ऊपर पिण्ड २ धरा करे, सतोगुणी हो, तर्पण किया करे तथा मांस, गुड़ और खीर के भोजन में रुचि रहे ये लक्षण हों तो पितृदोष जानिये ६॥

अथ जिसके सती का दोष हो उसका लक्षण ॥

मन निश्चल रहे नहीं, सन्तानादिक का अवरोध करे, सती की वार्ता सुहावे, बोले नहीं, बोले तो वरदे और पवित्र रहे, अच्छी वस्तुओं में मन रहे ये लक्षण हों तो सती का दोष जानिये ७॥

अथ क्षेत्रपाल के दोष का उन्माद ॥

मुख, नासिका में रुधिर चले, श्मशान की भस्म मस्तक में लगावे, खोटा स्वप्न हो, उदर में पीड़ा रहे और सन्धि सन्धि में पीड़ा रहे, चित्त स्वस्थ न रहे ये लक्षण हों तो क्षेत्रपाल का दूषण जानिये ८ ॥

अथ बीजासणी देवी के दोष से उपजे उन्माद का लक्षण ॥

पक्षाघात हो, शरीर और रुधिर सूखजाय, मुख और पैर टेढ़े होजायँ, शरीर क्षीण होजाय, स्मरणादिक जाता रहे ये लक्षण हों तो बीजासणी देवी का दोष जानिये ९ ॥

अथ कामण के दोष से उपजे उन्माद का लक्षण ॥

कन्धा और मस्तक भारी हो, मन स्थिर न रहे, सर्व अङ्ग क्षीण होजायँ तथा नासिका, हाथ और पैर में दाह हो। वीर्य नाश हो, शरीरके आठों अङ्गों में सुईकेसे चुभके चलतेरहें, शरीर सूख जाय ये लक्षण हों तो कामण के दोष का उन्माद जानिये १० ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ शाकिनी, डाकिनी के लगने से उपजे उन्माद का लक्षण ॥

सब अङ्गों में पीड़ा हो, नेत्र बहुत दुखें, मूर्च्छा हो, शरीर कांपे, रोवे, बके, भोजन में अरुचि हो, हँसे, स्वरभङ्ग हो, शरीर का बल और क्षुधा जाती रहे, घुमनी आवे, ज्वर भी हो, ये लक्षण हों तो शाकिनी, डाकिनी का दोष जानिये ११ ॥

अथ कुगतिसे मरापुरुष जो प्रेत हो उससे उपजे उन्माद का लक्षण ॥

सबेरेही घरमें से उठ उठ भागे, खोटा वचन कहे, बहुत बके, शरीर कांपे, रोवे, खाय पिये नहीं, बुरेप्रकार श्वास लिया करे, मनमें आवे सो खाय ये लक्षण हों तो प्रेत का दोष जानिये १२॥

अथ जिसके राक्षस लगा हो उसके उन्माद का लक्षण ॥

मांस खाने और रुधिर पीने में जिस की रुचि रहे, बहुत दुष्टता से बोले, बहुतसा शूरपना चढ़जाय, क्रोध बहुत हो, रात्रि में अकेला फिरे, अपवित्र रहे ये लक्षण हों तो राक्षस लगा जानिये १३ ॥

अथ जिसके ब्रह्मराक्षस लगा हो उसके उन्माद का लक्षण ॥

देवता, ब्राह्मण, गुरु इनसे शत्रुता रक्खे, वेद और वेदान्त का जाननेवाला आप होजाय तथा अपने शरीर को आपही दुःख दे और मारे नहीं ये लक्षण हों तो ब्रह्मराक्षस लगा जानिये १४॥

अथ पिशाच लगने के उन्माद का लक्षण ॥

ऊंचे हाथ रक्खे, शरीर कृश होजाय, कुछका कुछ बके, शरीर में दुर्गन्ध आवे, अपवित्र रहे, अतिचञ्चल होजाय, बहुत खाय, उद्यान में मन रहे, भ्रमे, बहुत रोवे ये लक्षण हों तो पिशाच लगा जानिये १५ ॥

अथ उन्माद का असाध्य लक्षण ॥

नेत्र कटेसे होजायँ, डोला करे, मुख में झाग आवे, निद्रा बहुत आवे, गिरगिर पड़े, कांपे ये लक्षण हों तो असाध्य जानिये और पूर्णिमा में अधिक रोग हों तो देवता का दोष जानिये

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

और सायंकाल को कोई लगे तो असुर का दोष जानिये। तथा पड़िवा को विकल हो तो यक्ष का दोष जानिये और रात्रि में ये लक्षण हों तो पिशाच का दोष जानिये॥

अथ इन सबके लगने का प्रकार कहते हैं॥

जैसे मनुष्यादिकोंका प्रतिबिम्ब दर्पणादिक में प्रवेश करता है तैसेही प्राणीमात्र में शीत और उष्णता घुसजाती है और जैसे आतशी शीशे में सूर्य की किरण प्रवेशकर अग्नि को उत्पन्न करती है तैसे ही मनुष्यादिकों के शरीर में भूत प्रेतादिक प्रवेशकर जाते हैं और दीखते नहीं परन्तु चेष्टादिकों से जानपड़ते हैं॥

अथ उन्माद को आदि ले इन सब का यथायत्न॥

घृतादिक के पीने से वात का उन्माद जाय १ अच्छी जुलाब के लेने से पित्त का उन्माद जाय २ वमन के करने से कफ का उन्माद जाय ३ लिङ्ग और गुदा में पिचकारी देने से उन्माद जाय। इसको वस्तिकर्म कहते हैं ४ अथवा लौनिये के रस में बराबर का गुड़ डाल गौ का मट्ठा मिलाकर पिये तो उन्माद जाय५ अथवा खरैटी की डालियों का रस निकाल पिये तो उन्माद जाय ६ अथवा कड़ुवे तेल का मर्दन करके धूप में बैठे तो उन्माद जाय ७ अथवा कोई अद्भुत वस्तु दिखावे या किसी इष्ट-मित्र का नाम सुनावे तो उन्माद जाय ८ अथवा गर्म घृत वा गर्म तेल या गर्म जल को स्पर्श करावे तो उन्माद जाय ९ अथवा कौंच की फली का स्पर्श करावे तो उन्माद जाय १० अथवा कोड़े की मार मारे तो उन्माद जाय ११ अथवा शस्त्र से, सर्प से, सिंह से वा रोकने से किसी प्रकार से डरपावे तो उन्माद जाय १२ जिस प्रकार से चित्त ठिकाने आवे सो सर्वदुःख से प्राण का रखना भला है इस कारण ये यत्न अच्छे हैं। अथवा कूट, असगन्ध, सेंधा नोन, अजमोद, दोनों जीरे, सोंठि, कालीमिरच, बड़ीपीपरि, पाढ़, शंखाहूली सबको बराबर ले और इन सबकी बराबर बच

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

ले फिर सब को महीन पीस उसमें ब्राह्मी के रसकी १० पुट दे फिर छाया में सुखाय २॥ टंक प्रमाण घृत, शहदके साथ इस सारस्वतचूर्णको १५ दिन ले तो सर्वप्रकार का उन्माद जाय। यह चूर्ण सर्ववात के विकार और प्रमेहको दूर कर बुद्धि को बढ़ा कर कविताशक्ति करता है। यह चूर्ण ब्रह्माजीका बनाया है—इति सारस्वतचूर्ण १३ अथवा त्रिफला, पित्तपापड़ा, देवदारु, शालिपर्णी (सरिवन), जवासा, तगर, हल्दी, दारुहल्दी, इन्द्रायण की जड़, गौरीसर, चन्दन, पद्माक, कूट, कमलगट्टे, इलायची, कटेली, मंजीठ, पत्रज, निशोत, बायबिड़ंग, रुदन्ती, नागकेशर, मुलहठी, पृष्ठिपर्णी (पिथवन), चमेली के फूल ये सब औषध धेले धेले भर ले फिर इन औषधों को ४ सेर जल में कूट डाले और इसमें १ सेर गौ का घृत डालकर मधुरी आंच में पकावे जब वह जल भस्म होजाय और घृतमात्र रहजाय तब उतार ले फिर ५ टंक प्रतिदिन भोजन के साथ खाय तो उन्माद, मृगीरोग, पाण्डुरोग ये सब जायँ—इति कल्याणघृत १४ अथवा सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, हींग, खुरासानी बच, सिरस के बीज, सेंधानोन, सरसों इन सबको बराबर लेके गोमूत्र में महीन पीस अञ्जन करे तो उन्माद जाय। यह यत्न वैद्यविनोद में है १५ अथवा सोंठि, अजमोद, हल्दी, दारुहल्दी, सेंधानोन, बच, मुलहठी, कूट, पीपरि, ज़ीरा ये सब बराबर ले गोमूत्र में महीन पीस २॥ टंक ले घृत के साथ खाय तो उन्माद जाय तथा उसकी जिह्वा में सरस्वती आ बसें। यह भावप्रकाश में लिखा है—इति विश्वाद्यचूर्ण १६ अथवा ब्राह्मी का रस, पेठे का रस अथवा पीपलामूल का रस अथवा शंखाहूली का रस १० टंक पिये तो उन्माद जाय १७ अथवा खुरासानी बच, कूट, शंखाहूली, धतूरे की जड़ ये सब बराबर लेकर इसमें ब्राह्मी के रस की ७ पुट दे फिर कालेधतूरे के बीजके तेलकी ५ पुट दे फिर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

इसकी नास देने से उन्माद दूर होता है यह वैद्यरहस्य में लिखा है १८ अथवा सिरसके फूल, मंजीठ, पीपरि, सरसों, खुरासानी बच, हल्दी, सोंठि इन सब को बराबर ले बकरे के मूत्र में महीन पीस गोली बांधले फिर एक गोली घिसकर अञ्जन करें तो उन्माद जाय। यह योगरत्नावली में है १९ अथवा भुनी हींग, कालानोन, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि ये सब बराबर दो २ टके भर ले फिर ४ सेर गौ का घृत और घृत से चौगुना गौका मूत्र ले फिर इन सबको इकट्ठा कर मधुरी आंच से पकावे जब उसमें से गोमूत्र जलजाय और घृतमात्र रह जाय तब उतार ५ टंक भोजन के समय ले तो उन्माद दूर हो २० इति उन्मादरोगकी उत्पत्ति, लक्षण और यत्न सम्पूर्ण ॥

अथ भूतादि उन्माद के मन्त्र, तन्त्र सर्वशास्त्र के अनुसार कहते हैं ॥

प्रथम भूतादिक का जो यत्न करे वह आप पवित्र हो अपनी रक्षा करके यत्न करे। कालीमिरच, पीपरि, सेंधानोन, गोरोचन इनको महीन पीस शहद में अञ्जन करे तो भूत-प्रेत जायँ १ ज्वर के प्रकरण में भूतज्वर के ऊपर श्रीनृसिंहजी का दिव्यमन्त्र लिखा है उससे भूत-प्रेतादिक के सब उन्माद दूर होते हैं ॥

अथ शिवकथित उड्डीस-शाबरमन्त्र ॥

ॐ नमो भगवते नारसिंहाय अतुलवीरपराक्रमाय घोररौद्र-महिषासुररूपाय त्रैलोक्यडम्बराय रौद्रक्षेत्रपालांय हो हो० क्रीं क्रीं० कृमित ताड़य ताड़य मोहय मोहय द्रभि द्रभि क्षोभय क्षोभय आभि आभि साधय साधय ह्रीं हृदये आशक्रय प्रीति ललाटे बन्धय ह्रीं हृदये स्तम्भय स्तम्भय किलि किलि ईं ह्रीं डाकिनीं प्रच्छादय प्रच्छादय शाकिनीं प्रच्छादय प्रच्छादय भूतं प्रच्छादय प्रच्छादय अभूति अदूति स्वाहा राक्षसं प्रच्छादय प्रच्छादय ब्रह्मराक्षसं प्रच्छादय प्रच्छादय आकाशं प्रच्छादय प्रच्छादय सिंहिनीपुत्रं प्रच्छादय प्रच्छादय एते डाकिनीग्रहं

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

साधय साधय शाकिनीग्रहं साधय साधय अनेन मन्त्रेण डाकिनी, शाकिनी, भूत, प्रेत, पिशाचादि एकाहिक, द्व्याहिक, त्र्याहिक, चातुर्थिक, पंचमिक, वातिक, पैत्तिक, श्लेष्मिक, सन्निपात, केशरी, डाकिनीग्रहादि मुञ्च मुञ्च स्वाहा गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच। इस मन्त्र से २१ बार मोरपंख से अथवा लोहे की वस्तु से अथवा छप्पर के पानी से झाड़ दे तो भूतादिक के सब उन्माद दूर हों २॥

अथ शाकिनी, डाकिनी के बकुराने का मन्त्र॥

ॐ नमो आदेश गुरू को ॐ नमो जय जय नृसिंह तीन लोक चौदह भुवन में हाथ चाब ओठ चाब नयन लाल लाल सर्ववैरी पछाड़ मार भक्तन की प्राण राख आदेश आदेश पुरुष को। इस मन्त्रकी क्रिया। यह मन्त्र पढ़ रोगीको बैठाय मन्त्र से पानी अभिमन्त्रित कर आप पवित्र हो उस रोगी को पिलावे फिर उससे पूछे तो शाकिनी और डाकिनी निश्चय बोले ३॥

अथ डाकिनी बकुराने का मन्त्र॥

ॐनमो चढ़ो चढ़ो शूरवीर धरती चढ़ पाताल चढ़ि पगपाली चढ़ा कौन कौन वीर चढ़ा हनुमन्त वीर चढ़ा धरती चढ़ी पगपाणा चढ़ी एँड़ी चढ़ी एँड़ी चढ़ी मुरवे चढ़ी मुरवे चढ़ी पिण्डुरी चढ़ी पिण्डुरी चढ़ी गोड़ा चढ़ी गोड़ा चढ़ी जांघ चढ़ी जांघ चढ़ी कटि चढ़ी कटि चढ़ी पेट चढ़ी पेट चढ़ी पेट से धरणि चढ़ी धरणि से पांसल्या चढ़ी पांसल्या से हिये चढ़ी हिये से छाती चढ़ी छाती से खवा चढ़ी खवा से कण्ठ चढ़ी कण्ठ से मुख चढ़ी मुखसे जिह्वा चढ़ी जिह्वा से कानों चढ़ी कानों से आंखों चढ़ी आंखों से ललाट चढ़ी ललाट से शीश चढ़ी शीश से कपाल चढ़ी कपाल से चोटी चढ़ी हनुमान नारसिंह कर वारात्मा चल्यां वीर समदवीर दीठवीर अगियावीर सोसन्तावीर ये वीर चढ़या॥ इस मन्त्रसे बकुरावे तो उस पुरुष में वह निश्चय आय बोले ४॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ डाकिनी के चोट लगने का मन्त्र ॥

ॐ नमो महाकाया योगिनी योगिनी पार शाकिनी कल्पवृक्षीय दृष्टियोगिनी सिद्धरुद्राय कालदण्डेन साधय साधय मारय मारय चूरय चूरय अपहर अपहर शाकिनी सपरिवारं नमः ॐ ह्रिं ६ ॐ ह्रीं टं ह्रों ह्रोंट फट् स्वाहा ॥ इस मन्त्रकी क्रिया पवित्र होकर ७ बार गूगल को मन्त्रित कर ओखली में डाल मूसल से कूटे तो यह चोटें डाकिनीके लगें और इस मन्त्रसे शिर मूड़े तो डाकिनी का माथा मूड़ाजाय और इसी मन्त्रसे उड़दोंको पढ़कर डाले तो उसके घर आ बोले और जलने लगे तथा उन्हीं उड़दों को पढ़कर आंखों पर छोड़े तो वह खेल उठे ५ ॥

अथ डाकिनी के दोष दूर होने का झाड़ा ॥

मोरके पंखसे अथवा लोहे की छुरी से दीजिये। ॐ नमो आदेश गुरू का डाकिनी सिहारी किसने मारी यती हनुमन्त ने मारी कहां जाय दबकी किन देखी यती हनुमन्त ने देखी सातवें पाताल गई सातवें पाताल से कौन पकड़लाया यती हनुमन्त पकड़लाया एक तालदे एक कोठा तोड़ा दो तालदे दो कोठे तोड़े तीन तालदे तीन कोठे तोड़े चार ताल दे चार कोठे तोड़े पांच तालदे पांच कोठे तोड़े छह तालदे छह कोठे तोड़े सातवां कोठा तोड़ देखै तो कोने में खड़ी हे डाकिनी सिहारी भूत प्रेत चला यती हनुमन्त तेरे झाड़ेसे चला ॐ नमो आदेश गुरूका गुरू की शक्ति मेरी भक्ति फुरोमन्त्र ईश्वरोवाच ६ ॥

अथ डाकिनी के दूर होने का यन्त्र ॥

७	७	६	८
९	५	४	६
४	॥।	९	११
७।	५	१॥	॥

इस यन्त्रको अच्छे पानी में घोल पिलावे तो डाकिनी दूर हो ॥

।।९	६६	१	५
७	४	७	६१
९	=	०।	०।०
६	१	९	४०

इस यन्त्रको बालक के गले में बांधे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ प्रत्यक्ष हाजरायत कहते हैं ॥

हाजरायत का मन्त्र। ॐ नमः कामाख्यायै सर्वसिद्धायै अमुक कर्म कुरु कुरु स्वाहा। अस्य मन्त्रस्य वह्निकऋषिः जगतीछन्दः कामाख्यादेवता प्रणवः शक्तिः अव्यक्तः कीलकं अमुककर्मणि जपे विनियोगः। ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः कामाख्यायै तर्जनीभ्यां नमः स्वाहा सर्वसिद्धिदायै मध्यमाभ्यां वषट् अमुककर्म अनामिकाभ्यां हुं कुरु कुरु कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां अस्त्राय फट्। ॐ नमो हृदयाय कामाख्यायै शिरसे स्वाहा सर्वसिद्धिदायै सिखायै वषट् अमुककर्म कवचाय हुं कुरु कुरु नेत्रत्रयाय वौषट् स्वाहा अस्त्राय फट् ॥

अथ ध्यानम् ॥

योनिमात्रशरीराय कंगुवासिनिकामदा। रजस्वला महातेजा कामाक्षी ध्यायतां सदा ॥ अस्य मन्त्रस्य सहस्रं जपः। गुड़हल के फूलों की १००० आहुति दे मेढलकी राख कर रक्खे रुई में मिलाके उसकी बत्ती कर तेल के दीपक में धरे और उस दीपक की पूजा करे दीपक के आगे ८ वर्ष का अथवा दश वर्ष का पवित्र शुद्धवंश देवतागण का बालक बैठाना और आप भी पवित्र होकर मेढल के फूल के ऊपर इस मन्त्र के संकल्प का जल डाले तथा दीपक के आगे यह यन्त्र लिख यन्त्रकी पूजा करे और यह यन्त्र बालक को दिखावे तथा उसकी हथेली में मेढल की राख को तेलमें सानकर मसले फिर उससे पूछे जो वह देखे सो सत्य २ समाचार सब कहे। अथवा आठ, दश वर्ष की पवित्र कुल की देवतागण कन्याको बैठावे उसे दीखे सो कहे। दशांश आहुति, दशांश तर्पण, दशांश मार्जन, ब्राह्मण भोजन करावे यह सत्य हाजरायत है उड्डीस में लिखीहै—इति हाजरायतकी विधि सम्पूर्ण ७ ॥

१	८	३	८	त
५	६	३	६	र
७	२	६	क	र२
७	४	५	४	ली

यह यन्त्र हाजरायत का है ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथवा नींब के पत्र, खुरासानी बच, हींग, सांपकी कांचली, सरसों इनकी धूनी दे तो डाकिनी, भूतादिके सर्वदोष जायँ ८ अथवा कपास का काकड़ा, मोरकी चन्द्रिका, कटेली, शिवका निर्माल्य, मरुवा, तज, बालछड़, बैलका दांत, मार्जार की विष्ठा, तुष, बच, केश, सर्पकी कांचली, गौका सींग, हाथीका दांत, हींग, कालीमिरच इन सब को बराबर ले कूटकर इसकी धूनी दे तो सब प्रकार के भूतादि के दोष दूर हों। यह माहेश्वरधूप चक्रदत्तमें लिखी है ९ अथवा पीपरि, कालीमिरच, सेंधानोन, गोरोचन इनको शहद में पीस अञ्जन करे तो सर्वभूतादि के दोष दूर हों १० अथवा कणगच की जड़, दारुहल्दी, सरसों, कूट, हींग, बच, मंजीठ, त्रिफला, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, प्रियंगु के फूल इनको बराबर ले बकरे के मूत्र में पीस नास दे अथवा अञ्जन करे तो सर्वभूतादि के दोष जायँ ११ अथवा गोरख, गोखुरू, बिनौले, काकड़ा, गोमूत्र में पीस नास ले तो ब्रह्मराक्षस का दोष जाय १२ अथवा शंखाहूली की जड़ को चावल के पानी में अथवा घृत में पीस उसकी नास दे तो भूतादि का दोष जाय १३--इति भूतादिक के उन्माद की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

अथ मृगीरोग की उत्पत्ति और लक्षण ॥

चिन्ता और शोकादि से क्रोध को प्राप्त हुए वात, पित्त, कफ हृदय की नसों में घुस, स्मरणमात्र का नाशकर, मृगी के रोग को प्रकट करते हैं। वह मृगीरोग वात, पित्त, कफ, सन्निपात इन भेदों से चार प्रकार का है ॥

अथ मृगी का पूर्वरूप और लक्षण ॥

हृदय कांपे, शरीर सूना होजाय, पसीना आवे, ध्यान लग जाय, मूर्च्छा हो, ज्ञान जाता रहे, निद्रा न आवे ये लक्षण हों तो जानिये कि इसके मृगीरोग होगा और उसको सर्वत्र अन्ध-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कारही दीखे, स्मरण जाता रहे और हाथ पैर आदि सब अङ्गों को पृथ्वीपर पटका करे तब जानिये कि मृगीरोग हुआ १ ॥

अथ वात की मृगी का लक्षण ॥

कम्प हो, दांत चाबे, मुख में झाग आवें, श्वास हो, काला पीला देखे ये लक्षण वात की मृगी के हैं २ ॥

अथ पित्त की मृगी का लक्षण ॥

मुख में पीले झाग आवें तथा शरीर की त्वचा और मुख पीला होजाय ये लक्षण पित्तकी मृगी के जानिये ३ ॥

अथ कफ की मृगी के लक्षण ॥

मुख में श्वेत झाग आवें, शरीर की त्वचा, मुख, नेत्र ये सब श्वेत पड़जायँ, शीत लगे, रोमांच हो और श्वेतही श्वेत दीखे ये लक्षण कफ की मृगी के हैं ४ ॥

अथ सन्निपात की मृगी के लक्षण ॥

पीछे कहेहुए सब लक्षण हों तो सन्निपात की मृगी जानिये ५ ॥

अथ मृगी का असाध्य लक्षण ॥

जिसका शरीर बहुत फड़के और क्षीण होजाय, भौंह चढ़ी रहें, नेत्रों की प्रकृति और होजाय तो वह मृगीवाला मरजाय ६ ॥

अथ मृगी का समय ॥

बारहवें दिन आवे तो वायु की जानिये और पन्द्रहवें दिन आवे तो पित्त की जानिये तथा एक महीने में आवे तो कफकी जानिये। यहां दृष्टान्त लिखते हैं। जैसे इन्द्रके जल बरसाने से सभी वस्तु उपजती हैं परन्तु जौ, चना आदि पृथ्वी पर शरद्ही ऋतुमें उत्पन्न होते हैं तैसेही शरीर में ये रोग रहते तो सदैव हैं परन्तु जब उनका समय आता है तभी कोप करते हैं ७ ॥

अथ मृगी का यत्न ॥

तिल के साथ लहसुन खाय तो वात की मृगी जाय १ दूध के साथ शतावरि खाय तो पित्तकी मृगी जाय २ ब्राह्मीका रस शहद

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

के साथ खाय तो कफ की मृगी जाय ३ अथवा राई, सरसों खाय वा गोमूत्र में पीस शरीर में लप करे तो मृगी जाय ४ अथवा तेल १ सेर, सहँजने का रस ४ सेर, ग्वारपढ़े का रस ४ सेर, चिड़चिड़े का रस ४ सेर, नींबकी छाल का रस १ सेर, गोमूत्र ४ सेर इन सब में तेल मिलाकर पकावे जब वह सब रस जलजाय और तेलमात्र रहजाय तब तेल को निकाल बासन में रक्खे। उस तेल का मर्दन करे तो मृगी जाय ५ अथवा मैनसिल और नीलकण्ठ (नीलटांच) की बीट अथवा कबूतर की बीट इन दोनों को महीन पीस अञ्जन करे तो मृगी जाय ६ अथवा शुद्ध पारा, मारा अभ्रक, सार, शोधी गन्धक, मारा हुआ मैनसिल, मारा हरताल, रसौंत ये सब बराबर ले इनको गोमूत्र में १ दिन खरल करे फिर लोहे के पात्र में इनसे दूनी गन्धक मिलाय अधर धरके अग्नि से पकाले १ पहर के पीछे उतारकर ठंढी करे फिर १ रत्ती प्रतिदिन ७ दिनतक खाय तो मृगी जाय ७ अथवा सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, कालानोन, भुनी हींग इनको बराबर ले महीन पीस २॥ टंक पेठे के रसमें ७ दिन पिये तो मृगी जाय ८ अथवा खुरासानी बच और कूट को महीन पीस २॥ टंक के प्रमाण ब्राह्मी के रसमें वा शंखाहूली के रस के साथ अथवा पुराने गुड़ के साथ १५ दिन पिये तो मृगी जाय ९ अथवा गौका घृत १ सेर, पेठेका रस १८ सेर, मुलहठी के काढ़े का पानी २ सेर इन तीनों को पकावे जब दोनों रस जलजायँ और घृतमात्र रहजाय तब इस घृत को खाय तो मृगी जाय १० अथवा सहँजनेकी छाल, कूट, नेत्रबाला, सफ़ेद जीरा, लहसुन, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, हींग इन सबको पैसे पैसे भर ले और तेल आधसेर, बकरेका मूत्र २ सेर इन सबको मधुरी आंच से पकावे जब सब जलजायँ और तेलमात्र रहजाय तब इसकी नास दे तो मृगी जाय। ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं ११ अथवा पीपरि, पीपलामूल,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

चव्य, चित्रक, सोंठि, त्रिफला, बायबिड़ंग, सेंधानोन, अजवाइन, धनियां, सफ़ेद ज़ीरा इन सबको बराबर ले महीन पीस २॥ टंक प्रमाण पानी के साथ ले तो मृगी, संग्रहणी, उन्माद, बवासीर इन सबको दूर करे १२ अथवा पुष्य नक्षत्र के दिन कुत्ते का पित्ता निकाल अञ्जन करे अथवा घृत के साथ इसकी धूप दे तो मृगी जाय। यह योगतरङ्गिणीमें लिखा है १३ अथवा खुरासानी बच का चूर्ण २॥ टंक दूधके साथ अथवा शहद के साथ १ महीने पिये तो मृगी जाय। यह भी योगतरङ्गिणी में है १४ अथवा न्योले की विष्ठा, बिलाव की विष्ठा और कागले की विष्ठा इनकी धूनी दे तो मृगी जाय। यह चक्रदत्त में लिखा है १५—इति मृगी रोग का लक्षण और यत्न सम्पूर्ण ॥

इति सप्तमस्तरङ्गः ७ ॥

अथ वातजव्याधि की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

कषैली, कड़ुवी, तीखी वस्तु के खानेसे, खल के भोजनसे, रूखी वस्तु के खाने से, खेद से, शीतल भोजन से, अधिक मैथुन से, धातु के क्षीणपने से, मल मूत्र के रोकने से, शोच और भय से, अधिक रुधिर के निकलवाने से, मांस के क्षीणपने से, अधिक वमन और विरेचन से, आमके दोष से और वृद्धावस्था से मनुष्यों के वर्षाऋतु में तृतीयपहर अथवा पहरभर के तड़के खाली नसों में बलवान् वायु घुसके कोपित हो सब अङ्गों में अथवा एक एक अङ्ग में नानाप्रकार के ८४ रोगों को उत्पन्न करताहै। वे ८४ रोग ये हैं। शिरोग्रह १ अल्पकेश २ अधिक जँभुवाई ३ चौहर मुड़े नहीं ४ जीभ हले नहीं ५ बकाईखाता बोले ६ हौले बोले ७ गूंगापन हो ८ खोटाही बोले ९ बहुत बके १० जीभ का स्वाद जातारहे ११ बहिरा होजाय १२ कानोंमें घुन्नाटे का शब्द हो १३ त्वचा में स्पर्श का ज्ञान जाता रहे १४ अर्दित रोग १५ कन्धा मुड़े नहीं १६ भुजा सूखजाय १७ भुजा मुड़े

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

नहीं १८ चर्चितरोग १९ विश्वाचीरोग २० ऊर्ध्ववात २१ डकार बहुत आवें २२ अफरा हो २३ आध्मानरोग २४ अष्ठीला रोग २५ प्रत्यष्ठीलारोग २६ तूनी २७ प्रतितूनी २८ अग्नि की विषमता २९ आटोपरोग ३० पसुली में शूल ३१ पीठ में शूल ३२ बहुमूत्रता ३३ मूत्र रुकजाय ३४ मल गाढ़ा हो ३५ मल उतरे नहीं ३६ गृध्रसीरोग ३७ कलापखञ्जतारोग ३८ खोड़ापना ३९ पंगुतारोग ४० क्रोष्टुशीर्षक पैर का रोग ४१ खल्लीरोग ४२ वातकण्टकरोग ४३ पैर की सूजन ४४ पैरजलन ४५ आक्षेप रोग ४६ दण्डकरोग ४७ वाताक्षेपकरोग ४८ पित्ताक्षेपकरोग ४९ दण्डापतानकरोग ५० अभिवातकक्षेप ५१ अन्तरायाम ५२ बाह्यायाम ५३ धनुर्वात ५४ कुब्जक ५५ अपतन्त्र ५६ अपतान ५७ पक्षाघात ५८ आखलागिक ५९ कम्प ६० स्तम्भ ६१ व्यथा ६२ लोद ६३ अस्फुरण ६४ रूक्षता ६५ कालापन ६६ क्षीणपन ६७ शीतलपन ६८ रोमाञ्च ६९ अगम ७० अङ्गविभ्रम ७१ नसोंका संकोच ७२ अङ्गशोष ७३ डरपना ७४ मोहपना ७५ उन्मादपन ७६ नींद नहीं आवे ७७ पसीना नहीं आवे ७८ बल की हानि ७९ वीर्य का नाश ८० स्त्रीधर्म का नाश ८१ गर्भ का नाश ८२ विना श्रमके श्रम ८३ श्रमनाश ८४ ॥

अथ वातज सब रोगों का लक्षण और यत्न ॥

पहिले सामान्य यत्न लिखते हैं। मीठी, सलोनी, चिकनी, गर्म वस्तु, आमला इनके खानेसे और तेल के मर्दन से, औषधों के सेवन से सामान्य वातरोग दूर होता है ॥

अथ शिरोग्रह का लक्षण ॥

वात रुधिर से मिलकर मस्तककी नसों को रूखी करता है फिर उनमें बहुतसी पीड़ा करके नसों को काली करदेता है यह रोग असाध्य है ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ शिरोग्रह का यत्न ॥

दशमूल का काढ़ा कर रस निकाले और बिजौरे का रस निकाले फिर इस रसमें तेल पकाकर उस तेल का मर्दन करे तो शिरोग्रह दूर हो १ अथवा कूट, अरण्ड की जड़, धतूरे की जड़, सहँजने की जड़, सोंठि, कालीमिरंच, पीपरि, सिंगीमुहरा ये सब औषध बराबर ले काढ़ा कर अनुमान मुवाफ़िक़ तेल डाल कर मधुरी आंच से पकावे जब तेलमात्र रहजाय तब उसको उतार मर्दन करे तो शिरोग्रह जाय २ ॥

अथ अल्पकेशों की चिकित्सा ॥

देशी गोखरू, तिल के फूल इनको बराबर ले और इनकी बराबर शहद और घृत ले उसमें इन दोनों को महीन पीस केशों में लेप करे तो केश बहुत बढ़ें १ अथवा मुलहठी, नीलेकमल की जड़, मुनक्का, किशमिश इनको तेल, घृत, दूधमें महीन पीस लेप करे तो केश बहुत लम्बे हों २ और इन औषधों से छछूंदर का भी दोष दूर होता है ॥

अथ जँभुवाई का लक्षण ॥

मुख के एक श्वास को प्रथम मुख में पीजाय फिर वह श्वास उलटा काढ़ दे फिर आलस्य और निद्रासंयुत आवे उसको जँभुवाई कहते हैं ॥

अथ जँभुवाई बहुत आवे उसका यत्न ॥

सोंठि, पीपरि, कालीमिरच, अजमोद, सेंधानोन इनको जुदा अथवा इकट्ठा महीन पीस गर्म पानी से ले तो जँभुवाई का रोग जाय १ अथवा कड़ुवा तेल मर्दन करे अथवा मीठा भोजन करे अथवा ताम्बूल खाय तो जँभुवाई का रोग जाय ॥

अथ हनुग्रहरोग का लक्षण ॥

दांतून की फाड़ से जीभ को बहुत घिसने और चबेना के खाने से अथवा किसी प्रकार की चाट से डाढ़की जड़ में रहने-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

वाली वायु कोपित होकर मुखको फटाही रक्खे अथवा बन्दही रक्खे तब पुरुष को बोलने और खाने की बड़े कष्ट से सामर्थ्य होती है उसको वैद्य हनुग्रहरोग कहते हैं॥

अथ हनुग्रहरोग का यत्न॥

जिसका मुख मिच गया हो उसको चिकनी वस्तु से सेंककर पसीना लिवावे तो मुख खुलजावे १ और जिसका मुख फटा रहजाय उसको शीतल वस्तु से आराम होता है २ और जिसकी डाढ़ मुड़े नहीं उसको पीपरि, अदरक चबवा चबवा कर थुकवावे तो रोग दूर हो ३ अथवा गर्मपानी के कुल्ले करवावे तो रोग दूर हो ४ अथवा तेल में लहसुन को तलकर सेंधानोन लगाके खाय तो हनुग्रहरोग जाय ५ अथवा उड़द के बड़ों में लहसुन, सेंधानोन, अदरक, हींग मिलाकर तेल में सेंक के खाय तो हनुग्रहरोग जाय ६ अथवा प्रसारणीतेल के मर्दन से नीचे लिखे रोग दूर होते हैं। तेल इस प्रकार बनता है। खीपका पञ्चाङ्ग १०० टकेभर ले कूटकर १६ सेर पानी में औटावे जब चतुर्थांश रहजाय तब उतार छान उस पानी में तिल का तेल १०० टके भर, मट्ठा १०० टके भर, कांजी का पानी १०० टके भर और तेलसे चौगुना गौका दूध डाले तथा चित्रक, पीपलामूल, महुआ, सेंधानोन, खुरासानी बच, सौंफ़, देवदारु, रास्ना, गजपीपरि, छारछबीला, रक्तचन्दन, अरण्ड की जड़, खरैटी की जड़, सोंठि इन सब औषधों को टके टके भर ले काढ़ा कर काढ़े का रस उस तेल में डाले और १ सेर खीपका रस डालकर मधुरी आंच से पकावे जब सब रस जलजाय और तेल रहजाय तब तेल को उतार ले पीछे इस तेल को मर्दन करे अथवा नास दे या खिलावे अथवा इसका सेंककरे तो सर्व वातविकार, पंगुलता, जिह्वास्तम्भ, आर्दितरोग, बकाई का रोग, स्कन्धस्तम्भ, पीठशूल, गृध्रसी,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

खोड़ा, चापला, धनुर्वात इतने वात के रोगों को यह तेल दूर करता है—इति प्रसारणीतेल ७॥

अथ जिह्वास्तम्भ का लक्षण॥

वाणी की लेचलनेवाली नसोंमें रहनेवाली पवन कोपित होकर जीभ को स्तम्भित करती है तब वह जीभ जलके पीने और बोलने में समर्थ नहीं होती है इसको जिह्वास्तम्भरोग कहते हैं॥

अथ जिह्वास्तम्भ का यत्न॥

मीठारस, नोन, खटाई, चिकनी, गर्म इन वस्तुओं से जीभ को यथायोग्य मर्दन करे अथवा सुहाते सुहाते गर्म पानी से कुल्ले करे तो जिह्वास्तम्भ का रोग दूर होवे॥

अथ गूंगापन, गिनगिना और बकाई खाने का लक्षण॥

कफ से संयुक्त वायु धमनीनाड़ी की लेचलनेवाली नसों को आच्छादित कर मनुष्यों के गूंगापन और नाक में ही बोलना और बकाई खाकर बोलना इतने रोगों को करती है॥

अथ गूंगापन, गिनगिना और बकाई खाकर बोले इन सबका यत्न॥

गौ का घृत १ सेर, सहँजने की जड़ १ टके भर, खुरासानी बच १ टके भर, सेंधानोन १ टके भर, धवई के फूल १ टके भर, पठानीलोध १ टके भर इन सबको पीस कर बकरी के ४ सेर दूध में १ सेर घृत डाले फिर ये औषधें मिलाय मधुरी आंच से पकावे जब दूध और औषधें जलजायँ और घृतमात्र रहजाय तब उसे निकालकर उस घृत को सरस्वतीमन्त्र से विधिपूर्वक सेवन करे तो गूंगापन, गिनगिनापन, बकाईखाना ये सब रोग दूर हों और बुद्धि, स्मृति, मेधा, कान्ति बहुत बढ़े १—इति सारस्वतघृत॥

अथ सरस्वती मन्त्र॥

ॐ ह्रीं ऐं ह्रौं ॐ सरस्वत्यै नमः॥ यह सरस्वतीमन्त्र सिद्ध है इसका इन अक्षरों की बराबर सहस्र जप करे तो यह मन्त्र सिद्ध हो। इस मन्त्र से यह घृत खाय अथवा मालकांगनी का

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तेल खाय तो सर्वरोग जायँ और उसकी बुद्धि तत्काल चमत्कारी होजाय २ अथवा हल्दी, कूट, पीपरि, सोंठि, ज़ीरा, अजमोद, मुलहठी, महुआ, सेंधानोन इनको बराबर ले महीन पीस २॥ टंक मक्खन के साथ नित्य २१ दिनतक ले तो सर्वरोग दूर हों और वह पुरुष श्रुतिधर हो १००० श्लोक नित्य कण्ठ करे—इति कल्प का अवलेह ॥

अथ प्रलाप और वाचालरोग का लक्षण ॥

अपने कुपथ्य से कुपित वायु से पीड़ित अर्थरहित कुछ का कुछ वचन बोले तो प्रलापरोग जानना। और जो अर्थसहित खोटा शब्द मुख से बोले उसे वाचाल कहते हैं ॥

अथ प्रलाप और वाचाल का यत्न ॥

तगर, पित्तपापड़ा, कुटकी, नागरमोथा, असगन्ध, ब्राह्मी, किशमिश, अगर, दशमूल, शंखाहूली इन सबको बराबर ले जवकुट कर इनका काढ़ा दे तो प्रलाप और वाचाल रोग दूर हों॥

अथ जीभ के रसाज्ञान का लक्षण ॥

मधुर रस आदि छह रसों के खानेमें जीभ का यथार्थ ज्ञान जाता रहे उसको रसाज्ञानरोग कहते हैं ॥

अथ रसाज्ञानरोग का यत्न ॥

सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, सेंधानोन, अमलबेत, चूक इन औषधोंको महीन पीस एकरस कर जीभमें अच्छे प्रकार लेप करे तो रसाज्ञान का दोष दूर हो १ अथवा ब्राह्मी, पलाशपापड़ा, राई, कालाज़ीरा, पीपरि, पीपलामूल, चित्रक, सोंठि इनको महीन पीस जीभमें वारंवार लेप करे २ अथवा इनका काढ़ाकर कुल्ले करे तो रसाज्ञानदोष दूर हो ३ अथवा अदरक खाय तो रसाज्ञानदोष दूर हो ४ ॥

अथ शरीर की त्वचा शून्य होगई हो उसका लक्षण ॥

जिस पुरुष को शीतोष्ण, कोमल, कठिनता का ज्ञान जाता रहे उसके त्वचाशून्यपने का रोग जानिये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ त्वचाशून्य का यत्न ॥

त्वचाशून्यवाले का रुधिर निकलवावे तो यह रोग जाय १ अथवा नोन, धमासा इन दोनों को तेल में मिलाय शरीर में मर्दन करे तो यह रोगजाय २ ॥

अथ अर्दितरोग का लक्षण ॥

ऊंचेसे गिरतीहुई भारी वस्तु को ऊंचा मुख कर हाथों से ग्रहण करे, कडुवी वस्तु बहुत खाय, बहुत हँसे, जँभुवाई ले, माथे पर बहुत बोझ उठावे अथवा विषम (ऊंचे नीचे) स्थान में सोवे उस पुरुष के शिर, नासिका, ओष्ठ, डाढ़ और नेत्र इन स्थानों में रहनेवाली वायु उस पुरुष के मुखमें अर्दितरोग को उत्पन्न करती है तब पुरुष का मुँह आधा टेढ़ा होजाय और कन्धा मुड़े नहीं, शिर हाला करे, अच्छे प्रकार बोला और देखा नजाय तथा कन्धे, डाढ़ी, दांतों में पीड़ा रहे जिसमें ये लक्षण हों उसको अर्दितरोग कहिये। वह वात, पित्त, कफ इन भेदोंसे तीन प्रकार का है ॥

अथ वातके अर्दितरोग का लक्षण ॥

लार बहुत पड़े, शरीर में पीड़ा अधिक हो, शरीर कांपे और अत्यन्त फड़के, डाढ़ी मुड़े नहीं, ओष्ठ सूजजायँ ये लक्षण हों तो वायुका अर्दितरोग जानिये ॥

अथ पित्त के अर्दितरोग का लक्षण ॥

मुख पीला होजाय, ज्वर होआवे, तृषा बहुत हो तो पित्त का अर्दितरोग जानिये ॥

अथ कफ के अर्दितरोग का लक्षण ॥

मोह बहुत हो, गला, कन्धा और शिर में सूजन हो तथा ये तीनों मुड़े नहीं तो कफ का अर्दित रोग जानिये ॥

अथ अर्दितरोग का असाध्य लक्षण ॥

क्षीणपुरुष के निमेष नहीं लगे और उस पुरुष से बोला न

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जाय तथा शरीर कँपते हुए तीन वर्ष होगये हों तो अर्दितरोग असाध्य जानिये १ ॥

अथ अर्दितरोग का यत्न ॥

अर्दितरोगवाले को चिकना खवावे तथा नारायण और विषगर्भतैल आदि का मर्दन करावे एवं गर्म वस्तु का सेवन करावे, डाह दिवावे, गर्म औषधियोंसे पसीना लिवावे, शिर में वायु का तेल डाले इतनी वस्तुओंसे अर्दितरोग जाता है ॥

अथ वायु के अर्दितरोग का यत्न ॥

दशमूल के काढ़े से वायु का अर्दितरोग जाय १ बिजौरे के रससे वायु का अर्दित जाय २ अथवा खरैटी, पीपरि, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठि इनके काढ़ेसे वायु का अर्दित जाय ३ उड़दके बड़ोंमें हींग, अदरक, लहसुन मिलाकर खाय और ऊपर से मांस का शोरुआ पिये तो वायु का अर्दित जाय ४ ॥

अथ पित्त के अर्दित का यत्न ॥

घृत का बस्तिकर्म करे अथवा दूध का सेवन करे तो पित्त का अर्दित दूर हो १ ॥

अथ कफ के अर्दित का यत्न ॥

वमन करानेसे कफ का अर्दित जाय १ अथवा तिलके तेल में लहसुन मिलाके खाय तो सब प्रकार का अर्दित तत्काल जाय २ ॥

अथ मन्यास्तम्भ का लक्षण ॥

दिनके सोने से, बहुत बैठने से, विकार को प्राप्तहुआ कफ वात से मिल कन्धे को मुड़ने न दे तो उसको मन्यास्तम्भ कहतेहैं ॥

अथ मन्यास्तम्भ का यत्न ॥

दशमूल के काढ़े से अथवा पञ्चमूल के काढ़े से मन्यास्तम्भ जाय १ अथवा तेल का मर्दन करके ऊपर से अरण्ड के पत्ते बांधे तो मन्यास्तम्भ जाय २ अथवा कुक्कुट के अण्डे के रसमें सेंधानोन और घृत मिलाय कन्धों में मर्दन करे तो मन्यास्तम्भ जाय ३ ॥

In Public Domain, Gumbal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ बाहुशोष का लक्षण ॥

कन्धों में रहनेवाली वायु कोपित हो भुजा को सुखा कर स्तम्भित करदेती है उसको बाहुशोष कहते हैं १ ॥

अथ बाहुशोष का यत्न ॥

पीछे उन्मादरोगमें लिखे हुए कल्याणघृत के सेवन से बाहुशोष रोग जाय १ अथवा खरैटी के काढ़े में सेंधानोन मिलाकर पिये तो बाहुशोष और मन्यास्तम्भ रोग जायँ ॥

अथ अपबाहुकरोग का लक्षण ॥

कन्धों की वायु कुपित होकर उसके बांधनेवाले कफ को सुखाय, नसों को खैंच कर अपबाहुक रोग को उत्पन्न करती है ॥

अथ अपबाहुकरोग का यत्न ॥

शीतल जल की नास दे तो अपबाहुकरोग जाय १ अथवा गुग्गुल, मोईजड़ी की जड़का काढ़ाकर उसमें गुग्गुल मिलाकर नास दे तो अपबाहुक रोग जाय २ अथवा उड़द के पानी की नास दे तो अपबाहुक रोग जाय ३ अथवा उड़द, अलसी, यव, कूट, सेला, कटेली, गोखरू, अरलू, कौंच की जड़, कपास, सन का बीज, कुलत्थ, बेर की जड़, सांठी की जड़, खीप की जड़, रास्ना, खरैटी की जड़, गिलोय, कुटकी इनको तेल में पकाकर उस तेलका मर्दन करे तो अपबाहुकरोग जाय। यह भावप्रकाश में लिखा है ४–इति माषतैल ॥

अथ विश्वाचीरोग का लक्षण ॥

हाथकी अंगुली के नीचे खुजलीहोऔर भुजा के पीछे खुजली होकर भुजा को निकम्मी करदे उसको विश्वाचीरोग कहतेहैं १॥

अथ विश्वाचीरोग का यत्न ॥

दशमूल, खरैटी, उड़द इनका काढ़ाकर उसमें तेल मिलाकर पिये तो विश्वाचीरोग जाय अथवा उड़द, सेंधानोन, खरैटी, रास्ना, दशमूल, हींग, खुरासानी बच, सोंठि इनको महीन

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पीस पानी में औटावे फिर पानी में तेल डालकर तेल को पकाव जब पानी जलजाय और तेल रहजाय तब उतार तेल का मर्दन करे तो विश्वाची, बाहुशोष, अपबाहुक, पक्षाघात इनको यह माषादि तैल दूर करता है २॥

अथ ऊर्ध्ववातरोग का लक्षण॥

कुपथ्य के सेवन से कुपित हुई अधोवायु मुख के कफ से मिल बारम्बार डकार बहुत लावे तो ऊर्ध्ववात रोग कहिये॥

अथ ऊर्ध्ववात का यत्न॥

सोंठि १० भाग, बिधारा १० भाग, हड़की छाल ५ भाग, असगन्ध १ भाग, भुनीहींग १ भाग, सेंधानोन १ भाग, निशोत ५ भाग इन सबकी बराबर चित्रक ले महीन चूर्णकर २॥ टंक गर्म जल के साथ ले तो ऊर्ध्ववात रोग जाय १॥

अथ आध्मानरोग का लक्षण॥

सम्पूर्ण पेट में अफरा और पीड़ा अधिक हो तथा अधोवायु रुकजाय उसको प्रत्याध्मान रोग कहते हैं॥

अथ आध्मानरोगका यत्न॥

इस रोग में लंघन करावे, पाचन और क्षुधा बढ़ने की औषधि देवे, बस्तिकर्म करावे अथवा पीपरि २॥ टंक, निशोत १० टंक, मिश्री १० टंक इनका चूर्ण कर २॥ टंक शहद के साथ खाय तो अफरा जाय। यह नारायण चूर्ण वृद्धवाग्भट्ट में लिखा है १ अथवा खुरासानी बच, कूट, सौंफ, भुनीहींग, सेंधानोन ये सब बराबर ले इनका चूर्णकर, कांजी से महीन पीस, गर्मकर सुहाता सुहाता पेटपर लेप करे तो अफरा दूर हो २ अथवा महानाराच रस से अफरा जाय सो लिखते हैं॥ हड़ की छाल १। टंक, किरमाला की गिरी १। टंक, आमला १। टंक, दात्यूणी १। टंक, कुटकी १। टंक, निशोत १। टंक, नागरमोथा १। टंक, थूहर का दूध २। टंक इन सबको महीन पीस ४ सेर पानी में औटावे जब

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पानी का अष्टमांश रहजाय तब जमालगोटे का छिलका १। टंक भर उतार महीन वस्त्र में बांध शनैः शनैः जमालगोटे को पचावे जब पानी जलजाय तब उसे काढ़ले पीछे जमालगोटा ८ भाग, सोंठि १ भाग, कालीमिरच २ भाग, पारा १ भाग, शोधी गन्धक १ भाग पहिले पारे और गन्धक की कजली करे उसमें ये औषध मिलाय १ पहर खरल करे फिर १ रत्तीप्रमाण की गोली बांधे। १ गोली नित्य शीतलजल से ले तो अफरा, शूल, आनाह, प्रत्याध्मान, उदावर्त्त, गोला और उदर के रोगों को यह महानाराच रस दूर करता है। इसके खाने से दस्त होचुकें तब मिश्री मिलाकर दही खवावे फिर चावल दही मिलाय अनुमान मुवाफ़िक़ उसमें सेंधानोन डाल थोड़ासा खवावे तो आध्मानरोग जाय ॥

अथ प्रत्याध्मान का लक्षण ॥

पसली और हृदय में तो अफरा न हो परन्तु नाभि से लेके पेटतक अफरा हो उसको प्रत्याध्मान कहिये ॥

अथ प्रत्याध्मान का यत्न ॥

लंघन करावे और पाचनादिक देवे तथा बस्तिकर्म करावे तो प्रत्याध्मान जाय ॥

अथ वातष्ठीला का लक्षण ॥

नाभि के नीचे पवन की गांठि पत्थरसी बँधकर मल-मूत्र को रोंकदे तो उसको वातष्ठीला कहते हैं ॥

अथ प्रत्यष्ठीला का लक्षण ॥

नाभिके नीचे पवन की गांठि पाषाण के सदृश बँधकर मल-मूत्र को रोंकदे और उस स्थानपर पीड़ा अधिक करे तो उसको प्रत्यष्ठीला कहते हैं ॥

अथ इन दोनों का यत्न ॥

भुनी हींग, पीपलामूल, धनियां, सफ़ेद जीरा, खुरासानी बच, चव्य, चित्रक, पाढ़, कचूर, अमलबेत, कालानोन, सेंधा-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

नोन, सांभरनोन, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, जवाखार, सज्जी, अनारदाना, हड़ की छाल, पुष्करमूल, डांसरा, झाऊ की जड़ इन सबको बराबर ले महीन पीस अदरक के रस की ३ पुट दे फिर इस चूर्ण को छाया में सुखाय २॥ टंक गर्म पानी के साथ ले तो वातष्ठीला, प्रत्यष्ठीला सब जायँ १॥

अथ तूनीरोग का लक्षण॥

मल-मूत्र के स्थान में रहनेवाली पवन गुदा और लिङ्ग में पीड़ा करे तो उसको तूनी कहते हैं॥

अथ प्रतितूनी का लक्षण॥

गुदा और लिङ्ग में रहनेवाली पवन गुदा और लिङ्ग में पीड़ा कर पेडू में पीड़ा करे तो उसको प्रतितूनी कहते हैं॥

अथ इन दोनों का यत्न॥

इन दोनों रोगों में तेल की बस्ति दे तो दोनों तूनी, प्रतितूनी रोग जायँ १ अथवा सोंठि, पीपरि, कालीमिरच, भुनी हींग, जवाखार, सज्जी, सेंधानोन इनको महीन पीस २॥ टंक गर्म पानी से ले तो तूनी, प्रतितूनीरोग जायँ २॥

अथ त्रिकशूल का लक्षण॥

कमर के तीनों हाड़ों में और बांसे के हाड़ में शूल हो उस को त्रिकशूलरोग कहते हैं॥

अथ त्रिकशूल का यत्न॥

बालूरेत से सेंक करावे अथवा अरनेउपले की राख से सुहाता सुहाता सेंक करावे तो त्रिकशूल जाय अथवा गूल्ही गोली की जड़ का छिलका, असगन्ध, झाऊ का बक्कल, गिलोय, शतावरि, गोखुरू, रास्ना, निशोत, सौंफ, कचूर, अजवाइन, सोंठि इन सबको बराबर ले और सबकी बराबर शोधा गुग्गुल और गुग्गुल से चौथाई घृत ले सबको एकरस कर ५ माशे नित्य दारू के अथवा गर्मपानी वा मांस के शोरुवे के साथ खाय तो त्रिकशूल,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जानुग्रह, भुजास्तम्भ, सन्धिगत वायु, हाड़ टूटगया हो, खोड़ापन, गृध्रसी, पक्षाघात इन सब रोगों को यह त्रयोदशाङ्गगुग्गुल दूर करे—इति त्रयोदशाङ्गगुग्गुल॥

अथ बस्तिवात का लक्षण॥

पेडू की पवन कुपित होकर मूत्र को अच्छे प्रकार उतरने न दे और रोगों को उत्पन्न करे उसको बस्तिवातरोग कहते हैं १॥

अथ बस्तिवात का यत्न॥

खरैटी की जड़ का बक्कल और उसीकी बराबर मिश्री मिलाय २॥ टंक गौ के दूध के साथ खाय तो बारम्बार मूतने का रोग जाय १ अथवा त्रिफले का चूर्ण कर उसके बराबर सार मिलाय ४ माशे शहद के साथ ले तो मूत्रका रोग जाय २॥

अथ मूत्र रुकगया हो उसका यत्न॥

जवाखार ५ माशे मिश्री के साथ ले तो मूत्रबन्ध छूटे १ अथवा पेठे के बीज, तिवरसी के बीज इन दोनों को पानी में पीस २ माशे जवाखार डालकर मिश्री के साथ पिये तो मूत्रबन्ध छूटे २ अथवा चीनिया कपूर की बत्ती लिङ्ग वा भगमें दे तो मूत्रबन्ध छूटे ३॥

अथ गृध्रसीरोग का लक्षण॥

पहिले कूले में पीड़ा हो पीछे अङ्ग में पीड़ा हो फिर पैरों को स्तम्भित करदे और पैर बहुत हौले हौले उठें उसको गृध्रसी रोग कहते हैं। वह दो प्रकारका है एक वात का, दूसरा वातकफ का। वात के में तो पीड़ा अधिक हो, शिर टेढ़ा होजाय और पैर, जंघा और सन्धि सन्धि फड़क फड़क कर स्तम्भित होजायँ और वात, कफ की गृध्रसी में शरीर भारी रहे, अग्नि मन्द हो जाय, तन्द्रा आवे, लार बहुत पड़ें॥

अथ गृध्रसी का यत्न॥

वमन करानेसे, बस्तिकर्म से गृध्रसी रोग जाय १ शरीर को

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

हड़के जुलाब से निराम कर फिर बस्तिकर्म करे २ अथवा अरण्ड का तेल और गोमूत्र मिलाकर १ महीने तक पिये तो गृध्रसीरोग जाय ३ अथवा तेल, घृत, अदरक का रस, बिजौरेका रस, चूक, गुड़ ये अनुमान मुवाफ़िक़ मिलाय १ महीने तक पिये तो गृध्रसीरोग जाय तथा इससे कटि और जंघा की पीड़ा, त्रिकशूल, गोला, उदावर्त ये भी रोग जाते हैं ४ अथवा अरण्डी की मींगी की दूध में खीर कर १ महीनेतक खाय तो गृध्रसीरोग, फ़ोते का शूल दूर हो ५ अथवा अरण्ड की गिरी, कटेली इनका काढ़ा कर इसमें तेल मिलाय पिये तो गृध्रसी, फ़ोतों का शूल दूर हो ६ अथवा बिड़नोन, कालानोन इनको महीन पीस गोमूत्र और अरण्ड के तेल में मिलाय पिये तो कफवायु की गृध्रसी जाय ७ अथवा अड़ूसा, दात्यूणी, किरमाला की गिरी इनका काढ़ा कर उसमें अरण्ड का तेल मिलाकर पिये तो गृध्रसीरोग जाय ८ अथवा निर्गुण्डी के पत्तों के काढ़े से गृध्रसीरोग जाय ९ अथवा रास्ना ५ टकेभर, गुग्गुल इन दोनों को पीसकर घृत में ४ माशे की गोली बांधे। १ गोली नित्य खाय तो गृध्रसीरोग जाय १० अथवा रास्ना, गिलोय, किरमाला की गिरी, देवदारु, गोखरू, अरण्ड, साठी की जड़ सोंठि इनका काढ़ा कर दे तो गृध्रसीरोग, पेड़ू और पसली का शूल इतने रोगों को यह रास्नादिक काढ़ा दूर करता है ११—इति रास्नादिक क्वाथ॥

अथ खोड़ा पंगुलारोग के लक्षण॥

कटि में रहनेवाली वात जांघ की नसों को पकड़ एक पैर को स्तम्भित करदे उसको खोड़ा कहते हैं और कटि में रहनेवाली वात जांघ की नसों को ग्रहणकर दोनों जांघों का नाश करे और चलने न दे उसको पंगुला कहते हैं॥

अथ इन दोनों का यत्न॥

जुलाब के लेनेसे और औषधों के गर्म पसीने से, योगराज

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

आदि गुग्गुल के खाने से, तैलादिक के मर्दन से, बस्तिकर्म से ये दोनों रोग जायँ ॥

अथ कलापखञ्जरोग का लक्षण ॥

चलते में शरीर कांपै और लँगड़ासा दीखे तो जानना कि नसों ने अपना ठिकाना छोड़ दियाहै उसको कलापखञ्जरोग कहते हैं ॥

अथ इसका यत्न ॥

*विषगर्भादिक तैलके मर्दन से यह रोग जाय ॥

अथ क्रोष्टुशीर्षक रोग का लक्षण ॥

वात और रुधिर के विकार से पैरों में सूजन हो, पीड़ा अधिक हो और स्यार के मस्तक के सदृश कठोर होय उसको क्रोष्टुशीर्षकरोग कहते हैं ॥

अथ इसका यत्न ॥

गिलोय २॥ टंक, त्रिफला १० टंक इन दोनों का काढ़ाकर उसमें २॥ टंक गुग्गुल मिलाय १ महीनेतक पिये तो यह रोग जाय १ अथवा ऽ। दूध, १० टंक अरण्ड का तेल डालकर पिये तो यह रोग दूर हो २ अथवा बिधारे का चूर्ण २॥ टंक गौके ऽ। दूध के साथ पिये तो यह रोग जाय ३ अथवा किशोरगुग्गुल के सेवनसे यह रोग दूर हो ४ ॥

अथ पैर दूखने का यत्न ॥

तेल का मर्दन करके ऊपरसे पिसी सोंठि का मर्दन करे फिर उसके ऊपर तेल चुपड़ अरण्ड के पत्ते गर्मकर बांध दे तो पैर दूखने से बंद हों अथवा कोंच के बीज २॥ टंक दही के साथ ७ दिन अथवा १४ दिन ले तो पैर दूखना बन्द हो ॥

अथ खल्ली का यत्न ॥

कूट, सेंधानोन इनका काढ़ा कर इस काढ़ेके रसमें तेल और अमलबेत के रस को डालकर तेल को मधुरीआंच से पकावे जब

* सिंगीमुहरा की टिकड़ी १ छटांककी ऽ। भर तैल में पकाकर मर्दन करना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

रस जलकर तेलमात्र रहजाय तब इस तेल का मर्दन करे तो खल्लीरोग जाय ॥

अथ वातकण्टकरोग का लक्षण ॥

ऊंचे नीचे स्थानपर पैर रखने में पीड़ा हो पीछे टखने में पीड़ा हो आवे उसको वातकण्टकरोग कहते हैं ॥

अथ इसका यत्न ॥

टखने में पछने से रुधिर निकलवावे तो वातकण्टकरोग जाय १ अथवा अरण्ड का ५ टंक तेल १ महीनेतक नित्य पिये तो यह रोग जाय २ ॥

अथ पाददाह का लक्षण ॥

वात, पित्त, रुधिर ये तीनों मिल पैरों के तलुओं में दाह करें उसको पाददाहरोग जानिये १ ॥

अथ पाददाह का यत्न ॥

मसूर की दाल को महीन पीस औटावे फिर अत्यन्त ठंढीकर उसमें आटा सान पांच सातबार पतला लेप करे तो पाददाह जाय १ अथवा मक्खन को पैरों के तलुओं में मर्दनकर अग्निसे तपावे तो यह रोग जाय २ अथवा अंडीका गौ के दूध में लेप करे तो अत्यन्त भी दाह जाय ३ ॥

अथ पादहर्ष का लक्षण ॥

जिसके दोनों पैर झंझनाहट कर सो जायँ और कोई प्रकार दाबने से जाग उठें उसको पादहर्ष रोग जानिये १ ॥

अथ इसका यत्न ॥

कफ और वात का दूर करनेवाला यत्न करे तो यह रोग जाय १ ॥

अथ पैरों की हड़फूटन का यत्न ॥

तिल, सांभरनोन, हल्दी ये बराबर ले इनको धतूरे के बीज के पानी में पीसे और इन तीनों के बराबर गौ का मक्खन ले

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

फिर इनको पकावे और पकते ही में चौगुना गौका मूत्र डाले ये सब जल जायँ और घृतमात्र रहजाय तब वह घृत पैरों के तलुओं में मर्दन करे तो पैरों की हड़फूटन जाय ॥

अथ पित्तसहित वात के आक्षेपरोगका लक्षण ॥

पित्त के स्थान जो उदरादिक उनमें रहती जो वात उसको स्तम्भितकर दण्डकी भांति करदे अथवा कफ में मिली जो वायु सो धमनी नाड़ी में रहके शरीर को स्तम्भित करदे वह कष्टसाध्य है ॥

अथ केवल वायु के आक्षेप का लक्षण ॥

वायु हाथ, पैर, मस्तक, पीठ, गांठ इनको स्तम्भित करदे और इनमें पीड़ा भी करे तो यह असाध्य है ॥

अथ चोट लगने से उत्पन्न वात के आक्षेप के लक्षण ॥

जिस स्थान में चोट लगी हो उसमें उत्पन्न जो वायु वह उसके सदृश साध्य जानिये ॥

अथ इसका यत्न ॥

खरैटी की जड़, दशमूल, यव, बेल की जड़, कुलत्थ इन सबका अष्टावशेष काढ़ाकर तेल मिलाय मधुरीआंच से पकाय तेल तैयार करे और ये औषधियां और मिलावे। सेंधानोन, अगर, राल, देवदारु, मंजीठ, पद्माक, कूट, इलायची, बालछड़, पत्रज, तगर, गौरीसर, शतावरि, असगन्ध, सौंफ, साठी की जड़ यह तेल के प्रमाण मुवाफ़िक़ डाल पकावे फिर इस महाबला तेल का मर्दन करे तो सबप्रकार के आक्षेप के रोग, हिचकी, श्वास, अन्त्रवृद्धि, क्षीणता, टूटाहाड़, स्वेद इन सब रोगों को यह महाबला तेल दूर करता है ॥

अथ अन्तरायामरोग का लक्षण ॥

पैर की अंगुली, टखना, पेट, हृदय, गला इनमें रहनेवाली वात बड़ी नसों के समूह को शरीर के भीतर पकाती है फिर उस-

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

के नेत्र फटकर निश्चल से होजाते ह और डाढ़ मुड़े नहीं, पसली टूटीसी होजाय, कफयुक्त शरीर कमान की भांति टेढ़ा होजाय जिसमें ये रोग हों उसको अन्तरायाम रोग जानिये ॥

अथ बाह्यायामरोग का लक्षण ॥

बहुत बादी वस्तु खाने से कुपित हुई वात शरीर की सब नसें, कन्धे, पीठ इनको सुखाय शरीर को कमान के सदृश टेढ़ा करदेती है और उसके हृदय और जांघ को वह वात तोड़ डालती है ये लक्षण जिसमें हों उसके बाह्यायामरोग कहिये और जो अर्दितरोग का यत्न पीछे लिखा है वही इस रोग का भी जानना चाहिये ॥

अथ धनुस्तम्भ का लक्षण ॥

कमान के समान शरीर होजाय, शरीर का वर्ण और का और होजाय, मुख मिचजाय, देह शिथिल होजाय, चैतन्यता जाती रहे, पसीना आवे उसको धनुस्तम्भरोग कहते हैं इस रोगवाला १० दिन जिये ॥

अथ कुब्जकरोग का लक्षण ॥

कोप को प्राप्त वात हृदय को ऊँचा करके हृदय में पीड़ा अधिक करे उसको कुब्जकरोग कहते हैं ॥

इन तीनों रोगों का दूर करनेवाला प्रसारणी तैल इसी प्रकरण में लिखा है उससे धनुस्तम्भ, बाह्यायाम, अन्तरायाम और सर्व प्रकार की वातव्याधि दूर होती है ॥

अथ अपतन्त्ररोग का लक्षण ॥

बादी वस्तु के सेवनसे कोप को प्राप्त हुई वात अपने स्थान को छोड़कर, हृदय में जाकर शिर और कनपटी में पीड़ा करती है और कमान की भांति शरीर को नवायदेती है तब वह मोह को प्राप्त होकर बड़े कष्ट से ऊपर को श्वास ले और नेत्र फटें या

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मिचजायँ और कण्ठ कबूतर के सदृश होजाय, संज्ञा जाती रहे जिसके ये लक्षण हों उसके अपतन्त्ररोग जानिये ॥

अथ अपतन्त्ररोग का यत्न ॥

कालीमिरच, सहँजने के बीज, बायबिड़ङ्ग, अफ़ीम, महुआ ये सब बराबर ले महीन पीस नास ले तो अपतन्त्ररोग जाय १ अथवा हड़की छाल, खुरासानी बच, राल, सेंधानोन, अमलबेत इनको महीन पीस २॥ टंक घृत के साथ अथवा अदरक के रस के साथ ले तो अपतन्त्ररोग जाय २॥

अथ अपतानकरोग का लक्षण ॥

नेत्र फटे से होजायँ, संज्ञा जाती रहे, कण्ठ में कफ बोले, संज्ञा होआवे तब चैन पड़े और अज्ञान आवे तब और भी मोह हो यह भयङ्कर रोग है और यह स्त्री के गर्भपात से होता है और पुरुष के बहुत रुधिर निकलने से होता है अथवा भारी चोट लगने से होता है। यह रोग असाध्य है ॥

अथ इसका यत्न ॥

दशमूल के काढ़े में पीपरि डालके पिये तो अपतानकरोग जाय १ अथवा तेल के मर्दन से जाय २ अथवा सूखी वस्तु की नास ले तो यह रोग जाय ३ अथवा घृत के पीने से यह रोग जाय ४ अथवा स्नेह की वस्तु लेने से यह रोग जाय ५॥

अथ पक्षाघात का लक्षण ॥

किसी कारण से वात कुपित होकर मनुष्य के आधे शरीर को पकड़ सब शरीर की नसों को सुखादेती है और आधे शरीर की नसों को तो अत्यन्तही ढीली करदेती है अथवा सब शरीर की नसों को अत्यन्त ढीली और निकम्मी करदेती है उन नसों का ज्ञान जाता रहता है ये लक्षण हों तो उसको पक्षाघातरोग कहते हैं। और दहिना अङ्ग अथवा बायां अङ्ग निर्जीव होजाय वह पक्षाघात दो प्रकार का है। एक तो पित्तवात का दूसरा कफवात

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

का। शरीर के बाहर और भीतर दाह और मूर्च्छा हो तो पित्त-वातका पक्षाघात जानिये और शरीर के भीतर और बाहर शीत लगे, सूजन हो, शरीर भारीरहे तो कफवात का पक्षाघात जानिये॥

अथ पक्षाघात का साध्य लक्षण॥

केवल वात से पक्षाघात हुआ हो तो कष्टसाध्य जानिये॥

अथ पक्षाघात का असाध्य लक्षण॥

गर्भिणी अथवा प्रसूता स्त्री के पक्षाघात हो तो असाध्य जानिये अथवा बालक, वृद्ध, क्षीण पुरुष, घाववाले के, जिस-का रुधिर निकलगया हो उसके और शून्यशरीरवाले के पक्षाघात हो तो भी असाध्य जानिये॥

अथ पक्षाघात का यत्न॥

उड़द, कौंच के बीज, अरण्ड की जड़, खरैटी की जड़ इन-के काढ़े में भुनी हींग, सेंधानोन मिलाकर पिये तो पक्षाघात जाय १ अथवा पीपलामूल, चित्रक, पीपरि, सोंठि, रास्ना, सेंधा-नोन, उड़द इनका काढ़ाकर इस काढ़ेके रस में तेल पकावे जब रस जलजाय और तेलमात्र रहजाय तब मर्दन करे तो पक्षाघात जाय २इतिग्रन्थकादितैल॥ अथवा उड़द, कौंचके बीज, अतीस, अरण्ड की जड़, रास्ना, सौंफ, सेंधानोन इनको महीन पीस काढ़ाकर इस काढ़ेमें तेल पकावे जब रस जल जाय और तेल रहजाय तब मर्दन करे तो पक्षाघातरोग जाय ये सब यत्न भाव-प्रकाश में लिखेहैं ३—इति माषादितैल॥ अथवा कौंच के बीज, खरैटी की जड़, अरण्ड की जड़, उड़द, सोंठि, सेंधानोन इनका काढ़ाकर छानके पिये तो पक्षाघात जाय। यह वैद्यविनोदमें है ४ अथवा महुए का रस ५ टंक, गुग्गुल ५ टंक, बीजाबोल ५ टंक, बकरी की मींगनी (बीट) ५ टंक, कटेली का रस ५ टंक इनको महीन पीस शरीर में लेप करे फिर कमर बराबर गढ़ा खोद गढ़ेमें अग्नि जलाय लाल करे और गढ़ेके आस पास और नीचे आक

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

के पत्ते डाले फिर उस पक्षाघात के लेप किये हुए मनुष्य को उस गढ़े में बैठावे जब उसके पसीना आजाय तो पक्षाघात उसी दिन जाता रहे ५ ॥

अथ निद्रानाशरोग का यत्न ॥

भुनी भङ्ग का महीन चूर्ण पीस रात्रि में अनुमान मुवाफ़िक़ शहद से चाटे तो निश्चय निद्रा आवे और अतीसार, संग्रहणी भी जाय और क्षुधा अधिक लगे १ अथवा पीपलामूल का चूर्ण गुड़ के साथ ले तो नष्ट हुई भी निद्रा आवे २ अथवा कागल-हरी की जड़ शिर में बांधे तो निद्रा आवे ३ अथवा कोमल हाथों से पैर की पिंडली दाबे तो निद्रा आवे ४ अथवा बैंगन के भरते में शहद मिलाय कर खाय तो निद्रा तत्काल आवे ५ अथवा अरण्ड का तेल और अलसी का तेल इन दोनों को बराबर ले कांसी की थालीमें खूब घिसकर अंजन करे तो निद्रा अधिक आवे ६ अथवा बकरी के दूध से पैरके तलुये धोवे तो निद्रा आवे और तलुओं का दाह अच्छा हो ७ अथवा कस्तूरी को स्त्री के दूध में महीन पीस अंजन करे तो बहुत दिन की गई हुई भी निद्रा आवे ८ अथवा सौंफ और भङ्ग को महीन पीस बकरी के दूध में गर्म सुहाता सुहाता लेप करे तो निद्रा आवे। ये सब यत्न वैद्यरहस्य में लिखे हैं ९ ॥

अथ सर्वाङ्ग में वात हो उसका लक्षण और यत्न ॥

सर्व अङ्गों में कोप को प्राप्तहुई वात सम्पूर्ण अङ्गों में पीड़ा करती है। वह सर्वाङ्गवात विषगर्भादि तैलों से दूर होती है ॥

अथ सातों धातुओं में प्राप्तहुई वात का पृथक् पृथक् लक्षण ॥

त्वचा को शून्य और पीला करके शरीर को कृश और पीड़ित करती है ॥

अथ रुधिर में प्राप्तहुई वात का लक्षण ॥

शरीर में पीड़ा अधिक हो, वर्ण औरसे और होजाय, शरीर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कृश और भारी हो, अरुचि हो, मुखपर कील हो, भोजन पचै नहीं २ ॥

अथ मांस, मेद, हाड़ों में प्राप्तहुई वात का लक्षण ॥

मांसमें प्राप्त वायुसे शरीर भारी हो, पीड़ा हो, स्तम्भित हो ३ तथा मेदगत वायु शरीर में फोड़े करे ४ और हाड़ों में रहनेवाली वायुसे संधि संधि में पीड़ा हो, मांस जलजाय, निद्रा आवे नहीं ५ और मज्जा में प्राप्त वात को भी हाड़ की वात के समान जानिये ६ ॥

अथ वीर्यमें प्राप्तहुई वात का लक्षण ॥

स्त्रीसङ्ग करे तो वीर्य तत्काल गिरे, गर्भ को बिगाड़े अथवा न बिगाड़े ७ ॥

अथ इन सबका यत्न ॥

रस में बिगड़ी वातवाले के तेल का मर्दन करे १ और रक्त में बिगड़ी वायुवाले के शीतल लेप करे २ अथवा जुलाब देके वा रुधिर निकलवाके शान्त करदे ३ मांस मेदा में रहनेवाली वात को जुलाब से शान्त करिये ४ हाड़ों की बिगड़ी वायु को चिकनी वस्तु खिलाने से और लगाने से शान्त करिये ५ और मज्जामें बिगड़ी वात भी चिकनी वस्तु के खाने और लगाने से अच्छी होती है ६ वीर्यमें बिगड़ी वातवाला पुष्टता की औषध खानेसे अच्छा होता है ७ ॥

अथ कोष्ठमें प्राप्तहुई वात का लक्षण ॥

उदर में रहनेवाली दुष्ट वायु मलमूत्र को रोंककर हृदयरोग, गुल्म, बवासीर, पसली का शूल इन सबको उपजाती है ॥

अथ इसका यत्न ॥

पाचनादिक औषधसे इसका यत्न करना अथवा दूध पिलाना ॥

अथ आमाशय में रहनेवाली वात का लक्षण ॥

हृदय, पसली, पेट, नाभि इनमें पीड़ा हो, तृषा लगे, डकार

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बहुत आवे, विसूचिका और खांसी हो तथा कण्ठ, मुख सूख जाय, श्वास हो ॥

अथ इसका यत्न ॥

दीपन और पाचन की औषध देवे, लङ्घन और वमन करावे, जुलाब करावे, खाने को पुराने मूंग, चावल दे अथवा रोहिष (रोहीड़ा), हड़ की छाल, कचूर, पुष्करमूल, बेल की गिरी, गिलोय, देवदारु, सोंठि, खुरासानी बच, अतीस, पीपरि, बायबिड़ंग ये सब बराबर ले इनका काढ़ा कर दे तो आमाशय की वायु जाय ॥

अथ पक्वाशय में रहनेवाली वायु का लक्षण ॥

आंत बोले, पेट में शूल और अफरा हो, मल-मूत्र कष्ट से उतरे, पीठ में पीड़ा हो ॥

अथ गुदा में रहनेवाली दुष्टवात का लक्षण और यत्न ॥

मल-मूत्र पवन से रुकजाय, पेट में शूल और अफरा हो, पथरी का रोग होजाय, जांघों में पीड़ा हो, यह रोग बस्तिकर्म से दूर होता है ॥

अथ हृदय में प्राप्तहुई वात का यत्न ॥

गिलोय, मिरच इन दोनों को महीन पीस गुनगुने जलसे पिये तो यह वात जाय १ अथवा देवदारु और सोंठि को महीन पीस गुनगुने जल से पिये तो यह वात जाय २ अथवा असगन्ध, बहेड़े की छाल को महीन पीस गुड़में मिलाय खाय तो यह वातजाय३॥

अथ कर्णादिक में प्राप्त वात का लक्षण और यत्न ॥

यह वात कान आदि इन्द्रियों की नाशक है सेंकने और तेल मलने से जाती है ॥

अथ शरीर की नसों में प्राप्त वात का लक्षण और यत्न ॥

नसों में शूल होकर नसें इकट्ठी होजायँ तो फ़स्द खुलवाना चाहिये ॥

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ सन्धि में प्राप्त हुई वात का लक्षण और यत्न ॥

वातकी पीड़ा होकर सन्धियां बिगड़जायँ तो सेंकने और तेल मलने से अच्छी होती हैं। अथवा इन्द्रायण की जड़ और पीपरि २॥ टंक गुड़ में खाय तो सन्धिगत वात जाय ॥

अथ वातव्याधि का सामान्य यत्न ॥

अथ नारायणतैलकी विधि ॥

असगन्ध, खरैटीकी जड़, बेलकी गिरी, पाटल, दोनों कटेली, गोखुरू, गँगेरन की छाल, नींब की छाल, अरलू, सांठी की जड़, खीप, अरणी इन सब औषधों को १० टके भरले और १६ सेर पानी में डाल धीरे २ पकावे जब चतुर्थांश काढ़ा रह जांय तब उसमें ४ सेर तिलका तैल और तैलसे चौगुना गौका दूध डाले फिर इसको मधुरीआंच से पकावे और पकतेही में कूट १ टकेभर और इलायची, रक्तचन्दन, खुरासानी बच, बालछड़, शिलाजीत, सेंधानोन, असगन्ध, खरैटी, रास्ना, सौंफ़, इन्द्रायण, सरिवन, पिथवन, माषपर्णी (बनउड़दी), मुद्गपर्णी (बनमूंग) ये सब दो दो टकेभर डाले जब मधुरीआंच से सब रस जलकर तेलमात्र रहजाय तब उतारकर छान ले। इस नारायणतैल को मर्दन करे अथवा बस्तिकर्म करे तो पक्षाघात, हनुस्तम्भ, मन्यास्तम्भ, गलग्रह, बधिरता, गतिभङ्ग, कटिग्रह, गात्रशोष, नष्टशुक्र, विषमज्वर, अन्त्रवृद्धि, शिरोग्रह, पार्श्वशूल, गृध्रसी और संपूर्ण वातरोग दूर होतेहैं—इति नारायणतैल॥

अथ योगराजगुग्गुल की विधि ॥

सोंठि, पीपरि, चव्य, पीपलामूल, चित्रक, भुनी हींग, अजमोद, सरसों, दोनों ज़ीरे, सम्हालू, इन्द्रयव, पाढ़, बायबिड़ंग, गजपीपरि, कुटकी, अतीस, भारंगी, खुरासानी बच, मरुआ, पत्रक, देवदारु, कूट, रास्ना, नागरमोथा, सेंधानमक, इलायची,

In Public Domain, Chanakal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

गोखुरू, हड़, धनियां, बहेड़ा, आमला, दालचीनी, खस, जवाखार ये सब समान भाग ले चूर्ण करे और चूर्ण के समान शुद्ध गुग्गुल डाले फिर खरल और मूसले को घी से चुपड़कर सबको कूट-कर एकरस करे फिर चार चार माशे की गोली बनाय घृत के चिकने बासन में धर रक्खे फिर रास्ना, साठी की जड़, सोंठि, गिलोय, अरण्ड की जड़ इनके काढ़े से इस योगराजगुग्गुल की एक गोली ले तो वात के सब रोग जायँ और किरमाला-पञ्चक के काढ़े से ले तो कफके रोग जायँ तथा दारुहल्दी के काढ़े के साथले तो प्रमेहके रोग जायँ एवं गोमूत्रसे ले तो पाण्डुरोग जाय और शहदके साथ ले तो वात और रक्तके रोग जायँ तथा पुनर्नवादि काढ़ेसे ले तो सब उदरके रोग जायँ। गुग्गुलका सेवन करनेवाला खटाई आदि न खाय—इति योगराजगुग्गुल की विधि॥ अथवा लहसुन के १ टकेभर रसमें बराबर का तेल मि-लाय, अनुमान मुवाफ़िक़ सेंधानोन डाल पिये तो वायुके सब रोग जायँ अथवा दूध के साथ वा घृत के साथ अथवा मांसके शोरुबे के साथ लहसुन १४ दिन तक खाय तो सबप्रकार की वात जाय और विषमज्वर, शूल, गोला, अग्नि की मन्दता, फिया, शिर का रोग, वीर्यरोग इनको यह लहसुन पूर्वोक्त औषधियों के योग से दूर करता है—इति लहसुनकल्प॥ अथवा रास्ना, धमासा, खरैटी की जड़, अरण्ड की जड़, देवदारु, कचूर, खुरा-सानी बच, अड़ूसा, हड़ की छाल, चव्य, नागरमोथा, साठी की जड़, गिलोय, बिधारा, सौंफ़, गोखुरू, असगन्ध, अतीस, किरमाला की गिरी, शतावरि, बड़ी पीपरि, सहँजने का छिलका, धनियां, दोनों कटेली ये सब बराबर ले इनका काढ़ा करे इसके साथ योगराजगुग्गुल ले तो सब प्रकार के वातविकार जायँ। यह भावप्रकाशमें लिखा है—इति महारास्नादि क्वाथ॥ अथवा थूहर, अरण्ड, बकायन, सम्हालू, सहँजना, कनेर इन सबके

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पत्तोंका रस और रससे चौथाई तेल डाल पकावे फिर इसमें सोंठि डाले जब ये जलजायँ और तेलमात्र रहजाय तब इस तेलका मर्दन करे तो सबप्रकार की वात जाय–इति अष्टाङ्गतैल ॥

अथ विषगर्भतैल ॥

धतूरेकी जड़, निर्गुण्डी, कड़ुवी तूंबी की जड़, अरण्ड की जड़, असगन्ध, पँवाड़, चित्रक, सहँजने की जड़, कागलहरी, करिहारी की जड़, नींब की छाल, बकायन की छाल, दशमूल, शतावरि, काकमाची (मकोय), गौरीसर, बिदारीकन्द, थूहर का पत्ता, आक का पत्ता, सनाय, दोनों कनेरों की छाल, आँधीझाड़ा, खीप ये सब औषधें तीन तीन टकेभर ले और इन औषधियों की बराबर काले तिल का तेल और इतनाही अरण्ड का तेल ले और इसमें चौगुना पानी डाले फिर सब औषध कूटकर इसमें मिलाय मधुरी आंचसे पकावे जब ये सब औषधें जल समेत जल जायँ और तेलमात्र रहजाय तब उतारले फिर इसमें सोंठि, मिरच, पीपरि, असगन्ध, रास्ना, कूट, नागरमोथा, खुरासानी बच, देवदारु, इन्द्रयव, जवाखार, पांचोंनोन, नीलाथोथा, कायफल, पाढ़, भारंगी, नौसादर, गन्धक, पुष्करमूल, शिलाजीत, हरताल ये सब औषधें धेले धेले भर ले और सिंगीमुहरा १ टके भर ले इन सबको महीन पीस तेलमें डाले फिर इस तेल को मर्दन करे तो सब वात के रोग दूर हों और कुक्षि, भृकुटी, पीठ, जांघ और सन्धि सन्धि की सूजन और गृध्रसीरोग, शिर का रोग, हड़फूटन, कर्णशूल, गण्डमाला इन सब रोगों को यह विषगर्भतैल दूर करता है–इति विषगर्भतैल ॥

अथ महासुगन्धित लक्ष्मीविलासतैल ॥

मंजीठ, देवदारु, चीढ़, कटेली, बच, तज, पत्रज, शोधी गन्धक, कचूर, हड़की छाल, बहेड़ेकी छाल, आमला, नागरमोथा ये सब टके टके भर ले पीस औटाय रस निकाले फिर इस

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

रसमें १ सेर तेल डालकर मधुरी आंच से पकावे जब रस जलकर तेलमात्र रहजाय तब इस तेलमें बालछड़, मूर्वा (मुरहठी), मेढ़ल, चम्पे की जड़, तज, पीपलामूल, नेत्रबाला, कालानोन ये सब दो दो टके भर ले और लोहबान, बेर, यव, असगन्ध, नखछड़ ये सब दो दो टके भर ले और इलायची, लवङ्ग, सफ़ेद चन्दन, जायफल की कली, कंकोल, नागकेसर ये सब पैसे पैसे भर और कस्तूरी २ टंक लेकर सबको महीन पीस तेलमें मधुरी आंच से पकावे जब सब रस और औषध जलकर तेलमात्र रह जाय तब इसमें २ टंक कपूर पीसकर डाले फिर इसका मर्दन करे तो सबप्रकार के वातरोग और सब प्रमेह, सूजन, गोला इन सबको यह तेल दूर करे। यह चक्रदत्तमें लिखाहै–इति महासुगन्धित लक्ष्मीविलासतैल॥ अथवा सोंठि ७ टकेभर और इसके बराबर एक लहसुन की पोटी ले सोंठि को महीन पीस बराबर के घृतमें भून ले फिर लहसुन को पीस उसमें मिलाय चोखा शहद ७ टकेभर इसमें डाले फिर इन सबको एक रसकर एक टकेभर नित्य खाय तो पक्षाघात, हनुस्तम्भ, कटिभङ्ग, भुजों की पीड़ा और सब वायु के रोगों को यह लहसुन दूर करता है १॥

अथ विजयभैरवतैल की विधि॥

मालकांगनी, असालू, कालाज़ीरा, अजवाइन, मेथी, तिल ये सब बराबर ले और तेलकी घानीमें इनका तेल निकलवाकर उस तेल का मर्दन करे तो सब वात के रोग जायँ १–इति विजयभैरवतेल॥ अथवा पारा, गन्धक, हरताल, मैनसिल ये सब बराबर ले तीन दिनतक कांजीमें महीन पीस फिर एक हाथ कपड़े में इन चारों का लेप करे फिर उस कपड़े की बत्तीकर उसपर सूत लपेटे फिर उसपर चौगुना तिल का तेल डालकर उस बत्ती को नीचीकर जला दे उसके नीचे लोहे का पात्र रक्खे उसमें जो टपके का तेल पड़े उसे जुदे पात्र में भरले फिर इस विजयभैरव-

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तैल का मर्दन करे तो सर्वप्रकार की वातका रोग जाय–इति विजयभैरवतैल ॥

अथ विजयभैरवरस ॥

हड़ की छाल ३ टकेभर, चित्रक ३ टकेभर और इलायची, तज, पत्रज, नागरमोथा ये चारों पैसे पैसे भर ले और सम्हालू ५ टंक, नागकेसर २ टंक, सोंठि १० टंक, कालीमिरच १० टंक, पीपरि १० टंक, पीपलामूल १० टंक, शोधा सिंगीमुहरा १० टंक, सार १० टंक, पारा १० टंक, शोधी गन्धक ५ टंक पहले पारे और गन्धक की कजली करे फिर उस कजली में ये सब औषधें डाले फिर इन सब ओषधियों में पुराना त्रिवर्षी गुड़ ५० टकेभर मिलाय एक रस करे फिर घृत में इसकी बेरके प्रमाण गोली बनाय घृतके बासन में रक्खे। फिर १ तथा २ या ३ गोली नित्य दो महीने तक खाय तो कफ के और पित्तके सब रोग जायँ और इस रसको ४ महीने तक सेवन करे तो वायु के सब रोग जायँ, एक वर्ष सेवन करे तो सब रोग जायँ, दो वर्ष सेवन करे तो वृद्धता दूर होकर तरुण होजाय, तीन वर्ष सेवन करे तो आयुर्बल बढ़े और शरीर नीरोग रहे–इति विजयभैरवरस ॥

अथ वातारिरस ॥

पारा १ भाग, शोधी गन्धक २ भाग, त्रिफला ३ भाग, चित्रक ४ भाग, शोधा गुग्गुल ५ भाग इन सबको अरण्डके तेल में १ दिन तक खरलकर फिर इसमें हिंग्वष्टक चूर्ण डाले और एक दिन खरलकर फिर इसकी गोली २॥ टंक प्रमाण बांधे। फिर लवङ्ग, सोंठि और अरण्ड की जड़ के काढ़े से नित्य प्रति १ महीने तक खाय ब्रह्मचर्यमें रहे तो सबप्रकार की वात जाय तथा साधारण वात तो इसके ७ दिन सेवन करनेही से दूर हो–इति वातारिरस ॥

CC-0. Vasishtha Tripathi Collection. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ समीरपन्नगरस ॥

शोधी गन्धक, शोधा सिंगीमुहरा, सोंठि, कालीमिरच, छोटी पीपरि, पारा ये सब बराबर ले फिर पारे और गन्धक की कजली करे कजली में ये सब औषधें डालकर भांगरे के रस की ७ पुट दे फिर इसकी १ रत्ती प्रमाण गोली बांधे। १ गोली अदरकके रससे ले तो सब प्रकारकी वात जाय १—इति समीरपन्नगरस॥

अथ समीरगजकेशरीरस ॥

नवीन चोखी अफ़ीम, कुचला, कालीमिरच ये सब बराबर ले फिर इन सबको महीन पीस १ रत्तीप्रमाण गोली पानके रस में बांधे। १ गोली प्रभातही खाकर ऊपर से पान चबावे तो सब प्रकार की वात जाय और सूजन, विसूचिका, मृगी ये सब जायँ। यह सब वैद्यरहस्य में लिखे हैं—इति समीरगजकेशरीरस ॥

अथ वृद्धचिन्तामणिरस ॥

खुरासानी अजवाइन, सफ़ेदज़ीरा, अजमोद, काकड़ासिंगी, असगन्ध ये सब बराबर ले महीन पीस १ माशे प्रमाण गर्म जल के साथ ले तो सबप्रकार की वात दूर हो और श्वास, खांसी, प्रलाप, अतिनिद्रा, अरुचि ये सब जायँ—इति वृद्धचिन्तामणिरस॥

अथ अमृतनाम गुटिका ॥

चित्रक ३टकेभर, हड़की छाल ३टकेभर और शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, सोंठि, मिरच, पीपरि, पीपलामूल, नागरमोथा, जायफल, बिधारा ये सब एक एक टकेभर और इलायची ५ टकेभर, अभ्रक ५ टंक, शोधा सिंगीमुहरा ५ टंक, गुड़ ८टकेभर। प्रथम पारे और गन्धक की कजली कर इन सब औषधियों को महीन पीस गुड़ समेत कजली में मिलावे और इसमें जलभांगरे की १ पुट दे फिर १ या २ तथा ३ रत्ती के प्रमाण गोली बांधे। १ गोली नित्य खाय तो सब प्रकार की वात, कोढ़, प्रमेह, मृगी, क्षयी, श्वास, सूजन, आमवात, पाण्डुरोग, बवासीर इन सब रोगों को यह रस

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दूर करता है। यह योगतरङ्गिणी में है—इति अमृतनामगुटिका॥

अथ राक्षसरस॥

शोधी गन्धक, शोधापारा इन दोनों को बराबर ले कजली करे और इसमें दूधिया के रस की १ पुट दे फिर तुलसी के रस की १ पुट, बावची के रस की १ पुट, मोरशिखा के रस की १ पुट, मुलहठी के रस की १ पुट, बाराहीकन्द के रस की १ पुट, बहुफली के रस की १ पुट दे फिर इसका रस सुखाय पारे और गन्धक की कजली को कुक्कुट के अंडे में भर और अंडेको शोध ले फिर अंडेको कपरौटी कर ७६ अंडोंको सुखा ले फिर उन अंडोंको गजपुटमें पकावे इसीप्रकार तीनबार करे फिर इसमें से १ रत्ती खाय तो सब प्रकार की वात जाय। यह क्षुधा को बहुत करता है। यह रसार्णव में लिखा है—इति राक्षसरस॥

अथ वङ्गेश्वररस॥

शोधा पारा, शोधी गन्धक इनकी कजली करे और दोनों से आधी शोधी हरताल डाले और इन सबकी बराबर रांग डाले फिर इनको आकीके दूधमें ७ दिन खरल करे फिर सुखाय कांच के आतशी शीशे में कपरौटी कर उसमें भर दे फिर शीशे को बालुकायन्त्र में १२ पहर पकाय शीतल करके काढ़े फिर उसमें से आधीरत्ती प्रमाण पान में खाय तो सबप्रकार की वात, उन्माद, क्षीणता, मन्दाग्नि, कोढ़, व्रण, विषमज्वर ये सब जायँ। यह योगतरङ्गिणी में है—इति वङ्गेश्वररस॥

अथ हरतालगुटिका॥

शोधी हरताल, शोधी गन्धक, शुद्धपारा, शिंगरफ़, सुहागा, सोंठि, मिरच, पीपरि ये सब बराबर ले पारे और गन्धक की कजली कर ये सब औषधें मिलावे फिर अदरक के रसकी १ पुट देकर मूंगप्रमाण गोली बांधे। १ गोली प्रभात ही खाय तो सब प्रकार की वात और सूतिकारोग, मन्दाग्नि, संग्रहणी,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

शीतज्वर ये सब रोग जायँ। यह रसरत्नप्रदीप में है--इति हरतालगुटिका॥

अथ लहसुनपाक की विधि॥

लहसुन १ पैसेभर लेके उसको महीन ज़ीरा सा कतर ले फिर १ पैसेभर दूध और धेलेभर पानी में चढ़ाकर आंच दे जब दूध लहसुन में सूखजाय तब उसको खरल करे जब लुगदी बँध जाय तब धेलेभर घृत डाल आंच दे जब सुर्ख़ीपन होआवे तब उतार ले और घृत अधिक रहे सो निकाल ले फिर २ पैसे भर मिश्री की चाशनी करे उसमें कस्तूरी आधी रत्ती, लवङ्ग४रत्ती, जायफल १ माशा, दालचीनी १ माशा, सुवर्णका तबक१माशा ये सब औषधें पीस चाशनी में मिलावे फिर वह लहसुन डाल चार गोली बांधे। १ गोली प्रभातही खाय और बहुत वात हो तो दूसरी गोली सायंकाल के समय खाय तो वात जाय यदि अधिक दिन सेवन करना चाहे तो पथ्यसे रहकर २१ दिनतक खाय या ४९ दिन खाय परन्तु गोली भी पूर्वोक्त प्रमाण से अधिक औषध लेकर बढ़ाले। इस लहसुनपाक के खाने से सब प्रकारकी वात दूर हों, शरीर पुष्ट हो और क्षुधा बढ़े। इति लहसुनपाक--इति वातजरोगके ८४ भेदों समेत उत्पत्ति, लक्षण और यत्न सम्पूर्ण॥

इति अष्टमस्तरङ्गः ८॥

अथ ऊरुस्तम्भरोगकी उत्पत्ति, लक्षण और यत्न॥

शीतल, गर्म, पितलानी, सूखी, भारी, चिकनी इन वस्तुओं के खानेसे, दिनके सोने और रात्रि के जागने से, अधिक क्षुधासे अथवा अजीर्णमें पीछे कही हुई वस्तुओं के खाने से पुरुष की वात कोपित होकर पित्तको बिगाड़ जंघाओंको स्तम्भित और शून्य करती है मानो जंघा अङ्ग में हैंहीं नहीं, हलने चलने न दे उसको ऊरुस्तम्भरोग कहते हैं॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ ऊरुस्तम्भरोग का पूर्वरूप ॥

निद्रा बहुत आवे, ध्यान लगजाय, कुछ ज्वरांश, रोमाञ्च, ग्लानि, जंघाओं में पीड़ा ये लक्षण हों तो जानिये कि ऊरुस्तम्भ रोग होगा। इस रोग को धन्वन्तरिजी ने सुश्रुत में महावात-व्याधिरोग कहा है। इसका लक्षण लिखते हैं। दोनों पैर सूज जायँ और उनमें पीड़ा हो, बड़े कष्टसे उठें, दोनों जंघाओं में पीड़ा, दाह और धरती में पैर धरते ही पीड़ा हो, शीतलस्पर्श को न जाने, चला न जाय, काष्ठकीसी जंघा होजायँ, टूटीसी दीखें ये लक्षण हों तो वातव्याधिरोग जानिये इसीको ऊरु-स्तम्भ भी कहते हैं ॥

अथ ऊरुस्तम्भ का असाध्य लक्षण ॥

जिस ऊरुस्तम्भरोगवाले के दाह और पीड़ा हों, शरीर काँपे वह मरजाय १ ॥

अथ ऊरुस्तम्भ का यत्न ॥

त्रिफला, पीपलामूल, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि इनका महीन चूर्णकर २॥ टंक नित्य शहद से खाय तो ऊरुस्तम्भरोग जाय १ अथवा सोंठि, पीपरि, शिलाजीत, गुग्गुल ये सब ५ माशे गोमूत्र के साथ नित्य पिये तो यह रोग जाय २ अथवा दशमूलके काढ़ेके साथ गुग्गुल खाय तो रोग जाय। यह भाव-प्रकाश में लिखाहै ३ अथवा भिलावां १। टंक, गिलोय १। टंक, देवदारु १। टंक, सोंठि १। टंक, हड़की छाल १। टंक, साठी की जड़ १। टंक, दशमूल २। टंक इनका काढ़ा ले तो यह रोग जाय ४ अथवा १। टंक गुग्गुल को गोमूत्रके साथ १५ दिन ले तो यह रोग जाय ५ अथवा शहद, सरसों, बामीकी मिट्टी इनको महीन पीस मर्दन करे तो ऊरुस्तम्भ जाय ६ अथवा बच का चूर्ण २॥ टंक गर्म पानी से ले तो यह रोग जाय ७ और ऊरुस्तम्भ-वाला रुधिर न कढ़ावे और वमन, विरेचन तथा बस्तिकर्म न

In Public Domain, Chamba Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

करे। यह वैद्यरहस्य में है ॥ अथवा खस या नींबूका रस गुड़ के साथ या शहद के साथ पिये तो ऊरुस्तम्भ जाय ८ अथवा चव्य, हड़ की छाल, चित्रक, देवदारु, कणगचके फूल, सरसों इनका चूर्णकर २॥ टंक शहद के साथ ले तो ऊरुस्तम्भ जाय। यह सर्वसंग्रह में है ९--इति ऊरुस्तम्भरोग ॥

अथ आमवातरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

मन्दाग्निवाला पुरुष कुपथ्य से चिकना अन्न खाय; परिश्रम न करे तो उस पुरुष के वात से प्रेरित कच्चे अन्नका रस कफके स्थान, हृदय में पहुँचकर कच्चाही वात के द्वारा नसोंमें जाता और नसों के छिद्रोंको रोक, अग्निको मन्दकर हृदयको भारी करताहै और कफ, वात कुपित होकर कोष्ठ तथा त्रिकसन्धिमें प्रवेशकर शरीर को स्तम्भित करते हैं; उसीको आमवात कहते हैं ॥

अथ लक्षण ॥

अङ्गमें हड़फूटन, अरुचि, तृषा, आलस्य, शरीर भारी, ज्वर ये हों और अन्न पचे नहीं, अङ्ग सुन्न पड़जाय जिसमें ये लक्षण हों उसको आमवात कहिये ॥

अथ वायु बढ़े हुए का लक्षण ॥

कोपको प्राप्तहुआ आमवात सर्वरोगों में कष्टसाध्य होता है, इसका दोष कहते हैं। हाथ, पैर, शिर और टांगों में से त्रिक और जंघाओं की सन्धियों में प्राप्त होकर पीड़ायुक्त सूजन करता है तब उन स्थानों में बिच्छूके लगने कीसी बहुत पीड़ा हो, अग्नि मन्द हो, लार पड़े, उत्साह जाता रहे, मुखका स्वाद और का और होजाय, दाह हो, मूत्र बहुत उतरे, कुक्षिमें कठिनता होकर शूलहो, निद्रा आवे नहीं, वमन हो, तृषा अधिक लगे, भ्रम और मूर्च्छा हो, मल उतरे नहीं, शरीर जड़ होजाय, आंत बोला करें, अफरा हो तथा वातव्याधि के कहे हुए और भी उपद्रव होते हैं। जिसमें पित्त अधिक हो उसमें दाह हो, पीलापन को लिये हो

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

और वाताधिक्य में शूल हो और कफाधिक्य हो, भारीपन हो, खुजली हो, एक दोषका साध्य और दो दोषका कष्ठसाध्य तथा सर्वदेहमें विचरनेवाला सन्निपात का शोथ असाध्य जानिये ॥

अथ यत्न ॥

अरण्डके बीजों को दूध में पकाय, खीर बनाय खाय तो आमवात और गृध्रसीरोग जायँ ॥

अथ महारास्नादिक्काथ ॥

रास्ना, अरण्डकी जड़, अडूसा, धमासा, कचूर, दारुहल्दी, खरैटी, नागरमोथा, सोंठि, अतीस, हड़की छाल, गोखुरू, सहँजना, चव्य, दोनों कटेली इनको बराबर ले और रास्ना तिगुनी ले फिर इनको जवकुटकर ५ टंक का काढ़ा नित्य दे तो पक्षाघात, आर्दित, कम्प, कुबड़ापन, सन्धि सन्धि की वात, पैर की पीड़ा, गृध्रसी, हनुग्रह, ऊरुस्तम्भ, वातरक्त, बवासीर, वीर्यका दोष, स्त्रीका बन्ध्यापन इन सब रोगोंको यह काढ़ा दूर करताहै—इति महारास्नादिक्काथ ॥

अथ अजमोदादिक चूर्ण ॥

अजमोद, कालीमिरच, छोटी पीपरि, बायबिड़ंग, देवदारु, चित्रक, सौंफ, सेंधानोन, पीपलामूल ये सब औषध टके टके भर और सोंठि १० टकेभर, बिधारा १० टकेभर, हड़की छाल ५ टके भर ले इन सबको महीन पीस और सबकी बराबर गुड़ ले फिर इसकी २॥ टंक भरकी गोली बांधे और नित्य गर्म पानी से ले तो आमवात, शूल, गृध्रसी, गोला, प्रतूनी, कटि, पीठ, जंघा और हड़फूटन, सूजन इन सब रोगोंको यह चूर्ण दूर करताहै—इति अजमोदादि चूर्ण ॥ और योगराजगुग्गुल जो पीछे वातव्याधि में लिखा है उससे भी आमवातका रोग दूर होता है ॥

अथ सोंठिपाक ॥

सोंठि ८ टकेभर, गौका घृत १ सेर, दूध ४ सेर ले फिर सोंठि

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

को महीन पीस घृतमें, बकरीके दूधमें पकायके खोया करले फिर ५० टकेभर खांड़ की चाशनीकर उस चाशनी में घृत से अच्छे प्रकार से भूंजे फिर इसमें सोंठि १ टकेभर, नागकेसरि १ टकेभर डाले फिर इसकी गोली १ टकेभर की बांधे। एक एक गोली दोनों समय खाय तो आमवातको दूर करे, शरीर को पुष्टकर पराक्रम करे ४–इति शुण्ठीपाक ॥

अथ मेथीपाक ॥

मेथी ८ टकेभर, सोंठि ८ टकेभर इन दोनों को महीन पीस गौके ४ सेर दूधमें पकावे और इन दोनों को घृत में मरकोकर मावा करे फिर ४ सेर पक्की मिश्रीकी चाशनी कर उसमें यह मावा डाले और मिरच, चित्रक, पीपरि, सोंठि, पीपलामूल, धनियां, सौंफ, जायफल, कचूर, तज, पत्रज, नागरमोथा इन सबको एक एक टके भर ले महीन पीस चाशनी में डाले फिर सबको एक रसकर टके टके भरकी गोली बांधे। १ गोली नित्य खाय तो आमवात, वातव्याधि, विषमज्वर, प्रदर इन सब रोगोंको यह दूरकर वीर्यकी वृद्धि करता है ५–इति मेथीपाक ॥

अथवा लहसुन का रस २॥ टंक, गौका घृत २॥ टंक इन दोनों को मिलाय नित्य पिये तो आमवात जाय ६ ॥

अथ बृहत्सैन्धवादि तैल ॥

सेंधानोन ५ टंक, हड़की छाल ५ टंक, पुष्करमूल ५ टंक, महुआ ५ टंक, पीपरि ५ टंक इन सबको महीन पीस फिर अरण्डका तेल १ सेर, सौंफ का अर्क १ सेर, कांजी २ सेर, दही का मट्ठा ४ सेर इन सबको औषध समेत इकट्ठाकर कढ़ाईमें चढ़ाय नीचे मन्द मन्द आंच दे जब सब रस जलजाय और तेलमात्र रह जाय तब उतार ल फिर इसमें से २॥ टंक नित्य खाय अथवा लगावे तो आमवात जाय और क्षुधा की वृद्धि होवे ७–इति बृहत्सैन्धवादितैल ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ आमवातारि रस ॥

पारा, शोधी गन्धक, सोंठि, कुटकी, त्रिफला, किरमालाकी गिरी ये सब बराबर ले और हड़की छाल अन्य औषधों से तिगुनी ले प्रथम पारे और गन्धककी कजली करे फिर ये सब औषध मिलावे फिर इसमें से १ माशे प्रमाण सोंठि और अरण्डकी जड़के काढ़े से ले तो आमवातरोग तत्काल जाय ८–इति आमवातारि रस ॥ दही, दूध, गुड़, मछली, मांस, उरदकी वस्तु इनको आमवातवाला न खाय। यह भावप्रकाश में लिखा है ॥

अथ व्याधिशार्दूल गुग्गुल ॥

गुग्गुल १ सेर, हड़की छाल का चूर्ण १ सेर, आमले का चूर्ण १ सेर, बहेड़ेकी छालका चूर्ण १ सेर ये सब औषध ४ सेर पानीमें डाल पीछे कढ़ाई में पकावे जब जलका चतुर्थांश रहजाय तब उतार ले फिर अग्निके ऊपर चढ़ाय कुछ गाढ़ा करले पीछे इसमें सोंठि २॥ टंक, मिरच २॥ टंक, पीपरि २॥ टंक, त्रिफला २॥ टंक, नागरमोथा २॥ टंक, देवदारु २॥ टंक, शोधी गन्धक २॥ टंक, शोधा जमालगोटा १०० पहले पारे और गन्धक की कजली करे फिर कजलीमें ये सब औषधें मिलावे तदनन्तर ये सब गुग्गुलके रसमें मिलाकर १ माशे गर्म जल के साथ ले तो आमवात को तत्काल दूरकर क्षुधा की वृद्धि करे, धातुको बढ़ावे, मुख सूजै नहीं और वातके रोग, भगन्दर, सूजन, शूल, बवासीर इन सब रोगों को दूर करे ९–इति व्याधिशार्दूलगुग्गुल ॥

अथ आमवातारि गुटिका ॥

अथवा हड़की छाल, सेंधानोन, निशोत, इन्द्रायण की जड़, सोंठि, इन्द्रायण के फलकी मींगी इन सबको महीन पीस लोहे के पात्र में जल भरकर उसमें ये औषध डाले फिर मधुरी आंच से पकाय छोटे बेरके प्रमाण गोली बांधे। १ गोली गर्म पानी से

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

ले ऊपरसे बहुत घृत डाल चावल खाय तो आमवात जाय । ये सब वैद्यरहस्य में लिखे हैं १०–इति आमवातारिगुटिका ॥

अथ द्वात्रिंशक गुग्गुल ॥

अथवा सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, त्रिफला, नागरमोथा, बायबिड़ंग, चव्य, चित्रक, खुरासानी बच, इलायची, पीपलामूल, झाऊ की जड़, देवदारु, तुम्बुरु अर्थात् मीठे तोंबाके बीज, पुष्करमूल, कूट, दोनों हल्दी, सौंफ, सफ़ेद ज़ीरा, सोंठि, पत्रज, धमासा, कालानोन, जवाखार, सज्जी, गजपीपरि, सेंधानोन ये औषध बराबर ले फिर इन औषधों को महीन पीस गुग्गुल में मिलावे फिर इसको २॥ टंक घृत अथवा शहद के साथ नित्य खाय तो आमवात, उदावर्त, बवासीर, कृमिरोग, विषमज्वर, उन्माद, अफरा, कोढ़, सूजन, पाण्डुरोग इन सबको यह दूर करता है। धन्वन्तरिजीने इसका नाम द्वात्रिंशकगुग्गुल धरा है। यह वीरसिंहावलोकन में है ११ ॥

अथ सिंहनाद गुग्गुल ॥

चौबीस सेर पानी में त्रिफला डालकर औटावे जब पानी ६ सेर रहजाय तो उसे छानकर फिर अग्नि पर चढ़ाके गाढ़ा कर ले और उसमें शोधा गुग्गुल १ सेर, तेल ८ टंकेभर, सोंठि २॥ टंक, मिरच २॥ टंक, पीपरि २॥ टंक, त्रिफला २॥ टंक, नागरमोथा २॥ टंक, देवदारु २॥ टंक, गिलोय २॥ टंक, निशोत २॥ टंक, दात्यूणी २॥ टंक, खुरासानी बच २॥ टंक, जिमींकन्द २॥ टंक, पारा २॥ टंक, शोधी गन्धक २॥ टंक, धतूरे के बीज ४ टंक इन सबको महीन पीस उस त्रिफले के जलमें मिलाय एक जीव करे फिर इसमें से १ माशे नित्य गर्म जल से ले तो क्षुधा बढ़े, धातुको बढ़ावे, शरीर को नीरोग करे और आमवात, मन्थवाय, कटि की वात, भगन्दर, पैरों की वात,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जांघकी घात, पथरी, मूत्रकृच्छ्र इन सब रोगों को यह गुग्गुल दूर करता है। यह योगतरङ्गिणी में है १२–इति सिंहनादगुग्गुल॥

अथ वातेश्वर रस॥

शोधी गन्धक ५ टंक, तामेश्वर ५ टंक, पारा २॥ टंक; सार २ टंक इन सबको इकट्ठाकर अरंडके पत्तों के ऊपर डाले फिर इनको खरल में पीस पीपरि, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठि इनका काढ़ा कर उस काढ़े की १६ पुट दे और बहेड़े के रसकी २० पुट दे तथा गिलोय के रसकी १० पुट दे फिर इन सब औषधियों के बराबर भुनासुहागा डाले और सुहागे से आधा बिडनोन डाले तथा बिडनोनकी बराबर कालीमिरच डाले और सोंठि, पीपरि, त्रिफला, लवङ्ग ये सब मिरचके बराबर डाले फिर इन सबको महीन पीस एकरस करे। यह रस १ माशे नित्य पृथक् पृथक् अनोपान से खाय तो सर्वरोगमात्र को दूर कर क्षुधाको बहुत बढ़ाता है और आमवात को दूरकर स्थूल पुरुषको कृश और कृशपुरुष को पुष्ट करता है। इसकी ४ रत्ती की मात्रा है जो कण्ठतकभी भोजन किया हो तो उसको भी तत्काल पचा देताहै। यह सारसंग्रह में है १३–इति वातेश्वररस॥ दही, मछली, गुड़, दूध, उरद का आटा ये सब वस्तु आमवातवाला न खाय इति आमवात की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न सम्पूर्ण॥

अथ पित्तव्याधिकी उत्पत्ति, लक्षण और यत्न॥

कडुवां रस, खटाई, गर्मवस्तु, दाह करनेवाली तीक्ष्ण वस्तु इनके खानेसे और उपवास, क्रोध और अधिक मैथुन करने से, बहुत नोनके खानेसे, घाममें सोनेसे और प्यास, भूँखके रोकने से, खेदके करनेसे गर्मीका कोप होता है। भोजनकी जीर्णताके समय शरद्ऋतुमें, ग्रीष्मऋतुमें, मध्याह्नमें, अर्द्धरात्रिके समय पित्त कोपको प्राप्त होकर ४० रोगों को पैदा करता है उनके नाम और लक्षण। तरुणाई में श्वेतबाल होजायँ १ लाल नेत्र रहें २ मूत्र

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

लाल हो ३ नेत्र पीले रहें ४ मूत्र पीला उतरे ५ मल पीला हो ६ नख पीले हों ७ दांत पीले हों ८ शरीर पीला रहे ९ अँधेरी आवे १० सर्वत्र पीला दीखा करे ११ निद्रा थोड़ी आवे १२ मुख सूखे १३ मुखमें दुर्गन्ध आवे १४ मुख तीखा रहे १५ गर्म श्वास निकले १६ मुख खट्टा रहे १७ डकारमें धुआं निकले १८ घुमनी आवे १९ इन्द्रिय शिथिल होजायँ २० क्रोध बहुत हो २१ दाह हो २२ अतीसार रहाकरे २३ गर्मी सुहावे नहीं शीतलता सुहावे २४ किसी वस्तुसे तृप्ति न हो २५ सर्ववस्तुसे अप्रीति रहे २६ भोजनके पीछे जलन हो २७ क्षुधा बहुत लगे २८ नकसीर आदि हो २९ मल पतला हो ३० मल गर्म उतरे ३१ मूत्र गर्म उतरे ३२ मूत्रकृच्छ्र हो ३३ वीर्य की अल्पता हो ३४ शरीर गर्म रहे ३५ पसीना बहुत आवे ३६ पसीने में दुर्गन्ध आवे ३७ हाथ, पैरों में रोग बहुत हों ३८ शरीर में हड़फूटन हो ३९ फोड़ा फुंसी बहुत हों ४० ये गर्मी के ४० रोग हैं ॥

अथ इन सब पित्तरोगोंका सामान्य यत्न ॥

नींब की छाल आदि तिक्त वस्तुओंके खानेसे और मिश्री आदि मीठी वस्तु खाने से, चन्दन आदि शीतल वस्तु के लगाने से, शीतल पवनसे, शीतल छायाके रहनेसे, रात्रिमें सोनेसे, खसके पंखेकी पवन से, चन्द्रमा की चांदनी से, तहखाने के रहने से, दूध के पीनेसे, जुलाबके लेनेसे, रुधिर के निकलवाने से पित्तरोग दूर होते हैं—इति पित्तव्याधि की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न सम्पूर्ण ॥

भारी, मीठी, बहुत चिकनी, दही आदि शीतल वस्तुओं के खानेसे और दिन के सोनेसे, बहुत बैठे रहने से कफ का कोप होता है तथा प्रभात समय और भोजन के पीछे वसन्तऋतुमें कफका कोप होता है ॥

अथ कफ के २० रोगों का लक्षण ॥

मुख मीठा रहे १ मुख कफ से लिपटा रहे २ लार पड़े ३ निद्रा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बहुत आवे ४ कण्ठमें घुरघुर शब्द हो ५ कड़ुवे रस की इच्छा रहे ६ गर्म वस्तु की इच्छा रहे ७ बुद्धिकी जड़ता हो ८ चैतन्यता थोड़ी रहे ९ आलस्य बहुत आवे १० क्षुधा लगे नहीं ११ मन्दाग्नि हो १२ दिशा बहुत जाय १३ मल श्वेत हो १४ मूत्र बहुत उतरे १५ मूत्र श्वेत हो १६ वीर्य की अधिकता हो १७ निश्चल हो १८ शरीर भारी हो १९ शरीर ठंढा रहे २० ये कफ के बीस रोग हैं ॥

अथ कफ के २० रोगों का सामान्य यत्न ॥

सूखी, कषैली, गर्म, कड़ुवी वस्तुके खानेसे और खेद, कुल्ला और वमन के करनेसे, पसीना आने से, लंघन करनेसे, तृषा रोकने से, हुक्का पीने से, कुश्ती लड़ने से, जलक्रीड़ा से, चित्रक के खानेसे, नास लेनेसे, मार्ग चलनेसे, मैथुन करनेसे, जागनेसे कफके २० रोग दूर होते हैं—इति कफव्याधिकी उत्पत्ति, लक्षण और यत्न सम्पूर्ण ॥

इति नवमस्तरंगः ९ ॥

अथ वातरक्त की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

नोन, गर्म वस्तु, सड़ा मांस, खरी, बड़ी मूली, कुलथी, उड़द, बहुत तरकारी, मांस, मछली, दही, * विरुद्ध वस्तु इन सबके खाने से, आसव और कांजी के पीनेसे, क्रोधसे, दिनके सोने से और हाथी, घोड़ा, ऊंट के दौड़ानेसे सुकुमार और सुखी पुरुष के वातरक्तका रोग कोप को प्राप्त होता है ॥

अथ वातरक्त का स्वरूप ॥

सब शरीरमें रुधिर दग्ध होजाय फिर वह रुधिर दुष्ट होकर दोनों पैरोंमें इकट्ठा होने लगे ॥

अथ वातरक्त का पूर्वरूप ॥

पसीना बहुत आवे अथवा आवे नहीं, शरीर काला पड़जाय,

* विरुद्धभोजन। मांस के साथ दुग्ध अथवा तिलके साथ दुग्ध पीना ॥

In Public Domain, Chamba Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

शरीर में स्पर्श का ज्ञान न हो, थोड़ीसी चोट में पीड़ा बहुत हो, सन्धि सन्धि शिथिल होजायँ, आलस्य बहुत आवे, शरीर में फुंसी हों और घोंटू, जंघा, कटि, हाथ, पैरोंकी सन्धिमें पीड़ा हो, शरीर भारी रहे, सुन्न होजाय, शरीरमें दाह हो, वर्ण और का और होजाय, शरीर में लाल चटें पड़ जायँ ये लक्षण हों तो जानिये कि वातरक्त होगा ॥

अथ वाताधिक वातरक्त का लक्षण ॥

पैरोंमें शूलादिक बहुत हों और फड़कें, सूजन हो, रूखे और काले हों तथा २४ नाड़ी और अंगुली के मध्य में संकोच हो, शरीरजकड़बन्द हो और कांपे तथा शरीर सूखासा दीखे ये लक्षण हों तो वाताधिकका वातरक्त जानिये ॥

अथ रक्ताधिक वातरक्त का लक्षण ॥

जिसमें सूजन हो, पीड़ा बहुत हो, ललाई सहित हो और चिमचिमी तथा खुजली हो ये लक्षण हों उसके रक्ताधिक वातरक्त कहिये ॥

अथ पित्ताधिक वातरक्त का लक्षण ॥

जिसमें दाह, मोह और सूजन हो, पकजाय, गर्म बहुत हो ये लक्षण हों उसको पित्ताधिक वातरक्त कहिये ॥

अथ कफाधिक वातरक्त का लक्षण ॥

शरीर शिथिल, भारी और चिकना होजाय, शून्य और ठंढा हो, खुजली चले ये लक्षण जिसमें हों उसको कफाधिक वातरक्त कहिये और जिसमें ये सब लक्षण मिले हों उसको सन्निपातका वातरक्त कहिये ॥

अथ हाथों के वातरक्त का लक्षण ॥

जैसे पैरके तलुएमें होता है वैसेही हथेलीके ऊपर फुंसी आदि हो पीछे सब शरीर में होता है ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ वातरक्त का असाध्य लक्षण ॥

पैर के तालूसे लेके घोंट तक फुंसी हों और बल, मांस, अग्नि ये सब नष्ट होजायँ तो वातरक्त असाध्य जानिये और इसको १ वर्षका याप्य कहिये ॥

अथ वातरक्त का उपद्रव ॥

नींद आवे नहीं, रुचि जाती रहे, श्वास हो, मांस गल जाय, मस्तक पीड़ा, मूर्च्छा, तृषा, ज्वर, मोह, हिचकी हों, शरीर कांपे, अंगुली गलजायँ, विसर्प हो, फुंसीपकजायँ, पीड़ाहो, घुमनीआवे, अंगुलियां टेढ़ी होजायँ, फोड़ामें दाह हो ये इसके उपद्रव हैं ॥

अथ वातरक्त का यत्न ॥

वातरक्तवालेके जोंक लगा अथवा शिंगी लगाकर या पचका करके अथवा फ़स्त करकेरुधिर कढ़ाइये परन्तु रुधिर ऐसे अनुमान मुवाफ़िक़ कढ़ाइये जहां तक वायु बढ़े नहीं और दिनमें सोना, क्रोध, खेद, मैथुन न करे और कडुवी, गर्म, भारी, रूखी और खटाई इतनी वस्तु वातरक्तवाला न खाय। पुराना यव, पुराना गेहूं और पुराना धान खाय अथवा लवा, तीतर, बटेर, अरहर, चना, मूंग, मसूर, कुलत्थ, धनियां, मकोय, बथुवा, लूणाख्य, अनुनियां, चील व पक्षिविशेष, बकरीका दूध और घृत इतनी वस्तुओं का खाना योग्य है अथवा गुग्गुल १। टंक गिलोयके काढ़े से ले अथवा अरण्डका तेल २॥ टंक गिलोय के काढ़े में डालकर पिये तो वातरक्त जाय अथवा मंजिष्ठादिक काढ़े से वातरक्त जाय। मंजिष्ठादि काढ़ा—मंजीठ, त्रिफला, कुटकी, खुरासानी बच, दारुहल्दी, गिलोय, नींबकी छाल ये सब बराबर ले जवकुट कर २॥ टंक का काढ़ा नित्य ले तो वातरक्त, कोढ़, पामा, फोड़ा इन सब रोगों को यह दूर करे एक मण्डलतक ले १—इति लघुमंजिष्ठादिक क्वाथ ॥

अथवा गिलोय, बावची, पँवाड़, नींबकी छाल, हड़की छाल,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

हल्दी, अडूसा, शतावरि, नेत्रबाला अथवा सफ़ेद कटेली, खरैटी, मुलहठी, महुआ, गोखुरू, पटोल अर्थात् परवर के पत्ते, खस, मंजीठ, रक्तचन्दन ये सब बराबर ले फिर जवकुट कर २॥ टंक का काढ़ा नित्य ले तो वातरक्त, कोढ़, पामा, दाह इन रोगों को यह काढ़ा दूर करे। ये सब भावप्रकाश में हैं २–इति गुडूच्यादि क्वाथ॥

अथवा शोधा भैंसागुग्गुल १ सेर, हड़की छाल १ सेर, बहेड़ेकी छाल १ सेर, आमला १ सेर, गिलोय ३२ टकेभर इन सबको जवकुट कर ६४ सेर पानी में औटावे जब आधा पानी रहजाय तब उतारकर छान ले फिर कढ़ाईमें औटाके गाढ़ा करे फिर पारा २॥ टंक, बायबिड़ंग २॥ टंक, निशोत २॥ टंक, गिलोय २॥ टंक, दात्यूणी २॥ टंक पहले पारे और गन्धक की कजली करे फिर कजली में ये औषधें महीन पीस मिलाय उस गुग्गुल में डाले फिर सबको एक रसकर ४ माशे अथवा ८ माशे मंजिष्ठादिक काढ़ेसे नित्य ले तो वातरक्त, फोड़ा, फुंसी, व्रण, खांसी, गोला, कोढ़, सूजन, उदरके रोग, पाण्डुरोग, प्रमेह, मन्दाग्नि इन सब रोगों को यह दूर करता है और इसका खानेवाला खेद न करे, धूपमें न रहे, अग्निके पास न बैठे, खटाई न खाय, मैथुन न करे, मार्ग न चले तथा नोन और तेल न खाय ३–इति किशोरगुग्गुल॥

अथवा १ सेर भिलावें ऐसे भारी ले जो जलमें डूबजायँ उनका मुँह खोरसे घिस १६ सेर पानी में डाल औटावे। इस औटते पानी में गिलोय २ सेर जवकुट कर डाले जब इस पानीका चतुर्थांश रहजाय तब इसमें गिलोय २॥ टंक, बावची २॥ टंक, नींब की छाल २॥ टंक, हड़की छाल २॥ टंक, आमला २॥ टंक, हल्दी २॥ टंक, नागरमोथा ५ टंक, तज ५ टंक, इलायची ५ टंक, सोंठि ५ टंक, नागकेसर ५ टंक, पित्तपापड़ा ५ टंक, पत्रज

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

५ टंक, नेत्रबाला ५ टंक, खस ५ टंक, सफ़ेदचन्दन ४ टंक, गोखरू ५ टंक, कचूर ५ टंक, रक्तचन्दन ५ टंक इनको महीन पीस डाले और मिलावें समेत एकजीकर अमृतबान में रक्खे। इसमें से ५ टंक नित्य जल के साथले तो वातरक्त, कोढ़, बवासीर, विसर्प, पामा, वात और रुधिर के सब विकार इतने रोगों को यह दूर करता है। इसका खानेवाला खेद, धूपमें रहना, अग्नि के पास रहना न करे और खटाई तथा मांस न खाय, तेल न लगावे और मार्ग न चले ४–इति अमृतभल्लातकावलेह॥

अथवा अलसी वा अरंडीको दूधमें पीस हाथ व पैरों में लेप करे तो वातरक्त जाय ५ अथवा गौरीसर, राल, मोम, मंजीठ ये सब बराबर ले तेल में पकावे फिर इसका मर्दन करे तो वातरक्त जांय ६ अथवा अरण्डकी जड़, गिलोय, अड़ूसा इनका काढ़ाकर उसमें गुग्गुल ४ माशे, अरण्डका तेल २॥ टंक डालकर पिये तो वातरक्त, मूर्च्छा, मथवाय, श्वास और फोड़ा इन सबको यह दूर करे। यह वैद्यरहस्यमें लिखा है ७ अथवा हरताल के चोखे पत्र ले उनको साठी के रस में दो दिन खरल करे फिर उसको गाढ़ा कर टिकड़ी कर सुखा ले और साठी की राख के बीच में उस हरताल की टिकड़ी को ठीकरे में धरे फिर उस ठीकरे को चूल्हेपर चढ़ाय ५ दिन रात मधुरी आंच दे फिर स्वाङ्गशीतल होजाय तब काढ़े। जो वह हरताल श्वेत निकले और पूरी तोल उतरे तो इसमें से १ रत्ती गुडूच्यादि काढ़े के साथ ले तो वातरक्त और १८ प्रकार के कोढ़, फिरंगबाय, विसर्प, पामा, फोड़ा इन सबको यह दूर करे। इसका खानेवाला नोन, खटाई, कड़ुआ रस, धूप में तथा अग्नि के पास बैठना इतनी बातें छोड़ दे और सेंधानोन, मीठा रस खाय। यह हरतालकी क्रिया भावप्रकाशमें लिखी है ८–इति तालकेश्वररस॥ इति वातरक्त की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ शूलरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

वात १ पित्त २ कफ ३ सन्निपात ४ आम ५ वातकफ ६ कफपित्त ७ वातपित्त ८ इन भेदों से शूल आठ प्रकार का है ॥

अथ वात के शूल की उत्पत्ति और लक्षण ॥

खेद से, घोड़े आदिके दौड़ाने से, अति मैथुन करने से, बहुत जागनेसे, जलादिकके अत्यन्त पीनेसे और मटर, मूंग, अरहर, कोदों और सूखी वस्तु इनके अधिक खानेसे, अजीर्ण में भोजन करनेसे, चोट लगने से तथा कषैली, तीखी, कड़ुवी, भीजा अन्न, विरुद्ध वस्तु, सूखा मांस इनके खाने से और मल, मूत्र, मैथुनके रोकने से, अधोवायु और मलके रोकने से, लंघन करनेसे, बहुत हँसनेसे वायुबढ़करहृदय, दोनों पसुलियां, मुख, सन्धि इन स्थानों में शूलचलावे, सन्ध्या समय बदली और शीतकाल में बहुत शूल हो, बारम्बारथँभजाय और फिर होनेलगे, मल-मूत्ररुकजाय, शूल चले, पीड़ा बहुत हो—इति वायुशूल की उत्पत्ति और लक्षण ॥

अथ पित्त के शूल की उत्पत्ति और लक्षण ॥

खारी और मिरच आदि बहुत तीक्ष्णवस्तु, गर्म वस्तु, तिल, खली, कुलत्थ, खटाई इनके खाने से, क्रोध, खेद और मैथुन के करने से, मदिरा और आसव के पीने से, धूपके सेवन से पित्त कुपित होकर शूलको प्रकट करता है तब तृषा, दाह, नाभि में पसीना, मूर्च्छा, भ्रम, क्रोध ये होते हैं और मध्याह्न, अर्द्धरात्र, ग्रीष्मऋतु, शरद्ऋतु इतने समयमें अधिकशूल हो तो जानिये कि पित्त का शूल है ॥

अथ कफ के शूल की उत्पत्ति और लक्षण ॥

अनूपदेशके मांस, मछली, पेड़ा आदि दूधकी वस्तु, मैदाकी वस्तु इनके खानेसे और गांड़े के चूसनेसे, मधुररस के पीने से कफ कोपको प्राप्त हो शूलको उत्पन्न करता है। हृदय दूखे, वमनसी आवे, खांसी और पीड़ा, भोजन में अरुचि, पेट में पीड़ा,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मथवाय, शरीर भारी, भोजन करते में पीड़ा ये लक्षण हों और मल उतरे नहीं और वसंतऋतु में प्रभात समय बहुत हो तब जानिये कि कफ का शूल है ॥

अथ सन्निपात के शूल का लक्षण ॥

जो पीछे कहेहैं वे सब लक्षण मिलें तो सन्निपात का शूल जानो ॥

अथ आम के शूल का लक्षण ॥

अफरा और पेट में गुड़गुड़ा शब्द हो, हृदय कटाजाय, वमन आवे, शरीर भारी होजाय, लार गिरे और कफ के शूल के सब लक्षण मिलें तो आमका शूल कहिये ॥

अथ वायुकफ के शूल का लक्षण ॥

पेडू, हृदय, कण्ठ और दोनों पसुलियोंमें शूल हो उसको वातकफका शूल कहिये ॥

अथ कफपित्त के शूल का लक्षण ॥

कुक्षि, हृदय, नाभि इनमें शूल हो तो कफका शूल जानिये ॥

अथ शूलरोग का उपद्रव ॥

पीड़ा, तृषा, मूर्च्छा, अफरा, शरीर भारी, अरुचि, कास, श्वास ये हों तो शूल का उपद्रव जानिये ॥

अथ शूल का भेद-परिणामशूल का लक्षण ॥

जितने भेद शूलके हैं उतनेही परिणामशूल के हैं यही उसकी उत्पत्ति है इसमें इतना विशेष है कि जो कुपित वात है वह कफपित्तसे मिल शूलको करती है ॥

अथ इसका लक्षण ॥

भोजन पचेके पीछे शूल उपजे उसको परिणामशूल कहिये ॥

अथ अन्नद्रवशूल का लक्षण ॥

भोजन कियाहुआ कभी पचजाय और कभी न पचे ॥

अथ जरत्पित्तशूल का लक्षण ॥

जो भोजन पचनेके समय शूल हो तो जरत्पित्तशूल कहिये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ शूलरोग का यत्न ॥

शूल रोगवाले को वमन करावे और औषधों से पसीना लिवावे, पाचन देवे, बस्तिकर्म करावे, सज्जीखार आदिका चूर्ण और कव्यादिरस देवे, गर्म गर्म कुलत्थ का सेंक करे और रेतको गर्मकर पानी डाल उसे सिझाय कपड़े में धर पोटरी बनाय सेंक करे अथवा काकड़ासिंगी, कुलत्थ, तिल, यव, अरण्डकी जड़, अलसी, साठी की जड़, लहसुनके बीज इनको कांजीमें गर्मकर शूल की जगह सेंक करे तो शूल जाय १ अथवा तिलोंको पीस, कांजीमें गर्मकर, थोड़ासा तेल डाल कपड़ेकी पोटरी से उसका सेंक करावे तो तत्काल शूल जाय २ अथवा मेढल को कांजीमें पीस नाभिमें लेप करे तो शूल जाय ३ अथवा सोंठि, अरण्डकी जड़ इनका काढ़ा दे तो शूल जाय ४ अथवा सोंठि और हड़के काढ़ेमें हींग, कालानोन डालकर पिये तो शूल जाय ५ अथवा गुड़को औटाय उसमें जवाखार डालकर पिये तो शूल जाय ६ अथवा कांसा, रूपा, तांबा इनके पात्रमें जलभर शूल पर उस पात्रको फेरे तो शूल जाय ७ अथवा पित्तका शूल हो तो जुलाब से दूर हो ८ अथवा गुड़ और हड़की छालको पीस घृत मिलाय खाय तो पित्तका शूल जाय ॥

अथ कफ के शूल का यत्न ॥

आमले का चूर्ण शहदमें चाटे तो कफ का शूल जाय ९ अथवा नींब की छाल का काढ़ाकर उसमें दारू डाल पिये तो कफ का शूल जाय १० अथवा जवाखार, सेंधानोन, कालानोन, सांभरनोन, पीपरि, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठि, भुनीहींग इनको बराबर ले चूर्णकर २॥ टंक गर्म पानीसे ले तो कफका शूल जाय ११ जो यत्न कफशूलके हैं वही आमशूल के जान लेना। राई, त्रिफला, शहद और घृत से ले तो सब शूल दूर हों १२ अथवा दारुहल्दी, चोख (सत्यानाशी) की जड़, कूट, सौंफ़, हींग,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सेंधानोन इन सबको कांजी में पीस गर्मकर सुहाता लेप करे तो शूल जाय १३ अथवा बेल की जड़, अरण्ड की जड़, चित्रक, सोंठि, भुनी हींग, सेंधानोन इन सबको महीन पीस चूर्ण कर २॥ टंक गर्म पानी से ले तो शूल दूर हो १४ अथवा पक्के पेठे के टुकड़े कर धूप में सुखावे पीछे उन टुकड़ों को पीतल के पात्र में धर चूल्हे पर चढ़ाय आग लगाय युक्ति से कोयला करे राख न होनेपावे पीछे इन कोयलोंको पीस उसमें २ माशे सोंठि का चूर्ण मिलाय जल से पिये तो असाध्यभी शूल का रोग जाय। ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं १५–इति कूष्माण्डक्षार॥

अजवाइन, सेंधानोन, भुनीहींग, जवाखार, कालानोन, हड़ की छाल ये सब बराबर ले महीन चूर्णकर २॥ टंक गर्मपानी के साथ ले तो वायु का शूल जाय १६ अथवा कालानोन १ टंक, जीरा ३ टंक, कालीमिरच ४ टंक इन्हें महीन पीस अमलबेत के रस की ७ पुट दे पीछे बिजौरे के रस की ७ पुट दे फिर इसकी ५ माशे की गोली बांध प्रतिदिन १ गोली गर्मजल से ले तो वायु का शूल जाय १७ अथवा सोंठि, हड़ की छाल, पीपरि, निशोत, कालानोन ये सब बराबर ले इन्हें महीन पीस १। टंक गर्म जलसे ले तो शूल, अफरा, बवासीर, आमवात इन सब रोगों को दूर करता है १८–इति पञ्चसमचूर्ण॥

अथवा सोंठिके काढ़ेमें अरण्ड का तेल डाल कालानोन, भुनी हींग इनको मिलाय पिये तो तत्काल शूल जाय १९ अथवा शंख का चूर्ण, कालानोन, भुनी हींग, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि ये सब बराबर ले चूर्णकर २॥ टंक गर्मजल से ले तो तत्काल शूल जाय २० अथवा शोधा सिंगीमुहरा, चित्रक, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, सफ़ेद जीरा, भुनी हींग ये सब बराबर ले इनको महीन पीस इसमें भङ्गरे के रस की ३ पुट दे पीछे इसकी गोली चने प्रमाण बांधे। १ गोली गर्म जल से ले तो शूल

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तत्काल जाय २१ अथवा शंखकी भस्म, कंजा की जड़, भुनी हींग, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, पांचों नोन ये सब बराबर ले महीन पीस गर्म जल के साथ २॥ टंक ले तो शूल का रोग जाय २२–इति शूलनाशनचूर्ण॥

अथवा चित्रक, भुनी हींग, पाढ़, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, पांचों नोन, सफ़ेद जीरा, धनियां, बालछड़, अजवाइन, पीपलामूल ये सब बराबर ले महीन पीस जंभीरी के रस की ५ पुट दे पीछे इसकी गोली बांधे। १ गोली प्रतिदिन गर्म जल से ले तो शूल, हृदयशूल, पसुलियों का शूल, अरुचि और ८० प्रकारकी वायु, आम का शूल इन सबको यह गोली तत्काल दूर करती है २३–इति चित्रकादिगुटिका॥

अथवा हड़ की छाल, सोंठि, कालीमिरच, छोटी पीपरि, कुचला, शोधी गन्धक, भुनी हींग, सेंधानोन ये सब बराबर ले महीन पीस चनेप्रमाण गोली बांधे। १ गोली प्रतिदिन गर्म जल से ले तो शूल, संग्रहणी, अतीसार, अजीर्ण, मन्दाग्नि इन सब रोगोंको यह दूर करे २४–इति शूलनाशकगुटिका॥

अथवा कूट २॥ टंक, सोंठि २॥ टंक, कालानोन १। टंक, भुनी हींग १। टंक इन्हें महीन पीस सहँजने की जड़ के रस में अथवा लहसुन के रस में गोली बांधे। १ गोली प्रतिदिन खाय तो शूल तत्काल जाय २५–इति कूटादिगुटिका॥

अथवा त्रिफला, सार, मुलहठी, महुआ इन सबको बराबर ले महीन पीस १। टंक शहद, घृतमें चाटे तो त्रिदोषका शूल जाय २६ अथवा शोधा पारा १० टंक, शोधासिंगीमुहरा १० टंक, कालीमिरच १० टंक, पीपरि २० टंक, सोंठि २० टंक, भुनी हींग १० टंक, पांचों नोन ५ टंकेभर, इमली का खार ८ टंकेभर, जंभीरी का रस और शंखको ७ बार दग्धकर पीछे उस शंखकाचूर्ण ८ टंके भर ले पीछे सबको इकट्ठाकर नींबूके रसमें ५ दिन खरल करे पीछे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

इसको १। टंक गर्मजल से ले तो शूल तत्काल जाय २७–इति शूलदावानल ॥

अथवा हीरा कसीस ½। लाहौरी फिटकरी ½। सेंधानोन ½। कलमीशोरा ½२ सेर इन्हें पीस टीकली यन्त्रमें इनको चुवाय चीनी के बासनमें रस काढ़े पीछे प्रतिदिन १ माशे ले परन्तु लेते समय जीभ में घृत लगा ले और दांत से लगने न पावे तो शूल, फिया, उदरके रोग, बवासीर, अजीर्ण, वायुके रोग इन सबको यह दूर करता है २८–इति शंखद्राव ॥

अथवा शोधी गन्धकसे आधा शोधा पारा इन दोनों के बराबर शोधा कण्टकबेधी तांबे का पत्र इन तीनों को खरल में डालकर मर्दन करे फिर एक दिन पीछे इसका गोला कर हांडी में नोन भर उसके बीच इस गोले को धर पकावे ३ दिन अग्नि दे पीछे स्वाङ्ग-शीतल होनेपर १ रत्ती नागरबेलके पत्ते से खवावे तो तत्काल शूलमात्र दूर हों २९–इति शूलगजकेसरीरस ॥

अथवा सफ़ेद ज़ीरा, सोंठि, भुनी हींग, कालीमिरच, खुरासानी बच ये सब बराबर ले महीन पीस २॥ टंक गर्मजलसे ले तो शूल जाय ३० अथवा त्रिफला १ टकेभर, शोधी गन्धक ५ टंक, सार २॥ टंक इनको महीन पीस एकरस कर २॥ टंक शहद और २॥ टंक घृत इन दोनों के साथ तीन महीने तक ले तो शूलमात्र, वातविकार, फोड़ा ये सब दूर हों ३१–इति गन्धकरसायन ॥

अथवा गुड़ १ टंक, आमला १ टंक, हड़की छाल १ टंक, मण्डूर १ टंक इन सबको महीन पीस २॥ टंक शहद और घृतके साथ खाय तो शूल, अन्नद्रव, जरत्पित्त, अम्लपित्त, परिणामशूल इन सबको दूर करे ३२–इति गुड़ाद्यमण्डूर ॥

अथवा बायबिड़ंग, चित्रक, चव्य, त्रिफला, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि ये सब बराबर ले और इन सबकी बराबर मण्डूर ले और मण्डूरही की बराबर गुड़ ले तथा सबसे १० गुना गोमूत्र ले

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

फिर इनको कढ़ाई में भर मधुरी आंच से पकाय इनका एक पिंडा बनाकर चिकने बासनमें रक्खे। इस मण्डूर को २॥ टंक भोजन के पहिले खाय तो शूल, पक्तिशूल कामलारोग; पाण्डुरोग, सूजन, मन्दाग्नि, बवासीर, संग्रहणी, कृमिरोग, गोला, उदररोग, अम्लपित्त इन सबको दूर करता है ३३–इति तारामण्डूर॥

अथवा हड़की छाल, सुहागा, सोंठि, भुनी हींग, कालीमिरच, चित्रक, शोधी गन्धक, सेंधानोन ये सब बराबर ले और इन सबकी बराबर कुचला ले फिर इन सबको महीन पीस एकरस कर १ माशे जलके साथ ले तो शूल, अफरा, बद्धकोष्ठ, गोला, खांसी, कफ के रोग, अजीर्ण, मन्दाग्नि इन सबको यह दूर करता है ३४–इति शूलगजकेसरीगुटिका॥

अथवा कञ्जाकी जड़, भुनीहींग, भुना सुहागा, सोंठि ये सब बराबर ले महीन पीस २॥ टंक गर्मपानी से ले तो महाशूल दूर हो। ये सब यत्न वैद्यरहस्य में लिखे हैं ३५ अथवा निशोत, बायबिड़ंग, सहँजने की फली, कबीला, हड़की छाल ये सब बराबर ले महीन पीस घोड़े के मूत्र में पकावे फिर २॥ टंक मदिरा के साथ ले तो वायु का शूल जाय। यह चक्रदत्त में है ३६ अथवा भुनी हींग, अमलबेत, पीपरि, कालानोन, अजवाइन, जवाखार, हड़की छाल, सेंधानोन ये सब बराबर ले महीन पीस २॥ टंक मदिरा के साथ खाय तो वात का शूल जाय ३७ अथवा कालानोन, अमलबेत, सफ़ेदजीरा ये सब एक एकसे दूना ले महीन पीस बिजौरे के रस में गोली बांधे फिर एक गोली गर्मजल से ले तो शूल जाय ३८–इति सौवर्चलादिगुटिका॥

अथवा बिजौरे की जड़ २॥ टंक महीन पीस घृत से पिये तो वातका शूल दूर हो। यह बीजपूरादियोग सर्वसंग्रहमें है ३९ अथवा भुनी हींग, अमलबेत, सोंठि, कालीमिरच, बड़ी पीपरि, अजवाइन, कालानोन, सेंधानोन ये सब बराबर ले महीन पीस

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बिजौरे के रस में गोली बांधे फिर १ गोली गर्म पानी से ले तो शूल जाय ४०–इति हिंग्वादिगुटिका ॥

अथवा सोंठि, कालीमिरच, बड़ीपीपरि, कालानोन इनको बराबर ले महीन पीस बिजौरे के रसकी तीन पुट देके सुखा ले फिर २॥ टंक शहद में चाटे तो त्रिदोष का शूल जाय ४१ अथवा शंख की भस्म, कालानोन, भुनी हींग, सोंठि, कालीमिरच, बड़ी पीपरि ये सब बराबर ले महीन पीस २॥ टंक गर्म जल से ले तो शूल जाय ४२ अथवा हल्दी, सहँजने की छाल, सेंधानोन, अरण्ड की जड़, भैंसागुग्गुल, सरसों, मेथी के दाने, सौंफ़, असगन्ध, महुआ इन सबको बराबर ले महीन पीस कांजीके पानीमें रोटी बनाय उसको पकाकर पेट पर सेंक करे तो पेट का शूल जाय ४३ अथवा कौड़ीकी राख, शोधा सिंगीमुहरा, सेंधानोन, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि ये सब बराबर ले महीन पीस नागरबेलके रसमें १ रत्तीप्रमाण गोली बांधे। एक गोली नित्य खाय तो शूल जाय ४४–इति शूलगजकेसरीरस ॥

अथवा शुद्धपारा, शोधी गन्धक, अभ्रक, तामेश्वर, अमलबेत, शोधा सिंगीमुहरा ये सब बराबर ले महीन पीस अदरक के रस में ३ रत्ती प्रमाण की गोली बांधे। १ गोली जल से ले तो वातका शूल जाय ४५–इति अग्निमुखरस ॥

बड़े शंखको २१ बार गर्म कर नींबूके रसमें बुझावे फिर उसका चूर्ण करे और इसमें इमली का खार १ टकेभर, कचनोन १ टंक, बिड़नोन १ टंक, सोंठि ६ माशे, कालीमिरच ६ माशे, पीपरि ६ माशे, भुनी हींग १ टंक, शोधा सिंगीमुहरा ५ टंक, शोधी गन्धक १ टंक, पारा १ टंक इन सबको महीन पीसे फिर पारे और गन्धक की कजली कर उसमें ये औषधें मिलाय एक रस कर छोटे बेर के प्रमाण गोली बांधे। १ गोली लवङ्ग के काढ़े के साथ ले तो शूल तत्काल दूर हो ४६–इति शंखवटीरस ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथवा सीप की भस्म २॥ टंक गर्मजल के साथ पिये तो भोजन के पीछे होता हुआ शूल बन्द होजाय ४७ अथवा शोधा पारा १ टकेभर, शोधी गन्धक १ टंक, शोधा सिंगीमुहरा १ टंक, कालीमिरच १ टंक, बड़ी पीपरि १ टंक, काकड़ासिंगी १ टंक, भुनी हींग २ टंक, पांचोंनोन ८ टंक, इमली का खार ८ टंक, जंभीरी के रस में बुझाई हुई शंख की भस्म ८ टंक ले प्रथम पारे और गन्धक की कजली करे पीछे उस कजली में ये सब औषधें मिलाय नींबूके रस में एकरस कर १ टंक प्रमाण की गोली बांधे। १ गोली जल से ले तो शूल, अजीर्ण, उदर के रोग, मन्दाग्नि इन सबको दूर करे। ये सब यत्न सर्वसंग्रह में लिखे हैं ४८–इति शूलदावानलरस॥

अथ पसुली के शूल का यत्न॥

सिंगीमुहरा, हरताल, हींग, राई, नौसादर, मैनसिल, लहसुन, खुरासानी बच, एलुआ इनको बराबर ले महीन पीस गर्म जलसे गर्म गर्म सुहाता लेप करे तो कुक्षिशूल जाय–इति आठ प्रकार के शूल, परिणामशूल, अन्नद्रव, वातरक्त और जरत्पित्तशूल का यत्न सम्पूर्ण॥

इति दशमस्तरङ्गः १०॥

अथ उदावर्त्तरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न॥

इन १३ वेगों को रोंकनेवाले मनुष्य के उदावर्त्तका रोग उत्पन्न होता है। वे १३ वेग ये हैं–अधोवायु १ मल २ मूत्र ३ जम्भाई ४ अश्रुपात ५ छींक ६ डकार ७ वमन ८ मैथुन ९ क्षुधा १० तृषा ११ श्वास १२ निद्रा १३॥

अथ अनुक्रम से अधोवायु आदि १३ वेगों का लक्षण॥

मल-मूत्र रोंकने के रोग, अफरा और उदर में अधिक वात के रोग ये लक्षण हों तो अधोवायु रोंकने का उदावर्त्त जानिये १॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ मल रोंकने के उदावर्त्त का लक्षण ॥

पेटमें गुड़गुड़ा शब्द रहे, शूल हो, पेडू में पीड़ा हो, मल उतरे नहीं, डकार बहुत आवें, मल मुखमें निकल आवे ये लक्षण हों तो मल रोंकने का उदावर्त्त जानिये २ ॥

अथ मूत्र रोंकनें के उदावर्त्त का लक्षण ॥

पेडू और इन्द्रिय में शूल हो, मूत्र कष्ट से उतरे, मस्तक में पीड़ा हो, पीड़ा से शरीर सीधा न हो, पेडू में अफरा हो तो मूत्र रोंकने का उदावर्त्त जानिये ३ ॥

अथ जंभाई रोंकने के उदावर्त्त का लक्षण ॥

जिससे कन्धा और गला रुक जाय, मस्तक के विकार हों, जंभाई बहुत आवे, वायु के विकार हों और नेत्र, नासिका, कान इनमें पीड़ा बहुत हो ये लक्षण हों तो जंभाई रोंकने का उदावर्त्त जानिये ४ ॥

अथ अश्रुपात रोंकने के उदावर्त्त का लक्षण ॥

आनन्द अथवा शोक के अश्रुपातों को रोंके तो उसका माथा भारी रहे, नेत्र के रोग हों और पीनस हो ५ ॥

अथ छींक रोंकने के उदावर्त्त का लक्षण ॥

कन्धा मुड़े नहीं, माथे में शूल हो, आधाशीशी हो, सब इन्द्रियां दुर्बल होजायँ ६ ॥

अथ डकार रोंकने के उदावर्त्त का लक्षण ॥

कण्ठ और मुख भोजन से भरा दीखे, अधिकमोह, शरीर में व्यथा और वायु के बहुत विकार हों और पवन निकले नहीं ७ ॥

अथ छर्दि रोंकने के उदावर्त्त का लक्षण ॥

शरीर में खुजली और चकत्ते पड़जायँ, अरुचि हो, मुख पर झांई पड़जायँ और सूजन, पाण्डुरोग, ज्वर, कोढ़ हो, हृदय दूखे तथा विसर्परोग हो ८ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ शुक्र रोंकने के उदावर्त्त का लक्षण ॥

पेडू, गुदा, पोते, इन्द्रिय इनमें पीड़ा और सूजन हो, मूत्र रुकजाय, वीर्य और रुधिर इन्द्रिय में से गिरने लगे, पथरी का रोग और नेत्र का विकार हो ९ ॥

अथ क्षुधा रोंकने के उदावर्त्त का लक्षण ॥

तन्द्रा, हाड़ों में फूटन, अरुचि, विना श्रम के श्रम हो, शरीर क्षीण पड़जाय और दृष्टि मन्द होजाय १० ॥

अथ तृषा रोंकने के उदावर्त्त का लक्षण ॥

कण्ठ, मुख सूखे, थोड़ा सुने व हृदय में पीड़ा हो ११ ॥

अथ श्वास रोंकने के उदावर्त्त का लक्षण ॥

दौड़ने में श्वास होआवे उसके रोंकने से ये लक्षण हों। हृदय दूखे, मोह बहुत हो तथा पेट में गोले का रोग हो १२ ॥

अथ निद्रा रोंकने के उदावर्त्त का लक्षण ॥

जंभाई बहुत आवें, अंग में हड़फूटन हो, नेत्र और माथा भारी रहे तथा तन्द्रा हो १३ ॥

अथ उदावर्त्त की उत्पत्ति ॥

कोष्ठ की वायु रूखे, कषैले, कड़ुए भोजन से कुपित हो उदावर्त्तरोगको करती है ॥

अथ उदावर्त्त का सामान्य लक्षण ॥

जहां वायु का ऊर्ध्व भ्रम होजाय उसको उदावर्त्त कहिये ॥

अथ उदावर्त्त का विशेष लक्षण ॥

कफ और मेदा को लेचलनेवाली नसें अधोवायु और मल-मूत्र को ऊँचा लेजाकर मल को सुखा देती हैं उससे हृदय, पेड़ू में शूल हो, शरीर भारी रहे, अरुचि हो, अधोवायु और मल-मूत्र अत्यन्त कष्ट से उतरे, श्वास, खांसी, पीनस, दाह, मोह, तृषा, ज्वर, वमन, हिचकी, मस्तक का रोग, हौलदिली हो, थोड़ा सुने और वात के बहुत से रोग हों तथा तृषा करके

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पीड़ित हो, शरीर क्षीण पड़जाय, शूल बहुत चले, मल का वमन करे तो ऐसे उदावर्त्तवाला मरजाय ॥

अथ क्रम से उदावर्त्त का यत्न ॥

अधोवायु के रोंकनेसे उपजे उदावर्त्तवाले को स्नेह पानकरावे तो उदावर्त्त जाय १ अथवा ओषधियों से पसीना लिवावे अथवा वमन करावे तो उदावर्त्त जाय २ ॥

अथ मल रोंकने के उदावर्त्त का यत्न ॥

इनको जुलाब दे और शूल के दूरकरनेवाली ओषधि दे और ऐसाही अन्न दे, तेल का मर्दन करे तथा बस्तिकर्म करावे ३ ॥

अथ मूत्र रोंकने के उदावर्त्त का यत्न ॥

जवाखार १। टंक, खुरासानी बच १। टंक इनको पानी में महीन पीस पिलावे तो यह उदावर्त्त जाय ४ अथवा कटेली और अर्जुनवृक्ष की जड़काकाढ़ा ले तो मूत्र रोंकने का उदावर्त्त जाय ५ अथवा तिवरसी का बीज पानी में पीस सेंधानोन डालकर पिये तो मूत्र रोंकने का उदावर्त्त जाय ६ अथवा मिश्री, ऊँख का रस, दूध, किशमिश इनका शर्बत पिये तो मूत्र रोंकने का उदावर्त्त, मूत्रकृच्छ्र, पथरी का रोग ये सब जायँ ७ ॥

अथ जंभाई रोंकने के उदावर्त्त का यत्न ॥

स्नेह के पीने अथवा मर्दन करने और पसीना लेने से यह रोग और अन्यभी वात के रोग जायँ ८ ॥

अथ अश्रुपात रोंकने के उदावर्त्त का यत्न ॥

ऊँचे प्रकार से रुदनकर अश्रुपात करे तो यह रोग जाय ९ अथवा सुखपूर्वक अच्छे प्रकार से सोवे तो यह रोगजाय १० अथवा मनोहर कथा को सुने तो यह रोग जाय ११ ॥

अथ छींक रोंकने के उदावर्त्त का यत्न ॥

कालीमिरच, राई, नकछिकनी आदि का नास ले अथवा सूर्य को देखकर छींक ले तो उदावर्त्त जाय १२ अथवा तेल

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मर्दन करावे अथवा पसीना लिवावे तो यह रोग जाय १३ ॥

अथ डकार रोंकने के उदावर्त्त का यत्न ॥

तेल के मर्दन और प्रस्वेद से यह रोग जाय १४ ॥

अथ छर्दि रोंकने के उदावर्त्त का यत्न ॥

इस रोगवाले को वमन और लंघन करावे तथा जुलाब दे, तेल का मर्दन करावे, बस्तिकर्म करावे, नास सुँघावे तो यह रोग जाय १५ ॥

अथ शुक्र रोंकने के उदावर्त्त का यत्न ॥

सुन्दर १६ वर्षकी स्त्रीसे संभोग करे तो यह रोग जाय १६ अथवा तेल को लगावे या मदिरा पिलावे या कूकरी अर्थात् कुतिया का मांस खिलावे अथवा साठी के चावल खिलावे या बस्तिकर्म करावे तो यह रोग जाय १७ ॥

अथ क्षुधा रोंकने के उदावर्त्त का यत्न ॥

चिकना, गर्म, हलका, रुचिकारी, हित भोजन करावे और सुगन्धपुष्पों की माला धारण करावे तो यह रोग जाय १८ ॥

अथ तृषा रोंकने के उदावर्त्त का यत्न ॥

शीतलक्रिया सर्वहितकारी चादर फुहारा आदि जलक्रीड़ा करावे और शीतल जलमें भीमसेनी कर्पूर डाल उसको शनैःशनैः पान करे तो यह रोग जाय १९ ॥

अथ श्रमश्वास रोंकने के उदावर्त्त का यत्न ॥

विश्राम करा उसका खेद दूर करे अथवा शोरुए के साथ चावल खिलावे तो यह रोग जाय २० ॥

अथ निद्रा रोंकने के उदावर्त्त का यत्न ॥

गर्म दूध में मिश्री डाल सुहाता सुहाता रुचिपूर्वक पिये अथवा सुखसे सोवे अथवा मनोहर कथा सुने तो यह रोग जाय २१ ॥

अथ रूखी वस्तु खाने से उत्पन्न उदावर्त्तका यत्न ॥

हींग, शहद, सेंधानोन इनको महीन पीस बत्तीकर घृत से

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

चुपड़ जबतक सुहाय तबतक गुदामेंधरे तो यह उदावर्त्तजाय २२–इति हिंग्वादिफलवर्ति ॥ अथवा मैनफल, पीपल, कूट, खुरासानीबच, सरसों, गुड़ इनको दूधमें पीस बत्तीकर गुदा में सुहाती हुई रक्खे तो उदावर्त्त जाय २३–इति मदनफलादिफलवर्ति ॥

अथवा खांड़ १। टंक, निशोत २॥ टंक, पीपल ५ टंक इनका चूर्ण कर भोजनके पहिले २ टंक शहद के साथ ले तो गाढ़ा दुहरा मल उतरता हो तो वह बन्द हो और उदावर्त्त जाय २४–इति नारायणचूर्ण ॥

अथवा सोंठि, मिरच, पीपल, पीपलामूल, निशोत, दात्यूणी, चित्रक इन सबको बराबर ले महीन पीस १ टंक गुड़के साथ प्रभातही जलसे ले तो उदावर्त्त, फिया, गोला, सूजन, पाण्डुरोग ये दूर हों २५–इति गुडाष्टक ॥ अथवा सूखी मूली, साठी की जड़, छोटी पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठि, दशमूल, किरमाला की गिरी इन ओषधियों को घृत में पकावे फिर इस घृत को खाय तो सब प्रकार के उदावर्त्त जायँ। ये सब यत्न भावप्रकाश में हैं २६–इति शुष्कमूलकाद्यघृत ॥ अथवा शोधा जमालगोटा, पारा, शोधी गन्धक, भुना सुहागा, सोंठि, मिरच, बड़ी पीपल ये सब बराबर ले प्रथम पारे और गन्धक की कजली करे फिर ये सब ओषधि कजली में मिलाय ४ रत्ती या १ माशे मिश्रीके साथ ले तो उदावर्त्त, अफरा, उदररोग, गोला इन सबको दूर करे। यह वैद्यरहस्य में है २७–इति नाराचरस ॥

अथवा निशोत, थूहरके पात, तिल आदिक गर्मवस्तु के सेवन से उदावर्त्त जाय २८ अथवा निशोत, दात्यूणी, तज, थूहर, शंखाहूली, किरमाला, कबीला, कंजा की जड़, चोख इन सबको बराबर ले जवकुटकर १ टंक का काढ़ा करे उसमें २॥ टंक तेल डाल नित्य ७ दिन तक पिये तो उदावर्त्त, उदररोग,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अफरा, विषरोग गोला इनको यह दूर करे २९-इति उदावर्त-रोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

अथ आनाहरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

उदर में आमके या मलके बढ़ने से, अधोवायुके रोंकने से, शरीर में दुष्टपवन के बढ़ने से मनुष्यों के उदर में आनाह नाम अफरा रोग होता है उसमें तृषा, पीनस, शिर के सम्पूर्ण विकार, उदरशूल हों, शरीर भारी रहे, हृदय दूखे, डकार न आवे ये लक्षण हों तो आम का अफरा कहिये १ ॥

अथ मल बढ़न के अफरा का लक्षण ॥

शरीर जकड़जाय और दिशा के समय कटि और पीठ में पीड़ा हो, मूर्च्छा हो, मल की छर्दि करे, श्वास और विसूचिका हो और पीछे कहेहुए लक्षण भी हों तो मल बढ़नेका अफरा जानिये॥

अथ अफरे का यत्न ॥

जो उदावर्त्त का यत्न पीछे लिखा है वही अफरे का भी जानना परन्तु कुछ विशेष है सो कहते हैं निशोत२ भाग, पीपल ४ भाग, बड़ी हड़की छाल ५ भाग इनको महीन पीस इन सबकी बराबर गुड़ मिलाय १ टंक प्रमाण गोलीकर १ गोली नित्य जलके साथ १५ दिनतक ले तो अफरे का रोग जाय १ अथवा सोंठि, कालीमिरच, बड़ीपीपल, सेंधानोन, सरसों, धमासा, कूट, मेढ़ल ये सब बराबर ले महीन पीस गुड़ में मिलाय पकावे फिर उसकी अंगूठे के बराबर मोटी बत्तीकर उसमें घृत लगाय गुदा में धरे तो अफरा, उदावर्त्त, उदररोग, पेडू का रोग और गोले कारोग दूर हो। ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं २-इति आनाह नाम अफरा रोगकी उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

अथ गुल्मरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

मिथ्या आहार और मिथ्या विहारके कुपथ्य से वात, पित्त, कफ दुष्ट होकर पुरुष अथवा स्त्री के पेट से ले पेडूतक गोले के

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सदृश एक गांठ को उत्पन्न करते हैं वह गोला वात १ पित्त २ कफ ३ सन्निपात ४ रुधिर ५ इन भेदोंसे ५ प्रकार का है। कोष्ठ के जिन स्थानों में गुल्म होता है वे स्थान ये हैं—दोनों पसुलियों में, हृदयमें, नाभि में, पेडू में ॥

अथ गुल्म का सामान्य लक्षण ॥

हृदय और पेडूके बीच में गांठ हो फिरे अथवा न फिरे, गोल हो और बढ़ती जाय उसको गुल्म कहते हैं। इस रोग में अरुचि हो, मल-मूत्र दुहरा उतरे, वायु बढ़े, आंत बोलें, अफरा हो और पवन की ऊर्ध्वगति हो जिसमें ये लक्षण हों उसको गुल्मरोग कहते हैं ॥

अथ वायुगोले की उत्पत्ति और लक्षण ॥

रूखे अन्नके खानेसे, विषमाशनसे, मूत्ररोंकनेसे, शोच करने से, चोट लगनेसे, मल की क्षीणता से, लंघन से, विरुद्ध चेष्टासे, बलवान् के साथ युद्ध करने से वायुगोला उत्पन्न होता है ॥

अथ वायु के गुल्म का लक्षण ॥

जो गोले के स्थान में पीड़ा घटे-बढ़े और अधोवायु की प्रवृत्ति अच्छीतरह से न हो, मल उतरे नहीं, मुख और गला सूखे, शरीर की कान्ति काली होजाय, शीतज्वर हो और हृदय, कुक्षि, पसुली, शिर इन सबमें पीड़ा हो तथा हृदयमें भोजन पचे के पीछे पीड़ा अधिक हो तथा भोजन करने के पीछे थोड़ी हो और रूखे, कषैले और कडुए रससे पीड़ा बढ़े ये लक्षण हों तो वात का गुल्म कहिये ॥

अथ पित्त के गोले की उत्पत्ति ॥

कडुआ, तीखा, खट्टा, गर्म इन रसों के सेवन से, क्रोध के करने और मद्य के पीने, अग्नि और धूप के सेवन से, आमके बढ़नेसे, चोटके लगनेसे, रुधिरके बिगड़नेसे पित्तका कोप होताहै॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ पित्त के गोले का लक्षण ॥

ज्वर, तृषा, शरीर में पीड़ा, शूल, दाह, व्रण, गोले में हाथ के लगने से अधिक पीड़ा और भोजन के पचने के समय बहुत प्रस्वेद हो ये लक्षण हों तो पित्त का गोला जानिये ॥

अथ कफ के गोले की उत्पत्ति ॥

ठण्ढी, भारी, चिकनी वस्तुओं के खाने से और बैठे रहने वा दिन में सोने से कफ का गोला उत्पन्न होता है और ये सब कारण मिले हों तो सन्निपात उत्पन्न होता है ॥

अथ कफ के गोले का लक्षण ॥

जिसमें शीतज्वर वा शरीरमें पीड़ा हो, कड़ुआ, खट्टा, वमन, खांसी, भोजन में अरुचि ये लक्षण हों तो कफ का गोला जानिये ॥

अथ आर्तवजन्य गुल्म का लक्षण ॥

जिस स्त्री का कच्चा गर्भ गिरपड़े उसके कुपथ्य भोजन से, प्रथम गर्भ के ऋतुसमय अथवा ऋतु विना भी वायु रुधिर को ग्रहणकर गोले को उत्पन्न करे। उस गोले में अति पीड़ा, दाह हो और पित्त के गोले के सम्पूर्ण लक्षण मिलें तथा वह अङ्ग विनाही सब पेट में फिरे और शूल हो एवं गोले में गर्भके सम्पूर्ण लक्षण मिलें तो उसको आर्तव रुधिर से उपजा गोला जानिये। परन्तु उस स्त्री का दशवां महीना व्यतीत होचुके तब वैद्य उस गोले का उपाय करे ॥

अथ गुल्मरोग का असाध्य लक्षण ॥

जिस मनुष्य का गोला फिरे अथवा न फिरे और पीड़ा अधिक व शरीरमें दाह हो, पथरी की सी गांठ ऊंची हो वह गांठ मल को बिगाड़ शरीर को दुर्बलकर अग्नि के बल को नष्ट करदे तो उस गोले को त्रिदोष का जानिये यह असाध्य है १ ॥

अथ गोले का असाध्य लक्षण ॥

गोला क्रम से बढ़े, शूल चले, कछुए के समान कठोर हो,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

शरीर दुर्बल होजाय, भोजन से रुचि जाती रहे, कड़ुआ, खट्टा वमन करे, ज्वर, तृषा, तन्द्रा, पीनस, अतीसार, हृदय, नाभि और हाथ पैरों में सूजन होती है। इस गोलेवाले मनुष्य को असाध्य जानिये २॥

अथ गोले का यत्न॥

गर्म दूध में अरण्ड का तेल और हड़ का चूर्ण डाल नित्य पिये तो जुलाब लगकर गोला जाय १ अथवा तेलके मर्दन से गोला जाय २ अथवा सज्जी, कूट, जवाखार, केवड़े का खार इनका चूर्ण कर इनमें अरण्ड का तेल मिलाय पिये तो वात का गोला जाय ३॥

अथ पित्त के गोले का यत्न॥

निशोत के चूर्ण का सेवन करावे या त्रिफले का सेवन करावे ४ अथवा केले को मिश्री के साथ अथवा शहद के साथ दे तो पित्त का गोला जाय ५॥

अथ वात व कफ के गोले का यत्न॥

भुनी हींग, पीपलामूल, धनियां, सफ़ेद ज़ीरा, खुरासानी बच, चव्य, चित्रक, पाढ़, कचूर, अमलबेत, कालानोन, सांभरनोन, सेंधानोन, जवाखार, सज्जी, अनारदाना, हड़ की छाल, पुहकरमूल, तन्तरीक, झाऊ की जड़ ये सब बराबर ले महीन पीस इसमें अदरक के रसकी ७ पुट दे फिर बिजौरे के रस की ७ पुट दे फिर २॥ टंक नित्य ले तो गोला, अफरा, बवासीर, उदावर्त्त, उदररोग इन सबको यह दूर करता है ६—इति हिंग्वादि चूर्ण॥

अथवा सज्जी ४ माशे, गुड़ ४ माशे इनको मिलाय नित्य खाय तो गोला जाय ७ अथवा पलाश का खार, थूहर का खार, आंधीझाड़े का खार, इमली का खार, आक का खार, तिल का खार, जवाखार, सज्जी इनको महीन पीस १। टंक अथवा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

२॥ टंक प्रमाण गर्मजल के साथ ले तो गोला और शूलके रोगों को दूर करे ८–इति क्षाराष्टक ॥

अथवा सांभरनोन, कचनोन, ज़वाखार, कालानोन, सुहागा, सज्जी ये सब बराबर ले महीन पीस थूहर के दूध में १ दिन भिजोय रक्खे फिर धूप में सुखाय तीन दिन आकके दूध में भिजोवे और धूप में सुखावे तदनन्तर आक के पत्तों में लपेट मट्टी के बासन में धर गजपुट में पका ले फिर सोंठि, कालीमिरच, बड़ी पीपल, त्रिफला, अजवाइन, सफ़ेद ज़ीरा, चित्रक इनको उन खारों की बराबर ले महीन पीस उनमें मिलावे फिर इसको २ टंक प्रमाण गर्मजल से ले तो गोला, अजीर्ण, सूजन, उदरके सब रोग, मन्दाग्नि, उदावर्त्त, फिया इन सबको यह दूर करता है ९–इति वज्रक्षारचूर्ण ॥

अथवा ग्वार के पट्ठेका गूदा ले उसमें सोंठि, कालीमिरच, बड़ीपीपल, सेंधानोन इनको महीन पीस मिलाय २॥ टंक प्रमाण घृत के साथ नित्य खाय तो गोला और फिया दूर हों १० अथवा ग्वार के पट्ठे के एकमन गूदे में २०० टकेभर गुड़ डाले और सोंठि २॥ टके, मिरच २॥ टके, छोटीपीपल २॥ टके, तज २॥ टके, पत्रज २॥ टके, चव्य २॥ टके, इलायची २। टके, कचूर २ टके, त्रिफला २। टके, चित्रक २। टके, नागकेसर २। टके, भाऊ की जड़ २। टके, अजमोद २। टके, सफ़ेद ज़ीरा २। टके, देवदारु २। टके, बेर का छिलका २। टके, असगन्ध २। टके, रास्ना २। टके, बिधारा २। टके और इन्द्रयव २। टकेभर इनको महीन पीस ग्वार के पट्ठे के रस में डाले फिर इनको एक रसकर चिकने बासन में भर २१ दिन पृथ्वी में गाड़े फिर निकालकर २ टके भर खाय तो गोला, उदावर्त्त, उदर के विकार, विसूचिका, गृध्रसी, श्वास, खांसी, पाण्डुरोग, वातके सब विकार इनको यह दूर करे। ये सब यत्न भावप्रकाश में हैं ११–इति ग्वार के पट्ठे का आसव ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथवा शोरा १ टंक, अदरक १ टंक इनको नित्य खाय तो गोला जाय १२ अथवा सीपकी भस्म १ टंक, गुड़ ४ माशे नित्य खाय तो गोला जाय १३–इति सीपप्रयोग ॥

अथवा लहसुन २। टकेभर की दूध में खीर करके नित्य खाय तो गोला जाय १४ अथवा अरण्ड की जड़, चित्रक, सोंठि, पीपलामूल, बायबिड़ंग, सेंधानोन, भुनी हींग इनका काढ़ा दे तो गोला, अफरा, शूल जाय १५ ॥

अथवा अजवाइन १६ माशे, सफ़ेद ज़ीरा ५ टंक, धनियां ५ टंक, कालीमिरच ५ टंक, कुड़ाकी छाल ५ टंक, अजमोद ५ टंक, कालाज़ीरा ५ टंक, भुनी हींग ६ टंक, जवाखार ८ टंक, सज्जी ८ टंक, पांचोंनोन ८ टंक, निशोत ८ टंक, दात्यूणी १० टंक, कचूर १० टंक, पुष्करमूल १० टंक, बायबिड़ंग १० टंक, अनारदाना १० टंक, हड़ की छाल १० टंक, चित्रक १० टंक, अमलबेत १० टंक, सोंठि १० टंक इन सब को महीन पीस बिजौरे के रस की १० पुट दे फिर १ टंक प्रमाण की गोली बांधे। १ गोली घृत के साथ अथवा दूधके साथ नित्य खाय तो पित्त के गोले को और मद्य के साथ वायु के गोले को दूर करे तथा हृदय के रोग, संग्रहणी, शूल, कृमि, बवासीर इन रोगों को भी यह गुटिका दूर करती है १६–इति कांकायनगुटिका ॥

अथवा लवणभास्कर चूर्ण जो पीछे लिखा है उसके खाने से गोले का रोग जाय। अथवा छोटी पीपल *, भारंगी, पीपलामूल, देवदारु, कंजा की जड़, तिल इनका काढ़ा ले तो गोले का रोग जाय १७ अथवा तिलों का काढ़ा ले तो गोला जाय १८ अथवा भारंगी, गुड़, घृत, बड़ी पीपल, तिल, सोंठि, मिरच इनका काढ़ा ले तो गोले का रोग जाय १९–इति कणादिकाथ॥

* जिन ओषधियों का प्रमाण चूर्ण या काढ़ा विषय में नहीं लिखा है वहाँ पर सम्पूर्ण ओषधियों को समभाग लेना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथवा मैनसिल, हरताल, सोनामक्खी, आमलासार गन्धक, ताम्रेश्वर, पारा ये सब बराबर ले पहिले पारे और गन्धक की कजली करे फिर उस कजली में ये सब ओषधियां डाले फिर पीपल के काढ़े के रस में १ दिन खरल करे तथा थूहर के दूधमें १ दिन खरल करे फिर एक टंक प्रमाण शहद में अथवा गोमूत्र में ले तो गोला और शूल का रोग जाय २०–इति विद्याधररस॥

अथवा पारा, शोधी गन्धक, भुना सुहागा, त्रिफला, सोंठि, कालीमिरच, पीपल, शोधा हरताल, शोधा सिंगीमुहरा, ताम्रेश्वर, शोधा जमालगोटा ये सब बराबर ले पहिले पारे और गन्धक की कजली करे फिर उस कजली में ये ओषधियां पीस मिलाय इसमें भांगरे के रस की ३ पुट दे और तीन दिन तक खरल करे फिर इसकी १ रत्ती प्रमाण गोली बांधे। १ गोली अदरक के रस में ले तो गोला जाय। ये सब यत्न वैद्यरहस्यमें लिखे हैं २१–इति गुल्मकुठाररस॥

अथवा हाथ में फ़स्तआदि लिवावे तो गोले के सर्वरोग जायँ २२ अथवा भुनी हींग, अनारदाना, बिड़नोन ये सब बराबर ले बिजौरे के रसमें खरल करे फिर २॥ टंक मद्य के साथ नित्य ले तो वायुगोला जाय २३ अथवा सज्जी, कूट, जवाखार ये सब बराबर ले महीन पीस २॥ टंक तेल के साथ पिये तो गोला जाय २४॥

अथ योनि में शूल होता हो उसका यत्न॥

त्रिफला, निशोत, दात्यूणी, दशमूल ये सब पृथक् पृथक् टंक भर ले फिर इन को जवकुट कर ५ टंक का काढ़ा कर, छान, उसमें अरण्ड का तेल डाल, घृत मिलाय, दूध से पिये तो योनि का शूल जाय। यह योगतरङ्गिणी में लिखा है २५–इति मिश्रकस्नेह॥

अथवा १ टंक अजवाइन को महीन पीस ५ टंक गुड़ में

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मिलाय मट्ठे के साथ नित्य ले तो गोला जाय, क्षुधा लगे, मल-मूत्र उतरे। यह वृन्द में लिखा है २६ अथवा अजवाइन, भुनी हींग, सेंधानोन, जवाखार कालानोन, हड़ की छाल ये सब बराबर ले महीन पीस २॥ टंक बारू के साथ नित्य ले तो गोला, शूल जाय २७ अथवा भुनी हींग १ भाग, सेंधानोन २ भाग, पीपलामूल ४ भाग, कंकोलमिरच ५ भाग, अजवाइन ६ भाग, हड़ की छाल ७ भाग, अनारदाना ८ भाग, आम की जड़ का छिलका ९ भाग, चित्रक १० भाग, सोंठि ११ भाग, फिटकरी १२ भाग इन सबको महीन पीस २॥ टंक नित्य पानी से ले तो गोला, अरुचि, हृद्रोग, अफरा, बवासीर, वात के सब विकार इनको यह दूर करे २८–इति हिंगुद्वादशक चूर्ण॥

अथवा खुरासानी बच, हड़ की छाल, भुनी हींग, सेंधानोन, अमलबेत, जवाखार, अजवाइन इनको बराबर ले महीन पीस २॥ टंक गर्म पानी से ले तो शूल और गोला दूर हों २९–इति वचाद्यचूर्ण॥

अथवा २५ बड़ी हड़ों को १६ सेर जल में पकावे और जल ही में दात्यूणी १६ टके भर, चित्रक इनको डाल मधुरी आंच से पकावे जब जल का चतुर्थांश रह जाय फिर उसमें हड़ों समेत १६ टकेभर गुड़ डाल फिर औटावे जब आधा रहजाय तब इसमें बड़ी पीपल १ टके, सोंठि १ टके, घृत ४ टके, शहद ४ टके, तजकलमी १ टके, पत्रज १ टके, नागकेसर १ टके, छोटी इलायची १ टके भर इन सबको एकरसकर अवलेह करे फिर १ टके भर नित्य खाय तो जुलाब लगे और गोला, संग्रहणी, पाण्डुरोग, सूजन, विषमज्वर, कोढ़, बवासीर, अरुचि, फिया, हृद्रोग ये सब जायँ ३०–इति दन्ती हरीतकी॥

अथवा शंखद्राव से भी गोला जाय अथवा बड़ीपक्की जम्भीरी २०० ले उसका रस निकाल घृत के चिकने बासन में रक्खे फिर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

भुनी हींग २ टके, सेंधानोन १ टके, सोंठि १ टके, कालीमिरच १ टके, कालानोन ४ टके, अजवाइन १ टके, सरसों ६ टके भर इन सब औषधियों को महीन पीस उस रसमें डाल फिर दो दिन घरे में गाड़ रक्खे फिर १ टकेभर प्रातिदिन खाय तो गोला, फिया, विद्रधि, अष्ठीला, वात-कफ का अतीसार, पसली का शूल, हृदयरोग, बद्धकोष्ठ, जहर, उदररोग, वात-कफ का रोग ये सब दूर हों। यह यत्न भावप्रकाश में लिखा है ३१–इति जम्भीरीद्राव॥

अथवा नदीकुड़ा, आक, सहँजना, कटेली, थूहर, बेल, बकायन, आंधीझाड़ा, कदम्ब, अडूसा इन सबका खार और सांभरनोन बराबर ले और इसमें अनुमान मुवाफ़िक़ भुनी हींग डाल फिर इनको २॥ टंक गर्म पानीसे ले तो गोला, शूल, उदरके रोग ये सब जायँ। यह योगशतक में है ३२–इति नादेयीक्षार॥

अथवा सौंफ, कंजा की जड़, तज, दारुहल्दी, बड़ी पीपल इनका काढ़ा दे और तिल, गुड़, सोंठि, मिरच, भुनी हींग, भारंगी ये सब औषध काढ़े में डाल औटाकर दे तो रुधिर का गोला और स्त्रीधर्म जाता रहा हो उसको यह दूर करता है ३३ अथवा जवाखार, सोंठि, कालीमिरच, बड़ीपीपल इनको औटाके पिलावे तो रुधिर का गोला जाय ३४ अथवा शुद्ध पारा १ भाग, बंगकी भस्म १ भाग, शोधी गन्धक ४ भाग, ताम्रेश्वर ४ भाग इन सबको दो दिनतक आक के दूध में खरल करे फिर इसका गोलाकर, सरवे में धर, गजपुटमें पकावे फिर इसको ठण्ढा करके निकाले। इस रसको २ रत्ती प्रमाण घृत के साथ ले तो गोला, फिया, उदरके रोग ये सब दूर हों ३५–इति बंगेश्वररस॥

मछली का मांस, सूखी तरकारी, दाल, मट्ठा, फल गोलेवाले इन वस्तुओंको न खायँ। यह सर्वसंग्रह में लिखा है॥ इति गुल्म रोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ यकृत, प्लीहरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

यकृत, प्लीह ये दोनों शरीरके अङ्ग हैं। दाहिनी पसली में यकृत् रहता है, हृदयके नीचे और बाईं पसलीमें प्लीह रहता है इसको लौकिक में "फिया" कहते हैं। ये दोनों रुधिर से उत्पन्न होते हैं और रुधिर की ले चलनेवाली नसों में इनका मुख्य ठिकाना है ॥

अथ प्लीहरोग की उत्पत्ति और लक्षण ॥

जो मनुष्य गर्म अथवा दही आदि कफकारी वस्तु बहुत खाय उसके रुधिर और कफ दोनों बढ़कर मन्दज्वर और मन्दाग्नि करते हैं। कफ, पित्त के जिसमें लक्षण हों उसके शरीर का बल जाता रहे, शरीर पीला पड़जाय उसको फिया कहते हैं वह फिया वात, पित्त, कफ, रुधिर इन भेदोंसे चार प्रकार का है॥

अथ वात के फिया का लक्षण ॥

उदर में नित्य अफरा, उदावर्त और पीड़ा रहे तो वात का फिया जानिये १ ॥

अथ पित्त के फिया का लक्षण ॥

ज्वर रहे, तृषा बहुत लगे तथा दाह, मोह हो, शरीर पीला होजाय तो पित्त का फिया जानिये २ ॥

अथ कफ के फिया का लक्षण ॥

सब इन्द्रियां शिथिल होजायँ, भ्रम हो, शरीर का रंग और का और होजाय, मोह हो, शरीर भारी रहे, उदर लाल होजाय ये लक्षण कफ और रुधिर के फिया का जानिये ३ और त्रिदोष का फिया हो तो असाध्य जानिये और यही लक्षण यकृत् रोग का भी जानना ॥

अथ फिया का यत्न ॥

जवाखार ऊंटनी के दूधके साथ ले तो फिया जाय १ अथवा सीपकी भस्म दंही के साथ खाय तो फिया जाय २ अथवा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

१। टंक पीपल दूध के साथ नित्य खाय तो फिया जाय ३ अथवा आक के पत्तों की राख नोन मिलाय मट्ठे के साथ पिये तो फिया जाय ४ अथवा भुनी हींग, कालीमिरच, पीपल *, सोंठि, कूट, जवाखार, सेंधानोन ये सब बराबर ले महीन पीस २॥ टंक बिजौरे के रस से प्रतिदिन ले तो फिया जाय ५ अथवा छीले के खार में भिजोई हुई पीपल २॥ टंक ले तो फिया और गोला जाय ६ अथवा शङ्ख की भस्म ४ माशे जम्भीरी के रस के साथ ले तो फिया जाय ७ अथवा बायें हाथ की फ़स्त खुलवावे तो फिया जाय ८ दाहिने हाथकी फ़स्त खुलवावे तो यकृत् जाय ९ अथवा पक्के आम के रस में शहद को मिलाके पिये तो फिया जाय १० अथवा अजवाइन, चित्रक, जवाखार, पीपलामूल, दात्यूणी, पीपल, मदिरा के साथ नित्य पिये तो फिया जाय। ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं ११ अथवा सेंधानोन ५ टंक जल में औटाय नित्य पिये तो फिया जाय। यह वैद्यरहस्य में है १२ अथवा जवाखार, बायबिड़ंग, पीपल, कंजाकी जड़, अमलबेत ये बराबर ले महीन पीस २ टंक नित्य गर्म जल के साथ ले तो फिया जाय १३ अथवा पीपल, सोंठि, दात्यूणी ये सब बराबर ले और इनसे दूनी हड़ की छाल ले सब को महीन पीस गुड़ के साथ पानी से ले तो फिया जाय १४ अथवा बायबिड़ंग, इन्द्रायण की जड़, सेंधानोन, चित्रक ये बराबर ले और इन से दूनी देवदारु और तिगुनी सोंठि ले और साठी की जड़, बायबिड़ंग बराबर ले तथा निशोत चौगुनी ले इनको महीन पीस १। टंक गर्म पानी के साथ ले तो फिया जाय १५ अथवा सहँजने की जड़, सेंधानोन, चित्रक, पीपल इनका काढ़ाकर पिये तो फिया जाय १६ अथवा शुद्धभिलावां, हड़की छाल, सफ़ेद

* जिस काढ़ा में पीपल का प्रयोग आवे वहां पर बड़ी पीपल छोड़ना और जिस जगह चूर्ण, अवलेहका प्रयोग हो उस जगह छोटी पीपल छोड़ना॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जीरा ये सब बराबर ले इन्हें महीन पीस इनमें बराबर का गुड़ मिलाय ५ टंक नित्य ७ दिनतक खाय तो फिया जाय १७ अथवा लहसुन, पीपलामूल, हड़ की छाल ये बराबर ले महीन पीस २॥ टंक गोमूत्र के साथ ले तो फिया जाय। यह चक्रदत्त में लिखा है १८ अथवा रोहिष (रोहीड़ा) की जड़, हड़ की छाल ये बराबर ले महीन पीस २॥ टंक गोमूत्र के साथ ले तो फिया और उदरके रोग, प्रमेह, बवासीर, कफ के रोग, कोढ़ ये सब जायँ यह योगतरङ्गिणी में है १९ अथवा सांभरनोन, हल्दी, राई इन तीनों को एक एक टकेभर ले और १०० टकेभर मट्ठे को चिकने बासन में भर ५ दिनतक रक्खे फिर ५ टकेभर ३ दिनतक पिये तो फिया जाय। यह भावप्रकाश में है २०—इति तक्रसन्धान॥

अथवा १०० टकेभर रोहिष और ४ सेर बेर की जड़ को कूट कर १६ सेर पानी में औटावे जब पानी चौथाई रहजाय तब उतार छान ले फिर उस पानी में १ सेर गौ का घृत डाले तथा बकरी का दूध ४ सेर डाले और सोंठि २टंक, कालीमिरच २॥टंक, पीपल २॥ टंक, त्रिफला २॥ टंक, भुनी हींग २॥ टंक, अजवाइन २॥ टंक, साठी की जड़ २॥ टंक, तुम्बुरू (तोंबा) २॥ टंक, बायबिड़ंग २॥ टंक, कालानोन २॥ टंक, अनारदाना २॥ टंक, देवदारु २॥ टंक, इन्द्रायण की जड़ २॥ टंक, जवाखार २॥ टंक, पुष्करमूल २॥ टंक, भाऊ की जड़ २॥ टंक, खुरासानी बच २॥ टंक, चव्य २॥ टंक इन सबको महीन पीस घृत में मधुरी आंच से पकावे जब ये औषध और दूध जल जायँ और घृतमात्र रहजाय तब उसको अमृतबान में छानके भर रक्खे फिर इस घृत में से ३ टकेभर पथ्यके साथ खाय तो फिया, प्लीहोदर, कुक्षिशूल, पसली का शूल, अरुचि, बद्धकोष्ठ, पाण्डुरोग, छर्दि, अतीसार, विषमज्वर इन सब को यह दूर करता है यह चक्रदत्त में है २१ इति महारोचक घृत॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथवा चित्रक १०० टकेभर ले उसका काढ़ाकर उसमें कांजी का पानी २०० टके और दही का मट्ठा ४०० टके, पीपलामूल १ टके, चव्य १ टके, चित्रक १ टके, सोंठि १ टके, तालीसपत्र १ टके, जवाखार १ टके, सेंधानोन १ टके, दोनों जीरा २ टके, दोनों हल्दी २ टके, कालीमिरच १ टके भर इन सबको महीन पीस चित्रक के काढ़े में मिलावे पीछे इसमें १ सेर घृत मिलावे जब पानी आदि सब जलजायँ घृतमात्र रहजाय तब इसे उतार छानकर अमृतबान में भर रक्खे फिर उसका सेवन करे तो फिया, गोला, उदररोग, अफरा, पाण्डुरोग, अरुचि, विषमज्वर, पेड़ू का शूल, सूजन, मन्दाग्नि इन रोगों को यह दूरकर बल को बढ़ाता है। यह वृन्द में लिखा है २२–इति चित्रकाद्य घृत॥

जो फिया का यत्न है वही यकृत् का भी जानना॥ अथवा जवाखार, बायबिड़ंग, पीपल, कंजा की जड़ इनके काढ़े से यकृत्, फिया दोनों जायँ २३–इति फिया, यकृत् रोगकी उत्पत्ति, लक्षण और यत्न॥

अथ हृद्रोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न॥

बहुत गर्म और भारी, बहुत खट्टी, कषैली, बहुत तीखी वस्तुओं के खाने से, बहुत श्रम करने से, भारीचोट के लगने से, बहुत पिटने और अतिचिन्ता करने से, मलमूत्र के रोंकने से हृदय का रोग उत्पन्न होता है। वह रोग वात १ पित्त २ कफ ३ सन्निपात ४ कृमि ५ इन भेदों से पांचप्रकार का है॥

अथ हृद्रोग का सामान्य लक्षण॥

अन्न खानेका रस जो प्रथम हृदय में जाय उस रसको वात, पित्त, कफ बिगाड़कर हृदय में पीड़ा करते हैं उसको वैद्य हृद्रोग कहते हैं १॥

अथ वात के हृद्रोग का लक्षण॥

हृदय में पत्थर और कुल्हाड़े की सी चोट लगे ये लक्षण हों तो वातका हृद्रोग जानिये १॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ पित्त के हृद्रोग का लक्षण ॥

तृषा बहुत लगे, दाह हो, हृदय दूखे, कण्ठ से धुआं निकले, मूर्च्छा हो, शरीर शीतल होजाय, पसीना आवे, मुख सूखजाय ये लक्षण जिसमें हों उसको पित्तका हृद्रोग जानिये २ ॥

अथ कफ के हृद्रोग का लक्षण ॥

हृदय भारी रहे, मुख में से कफ बहुत निकले, भोजन से रुचि जाती रहे, शरीर जकड़ा सा होजाय, मुख मीठा रहे, मन्दाग्नि हो, हृदय में कफ जमजाय ये लक्षण हों तो कफका हृद्रोग जानिये ३ और ये सब लक्षण मिले हों तो सान्निपात का हृद्रोग जानिये ४ ॥

अथ कृमिके हृद्रोग का लक्षण ॥

आंतों में कृमि हों, पीछे कुपथ्य का करनेवाला मनुष्य तिल, दूध, गुड़ आदि मीठी वस्तु खाय तो उसके मर्म स्थानों में पीड़ा होय, हृदय दूखे, हृदय सड़जाय तब उसकी आत्मा बहुत दुःख पावे ये लक्षण जिसमें हों और मनमें क्लेद हो, थूके बहुत, हृदय में शूल चले, भोजन में अरुचि हो, नेत्र काले पड़जायँ, शरीर सूख जाय तो कृमि के हृद्रोग का लक्षण जानिये ॥

अथ हृद्रोग के उपद्रव ॥

सब इन्द्रियों का ज्ञान जाता रहे, शरीर में पीड़ा हो, घुमेर आवे, शरीर सूख जाय ॥

अथ हृद्रोग का यत्न ॥

बहेड़े के वृक्ष की छाल का चूर्ण २ टकेभर प्रतिदिन दूध अथवा घृत या गुड़ के पानी के साथ पिये तो हृद्रोग, जीर्ण-ज्वर, रक्तपित्त इनको दूर करे १ अथवा हड़ की छाल, खुरासानी बच, रास्ना, पीपल, सोंठि, कचूर, पुष्करमूल ये सब बराबर ले महीन पीस २॥ टंक जल के साथ ले तो हृद्रोग दूर हो २ अथवा हिरन के सींग को पुटपाक कर गौ के घृत के साथ खाय तो

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

हृद्रोग, शूलमात्र दूर हों ३–इति हिरन के सींग का पुटपाक ॥

अथवा खरैटी, गंगेरन की छाल, काहूवृक्ष का बकला, मुलहठी ये औषध बराबर ले महीन पीस २॥ टंक का काढ़ा कर नित्य ले तो हृद्रोग, वातरक्त, रक्तपित्त इन सबको दूर करे। यह भावप्रकाश में लिखा है ४ अथवा कूट, बायबिड़ंग इनको महीन पीस २॥ टंक गोमूत्र के साथ ले तो हृदयके कृमि गिरपड़ें और हृद्रोग जाय ५ अथवा गंगेरन की जड़ और काहूवृक्षका बकला, पुष्करमूल इनको महीन पीस २॥ टंक दूध के साथ अथवा शहद के साथ ले तो हृद्रोग, श्वास, कास, छर्दि, हिचकी इनको दूर करे ६ अथवा हड़ की छाल, बच, रास्ना, पीपल, सोंठि, कचूर, पुष्करमूल इनका चूर्ण ले तो हृद्रोग जाय७–इति हरीतक्यादि चूर्ण ॥

अथवा दशमूल के काढ़े में अरण्ड का तेल और सांभर नोन डालके पिये तो हृद्रोग जाय ८ अथवा पुष्करमूल, सोंठि, कचूर, हड़की छाल, जवाखार ये सब बराबर ले इनका काढ़ा कर उसमें घृत डाल पिये तो वातका हृद्रोग जाय। यह वैद्यरहस्य में है ९ अथवा भुनी हींग, बच, बायबिड़ंग, सोंठि, पीपल, हड़ की छाल, चित्रक, जवाखार, कालानोन, पुष्करमूल ये सब बराबर ले महीन पीस २॥ टंक शहद के साथ ले तो हृद्रोग, श्वास, कास, राजरोग, हिचकी ये सब रोग दूर हों १० अथवा भुनी हींग, सोंठि, चित्रक, कूट, जवाखार, हड़ की छाल, बच, बायबिड़ंग, कालानोन, शुद्धपारा, पुष्करमूल ये सब बराबर ले महीन पीस १ टंक जलके साथ ले तो हृद्रोग, अजीर्ण, बिसूचिका ये सब दूर हों। यह रसप्रदीप में है ११–इति हृद्रोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

इत्येकादशस्तरङ्गः ११ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ मूत्रकृच्छ्ररोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

खेद के करनेसे, तीक्ष्ण और रूखी वस्तुके खाने से, मद्य के पीने से, नाचने से, दुष्ट घोड़े पर चढ़ने से, नदीके जीवों के मांस खानेसे, भोजन पर भोजन करनेसे, अजीर्णसे मनुष्यके मूत्रकृच्छ्र रोग उत्पन्न होता है। वह ८प्रकार का है। वात १पित्त २कफ ३सन्निपात ४ चोट लगना ५ मलका रोंकना ६ शुक्र रोंकना ७ पथरी ८॥

अथ मूत्रकृच्छ्र का सामान्य लक्षण ॥

कोप को प्राप्तहुए वात, पित्त, कफ आप अपनेही कारण से पेट में प्राप्त हो, मूत्र के मार्ग में बहुत पीड़ा करके, बड़े कष्ट से टीस चलकर मूत्र उतारते हैं और मूत्र बन्द होने में तो कम और मूत्र करने में अधिक पीड़ा हो उसको मूत्रकृच्छ्र कहते हैं॥

अथ वात के मूत्रकृच्छ्र का लक्षण ॥

जांघों और पेड़ूकी सन्धि में तथा पेड़ू और इन्द्रिय में पीड़ा अधिक हो, थोड़ा थोड़ा बार बार मूते ये लक्षण जिसमें हों उसको वातका मूत्रकृच्छ्र जानिये १ ॥

अथ पित्त के मूत्रकृच्छ्र का लक्षण ॥

पीला, लाल और गर्म मूत्र बहुत कष्टसे टीस चलकर उतरे उसको पित्त का मूत्रकृच्छ्र कहिये २ ॥

अथ कफके मूत्रकृच्छ्र का लक्षण ॥

पेड़ू और लिङ्ग दोनों भारी हों, दोनों में सूजन हो और मूत्र में झाग आवे तथा मूत्र कष्टसे उतरे ये लक्षण जिसमें हों उसको कफ का मूत्रकृच्छ्र कहिये ३ और जिसमें ये सब लक्षण मिले हों उसको सन्निपात का मूत्रकृच्छ्र कहिये ४ ॥

अथ चोट लगने के मूत्रकृच्छ्र का लक्षण ॥

मूत्र को लेचलनेवाली नसोंमें किसीप्रकार की चोट लगने से मूत्र रुकजाय और वायु के मूत्रकृच्छ्र के लक्षण इसमें मिलें तो मनुष्य मरजाय ५ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ मल रोंकने के मूत्रकृच्छ्र का लक्षण ॥

जो पुरुष मलकी बाधाको रोंके उसके वायु कुपित होकर पेड़ू और पेट में अफरा करे, इन्द्रिय के स्थान में पीड़ा अधिक करे, मूत्र बहुत कष्टसे उतरे ये लक्षण हों तो मलका मूत्रकृच्छ्र जानिये ६ ॥

अथ वीर्य रोंकने के मूत्रकृच्छ्र का लक्षण ॥

वीर्य के रोंकने से मूत्र का मार्ग रुकजाय तो पुरुष के पेड़ू और लिङ्ग में शूल हो, वीर्य को लिये बड़े कष्ट से मूत्र उतरे तो वीर्य रोंकने का मूत्रकृच्छ्र कहिये ७ ॥

अथ पथरी के मूत्रकृच्छ्र का लक्षण ॥

पथरी और शर्करा नाम दोनों रेत अण्ड में रहते हैं इन्हीं से मूत्रकृच्छ्र होता है। वह पथरी पित्त से पची वायुकरके रूखी, कफसे रहित, पथरीका रूप हो निकल मूत्रको रोंकती है ॥

अथ शर्करा का उपद्रव ॥

हृदय में पीड़ा हो, शरीर कांपे, कोषमें शूल चले, मन्दाग्नि और मूर्च्छा हो ये लक्षण हों तो मनुष्य मरजाय ८ ॥

अथ मूत्रकृच्छ्र का यत्न ॥

गोखुरू, किरमालाकी गिरी, डाभकी जड़, कासकी जड़, जवासा, आमला, पाषाणभेद, हड़ की छाल ये सब बराबर ले जवकुट कर २॥ टंक का काढ़ा कर शहद मिलाय प्रतिदिन ले तो मूत्रकृच्छ्र और पथरीका असाध्य भी रोग जाय १—इति गोक्षुरादिक्वाथ ॥

अथवा इलायची, पाषाणभेद, शिलाजीत, पीपल, गोखुरू, तिवर्सीका बीज, सेंधानोन, केसर ये सब औषध बराबर ले महीन पीस इक्कीस टंक चावल के पानी के साथ अथवा पुराने गुड़के पानी के साथ प्रतिदिन ले तो मूत्रकृच्छ्र जाय २ अथवा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दूध में पुराना गुड़ अथवा मिश्री डाल कुछ गर्मकर पिये तो मूत्रकृच्छ्र जाय ३॥

अथ चोट लगने के मूत्रकृच्छ्र का यत्न॥

आमले के रसमें शहद मिलाय पीवे अथवा ऊख के रसमें शहद डाल पीवे तो मूत्रकृच्छ्र जाय ४॥

अथ मल रोंकने के मूत्रकृच्छ्र का यत्न॥

गोखुरू का काढ़ाकर शहद, जवाखार मिलाकर पीवे तो मूत्रकृच्छ्र जाय ५ अथवा त्रिफला ५ टंक, बेरके जड़की छाल ५ टंक इन दोनों को रात्रिमें भिगो प्रभातही उसी पानी में पीस सेंधानोन डाल पीवे तो मूत्रकृच्छ्र जाय ६ अथवा जवाखार ५ माशे, मिश्री ५ माशे इन्हें पीस जल से ले तो मूत्रकृच्छ्र निश्चय जाय ७ अथवा मुनक्का, किशमिश ५ टंक, मिश्री १० टंक, दही का मट्ठा १० टंक ये तीनों मिलाय पीवे तो मूत्रकृच्छ्र जाय ८ अथवा गोखुरूकी जड़ समेत काढ़ाकर शहद, मिश्री मिलाय पीवे तो मूत्रकृच्छ्र जाय। ये यत्न भावप्रकाशमें लिखे हैं ९ अथवा गिलोय, सोंठि, आमला, असगन्ध, गोखुरू ये सब बराबर ले इन्हें जवकुट कर २॥ टंक का प्रतिदिन काढ़ाकर पीवे तो मूत्रकृच्छ्र जाय १० अथवा पक्के नींबूका रस गौके कच्चे दूधमें डाल प्रतिदिन इच्छापूर्वक पीवे तो स्त्री के योनिदोष से उत्पन्न रोग और दाह, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र इनको दूर करे ११ अथवा हड़ की छाल, गोखुरू, किरमाला की गिरी, पाषाणभेद, धमासा, अड़ूसा ये सब बराबर ले जवकुटकर ५ टंक का काढ़ाकर शहद डाल प्रतिदिन पिये तो दाहसंयुक्त मूत्रकृच्छ्र, बद्धकोष्ठ इनको दूर करे १२–इति हरीतक्यादि क्वाथ॥

अथ कष्ट से रुधिर मूतता हो उसका यत्न॥

डाभ की जड़, कास की जड़, दूब की जड़, सरकंडे की जड़,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

ऊख की जड़ इनका काढ़ा कर दे तो रुधिर का मूतना अच्छा हो १३–इति तृणपञ्चक ॥

अथवा पके पेठे के रसमें मिश्री मिलाय पीवे तो मूत्रकृच्छ्र जाय १४–इति कूष्माण्डरस ॥

अथवा कटेलीके रसमें शहद डाल पीवे तो मूत्रकृच्छ्र जाय १५ अथवा २८ टंके भर गोखुरू को अष्टगुणित जल में औटाय अधौटाकर पीछे छान इसमें गुग्गुल ७ टंकेभर डाल फिर पकावे और इसमें सोंठि १ टंका, कालीमिरच १ टंका, पीपल १ टंका भर और हड़ की छाल १ टंक, बहेड़े की छाल १ टंका, आमला १ टंक, नागरमोथा १ टंक इन सब को महीन पीस गुग्गुल में डाले पीछे इनको एकजीवकर ५ माशे प्रतिदिन जल से ले तो मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, प्रमेह, प्रदर, वातरक्त, वीर्यदोष इनको दूर करे १६–इति गोक्षुरादिगुग्गुल ॥

अथवा ज़ीरा १ टंकेभर, गुड़ १ टंकेभर प्रतिदिन खाय तो मूत्रकृच्छ्र जाय १७ अथवा जवाखार सवादो टंक गौके मट्ठे से पीवे तो मूत्रकृच्छ्र, पथरी दोनों जायँ १८–इति जवाखारतक्रयोग॥

अथवा शुद्धपारा १ भाग, शोधीगन्धक ४ भाग इन दोनों की कजली करे पीछे इस कजलीको बड़ी कौड़ीमें भरे और भुने सुहागे को जलसे पीस कौड़ीके मुखमें लगावे पीछे उस कौड़ी को कुल्हड़े में धर गजपुटमें फूंक दे शीतल होने पर उस कौड़ी को कुल्हड़े में से निकाल महीनपीस ४ रत्तीप्रमाण औषध और २१ मिरच पीस मिलाय घृतके साथ खाय तो मूत्रकृच्छ्र जाय। यह सर्वयत्न भावप्रकाश और वैद्यरहस्य में लिखे हैं १९–इति लघुलोकेश्वररस ॥

अथवा निरूहबस्ति वा उत्तरबस्तिके करनेसे मूत्रकृच्छ्र जाय २० अथवा शतावरि, कास की जड़, डाभकी जड़, गोखुरू, बिदारीकन्द, सालर की जड़, कसेरू इनका काढ़ाकर शहद और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मिश्री मिलाय पिये तो मूत्रकृच्छ्र जाय। यह चक्रदत्त में लिखा है २१ अथवा तिवर्सी का बीज, महुआ, दारुहल्दी इनका काढ़ाकर पिये तो पित्तका मूत्रकृच्छ्र जाय २२ अथवा केले के रसमें गोमूत्र डाल पिये तो कफ का मूत्रकृच्छ्र जाय २३ अथवा इलायची को महीन पीस जलसे ले तो कफका मूत्रकृच्छ्र जाय २४ अथवा मूंगे का चूर्ण १। टंक चावल के पानीसे पिये तो कफका मूत्रकृच्छ्र जाय २५ अथवा गोखुरू, सोंठि इनका काढ़ा ले तो सब प्रकार का मूत्रकृच्छ्र जाय। यह वृन्दमें है २६ अथवा बड़ी कटेली, पाढ़, मुलहठी, महुआ, इन्द्रयव इनका काढ़ाकर पिये तो सन्निपात का मूत्रकृच्छ्र जाय २७॥

अथ शुक्र रोंकने के मूत्रकृच्छ्र का यत्न॥

शिलाजीत शहदमें मिलायके खाय तो शुक्र रोंकने का मूत्रकृच्छ्र जाय। यह चक्रदत्तमें है २८ अथवा उत्तम स्त्रीसे प्रसङ्ग करे तो यह मूत्रकृच्छ्र जाय २९ अथवा खरैटी की जड़का काढ़ा ले तो सम्पूर्ण मूत्रकृच्छ्र जायँ ३० अथवा गोखुरू का पञ्चाङ्ग १०० टके भर ले उसको कूट अठगुने पानीमें औटावे जब चतुर्थांश रहे तब उसमें ५० टकेभर मिश्री की अवलेह की सी चाशनी करे उसमें सोंठि २ टका, पीपल २ टका, इलायची २ टका, जवाखार २ टका, केसर २ टका, काहूवृक्षका बक्कल २ टका, तिवर्सी का बीज २ टका, वंशलोचन ८ टकाभर इन सब औषधियों को महीन पीस इस चाशनी में डाले फिर १ टके भर प्रतिदिन खाय तो मूत्रकृच्छ्र, दाह, बद्धकोष्ठ, पथरी, रुधिर का मूतना, मधुप्रमेह इन सबको दूर करे। यह सब यत्न सर्वसंग्रहमें लिखे हैं ३१—इति गोक्षुरावलेह—इति मूत्रकृच्छ्र की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न॥

अथ मूत्राघात रोगकी उत्पत्ति, लक्षण और यत्न॥

मनुष्य मूत्रकृच्छ्र और मूत्राघात में शंका करते हैं इसका

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

भेद कहते हैं। मूत्रकृच्छ्र में बहुत और मूत्रबन्ध में थोड़ा कष्ट होता है और मूत्राघात में मूत्रबन्ध तो बहुत परन्तु मूतने में पीड़ा थोड़ी होती है इतना भेद है ॥

अथ मूत्राघात की उत्पत्ति और लक्षण ॥

कुपथ्य से कोपको प्राप्त हुए वात, पित्त, कफ करके मूत्राघात होता है। वह मूत्राघात रोग १३ प्रकार का है। वातकुण्डलिका १ अष्ठीला २ वातबस्ति ३ मूत्राघात ४ मूत्रजठर ५ मूत्रोत्सङ्ग ६ मूत्रक्षय ७ मूत्रग्रन्थि ८ मूत्रशुक्र ९ उष्णवात १० मूत्रसाद ११ विद्रधात १२ बस्तिकुण्डलिका १३ ॥

अथ वातकुण्डलिका का लक्षण ॥

रूखी वस्तु के खाने से, मल-मूत्र और शुक्रके धारणसे वात पेडूमें जाकर पीड़ा करे और मूत्रकी नसों में जाय बिचरे और कोपित होजाय, कफ मूत्र के छिद्र को रोंके और इन्द्रिय के मुख में वात-कुण्डल के आकार होरहे तब पुरुष थोड़ा थोड़ा मूते और मूतने में पीड़ा बहुत हो यह लक्षण हों उसके वातकुण्डलिका रोग कहिये। यह असाध्य है १ ॥

अथ अष्ठीला का लक्षण ॥

पेडूमें अफरा हो, गुदा की पवन चले नहीं, गुदा में पवन की गांठ पत्थर सी होजाय, उस स्थान में पीड़ा बहुत हो और वह पवन मल-मूत्रको रोंक दे तो अष्ठीला का लक्षण जानिये २॥

अथ वातबस्ति का लक्षण ॥

जो पुरुष मूत्र के वेग को रोंके उसके पवन पेडू में जाय मूत्र की नसों के मुख को रोंक दे, मूत्र उतरने दे नहीं, पेडू और कुक्षि में पीड़ा करे उसको वातबस्तिरोग कहते हैं। यह रोग कष्टकारी है ३॥

अथ मूत्रातीतरोग का लक्षण ॥

मूत्र को बहुत बार रोंके और देरतक मूत्र न करे तब पुरुष के मूत्र मन्द उतरे इसको मूत्रातीत कहते हैं ४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ मूत्रजठररोग का लक्षण ॥

जो पुरुष मूत्र के वेग को रोंके तिसकी गुदा की अपान वायु उदर को पवन से भरकर नाभि के नीचे अफरारोगको करके बहुत पीड़ा करे उसको मूत्रजठररोग कहते हैं ५ ॥

अथ मूत्रोत्सङ्ग का लक्षण ॥

पेडू अथवा लिङ्ग की नसों में आये हुए मूत्र रोंकनेवाले पुरुष के मूत्र के द्वारा पीड़ासहित अथवा बिन पीड़ा थोड़ा रुधिर उतरे उसको मूत्रोत्सङ्गरोग कहते हैं ६ ॥

अथ मूत्रक्षय का लक्षण ॥

जिसका शरीर खेद से सूख जाय उसके पेडू में रहनेवाले वात, पित्त, कफ पीड़ा और दाहसहित मूत्र को नाश करते हैं उसको मूत्रक्षयरोग कहते हैं ७ ॥

अथ मूत्रग्रन्थिरोग का लक्षण ॥

पेडूके बीचमें गोल, स्थिर और छोटी आमले के प्रमाण बहुत कड़ी वायु की गांठ अकस्मात् उपज आवे उसको मूत्रग्रन्थि कहते हैं ८ ॥

अथ मूत्रशुक्ररोग का लक्षण ॥

मूत्र का वेग लगरहा हो और मैथुन करने को स्त्रीके पास जाय तब उसकी वायु शुक्रको स्थानसे भ्रष्ट करती है। मूत्र के पहले अथवा मूत्र के पीछे अरने उपले की राख के पानी के सदृश गिरे उसको मूत्रशुक्र कहते हैं ९ ॥

अथ उष्णवातरोग का लक्षण ॥

स्त्रीके सङ्ग से, खेद से, धूप में रहने से पुरुष के पेडूमें रहनेवाले वात, पित्त, पेडू, इन्द्रिय, गुदा को दग्ध करें तब हल्दी के सदृश मूत्र उतरे अथवा रुधिर लिये बड़े कष्ट से मूत्र उतरे उसको उष्णवात कहते हैं १० ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ मूत्रादरोग का लक्षण ॥

पुरुषके कुपथ्य करके पेडूमें रहता वायु पित्त और कफ को बिगाड़ता है तब उसके मूत्र बहुत कष्ट से उतरे, पीला, लाल, सफ़ेद, बहुत गाढ़ा, गर्म, गोरोचन के सदृश, चूनेकी राख सदृश थोड़ा उतरे और शरीर सूखजाय उसको मूत्रसाद कहते हैं ११॥

अथ विड्विघातरोग का लक्षण ॥

जो पुरुष बहुत रूखा अन्न खाय सो दुर्बल हो मलसहित मूते और उसके मूत्र में मल की सी गन्ध आवे तथा बहुत कष्ट से मूत्र उतरे उसको विड्विघातरोग जानिये १२॥

अथ बस्तिकुण्डलरोग का लक्षण ॥

बहुत जल्दी दौड़ने से, लंघन करने से, बहुत खेद से, पेडू में किसीप्रकार की चोट लगने से पेडू में गांठ पड़जाय तब उठते पीड़ा हो और गांठ बढ़ी हुई हिले नहीं गर्भ की भांति रहे शूल हो, फड़के, दाह अधिक हो, उस गांठ को हाथ से दाबे तो मूत्र की बूंद उतरे और बहुत पीड़ा हो तब मूत्र की धार निकले तथा शस्त्र की चोट लगने की सी पीड़ा हो इसको बस्तिकुण्डल कहते हैं यह असाध्य है। १३ इस रोगवाला मरजाय॥

अथ मूत्राघातरोग का यत्न ॥

नरसल की जड़, डाभ की जड़, कास की जड़, सांठी की जड़, खरैटी की जड़ इनका काढ़ा करे फिर शहद डाल ठण्ढा कर पिये तो मूत्राघात जाय १ अथवा कपूर को जल से महीन पीस वस्त्र में उसका लेपकर उसकी बत्ती करे फिर उस बत्तीको इन्द्रियमें धरे तो यह रोग जाय २ अथवा धनियां, गोखुरू इन दोनों का काढ़ाकर इस काढ़ेमें घृत पकाय खाय तो मूत्राघात और मूत्रकृच्छ्र, शुक्रदोष ये तीनों जायँ ३—इति धान्यगोक्षुरघृत॥

जितना यत्न मूत्रकृच्छ्र और पथरी का है उतनाही मूत्राघात का जान लीजिये। यह भावप्रकाश में लिखा है ४ अथवा तिवसी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

के बीज ५ टंक, धनियां ५ टंक इन्हें रात्रि में भिजोय फिर प्रातः-काल ही उसी पानी में पीस छान १ टंक सेंधानोन डालकर पिये तो मूत्राघात जाय ५ अथवा पाटलवृक्ष का खार २॥ टंक, काला नोन १। टंक ये दोनों मदिराके साथ पिये तो मूत्राघात जाय ६ अथवा मद्यमें खट्टे अनार का रस और इलायची डालकर पिये तो यह रोग जाय। यह वृन्दमें लिखा है ७ अथवा शिलाजीत का सेवन करे तो मूत्राघात जाय ८ अथवा कोंचके बीज ५टंक, खरैटी १० टंक, पीपल १ टंक, तालमखाना १। टंक, मिश्री १० टंक, मुनक्का और किशमिश १० टंक इनको महीन पीस गर्म दूध में शहद, घृत डाल पिये तो शुक्र के रोंकने का मूत्राघात जाय और यह प्रयोग बन्ध्याके पुत्र उत्पन्न करनेवाला है। यह सर्वसंग्रह में लिखा है ९ अथवा चित्रक ऽ। गौरीसर ५ टंक, खरैटी १० टंक, दाख ऽ= इन्द्रायणकीजड़ ५ टंक, त्रिफला ५ टंक, बड़ा आमला १०० इनका १६ सेर पानी में काढ़ा करे जब इस का चतुर्थांश रहजाय तब उतारकर छान ले पीछे इस काढ़े में ४ सेर घृत डालकर पकावे जब औषध और पानी जलजाय, केवल घृतमात्र रहजाय तब छान ले फिर इस में बंशलोचन ऽ= डालकर ऽ= प्रातिदिन ले तो सर्वप्रकारके वीर्य के दोषों को दूर करे और स्त्री के गर्भ करे तथा मूत्राघात, प्रदर, योनि के दोष, मूत्रकृच्छ्र इन सब रोगों को दूर करे। यह चरक में लिखा है १०— इति चित्रकाद्य घृत ॥

अथवा त्रिफला के काढ़े में गुड़, दूध डालकर पिये तो मूत्राघात जाय ११ अथवा पाढ़ल, अरलू, नींबकी छाल, हल्दी, गोखुरू, पलाश का बक्कल ये सब बराबर ले इनका काढ़ा कर उसमें गुड़ डालकर पिये तो मूत्राघात जाय १२ अथवा सुन्दर चतुर स्त्री से मैथुन करे तो मूत्राघात जाय १३ ये सब आत्रेय में लिखे हैं—इति मूत्राघात की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न सम्पूर्ण ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ मूत्रंरोधरोग का लक्षण ॥

जो यत्न मूत्राघात और मूत्रकृच्छ्र के हैं वही इसके भी जान लीजिये और कुछ विशेष हैं वे कहते हैं। ककड़ी के बीज, त्रिफला, सेंधानोन ये सब बराबर ले महीन पीस ५ टंक गर्मजल के साथ पिये तो मूत्ररोध जाय १ अथवा तिलके काकड़े को जला के खार निकाल २ टंक दही और शहद के साथ ले तो मूत्र के चार रोग जायँ २ ॥

अथ मूत्र बहुत गर्म उतरे उसका यत्न ॥

चमेली की जड़ को बकरी के दूध में पीसकर पिये तो यह रोग जाय ३ अथवा कमल की जड़को गोमूत्र में पीस उसमें तिल मिलाय पिये तो मूत्ररोध जाय यह आत्रेय में लिखा है ४— इति मूत्ररोध का यत्न सम्पूर्ण ॥

अथ अश्मरीरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

अश्मरी को लोक में पथरी कहते हैं। यह पथरीरोग चार प्रकार का है। वात का १ पित्त का २ कफ का ३ वीर्य के रोंकने का ४ इन चारों में जो कफ मिला है वह यमरूप है ॥

अथ पथरी की उत्पत्ति ॥

पेडू में रहनेवाली वायु पेडू के वीर्य, मूत्र, पित्त, कफ इनको सुखाय क्रम से पथरी को उत्पन्न करती है। यहां यह दृष्टान्त है कि जैसे गौके पित्ते में गोरोचन बढ़ जाय वैसेही मनुष्य के पथरी पड़जाय है ॥

अथ पथरी का पूर्वरूप ॥

पथरी का रोग सन्निपात से उत्पन्न होता है। पथरीवाले पुरुष के मूत्रमें मस्त बकरे की सी गन्ध आवे, पेडूमें अफरा हो, पीड़ा बहुत हो, मूत्र बहुत कष्टसे उतरे, ज्वर हो और भोजनमें अरुचि हो यह पथरी के पूर्वरूप का लक्षण है ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ पथरीरोग का सामान्य लक्षण ॥

नाभि में, मूत्र की नसों में, पेडू में पीड़ा बहुत हो, मूत्र की धार बँधी गिरे नहीं और मूत्र का मार्ग रुकजाय जब यह पथरी मूत्र के मार्गसे सरकजाय तब उस पुरुष को सुख हो, मूत्र अच्छे प्रकार पीला उतरे और जब वह कोप को प्राप्त हो तब बड़ी पीड़ा सहित रुधिर मिला मूत्र उतरे ॥

अथ अधिक वातवाली पथरी का लक्षण ॥

जिसमें मूत्र के समय अधिक पीड़ा हो, दांतोंको चाबे, मूत्र करते में इन्द्रिय कांपे, इन्द्रिय और नाभि में पीड़ा हो, मूतते पुकार उठे और मल करदे, मूत्र बूंद बूंद उतरे, पथरीका रंग काला हो और पथरी में कांटे से हों उसको वात की पथरी कहते हैं १॥

अथ कफपित्त की पथरी का लक्षण ॥

पेडू अग्निके समान जले मानो पकगया है और पथरी बादामके छिलके के समान और पीली, लाली, सफ़ेदाई लिये हो ये लक्षण हों तो कफ-पित्तकी पथरी जानिये २ ॥

अथ कफ की पथरी का लक्षण ॥

पेडूमें पीड़ा बहुत हो और पेडू शीतल, भारी हो और उसकी पथरी चिकनी, गीली, सफ़ेद, कुक्कुट के अण्डेकी बराबर हो जिसमें ये लक्षण हों उसको कफकी पथरी कहिये ३ ॥

अथ शुक्र के रोंकने की पथरी का लक्षण ॥

जिस पुरुष को मैथुन करनेकी इच्छा हो और वह शुक्र को रोंके, किसीप्रकार जाने न दे उसके शुक्रकी पथरी उत्पन्न होती है। इन्द्रिय और फ़ोतेके बीचमें वह पवन वीर्य को सुखाय पथरी करे फिर वह पथरी पेडू में पीड़ा करे, मूत्र महाकष्ट से उतरे, फ़ोते सूज जायँ, उसका वीर्य जाता रहे और इन्द्रिय में पीड़ा करे तो इन्द्रिय के द्वारा शुक्र निकले अथवा वह इन्द्रिय पीड़ित करे तब

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

वात उस पथरी के निकट महीन शुक्रके रेतके सदृश टुकड़े करदे तब इसको शर्करा कहते हैं ४॥

अथ पथरी का उपद्रव लिखते हैं॥

शरीर दुर्बल होकर पीला हो, कुक्षि में शूल चले, अरुचि हो, शरीर पीला होजाय, मूत्राघात हो और नाभि सूज जाय, मूत्र रुकजाय ये इसके उपद्रव हैं॥

अथ पथरीरोग का यत्न॥

सोंठि, अरणी, पाषाणभेद, कूट, बरणा, गोखुरू, अरण्ड की छाल, किरमाला की गिरी ये सब बराबर ले जवकुटकर ५ टंक का काढ़ाकर उसमें भुनी हींग, जवाखार, सेंधानोन ये तीनों डाल पथरीवाला पिये तो पथरी और मूत्रकृच्छ्र ये दोनों जायँ और यह कोष्ठकी वात, उपदंश, बवासीर इनको भी दूर करता है और दीपन पाचन है ५–इति शुण्ठ्यादिक्काथ॥

अथवा इलायची, पीपल, महुवा, पाषाणभेद, पित्तपापड़ा, गोखुरू, अड़ूसा, अरण्ड की जड़ ये सब बराबर ले जवकुटकर इनका काढ़ा करके उसमें शिलाजीत डालकर पिये तो पथरी और मूत्रकृच्छ्र को दूरकरे ६–इति एलादिक्काथ॥

अथवा पेठेके रसमें भुनी हींग, जवाखार डाल कर पिये तो पेड़ू की पीड़ा और पथरी जाय ७ अथवा अरणी की छाल, पाषाणभेद, सोंठि, गोखुरू इनका काढ़ा कर जवाखार डाल पिये तो पथरी जाय ८ अथवा गोखुरू के चूर्ण में ५॥ टंक शहद मिलाय भेंड़के दूध में पिये तो पथरी जाय ९ अथवा बरणा की जड़ का काढ़ाकर उसमें गुड़ डालकर पिये तो पथरी का रोग और पेड़ू का शूल दूर हो १० अथवा अदरक का रस, जवाखार, हड़ की छाल, मलयागिरि चन्दन इनका काढ़ाकर दही डालकर पिये तो पथरी जाय ११ अथवा बरणा का बक्कल १०० टके भर ले उसमें चौगुना पानी डाल औटावे जब चतुर्थांश रहजाय उसमें १०० टके

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

भर गुड़ की चाशनी कर चिकने बासन में धरे उसमें सोंठि १ टकेभर, पेठेके बीज १ टंक, बहेड़े की मींगी १ टके, बथुएके बीज १ टके, सहँजनके बीज १ टके, किशमिश २ टके, इलायची १ टके, हड़ की छाल १ टके, बायबिड़ंग १ टके भर इंनका चूर्णकर उसमें डाल एकरसैकर प्रतिदिन खाय तो पथरी का रोग जाय १२–इति बरणादि गुड़ का अवलेह ॥

अथवा मंजीठ, तिवर्सीका बीज, सफ़ेद ज़ीरा, सौंफ, आमला, बेरकी मींगी, शोधी गन्धक, आंवलासार, मैनसिल ये सब बराबर ले महीन पीस १। टंक प्रतिदिन शहद के साथ खाय तो पथरी निश्चय जाय १३ अथवा २। टकेभर कुलत्थ का काढ़ा कर उसमें सेंधानोन २ माशे, शरफोंका का रस २ माशे मिलाय पिये तो पथरी जाय ये सब भावप्रकाश में लिखे हैं १४ अथवा हल्दी का चूर्ण ५ टंक, गुड़ १० टंक इनको १ माशे कांजी में डाल पिये तो पथरी जाय १५ अथवा कालानोन, दूध, तिलेठी की राख ये सब मादिरा में मिलाय ३ दिन पिये तो पथरी जाय। यह चक्रदत्त में लिखा है १६ अथवा तिलेठी की राख २॥ टंक, शहद ५ टंक इनको दूध के साथ १५ दिन पिये तो पथरी निश्चय झड़पड़े १७ अथवा गोपालकाकड़ी (एरण्डकाकड़ी) की जड़ २टंकले उसको रात में भिगो रक्खे प्रातही उसी पानी में पीस ७ दिन पिये तो पथरी इन्द्रिय द्वारा झड़पड़े। यह राजमार्तण्ड में लिखा है १८ अथवा कुलत्थ, सेंधानोन, बायबिड़ंग, सार, मिश्री, साटी (पथरचटा) का रस, जवाखार, पेठे का रस, तिल का खार, पेठे के बीज, गोखुरू इन सबका काढ़ाकर इसमें गौका घृत पकाय १ टके भर नित्य खाय तो पथरी, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, शुक्रबन्ध इन सब रोगों को यह दूर करे। यह वृन्द में लिखा है १९–इति कुलत्थाद्य घृत ॥

मूंग, यव, गेहूं, चावल, दूध, घृत, टेढ़रु, सेंधानोन ये इस

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

रोगमें पथ्य हैं ॥ इति अश्मरीनाम पथरीरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

अथ प्रमेहरोग की उत्पत्ति और लक्षण ॥

अधिक बैठने, बहुत सोने, नवीनपानीके पीने और बकरा, भेंड़ा का मांस, गुड़आदि बहुत मिठाई और बहुत दही और कफकारी वस्तुओं के खाने, श्रम और बहुत मैथुन करने, धूपके रहने, विरुद्ध और गर्म भोजन के करने, बहुत मदिरा के पीने, कडुआ रसके खाने से पुरुष के प्रमेहरोग उत्पन्न होता है ॥

अथ कफ, पित्त, वायु के प्रमेह की संप्राप्ति ॥

पेडू में प्राप्त मेदा, मांस और शरीर के जल को कफ दूषित करके कफप्रमेह को करता है। ऐसेही पित्त गर्म वस्तु से कोप कर पेडू में प्राप्त मेदा, मांस, जल को दूषितकर पित्तप्रमेह को करता है। ऐसेही वायु भी अपनी अपेक्षा आपसे क्षीण कफ पित्त को पेडू में प्राप्तकर और शुद्ध मांस-स्नेह को और शरीरके जलको पेडू की नसों के मुख में प्राप्त कर वायु के प्रमेह को करे। कफ के १० प्रमेह साध्य हैं, क्योंकि सामान्य यत्नसे जाते हैं और पित्तके ६ प्रमेह याप्य हैं अर्थात् यत्नसे दबे रहते हैं इसका विषम यत्न है, क्योंकि दोष दूष्य के विषमपने से ऐसा दोष दूषित है। और दूष्य रस मांसादिक हैं, शीतल मधुरादिक पित्तहारी द्रव्य हैं और रस, मांस, मेदा इनको उपजाते हैं। वायु के ४ प्रमेह असाध्य हैं वे दूर नहीं होते क्योंकि मज्जा को आदि ले वे गंभीर धातु हैं और सर्व शरीरव्यापी हैं तथा शरीर के विनाशकारी हैं इस कारण वायु का प्रमेह असाध्य है ॥

अथ बीसप्रकार के प्रमेहों के नाम ॥

उदकप्रमेह १ इक्षुप्रमेह २ सान्द्रप्रमेह ३ सुराप्रमेह ४ पिष्टप्रमेह ५ शुक्रप्रमेह ६ सिकताप्रमेह ७ शीतप्रमेह ८ शनैःप्रमेह ९ लालाप्रमेह १० ये दश तो कफ के प्रमेह हैं और क्षारप्रमेह ११

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

नीलप्रमेह २ कालाप्रमेह ३ हारिद्रप्रमेह ४ मांजिष्ठप्रमेह ५ रक्त-प्रमेह ६ ये छः पित्त के प्रमेह हैं और वसाप्रमेह १ नीलप्रमेह २ कामप्रमेह ३ हस्तीप्रमेह ४ ये चार वायुके हैं ये २० प्रमेह वाग्भट्ट, सुश्रुत, चरक, भावप्रकाशादि के मत से हैं और आत्रेयजी के मत से विशेष हैं वे ये हैं। पूयप्रमेह १ तक्रप्रमेह २ पिड़िकाप्रमेह ३ शर्कराप्रमेह ४ घृतप्रमेह ५ अतिमूत्रप्रमेह६॥

अथ प्रमेह का पूर्वरूप ॥

दांत, तालू, जीभ इनमें मैल अधिक हो, हाथ, पैर में दाह और देह चिकनी हो, तृषा बहुत लगे, मुँह मीठा रहे ये लक्षण हों तो जानिये कि इसके प्रमेह होगा॥

अथ प्रमेह का सामान्य लक्षण ॥

बहुत ठण्ढा और पतला मूत्र हो तब जानिये कि इसके प्रमेह होगा॥

अथ कफके १० प्रमेहों में प्रथम उदकप्रमेह का लक्षण ॥

निर्मल, सफ़ेद और बहुत शीतल, गन्धरहित, जलके सदृश, कुछ एक भदरंगा और चिकना मूते उसको उदकप्रमेह कहतेहैं १॥

अथ इक्षुप्रमेह का लक्षण ॥

सांठेके रसके समान मीठा हो उसको इक्षुप्रमेह कहते हैं २॥

अथ सान्द्रप्रमेह का लक्षण ॥

जैसे बासी पानी बासनमें धराहुआ ठण्ढा होता है वैसाही मनुष्य मूते तो उसको सान्द्रप्रमेह कहते हैं ३॥

अथ सुराप्रमेह का लक्षण ॥

जिसके मूत्रमें दारूकीसी बास आवे और उसका मूत्र ऊपर तो निर्मल हो और नीचे भदरंगा हो उसको सुराप्रमेह कहतेहैं ४॥

अथ पिष्टप्रमेह का लक्षण ॥

चावल आदि के चूरन के पानी के सदृश सफ़ेद कष्टपूर्वक मूत उतरै और मूतते हुए रोमांच हो उसको पिष्टप्रमेह कहतेहैं ५॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ शुक्रप्रमेह का लक्षण ॥

वीर्यसहित मूते उसको शुक्रप्रमेह कहते हैं ६ ॥

अथ सिकताप्रमेह का लक्षण ॥

जिसके मूत्र में बालू के कणकों के समान कफ की फुटक आवें उसको सिकताप्रमेह कहते हैं ७ ॥

अथ शीतप्रमेह का लक्षण ॥

बारबार बहुत शीतल मूते उसको शीतप्रमेह कहते हैं ८ ॥

अथ शनैःप्रमेह का लक्षण ॥

शनैः शनैः निपट मन्द मूते उसको शनैःप्रमेह कहते हैं ९ ॥

अथ लालाप्रमेह का लक्षण ॥

लार की तांतसहित मूते उसको लालाप्रमेह कहते हैं १० ये दश कफके प्रमेह हैं ॥

अथ पित्तके ६ प्रमेहोंमें प्रथम क्षारप्रमेह का लक्षण ॥

जिसके मूत्रमें खारकीसी गन्ध और वर्ण हो तथा खार के पानी के सदृश मूते उसको क्षारप्रमेह कहिये १ ॥

अथ नीलप्रमेह का लक्षण ॥

नील रंग के समान मूत्र उतरे उसको नीलप्रमेह कहिये २॥

अथ कालाप्रमेह का लक्षण ॥

स्याही के समान कालामूते उसको कालाप्रमेह कहिये ३ ॥

अथ हारिद्रप्रमेह का लक्षण ॥

हल्दीके रंग के समान कडुआ, दाह को लिये मूते उसको हारिद्रप्रमेह कहिये ४ ॥

अथ मांजिष्ठप्रमेह का लक्षण ॥

मंजीठ के पानी के रंग सदृश मूते और दुर्गन्ध बहुत आवे उसको मांजिष्ठप्रमेह कहिये ५ ॥

अथ रक्तप्रमेह का लक्षण ॥

रुधिर के समान दुर्गन्धयुक्त बहुत मूते उसको रक्तप्रमेह कहिये ६ ये छः पित्त के प्रमेह हैं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ वायुके ४ प्रमेहों में प्रथम वसाप्रमेह का लक्षण ॥

शुद्ध मांसके धृत और उसके रंगको लिये मूते उसको वसा-प्रमेह कहिये १ ॥

अथ मज्जाप्रमेह का लक्षण ॥

हाड़ की मज्जा को लिये और उसके रंगके सदृश बारम्बार मूते उसको मज्जाप्रमेह कहते हैं २ ॥

अथ क्षौद्रप्रमेह का लक्षण ॥

कसैला और शहदके सदृश मीठा और खारी जिसका मूत्र हो उसके क्षौद्रप्रमेह जानिये ३ जिस पुरुष के प्रमेह होय और वह यत्न न करे और प्रमेह बहुत दिन का होजाय और प्रमेह-वाला कुपथ्य करे उसके मधुप्रमेह होय है यह असाध्य है ॥

अथ कफके प्रमेह का उपद्रव ॥

अन्न पचे नहीं, भोजन में अरुचि और छर्दि हो तथा निद्रा, खांसी बहुत आवे, पीनस हो यह कफ के प्रमेह के उपद्रव हैं ॥

अथ पित्त के प्रमेह का उपद्रव ॥

पेडू और इन्द्रिय में पीड़ा हो, अण्डकोश फटने लगें, तथा ज्वर, दाह, तृषा, मूर्च्छा, अतीसार हों, खट्टी डकार आवें ये पित्त-प्रमेह के उपद्रव हैं ॥

अथ वायुके प्रमेह का उपद्रव ॥

जिसमें उदावर्त रोग हो, शरीर कांपे, हृदय दूखे, सब रसों के खाने की इच्छा रहे, पेट में शूल हो, निद्रा आवे नहीं, शरीर सूज जाय, खांसी और श्वास हो ये वातप्रमेह के उपद्रव हैं ॥

अथ प्रमेह का असाध्य लक्षण ॥

वात, पित्त, कफ के उपद्रव संयुक्त जिस पुरुष के प्रमेह हो उसको असाध्य जानिये वह मरजाय और प्रमेह की जो दश पिड़िका कही हैं उनसे युक्त पुरुष भी मरजाय ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ आत्रेयजी के मत के प्रमेहों के नाम और लक्षण ॥

पूयप्रमेह १ तक्रप्रमेह २ पिड़िकाप्रमेह ३ शर्कराप्रमेह ४ घृतप्रमेह ५ अतिमूत्रप्रमेह ६ ॥

अथ पूयप्रमेह का लक्षण ॥

पीबके समान मूते उसको पूयप्रमेह जानिये १ ॥

अथ तक्रप्रमेह का लक्षण ॥

जिसका मूत्र मट्ठे के समान उतरे और मूत्र में मट्ठेही की सी बास आवे उसको तक्रप्रमेह जानिये २ ॥

अथ पिड़िकाप्रमेह का लक्षण ॥

जिसके मूत्र में वीर्य की फुटक पड़ें उसको पिड़िकाप्रमेह कहिये ३ ॥

अथ शर्कराप्रमेह का लक्षण ॥

जिसका मूत्र मिश्री के सदृश मीठा हो और मिश्री के वर्ण के सदृश हो उसे शर्कराप्रमेह कहिये ४ ॥

अथ घृतप्रमेह का लक्षण ॥

जिसके मूत्रकारंग घृतके सदृश हो उसको घृतप्रमेहकहिये ५॥

अथ अतिमूत्रप्रमेह का लक्षण ॥

जिस पुरुष का रात्रि और दिन बहुत मूत्र उतरे और वह मनुष्य निर्बल पड़जाय उसको अतिमूत्रप्रमेह कहिये ६ ये छः आत्रेयजी के मतके प्रमेह हैं ॥

अथ प्रमेह की दश पिड़िकाओं के नाम और लक्षण ॥

शराविका १ कच्छपिका २ जालिनी ३ विनता ४ अलजी ५ मसूरिका ६ सर्षपिका ७ पुत्रिणी ८ विदारिका ९ विद्रधि १० ॥

अथ पिड़िका का लक्षण ॥

शरीर के ढूंगा आदि पुष्टस्थान के मर्मस्थान बिषे १० सन्धि में उपजें उनको पिड़िका कहिये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ शराविका का लक्षण ॥

फुंसी ऊपर तो ऊँची और बीचमें गढ़ा हो अर्थात् सरवे के समान शोथ हो उसको शराविका कहिये १ ॥

अथ कच्छुपिका का लक्षण ॥

पीछे कहेशरीर के पुष्टस्थानों में सरसों के प्रमाण दाह को लिये कछुआ के आकार जो फुंसी हो उसको कच्छपिका कहते हैं २॥

अथ जालिनी का लक्षण ॥

जिस फुंसी में दाह बहुत हो और वह मांसके समूहमें हो उसको जालिनी कहिये ३ ॥

अथ विनता का लक्षण ॥

जिस फुंसीके भीतर पीड़ा हो और वह फुंसी बड़ी हो और पीठ पीछे अथवा उदर में हो उसे विनता कहिये ४ ॥

अथ अलजी का लक्षण ।

जो फुंसी लाल और काली हो बहुत फाटे, पीड़ा अधिक हो उसको अलजी कहिये ५ ॥

अथ मसूरिका का लक्षण ॥

जो फुंसी मसूरके प्रमाण हो और मसूरही का सा रंग हो उसको मसूरिका कहिये ६ ॥

अथ सर्षपिका का लक्षण ॥

जो फुंसी सरसों के प्रमाण हो और सरसोंही का सा रंग हो उसको सर्षपिका कहिये ७ ॥

अथ पुत्रिणी का लक्षण ॥

जो फुंसी उठतेही बड़ी उठे उसको पुत्रिणी कहिये ८ ॥

अथ विदारिका का लक्षण ॥

जो फुंसी विदारीकन्दके सदृश गोल हो और कड़ी हो और वैसाही रंग हो उसको विदारिका कहिये ९ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ विद्रधि का लक्षण ॥

विद्रधिरोग ६ प्रकार का है उसके लक्षण पीछे लिखे हैं वे यहां भी जान लीजिये। दश पिड़िका प्रमेहवाले रोगीके होती हैं और जिसका मेद दुष्ट हो उसके विना प्रमेह भी होती हैं १० ॥

अथ १० पिड़िका के उपद्रव ॥

तृषा, खांसी, मांसका संकोच, हिचकी, मन्दज्वर, विसर्प, मर्मका रोंकना ये इनके उपद्रव हैं ॥

अथ पिड़िका का असाध्य लक्षण ॥

गुदा, हृदय, मस्तक, कन्धा, मर्मस्थान इन स्थानों में मन्दाग्निवाले के फुंसी हो तो असाध्य जानिये कई आचार्यों के मतसे स्त्रीके प्रमेहरोग नहीं होता क्योंकि स्त्री के महीने महीने स्त्रीधर्म होता है उससे शरीर के सबरोग जातेरहते हैं ॥

अथ प्रमेह जातारहा हो उसका लक्षण ॥

जिसका मूत्र निर्मल हो और पतला पानी के समान हो कड़ुआ और तीखा होजाय उसका प्रमेह गया जानिये ॥

अथ रक्तपित्त और रक्तप्रमेह का भेद ॥

जिसके शरीर का वर्ण हल्दी के समान होजाय और मूत्र रुधिर के समान उतरे उसके रुधिरप्रमेह जानिये या रक्तपित्त का कोप जानिये ॥

अथ प्रमेहरोग का यत्न ॥

सावां, गेहूं, चना, अरहर, कुलत्थ, यव, मूंग, मोठ, साठी चावल प्रमेहवाला इतनी वस्तु पुरानी खाय और तीखा, शाकपत्र, हरिण का मांस, प्रमेहवाले को कुपथ्य हैं ॥ गुड़ आदि मीठी वस्तु, दूध, घृत, तेल, मट्ठा, मदिरा, खटाई, साठी का रस, पिसा अन्न, अनूपदेश का मांस प्रमेहवाला इतनी वस्तु न खाय ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ कफ के १० प्रमेहवालों को यह काढ़ा योग्य है ॥

नागरमोथा, हड़की छाल, पठानीलोध, कायफल इनको बराबर ले जवकुटकर ५ टंकका काढ़ा प्रतिदिन शहद डाल पीवे तो पित्त, कफके प्रमेह जायँ १ अथवा खस, लोध, काहू का बक्कल, रक्तचन्दन इनको बराबर ले जवकुटकर ५ टंक का काढ़ा प्रतिदिन शहद डाल पीवे तो पित्तका प्रमेह जाय। यह यत्न भावप्रकाश में है २ ॥

अथ जलप्रमेह का यत्न ॥

धववृक्ष का बक्कल, कदम्ब का बक्कल, रक्तचन्दन, सालर वृक्ष का बक्कल इनका काढ़ा ले तो जलप्रमेह जाय ३ ॥

अथ रक्तप्रमेह का यत्न ॥

बासी पानी में किशमिशका शर्बत करे उसमें मुलहठी, सफ़ेद चन्दन डालकर पिये तो रक्तप्रमेह जाय ४ ॥

अथ क्षारप्रमेह का यत्न ॥

सुन्दर स्त्री के साथ संभोग करने से क्षारप्रमेह जाय ५ अथवा धववृक्ष का बक्कल, काहू का बक्कल, अड़ूसे का बक्कल, कसेरू, केले के भीतर का सफ़ेद बक्कल, कमल की जड़, किशमिश इन सबका काढ़ा दे तो क्षारप्रमेह जाय ६ ॥

अथ तक्रप्रमेह का यत्न ॥

पठानीलोध, काहू का बक्कल, खस, नींब के पत्ते, आमला, रक्तचन्दन इन सबका काढ़ा करके गुड़ डाल पिये तो तक्रप्रमेह और पिड़िकाप्रमेह यह दोनों जायँ ७ ॥

अथ शुक्रप्रमेह का यत्न ॥

दूब, मूर्वा (मुरहरी) डाभ की जड़, कास की जड़, दात्यूणी, मंजीठ, सालर का बक्कल इनका काढ़ा ले तो शुक्रप्रमेह और रुधिरप्रमेह ये दोनों जायँ ८ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ घृतप्रमेह का यत्न ॥

त्रिफला, किरमाला की गिरी और उसी की जड़, मूर्वा, सहँजने के पत्ते, नींब के पत्ते, केलेका सफ़ेद बक्कल, मुनक्का, दाख इनका काढ़ा दे तो घृतप्रमेह जाय ९ ॥

अथ इक्षुप्रमेह का यत्न ॥

कूट, पित्तपापड़ा, कुटकी, मिश्री इनका काढ़ा दे तो इक्षुप्रमेह जाय १० अथवा अरणी की जड़, पाढ़ल, धमासा, अरलू, छीला की जड़ इनका काढ़ा ले तो इक्षुप्रमेह जाय ११ ॥

अथ पित्तप्रमेह का यत्न ॥

कमल की जड़, काहू का बक्कल, इन्द्रयव, धव और इमली का बक्कल, आमला, निंबौली इनमें मिश्री डाल पिये तो पित्त का प्रमेह जाय १२ अथवा बायबिड़ंग, राल, काहू का बक्कल, कायफल, कदम्ब का बक्कल, लोध, विजयसार इनका काढ़ा ले तो पित्तका प्रमेह जाय। सर्व प्रमेहमात्र और मूत्र गृह को यह दूरकरे १३ अथवा करिहारी और हड़की छाल, हल्दी, काहू का बक्कल ये सब बराबर ले महीन पीस इनकी बराबर मिश्री मिलाय ५ टंक शहद के साथ खाय तो सब प्रकार के प्रमेह जायँ १४॥

अथ मधुप्रमेह का यत्न ॥

बड़, अरलू, चिरौंजी, आमला, बड़ीपीपल, किरमाला इन सबों की जड़का बक्कल, मुलहठी, नींब की छाल, पटोल, बड़ का छिलका, दात्यूणी, मेढ़ासिंगी, चित्रक, कणगच की जड़, इन्द्रयव, त्रिफला, शोधीभिलावां, सोंठि, कालीमिरच, तज, पत्रज, इलायची ये सब बराबर ले महीन पीस २॥ टंक शहद के साथ ले तो मधुप्रमेह जाय १५ अथवा बड़की जटा आदि इन ओषधियों का काढ़ा दे अथवा इनके तेल का मर्दन करे या इनका घृत बनाय खाय तो मधुप्रमेह जाय १६ इति न्यग्रोधाद्य चूर्ण ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथवा शोधी सोनामक्खी, पाषाणभेद, शोधा शिलाजीत, चन्दन, कचूर, पीपल, वंशलोचन ये सब बराबर ले महीन पीस २॥ टंक औषध १० टंक शहद मिलाय गौके दूध के साथ प्रतिदिन पिये तो मधुप्रमेह और मूत्र का अवरोध इन सबको दूर करे। यह सब यत्न आत्रेयमें लिखे हैं १७॥

अथ चन्द्रप्रभा गुटिका॥

कचूर १ टंक, बच १ टंक, नागरमोथा १ टंक, चिरायता १ टंक, देवदारु १ टंक, हल्दी १ टंक, अतीस १ टंक, दारुहल्दी १ टंक, पीपलामूल १ टंक, चित्रक १ टंक, धनियां १ टंक, त्रिफला १ टंक, चव्य १ टंक, गजपीपल १ टंक, जवाखार १ टंक, सज्जी १ टंक, सेंधानोन १ टंक, कालानोन १ टंक, सांभरनोन १ टंक, सार ५ टंक, मिश्री २ टंक, शोधा शिलाजीत ४ टंक, शोधा गुग्गुल ४ टंक इन सबको पृथक् पृथक् महीन पीसे फिर सबको मिलाय एक रस करे फिर शुद्धपारा १ टंक, शोधी गन्धक १ टंक, अभ्रक १ टंक ले फिर पारे और गन्धक की कजली कर सब औषध इसमें मिलावे फिर ४ माशे शहद और घृतके साथ ले तो सर्व प्रमेहमात्र, बवासीर, क्षयी, वीर्य का दोष, नेत्र और दांत का रोग, खांसी, पाण्डुरोग, पादशूल, उदर का रोग, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, फिया, कोढ़ इन सबको यह दूर करता है १८—इति चन्द्रप्रभा गुटिका॥

अथवा त्रिफला ४ टके, ज़ीरा ४ टके, धनियां ४ टके, दालचीनी २ टके, लवङ्ग २ टके, नागकेसर २ टके, तुखमलैआ के बीज २ टके, कोंचके बीज ४ टके, छोटी इलायची २ टकेभर इन सबको महीन पीस एकरस कर फिर इनको मिश्री और घृत में मिलाय १ टके भर का लड्डू बांधे। १ लड्डू प्रभात खाय तो प्रमेहमात्र दूर हों १९—इति प्रमेहारिचूर्ण॥

अथ मधुप्रमेह का यत्न॥

शोधा पारा, शोधी गन्धक, काहू का बक्कल, मिश्री इनको

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बराबर ले खरल में महीन पीस सालर की जड़की ३ पुट दे फिर खरलकर इसकी १ माशे प्रमाण की गोली बांधे। १ गोली नित्य खाय तो मधुप्रमेह जाय २० अथवा पठानीलोध १ टंक शहदसे अथवा खरेटी के काढ़े के साथ ले तो प्रमेह जाय २१ अथवा गिलोयसत, त्रिफला, सार ये तीनों मिलाय १ टंक शहद मिलाय खाय तो प्रमेह जाय २२ अथवा मिश्री, सिंघाड़ा, रेवंदचीनी सब बराबर ले महीन पीस २॥ टंक जल से नित्य ले तो बहुत दिवसकाभी प्रमेह जाय २३ अथवा बङ्गेश्वररस १ रत्ती शहद से और इसके ऊपर पक्के गूलर के फल का चूर्ण शहद से ले तो असाध्य भी प्रमेह जाय २४ अथवा पक्के गूलर का फल १टंक सेंधानोन के साथ खाय तो असाध्य भी प्रमेह जाय २५॥

अथ बङ्गेश्वररस की क्रिया॥

रांगा चोखा ऽ। गलावे गलती समय ऽ= शुद्धपारा डाले पीछे इसकी थाली में पतली पापड़ी जमावे फिर उसका छोटा छोटा टुकड़ा कर जुदा रक्खे पीछे पांच पांच सेर के बड़े बड़े गोबर के दो उपले पाथ एक उपले के ऊपर २ सेर कसेरू का चूर्ण बिछावे और युक्ति से उसमें मेहँदी का १ सेर चूर्ण मिलावे पारा * और रांगके टुकड़ों को युक्ति से धर ऊपर दूसरा उपला धरे पीछे उसे युक्ति से निर्वातस्थान में फूंक दे फिर ठंढाकर जब उसका फूल सफ़ेद होजाय, पूरी तोल उतरे तब काढ़ ले यह बङ्गेश्वररसकी क्रिया है। यह पृथक् पृथक् अनोपान से सर्वरोगमात्र को दूर करता है २६–इति बङ्गेश्वररसकी क्रिया॥

अथ सुपारीपाक॥

दक्षिणी सुपारी ८ टकेभर महीन पीस गौके ८ टकेभर घृत में उसन ३ सेर गौ के दूध में उसका खिलवां मावा करे पीछे

* जहां पर पारा डाले वहां पर शिंगरफ़ का निकाला हुआ डाले पीछे शुद्धकी अपेक्षा न होगी॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

इस मावे में नागकेसर ५ टंक, नागरमोथा ५ टंक, सफ़ेदचन्दन ५ टंक, सोंठि ५ टंक, कालीमिरच ५ टंक, पीपल ५ टंक, आंवला ५ टंक, कोहले के बीज ५ टंक, जायफल ५ टंक, लवङ्ग ५ टंक, धनियां ५ टंक, चिरौंजी ५ टंक, तज ५ टंक, पत्रज ५ टंक, इलायची ५ टंक, दोनोंज़ीरा १० टंक, सिंघाड़ा ५ टंक, वंशलोचन ५ टंक इन सब को महीन पीस मावे में मिलावे पीछे ५० टंकेभर मिश्री की चाशनी करे उसमें सब औषधियों समेत उस मावेको डाले पीछे उसकी १। टंके प्रमाण की गोली बांधें। १ गोली प्रभात और १ संध्यासमय खाय तो प्रमेह, जीर्णज्वर, अम्लपित्त, बवासीर, मन्दाग्नि, शुक्र के दोष और प्रदर इनको यह दूरकर शरीर को पुष्ट करता है २७–इति सुपारीपाक ॥

अथ गोखुरूपाक ॥

गोखुरू ५॥ सेर ले महीन पीस गौके १ सेर घृत में मकरोवे फिर ५ सेर गौ के दूधमें इसका खिलवां मावा करे उस मावे में बेलकी गिरी २॥ टंक, कालीमिरच २॥ टंक, जायफल २॥ टंक, समुद्रशोष २॥ टंक, इलायची २॥ टंक, भीमसेनी कपूर २॥ टंक, पत्रज २॥ टंक, दालचीनी २॥ टंक, हल्दी २॥ टंक, कूट २॥ टंक, तालमखाना २॥ टंक, अफ़ीम २॥ टंक इन औषधियों से आधी भांग ले फिर इन्हें महीन पीस उस मावे में डाले पीछे ४ सेर मिश्री की चाशनी करे इस पानी में औषधियों समेत मावा मिलावे पीछे ५ टंक प्रमाण की गोली बांधे। १ गोली नित्य सधती खाय तो प्रमेह को दूर कर वीर्यस्तम्भ हो, स्त्रियों को बहुत प्रसन्न करे २८ अथवा चित्रक, शोधी गन्धक, सोंठि, कालीमिरच, शुद्धपारा, शोधा सिंगीमुहरा, त्रिफला, नागरमोथा ये सब बराबर ले पहिले पारे और गन्धक की कजली करे पीछे इस कजली में ये औषधें महीन पीस मिलावे फिर इसमें भांगरे के रस की एक पुट दे खरल करे पीछे १ टंक प्रमाण की गोली बांधे। १ गोली

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

नित्य प्रभातसमय खाय तो अठारह प्रकार का कोढ़ जाय। ये यत्न वैद्यरहस्य में लिखे हैं २९ इति पञ्चाननगुटिका ॥

अथवा भीमसेनी कपूर १ माशे, कस्तूरी १ माशे, अफ़ीम ४ माशे, जावित्री ४ माशे इन सबको नागरबेल के पत्तों के रस में पीसे पीछे १ रत्ती प्रमाण की गोली बांधे। १ गोली नित्य दूध, मिश्री के साथ ले तो प्रमेहमात्र दूर हों और वीर्यस्तम्भ हो ३० ॥

अथ घृतप्रमेह का यत्न ॥

गिलोय, चित्रक, पाढ़, कुड़ा की छाल, भुनी हींग, कुटकी, कूट ये सब बराबर ले महीन पीस २॥ टंक घृतमें ले तो घृतप्रमेह जाय ३१ अथवा आंवला, हल्दी बराबर ले ५ टंक रात में भिजोय प्रभातही उसी पानी में पीस शहद मिलाय प्रतिदिन पिये तो प्रमेहमात्र जायँ ३२ अथवा शुद्धपारा, शोधी गन्धकसार, शोधी सोनामक्खी, सोंठि, मिरच, बड़ीपीपल, त्रिफला, शिलाजीत, बेर की मींगी, हल्दी, कैथ ये सब बराबर ले प्रथम पारे और गन्धककी कजली कर उसमें ये औषधें महीन पीस मिलावे फिर भांगरे के रसकी २१ पुट दे फिर १। टंक प्रतिदिन खाय तो प्रमेहमात्र दूर हों ३३–इति मेघनादरस ॥

अथवा शुद्धपारा और अभ्रक बराबर ले आंवले के रसमें ७ दिन खरल करे पीछे १ रत्ती नित्य खाय तो प्रमेहमात्र जायँ ३४–इति हरिशंकररस ॥

अथवा छोटी इलायची, भीमसेनी कपूर, भारंगी, जायफल, बड़ागोखरू, सालरका बक्कल, मोचरस, शुद्धपारा, अभ्रक, बङ्गसार इन सबको बराबर ले खरल में महीन पीस २ रत्ती नित्य शहद से ले तो प्रमेहमात्र जायँ ३५ इति प्रमेहकुठाररस ॥

अथवा बकायनके बीज ५ टंक चावल के पानी में पीसे उस में गौ का घृत मिलाय प्रतिदिन पिये तो बहुत दिनका भी प्रमेह

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जाय। यह यत्न सर्वसंग्रह में लिखा है ३६--इति प्रमेहहरण यत्न सम्पूर्ण ॥

अथ आत्रेय के मत से प्रमेहपिड़िका का लक्षण और यत्न लिखते हैं ॥

पित्त की पिड़िका पीली अथवा लाल हो, दाह और ज्वर हो तथा वायु की पिड़िका काली हो, शरीर कांपे, मूतते समय शूल हो, पुरुष विकल होजाय एवं कफ की पिड़िका सफ़ेद, भदरंगी, शीतल हो, विलम्बसे पके तथा सूजन लिये होती है और ये सब लक्षण मिले हों उसको सन्निपात की पिड़िका कहते हैं ॥

अथ पिड़िका का यत्न ॥

धव, काहू, कदम्ब, बेर, शीशम, नींब इनके बक्कल का काढ़ा कर उसके पानीसे उस पिड़िकाको धोवे तो पिड़िका अच्छी हो १॥

अथ इन्द्रिय के ऊपर राद पड़गई हो उसका यत्न ॥

काहू, कदम्ब इनका बक्कल और तेंदू की अतरछाल इनके काढ़े से धोवे तो इन्द्रिय की राद अच्छी हो २॥

अथ इन्द्रिय के ऊपर वायु की पिड़िका हो उसका यत्न ॥

भांगरे का रस, तुलसी का पत्र, पटोल का पत्र इनको कांजी से पीस लेप करे तो वायु की पिड़िका जाय ३ ॥

अथ पित्त की पिड़िका का यत्न ॥

मुलहठी, कूट, रक्तचन्दन, खस, रोहिष, गेरू, कमलगट्टा ये दूध में पीस पित्तकी फुंसियों में लेप करे तो दाह जाय ४ ॥

अथ इन्द्रिय की फुंसी पकजाय उसका यत्न ॥

शीतल जल से १०० बार के धोये मक्खन का लेप करे तो उसका दाह दूर हो ५ अथवा कदम्ब, काहू, दाड़िम, खैर, आंवला इनके पत्तों को गर्म जलसे पीस लेप करे तो फुंसियोंकी सन्धि जाय ६ अथवा त्रिफले के पानी के धोनेसे राद जाय ७ अथवा कांजी, मट्ठा, शीतल जल इनके धोनेसे राद जाय ८--यह यत्न आत्रेय में लिखा है ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ रसरत्नाकर का यत्न ॥

कपास की मींगी भैंसके मट्ठेमें ७ दिन खरल करे फिर उसमें से २ माशे नित्य खाय तो लालाप्रमेह जाय १ ॥

अथ मूत्रप्रमेह का यत्न ॥

माराहुआ पारा, बङ्ग अथवा बङ्गेश्वर, सार, अभ्रक इन सब को बराबर ले शहद में एक दिन खरल करे फिर १ माशे शहद से नित्य खाय तो बहुमूत्रप्रमेह जाय २ इस रस के लेने के पीछे पके गूलर के फलका २॥ टंक चूर्ण ऊपरसे ले तो बहुमूत्रप्रमेह जाय ३–इति तालकरस ॥

अथवा पंचवक्र रस २ माशे ले तो मूत्रप्रमेह जाय। यह यत्न रसरत्नाकर में है ४–इति प्रमेह और प्रमेहपिड़िकारोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न सम्पूर्ण ॥

इति द्वादशस्तरङ्गः १२ ॥

अथ मेदरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

बहुत आराम के करने, बैठेरहने, दिनके सोने से तथा कफकारी वस्तु, मधुर अन्न, घृत आदि चिकनी वस्तु के खाने से मेद बढ़ता है तब पुरुष कुछ काम नहीं करसक्ता क्योंकि और जो हाड़, मज्जा, वीर्य आदि धातु हैं वे मेदके बढ़ने से पुष्ट नहीं होती हैं और पुरुष निकम्मा होजाता है १ ॥

अथ मेद के अन्य दोष ॥

जिसके मेद हो उसके क्षुद्र श्वास, तृषा, मोह हों, कराहता सोवे, शरीर में पीड़ा हो, छींक और पसीना आवे, शरीर में दुर्गन्ध हो, मैथुन करनेकी सामर्थ्य न हो ये मेदवाले के लक्षण हैं ॥

अथ मेद का स्थान ॥

प्राणीमात्र के उदर में मेद रहता है वही मेद उदर को बढ़ाता और दीप्यमान करता है क्योंकि मेद से ढके मार्गवाली वायु कोष्ठ ही में बिचरती अग्निको देदीप्तकर भोजनही की वासना

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

रक्खे तब मनुष्य के बहुत खाने से अनेक भयंकर रोग बहुत दिनों में उत्पन्न होते हैं तदनन्तर उदर में रहनेवाली अग्नि और पवन से स्थूल हुए मेदवाले पुरुष को दग्ध करें फिर मेदके बहुत बढ़ने से पेटमें रहनेवाले वात, पित्त, अग्नि बहुत विकारों को उत्पन्नकर उस पुरुष को मारते हैं॥

अथ स्थूल का लक्षण॥

मेद मांस जब बहुत बढ़ें तब पुरुष के चूतड़, उदरस्थान बढ़के थलथल हालें और पुरुष का बल, मांस, उत्साह जाता रहे उसको स्थूल कहते हैं। स्थूल पुरुष के विसर्प, भगन्दर, विषमज्वर, अतीसार, बवासीर, पामा आदि भयंकर और भी रोग होते हैं॥

अथ मेदवाले रोगी का यत्न॥

पुराना चावल, मूंग, कुलत्थ, कोदों इनको खाय और लिखना, बस्तिकर्म, खेद, चिन्ता, कुश्ती, मार्ग चलना, शहद और यव का खाना, जागना, खारारस, अरण्ड के पत्तों की तरकारी, हींग, चावल का मांड़ इतनी वस्तुएँ इस रोगवाले को खानी योग्य हैं अथवा गिलोय, त्रिफला इनके काढ़े से मेदरोग जाय १ अथवा गिलोय, त्रिफला इनके काढ़े में सार और शहद मिलाय पीवे तो मेदरोग जाय २ अथवा गर्म अन्न खाय और चावल का मांड़ पिये तो मेदरोग जाय ३ अथवा बासी ठण्ढे पानी में शहद डाल पीवे तो मेदरोग जाय ४ अथवा सोंठि, मिरच, पीपल, चित्रक, त्रिफला, नागरमोथा, बायबिड़ंग इनके काढ़े में गुग्गुल डाल पीवे तो यह रोग जाय ५ अथवा पीपल शहद से प्रतिदिन खाय तो मेदरोग जाय ६ अथवा बड़वानलरस, शुद्ध पारा, ताम्रेश्वर, सार, बीजाबोल इन्हें बराबर ले महीन पीस कूकरभांगरे के रसमें ३ दिन खरल करे पीछे २ रत्ती प्रमाण प्रतिदिन शहद से चाटे तो मेदरोग जाय ७–इति बड़वानलरस॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथवा धतूरे के पत्तों के रस का मर्दन करे तो मेदरोग जाय। यह वैद्यरहस्य में है ८ अथवा चव्य, सफ़ेद जीरा, सोंठि, कालीमिरच, बड़ीपीपल, भुनीहींग, कालानोन ये सब बराबर ले महीन पीस यव के सत्तूके साथ २॥ टंक प्रतिदिन खाय तो मेदरोग जाय। यह चक्रदत्त में है ९ अथवा बायबिड़ंग, सोंठि, जवाखार, पीपल, सार इन्हें महीन पीस उसमें १ टंक यव और आंवला का चूर्ण मिलाय शहद से ले तो यह रोग जाय १० अथवा बेर के पत्तों को कांजी के पानी में डाल और इसमें अरणी का रस और शिलाजीत डालकर पिये तो मेदरोग जाय ११ अथवा गिलोय, इलायची, कुड़ाकी छाल, आंवला ये सब अनुक्रम से एकसे एक अधिक और इन सबके बराबर गुग्गुल ले फिर इनको एकरस करके १। टंक शहद के साथ ले तो मेदरोग और भगन्दरादि सब जायँ। यह चक्रदत्त में है १२–इति अमृतगुग्गुल॥ अथवा त्रिफला, निशोत, मुलहठी, अतीस, चित्रक, अडूसा, नींब का बक्कल, किरमाला की गिरी, पीपलामूल, दोनों हल्दी, गिलोय, इन्द्रायण, पीपल, कूट, सरसों, सोंठि ये सब बराबर ले इनका काढ़ा कर उसमें तुलसी का रस अनुमान मुवाफ़िक़ डाले फिर इसमें तेल पकाय इस तेल का मर्दन करे अथवा बदल दे बस्तिकर्म करे तो मेद और कफ के रोग दूर हों। यह चक्रदत्त में है १३–इति त्रिफलाद्यतैल–इति मेदरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न॥

अथ पसीने की दुर्गन्ध का यत्न॥

अडूसे के पत्तों के रस में शंख का चूर्ण मिलाय लेप करे तो शरीर की दुर्गन्ध जाय १ अथवा बेल के पत्तों में शंख का चूर्ण मिलाय लेप करे तो शरीर की दुर्गन्ध जाय २॥

अथ कांख में बास आती हो उसका यत्न॥

नींबू के पत्तों के रस का लेप करे तो कांख की दुर्गन्ध जाय १

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथवा हल्दी को अधजली कर पानी में पीसकर लेप करे तो कांख की दुर्गन्ध जाय २ अथवा नागकेसर, सिरस का बक्कल, पठानीलोध, खस, हड़ की छाल इनको पानी में पीस उबटन करे तो शरीर की दुर्गन्ध जाय ३ अथवा बेर के पत्तों को जल में महीन पीस शरीर में मर्दन कर स्नान करे तो शरीर की दुर्गन्ध जाय। ये यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं ४॥

अथ शरीर की दुर्गन्ध दूर होने का उबटन॥

ताम्बूल, हड़ की छाल, कूट इनको पानी में पीस शरीर में मर्दन करे तो शरीर की दुर्गन्ध जाय। यह वृन्द में लिखा है ५॥

अथ स्त्री का अच्छा रंग करने का लेप॥

हड़ की छाल, पठानीलोध, नींब के पत्ते, अनार का छिलका, आम का बक्कल इनको जल में महीन पीस शरीर में लेप करे तो शरीर की कान्ति बढ़े। यह काशीनाथपद्धति में लिखा है ६॥

अथ कांख की दुर्गन्ध दूर होने का दूसरा यत्न॥

कूट, दोनों हल्दी इनको गौके मूत्र अथवा गोबर में पीस लेप करे तो कांख की दुर्गन्ध जाय और इससे कोढ़ भी जाय। यह चक्रदत्त में है ७॥

अथ शरीर की दुर्गन्ध दूर होने का यत्न॥

कुलत्थ, कूट, छारछबीला, सफ़ेद चन्दन, भुने यव का चूर्ण, तज, बच इनको जल से महीन पीस शरीर में लेप करे तो शरीर की दुर्गन्ध जाय। यह शार्ङ्गधर में है ८॥

अथ कार्श्यरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न॥

कार्श्यरोग को लौकिक में क्षीण कहते हैं। बादी और सूखे अन्न के खाने से, लंघन, मैथुन और खेद के करने से, भय से और धन पुत्रादिक के नष्ट होने के शोच से पुरुष के कार्श्यरोग उत्पन्न होता है॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ कार्श्यरोग का लक्षण ॥

कूला, उदर और कन्धे सूखजायँ, नसें निकल आवें, हाड़, चमड़ा शरीर में बाक़ी रहजाय, शरीर दुर्बल होजाय ये लक्षण हों तो मनुष्य के क्षीणता का रोग जानिये ॥

अथ अत्यन्तक्षीण मनुष्य के इतने रोग हों ॥

संग्रहणी, अफरा आदि रोग हों और बहुतसे पुरुष देखने को दुर्बल होते हैं उनके शरीर में मेद का भाग तो थोड़ा और वीर्य का भाग बहुत हो वे मैथुन बहुत करें और बन्धेज भी बहुत रहें और स्त्रियों के गर्भ स्थित करदें तथा कोई देखने में तो शरीर के पुष्ट परन्तु बल से हीन और मैथुनादिक में सामर्थ्यरहित होते हैं उनको क्षीण कहते हैं। उनके शरीर में मेद का भाग तो बहुत और वीर्य का भाग थोड़ा होता है इससे उनको भी क्षीणही कहिये ॥

अथ कृशनाम क्षीणता का यत्न ॥

जितनी बलकारी और बन्धेज की औषध हैं और जितने पुष्टकारी घृत, दूध, मांस आदिक पदार्थ हैं उनसे क्षीणता का रोग दूर होता है १ और इसकी पुष्टाई के यत्न इस ग्रन्थ की समाप्ति में कहे हैं ॥

अथ क्षीणता का असाध्य लक्षण ॥

जिस पुरुष के स्वतःस्वभावसे क्षीणता और मन्दाग्नि हो और सदा शरीर दुर्बल रहे उसका यत्न नहीं है। ये सब भावप्रकाश में कहे हैं—इति कार्श्यनाम रोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

अथ उदररोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

सब उदररोग ८ प्रकार के हैं वे मन्दाग्निवाले पुरुष को निश्चयही होते हैं और अजीर्ण से अनन्त रोग उपजते हैं। ऐसी ऐसी वस्तुओं के खाने से उदररोग होता है और दोषों का समूह, मल और आमका संचय कोष्ठमें हो तो पुरुषके उदररोग होताहै॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ उदररोग की उत्पत्ति ॥

कुपथ्य से सञ्चित वात, पित्त, कफ जलके ले चलनेवाली नसों को रोंकें और हृदय की पवन, अग्नि, गुदा की पवन इनको बहुत दूषित कर ८ प्रकार के उदररोग को उत्पन्न करते हैं॥

अथ उदररोग का सामान्य लक्षण ॥

पेट में अफरा हो, चलने फिरने की सामर्थ्य जाती रहे, शरीर दुर्बल हो, मन्दाग्नि हो, शरीर में सूजन और हाड़ों में हड़फूटन हो, मल-मूत्र अच्छेप्रकार न उतरे और शरीर में दाह हो ये लक्षण हों तो जानिये कि इसके उदररोग है ॥

अथ आठप्रकार के उदररोग कहते हैं ॥

वात का १ पित्त का २ कफ का ३ सन्निपात का ४ फिया का ५ मल बन्द होनेका ६ चोट लगने का ७ जलोदर का ८ ॥

अथ वातोदर का लक्षण ॥

जिस पुरुष के पैर, हाथ, नाभि में सूजन हो, कोख, पसुली, कटि, पीठ और सन्धि सन्धि में पीड़ा हो, रूखा खांसे, शरीर भारी रहे, मल उतरे नहीं, शरीर की त्वचा, नख, नेत्र काले पड़जायँ, पेट में पीड़ा और अफरा हो, पेट बोला करे ये लक्षण हों तो बात का विकार जानिये १ ॥

अथ पित्तोदर का लक्षण ॥

जिसके ज्वर, मूर्च्छा, दाह और तृषा हों, मुख कड़ुआ रहे, घुमेर, अतीसार ये सब रोग हों और शरीर की त्वचा पीली, हरी हो, शरीर में पसीना आवे और दाह हो, धुएं को लिये डकार आवे, त्वचा का स्पर्श कोमल हो, त्वचा पकीसी होजाय ये लक्षण हों तो पित्त का उदररोग जानिये २ ॥

अथ कफोदररोग का लक्षण ॥

जिसके शरीर में पीड़ा हो, सोवे बहुत, सूजन हो, शरीर भारी रहे, हिया दूखे, भोजन में अरुचि हो, देर में पचे, शरीर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

ठंढा रहे और पेट बोला करे ये लक्षण हों उसके कफोदर कहिये ३ और जिसमें ये सब लक्षण मिले हों उसे सान्निपात का उदररोग कहिये ४॥

अथ दुष्योदर का लक्षण॥

जिस पुरुष का शत्रु किसी प्रकार सिंह का नख, मूछ का बाल, किसी दुष्ट जानवर का मल, मूत्र, रुधिर, वीर्य अथवा जहर किसी अन्नपानादिमें मिलाकर खिला दे उसके दुष्योदर उत्पन्न होता है। शरीर का रुधिर, वात, पित्त, कफ ये सब कोपित होकर दुष्योदरसन्निपात का भयंकर उदररोग उत्पन्न करते हैं फिर वह उदररोग वर्षाऋतु में कोपित होकर पुरुष को बहुत दुःखित व मूर्च्छितकर मृत्युतुल्य करदे उसको दुष्योदर कहिये ५॥

अथ प्लीहोदर अर्थात् फिया का लक्षण॥

गर्म वस्तु के खाने और पीने से दुष्ट हुआ रुधिर कफ से प्लीह को बढ़ाता है पीछे बढ़ा फिया बाईं पसुली में उदर के रोगों को उत्पन्न करता है इससे पीड़ित मनुष्य के मन्दाग्नि, जीर्णज्वर हो बल जाता रहे ये लक्षण हों तो प्लीहोदर कहिये ६॥

अथ मल के बद्धगुदोदर का लक्षण॥

जो पुरुष विना शोधा अन्न खाय जिसमें बाल, कांकर, रेत, धूलि ये मिले हों उसके दोषों को लिये मल का संचय होवे तब उस पुरुष के कष्ट से थोड़ा गुदा के द्वारा मल उतरे और उस पुरुष का हृदय, नाभि बढ़जाय उसको वैद्य बद्धगुदोदर कहते हैं ७॥

अथ क्षतोदर का लक्षण॥

जो पुरुष पाषाण आदि रेत से मिला अन्न खाय उस पुरुष की आंतों को काटि अन्न जल के सदृश होकर गुदा के द्वारा निकले और उसकी गुदा रातदिन बहाकरे तथा उसकी पेडू बढ़े और पेडू में पीड़ा हो उसको क्षतोदर कहते हैं ८ क्षतोदर और बद्धगुदोदर एकही हैं॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ जलोदर का लक्षण ॥

घृत को खाय, बस्तिकर्म कराय, जुलाब ले, वमन करके जो पुरुष शीतल जल पिये उसके जलकी बहनेवाली नसें दूषित होकर स्नेह से लिपी हुई नसों में जलोदर को उत्पन्न करती हैं तथा उस शीतल जलसे उत्पन्न हुआ जलोदर नाभि की ओर पास गोल और चिकना हो पानी की मशक समान बहुत बढ़े तब मनुष्य उससे बहुत दुःखी हो और उसका शरीर कांपे ये लक्षण हों उसको जलोदर कहिये ६ ॥

ये सब आठों उदररोग उत्पन्न होते ही कष्टसाध्य हैं और बलवान् पुरुष के जलोदर तत्काल हो सो साध्य है ॥

अथ उदररोगों का असाध्य लक्षण ॥

बद्धगुदोदर हो तो एकपक्ष उपरान्त असाध्य जानिये और जलोदर असाध्यही है अथवा पसुलियों में शूल चले, नेत्रों के ऊपर सूजन हो, इन्द्रिय बांकी हो, शरीर की त्वचा गलजाय, शरीर का रुधिर और मांस सब जाता रहे और अग्नि मन्द हो जाय वह पुरुष असाध्य जानिये ॥

अथ पुनः असाध्य लक्षण ॥

पसुलियों में शूल चले, पसुली टूटीसी होजाय, अन्नसे रुचि जाती रहे, शरीर में सूजन हो, अतीसार हो और उदर खाली हो परन्तु भरासा दीखे तो उदररोग असाध्य जानिये ॥

अथ वातोदर का यत्न ॥

दशमूल के काढ़े में अरण्ड का तेल डाल पिये तो वातोदर जाय १ अथवा त्रिफले के रस में गोमूत्र डाल पीवे तो वातोदर जाय २ अथवा कूट, दात्यूणी, जवाखार, पाढ़, कालानोन, सेंधानोन, सांभरनोन, खुरासानीबच, सोंठि ये सब बराबर ले महीन पीसपूटंक गर्मजल से ले तो वातोदर जाय ३—इति कूटादि चूर्ण ॥

अथवा इकड़िया (एकपोत्या) लहसुन १०० टके भर ले

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

उसको पीस १६ सेर पानी में औटावे औटतेही में सोंठि १ टका, कालीमिरच १ टका, पीपल १ टका, सांठी की जड़ १ टका, कालानोन १ टका, बिड़नोन १ टका, त्रिफला ३ टका, दात्यूणी १ टका, सहँजने का बक्कल १ टका, अजवायन १ टका, गजपीपल १ टका, निशोत ६ टका भर ले इन्हें महीन पीस उस लहसुन के काढ़े में डाले और इसमें तेल २ सेर डाल मधुरी आंच से पकावे जब सब रस और औषध जलजायँ तेलमात्र रह जाय तब उतार बासन में भर राखे पीछे ५ टंक प्रातःकाल बलानुसार पीवे तो सब उदर के रोग मूत्रकृच्छ्र, उदावर्त, अन्त्रवृद्धि, पार्श्वशूल, आमशूल, अरुचि, फिया, अष्ठीला, हड़फूटन ये सब वायु के रोग महीनाभर सेवन करने से जायँ ४॥

अथ पित्तोदर का यत्न॥

जुलाब के लेने से पित्तोदर जाय ५॥

अथ कफोदर का यत्न॥

निशोत का चूर्ण २॥ टंक ऊंटनी के दूध में डाल और अरण्ड का तेल ५ टंक और पीपल, पीपलामूल, चित्रक ये सब औषध अधेलेभर डाल उस दूध को एक महीने गर्म कर पिये तो कफोदर जाय ६॥

अथ सन्निपात के उदररोग का यत्न॥

सोंठि, त्रिफला इनका काढ़ा कर उसमें दही और तेल अथवा घृत डाल पकावे पीछे उस तेल अथवा घृत को खाय तो सन्निपात का उदररोग जाय ७ अथवा गर्म दूध में अरण्ड का तेल और गोमूत्र डाल पीवे तो वायु का उदररोग जाय ८ अथवा मट्ठे में कालानोन, पीपल डाल पीवे तो वातोदर जाय ९ अथवा मिश्री, कालीमिर्च जल से पीवे तो पित्तोदर जाय १० अथवा अजवायन, भाऊ की जड़, सफ़ेद ज़ीरा, सोंठि, काली मिर्च, छोटीपीपल इनको महीन पीस ५ टंक गर्म पानी के साथ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

ले तो कफोदर जाय ११ अथवा सोंठि, कालीमिरच, बड़ी पीपल, जवाखार, सेंधानोन इन्हें महीन पीस ५ टंक गर्म पानी से पिये तो सन्निपात का उदररोग जाय १२॥

अथ नारायणचूर्ण॥

अजवायन, झाऊ का बक्कल, धनियां, त्रिफला, बड़ी पीपल, कालाजीरा, अजमोद, पीपलामूल, बायबिड़ंग ये सब बराबर ले और दात्यूणी एक औषध के हिस्से से त्रिगुणित ले और निशोत एक औषध के भाग से दूनी ले तथा इन्द्रायण एक औषध के भाग से दूनी ले, थूहर का दूध सबसे चौगुना ले इन सब को महीन पीस थूहर के दूध की १ पुट दे फिर सुखाय २॥ टंक गर्म पानी से ले तो उदर और वायु के रोगों को दूर करे और इसको बेर के बक्कल के काढ़े के साथ ले तो वायु के रोगों को दूर करे और दारू से ले तो अफरा जाय एवं मट्ठा से ले तो बद्धकोष्ठ जाय, दाड़िम के रसके साथ ले तो बवासीर जाय और गर्म पानी से ले तो अजीर्ण जाय। यह चूर्ण भगन्दर, पाण्डु, खांसी, श्वास, क्षयी, संग्रहणी, कोढ़, मन्दाग्नि और विषमात्र को दूर करे। जैसे भगवान् का सुदर्शनचक्र दैत्यों को मारे वैसेही यह नारायणचूर्ण रोगों को दूर करता है १३—इति नारायणचूर्ण॥

थूहर का दूध, दात्यूणी, त्रिफला, बायबिड़ंग, कटेली, चित्रक, कूकरभांगरा ये सब दो सेर ले और इससे चौगुना पानी डाले और १ सेर गौका घृत डाल मधुरी आंच से पकावे जब ये सब जलजायँ और घृतमात्र रहजाय तब उतार पात्र में भर रक्खे फिर इसमें से २॥ टंक ले तो जुलाब लगजाय और उदर के रोगों को दूर करे १४—इति नाराचघृत॥

अथवा सांठी की जड़, दारुहल्दी, परवर, कुटकी, हड़ की छाल, नींब की छाल, देवदारु, सोंठि, गिलोय ये सब बराबर ले इनको जवकुटकर ५ टंक का काढ़ा प्रतिदिन गोमूत्र और गुग्गुल

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

डाल पिये तो कफोदर, पसुली का शूल, श्वास, पाण्डुरोग ये सब जायँ। ये सब भावप्रकाश में लिखे हैं १५–इति पुनर्नवादिक्काथ॥

अथवा अजवायन १४ टंके, भुना सुहागा २ टंके भर इनका चूर्णकर २। टंक गर्म जल से ले तो उदर के सब रोग जायँ १६ अथवा पीपल ५ टंके भर ले और उसको थूहर के दूधमें १७ दिन तक भिजोरक्खे फिर छाया में सुखाय महीन पीस ४ माशे जल से एक दिन के अन्तर से ले और इसके ऊपर मट्ठा, चावल खाय तो उदर का रोग जाय १७–इति उदरामयहरचूर्ण॥

अथवा पीपल १००० ले उसमें थूहर के दूध की ७ पुट दे अथवा हड़ के चूर्ण में थूहर के दूध की सात पुट दे फिर उसमें से १। टंक गोमूत्र के साथ ले तो उदर के सब रोग जायँ १८ अथवा दात्यूणी, पीपल, सोंठि ये सब बराबर ले और इन सब से दूना चूख ले तथा इनसे चौथाई बिड़नोन ले फिर इनको महीन पीस १। टंक गर्मपानी से ले तो फिया, गोला, मन्दाग्नि, पाण्डुरोग, उदररोग इन सबको दूर करे १९ अथवा आक के पत्तों में सेंधानोन डाल मटकी में भर उसके मुँह को बन्दकर फूँक दे फिर उसको पीस ५ टंक प्रतिदिन मट्ठे से अथवा ग्वारके पट्ठे से ले तो उदरके रोग जायँ २० अथवा गुड़, हड़ वा गुड़ और पीपल इनको २॥ टंक नित्य खाय तो उदररोग, सूजन, पीनस, खांसी, अरुचि, जीर्णज्वर, बवासीर, संग्रहणी, कफ और वायुके रोग इन सबको यह दूर करे। ये सब यत्न वैद्यरहस्य में हैं २१॥

अथ जलोदर का यत्न॥

नीलाथोथा, आमलासार गन्धक, पीपल, हड़ की छाल ये सब बराबर ले इनको महीन पीस थूहर के दूध में ५ दिन खरल करे फिर १ माशे प्रतिदिन गर्मजल से ले तो जलोदररोग जाय

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

इस रस के ऊपर चावल खाय और इमली का शर्बत पिये। यह योगतरङ्गिणी में है २२–इति उदरारिरस ॥

अथवा सोंठि, कालीमिरच, पीपल, पांचोंनोन, सज्जी ये सब बराबर ले इन सबकी बराबर शोधा जमालगोटा ले इन सब में दात्यूणी के रस की ३ पुट दे फिर बिजौरे के रस की ३ पुट दे खरलकर फिर छाया में सुखावे फिर आधरत्ती प्रमाण उसमें से खाय तो उदररोग, फिया, गोला, अफरा, शूल, बवासीर इन सबको दूर करे और इसको नेत्र में आंजने से सर्प का विष दूर होता है। यह रसरत्नप्रदीप में है २३–इति उदयभास्कररस ॥

अथवा आकका दूध २ टकेभर, कुड़ा की छाल १ टके, थूहर का दूध ६ टके, निशोत १ टके, हड़ की छाल १ टके, कबीला १ टकेभर इन सबको महीन पीस इकट्ठाकर ५ सेर पानीमें घृत समेत मधुरी आंचसे पकावे जब पानी आदि सब जलजायँ और घृतमात्र रहजाय तब उतार बासन में भररक्खे फिर इस घृत के जितने बूँद खाय उतनेही दस्त जुलाब में आवें और उदररोग, सूजन, भगन्दर, गोला इन सबको यह घृत दूर करे। यह वैद्य-विनोद में है २४–इति बिन्दुघृत–इति उदररोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न सम्पूर्ण ॥

इति त्रयोदशस्तरङ्गः १३ ॥

अथ शोथनामरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

जो पुरुष वमन, विरेचन और ज्वरादिक से अथवा लंघनादिक से दुर्बल हो उसके खारी, खट्टी, तीखी, भारी वस्तु तथा दही, कच्ची और मोटी वस्तु, शाक और विरुद्धवस्तु, गेहूँ की मैदा की वस्तु, विषका मिला अन्न इनके खाने से और बवासीर के रहने से पेट में आम होता है। जुलाब लेने से और चोट के लगने से, कच्चेगर्भ के पड़ने से, जुलाबादि पांच कर्म में कुपथ्य के करने से दुर्बल मनुष्य के शोथ का रोग होता है। वह शोथ

In Public Domain, Chamba Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

का रोग ९ प्रकार का है। वात का १ पित्त का २ कफ का ३ वातपित्त का ४ वातकफ का ५ कफपित्त का ६ सन्निपात का ७ चोटलगने का ८ विष का ९ ॥

अथ शोथ का पूर्वरूप ॥

शरीर में वात रहे व सोने से नसों में पीड़ा हो और शरीर भारी रहे तो इन लक्षणोंवाले के शोथ का रोग होगा ॥

अथ शोथ का सामान्य लक्षण ॥

अपने कारण से दुष्ट हुए वात, रक्त, पित्त शरीर की बाहरी नसों में कफको प्राप्तकर शरीर के त्वचा, मांस के समूह को बहुत फुलादेते हैं इससे इसको शोथ का रोग कहते हैं। वह शोथ का रोग शरीर को भारी करे और मनमें आवे जहां होजाय और शोथ में उष्णता हो, नसें निकल आवें, रोमाञ्च हो, शरीर का वर्ण और का और होजाय ये लक्षण हों तो शोथ का रोग जानिये। अथवा कालीसूजन होजाय तो वह सेंकादिक करने से अच्छी हो और दिन में सूजन बहुत हो तो वात की सूजन कहिये १ ॥

अथ पित्त की सूजन का लक्षण ॥

शरीर की त्वचा कोमल, गन्धयुक्त, पीली और ललाई लिये हो, शरीर घूमे, ज्वर हो, पसीना बहुत आवे, तृषा लगे, मद हो, शरीर का स्पर्श न सुहावे, नेत्र लाल हों, शरीर की त्वचा में दाह बहुत हो ये लक्षण हों तो पित्त की सूजन जानिये २ ॥

अथ कफ की सूजन का लक्षण ॥

जिस सूजन में शरीर भारी रहे और त्वचा पीली हो, नींद अधिक आवे, अग्नि मन्द हो, सूजन ऊंची नहीं हो, भोजन से रुचि जातीरहे, रात्रि में बढ़जाय ये लक्षण कफ की सूजन के कहिये ३ अन्यान्य दोषों के जिसमें लक्षण मिले हों उसे दो दोषों की सूजन कहिये ४ और जिस सूजन में सर्वदोषों के लक्षण मिलें उसको सन्निपात की सूजन कहिये ५ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ चोटलगने से उपजी सूजन का लक्षण ॥

शस्त्रादिक के लगने से, शीतपवन लगनेसे, दही के खाने से, भिलावां के लगने से, कोंच लगने से, ज़िमींक़न्द आदि के लगने से उपजी सूजन एक जगह से सब शरीर में फैलजाय और उसमें दाह बहुत हो, लाल हो आवे और पित्त के सर्वलक्षण सूजन में हों उसे शस्त्रादिक के लगने की सूजन जानिये ६ ॥

अथ बिषैले जानवर से उपजी सूजन का लक्षण ॥

बिषैले जानवर के मूत्र के स्पर्श करने से, दांतके लगने से, दांतके काटनेसे, नखके लगनेसे, बिषैले जानवर के मल, मूत्र, वीर्य से स्पर्श करने से, विषवृक्ष की पवनके स्पर्श करने से, ज़हर के खानेसे अथवा लगने से सूजन हो ॥

अथ इन सबका लक्षण ॥

जिस सूजन में पीड़ा बहुत हो, शरीरमें बहुत फैले, दाह हो तब जानिये कि यह विषकी सूजन है ॥

अथ सूजन का उपद्रव ॥

श्वास, तृषा, छर्दि हो, शरीर दुर्बल होजाय, ज्वर हो, भोजन से रुचि जातीरहे ये इसके उपद्रव हैं इसका यत्न न करना ॥

अथ सूजन का कष्टसाध्य लक्षण ॥

पेड़ूसे ले स्तनोंतक सूजन हो तो कष्टसाध्य है और सर्व शरीर में हो वह असाध्य है ॥

अथ सूजन का पुनः असाध्य लक्षण ॥

पुरुष के तो प्रथम पैर से ले मुख के ऊपरतक सूजन चढ़े और स्त्री के प्रथम मुख से पैरतक हो वह सूजन असाध्य है। इसका यत्न नहीं है। प्रथम पेड़ूमें हो और फिर सर्वत्र फैले वह भी असाध्य है ॥

अथ शोथरोग (सूजन) का यत्न ॥

सोंठि, सांठी की जड़, अरण्ड की छाल, बड़ी पीपल,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पीपलामूल, चव्य, चित्रक इनका काढ़ा ले तो वायु का शोथ जाय १ अथवा परवर के पत्ते, त्रिफला, नींब की छाल, दारुहल्दी इनका काढ़ा गुग्गुल डाल ले तो पित्त की सूजन जाय और तृषाज्वर को भी यह काढ़ा दूरकरता है २॥

अथ कफ की सूजन का यत्न॥

बड़ी पीपल अथंवा हड़को थूहर के दूध में भिगोवे ३ दिन पीछे इन्हें सुखाय महीन पीस २॥ टंक नित्य १० दिन ले तो कफ और सन्निपात की सूजन जाय ३॥

अथ भिलावें की सूजन का यत्न॥

तिल और गीली मिट्टी भैंस के दूध में अथवा मक्खन में पीस लेप करे तो भिलावें की सूजन दूर हो ४ अथवा मुलहठी, काले तिल, भैंस का दूध इनको मक्खन में पीस लेप करे तो भिलावें की सूजन जाय ५ अथवा सालरवृक्ष के पत्तों को पीस लेप करे तो भिलावें की सूजन जाय ६ और विष की सूजन का यत्न विषके प्रकरण में लिखेंगे॥

अथ शोथरोग का सामान्य यत्न॥

हड़ की छाल, हल्दी, भारंगी, गिलोय, चित्रक, दारुहल्दी, सांठी की जड़, देवदारु, सोंठि इनका काढ़ा ले तो उदर, पैर, मुँह इनकी सूजन तुरन्त दूर हो ७-इति पथ्यादिक्वाथ॥

अथ फ़ोते की सूजन का यत्न॥

त्रिफले के काढ़े में गोमूत्र डाल पीवे तो फ़ोतेकी सूजन जाय ८ अथवा बिषखपरे की जड़, देवदारु, सोंठि इनके काढ़े से सूजन जाय ९ अथवा दात्यूणी, निशोत, सोंठि, कालीमिरच, बड़ीपीपल, चित्रक इनका काढ़ा ले तो सूजन जाय १० अथवा सोनामक्खी, बिषखपरा, नींबकी छाल, गोमूत्र इनका काढ़ा ले तो सूजन जाय ११ अथवा सांठी की जड़, दारुहल्दी, सोंठि, सहँजने की जड़, सरसों इन्हें कांजी के पानी में पीस गर्म कर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

लेप करे तो सब प्रकार की सूजनमात्र दूर हों १२ अथवा गुड़, अदरक या गुड़, सोंठि अथवा गुड़, हड़ की छाल या गुड़, छोटी पीपल इन्हें महीन पीस २॥ टंक से एक टकेभर तक नित्य बढ़ती १ महीने भर ले तो सूजन, पीनस, कण्ठरोग, श्वास, खांसी, अरुचि, जीर्णज्वर; बवासीर, संग्रहणी, कफ-वायु के विकार इन सबको यह दूर करे १३ ॥

अथवा बड़ी पीपल, सोंठि को महीन पीस इन की बराबर गुड़ मिलाय खाय तो सूजन, आंव, अजीर्ण, शूल इनको दूर करे १४ अथवा गुड़ ३ टके, सोंठि ३ टके, पीपल ३टके, मण्डूर १ टके, तिल १ टकेभर इन सबको महीन पीस एक जीव करे पीछे २॥ टंक प्रतिदिन खाय तो सर्वप्रकार की सूजन जाय १५ अथवा सूखी मूली, सांठी की जड़, दारुहल्दी, रास्ना, सोंठि इनका काढ़ा कर उस रसमें तेल पकाले पीछे इस तेल का मर्दन करे तो शूलसंयुक्त सूजन जाय। ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं १६ ॥

अथ सूजन की दाह दूर करने का लेप ॥

बहेड़े की मींगी को पानी में पीस लेप करे तो सूजन की दाह दूर हो १७ अथवा सांठी की जड़, दारुहल्दी, गिलोय, पाढ़, सोंठि, गोखरू ये सब बराबर ले महीन पीस २॥ टंक गोमूत्र से पीवे तो सर्वप्रकारकी सब शरीर में फैली हुई सूजन दूर हो तथा आठ प्रकारके उदररोग और व्रणमात्र जायँ १८—इति पुनर्नवादिचूर्ण ॥

अथवा सांठी की जड़, हड़ की छाल, नींब की छाल, दारुहल्दी, कुटकी, परवर, गिलोय, सोंठि इनका काढ़ाकर गोमूत्र डाल पीवे तो सर्वाङ्गशोथ, खांसी, श्वास, उदररोग, पाण्डुरोग इन सबको दूर करे १९—इति पुनर्नवादिक्वाथ ॥ इति शोथनाम सूजनरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ अन्त्रवृद्धिरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

अन्त्रवृद्धि ६ प्रकार की है। वायु की १ पित्त की २ कफ की ३ रुधिर की ४ मेद की ५ मूत्र की ६ तथा अन्त्रवृद्धि एक प्रकार की और है ॥

अथ अन्त्रवृद्धि का सामान्य लक्षण ॥

अधोगामी पवन अपनेही कारणसे कुपित हो अण्डकोश में और जांघों की सन्धियों में प्राप्त हो उनमेंही विचरतीहुई सूजन और शूल को करे और पीछे उन दोनों अण्डकोशों और उनकी खालके भंडारेको बहनेवाली नसों में वह दुष्ट पवन प्राप्त हो उन नसों को पीड़ित करे और उन दोनों अण्डको[illegible] और उनके भंडारों को बढ़ावे उसे वैद्य अन्त्रवृद्धि कहते हैं ॥

अथ वायु की अन्त्रवृद्धि का लक्षण ॥

वायु से भरी हुई लुहारकी धोंकनी कासा स्पर्श हो, रूखी हो और विना कारणही उसमें पीड़ा हो उसको वायुकी अन्त्रवृद्धि कहिये १ ॥

अथ पित्त की अन्त्रवृद्धि का लक्षण ॥

जिसका रंग पक्के गूलर के फल के समान हो और जिसमें दाह और पाक हो उसे पित्तकी अन्त्रवृद्धि कहिये २ ॥

अथ कफ की अन्त्रवृद्धि का लक्षण ॥

जो अन्त्रवृद्धि शीतल, भारी, चिकनी हो और उसमें खुजली चले, कड़ी हो और उसमें पीड़ा थोड़ी हो तो कफ की अन्त्रवृद्धि जानिये ३ ॥

अथ रुधिर दोष की अन्त्रवृद्धि का लक्षण ॥

काली हो, फोड़े जिसमें बहुत हों और पित्तकी अन्त्रवृद्धि के लक्षण मिलें उसे रक्तदोष की अन्त्रवृद्धि कहिये ४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ मेद की अन्त्रवृद्धि का लक्षण ॥

जिसमें सब कफ के से लक्षण हों और कोमल ताड़के फल सदृश हो उसे मेद की अन्त्रवृद्धि कहिये ५ ॥

अथ मूत्ररोंकने की अन्त्रवृद्धि का लक्षण ॥

जो पुरुष मूत्र के वेग को रोंके और मार्ग चले उसके मशक के सदृश कोमल अण्डकोश बढ़ें और उनमें पीड़ा हो तथा मूत्र कष्ट से उतरे उसे मूत्ररोंकने की अन्त्रवृद्धि कहिये ६ ॥

अथ सामान्य अन्त्रवृद्धि की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

वायुकोपकारी वस्तुओं को भोजन करे, शीतल जल में स्नान करे, मल-मूत्र के वेग को रोंके, युद्ध में रहे, भार को उठावे, मार्ग चले, अङ्गों को तोड़े और कोई भयंकर वस्तुको करे इन कारणों से पवन संकुचित हो शरीर की छोटी आंतों के अवयवों को अपने स्थान से नीचे प्राप्त कर पेड़ू और जांघ की सन्धि में अफरा करे पीछे मनुष्य अण्डकोश को हाथ से खींचे तब वह अण्डकोश बोलिके अपने स्थानमें बैठ जाय और फिर किसी तरह अफरा हो तब बाहर निकल आवे। जिस पुरुष के वायु का संचय बहुत हो उसके आंतों का अवयव मिलकर अन्त्रवृद्धि को करता है वह अन्त्रवृद्धि वायु की वृद्धि के तुल्य है। यह रोग असाध्य है १ ॥

अथ अन्त्रवृद्धि का यत्न ॥

दूध में अरण्ड का तेल डाल १ महीने तक पीवे तो वायु की अन्त्रवृद्धि जाय १ अथवा गुग्गुल, अरण्ड का तेल ये दोनों गोमूत्र में मिलाय पीवे तो पित्तकी अन्त्रवृद्धि जाय २ अथवा रक्तचन्दन, महुआ, कमलगट्टा, खस, कमलकी जड़ ये सब बराबर ले दूध में महीन पीस अण्डकोश में लेप करे तो पित्तकी अन्त्रवृद्धि, दाह, पीड़ा इनको दूर करे ३ अथवा सोंठि, काली-मिरच, पीपल, त्रिफला इनका काढ़ा ले उसमें जवाखार, सेंधा-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

नोन डाल पीवे तो कफकी अन्त्रवृद्धि जाय ४ अथवा रूखी कडुवी तूंबी का सुहाता सुहाता लेप करे और अरण्ड के पानी का तरेड़ा दे तो सर्वप्रकार की अन्त्रवृद्धि जाय ५ अथवा बारम्बार जोंक लगाय उस जगह का रुधिर कढ़वाया करे तो रक्तकोप की अन्त्रवृद्धि जाय ६ अथवा जुलाबसे रक्तकी अन्त्रवृद्धि जाय ७ अथवा मिश्री, शहद पानी में मिलाय पीवे तो रक्तकोप की अन्त्रवृद्धि जाय ८ अथवा शीतलद्रव्य के लेप से रक्त और रक्तपित्तकी अन्त्रवृद्धि जाय ९ अथवा सिझाये तुलसीके पत्तोंका सुहाता सुहाता लेप करे तो मेद की अन्त्रवृद्धि जाय १० ॥

अथ गोशा उतरगया हो उसका यत्न ॥

भेंड़ का घृत कांसी की थाली में मथ उसमें राल मिलाय फिर मथे और उसमें थोड़ा शिंगीमुहरा मिलाय गोशेपर मर्दन करे तो गोशा अच्छा होजाय ११ ॥

अथ अन्त्रवृद्धि की औषध ॥

खैर का गूदा १५ टंक, खुरासानी बच १० टंक, सोंठि १५ टंक, गौका दूध ८ पैसेभर इनमें सालबमिश्री ८ पैसेभर मिलाय ४ टंक नित्य २१ दिनतक अण्डकोशों में लेप करे तो अन्त्रवृद्धि जाय १२ अथवा अण्डकोशोंकी सींवन को पसुलियों के नीचे महीन शस्त्रसे बेधे तो मूत्र की अन्त्रवृद्धि जाय। ये सर्व यत्न भावप्रकाश में हैं १३ अथवा रास्ना, मुलहठी, गिलोय, अरण्ड की जड़, किरमाला की गिरी, गोखरू, पटोल, अड़ूसा इनका काढ़ाकर अरण्डका तेल डाल पीवे तो अन्त्रवृद्धि जाय १४ अथवा हड़ की छाल, चिरायता, धनियां ये सब पैसेभर, लवङ्ग पौन पैसेभर, सोनामक्खी १ टंक इन सबकी बराबर मिश्री ले और मिश्री की बराबर शहद मिलाय प्रतिदिन २॥ टंक खाय तो अन्त्रवृद्धि जाय। यह वैद्यरहस्य में लिखा है १५—इति अन्त्रवृद्धिकी उत्पत्ति, लक्षण और यत्न सम्पूर्ण ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ ब्रध्नरोग (बद) की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

बहुत भारी और कफकारी वस्तु खाय अथवा भारी, पित्तकारी मांस खाने और मिथ्याविहार स्त्रीप्रसङ्गादि से कुपित हुई पित्तसंयुक्त वायु पेडू और जांघों की सन्धि में सूजन लिये गांठको उत्पन्न करती है वह गांठ ज्वर और शूल को करे तथा अङ्गों में पीड़ा करे उसको वैद्य ब्रध्न (बद) कहते हैं ॥

अथ बद का यत्न ॥

हड़ की छाल, बड़ी पीपल, सेंधानोन इन सबको बराबर ले महीन पीस अरण्डके तेल में भूने पीछे २। टंक इसमें से खाय तो बदरोग जाय १ अथवा सफ़ेद ज़ीरा, झाऊवृक्ष का बक्कल, कूट, गेहूं, बेरके पत्ते इन्हें कांजी में महीन पीस बदपर लेप करे तो बद का रोग जाय। यह भावप्रकाश में है २ अथवा तत्काल के मारे हुए कौआ के भीतर के मल को थोड़ा गर्मकर बदपर बांधे अथवा लेप करे तो तत्काल बद अच्छी हो। यह वैद्यरहस्य में है ३ अथवा कुंदुरू को भेंड़ के दूध में पीस लेप करे तो बद अच्छी हो ४–इति बदरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

अथ गलगण्ड १ गण्डमाला २ अपची ३ ग्रन्थि ४ अर्बुद ५ इन सब रोगों की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

जिसके गले में अण्डेकीसी कठोर सूजन हो लटके और बड़ी हो या छोटी हो उसे वैद्य गलगण्डरोग कहते हैं ॥

अथ गलगण्ड का सामान्य लक्षण ॥

वायु और कफ दोनों गले में दुष्ट होकर गले के बीच मेद को पकड़ शनैःशनैः अण्डकी तरह अपने चिह्न को लिये लिचपिचाय देते हैं उसे गलगण्ड कहिये। वह गलगण्ड ३ प्रकार का है। वात १ कफ २ मेद ३ ॥

अथ वायु के गलगण्ड का लक्षण ॥

जिसमें पीड़ा बहुत हो, गले की नसें काली हों या लाल हों,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

उसमें कठोरता हो और देर से बढ़े तथा पके नहीं, मुँह विरस होजाय एवं उसका तालू और गला सूखे ये लक्षण जिसमें हों उसे वायु का गलगण्ड कहिये १ ॥

अथ कफ के गलगण्ड का लक्षण ॥

गले में अण्डकोश की भांति लटकती हुई सूजन स्थिर रहे और भारी हो, खुजली बहुत हो तथा शीतल हो, देर से बढ़े और देरसे पके, पीड़ा कम हो और उसका मुख मीठा हो, तालू और गला कफसे लिपासा रहे उसे कफका गलगण्ड कहिये २॥

अथ मेद के गलगण्ड का लक्षण ॥

जो गलगण्ड चिकना, कोमल, पीला हो और उसमें खुजली और पीड़ा हो, गले में घियाकी भांति लटके, उसकी जड़ थोड़ी हो, रोगीकी देहके अनुसार घटे, बढ़े और उसका मुख चिकना हो, वह गले में ही बोले ये लक्षण हों तो उसको मेद का गलगण्ड कहिये ३ ॥

अथ गलगण्ड का असाध्य लक्षण ॥

जिसके श्वास कठिनता से आवे और सब शरीर कोमल हो, स्वर अच्छा न निकले और वह १ वर्ष नांधिजाय, भोजन से रुचि जातीरहे, शरीर क्षीण होजाय तो वह गलगण्डवाला मरजाय४॥

अथ गण्डमाला का लक्षण ॥

जिसके गले, कांख, कन्धों, पेड़ू और जांघों की सन्धियों में बेर अथवा आंवलेके प्रमाण मेद और कफ की बहुतसी गांठें पड़जायँ उसे वैद्य गण्डमालाका रोग कहते हैं ५ ॥

अथ अपची का लक्षण ॥

जो गण्डमाला बहुत दिनों की होजाय और उसमें ये लक्षण हों कि गांठ पकजाय और बहने लगजाय तथा बहुत बढ़ जाय तो उसे अपची कहिये ६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ अपर्चा का असाध्य लक्षण ॥

पसुली में शूल हो, खांसी, ज्वर और वमन हो ये लक्षण हों तो असाध्य जानिये ७॥

अथ ग्रन्थि (गांठ) का लक्षण ॥

वात, पित्त, कफ ये रुधिर, मांस, मेद और नसों को दूषित कर गोल और ऊंची सूजन को लिये गांठ को पैदा करते हैं उसे वैद्य ग्रन्थिरोग कहते हैं। ये गांठें ५ प्रकारकी हैं। वायु की १ पित्त की २ कफ की ३ मेद की ४ नसों की ५ ॥

अथ वायु की गांठ का लक्षण ॥

प्रथम वह गांठ त्वचा को खैंचकर बड़ी हो पीछे उसमें चटके चलें, व्यथा बहुत हो, जब फूटे तब निर्मल रुधिर निकले १॥

अथ पित्त की गांठ का लक्षण ॥

जिसमें आगसी बले और खिंचाव और जलन अधिक हो, जिसका लाल अथवा पीला रंग हो और जो फूटे तो उसमें से बहुत बुरा रुधिर निकले उसे पित्त की गांठ कहिये २॥

अथ कफ की गांठ का लक्षण ॥

जो गांठ शीतल हो और जिसका वर्ण आरसी सा हो, थोड़ी पीड़ा हो, खुजली जिसके बहुत हो, पत्थर के सदृश गांठ हो, देर में बढ़े और फूटनेपर भदरंगी राद और रुधिर निकले ये लक्षण हों तो कफ की गांठ कहिये ३ ॥

अथ मेद की गांठ का लक्षण ॥

जो गांठ शरीर के सदृश बढ़े, घटे और चिकनी हो, बड़ी हो, उसमें खुजली चले, पीड़ा बहुत हो और जब वह फूटे तब खल और घृतके सदृश मल निकले उसे मेद की गांठ कहिये ४॥

अथ नसों की गांठ का लक्षण ॥

जो गांठ निर्बल पुरुष के खेद से उपजे, नसों को संकोचित करे, वायु की गांठ को उपजावे, ऊंची और गोल हो, उसमें

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पीड़ा हो, कोमल हो अथवा कड़ी हो, पीड़ा भी नहीं हो और मर्मस्थान में हो तो निश्चय असाध्य है या कष्टसाध्य है ५॥

अथ मर्मस्थान कहते हैं॥

गला, गाल, कन्धे, शरीर की सन्धि, हृदय, गुदा का निकट स्थान और पीठ ये मर्मस्थान हैं॥

अथ अर्बुदरोग की उत्पत्ति॥

जो पुरुष मांस बहुत खाता हो और अन्नादिक थोड़ा खाय उसके वायु, पित्त, कफ दुष्ट होकर रुधिर और मांस को बिगाड़ शरीर में अथवा शरीर के एकदेश में बड़ी गोल स्थिर मांस की गांठ करते हैं। उसमें थोड़ी पीड़ा हो और उसकी जड़ थोड़ी देर से बढ़े, पके नहीं उसको वैद्य अर्बुदरोग कहते हैं। वह अर्बुद रोग २ प्रकार का है। रक्तार्बुद १ मांसार्बुद २॥

अथ रक्तार्बुद का लक्षण॥

अपने कारण से दुष्ट हुआ पित्त रुधिर और नसों को संकुचितकर उनमें पीड़ा करे और उनके मांस का पिण्डकर मांस के अंकुरों से उसको ढके और बढ़ावे पीछे उसे कुछेक पकाय रुधिर संयुक्त निरन्तर बहुत बहावे उसे रुधिर का अर्बुद कहिये। यह असाध्य है। रक्त का नाश होने से शरीर में और उपद्रव पाण्डुरोग आदि को करता है इसे रक्तार्बुद कहिये १॥

अथ मांसार्बुद का उत्पत्तिसंयुक्त लक्षण॥

जिस पुरुष के मूका घूंसा आदि किसी तरह की शरीर में चोट लगे उस जगह का मांस दुष्ट होकर वहां पीड़ा रहित सूजन करे और उस सूजन का देह के सदृश रंग हो, चिकनी हो, पके नहीं, पत्थर के सदृश कठोर और स्थिर हो उसे मांसार्बुद कहिये। यह भी असाध्य है २॥

अथ अध्यर्बुद का लक्षण॥

जो अर्बुद मर्मस्थान में उपजे अथवा नसों में उपजे और वह छोटा भी हो उसे अध्यर्बुद कहिये ३॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by MoE.

अथ अर्बुदरोग के न पकने का कारण ॥

यह कफ, मेदकी अधिकतासे नहीं पकता इससे असाध्यहै ४॥

अथ गलगण्ड आदि रोगों का अनुक्रम से यत्न ॥

सरसों, सहँजने के बीज, सनके बीज, अलसी, यव, मूली के बीज इन्हें बराबर ले खट्टे मंठे में महीन पीस लेप करे तो गलगण्ड, गण्डमाला, गांठ इन सब रोगों को तत्काल दूर करे १ अथवा सरसों, जलकुम्भी की राख इन दोनों को तेल में पीस लेप करे तो गलगण्ड जाय २ अथवा शंखाहूली को जल से पीस, छान प्रातःकाल १५ दिन पीवे और ऊपरसे बहुतसा गौ का घृत खाय तो गलगण्डरोग जाय ३ अथवा कुटकी को महीन पीस पके घिया के फल में रात्रि में भिगोय रखे पीछे उसी जल में उसे महीन पीस, छान ७ दिन पीवे तो गलगण्डरोग जाय ४ अथवा गिलोय, नींबकी छाल, बालछड़, तुन की छाल, पीपल, दोनों खरैटी, देवदारु ये सब बराबर ले इनके काढ़े के रस में तेल पकावे पीछे इस तेलको ५ टंक नित्य १५ दिन पीवे तो गलगण्ड जाय ५—इति अमृतादितैल ॥

अथवा यव, मूंग, परवर, कडुवी वस्तु, रूखा अन्न, वमन, रुधिर का कढ़ाना ये सब गलगण्डवाले को अच्छे हैं ६ अथवा जलकुम्भी, सेंधानोन, पीपल इन्हें महीन पीस प्रात समय सोंठि डाल पीवे तो गण्डमाला जाय ७ अथवा बरुणाकी जड़के काढ़े में शहद डाल पीवे तो गण्डमाला जाय ८ अथवा कचनार का बक्कल ५ टके, सोंठि १ टके, पीपल १ टके, मिरच १ टके, हड़ की छाल ५ टके, बहेड़े की छाल ५ टके, आंवला ५ टके भर, बरुणा की छाल २॥ टंक, तज १ टंक, पत्रज १ टंक, इलायची १ टंक इन्हें महीन पीस इनकी बराबर शोधा गुग्गुल मिलाय सबको एकरस कर ४ माशे प्रभातही जलसे नित्य ले तो गलगण्ड, अर्बुद, गांठ, गोला, कोढ़, भगन्दर इन रोगों को

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पृथक् पृथक् अनोपान से दूर करताहै ९–इति कचनारगुग्गुल ॥

अथवा बायबिड़ंग की जड़ का काढ़ाकर उसमें जलभांगरे का रस डाले पीछे अनुमान मुवाफ़िक़ तेल डाल मधुरी आंच से पकावे जब रस जल जाय और तेलमात्र रहजाय तब इसमें सिन्दूर डाल उतार ले पीछे इसका लेप करे तो कण्ठमाला जाय १०–इति चक्रमर्दतैल ॥

अथवा चिरमठी (सफ़ेद घुँघचिल) का पञ्चाङ्ग ले जल में महीन पीस अनुमान मुवाफ़िक़ उसमें तेल डाल मधुरी आंच में पकावे जब रस जलजाय तेलमात्र रहे तब इसका मर्दन करे तो कण्ठमाला जाय ११–इति गुञ्जातैल ॥

अथ अपची का यत्न ॥

सरसों, नींब के पत्ते, भिलावां इन्हें काली बकरी के मूत्र में महीन पीस लेप करे तो अपची जाय १२ अथवा रक्तचन्दन, हड़की छाल, लाख, खुरासानी बच, कुटकी इन्हें पानी में पीस इसमें तेल पकावे पीछेइसकामर्दन करे तो अपचीरोगजाय१३–इति चन्दनादितैल ॥

अथवा सोंठि, कालीमिरच, बड़ी पीपल, बायबिड़ंग, महुआ, सेंधानोन, देवदारु इन्हें पानी से महीन पीस इसमें तेल डाल मधुरी आंच से पकावे जब पानी जलजाय और तेलमात्र रहजाय तब इस तेलकी नास ले तो अपची जाय १४–इति शुण्ठ्यादितैल ॥

अथ गांठ का यत्न ॥

मूलीका खार, शंख का चूर्ण इन्हें पानी में पीस लेप करे तो गांठ और अर्बुद को दूर करता है १५ और जात्यादिघृत आगे व्रणरोग में कहा है उससे गांठ आदि व्रणमात्र सब जायँ ॥

अथ अर्बुदरोग का यत्न ॥

हल्दी, पठानी लोध, पतङ्ग, धमासा, मैनसिल इन्हें शहद

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

में महीन पीस लेप करे तो मेद का अर्बुदरोग जाय १ अथवा मूली का खार, हल्दी, शंख का चूर्ण इन्हें जल में महीन पीस लेप करे तो अर्बुद जाय २ अथवा कूट, खारीनोन, बड़ का दूध इन्हें महीन पीस लेप करे और ऊपर बड़के पत्ते ७ दिन बांधे तो अर्बुद जाय ३ अथवा सँहजनेकी जड़ और सँहजने के बीज, सरसों, तुलसी के पत्ते, यव, कनेर का बक्कल, इन्द्रयव ये सब बराबर ले मट्ठे से महीन पीस लेप करे तो अर्बुद जाय। ये सब भावप्रकाश में लिखे हैं ४ अथवा लाल अरण्ड की जड़, छीले की जड़ इन दोनों को चावल के पानी में पीस लेप करे तो गल-गण्ड जाय ५ अथवा किरमाला की जड़ चावल के पानी में पीस लेप करे तो कण्ठमाला जाय ६ अथवा सँभालू की जड़ जल से पीस लेप करे तो कण्ठमाला जाय ७ अथवा सरसों, शूकर की विष्ठा इन्हें बराबर ले पीछे कड़ुआ तेल मिलाय महीन पीस ठिकरे में धरे फिर लेप करे तो कण्ठमाला जाय। ये सब यत्न वैद्यरहस्य में लिखे हैं ८–इति गलगण्ड, गण्डमाला, अपची तथा अर्बुदरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न सम्पूर्ण ॥

इति चतुर्दशस्तरङ्गः १४ ॥

अथ श्लीपदरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

जिसके पेडू और जांघों की सन्धिमें बहुत सूजन हो उससे बैठने में पीड़ा बहुत हो और उस पीड़ा से ज्वर होवे वह सूजन वहां से बढ़ती हुई क्रमसे पैरतक आवे इसे वैद्य श्लीपद कहते हैं। कई एक आचार्य हाथ, कान, आंखें, ओष्ठ, नाक इनमें भी सूजन हो तो उसे श्लीपद कहते हैं। श्लीपद रोग ४ प्रकार का है। वायु १ पित्त २ कफ ३ सन्निपात ४ ॥

अथ वायु के श्लीपद का लक्षण ॥

काला और रूखा होकर फटिजाय और उसमें बहुत पीड़ा और ज्वर हो १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Arya Samaj Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ पित्त के श्लीपद का लक्षण ॥

जिसका पीला रंग हो और दाह, ज्वर को लिये हो और कोमल स्पर्श हो उसे पित्त का श्लीपद जानिये २॥

अथ कफ के श्लीपद का लक्षण ॥

चिकना, पीला और स्थिर हो, सफ़ेदाई लिये हो तो कफका श्लीपद जानिये। ये तीनों श्लीपद कफकी आधिक्यता से उत्पन्न होते हैं क्योंकि विना कफ भारीपन और बड़ापन नहीं होता है३॥

अथ सन्निपात के श्लीपद का लक्षण ॥

जिस श्लीपद में छिद्र बहुत हों, टपकने लगजाय और बांबी की तरह हो वह श्लीपद सान्निपात का जानिये। यह असाध्यहै४॥

अथ श्लीपद का यत्न ॥

इस रोगवाले को लङ्घन, लेप, स्वेद, जुलाब, रुधिर का कढ़ाना, गर्म वस्तुका खाना ये सब अच्छे हैं १ अथवा सरसों, सँहजने की जड़, देवदारु, सोंठि इन्हें गोमूत्र में पीस लेप करे तो श्लीपद जाय २ अथवा सांठी की जड़, सोंठि, सरसों इन्हें कांजी में पीस लेप करे तो श्लीपद जाय ३ अथवा धतूरे की जड़, अरण्डकी जड़, सँभालू की जड़, सांठी की जड़, सहँजने की जड़, सरसों इन्हें पानी में महीन पीस लेप करे तो श्लीपद जाय४ अथवा सहदेई को तालफलके रसमें पीस लेप करे तो श्लीपद जाय ५ अथवा शाखोटक (अखरोटवृक्ष) के बक्कल के काढ़ेमें गोमूत्र डाल पीवे तो श्लीपद जाय ६ अथवा हल्दी और गुड़ ये दोनों बराबर ले महीन पीस एकरस कर गोमूत्रसे पीवे तो श्लीपद, दाह, कोढ़ इनको दूर करे ७ अथवा सांठी की जड़, त्रिफला, पीपल ये सब बराबर ले महीन पीस २॥ टंक शहदसे ले तो बहुत दिनों का भी श्लीपद जाय ८ अथवा बड़ीहड़ के चूर्ण में अरण्ड का तेल मिलाय उसमें गोमूत्र डाल १५ दिन पीवे तो श्लीपद जाय। ये सब यत्न भावप्रकाशमें हैं ९ अथवा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri [illegible] by IKS

भदायरा पीपल, सोंठि, कालीमिरच, बायबिड़ंग इन्हें पानी में महीन पीस पीछे अनुमान का तेल मिलाय मधुरी आंच से पकावे जब पानी जलजाय और तेलमात्र रहजाय तब उतार ले। इसका मर्दन करे तो श्लीपदरोग जाय १० अथवा धतूरे के बीज को एकसे बढ़ता बीस तक खाय उसके ऊपर शीतल जल पीवे तो श्लीपद जाय। ये सब भावप्रकाश में लिखे हैं ११ अथवा मंजीठ, महुआ, रास्ना, जलसांठी की जड़ इन्हें कांजी में महीन पीस लेप करे तो पित्तका श्लीपद जाय १२ अथवा अँगूठे के ऊपर की नसों का रुधिर कढ़ावे तो पित्तका श्लीपद जाय १३ अथवा कसोंधी की जड़ २॥ टंक लेकर गौघृत के साथ पीवे तो श्लीपद जाय १४ अथवा पीपल, त्रिफला, देवदारु इन्हें महीन पीस २॥ टंक कांजी के पानी में नित्य ले तो श्लीपद, अजीर्ण, वायुके रोग, फिया इन सब रोगों को यह दूरकर भूखको बहुत बढ़ाता है। यह वृन्दमें है १५–इति पिप्पल्यादिचूर्ण। इति श्लीपदरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न॥

अथ विद्रधिरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न॥

हाड़ों में रहनेवाले वायु, पित्त, कफ शरीर की त्वचा, रुधिर, मांस, मेद इन्हें बिगाड़कर शनैः शनैः पुरुषके भयंकर सूजन पैदा करते हैं। वह सूजन गोल हो, पीड़ाको लिये हो, बहुत गहरी और बड़ी हो ये लक्षण जिसमें हों उसे वैद्य विद्रधिरोग कहते हैं। वह रोग ६ प्रकारका है वायु १ पित्त २ कफ ३ सन्निपात ४ चोटलगने ५ रक्तविद्रधि ६॥

अथ वायु की विद्रधि का लक्षण॥

जो सूजन काली अथवा लाल हो, क्षणभर में थोड़ी हो और उठतेही पकने लगजाय ये लक्षण हों तो वायुकी विद्रधि कहिये १॥

अथ पित्त की विद्रधि का लक्षण॥

जो सूजन पकेपर गूलरके फल सदृश हो, काली हो, ज्वर, दाह

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

को लिये हो और तुरन्त पकिजाय तो पित्तकी विद्रधि कहिये २॥

अथ कफ की विद्रधि का लक्षण॥

पाण्डुवर्ण हो, शीतल और चिकनी हो उसमें पीड़ा थोड़ी हो, बहुत दिनों में पके उसको कफ की विद्रधि जानिये ३॥

अथ सन्निपात की विद्रधि का लक्षण॥

जिस सूजन में अनेक वर्ण, नानाप्रकार के स्राव हों तथा सूजन गलाकी घांटी के निकट और विषम हो, कभी घटे, कभी बढ़े और उसका पकना भी विषमता से हो (कभी जल्दी, कभी देरसे पके) तो सन्निपात की विद्रधि जानिये ४॥

अथ चोट लगने की विद्रधि का लक्षण॥

जिस स्थान में चोट लगे वहां की वायु पित्तसंयुक्त हो रुधिर को बिगाड़कर उस स्थानमें सूजन को करती है उससे ज्वर, तृषा, दाह हो और उस विद्रधि में पित्तके भी लक्षण मिले हों तो उसे चोट लगने की विद्रधि कहिये ५॥

अथ रक्त की विद्रधि का लक्षण॥

सूजन काली हो, उसमें फोड़े बहुत हों और पीड़ा, दाह, ज्वर ये भी हों और पित्त की विद्रधिके सब लक्षण मिलें उसको रक्त की विद्रधि कहिये ६॥

अथ साध्यासाध्य जानने के लिये अन्तर्विद्रधि का लक्षण॥

पृथक् पृथक् अथवा मिले हुए वायु, पित्त, कफ ये कुपथ्य से कोप को प्राप्त हो शरीर में एक गांठ गोला के आकार बांबी की भांति ऊंची उत्पन्न करते हैं उसको वैद्य अन्तर्विद्रधि कहते हैं वह अन्तर्विद्रधि १० प्रकारकी है। गुदा में १ पेडू के मुखमें २ नाभि में ३ कुक्षि में ४ पेडू और जांघ की सन्धि में ५ हृदय और तृषा की ६ फिया में ७ हृदय में ८ नाभिकी दाहिनी ओर ९ तृषा के स्थान में १०॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ गुदादि विद्रधियों का लक्षण ॥

गुदा में विद्रधि हो तो पवन अच्छी तरह सरै नहीं वा पवन रुकजाय १ पेडूके मुखमें विद्रधि हो तो मूत्रकृच्छ्र का रोग होता है २ नाभिमें विद्रधि हो तो हिचकी बहुत आवें और पेट में अफरा रहे ३ कोख में विद्रधि हो तो उस जगह वायु का कोप हो ४ पेडू और जांघ की सन्धि में विद्रधि हो तो कटि में पीड़ा बहुत हो ५ हृदय और तृषा के स्थान के बीच विद्रधि हो तो पसुलियों का संकोच हो और उस जगह पीड़ा बहुत हो ६ फिया में विद्रधि हो तो श्वास नहीं आवे ७ हृदय में विद्रधि हो तो सब अङ्गों में पीड़ा हो सब अङ्ग रुकजायँ और खांसी हो ८ और नाभिकी दाहिनी ओर विद्रधि हो तो श्वास का रोग हो ९ और तृषाके स्थान में विद्रधि हो तो जल बहुत पीवे, धापे नहीं १० ॥

अथ विद्रधि का असाध्य लक्षण ॥

नाभि के ऊपर जो विद्रधि पकके फूटे उसकी राद ऊपर जाती और नाभिके नीचेकी जो विद्रधि पकके फूटे उसकी राद नीचे जाती है। जिसके विद्रधि की राद नीचे जाती है वह प्राणी जीता नहीं है और जिसके विद्रधि की राद फूटकर ऊपर जाय वह प्राणी अच्छा होजाता है १ ॥

अथ पुनः असाध्य लक्षण ॥

हृदय, नाभि, पेडू में विद्रधि का होना अच्छा नहीं है। और स्थान में हो सो अच्छी है। विद्रधि कच्ची वा पक्की या दग्ध होगई हो उसको सूजन की तरह देख लीजिये ॥

अथ भीतर की विद्रधि का असाध्य लक्षण ॥

अफरा, वमन, हिचकी, तृषा बहुत हो तथा पीड़ा अधिक हो ये लक्षण हों तो वह प्राणी मरजाय ॥

अथ विद्रधि का कष्टसाध्य लक्षण ॥

विद्रधि कच्ची हो, वायुकी हो, बड़ी हो अथवा छोटी हो वा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मर्मस्थान में हो तो कष्टसाध्य जानिये और जो विद्रधि सन्निपात की हो और हृदय, नाभि, पेडूमें हो तथा मूठी प्रमाण हो तो असाध्य जानिये। मूठी प्रमाण मांस और रुधिर का गोलाभी होता है परन्तु विद्रधि तो पकजाती और गोला नहीं पकता है यही इसमें भेद है॥

अथ विद्रधि का यत्न॥

सर्व विद्रधिमात्र में जोंक लगाय उसका रुधिर कढ़ावे तो विद्रधि अच्छी हो १ अथवा जुलाब से पित्त की विद्रधि जाय २ अथवा विद्रधि पकी न हो तो उसका सूजनकासा यत्न करे ३ अथवा अरण्ड की जड़ का काढ़ा कर उसमें तेल अथवा घृत पकाय उससे सुहाता सुहाता सेंक करे तो वायुकी विद्रधि जाय४ अथवा यव, गेहूँ, मूँग इनका चूर्ण घृत से पकाय लेप करे तो वायुकी विद्रधि विना पकी भी अच्छी हो ५ अथवा असगन्ध, खस, महुआ, रक्तचन्दन इनको दूध से महीन पीस इसमें घृत मिलाय गुनगुना कर लेप करे तो पित्तकी विद्रधि जाय ६ अथवा ईंट का रेत, लोहे का मैल, गोबर इन्हें महीन पीस गोमूत्र में सिझाय इसका सुहाता सुहाता सेंक करे अथवा लेप करे तो कफ की विद्रधि जाय ७ अथवा दशमूल के काढ़े में तेल अथवा घृत डाल उसका तरेड़ा दे तो विद्रधि के व्रणकी सूजन और उसका शूल जाय ८ अथवा रक्तचन्दन, मंजीठ, हल्दी, महुआ, गेरू इन्हें दूध में सिझाय लेप करे तो रुधिर की और चोट लगनेकी विद्रधि जाय तथा इसी पूर्वोक्त क्वाथ को पीवे तो कोष्ठ की विद्रधि जाय ९ अथवा कालाजीरा, इन्द्रायण, तोरई का फल, सफ़ेद पुनर्नवा की जड़, बरने की जड़ इनको जल में औटाय पीवे तो अन्तर्विद्रधि जाय १० अथवा सहँजने की जड़का रस शहद मिलाय पीवे तो अन्त्रकी विद्रधि जाय ११ अथवा सहँजने की जड़ के काढ़े में सेंकी हींग, सेंधानोन डाल प्रभातही पीवे तो

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अन्त्रकी विद्रधि जाय। ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं १२-
इति विद्रधिरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न॥

अथ व्रणशोथरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न॥

व्रणशोथ रोग ६ प्रकारका है। वायु का १ पित्तका २ कफ का ३ सन्निपात का ४ रुधिर के दुष्टपने का ५ किसीतरह चोट लगने का ६ इन कारणों से प्रथम व्रण होकर उसमें शोथ होताहै॥

अथ व्रणशोथ का लक्षण॥

वायु का शोथ-व्रण विषम पके, पित्त का व्रण तत्काल पके, कफ का व्रण देरसे पके, रुधिर और चोट लगने का भी तत्काल ही पकता है॥

अथ विना पके व्रणशोथ का लक्षण॥

जिस व्रणशोथ में गर्मी और सूजन थोड़ी हो, कड़ा हो, उसका त्वचा के सदृश वर्ण हो और उस में पीड़ा कम हो ये लक्षण हों तो जानिये कि व्रणशोथ कच्चा है॥

अथ पके व्रणशोथ का लक्षण॥

सूजन अग्नि की तरह जले और खार की तरह पके, चींटी और छुरी की तरह काटे, दण्ड की तरह मारे और हाथ से मीड़ने और सुई से बेधनेकी सी पीड़ा हो और उसमें दाह बहुत हो उसका रंग औरसा होजाय अंगुली के दबाने से पीड़ित हो, बैठने, सोने और खड़े रहने से बिच्छू के काटने कीसी पीड़ा हो और वह सूजन गाढ़ी हो और कितने ही उसके पकने के यत्न करे परन्तु फूटे नहीं और उस सूजनमें ज्वर, तृषा, अरुचि हो ये लक्षण जिसमें हों तो जानिये कि यह सूजन पकगई॥

अथ पके व्रणशोथ का लक्षण॥

जिस व्रणमें पीड़ा न हो, ललाई थोड़ी हो, बहुत ऊंचा न हो, उसकी सूजन में तह पड़जायँ और पीड़ा हो, खुजली बहुत चले, सर्व उपद्रवों के दूर होने परभी वह सूजन न जाय, त्वचा फटने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

लगे, उसमें अंगुली लगने से पीड़ा हो और राद निकले ये लक्षण हों तो जानिये कि व्रणशोथ पकगया है। उसमें भी वायु विना पीड़ा नहीं, पित्त विना पकना नहीं, कफ विना राद नहीं होती इस कारण पकने के समय ये तीनों ही होते हैं॥

अथ परिपाक अवस्था में मतांतर से और भी लक्षण॥

उसके यत्न करने में ढील करे तो पित्त बढ़कर कफको ग्रहण कर रुधिर को पकाय रादको करे। राद के न निकालने से यह दोष है। जैसे तृणों के समूह को पवन से प्रेरित अग्नि दग्ध करती है वैसेही वह राद उसके शरीर के मांस और नसों को खाजाती है॥

अथ व्रणके कच्चे, पक्के ज्ञान के अर्थ वैद्य के गुण-दोष कहते हैं॥

जो कच्चे और पके हुए व्रण को जाने वही वैद्य है और उस को न जाने वह चोर की वृत्ति करनेवाला वैद्यरूप चोर है १ और जो वैद्य फोड़ा या व्रणको कच्चा फाड़े और पके को न फाड़े और जिसे कच्चे, पक्के का ज्ञान न हो उसे चाण्डाल जानिये यह माधवी का पाठ है २–इति व्रणशोथ की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न॥

अथ व्रणरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न॥

व्रण ८ प्रकार का है। वायु, पित्त, कफ के दोषों का १ शस्त्रादिक के लगने का २ वायु, पित्त, कफ का ३ रुधिर का ४ वायु, पित्तका ५ वायु, कफका ६ कफ, पित्तका ७ सन्निपात का ८॥

अथ वायु के व्रण का लक्षण॥

व्रण स्थिर और कठिन हो, मन्द स्रवे, पीड़ा बहुत हो, अधिक फरके, काला हो ये लक्षण हों उसको वायु का व्रण कहिये १॥

अथ पित्त के व्रण का लक्षण॥

तृषा, मोह, ज्वर हो, गीलापन, दाह, पीड़ा हो, फटने से दुर्गन्ध लिये राद निकले ये लक्षण हों उसे पित्त का व्रण कहिये २॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ कफ के व्रण का लक्षण ॥

जिस में अधिक आलस्यपना हो, भारी और चिकना हो, जिसमें पीड़ा कम हो, पीला वर्ण, देर से पके ये लक्षण हों उसे कफ का व्रण कहिये ३ ॥

अथ रुधिर के व्रण का लक्षण ॥

व्रण लाल हो और उसमें रुधिर बहुत निकले ४ जिस व्रण में वायु, पित्त के लक्षण हों उसे वायु, पित्त का कहिये ५ जिसमें वायु, कफ के लक्षण हों उसे वात, कफ का जानिये ६ जिसमें कफ, पित्त के लक्षण हों उसे कफ, पित्त का कहिये ७ जिसमें सर्व लक्षण मिलें उसे सन्निपात का कहिये ८ ॥

अथ शुद्धव्रण का लक्षण ॥

जीभ के नीचे पेंदे के सदृश जिसकी कान्ति हो। अति कोमल, निर्मल और चिकना हो, पीड़ा न हो, जिसकी अच्छी व्यवस्था हो और उसमें राद आदि न निकले तब जानिये कि यह व्रण शुद्ध हुआ ९ ॥

अथ दुष्टव्रण का लक्षण ॥

जिसमें राद और रुधिरकी दुर्गन्ध निकला करे तथा सूजन और स्थिरपना रहे उसे दुष्टव्रण कहिये १० ॥

अथ अंकुरित शुद्धव्रण का लक्षण ॥

जिस व्रण का पीला अथवा धूसरा वर्ण हो और राद आदि और अंकुर निकलने लग जायँ उसको अंकुरित व्रण जानिये ११ ॥

अथ अच्छीतरह व्रण भरता हो उसका लक्षण ॥

जिस व्रण में अंकुर शुद्ध निकलें, गांठ न हो और सूजन हो उसे भले प्रकार भरा व्रण जानिये १२ ॥

अथ व्रण के सुख साध्यादिक लक्षण ॥

जो व्रण मर्मस्थान में न हो, त्वचा और मांस में हो तथा तरुण, बुद्धिमान् और पथ्य से चलता हो ऐसे पुरुषके शीतकाल

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

में हुआ व्रण सुखसाध्य है १३ वायु, पित्त, कफ का तो व्रण हो और मेद, मज्जा और मस्तक की गूदी के सदृश स्रवे तो वह अच्छा हो १४ और शस्त्रादिक की चोट से उत्पन्न व्रण में जो वसा, मेदा, मज्जा और मस्तक की गूदी के सदृश मैल निकले तो वह व्रण अच्छा हो १५ कोढ़ी, विष खानेवाले और मधुप्रमेहवाले पुरुषों के व्रण हो सो कष्टसे अच्छा हो १६ ॥

अथ पुनः व्रण का असाध्य लक्षण ॥

जिस व्रणमें दाह बहुत हो तथा बाहरसे शीतल हो और उस पुरुषका मांस, रुधिर सूख गया हो और श्वास, खांसी, अरुचि हो, बूढ़ा हो और उस व्रणमें राद, रुधिरही निकला करे, मर्मस्थान में हो तो ऐसा व्रण अच्छा नहीं होताहै। वैद्य अपना यश चाहे तो यत्न न करे १७ ॥

अथ आगन्तुक व्रण की उत्पत्ति और लक्षण ॥

तलवार, शेल, तीर, छुरी, गोली, बाण, फरसा आदि शस्त्र के किसी अङ्गमें लगने से नानाप्रकार की आकृतिके व्रण (घाव) होते हैं उन्हीं को आगन्तुक व्रण कहते हैं। वे छःप्रकारकी आकृति के हैं। छिन्न १ भिन्न २ विद्ध ३ क्षत ४ पिच्चित ५ घृष्ट ६ ॥

अथ छिन्नव्रण का लक्षण ॥

जो पुरुष तलवार आदि शस्त्र से टेढ़ा कटा हो अथवा सीधा कटा हो और घाव बड़ा हो तथा मनुष्य के शरीर को पृथ्वीपर डाल दे उसको वैद्य छिन्नव्रण कहते हैं १ ॥

अथ भिन्नव्रण का लक्षण ॥

बरछी, शेल, तीर, छुरी, तलवार आदि के लगने से जिसका कोठा किसी तरह कटजाय उस कटे कोठे से रुधिर चले और रुधिर से उदर भरजाय तब ज्वर, दाह को करता है। पीछे वह रुधिर इन्द्रिय, गुदा, मुख, नासिका के द्वारा निकले और मूर्च्छा, श्वास, तृषा, अफरा, अरुचि आदि पैदा करे और मल, मूत्र

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

रुकजायँ, पसीना आवे, नेत्र लाल होजायँ, मुखमें रुधिर की बास, शरीरमें दुर्गन्ध आवे, हृदय, पसुली में शूल हो जिसमें ये लक्षण हों उसको भिन्नव्रण कहिये २॥

अथ विद्धव्रण का लक्षण॥

जिस पुरुष के भीतर शस्त्र की नोक लगे और उसका अङ्ग कट जाय उसे वैद्य बिद्धव्रण कहते हैं ३॥

अथ जिस घाव में तीरआदि रहगये हों उसका लक्षण॥

जो घाव काला और सूजन संयुक्त हो, फुंसियों को लिये हो, घाव का मांस बुद्बुदे के समान ऊंचा हो और उसमें पीड़ा हो तो उस घाव को शस्त्रसमेत जानिये ४॥

अथ कोष्ठ में तीर रहगया हो उसका लक्षण॥

शरीर की सातों त्वचा और शरीर की नसों को नांधिकर पीछे उन नसों को विदीर्ण करे और कोष्ठके बिषे रहा शस्त्र अफरा को करे और व्रणके मुखमें अन्न और मल-मूत्र को लेआवे तब जानिये इसके कोष्ठ में शल्य है ५॥

अथ असाध्यकोष्ठ में रहे रुधिर और मल का लक्षण॥

कोष्ठमें रहनेवाला रुधिर पीला होकर शरीर को पीला करे तथा हाथ, पांव, मुँह शीतल हों, उसकी नाक की श्वास शीतल चले, नेत्र लाल हों ये लक्षण हों तो उसे असाध्यकोष्ठ का रक्त, मल जानिये यह असाध्य है ६॥

अथ क्षतव्रण का लक्षण॥

जिसमें अतिछिन्न, अतिभिन्न के लक्षण नहीं मिलें दोनों के लक्षण मिले हों वह व्रण विषम हैं ७॥

अथ पिच्चितव्रण का लक्षण॥

जो अङ्ग मुद्गर, किवाड़ आदि किसी भारी वस्तुसे पिचल जाय और हाड़ों में व्रण होजाय उसको पिच्चितव्रण कहिये ८॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ घृष्टव्रण का लक्षण ॥

जिसके ईंट, पत्थर, भीतआदि किसी तरह की रगड़ से शरीर का चाम घिसजाय, शरीरसे दूर होजाय, उसमें चप निकला करे और दाह होय उसको घृष्टव्रण कहिये ६ ॥

अथ जिसके मांस, नस, मर्मस्थान में चोट लगीहो उसका सामान्य लक्षण ॥

जिसके भ्रम हो, प्रलाप हो, गिर पड़े, मोह हो, चैतन्यता जाती रहे, ग्लानि और दाह हो, अङ्ग शिथिल होजाय, पीड़ा बहुत हो, मांस के जल सदृश जिसका रुधिर हो और सर्व इन्द्रियों का धर्म जाता रहे तथा पीछे कहे ५ मर्मस्थानों में चोट लगे उसकाभी यह लक्षण कहिये १ ॥

अथ मर्मस्थान, नस, सन्धि, हाड़ ये व्रण से बिंधगये हों उनके पृथक् २ लक्षण ॥

इन्द्रका धनुष और सावनकी बीरबहूटी के सदृश जिसमें रुधिर निकले उसे क्षतव्रण कहिये। वह व्रण वायुके अनेक रोगों को करता है। तीर, तलवार आदि शस्त्र से नस बिंध जाय उसमे उपजे हुए व्रण से शरीर कुबड़ा होजाय, अङ्ग अङ्ग में पीड़ा हो, चला न जाय और बहुत काल पीछे उसमें अंकुर आवें तब जानिये कि नस बिंधजाने का व्रण है। जिस व्रणमें सूजन बहुत हो, बल जाता रहे और सन्धि सन्धि में घाव लगे हों, तो सन्धि का हिलना जाता रहे और उसमें पीड़ा हो, रात दिन चैन नहीं पड़े उसके हाड़ में शस्त्रादिक से उत्पन्न व्रण जानिये और जिसके मर्मस्थान में चोटलगने से व्रण हो उसके शरीरका व्रण पीला हो और वह व्रण स्पर्श नहीं सहे ॥

अथ व्रण के १६ उपद्रव कहते हैं ॥

विसर्प रोग १ पक्षाघात २ शिर घूमे नहीं ३ अपतान ४ प्रमेह ५ उन्माद ६ व्रणमें पीड़ा ७ ज्वर ८ तृषा ९ कन्धा नवे नहीं १० खांसी ११ वमन १२ अतीसार १३ हिचकी १४ श्वास १५ कांपनी १६ ये व्रण के उपद्रव हैं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ अग्निदग्ध की उत्पत्ति और लक्षण ॥

अग्निदग्ध दो प्रकारका है। तैलादिकसे दग्ध हुआ १ लोह, अग्नि आदि से दग्ध हुआ २ वह अग्निदग्ध ४ प्रकार का है। प्लुष्ट १ दुर्दग्ध २ सम्यक्दग्ध ३ अतिदग्ध ४ ॥

अथ प्लुष्टदग्ध का लक्षण ॥

अग्नि से दग्ध हो जिसका वर्ण पलट जाय वह प्लुष्ट है १ ॥

अथ दुर्दग्ध का लक्षण ॥

जिसमें दाह, पीड़ा और फोड़े होजायँ और बहुत दिनों में मिटें उसको दुर्दग्ध कहिये २ ॥

अथ सम्यक्दग्ध का लक्षण ॥

जिसके अङ्ग का तांबेकासा वर्ण हो और वह वृद्ध हो तथा दाह, पीड़ा हो और फैले नहीं उसको सम्यक्दग्ध कहिये ३ ॥

अथ अतिदग्ध का लक्षण ॥

जिसकी त्वचा, मांस सब दग्ध होजायँ और इससे शरीर पृथक् होजाय तथा नसें, स्नायु, हाड़, सन्धि ये सब दग्ध होजायँ और उनमें पीड़ा हो, दाह, ज्वर, तृषा, मूर्च्छा हो और जिसमें अंकुर देरसे आवे, वर्ण औरसा होजाय तो अतिदग्ध कहिये ४ ॥

अथ इन दोषों से उत्पन्न व्रण का यत्न ॥

इसके मुख्य यत्न ११ प्रकारके हैं वे क्रमसे कहते हैं परन्तु सुश्रुत, चरक में व्रणके यत्न ६० प्रकारके हैं। लेप १ ओषधियों के गुनगुने जलसे तरेड़ा २ बांस की लकड़ी से अंगूठा मसल उसके पसीना लिवावे ३ किसी तरह रुधिर कढ़ाना ४ ओषधियों की पट्टी बांध उसके पसीना लिवावे ५ उसे पकाना ६ शस्त्रादिक से चीर देना ७ व्रण को अंगूठे से दाब उसकी राद काढ़ना ८ व्रण का शोधना ९ उसके अंकुर लाना १० उसको त्वचा के वर्ण सदृश करदेना ११ ॥

अथ वायु की सूजन दूरकरने का लेप ॥

बिजौरेकी जड़, बालछड़, देवदारु, सोंठि, रास्ना, अरलू

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

ये सब बराबर ले इन्हें जल से महीन पीस गुनगुना लेप करे तो वह सूजन दूर हो १ ॥

अथ पित्त की सूजन का लेप ॥

महुआ, रक्तचन्दन, दूब, आंवला, कमल की जड़, खस, नेत्रबाला, पद्माक ये सब बराबर ले जल से महीन पीस शीतल ही लेप करे तो पित्तकी सूजन जाय २ अथवा बड़, गूलर, पीपल, पाकर, बेतकी जड़ इनका बक्कल ले इन्हें जल से महीन पीस इसमें ओषधियों से दशवां हिस्सा घृत मिलाय लेप करे तो पित्तकी सूजन जाय ३ ॥

अथ कफ की सूजन का लेप ॥

अजमोद, बावची, मेढ़ासिंगी, मंजीठ, राल, असगन्ध, शतावरि इन्हें जल से पीस गुनगुना लेप करे तो कफ की सूजन जाय ४ अथवा पीपल, पुरानी खस, सहँजने का बक्कल, रेत, हड़ की छाल इन्हें गोमूत्र से महीन पीस गुनगुना लेप करे तो कफकी सूजन जाय ५ और रातमें लेप करिये नहीं ॥

अथ ओषधियों के गुनगुने जल से तरेड़ा देने का अनुक्रम ॥

हड़ के बक्कलको औटाय इसका सुहाता उस सूजन के दाह पर तरेड़ा दे तो दाह तत्काल दूर हो ६ अथवा वायुके दूर करनेवाली औषधों के काढ़ेसे उसपर तरेड़ा दे अथवा तेलका तरेड़ा दे अथवा मांसके रसका तरेड़ा दे अथवा गर्म गर्म घृत का अथवा गर्म गर्म कांजीका तरेड़ा दे तो वायु की सूजन दूर हो ७ ॥

अथ पित्त की सूजन दूरकरने का तरेड़ा ॥

शीतल ओषधियों के काढ़े का तरेड़ा दे तथा दूध, घृत, खांड़, सांठे के रसके तरेड़े से पित्त की सूजन जाय ८ ॥

अथ कफ की सूजन का तरेड़ा ॥

कफ को दूर करनेवाली ओषधियों का गर्म गर्म तरेड़ा दे तो कफ की सूजन जाय ९ रक्तपित्त और सूजन का यत्न एकही है

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

और व्रण की सूजन को अँगूठे आदि से मसलकर पसीना लिवावे जो व्रण कड़ा हो उसे अँगूठा अथवा बांसकी साफ़ लकड़ी से शनैः शनैः मसलवावे तो वह ढीला पड़ अच्छा होजाय और उसका वर्ण औरसा होजाय, काला हो, पीड़ा बहुत हो ऐसी व्रण की सूजन में अथवा किसी बिषैले जानवर के काटने की सूजनमें जोंक लगाय उसका रुधिर कढ़ाय डाले अथवा पछना दिवाय रुधिर कढ़ाय दे यह एकही यत्न सब यत्नों की बराबर है॥

अथ कच्चेव्रण के पकाने की औषध॥

दशमूल, खरैटी, रास्ना, असगन्ध, खीप, अरण्ड की जड़ अथवा फल, निर्गुण्डी, सांठी, सहँजना, पीपल, सेंधानोन, सोंठि, सनके बीज. कपासके बीज, अलसी, कुलत्थ, तिल, यव, सरसों, मूली के बीज, सौंफ, नींब के पत्ते, नागरबेल के पत्ते, गुलाब के पत्ते आदि गर्मकर महीन पीस बांधे अथवा इनके काढ़े का तरेड़ा दे तो वायु के व्रण की सूजन जाय १॥

अथ व्रणशोथ के दूरकरने का लेप॥

सांठी की जड़, देवदारु, हल्दी, सोंठि, सहँजने का बक्कल, सरसों इन्हें खटाई से महीन पीस गुनगुना कर लेप करे तो सर्व प्रकार के व्रणशोथ दूर हों २॥

अथ व्रण के पकाने की विधि॥

व्रण लेपादि करके न पके तो सन की जड़, सहँजने का फल, तिल, सरसों, अलसी, यव, गेहूं, नींब के पत्ते इन्हें सिझाय व्रण में बांधे तो व्रण पकजाय ३॥

अथ पकेव्रणमें चीरा देने की विधि॥

जिस व्रणमें राद पड़गई हो उसको चतुर वैद्य द्वारा शस्त्रोंसे तीन चीरा दिवाय उसकी राद कढ़वाय दे पीछे मरहम आदि लगावे तो व्रण अच्छा हो ४॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ इतने मनुष्यों के चीरा नहीं लगावे ॥

बालकके, वृद्धके, जिससे चीरा न सहाजाय, क्षीणपुरुष के, भयवाले के, स्त्री के मर्मस्थान में इनके चीरा न दिया जाय किन्तु औषधियों से भेदनकर उसकी राद कढ़ाय अच्छा करे। भेदन औषध ये हैं। कणगच की जड़, चित्रक, दात्यूणी, भिलावां, कनेर, कबूतर की बीट, गीधकी बीट इनमें से किसीका लेप करे तो व्रण आपही फूट. राद निकल अच्छा हो ५ अथवा खारी नोन, जबाखार, सज्जी, आंधीझाड़े का खार इनमें से किसीका लेप करे तो व्रणकी राद निकल जाय ६ अथवा व्रण कड़ा हो तो हाथीदांत को जल में घिस उसकी बूंद व्रणपर धरे तो सूजन दूर होकर उसकी राद निकल जाय ७ ॥

अथ पीड़न कहते हैं ॥

जिसमें राद पड़गई हो और मर्मस्थानमें हो ऐसे व्रण में चीरा न देना किन्तु इन औषधों का लेपकर उसकी राद निकलवाने से वह व्रण अच्छा होजाता है। औषधें ये हैं। यव, गेहूं, उड़द इन्हें महीन पीस पानी से गुनगुना कर लेप करे और व्रणके मुख में से राद काढ़ डाले पीछे उसके मरहम आदि लगावे तो वह व्रण अच्छा हो ८ ॥

अथ व्रण का शोधन ॥

जो व्रण कच्चा हो तो पटोलके पत्ते अथवा नींब के पत्ते इन्हें सिझाय इनके पानी से व्रणको धोवे तो व्रण अच्छा हो ९ अथवा दशमूल के काढ़े से व्रण धोवे तो वायुका व्रण अच्छा हो १० अथवा गूलर के बकले के काढ़े से व्रण धोवे तो व्रण अच्छा हो ११ और किरमाला के बक्कलके काढ़े से धोवे तो कफ का व्रण अच्छा हो १२ और पीपल, गूलर, बड़, बेल इनके बक्कल के काढ़े से व्रणकी सूजन और उपदंश को धोवे तो व्रण अच्छा हो १३ अथवा तिल, सेंधानोन, मुलहठी, नींब के पत्ते, दोनों

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

हल्दी, निशोत, नागरमोथा इन्हें बराबर ले जल से पीस इनका लेप करे तो व्रण पकके उसकी राद निकल जाय १४ अथवा नींबके पत्ते, तिल, दात्यूणी, निशोत, सेंधानोन इनमें शहद मिलाय महीन पीस लेप करे तो दुष्टव्रण अच्छा हो १५ अथवा नींब के पत्तों को सिझाय बांधे तो दुष्ट व्रण अच्छा हो १६ अथवा हड़, निशोत, सेंधानोन, दात्यूणी, कलिहारी की जड़ इन्हें शहदमें पीस इनकी बत्ती व्रणमें दे तो दुष्ट व्रण अच्छा हो १७ अथवा व्रण का मुख सूक्ष्म हो तो नींब के पत्तों के रसआदि औषधों की बत्ती दे तो व्रण अच्छा हो १८ अथवा नींबके पत्ते, घृत, शहद, दारुहल्दी, महुआ इनकी बत्ती कर व्रणमें दे तो व्रण अच्छा हो १९ अथवा तिलों को औटाय उसकी बत्ती दे तो व्रण अच्छा हो २०॥

अथ व्रण के रोपणनाम अंकुर लाने का यत्न॥

जिन व्रणों की राद निकलगई हो और व्रण भरें नहीं उनको नींब के पत्ते औटाय उस पानी से धोवे फिर शहद मिलाय तेल का फाहा उसपर धरे तो व्रण भरजाय २१ अथवा असगन्ध, कायफल, मुलहठी, मंजीठ, धवई के फूल इन्हें महीन पीस व्रण में बांधे तो व्रण भर अच्छा हो २२॥

अथ व्रण के दाह, शूल के दूरकरने का लेप॥

यव का आटा, शहद, तेल, घृत ये सब मिलाय थोड़ा गर्म कर लेप करे तो व्रणका दाह, शूल जाय २३॥

अथ व्रण के कृमि दूर होने का लेप॥

कणगच की जड़, नींब की छाल, निर्गुण्डी इन्हें महीन पीस लेप करे तो व्रणके कृमि जायँ अथवा लहसुन का लेप करे तो व्रण के कृमि जायँ अथवा हींग, नींबकी छालका लेप करे तो व्रणके कृमि मरें २४॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ व्रण में छूतपड़कर खाज, पीड़ा हो, कृमि पड़गये हों उसकी धूनी ॥

नींबके पत्ते, बच, हींग, घृत, नोन, सरसों इन्हें एक साथ घृत में महीन पीस इनकी धूनी दे तो व्रणकी छूत, खाज, कृमि जायँ ये सब यत्न भावप्रकाश में हैं २५ ॥

अथ व्रण के भरने को मरहम ॥

कडुआतेल २॥ पैसेभर, पानी २॥ पैसेभर इन दोनों को कांसी की थालीमें १ दिन तक हाथ से मथे पीछे इसमें राल ५ पैसे भर, नीलाथोथा २॥ टंक, बिरोजा १। टंक, मिरच १।टंक ये सब महीन पीस इसमें मिलावे फिर इन्हें महीन पीस हाथ से मथकर व्रणमें लगावे तो व्रण तत्काल भर आवे २६ ॥

अथ तलवारआदि शस्त्र लगनेसे उत्पन्न व्रण का यत्न ॥

जिन मनुष्योंके तलवार आदि नानाप्रकार के शस्त्रों की धार के लगने से त्वचा फटिजाय अथवा त्वचा की नानाप्रकार की आकृति होजाय तो उसे अच्छे चतुर सथिये के पास निर्वात स्थान में पाट के सूतसे सिलाय पीछे उन टांकोंके व्रणके स्थान में गेहूं की मैदा में पानी घृत मिलाय पकाय ले जब पानी जल जाय घृतमात्र रहजाय तब उसकी लोई बनाय सुहाता सुहाता सेंक करे तो वह व्रण तत्काल अच्छा हो १ अथवा कुटकी, मोम, हल्दी, मुलहठी, कणगच की जड़, पत्ते और फल, पटोल, चमेली और नींब के पत्ते इन्हें घृत में डाल पकावे जब पानी जल जाय घृतमात्र आय रहे तब इस घृत का सुहाता सुहाता सेंक करे तो यह व्रण तत्काल अच्छा हो। ये यत्न वैद्यरहस्य में लिखे हैं २ अथवा शस्त्रादिकों से जिसका रुधिर बहुत निकलगया हो उसके वायु की पीड़ा हो आवे उसके दूर करने के वास्ते घृत पान कराइये और जिसका खड्गादिक करके गात्र छिन्न होजाय उसके गंगेरन की जड़ का रस उसमें भरदे तो वे व्रण तत्काल भरजायँ और अच्छे हों। इस व्रणवाले को शीतल यत्न सब अच्छे हैं ३

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

और शस्त्र लगने से जिसका रुधिर आमाशय में जाय तो उस पुरुष को वमन करावे तो अच्छा हो और पेड़ूमें रुधिर जाय तो वह जुलाब से अच्छा हो, बांस की छाल, अरण्ड का बक्कल, गोखुरू, पाषाणभेद इनका काढ़ाकर उसमें सेकी हींग, सेंधानोन डाल पीवे तो कोठे का रुधिर निकल बहे और अच्छा हो ४ अथवा यव, कुलत्थ, सेंधानोन, रूखा अन्न इनका खाना अच्छा है ५ अथवा चमेली के पत्ते, नींबके पत्ते, पटोल, कुटकी, दारुहल्दी, गौरीसर, मंजीठ, हड़ की छाल, मोम, नीलाथोथा, शहद, करणगच के बीज ये सब बराबर ले इनकी बराबर गौ का घृत ले और इनसे अठगुना पानी ले इन्हें मधुरी आंच से पकावे जब पानी जलजाय घृतमात्र रहजाय तब इस घृत की बत्ती कर व्रण में लगावे तो गम्भीर आदि सब व्रण अच्छे हों ६–इति जात्यादिघृत ॥

अथवा चमेली, नींब, पटोल, किरमाला इनके पत्ते, मोम, महुआ, कूट, दारुहल्दी, देशी हल्दी, कुटकी, मंजीठ, पद्माक, हड़ की छाल, पठानी लोध, तज, कमलगट्टा, गौरीसर, नीलाथोथा, किरमाला की गिरी ये सब बराबर ले इनका काढ़ा कर इनके रस में मधुरी आंच से तिल का तेल पकावे जब काढ़े का रस जलजाय तेलमात्र रहजाय तब उस तेल को उतार अच्छे बासन में धररक्खे पीछे इस तेल की बत्ती कर किसी तरह से व्रणमें लगावे तो व्रण तत्काल भर अच्छा हो ७–इति जात्यादितैल ॥

अथवा चित्रक, लहसुन, हींग, सरफोंका जो गौड़देश में प्रसिद्ध है और कलिहारीजड़ी की जड़, सिन्दूर, अतीस, कूट, कड़ुआ तेल इन ओषधियों के मुवाफ़िक़ पानी डाल मधुरी आंच से पकावे जब पानी जलजाय तेलमात्र रहजाय तब इस तेल को बासन में भररक्खे पीछे इसको कपड़े की बत्ती आदि से किसी तरह व्रण में लगावे तो व्रणमात्र, दुष्टव्रण, नाड़ीव्रण इनको

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

यह तैल तत्काल दूर करता है ८–इति विपरीतमल्लतैल ॥

अथवा गिलोय, पटोल की जड़, त्रिफला, बायबिड़ंग इन्हें बराबर ले महीन पीस इनकी बराबर गुग्गुल मिलाय एकजीव कर २॥ टंक पानी से नित्य खाय तो व्रणमात्र, वातरक्त, गोला, उदररोग, सूजन इनको यह दूर करता है। ये सब यत्न भावप्रकाश में हैं ९–इति अमृतादि गुग्गुल ॥

अथ ६ प्रकार के अग्निदग्ध का अनुक्रम से यत्न ॥

जो अग्नि से किसी तरह जलगया हो उसको अग्नि से तपावे तो वह पुरुष तत्काल अच्छा हो १ अथवा उस पुरुष के जले स्थान पर अगर आदि गर्म ओषधियों का लेप करे तो वह अच्छा हो यह पुष्ट का यत्न है २ ॥

अथ दुर्दग्ध का यत्न ॥

ओषधियों के घृत को अथवा इसी घृत को गर्म करे पीछे उसे ठण्ढा कर लेप करे तो दुर्दग्ध अच्छा हो ३ ॥

अथ सम्यक्दग्ध का यत्न ॥

तवाखीर, बड़ की जड़, रक्तचन्दन, रसौत, गेरू, गिलोय इन्हें घृत से महीन पीस लेप करे तो सम्यक्दग्ध अच्छा हो ४ ॥

अथ अतिदग्ध का यत्न ॥

बुरे मांस को दूर कर पीछे साठी चावल, तेंदू इन्हें घृत में महीन पीस लेप करे ऊपर गिलोय का पत्ता बांधे तो अतिदग्ध अच्छा हो ५ अथवा मोम, महुआ, पठानीलोध, राल, मंजीठ, रक्तचन्दन, मूर्वा ये सब बराबर ले महीन पीस गौ के घृत में पकावे पीछे इस घृत का लेप करे तो अतिदग्ध अच्छा हो और सर्वशरीर में मांस और हो आवे ६–इति सिक्थादिघृत ॥

अथवा पटोल के पञ्चाङ्ग का काढ़ा कर उसमें कड़ुआ तेल पकावे जब काढ़े का रस जलजाय तेलमात्र रहजाय तब उतार उस तेल को लगावे तो अग्नि के जरे का दाह और स्राव और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

फोड़े सब अच्छे हों। ये सर्व यत्न भावप्रकाश में हैं ७ अथवा पुराना गीला खानेका चूना दहीके पानी में पीस जरे ऊपर लगावे तो वह अच्छा हो और तेल का जला हो तो उसके फफोले भी दूर हों ८ अथवा यव को जलाय तिलों के तेल में पीस जले ऊपर लेप करे तो अच्छा हो ९ अथवा भुने जीरे को महीन पीस उसीकी बराबर मोम, राल, घृत मिलाय लेप करे तो अग्नि का जला तत्काल अच्छा हो १० ॥

अथ तेलआदि से जले का यत्न ॥

अथवा तिल का तेल ½ भर और खाने का चूना गीला पुराना ४ पैसेभर दोनों को हाथ से एकपहर मसल राबसा कर रुई के पहलसे जलेपर लगावे तो जलाहुआ तत्काल अच्छा हो ११॥

अथ व्रणग्रन्थिरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

विना खेद ही शरीर से निकले हुए दुष्ट रुधिर को पवन शोष कर गांठ उत्पन्न करे उस गांठ में दाह, खुजाल बहुत हो उसको व्रणग्रन्थि कहिये १२ ॥

अथ व्रणग्रन्थि का यत्न ॥

कबीला, बायबिड़ंग, तज, दारुहल्दी इन्हें जलसे महीन पीस और उसमें तिलका तेल डाल मधुरी आंच से पकावे जब पानी जलजाय तेलमात्र रहजाय तब इस तेल का लेप करे तो व्रणग्रन्थि जाय १३—इति व्रणग्रन्थि, व्रणरोग, अग्निदग्ध की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

अथ भग्नरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

हाड़ के टूटने को भग्न कहते हैं वह दोप्रकार का है। काण्ड का १ सन्धिका २। काण्डका तो नल, कपाल, पहुँचाआदि ले और सन्धिका ६ प्रकार का है। उत्पिष्ट १ विश्लिष्ट २ विवर्त्तित ३ तिर्यक्गति ४ क्षिप्त ५ अधः ६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ शरीर के किसीस्थान की सन्धि टूट जाने का सामान्य लक्षण ॥

उठते, पसारते, इकट्ठाकरते सन्धि में पीड़ा बहुत हो और उस जगह स्पर्श नहीं सुहावे तो जानिये कि सन्धि टूटी है ॥

अथ उत्पिष्टसन्धि टूटने का लक्षण ॥

हाड़ों की सन्धि टूटी हो उस जगह चारों ओर सूजन बहुत हो और पीड़ा हो तो जानिये कि उत्पिष्टसन्धि टूटी है १ ॥

अथ विश्लिष्टसन्धि टूटने का लक्षण ॥

उस जगह सूजन हो और रात्रि में पीड़ा, सूजन अधिक हो उसकी विश्लिष्टसन्धि टूटी जानिये २ ॥

अथ विवर्त्तितसन्धि टूटी का लक्षण ॥

पसुलियोंमें पीड़ा बहुत हो और उस स्थान में सूजन, पीड़ा रहा करे तो विवर्त्तितसन्धि टूटी जानिये ३ ॥

अथ तिर्यक्गति सन्धि टूटी का लक्षण ॥

उस जगह सूजन हो, पीड़ा बहुत हो तो तिर्यक्गति सन्धि टूटी जानिये ४ ॥

अथ क्षिप्तसन्धि टूटी का लक्षण ॥

जांघों में कभी थोड़ा, कभी बहुत विषम शूल हो उसकी क्षिप्तसन्धि टूटी जानिये ५ ॥

अथ अधःसन्धि टूटी का लक्षण ॥

जो सन्धि नीचे की टूटी हो उसके नीचे पीड़ा हो उसे अधः-सन्धि जानिये ६ ॥

अथ सन्धि विना नल, कपाल, वलय के हाड़ टूटे हुओं का लक्षण ॥

नरसलकी भांति वे हाड़ छिद्र छिद्र लिये हों, सूधे हों उसे नल कहिये ॥

अथ हाड़ टूटना १२ प्रकार का है सो कहते हैं ॥

कर्कट १ अश्वकर्ण २ विचूर्णित ३ पिच्चित (यन्त्रितक्रिया)४ अस्थिवल्लिका ५ काण्ड के विषय भग्न ६ अतिपातित ७

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मज्जागत ८ प्रस्फुटित ९ वक्र १० छिन्न ११ द्विधा करना १२ जैसे इनके नाम हैं तैसेही लक्षण जान ले ॥

अथ हाड़ टूटा हो उसका लक्षण ॥

अङ्ग शिथिल होजाय, उस जगह स्पर्श सुहावे नहीं, वहां शरीर फरके, शरीर में पीड़ा और शूल हो, रात दिन कभी भी चैन न पड़े ये लक्षण हों तब जानिये कि इसका किसीप्रकार से हाड़ टूटा है ॥

अथ भग्नरोग का कष्टसाध्य लक्षण ॥

अग्नि मन्द होजाय, कुपथ्य करा करे, वायु का शरीर हो और जिसमें ज्वर अतीसारादिक भी हों वह भग्नरोगी कष्ट से बचे ॥

अथ भग्नरोग का असाध्य लक्षण ॥

जिसका मस्तक फटगया हो, कटि टूटगई हो, सन्धिखुलजाय, जांघ पिसिजाय, ललाट चूर्ण होजाय, स्तन की जगह टूटजाय और हृदय, गुदा, कनपटी, माथा फटिजाय वह असाध्य जानिये॥

अथ पुनःअसाध्य लक्षण ॥

हाड़ को अच्छेप्रकार कड़ा बांधे और वह बुरीतरह बँधिजाय और उसमें चोट आयजाय तथा मैथुनादिक करे तो वहहाड़टूटना असाध्य होजाय ॥

अथ शरीर में स्थान स्थान के हाड़ों में चोट लगने का चिह्न ॥

कण्ठ, तालू, कनपटी, कन्धे, शिर, पैर, कपाल, नाक, आंख इन स्थानों में किसी तरह की चोट लगे तो उस जगह के हाड़ झुकजायँ और पहुँचा, पीठ आदि के सूधे हाड़ टेढ़े होजायँ एवं कपाल आदि के जो गोल हाड़ हैं वे फटिजायँ, दांत आदि छोटे हाड़ टूटजायँ ॥

अथ भग्नरोग (हाड़सन्धि का टूटना) का यत्न ॥

प्रथम चोट आदि किसी तरह से हाड़ और सन्धि टूटी जाने तो उसी समय उस जगह शीतल पानी डाले पीछे बुद्धिमान्

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मनुष्य उसके ओषधियों का सेंक करे अथवा पट्टी बांधे। उसका जो इलाज करे वह शीतल करे और पट्टी न ढीली और न बहुत कड़ी बांधे, अच्छी तरह साधारण बांधे १ टूटी जगह हाड़ के जोड़ को ठीक करके बांधे। ओषधियों को गीली कर अथवा चोट की जगह गीली प्याज़ लगावे तो टूटी हाड़ सन्धि अच्छी हो २ अथवा मंजीठ, महुआ इन दोनों को ठण्ढे पानी से महीन पीस टूटे हाड़पर लेप करे तो अच्छा हो ३ अथवा सौबार के धोये घृत में साठीचावल पीस लेप करे तो अच्छा हो ४ अथवा बेर, पीपल की लाख, गेहूं, काहूवृक्ष का बक्कल ये घृतमें पीस ५ टंक दूधसे पीवे तो सन्धि और हाड़ टूटा अच्छा हो ५ अथवा लाख, काहूका बक्कल, असगन्ध, खरैटी, गुग्गुल ये सब बराबर ले इन को एकजीव कर २॥ टंक दूधके साथ ले तो अच्छा हो ६ अथवा गेहूं को ठीकरे में धर अधजला करले कि महीन पीस १० टंक शहद के साथ ५ टंक नित्य ७ दिनतक चाटे तो टूटा हाड़ अच्छा हो ७ अथवा मैदा लकड़ी, आंवला, तिल इन्हें ठण्ढे पानी से महीन पीस उस जगह लेप करे और इसमें घृत भी मिलावे तो टूटा हाड़ और टूटी सन्धि अच्छी हो ८ और मनुष्य के मांस की चोखी मिमाई अनुमान मुवाफ़िक़ ले शहद से उसको चटावे तो टूटा हाड़, टूटी सन्धि अच्छी हो ९ और चोटवाले को मांस का शोरुवा, दूध, घृत, पुष्टाई की औषध दे तो ये सब अच्छी होती हैं और इतनी वस्तु उसको अच्छी नहीं हैं नोन, कड़ुवी वस्तु, खार, खटाई, मैथुन, धूप, रूखा अन्न। बालक की और तरुण की चोट शीघ्र अच्छी हो और वृद्ध, रोगी की चोट शीघ्र अच्छी नहीं होती है १० अथवा लाख २॥ टंक दूधसे १५ दिन पीवे तो टूटा हाड़ अच्छा हो ११ अथवा पीली कौड़ियों का चूना २ या ३ रत्ती औटाय दूध से पीवे तो टूटा हाड़ जुड़े। ये सब यत्न वैद्यरहस्य में हैं १२॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथवा बेर का बक्कल, त्रिफला, सोंठि, मिरच, पीपल इन सबकी बराबर गुग्गुल डाल सबको एकजीव कर २॥ टंक नित्य १५ दिन दूधसे ले तो शरीर वज्र का होजाय १३ अथवा बेर का बक्कल २ टंक महीन पीस शहद से १ महीनाभर ले तो शरीर वज्र का हो यह योगतरङ्गिणी में है १४॥

अथ मुद्गर आदि की चोट का यत्न॥

मेथी, मैदालकड़ी, सोंठि, आमला इन्हें गोमूत्र में महीन पीस चोट पर लेप करे तो चोट अच्छी हो १५—इति भग्नरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न सम्पूर्ण॥

अथ नाड़ीव्रण की उत्पत्ति और लक्षण॥

जो अज्ञान वैद्य या साथिया व्रण को कच्चा जान न उसका यत्न करे और न उसकी राद निकाले तो वह राद नसों में प्रवेश कर उनके स्थानों को बिगाड़ती है। वह राद बाहर नहीं निकलती है फिर वह राद अधिक हो नाड़ियों में (जैसे नलमें जल बढ़े वैसे) बढ़ती है इससे इस रोगका नाम नाड़ीव्रण है। नाड़ीव्रण रोग ५ प्रकार का है। वायु का १ पित्त का २ कफ का ३ सन्निपात का ४ शस्त्रादिक की चोट लगने का ५॥

अथ वायु के नाड़ीव्रण का लक्षण॥

जिसका कठोर, महीन मुख हो, शूल हो, जिसके मुँह में राद रहे, रातमें बहुत रहे ये लक्षण हों उसे वायुका नाड़ीव्रण कहिये १॥

अथ पित्त के नाड़ीव्रण का लक्षण॥

जिसमें तृषा, ज्वर और दाह हो, गर्म तथा पीली राद निकले उसको पित्त का नाड़ीव्रण कहिये २॥

अथ कफ के नाड़ीव्रण का लक्षण॥

जिस व्रणके मुखमें रुधिर को लिये अधिक बदरंगी सफ़ेद राद निकले और उसमें खाज आवे, पीड़ा भी हो परन्तु रातमें बहुत हो ये लक्षण हों उसे कफ का नाड़ीव्रण कहिये ३॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ सन्निपात के नाड़ीव्रण का लक्षण ॥

जिस व्रण में राद, ज्वर, श्वास, मूर्च्छा हो और मुख सूखे, राद की गति गम्भीर हो जिसका अन्तही न मिले ऐसी राद निकले वह नाड़ीव्रण कालरात्रि की समान है मानों मारही डालेगा ये लक्षण सन्निपातके नाड़ीव्रणका कहिये ४ ॥

अथ शस्त्रादिकों की चोट से उत्पन्न नाड़ीव्रण का लक्षण ॥

जिसके शरीर में तीर, गोली इत्यादि लगी हों और वे किसी तरह शरीर में रहजायँ उनको वैद्य या सथिया निकाले उससे उस जगह व्रण पड़जाय और उस व्रणमें झागसमेत रुधिर, राद निकला करे, किसी तरह शरीर हलने से पीड़ा रहे उसे शस्त्रादिक की चोट लगने का नाड़ीव्रण कहिये ५ ॥

अथ नाड़ीव्रण का असाध्य-कृच्छ्रसाध्य लक्षण ॥

त्रिदोष का नाड़ीव्रण अच्छा नहीं होता है और चार प्रकार का नाड़ीव्रण अच्छा है वह वैद्यके यत्नसे अच्छा होजाताहै ६ ॥

अथ नाड़ीव्रण का यत्न ॥

सूक्ष्ममुख के व्रणमें राद निकला करे तो थूहर के दूध अथवा आक के दूध में दारुहल्दी भिगोय उसको घिसि बत्ती कर व्रण के मुख में दे तो व्रण भरजाय १ अथवा किरमाला की जड़, हल्दी, मंजीठ इन्हें शहद में महीन पीस उसकी बत्ती कर व्रण में युक्तिसे दे तो व्रण अच्छाहो २अथवा चमेलीके पत्तोंका रस, आक की जड़, किरमाला की जड़, दात्यूणी, सेंधानोन, जवाखार इन्हें महीन पीस इनकी बत्ती व्रण के मुखमें युक्ति से दे तो व्रण भर कर अच्छा हो ३ अथवा जात्यादिघृत वा जात्यादितेलसे भी नाड़ीव्रण जाता है ४ अथवा त्रिफला, सोंठि, मिरच, पीपल और इनकी बराबर शोधागुग्गुल ले इन्हें महीन पीस एकजीव कर २॥ टंक नित्य ४९ दिन शीतल जल से ले और पथ्य से रहे तो सबप्रकार के नाड़ीव्रण जायँ ५ अथवा गुग्गुल, सिंदूर इन

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दोनों को महीन पीस इन्हें यत्न से व्रण में भरे तो नाड़ीव्रण अच्छा हो। ये भावप्रकाश में लिखे हैं ६ अथवा आंधीझाड़े के बीज, तिल इन्हें महीन पीस यत्न से नाड़ीव्रणमें लेप करे तो वायु का नाड़ीव्रण अच्छा हो ७ अथवा तिल, मंजीठ, हाथी का दांत, हल्दी इन्हें महीन पीस पित्त के व्रण में लेप करे तो नाड़ीव्रण जाय ८ अथवा तिल, मुलहठी, दात्यूणी, नींब की छाल तथा पत्ते, सेंधानोन इन्हें महीन पीस लेप करे तो नाड़ीव्रण जाय ९ अथवा तिल, शहद, घृत इकट्ठा कर लेप करे तो घाव का व्रण अच्छा हो १० अथवा शहदकी बत्ती अथवा नोन की बत्ती से दुष्टव्रण अच्छा हो ११ अथवा सज्जी, जवाखार, कबीला, मेंहदी, सुहागा, सफ़ेद खैरसार ये भी बराबर ले गौ के घृत में महीन पीस १ दिन पीछे व्रण में भरे तो व्रण के कृमि मरजायँ और खाज जाती रहे और व्रण भर अच्छा हो। यह चक्रदत्त में लिखा है १२—इति स्वर्जिकाघृत ॥

अथवा सम्हालू के पत्तों के रस में तेल पकाय उस तेल की बत्ती व्रण में दे तो व्रण अच्छा हो। यह वृन्द में है १३—इति निर्गुण्डीतैल ॥

अथ सफ़ेद मरहम की विधि ॥

राल १ पैसेभर, सफ़ेद मोम २ पैसेभर, मुरदाशंख १ पैसेभर इन्हें महीन पीस पीछे गौका घृत ६ पैसेभर गर्म कर उसमें मोम पिघलाय शुद्ध करे पीछे वह औषध भी मोम के घृत में उसी समय डाले पीछे उन सबको कांसे की थाली में डाल जल से खूब १०८ बार हाथ से रगड़ कर धोवे पीछे व्रण के लगावे तो व्रण अच्छा हो १४ अथवा शोधापारा, आंवलासार गन्धक ये सब बराबर ले इन दोनों की बराबर मुरदाशंख और इन तीनोंकी बराबर कबीला ले और इनमें थोड़ा नीलाथोथा डाले और इन सब से चौगुना गौ का घृत मिलाय नींब के पत्तों का रस अनुमान

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मुवाफ़िक़ डाले पीछे सबको घृत में खूब दो दिनतक पीसे फिर व्रण में लगावे तो व्रणमात्र सब अच्छे हों। यह वैद्यरहस्य में है १५ अथवा सफ़ेद मोम, मस्तगी, गोंद, मेढ़ल, नीलाथोथा, सुहागा, सज्जी, सिंदूर, कबीला, मुरदाशंख, गुग्गुल, कालीमिरच, सोनगेरू, इलायची, बेर, सफ़ेद शिंगरफ़, शोधीगन्धक ये सब बराबर ले मोम विना सबको पृथक् पृथक् महीन पीसे और मोम को गौ के घृत में अग्नि से तपाय शुद्ध करले फिर सब औषधें मोम में मिलाय खरल में २ दिन महीन पीस एकजीव करे तो सबशस्त्रव्रण और दुष्टव्रण भी इसके लगाने से अच्छे हों। ये वैद्यकुतूहल में लिखे हैं १६ अथवा नीलाथोथा, मुरदाशंख, सफ़ेद खैरसार, सिन्दूर, शिंगरफ़, मोमकेसर, गौ का घृत ये सब बराबर ले पीछे गौ के घृत को गर्म कर नीचे उतार इसमें पहले नीलाथोथा पीस डाले पीछे उसी समय इसमें मोम डाले फिर पिघलाय ले फिर इसमें ये औषध महीन पीस डाल इन सबको एकजीव कर कांसे की थाली में बहुतसा जल डाल उसमें मोम सहित हथेली से १ दिन तक अच्छी तरह मर्दन करे पीछे इस मरहम को व्रणमात्रमें लगावे तो व्रणमात्र और चांदा आदि सब अच्छे हों। यह भी वैद्यकुतूहल में है १७ अथवा शिंगरफ़ ३ पैसेभर, सफ़ेदमोम ३ पैसेभर, सज्जी १ पैसेभर, नींबके पत्तों की टिकड़ी कर गौ के घृत में पकावे और मोम घृत में पिघलाय मुरदाशंख १ पैसेभर ले पीछे इन्हें महीन पीस एकजीव कर व्रण में लगावे तो व्रणमात्र अच्छे हों १८॥

अथ हाथ पांव आदि फटकर बेवांई सी पड़जायँ उसका मरहम॥

राल १ पैसेभर, कत्था १ पैसेभर, कालीमिरच १ पैसेभर, गौ का घृत २ पैसेभर, चमेली का तेल ४ पैसेभर इन सब औषधों को महीन पीस लोह के करछुले में मरहम करले पीछे इसको लगावे तो हाथ पैर आदि का फटना निश्चय अच्छा हो १९॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ नींब का मरहम ॥

नींब के पत्तों का रस १ सेर काढ़े पीछे गौ का घृत पावभर करछुले में चढ़ाय उसको गर्म करे जब गर्म होजाय तब उसमें राल ४ पैसेभर डाल पिघलावे जब वह पत्तों का रस उसमें सूखजाय और गाढ़ा होजाय तब कत्था १ पैसेभर, नीलाथोथा १ पैसेभर, मुरदाशंख १ पैसेभर इन्हें महीन पीस उसमें डाल एक जीव कर पीछे कपड़े में लगाय व्रण के ऊपर लगावे तो व्रण निश्चय अच्छा हो २० ॥

अथ व्रण के स्थान की त्वचा का वर्ण अच्छे करने की औषध ॥

मैनसिल, मंजीठ, लाख, दोनों हल्दी ये बराबर ले इन्हें घृत, शहदमें महीन पीस त्वचा में लेप करे तो व्रण की त्वचा का शरीर का सा वर्ण हो २१—इति नाड़ीव्रणरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न सम्पूर्ण ॥

इति पञ्चदशस्तरङ्गः १५ ॥

अथ भगन्दररोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

गुदा के आसपास चारों ओर दो दो अंगुल में फुंसी हों और फूटें तब वहां पीड़ा हो और उस जगह फुंसी बहा करें उसको भगन्दर कहिये और भग; गुदा और बस्ति के बीच का भाग है। भग की तरह यह रोग होता है इसवास्ते इसे वैद्य भगन्दर कहते हैं। भगन्दर पांचप्रकार का है। वायु का १ पित्त का २ कफका ३ सान्निपातका ४ शस्त्रादिक की चोट लगने का ५॥

अथ वायु के शतयोनिक भगन्दर का लक्षण ॥

जो पुरुष कषैला और रूखा बहुत भोजन करे उसकी वायु कोप को प्राप्त हो गुदाके पास फुंसी करे और आलस्य कर पुरुष उसका यत्न न करे तब वह फुंसी पक कर पीड़ा बहुत करे और जब वह फूटे तब उस में राद आदि मल-मूत्र, वीर्य ये भी निकला करें और उसमें चलनी के सदृश सौ छिद्र होजायँ इससे इसको शतयोनिक भगन्दर कहते हैं १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ पित्त के उष्ट्रग्रीव भगन्दर का लक्षण ॥

गर्मवस्तु के खाने से पित्त कुपित होता है तब गुदा के चौगिर्द दो अंगुल की जगह में लालफुंसियां तत्काल पकिजायँ और उनमें से गर्म गर्म राद निकले तथा वे फुंसियां ऊँट की गर्दन के सदृश ऊँची हों उसको पित्त का उष्ट्रग्रीव भगन्दर कहते हैं २॥

अथ कफ के परिस्रावी भगन्दर का लक्षण ॥

उसमें खुजली बहुत चले और गाढ़ी राद निकले तथा पीड़ा थोड़ी रहे, फुंसियां सफ़ेद होकर स्रवा करें उसको परिस्रावी कफ का भगन्दर कहिये ३॥

अथ सन्निपात के शम्बुकावर्त भगन्दर का लक्षण ॥

उस फुंसी में बहुत प्रकार की तो पीड़ा हो और बहुत प्रकार के वर्ण होकर स्रवा करे तथा वही फुंसी मुनका, दाख के सदृश हो और शंख के भीतर की नाभि के सदृश हो उसे सन्निपात का शम्बुकावर्त भगन्दर कहिये ४॥

अथ शस्त्रादिक की चोट लगने के भगन्दर का लक्षण ॥

गुदा के पास कांटे आदि लगे हों अथवा वहां खुजलाने से नखादिक लगिजायँ अथवा वहांके बाल बनाने में छूरा की धार लगिजाय तब वहां फुंसी होकर फूटे तब उसकी राद की चेप से वहां और फुंसियां होजायँ और वे अच्छी न हों स्रवाही करें उसे उन्मार्गसंज्ञक शस्त्र की चोट लगने का भगन्दर कहिये ५॥

अथ भगन्दर का कष्टसाध्य लक्षण ॥

भगन्दर तो सबही कठिनता से अच्छे होते हैं परन्तु सन्निपात का और चोट लगने का भगन्दर तो अच्छा होता ही नहीं है॥

अथ भगन्दर का यत्न ॥

गुदा की जगह भगन्दर उपजा जाने तब वैद्य जोंक आदि लगाय उस जगह का रुधिर तत्काल निकला डाले तो वे फुंसियां

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पकें नहीं अथवा उस जगह फुंसी उपजीजाने तो वहां सांठी की जड़, गिलोय, सोंठि, मुलहठी, बड़ के कोमल पत्ते इन्हें महीन पीस सुहाता सुहाता गर्म लेप करे तो भगन्दर की फुंसियां अच्छी हों १ अथवा तिल, नींब का बक्कल, महुआ इन्हें महीन पीस शीतल जल से लेप करे तो पित्त का भगन्दर अच्छा होय २ अथवा चमेली के पत्ते, बड़ के पत्ते, गिलोय, सोंठि, सेंधानोन इन सबको मट्ठे में महीन पीस भगन्दर में लेप करे तो भगन्दर अच्छा हो ३ अथवा हल्दी, आक का दूध, सेंधानोन, गुग्गुल, नींब के पत्ते इन्हें औटाय इनमें अनुमान मुवाफ़िक़ तेल डाल पकावे जब जलमात्र जलजाय और तेलमात्र आयरहे तब इस तेल का मर्दन करे तो भगन्दर जाय ४ अथवा गुग्गुल, त्रिफला, पीपल इन्हें बराबर ले महीन पीस १। टंक जल से ले तो शोथ, गोला, बवासीर, भगन्दर इनको यह दूर करता है ५—इति नवकाषिकगुग्गुल ॥

अथवा बहुत चतुर वैद्यों वा सथियोंसे चीरा दिवावे और मरहम आदि लगाय व्रण का यत्न करे तो भगन्दर अच्छा हो ६ भगन्दरवाला इतनी वस्तु न करे खेद, मैथुन, युद्ध, घोड़े की सवारी और नवीन अन्न का भोजन और भगन्दर अच्छा होगया होय तोभी १ वर्षतक इतने कार्य न करे। यह भावप्रकाश में लिखा है ॥ अथवा रसौत, दोनों हल्दी, मंजीठ, नींब के पत्ते, निशोत, तेजबल, दात्यूणी इन्हें महीन पीस भगन्दर में लेप करे और इन्हींसे उसे धोवे तो भगन्दर अच्छा हो ७ अथवा कुत्ते का हाड़, केंचुआ इन्हें गधे के रुधिर से महीन पीस लगावे तो भगन्दर अच्छा हो ८ अथवा बिलाई के हाड़ की राख, कुत्ते के हाड़ की राख इन्हें लोहे के पात्र में गौ के घृत से घिस लेप करे तो भगन्दर जाय ९ अथवा बिलाई के हाड़ को त्रिफले के रस से महीन पीस भगन्दर में लेप करे तो भगन्दर जाय १० ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ रूपराजरस की विधि ॥

पारा १ भाग, तांबेका मैल ४ भाग इन दोनों को इकट्ठा कर कागलहरी के रस में ५ दिन खरल करे पीछे इन्हें तांबे के सम्पुट में धर उसके आसपास और ऊपर रेत से हांड़ीभरे फिर उसके नीचे लकड़ियों की ८ प्रहर आंच देवे, स्वाङ्ग शीतल होनेपर सम्पुट से निकाल घृत, शहद में डुबोवे पीछे उन्हें पक्की मूसीमें धर उसकी अन्धमसीकर धौंकनी से खूब धौंकावे जब वह चक्कर खाय फिरे तब उसमें से निकाल ले तब यह रस सिद्ध होताहै। इसमें से ३ रत्ती रस शहद से ले तो भगन्दर निश्चय अच्छा हो ऊपर से त्रिफले का काढ़ा पीवे और पथ्य से रहे ११-इति रूपराजरस ॥

अथ रविसुन्दररस ॥

पारा १ भाग, आमलासार गन्धक २ भाग लेके इन दोनों की खरल में कजली करे फिरि ग्वार के पट्ठे के रस में खरल करे पीछे इसका गोला कर तांबे के सम्पुट में धरे और उस सम्पुट को हांड़ी के चारों ओर आसपास राख भर बीच में धरे पीछे उसके नीचे १ दिनतक अग्नि लगावे और स्वाङ्गशीतल होने पर उसको काढ़े फिर उसमें जँभीरी के रस की ७ पुट दे पीछे उसे १ रत्ती शहद और घृत से चाटे तो भगन्दर जाय। ऊपर से मूसली, लहसुन पीवे इसके खाने के ऊपर मीठा आहार, दिन में सोना, मैथुन और शीतल भोजन न करे। यह रससिन्धु में लिखाहै १२-इति रविसुन्दररस ॥ इति भगन्दररोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न सम्पूर्ण ॥

अथ उपदंशरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

हथरस के करने से, इन्द्रिय में किसीतरह नख, दांत लगने से अथवा स्त्रियों की भग के ऊपर कठोर बालों के उखाड़ने से अथवा योनि का छिद्र महीन होने से, स्त्रियों की योनि दूषित

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

होने से अथवा लिङ्गेन्द्रिय के न धोने से, बहुत मैथुन करने से, नानाप्रकार के कुपथ्य करनेसे पुरुष की लिङ्गेन्द्रिय में ५ प्रकार का उपदंश होता है। और वायु १ पित्त २ कफ ३ सन्निपात ४ और लिङ्गेन्द्रिय में किसी तरह नख, दन्तादिक की चोट लगने का ५ ॥

अथ वायु के उपदंश का लक्षण ॥

लिङ्गेन्द्रिय में गर्मी से पीड़ा हो, बेवाईके सदृश फटिजाय, फड़के और उस जगह काली फुंसियां हों तो जानिये कि वायु का उपदंश है १ ॥

अथ पित्त के उपदंश का लक्षण ॥

उस जगह पीली फुंसियां होजायँ, उनमें चेप बहुत निकले, कण्ठ में दाह हो अथवा फुंसियां लाल हों तो पित्त का उपदंश जानिये २ ॥

अथ कफ के उपदंश का लक्षण ॥

जिसमें खाज बहुत हो, सफ़ेद फुंसियां हों और गाढ़ी राद स्रवे उसे कफ का उपदंश कहिये ३ और ये सब लक्षण जिसमें मिलें उसे सन्निपात का उपदंश जानिये ४ ॥

अथ उपदंश का असाध्य लक्षण ॥

जो लिङ्गेन्द्रिय का मांस बिखरजाय, उसमें कृमि पड़जायँ, इन्द्रिय गलजाय, अण्डकोश अवशेष रहजायँ वह उपदंश असाध्य जानिये ५ अथवा उपदंशवाला यत्न करे नहीं और विषय करता रहे उसके समयपाय लिङ्गेन्द्रिय बिषे सूजन होआवे, इन्द्रिय पकजाय, उसमें कृमि पड़जायँ और इन्द्रिय गल जाय वह पुरुष मरजाय ॥

अथ लिङ्गार्श का लक्षण ॥

जिस पुरुष की लिङ्गेन्द्रिय के ऊपर धान के अंकुर सदृश अंकुर होजायँ वा कुत्ते की शिखा सदृश होजायँ तथा लिङ्गेन्द्रिय में

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

और उसकी सन्धि की नसों में पीड़ा बहुत हो, उसकी सन्धि और इन्द्रिय चूनेलगे इसे लिङ्गार्श कहिये १॥

अथ उपदंश का यत्न॥

जोंक लगाकर उस जगह का रुधिर कढ़ावे और उसको पकने न दे तो उपदंश जाय १ अथवा सांठी की जड़, गिलोय, सोंठि, मुलहठी, बड़के कोमल पत्ते इन्हें औटाय इनके पानी से लिङ्गेन्द्रिय को धोवे तो उपदंश जाय २ अथवा लिङ्गेन्द्रिय की फ़स्त खुलवावे तो उपदंश जाय ३ अथवा बड़के कोमल पत्ते, महुआ का बक्कल, जामुन का बक्कल, पठानीलोध, हड़ की छाल, हल्दी ये सब बराबर ले इन्हें जल में महीन पीस लिङ्गेन्द्रिय में लेप करे तो सब व्यथा जायँ ४ अथवा लिङ्गेन्द्रिय पकिजाय और इन्हीं औषधों से धोवे तो उपदंश जाय ५ अथवा त्रिफला के काढ़े से धोवे अथवा भांगरे के रस से धोवे अथवा कमल के पानी से धोवे अथवा लेप करे तो उपदंश जाय ६ अथवा सहँजने के बक्कल का चूर्ण अथवा दात्यूणी के बक्कल का चूर्ण महीन पीस लिङ्गेन्द्रियमें लेप करे तो उपदंश जाय ७ अथवा सुपारी पानी में घिस लगावे तो उपदंश जाय ८ अथवा कड़ाही में त्रिफला को जलाय उसकी राखकर शहदसे उपदंश पर लेप करे तो यह रोग दूर होवे ९ अथवा पटोल, नींबकी छाल, त्रिफला, चिरायता, खैरसार, विजैसार, गुग्गुल ये बराबर ले पीछे इन्हें औटाय पीवे तो उपदंश जाय १० अथवा चिरायता, नींबकी छाल, त्रिफला, पटोल, कणगचकी जड़, आंवला, खैरसार, विजैसार इनके काढ़े के पानी में घृत पकावे जब पानी जल जाय घृतमात्र रहजाय तब इस घृत का लेप करे अथवा भोजन में खाय तो उपदंश जाय ११–इति भूनिम्बादि घृत॥

अथवा जो घृत कोढ़ और व्रण के यत्न में लिखाहै वह लगावे अथवा भोजन में खाय तो उपदंश जाय १२ अथवा जुलाब के

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

लेने से उपदंश जाय १३ अथवा जंगीहड़ ८ पैसे भर, सफ़ेद कत्था १ पैसेभर, नीलाथोथा १ पैसेभर इन्हें महीन पीस पीछे पकेहुए १०० नींबुओं के रस में खरल करे फिर सुखाकर इसकी १ माशेभर की गोली करे। १ गोली नित्य १५ दिन दही के साथ ले और पथ्य से रहे तो उपदंश निश्चय जाय १४ अथवा नीलाथोथा १ भाग, कत्था २ भाग, मुरदाशंख २ भाग, सुपारी की राख २ भाग इन्हें महीन पीस उपदंश के छालों पर बुरकावे तो उपदंश जाय १५ अथवा पारा, गन्धक, हरताल, सिंदूर, मैनसिल इन्हें तांबे के पात्र में तांबे के घोटे से घृत में पीस ३ दिन पीछे इसे लगावे तो उपदंश जाय १६ अथवा अपस्मार दूर होने का यत्न जो पीछे लिखा है उससे लिङ्गार्श का यत्न वैद्य करे। ये सब भावप्रकाश में लिखे हैं—इति उपदंशरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न सम्पूर्ण॥

अथ शूकरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न॥

जो मूर्ख पुरुष विना विचारे मूर्ख के कहने से लिङ्गेन्द्रियको पट्टी, लेपादिक कर बढ़ाया चाहे उस पुरुष के लिङ्ग में शूकरोग उत्पन्न होता है वह अठारहप्रकार का है—सर्षपिका १ अष्ठीलिका २ ग्रथित ३ कुम्भिका ४ अलजी ५ मृदित ६ सम्मूढ़पीड़िका ७ अवमन्थ ८ पुष्करिका ९ स्पर्शहानि १० उत्तमा ११ शतयोनक १२ त्वक्पाक १३ शोणितार्बुद १४ मांसार्बुद १५ मांसपाक १६ विद्रधि १७ तिलकालक १८॥

अथ सर्षपिका शूकरोग का लक्षण॥

जिसके किसी तरह से लिङ्ग में कफरक्त करके सरसों सदृश फुंसियां होजायँ उसे सर्षपिका शूकरोग कहिये १॥

अथ अष्ठीलिका शूकरोग का लक्षण॥

लिङ्ग के बिषे कड़ी और टेढ़ी पीड़ा को लिये वायु से फुंसियां हों उसे अष्ठीलिका शूकरोग कहिये २॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ ग्रथित शूकरोग का लक्षण ॥

लिङ्गेन्द्रिय बिषे कफ से फुंसियां होजायँ उसे ग्रथित शूकरोग कहिये ३ ॥

अथ कुम्भिका शूकरोग का लक्षण ॥

रक्तपित्त से जिसके लिङ्ग में जामुन की गुठली के सदृश फुंसियां होजायँ उसे कुम्भिका शूकरोग कहिये ४ ॥

अथ अलजी शूकरोग का लक्षण ॥

इन्द्रिय में प्रमेह की फुंसियां होजायँ उसे अलजी कहिये ५ ॥

अथ मृदित शूकरोग का लक्षण ॥

इन्द्रिय किसी तरह मसल गई हो और उसमें वायु करके पीड़ा होआवे उसे मृदित शूकरोग कहिये ६ ॥

अथ संमूढ़पीड़िका शूकरोग का लक्षण ॥

जिसके दोनों हाथों से इन्द्रिय पीड़ी गई हो उससे फुंसियां हो आवें उसे संमूढ़पीड़िका शूकरोग कहिये ७ ॥

अथ अवमन्थ शूकरोग का लक्षण ॥

लिङ्ग के बिषे कफ और रुधिर के दुष्टपने से बड़ी और बहुत फुंसियां हों, उनमें पीड़ा हो तथा रोमाञ्च हो आवें उसे अवमन्थ शूकरोग कहिये ८ ॥

अथ पुष्करिका शूकरोग का लक्षण ॥

जिसकी सुपारी के ऊपर पित्त रुधिर के कोपसे फुंसियां बहुत होजायँ उसे पुष्करिका शूकरोग कहिये ९ ॥

अथ स्पर्शहानि शूकरोग का लक्षण ॥

जिसकी इन्द्रिय किसीकारण से हाथ आदि का स्पर्श न सहे उसको स्पर्शहानि शूकरोग कहिये १० ॥

अथ उत्तमा शूकरोग का लक्षण ॥

जिसके अजीर्ण से मूंग, उड़द के सदृश रक्तपित्त के कोप से लिङ्गमें लाल फुंसियां होजायँ उसे उत्तमा शूकरोग कहिये ११ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ शतयोनक शूकरोग का लक्षण ॥

जिसके लिङ्ग के बिषे किसी कारण से वात, रुधिर के कोप से अधिक छिद्र पड़जायँ उसे शतयोनक शूकरोग कहिये १२ ॥

अथ त्वक्पाक शूकरोग का लक्षण ॥

वायु, पित्त, कफ से इन्द्रिय पकजाय, उसमें दाह हो, पीड़ा से शरीर में ज्वर हो आवे उसे त्वक्पाक शूकरोग कहिये १३ ॥

अथ शोणितार्बुद शूकरोग का लक्षण ॥

जिसकी इन्द्रिय में काली, लाल फुंसियां होआवें और वहां पीड़ा हो उसको शोणितार्बुद शूकरोग कहिये १४ ॥

अथ मांसार्बुद शूकरोग का लक्षण ॥

जिसकी इन्द्रिय का मांस बिखर जाय और वहां पीड़ा अधिक हो तो उसे सर्वदोष के कोपका मांसार्बुद शूकरोग कहिये १५ ॥

अथ मांसपाक शूकरोग का लक्षण ॥

जिसकी इन्द्रिय का मांस सड़जाय और राद बहनेलगे व पीड़ा अधिक हो उसे मांसपाक शूकरोग कहिये १६ ॥

अथ विद्रधि शूकरोग का लक्षण ॥

जिसके लिङ्ग में सन्निपात के कोप से फुंसियां उठें उसे विद्रधि शूकरोग कहिये १७ ॥

अथ तिलकालक शूकरोग का लक्षण ॥

इन्द्रिय में काले और अनेक रंगों को लिये विषयुक्त फुंसियां होकर पकने लगजायँ और उनमें राद पड़कर इन्द्रिय गलजाय तो सन्निपात के कोप से हुआ तिलकालक शूकरोग कहिये १८ ॥

अथ शूकरोग का असाध्य लक्षण ॥

मांसार्बुद १ मांसपाक २ विद्रधि ३ तिलकालक ४ ये चार अच्छे नहीं होते हैं १ ॥

अथ शूकरोग का यत्न ॥

अठारहों शूकरोगों का विष दूर करनेवाला यत्न करे अथवा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

लिङ्गेन्द्रिय में जोंक लगाय दुष्ट रुधिर निकलवावे तो शूकरोग जाय १ और इन्द्रिय का अच्छा जुलाब दे तो शूकरोग जाय २ अथवा लघुभोजन से शूकरोग जाय ३ अथवा त्रिफला के काढ़े से गुग्गुल खाय तो शूकरोग जाय ४ अच्छी औषधों के लेप और सेंक से तथा शीतलयत्न से यह रोग जाय ५ अथवा दारुहल्दी, तुलसी, मुलहठी, धमासा इन्हें तेल डाल पकावे जब औषधें सीझजायँ तब इस तेल का मर्दन करे तो शूकरोग जाय ६ अथवा खरैटी के तेलका मर्दन करे तो शूकरोग जाय। यह सर्वसंग्रह में लिखा है ७–इति शूकरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न संपूर्ण ॥

अथ कुष्ठरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

विरुद्ध अन्न-पान के खाने-पीने और पतली, चिकनी, भारी वस्तु के खाने, धूप में रहने, श्रम करने, वमन और मल-मूत्र के वेगों के रोंकने, बहुत अग्नि के तापने, बहुत भोजन करने, शीत-उष्ण के न गिनने, श्रम करने, भय लगने और धूप, भय, श्रम से दुःखितावस्था में तत्काल शीतल पानी पीने, अजीर्ण में भोजन करने, वमन और जुलाब आदि में कुपथ्य करने, नवीन जल पीने और दही, मछली, नोन, खटाई, उड़द, मूली, पिसा अन्न, तिल, हल्दी, गुड़ इनके बहुत खाने, दिन के सोने और ब्राह्मणके शाप से, अनेकप्रकार के अधिक खाने से, स्त्रीसंग से और अनेकप्रकार के पापों के करने से मनुष्यों के वायु, पित्त, कफ और सातों धातुएं दुष्ट होकर शरीर के रुधिर और मांस के जल को दूषित कर १८ प्रकार के कोढ़ के कारण प्रकट करती हैं ॥

अथ अठारह प्रकार के कोढ़ों के नाम ॥

कपाल १ उदुम्बर २ मण्डल ३ ऋक्षजिह्व ४ पुण्डरीक ५ सिध्म (विभूति) ६ काकण ७ एककुष्ठ ८ गजचर्म ९ चर्म-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दल १० विचर्चिका ११ पामा १२ दाद १३ विस्फोटक १४ वैपादिक १५ किटिभ १६ अलस १७ शतारु १८ ॥

अथ कुष्ठरोग का पूर्वरूप ॥

पहले व्रण हों वे कोमल हों अथवा बहुत खरदरा अथवा रूखा जिनका स्पर्श हो, व्रणों में दाह हो, खुजली चले वा त्वचा सूखजाय, व्रणों में पीड़ा हो, व्रण ऊंचा हो, शूल बहुत हो और तत्काल उसकी उत्पत्ति हो और बहुत दिनतक रहे तथा कुपथ्य तो थोड़ा करे परन्तु कोप बहुत हो और वायु के होने से रोमाञ्च हों, उसमें रुधिर काला निकले जिसमें ये लक्षण हों तो जानिये कि इसके कोढ़ होगा १ ॥

अथ कोढ़ का सामान्य लक्षण ॥

पूर्वजन्म के पाप से, मनुष्यों की कुबुद्धि से विकूर्चित होकर कुपथ्य करे पीछे उन कुपथ्यों से कोप को प्राप्तहुए वायु, पित्त, कफ शरीर की नसों में प्राप्त होकर त्वचा, रुधिर और मांस को दूषित करें और शरीर की त्वचा का स्वरूप औरसाही करदें उसको वैद्य कोढ़ कहते हैं तथा वायु शरीर में बहुत कोपकर कपालकुष्ठ को पैदा करती है। कफ कुपित हो मण्डल नाम कोढ़ को करता है। वायु, पित्त कुपित हों तो विचर्चिका और ऋक्षजिह्व नाम कोढ़ को पैदा करते हैं। वायु, कफ कुपित हो गजचर्म, किटिभकुष्ठ, सिध्म, अलसकुष्ठ और वैपादिक इनको पैदा करते हैं। पित्त, कफ कुपित हो दाद, शतारु, पुण्डरीक, विस्फोटक, कोढ़, पामा और चर्मदलकोढ़ इनको पैदा करते हैं और सब वायु, पित्त, कफ शरीर में कोप को प्राप्त होकर काकण नाम कोढ़ को पैदा करते हैं १ ॥

अथ कापालिक महाकुष्ठ का लक्षण ॥

जिसके शरीर की त्वचा काली, लाल, फटी, रूखी, कठोर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

और सूखी हो और उसमें पीड़ा बहुत हो उसको वैद्य कपाल नाम कोढ़ कहते हैं। यह कोढ़ विषम है देरसे जाता है २॥

अथ औदुम्बर कोढ़ का लक्षण॥

जिसके शरीर की त्वचा में दाह और ललाई बहुत हो, खुजली बहुत चले, रोम रोम में पीड़ा हो, शरीर की त्वचा गूलर के फल सदृश होजाय उसे औदुम्बर कोढ़ कहिये ३॥

अथ मण्डल कोढ़ का लक्षण॥

जिसकी त्वचा सफ़ेद और लाल हो स्थिर रहे, चिकनी और ऊंची हो, गोली रहा करे उसे मण्डल कोढ़ कहिये ४॥

अथ सिध्म (विभूति) कोढ़ का लक्षण॥

जिसकी त्वचा सफ़ेद, तांबे के सदृश हो, सूक्ष्म हो उसमें खुजली चले और महीन महीन त्वचा उतरजाय तथा वह विभूतिमुख्य हृदय में बहुत हो, घिया के फूल के सदृश हो उसे वैद्य सिध्मनाम (विभूति) कोढ़ कहते हैं ५॥

अथ काकण कोढ़ का लक्षण॥

जिसकी त्वचा रेशम के सदृश हो, बीच में काली और अन्त में लाल हो, पके नहीं, पीड़ा बहुत हो उसे काकण कोढ़ कहते हैं। यह सन्निपात के कोप से होता है परन्तु अच्छा होजाता है ६॥

अथ पुण्डरीक कोढ़ का लक्षण॥

जिसकी त्वचा सफ़ेद ललाई लिये कमल की पाँखुरी सदृश हो उसके कफ के कोप से हुआ पुण्डरीक कोढ़ जानना ७॥

अथ ऋक्षजिह्व कोढ़ का लक्षण॥

जिसकी त्वचा रुधिर पर्यंत में लाल हो और जिसमें काली भी हो उसे ऋक्षजिह्व कोढ़ कहते हैं ८॥

अथ ११ क्षुद्रकोढ़ों में एककुष्ठ नाम कोढ़ का लक्षण॥

जिसकी त्वचा में पसीना नहीं आवे, जिसका स्थान बड़ा हो, मछली के टूक सदृश हो उसे एककुष्ठ नाम कोढ़ कहते हैं १॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ गजचर्म कोढ़ का लक्षण ॥

हाथी की चर्म सदृश जिसकी त्वचा बदरंगी हो उसे गजचर्म कोढ़ कहिये २ ॥

अथ चर्मदल कोढ़ का लक्षण ॥

जिसकी त्वचा शूलयुक्त लाल हो, खुजली चले, फोड़े फटेसे हों और हाथ का स्पर्श न सहाजाय उसे चर्मदल जानो ३ ॥

अथ विचर्चिका कोढ़ का लक्षण ॥

जिसकी त्वचा में खाज को लिये काली फुंसियां हों, उन में चेप निकले और हाथ, पैरमें हों उसे विचर्चिका कोढ़ कहिये ४॥

अथ पामा कोढ़ का लक्षण ॥

जिसके शरीर में छोटी छोटी और बहुत फुंसियां हों, उनमें चेप निकले, खाज हो और लाल फुंसियां हों और दाह हो उसे पामा कोढ़ कहिये ५ ॥

अथ दाद कोढ़ का लक्षण ॥

जिसमें खाज हो और फुंसियां लाल हों, त्वचासे ऊंची हों ये लक्षण हों तो उसे दादकोढ़ कहिये ६ ॥

अथ दाद के भेद कच्छदाद का लक्षण ॥

जिसके हाथ, पैर, कांख और कटि में फुंसियां हों तथा उनमें दाह हो उसे कच्छदाद कोढ़ कहिये ७ ॥

अथ विस्फोटक कोढ़ का लक्षण ॥

जिसकी त्वचा में काले, लाल और छोटे छोटे फोड़े हों उसे विस्फोटक कोढ़ कहिये ८ ॥

अथ किटिभ कोढ़ का लक्षण ॥

जिसकी त्वचा में सूखे व्रण के समान लाल और खरदरा कठोर स्पर्श हो उसे किटिभ कोढ़ कहिये ९ ॥

अथ वैपादिक कोढ़ का लक्षण ॥

जिसमें खुजली चले, दाह और पीड़ा को लिये पैरही में हो उसे वैपादिक कोढ़ कहिये १० ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ अलस कोढ़ का लक्षण ॥

जिसकी त्वचा में खुजली को लिये लाल फुंसियां हों उसे अलस कोढ़ जानिये ११ ॥

अथ शतारु कोढ़ का लक्षण ॥

जिसकी त्वचा में लाल, काली और दाह को लिये फुंसियां हों उसे शतारु कोढ़ कहिये १२ ॥

अथ शरीर की सातधातुओं में प्राप्तहुए कोढ़ के पृथक् पृथक् लक्षण ॥

अथ रसधातु में प्राप्तहुए कोढ़ का लक्षण ॥

त्वचा में स्थित कोढ़ की त्वचा का स्वरूप औरसा होजाय, त्वचा रूखी हो, सूखजाय, रोमाञ्च हो और पसीना बहुत आवे ये लक्षण हों तो रसधातु में प्राप्तहुआ कोढ़ जानिये १३ ॥

अथ रुधिर में प्राप्त कोढ़ का लक्षण ॥

जिसमें खाज हो और राद निकले तब जानिये रुधिर में प्राप्त हुआ कोढ़ है १४ ॥

अथ मांस में प्राप्त कोढ़ का लक्षण ॥

जो कोढ़ बहुत पुष्ट हो और मुँह बहुत सूखे, फुंसियां कठोर और पीड़ायुक्त हों तो मांसमें प्राप्त हुआ कोढ़ जानिये १५ ॥

अथ मेद में प्राप्त कोढ़ का लक्षण ॥

हाथ नष्ट होजायँ, कुहनी आयरहे, चला न जाय, सब अङ्ग टूटने लगें, थोड़ी चोट सर्वत्र फैलजाय, मुँह सूखे, फुंसियां कठोर और पीड़ायुक्त हों तो उसे मेदमें प्राप्तहुआ कोढ़ जानिये १६ ॥

अथ हाड़मींगी में प्राप्त कोढ़ का लक्षण ॥

नाक गलि जाय, नेत्र लाल होजायँ, व्रणों में कृमि पड़ जायँ, कण्ठ का स्वर घों घों होजाय और व्रणों में पीड़ा हो तब जानिये हाड़मींगी में प्राप्त हुआ कोढ़ है १७ ॥

अथ वीर्य में प्राप्त कोढ़ का लक्षण ॥

जिसके माता, पिता के वीर्य में कोढ़ के बहुत दोष हों तो उनसे हुई सन्तति के भी कोढ़ होता है १८ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ कोढ़ का साध्यासाध्य लक्षण ॥

जो कोढ़ वायु, कफ का हो और त्वचा, रुधिर, मांस में रहता हो तो साध्य जानिये और जो कोढ़ मेद में प्राप्त हो, कृमि पड़ जायँ, दाह हो, मन्दाग्नि होजाय और त्रिदोष का हो वह असाध्य जानिये। शुक्रमें प्राप्त हुआ कोढ़ भी असाध्य होता है ॥

अथ कोढ़ का असाध्य लक्षण ॥

कोढ़ बिखर जाय, चूने लगि जाय, स्वर घों घों होजाय ऐसे को वमन, विरेचन नहीं करने दे १ ॥

अथ श्वित्र (कुष्ठभेद) की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

जो कोढ़ की उत्पत्ति है वही श्वित्र की भी उत्पत्ति है। श्वित्र भी लाल हो चुवे नहीं, कोढ़ चुवे इसमें यही भेद है। श्वित्र का भेद एक किलास है यह लाल होता है। श्वित्र दो प्रकार का है। वायु, पित्त, कफ का १ व्रण का २ ॥

अथ श्वित्रकोढ़ का साध्यासाध्य लक्षण ॥

महीन हो, काले बालों में हो, एक दोष का हो, नवीन उत्पन्न न हो, अग्नि से उपजा हो ऐसा श्वित्र कोढ़ साध्य जानिये। इस में और लक्षण हों तो श्वित्र असाध्य जानिये ॥

अथवा कुष्ठी के मिलाप से मनुष्यों के कुष्ठ लगजाता है ऐसे ही और भी रोग लगजाते हैं। रोगवालों का प्रसंग करे, इकट्ठा भोजन करे, इकट्ठा सोवे, आपस में वस्त्र पहिरे, आपस में किसी वस्तु का लेप करे तो इतने रोग लगजाते हैं—श्वास १ कोढ़ २ ज्वर ३ राजरोग ४ नेत्ररोग ५ शीतला आदि ॥

अथ पुनः कोढ़ का असाध्य लक्षण ॥

गुह्य स्थान और मुख, हाथों पर का कोढ़ दूर नहीं होता ॥

अथ कोढ़रोग का यत्न ॥

हड़ की छाल, कणगच की जड़, सरसों, हल्दी, चाब, बावची, सेंधानोन, बायबिड़ंग ये सब बराबर ले इन्हें गोमूत्र में

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

महीन पीस कोढ़में लेप करे तो कोढ़ दूरहो १—इति पथ्यादिलेप॥

अथवा बावची को महीन पीस अदरक के रस की उसमें पुट दे पीछे इस कोढ़के ऊपर उबटन करे तो कोढ़ जाय २ अथवा नींबके फूल के समय तो नींब के फूल ले और फल, बक्कल, जड़ और पत्ते ले और दोनों हल्दी, त्रिफला, सोंठि, काली मिरच, पीपल, ब्राह्मी, गोखुरू, शोधा भिलावां, चित्रक, बायबिड़ंग, सार, बाराहीकन्द, गिलोय, बावची, किरमाला, मिश्री, कूट, इन्द्रयव, पाढ़, खैरसार ये सब बराबर ले इन्हें महीन पीस नागरमोथा के रस की पुट दे, पीछे नींब के पञ्चाङ्ग के रसकी ७ पुट दे फिर भांगरे के रस की ७ पुट दे तदनन्तर छाया में सुखाय महीन पीस चूर्ण करले पीछे अच्छा दिन देखके कोढ़वाले को शहद के साथ अथवा खैरसार के काढ़े के साथ प्रभातसमय गर्म पानी से अधेलाभर के प्रमाण जुलाब दे पीछे थोड़ा थोड़ा टके भरतक बढ़ाता जाय और घृत समेत इसके ऊपर हलका भोजन करे तो इतने रोगों को यह दूर करे—ब्यौची, उदुम्बर, पुण्डरीक, कपाल, दाद, किटिभ, अलस, शतारु, विस्फोटक ये सब जाति के कोढ़ हैं और विसर्परोग, भगन्दर, श्लीपद, वातरक्त और व्रणमात्र, प्रमेहमात्र, प्रदर, विषमात्र, उदर के रोग इत्यादि। यह ब्रह्माजी का कहाहुआ निम्बपञ्चकावलेह है इसका सेवन मार्कण्डेयादि ऋषियों ने किया है॥

अथवा बावची ५ टके, शोधा गुग्गुल ५ टके, शोधी सोनामक्खी ३ टके, सार २ टके, गोरखमुण्डी ३ टके, त्रिफला ३ टके, कणगच १ टके, खैरसार ५ टके, गिलोय २ टके, निशोत २ टके, नागरमोथा २ टके, बायबिड़ंग १ टके, हल्दी २ टके, तज १ टके, नींब का पञ्चाङ्ग ५ टके, चित्रक २ टके भर इन सबको महीन पीस २ टंक प्रमाण शहद, घृत के साथ गोली करे पीछे प्रभातही [illegible] गोमूत्र से ले तो कोढ़मात्र और वातरक्त पाण्डुरोग,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

उदररोग, प्रमेह, गोसा आदि रोगों को यह दूर करे। यह वृद्धता को दूर कर तरुणता को करता है ४–इति स्वयंभुवगुग्गुल ॥

अथवा चित्रक, त्रिफला, सोंठि, मिरच, पीपल, ज़ीरा, कलौंजी, खुरासानीबच, सेंधानोन, अतीस, कूट, चव्य, इलायची, जवाखार, बायबिड़ंग, अजमोद, नागरमोथा, देवदारु ये सब बराबर ले और इन सबकी बराबर शोधागुग्गुल ले पीछे इन सबको महीन पीस एकजीव करे फिर घृत से ४ माशेभर की गोली करके एक गोली भोजन के समय खाय तो कोढ़मात्र, कृमि, व्रणमात्र, संग्रहणी, बवासीर, गृध्रसी, गोला आदि को यह दूर करता है ५–इति किशोरगुग्गुल ॥

अथवा २ सेर शोधाभिलावां १६ सेर पानी में औटावे पीछे औटते में गिलोय २ सेर कूटकर डाले जब इस पानी का चतुर्थांश रहे तब उतार उसमें गौ का घृत १ सेर और गौ का दूध ४ सेर डाले पीछे मिश्री १ सेर डाले फिर शहद आधसेर डाल पीछे मधुरी आंचसे पकावे ये सब ठंढी हों तब इसको आंच पर से उतार ये ओषधियां डाले–बावची, पवाँर के बीज, नींब की छाल, हड़ की छाल, आंवला, सेंधानोन, नागरमोथा, तज, इलायची, नागकेसर, पित्तपापड़ा, पत्रज, नेत्रबाला, खस, चन्दन, गोखरू, कचूर, रक्तचन्दन इन प्रत्येक ओषधियों को दो दो टंक प्रमाण ले महीन पीस उस रस में मिलाय एकजीव करे पीछे इसे १ टके भर प्रातःकाल जल के साथ नित्य ले तो सर्व कुष्ठमात्र, वातरक्त, बवासीर आदिको यह दूर करता है। इस अमृतभल्लातक का खानेवाला इतने काम न करे। खेद न करे, धूप में न रहे, अग्नि के पास न जाय, खटाई, मांस, दही न खाय, तेल न लगावे, मार्ग न चले ६–इति अमृतभल्लातकावलेह॥

अथवा नींब का बक्कल, गौरीसर, मंजीठ, कुटकी, त्रायमाण, त्रिफला, नागरमोथा, पित्तपापड़ा, बावची, जवासा, बच, खैर-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सार, रक्तचन्दन, पाढ़, सोंठि, भारंगी, अडूसा, चिरायता, कुड़ा की छाल, निशोत, इन्द्रायण की जड़, मूर्वा, बायबिड़ंग, इन्द्रयव, चित्रक, मानपात, गिलोय, बकायन, पटोल, दोनों हल्दी, पीपल, किरमाला की गिरी, सतोन्यवेद, शोधी चिरमिटी, करिहारी की जड़, रास्ना, सांठी की जड़, दात्यूणी, शोधा जमालगोटा, भांगरा, कटसैला, अखरोट, शाखोटक ये सब ओषधियां पृथक् पृथक् टके टके भर ले जवकुट कर १६ सेर पक्के पानी में औटावे जब इसका चतुर्थांश रहे तब उतार छान ले पीछे १०० शोधा भिलावां १६ सेर पानी में औटाय ले जब इसका भी चतुर्थांश रहे तब जुदा रक्खे पीछे इन दोनों को इकट्ठा मिलाय ले पीछे इन दोनों के रस में १०० टके भर गुड़ की चाशनी बनावे उसमें सोंठि, मिरच, पीपल, त्रिफला, नागरमोथा, बायबिड़ंग, चित्रक, सेंधानोन, चन्दन, कूट, अजमोद, तज, पत्रज, नागकेसर, इलायची ये प्रत्येक ओषधियां एक एक टके भर ले महीन पीस डाले फिर एकजीव करे पीछे अच्छा दिन देखि २ टके भर नित्य खाय तो सर्वकोढ़मात्र, बवासीर, व्रणमात्र, कृमिरोग, रक्तपित्त, उदावर्त, कास, श्वास, भगन्दर इन रोगों को यह दूर करता है और आमवात को दूर कर पुष्टई को करता है तथा शरीर की परमकान्ति को कर भूख को बढ़ाता है। इसका खानेवाला खटाई आदि कुपथ्य न करे, गर्म वस्तु न खाय ७–इति भल्लातकावलेह ॥

अथवा मंजीठ, त्रिफला, कुटकी, बच, दारुहल्दी, नींब की छाल, गिलोय इन्हें बराबर ले जवकुटकर ५ टंक का काढ़ा नित्य ले तो कोढ़मात्र, वातरक्त, विसर्प, विस्फोटक इन्हें दूर करता है ८–इति लघुमंजिष्ठादिक्वाथ ॥

अथवा मंजीठ, बावची, पवाँड़, नींबकी छाल, हड़की छाल, हल्दी, आंवला, अडूसा, शतावरि, खरैटी, गंगेरन की छाल,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मुलहठी, महुआ, कटेली, पटोल, खस, गिलोय, रक्तचन्दन ये सब बराबर ले जवकुट कर ५ टंक का काढ़ा बना पीवे तो यह कुष्ठमात्र और वातरक्त को दूर करता है ९–इति मध्यमंजिष्ठादिक्काथ ॥

अथवा मंजीठ, इन्द्रयव, गिलोय, नागरमोथा, बच, सोंठि, हल्दी, दोनों कटेली, नींबकी छाल, पटोल, कूट, कुटकी, भारंगी, बायबिड़ंग, चित्रक, मूर्वा, देवदारु, जलभांगरा, पीपल, त्रायमाण, पाढ़, शतावरि, खैरसार, विजयसार, त्रिफला, चिरायता, बकायन, किरमाला की गिरी, निशोत, बावची, रक्तचन्दन, वरुणा, दात्यूणी, शाखोट, अड़ूसा, पित्तपापड़ा, गौरीसर, अतीस, जवासा, इन्द्रायण की जड़ ये सब बराबर ले जवकुट कर ५ टंक का काढ़ा नित्य ले तो अठारह प्रकार के कोढ़मात्र, वातरक्त, रुधिर के बिकारमात्र, विसर्परोग, त्वचा का शून्यपना इन सब रोगों को दूर करता है १०–इति बृहन्मंजिष्ठादिक्काथ ॥

अथवा कालीमिरच, निशोत, नागरमोथा, हरताल, मैनसिल, देवदारु, दोनों हल्दी, बालछड़, कूट, रक्तचन्दन, इन्द्रायण की जड़, कलौंजी, आक का दूध, गोबर का रस ये सब औषध धेले धेले भर ले शिंगीमुहरा १ पैसे भर, कड़ुआतेल १ सेर, पानी ४ सेर, गोमूत्र ८ सेर ले पीछे इन सबको मधुरी आंच से औटावे जब ये सब जलआदि जलजायँ तेलमात्र आयरहे तब उतार छान ले पीछे इसका मर्दन करे तो सर्वकुष्ठमात्र को यह दूर करता है ११–इति लघुमरिचादितैल ॥

अथवा कालीमिरच, निशोत, दात्यूणी, आक का दूध, गोबर का रस, देवदारु, दोनों हल्दी, बालछड़, कूट, रक्तचन्दन, इन्द्रायणकी जड़, कलौंजी, हरताल, मैनसिल, कनेरकी जड़, चित्रक, कलिहारी की जड़, नागरमोथा, बायबिड़ंग, पवाँड़, सिरस की जड़, कुड़ा की छाल, नींब की छाल, सतोन्य की छाल, गिलोय,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

थूहर का दूध, किरमाला की गिरी, खैरसार, बावची, बच, माल-कांगनी ये सब औषध दो दो टकेभर, सिंगीमुहरा ४ टकेभर, कडुआतेल ४ सेर, गोमूत्र १६ सेर ले इन सबको इकट्ठा चढ़ाय मधुरी आंचसे पकावे जब गोमूत्र आदि सब जल जायँ तेलमात्र रहजाय तब उतार छानले पीछे इस तेल का मर्दन करे तो कोढ़-मात्र को दूर करे और इसका मर्दन यौवनपने को करता है और यह मनुष्य, घोड़ा, हाथी आदि के वायुमात्र के रोगों को भी दूर करता है १२–इति मरिचादितैल ॥

अथवा हरताल का चोखा पत्र कर चित्रक के रससे १ दिन खरल करे पीछे साठी के रस से एक दिन खरल करे पीछे इसकी टिकड़ी कर अच्छी तरह सुखावे फिर इस हरताल को साठी के पञ्चाङ्ग के खार के बीचमें धर चूल्हे पर चढ़ावे और इस हरताल का धुआं न निकलने दे फिर उसकी टिकड़ी को उस साठी के खार के बीच खूब दाब दे पीछे उसके नीचे निरन्तर एक रात दिन तक मधुरी आंच दे अथवा ४ दिन तक दे फिर स्वाङ्ग शीतल हुई उस टिकड़ी को खार में से अच्छेप्रकार चतुर मनुष्य निकाले वह हरताल तोल में पूरी उतरे, निर्धूम और सफ़ेद हो तो इसमें से २ रत्ती मनुष्य खाय उसके ऊपर मरिचादिक क्वाथ ले तो अठारह प्रकार के कोढ़, वातरक्त, उपदंश, फिरंगवायु इन को यह हरताल दूर करता है और इसका खानेवाला नोन, खटाई, कडुआ रस न खाय। धूप में न सोवे यदि नोन विना नहीं रहा जाय तो सेंधानोन खाय और मीठा बहुत खाय १३–इति हरताल की विधि। इसीको तालकेश्वर रस कहते हैं ॥

अथवा पारा, शोधीगन्धक, तामेश्वर, सार, गुग्गुल, चित्रक, शिलाजीत, कुचिला, बच, अभ्रक ये सब बराबर और कणगच के बीज एक औषध के भाग से चौगुना ले प्रथम पारे और गन्धक की कजली करे फिर कजली में सब औषध मिलाय

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

एकजीव करे पीछे इसमें से २ टंक शहद घृत के साथ नित्य खाय ऊपर से चावल, दूधही खाय तो गलितकुष्ठ जाय और शरीर उसका महासुन्दर कामदेवके सदृश होजाय। यह रस खाय तो स्त्रीप्रसङ्ग न करे १४–इति गलितकुष्ठारिरस ॥

अथ विंभूति का यत्न ॥

कूट, मूली के बीज, सरसों, हल्दी, केसर इन्हें सिरस के जल में पकाय लेप करे तो बहुत दिनकी भी विभूति जाय १५ अथवा केले का खार, हल्दी, दारुहल्दी, मूली के बीज, हरताल, देवदारु, शंख का चूर्ण ये सब बराबर ले इन्हें नागरबेल के पत्तों के रस में महीन पीस लेप करे तो विभूति दूर हो १६ ॥

अथ चर्मदलकोढ़ का यत्न ॥

अमचूर में किंचित् सेंधानोन डाल जल से तांबे के पात्र में तांबे के घोटे से खूब पीस लेप करे तो चर्मदल कोढ़ जाय १७॥

अथ पामाकोढ़ का यत्न ॥

ज़ीरा १ टके भर, सिंदूर ५ टकेभर इन दोनों को कड़ुएतेल में खूब पीस पकाय लेप करे तो पामा अच्छी हो १८ अथवा मंजीठ, त्रिफला, लाख, कलिहारी की जड़, हल्दी, आंवलासार गन्धक इन्हें बराबर ले महीन पीस धूप में खूब गर्म करे फिर इनका लेप करे तो पामा अच्छी हो १९ अथवा पारा, दोनों ज़ीरा, दोनों हल्दी, कालीमिरच, सिंदूर, आंवलासार गन्धक, मैनसिल ये बराबर ले पीछे पारे गन्धक की कजली कर इस कजली में ये औषध महीन पीस गौके घृतमें १ दिन खरल करे पीछे इसका मर्दन करे तो पामा दूर हो २० अथवा पारा, आंवलासार गन्धक, नीलाथोथा, कत्था, मेंहदी, खुरासानी अजवाइन, मोम, मालकांगनी ये सब बराबर ले पीछे पारे गन्धककी कजली कर और मोम को घृत में जुदा पिघलावे पीछे ये औषध पृथक् पीस कजली में मिलावे पीछे सब औषध गौके घृत में इकट्ठी कर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

१ दिनतक पीसे पीछे इसका मर्दन करे तो पामा आदि रुधिर के सब रोग जायँ २१ अथवा शोधी आंवलासार गन्धक २ टंक, नीलाथोथा ३ माशे इन दोनोंको पानीसे महीन पीस गोली बांधे पीछे इस गोली को महीन कपड़े में बांध पोटली करे और इस पोटली को गेहूं की अलोनी ३ या ४ बाटी में सेंके फिर महीन पीस घृत में चुपड़ खावे अथवा इसका बूरे से चूरमाकर ५ दिन खाय तो पामाआदि रुधिर के सब विकार जायँ २२ अथवा सेंधानोन, पवाँड़ के बीज, सरसों, पीपल इन्हें कांजी के पानीमें महीन पीस लेप करे तो पाँवकी खुजली दूर हो २३ ॥

अथ कच्छदाद की औषध ॥

आक के पत्तों का रस और हल्दी के काढ़े का रस इनमें सरसों का तेल पकावे पीछे इस तेल का मर्दन करे तो कच्छदाद जाय २४–इति अर्कतैल ॥

अथवा मैनसिल, हीराकसीस, आंवलासार गन्धक, सेंधानोन, सोनामक्खी, पत्थरफोड़ा, सोंठि, पीपल, कलिहारी, कनेर, बायबिड़ंग, चित्रक, दात्यूणी, नींब के पत्ते ये सब औषध धेला धेला भर ले इन्हें जल से महीन पीस इनके पानी में कड़ुआतेल २सेर पकावे और उसीमें आक और थूहर का दूध आध आध पाव डाले और गोमूत्र ४ सेर डाले पीछे इसको मधुरी आंच से पकावे जब ये सब जलजायँ तेलमात्र आयरहे तब इसका मर्दन करे तो असाध्य कच्छदाद जाय और पामा, खुजली और भी रुधिर के सब रोग जायँ २५–इति कच्छराक्षसनाम तैल ॥

अथ दाद का यत्न ॥

कूट, बायबिड़ंग, पवाँड़ के बीज, तिल, सेंधानोन, सरसों ये सब बराबर ले इन्हें खटाई से महीन पीस लेप करे तो दाद, कोढ़ दूर हो २६ अथवा दूब, हड़ की छाल, सेंधानोन, पवाँड़ के बीज, कनेर की छाल ये सब बराबर ले पीछे इन्हें कांजी में अथवा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मट्ठे में महीन पीस लेप करे तो दाद, कच्छ, खाज जायँ २७॥

अथ श्वित्रनाम कोढ़ का यत्न॥

बहेड़े की छाल, हड़ की छाल, कठुम्बर, बावची इनका काढ़ा कर ले तो श्वित्रनाम कोढ़ जाय २८ अथवा हरताल, मैनसिल, चिरमिटी, चित्रक इन्हें गोमूत्र में महीन पीस लेप करे तो श्वित्र नाम कोढ़ जाय। ये सब यत्न भावप्रकाश में हैं २९ अथवा हल्दी ८ टकेभर, गौ का घृत ६ टके, गौ का दूध ४ सेर, मिश्री ५ टके, सोंठि १ टके, कालीमिरच १ टके, पीपल १ टके, तज १ टके, नागकेसर १ टके, बायबिड़ंग १ टके, निशोत १ टके, त्रिफला ३ टके, केसर १ टके, नागरमोथा १ टके ले पीछे इन्हें महीन जुदा जुदा पीस घृत में मकरोय हल्दी और दूध में उसका खेरवा मावा करे पीछे इस मावे समेत खांड़ की चाशनी कर उस में सब ओषधि डाले पीछे इसकी गोली टकाभर की बांधे १ गोली नित्य खाय तो कोढ़, खुजली, फोड़े की दाद इन रोगों को यह दूर करता है ३०—इति हरिद्राखण्ड॥

अथ हरताल मारने की विधि॥

तबकिया हरताल चोखा ले उसमें दशवां हिस्सा सुहागा मिलाय उसकी बाफताके कपड़े में चार पोटली करे पीछे वह पोटली जम्भीरी के रसकेबीचमें धर दोलिकायन्त्र कर उसके नीचे २ प्रहर अच्छी गाढ़ी आंच दे औटावे पीछे इसीतरह कांजी के पानी में औटावे फिर पेठे के पानी में औटावे पीछे तेल में औटावे और इसीतरह त्रिफले के पानी में औटावे पीछे इस हरताल को किसीतरह की खटाई में धोय ले फिर इसे छिलके के बक्कल के रस में २ दिन रात्रि खरल करे पीछे धूप में सुखाय इसका गोला करे फिर गोले को सकोरे के सम्पुट में खूब यत्न से मिलाय सरवे को खाम दे पीछे गजपुट में अरने ऊपले की आंच दे शीतल होने पर उसमें से हरताल को निकाल बकरी के दूध में १ दिन खरल

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

करे पीछे फिर इसका गोला कर धूपमें सुखावे फिर पलाश की ४ सेर राख पक्कीहांड़ी में भरे और उसके बीचमें हरताल का गोला धर खूब राख मुँहतक दाबकर भरे पीछे उस हांड़ी को चूल्हे पर चढ़ाय नीचे आंच दे उसका धुआं न निकलने दे इसी तरह अनुक्रम से मन्द मध्य और अत्यन्त गाढ़ी ३२ प्रहर आंच दे पीछे स्वाङ्ग शीतल होने पर हरताल को निकाले, हरताल सफ़ेद, निर्धूम, तोल की पूरी निकले तो इसे पुराने गुड़ के साथ १ रत्ती खाय ऊपर चने की रोटी, साठी चावल, गौ का घृत ये इक्कीस दिन खाय और नोन खटाई न खाय तो १८ प्रकार के कोढ़, वातरक्त, फिरंगवायु इनको यह हरताल दूर करता है ३१—इति हरतालमारणविधि ॥

अथवा पारा २ टंक, शोधीगन्धक २ टंक, हरताल २ टंक, मैनसिल २ टंक, बाघची ५ टंक, धमासा २ टंक, सिन्दूर २ टंक, दोनों हल्दी ५ टंक इन सबको गौ के घृत से खूब महीन पीस लेप कर २ प्रहर धूप में बैठे फिर स्नान करे तो कोढ़, दाद, कृमि ३ दिन में दूर हों ३२ अथवा छीले की जड़ के सूखे बक्कल २५ टके भर की राख कर उसको नवीन पक्की अच्छी हांड़ी में भर उसके बीच तबकिया चोखा हरताल २५ माशे भर यत्न से धर गाड़ दाब दे फिर उस हांड़ी के ऊपर सरवा ढक पीछे उस हांड़ी को चूल्हे पर चढ़ाय उसके नीचे १ प्रहरतक अत्यन्त अग्नि जलावे फिर स्वाङ्ग शीतल होनेपर नये वस्त्र से छान ले फिर इस राख को २ रत्तीप्रमाण ले पिसाहुआ ज़ीरा १ माशे ले इन दोनों को एक कर पके नागरबेलि के पत्तों के साथ शीतल जल से खाय इसके ऊपर चने की अलोनी रोटी एकमण्डल तक खाय। इसका खानेवाला पवन, धूप से बचता रहे तो अठारह प्रकार के कोढ़, वातरक्त, व्रणमात्र, पिड़िका, वातव्याधि इन सब रोगों को यह दूर करता है ३३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ दाद का यत्न ॥

पवाँड़ के बीज, बावची, सरसों, तिल, कूट, दोनों हल्दी, नागरमोथा ये सब बराबर ले इन्हें मट्ठे में खूब महीन पीस लेप करे तो दाद, कंडू, ब्यौंची ये सब दूर हों ३४ ॥

अथ कोढ़ के दूर होने का लेप ॥

नीलाथोथा, सुहागा ये दोनों २ टंक, बावची ५ टंक इन तीनों को महीन पीस जलभांगरे के रस की इसमें ७ पुट दे फिर इसका लेप करे तो कोढ़ जाय ३५—ये सर्वयत्न वैद्यरहस्य में लिखे हैं ॥

अथ महालेप ॥

पारा एक टकेभर, शंख का खार १ टके, आंधीझाड़े का खार १ टके, तिलों का खार १ टके, साठी का खार १ टके, हड़ का खार १ टके, अड़ूसे का खार १ टके भर और पटोल का खार, अरण्य का खार, जवाखार, सुहागा, सज्जी, नौसादर, आंवला-सार गन्धक, पांचोंनोन, कूट, सोंठि, कालीमिरच, पीपल, डांसरे की जड़, आक की जड़, नीलाथोथा, करिहारी की जड़, हल्दी, जिमींकन्द, गोरखमुण्डी का खार, काहू का खार, पीपल का खार, राई, सरसों, सिंदूर, शिलाजीत, पापड़खार, कबीला, पठानी-लोध, थूहर की जड़, आम्रकी जड़, चित्रक, आकके पञ्चाङ्ग का खार ये सब औषध पृथक् पृथक् एक एक टके भर ले फिर इन सब ओषधियों को महीन पीस इकट्ठा कर गोमूत्र में मिलाय तांबे के बड़े पात्रमें रक्खे फिर इसमें इतनी वस्तु और डाले भैंस, घोड़ा, बकरा, हाथी, ऊंट इनका मूत्र और नींबू का रस, जँभीरी का रस, बिजौरे का रस, नारंगी का रस, चने का खार, सहँजने का रस, राई के संयोग की सातों धातु की कांजी ये सब उसके अनुमान मुवाफ़िक़ डाले फिर उसका मुँह ढांक २१ दिन अच्छे प्रकार से धर रक्खे फिर इसका लेप करे तो सर्व कोढ़मात्र दूर हों और गण्डमाला, विसर्प, बवासीर, ब्यौंची, वायु के सब रोग

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

१ महीने में जायँ। यह रस सारसंग्रह में लिखा है ३६—इति कोढ़रोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

इति षोडशस्तरङ्गः १६ ॥

अथ शीत, पित्त, उदर्द कोढ़, उत्कोढ़ इन रोगों की उत्पत्ति, लक्षण, यत्न ॥

शीतल पवन के स्पर्श करने से कफ और वात दुष्ट होकर पित्त सहित अनेक कारण करके त्वचा में और बाहर वायु और कफ करके शीत पित्तादिक के रोगों को पैदा करते हैं ॥

अथ शीतपित्तादिक का पूर्वरूप ॥

तृषा लगे, अरुचि हो, वमनसी आवे, देह में पीड़ा हो, शरीर भारी हो, नेत्र लाल होजायँ ये लक्षण हों तो जानिये कि शीतपित्तादि का रोग होगा ॥

अथ शीत, पित्त, उदर्द का लक्षण ॥

जैसे कीड़े के काटने से चकत्ते हो आवें वैसे त्वचा के ऊपर चकत्ते बहुत होजायँ और उनमें खुजली हो और पीड़ा बहुत हो और छर्दि और ज्वर हो, दाह लगिजाय तो जानिये कि शीत, पित्त है और इसीको उदर्द कहिये। वायु की आधिक्यता हो तो शीत, पित्त जानिये। कफ की आधिक्यता हो तो उदर्द जानिये यह शिशिरऋतु में बहुत होता है ॥

अथ कोढ़ उत्कोढ़ का लक्षण ॥

वमन को रोंके तो पित्त, कफ दुष्ट होकर लाल लाल खुजली को लिये शरीर में चकत्ते करदें उसे कोढ़ कहिये यह थोड़ी देर रहे और यही बहुत देर रहे तो उत्कोढ़ कहिये ॥

अथ शीतपित्त, उदर्द कोढ़, उत्कोढ़ रोग का यत्न ॥

ओषधियों से वमन कराय दे तो शीतपित्त, उदर्द दूर हों १ अथवा पटोल, नींब की छाल, अड़ूसा, त्रिफला, गुग्गुल, पीपल इनका काढ़ा दे तो शीतपित्त, उदर्द जायँ २ अथवा जुलाब दे तो यह रोग जाय ३ अथवा कड़ुवे तेल का मर्दन करे और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

शरीर को गर्म पानी से धोवे तो शीतपित्त, उदर्द जायँ ४ अथवा त्रिफला शहद से खाय तो शीतपित्त, उदर्द जायँ ५ अथवा मिश्री के संयोग से कुटकी का जुलाब ले तो शीतपित्त, उदर्द जायँ ६ अथवा गुड़ आंवला खाय अथवा अजवाइन, सोंठि, कालीमिरच, पीपल, जवाखार इनका चूर्ण २ टंक ७ दिन गर्म पानीसे ले तो शीतपित्त, उदर्द जायँ ७ अथवा अदरक का रस, पुराना गुड़ खाय तो शीतपित्त, उदर्द जायँ ८ अथवा सरसों, हल्दी, पवांड़ के बीज, तिल इन सबको कड़ुए तेल में महीन पीस लेप करे तो शीतपित्त, उदर्द जायँ ९ अथवा अजमोद ५ टंक, गुड़ ५ टंक इन दोनों को इकट्ठा कर ५ दिन वा ७ दिन नित्य खाय तो शीतपित्त, उदर्द जायँ १० अथवा बकायन का बकला १ टंक महीन पीस गौ के घृत के साथ पीवे तो शीतपित्त, उदर्द जायँ ११ अथवा रुधिर कढ़ाइये तो शीतपित्त, उदर्द जायँ १२ अथवा आंवले और नींब के कोमल पत्तों को घृत में तल १ टंक प्रमाण मनुष्य १५ दिन खाय तो फोड़े का रोग, पित्ती, कृमि, शीतपित्त, खुजली के रोग, गर्मी का रोग इन्हें दूर करता है १३ अथवा छीली अदरक के छोटे छोटे टूक १ सेर करे और गौका घृत २ सेर ले और गौका दूध २२ सेर ले मावा कर उसमें अदरक के टूक घृत से चुपड़ कर डाले पीछे उस मावे के नीचे आंच दे उसका खरा मावा करे और मिश्री १ सेरकी चाशनी पतली अवलेह की सी कर उसमें मावे को डाल और ये औषध महीन पीस डाल पीपलामूल, मिरच, सोंठि, चित्रक, बायबिड़ंग, नागरमोथा, नागकेसर, तज, इलायची, पत्रज, कचूर ये सब औषध पृथक् पृथक् एक एक टके भरले इन्हें महीन पीस मिश्री की चाशनी में डाले पीछे इसको नित्य १ टके भर प्रभात और सन्ध्या को खाय तो शीतपित्त, उदर्द, कुष्ठ, राजरोग, रक्तपित्त, खांसी, अरुचि, वायु का गोला, उदावर्त, सूजन,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

खुजली, कृमिरोग, उदर के रोग इन रोगों को यह अवलेह दूर करता है और बल वीर्य को बढ़ाता है और शरीर को पुष्ट करता है। यह भावप्रकाश में लिखा है १४–इति आर्द्रकावलेह ॥

अथवा सेंधानोन घृत में महीन पीस शरीर में मर्दन करे पीछे लाल कामली ओढ़े तो पित्तीका रोग जाय १५ अथवा गौका घृत, गेरू, सेंधानोन, कुसुम्भ के फूल ये सब बराबर ले इन्हें महीन पीस शरीर में उबटन करे तो पित्ती दूर हो १६ अथवा चिरायता, अडूसा, कुटकी, पटोल, त्रिफला, रक्तचन्दन, नींब की छाल इनका काढ़ा ले तो पित्तीरोग, फोड़ा, दाह, ज्वर, मुखशोष, तृषा के रोग, वमन इन सब रोगों को यह काढ़ा दूर करता है १७ अथवा अरने उपले की राख शरीर में मर्दन करे तो पित्ती जाय १८ अथवा फिटकरी, नागरबेलि के पत्तों के रस में पीस शरीर में मर्दन करे तो पित्ती जाय १९ अथवा लहसुन १ टकेभर खाय अथवा त्रिफला ५ टके भर महीन पीस शहदसे चाटे तो पित्ती जाय। ये सब यत्न वैद्यरहस्य में हैं २० अथवा मेथीदाना १ टकेभर, कलीमिरच १ टके भर, हल्दी १ टके भर इन सबको महीन पीस पीछे इनमें अदरकके रस की ३ पुट दे पीछे २ टंक प्रमाण की गोली कर १ गोली नित्य खाय तो पित्ती के सर्वविकार दूर हों। यह वैद्यरहस्यमें लिखा है २१ इति शीतपित्त, उदर्द, कोढ़, उत्कोढ़रोग, पित्ती के भेदों की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न सम्पूर्ण ॥

अथ अम्लपित्त की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

नोन, खटाई, गर्म वस्तु के खाने से पित्त कोप को प्राप्त हो अम्लपित्त को पैदा करता है। वह अम्लपित्तरोग तीन प्रकार का है। वायु १ कफ २ कफवायु ३ ॥

अथ अम्लपित्त का लक्षण ॥

अन्न न पचे, विना खेद किये श्रम हो, वमनसी आवे, कड़ुवी,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

खट्टी डकार आवे, शरीर भारी हो, हृदय कण्ठमें दाह हो, भोजन में अरुचि हो ये लक्षण हों तो अम्लपित्त कहिये। वह अम्लपित्त दो प्रकार का है। एक तो ऊर्ध्वगामी जो मुख में ही होकर जाय और दूसरा अधोगामी गुदाद्वारा जाय है॥

अथ उर्ध्वगामी अम्लपित्त का लक्षण॥

जो वमन करे सो हरा, पीला, काला, लाल, अत्यन्त निर्मल, मांस के जलसदृश हो और अम्लपित्त कफ से मिला हो तो बहुत चिकना छादे और कड़ुआ, सलोना, तीखा छादे १॥

अथ अधोगामी अम्लपित्त का लक्षण॥

जिसके मल में नानाप्रकार के वर्ण हों और तृषा, दाह, मूर्च्छा, मोह हो, हृदय दूखे, वमनसी आवे, शरीर में चकत्ते हो आवें, अग्नि मन्द होजाय, रोमाञ्च हो, पसीना आवे, शरीर पीला होजावे ये लक्षण हों तब जानिये अधोगामी अम्लपित्तहै २॥

अथ भोजन किये पीछे अम्लपित्त का लक्षण॥

भोजन करे अथवा भोजन न करे तो भी तीखा, खट्टा वमन करे, शरीरमें खाज हो, चकत्ते पड़जायँ, डकारें बहुत आवें और कण्ठ, कुक्षि में दाह, शिर में पीड़ा, हाथ पैरों में दाह, भोजन में अरुचि तथा ज्वर हो ये लक्षण हों तब जानिये इसके अम्लपित्त का रोग है॥

अथ अम्लपित्त में और दोषों का मिलाप होना॥

अम्लपित्त में वायु और कफ का मिलाप हो तो वैद्य मोह को प्राप्त होता है॥

अथ दोषभेद॥

जिसमें कम्प हो, प्रलाप, मूर्च्छा, शरीर में चिमचिमाहट हो, शरीर में पीड़ा और शूल हो, अँधेरी, घुमेर, मोह और हर्ष हो तब जानिये अम्लपित्त में वायु का मिलाप है १ अथवा कफ थूके, शरीर भारी रहे, अरुचि हो, शरीर में शीत लगे, वमन हो,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अग्नि और बल जातारहै, शरीर में खुजली चले और नींद बहुत आवे ये लक्षण हों तब जानिये अम्लपित्तमें कफ मिला है॥

अथ अम्लपित्त का साध्यासाध्य लक्षण॥

अम्लपित्तरोग नवीन उपजा हो तो यत्नसाध्य है और यही बहुत दिन का हो और पथ्य में न चले तो असाध्य जानिये १॥

अथ अम्लपित्त का यत्न॥

अम्लपित्त रोगवाले को पटोल, नींब की छाल, अडूसा ये सब बराबर ले इनका काढ़ाकर इससे वमन करावे तो अम्लपित्त जाय १ अथवा मेढ़ल, शहद, सेंधानोन इनसे वमन करावे तो अम्लपित्त जाय २ अथवा जुलाब से अम्लपित्त जाय ३ अथवा निशोत, शहद, आंवला इनका जुलाब दे तो अम्लपित्त जाय ४ अथवा ऊर्ध्वगामी अम्लपित्त हो तो जुलाब, वमन करावे और अधोगामी अम्लपित्त हो तो जुलाब देना अथवा यव या गेहूं का सत्तू अथवा चावल का सत्तू मिश्री के संयोग से खाय तो अम्लपित्त जाय ५ अथवा यव, अडूसा, आंवला, तज, पत्रज, इलायची इनका काढ़ाकर शहद डाल पीवे तो तत्काल अम्लपित्त जाय ६ अथवा गिलोय, नींब की छाल, पटोल इनका काढ़ा कर शहद डाल पीवे तो महाभयंकर भी अम्लपित्त जाय ७ अथवा अडूसा, गिलोय, पित्तपापड़ा, चिरायता, नींब की छाल, जलभांगरा, त्रिफला, कुलत्थ इन्हें शीतल जल से ले तो अम्लपित्त जाय ८ यह अम्लपित्त चूर्ण है—इति अम्लपित्त रोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न सम्पूर्ण॥

अथ विसर्परोग की उत्पत्ति और लक्षण॥

नोन, खटाई और गर्म वस्तुके खाने से विसर्परोग पैदा होता है। वह फैला हुआ विसर्परोग सातप्रकार का है। वायु १ पित्त २ कफ ३ सन्निपात ४ वातपित्त ५ वातकफ ६ कफपित्त ७॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ विसर्परोग का लक्षण ॥

नोन, खटाई, गर्म वस्तु आदि को बहुत खानेसे वायु, पित्त, कफ कोप को प्राप्त होकर शरीर के रुधिर, मांस आदि सातों धातुओं को बिगाड़ शरीर में छोटी, बड़ी फुंसियों के मण्डलको फैला देते हैं इसीसे वैद्य इस रोग का नाम विसर्प कहते हैं ॥

अथ वायु के विसर्प का लक्षण ॥

कुपथ्य के करने से वायु कोप को प्राप्त हो शरीर में कई जगह छोटी, बड़ी फुंसियां पैदा करे तब वे फुंसियां शरीर में फैल जायँ और उनमें पामरोग के सदृश पीड़ा, खुजली बहुत हो १ ॥

अथ पित्त के विसर्परोग का लक्षण ॥

कुपथ्य से पित्त कोप को प्राप्त हो तब शरीर में छोटी बड़ी फुंसियां हों और उनमें पित्तज्वर के सब लक्षण मिलें और वे फुंसियां बहुत जल्दी फैलजायँ और बहुत लाल हों तो पित्त का विसर्प जानिये २ ॥

अथ कफ के विसर्परोग का लक्षण ॥

कुपथ्य से कफ कोप को प्राप्तहो शरीर में छोटी बड़ी फुंसियों को फैला दे फिर उनमें खुजली बहुत हो और वे फुंसियां चिकनी हों और कफज्वर के सब लक्षण उनमें मिलें तो कफ का विसर्प जानिये ३ ॥

अथ सन्निपात के विसर्परोग का लक्षण ॥

कुपथ्य के करने से सन्निपात कोप को प्राप्तहो शरीर में छोटी, बड़ी फुंसियों को पैदाकर शरीर में तत्काल फैलाय दे और उन फुंसियों में पीछे कहे सब लक्षण मिलें और सन्निपातज्वर के भी सब लक्षण हों तो सन्निपात का विसर्प कहना चाहिये ४ ॥

अथ वातपित्त के विसर्परोग का लक्षण ॥

जिसके शरीर में वातपित्त कुपथ्य के करने से कोप को प्राप्त होकर शरीर में छोटी, बड़ी फुंसियों को पैदा करें और वे शरीर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

में फैल जायँ तब उन फुंसियों को अग्न्याख्य नाम कहिये। अग्नि सदृश उनका रूप हो और वायुपित्तज्वर के लक्षण मिलें और छर्दि, मूर्च्छा, अतीसार, तृषा, भ्रम ये भी हों, शरीर के हाड़ टूटें, अँधेरी आवे, अरुचि हो, सब शरीर अग्नि के सदृश जले, जिस स्थान में होवें उसको काला, नीला अथवा लाल करें, मर्मस्थान में फैलजायँ, उसका अङ्ग बहुत पीड़ा को प्राप्त हो, संज्ञा जाती रहे, नींद न आवे तो यह विसर्परोग असाध्य जानिये। शरीर में चैन न पड़े, मन, देह सब बिगड़ जायँ, शरीर का ज्ञान जाता रहे यह विसर्परोग अत्यन्त असाध्य है ५॥

अथ वातकफ के विसर्परोग का लक्षण॥

वायु. कफ कुपथ्य करने से कोपको प्राप्त हो शरीर में छोटी, बड़ी फुंसियोंको पैदाकर फैलाय दें तो उन फुंसियों का ग्रन्थाख्य नाम कहिये। वे गांठ सदृश होती हैं और कफ से रुकी, थकी पवन कफ को बहुत प्रकार भेदन करे पीछे त्वचा, मांस, नसोंमें प्राप्त हुए रुधिर और शीत को करे, छोटे, बड़े, गोल, भारी, खरदरे, चकत्तों की माला को पैदा करे, उसमें बहुतसी पीली, लाल, ज्वर को लिये फुंसियां हों और श्वास, खांसी, मुखशोष, हिचकी, वमन, भ्रम, मोह, शरीर का रंग और का और, मूर्च्छा, अङ्ग में हड़फूटन, मन्दाग्नि ये भी जिसमें हों तो जानिये कि वायु कफ का विसर्परोग है ६॥

अथ कफपित्त के विसर्परोग का लक्षण॥

कफपित्त अपने कारण से कोप को प्राप्त हो शरीर में छोटी, बड़ी फुंसियों को पैदाकर फैलाय दें उन फुंसियों को वैद्य कर्दम नाम महाभयंकर विसर्परोग कहते हैं। उसमें ये लक्षण होते हैं— ज्वर, शरीर में पीड़ा, अङ्गमें हड़फूटन, प्रलाप, भ्रम, भूख जाती रहे, हाड़ हाड़ टूटें, तृषा हो, शरीर भारी रहे, आंव पड़े, इन्द्रियां पकि जायँ, अङ्ग अङ्ग में पीड़ा हो, फुंसियां सब शरीर में फैल

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जायँ, बहुत लाल, चिकनी, काली सूजन को लिये भारी हों, देर से पकें, गम्भीर कफ हो और दाह बहुत हो, राद बहुत निकले, कांपे, शरीर की नसें निकली रहें और जिसमें मुर्दा कीसी दुर्गन्ध आवे ये लक्षण हों उसे कर्दमनाम विसर्परोग कहिये ७॥

अथ शस्त्रादिक के घांव से उपजे विसर्प का लक्षण॥

शस्त्रादिक की चोट लगने से कोप को प्राप्त हुई वायु रुधिर समेत पित्त को दुष्टकर कुलत्थ के समान शरीर में फुंसियों को पैदा करे फिर उन फुंसियों के फोड़े होजायँ और उनमें सूजन और ज्वर हो, रुधिर काला हो तो शस्त्रघात का विसर्प कहिये ८॥

अथ विसर्परोग का उपद्रव॥

ज्वर, अतीसार, वमन, तृषा हो, मांस बिखर जाय, बुद्धि ठिकाने नहीं रहे, अरुचि हो, अन्न न पचै ये इसके उपद्रव हैं॥

अथ विसर्परोग का साध्यासाध्य लक्षण॥

वायु, पित्त, कफ का विसर्प और अग्नि से उपजा विसर्प तथा मर्मस्थान में उपजा विसर्प असाध्य होता है १॥

अथ विसर्परोग का यत्न॥

जुलाब, वमन, ओषधियों का सेवना, रुधिर कढ़ाना ये सब विसर्परोग को अच्छे हैं १॥

अथ वायु के विसर्परोग का यत्न॥

रास्ना, कमलगट्टा, देवदारु, रक्तचन्दन, महुआ, खरैटी इन को बराबर ले पीछे दूध या घृतसे महीन पीस लेप करे तो विसर्परोग जाय १॥

अथ पित्त के विसर्परोग का यत्न॥

किसोरा, सिंघाड़ा, कमलगट्टा, जलका सिवार, रक्तचन्दन इन्हें महीन पीस धोये घृत या शीतल जल से लगावे तो विसर्प रोग जाय २॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ कफके विसर्परोग का यत्न ॥

त्रिफला, कमलगट्टा, खस, लजालू, कनेर की जड़, नरसलकी जड़, जवासा इन्हें जल से महीन पीस लेप करे तो कफ का विसर्परोग जाय ३ ॥

अथ दशाङ्ग लेप ॥

तगर, सिरस की जड़, मुलहठी, रक्तचन्दन, इलायची, बालछड़, दोनों हल्दी, नेत्रबाला इन्हें जल से महीन पीस गौ का घृत डाल लेप करे तो सब प्रकार के विसर्प जायँ ४ अथवा चिरायता, अड़ूसा, कुटकी, पटोल, त्रिफला, रक्तचन्दन, नींब की छाल ये सब बराबर ले इन्हें जवकुट कर २ टंकका काढ़ा दे तो विसर्प, दाह, ज्वर, सूजन, खुजली, फोड़े, वमन इतने रोगों को यह काढ़ा दूर करता है ५ अथवा कणगच, सतोन्या का बक्कल, करिहारी की जड़, थूहर का दूध, आकका दूध, चित्रक, जलभांगरा, हल्दी, सिंगीमुहरा ये सब बराबर दो टके भर और गौ का मूत्र २ सेर, पानी २ सेर, तिलों का तेल १ सेर ले पीछे इन्हें इकट्ठाकर इसके नीचे मधुरी आंच दे जब सर्वरस जलजाय तेलमात्र रहजाय तब इसका मर्दन करे तो विसर्प, फोड़ा, ब्यौंची इनको यह तेल दूर करता है। ये सब यत्न भावप्रकाश में हैं ६ अथवा बड़ की जटा, नागरमोथा, केले के मध्य का गाभा इनको धोये घृत से लेप करे तो विसर्प और गांठ दूर हों ७ अथवा सिरस के बक्कल को सौबार धोये घृतसे महीन पीस लेप करे तो विसर्परोग और गांठ इनको दूर करता है ८ और कोढ़, फोड़ा, शीतला ये सब जोंक के लगाने से निश्चय जायँ। ये सब यत्न वैद्यरहस्यमें हैं ९—इति विसर्परोगकी उत्पत्ति,लक्षण और यत्न॥

अथ स्नायुरोग (बालारोग) की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

दुष्ट जलके पीने, दुष्ट अन्न के खाने से कोप को प्राप्त हुई वायु हाथ पैरों में फफोले अथवा सूजन को करे पीछे उस फफोले की

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

वायु उस फफोले को फोड़कर उसी जगह प्राप्त हो पित्तकी नसों को सुखाय तांत सदृश डोरा को करती है। वह तांत सदृश डोरा शनैः शनैः बाहर निकलपड़ता है और जो वह टूटजाय तो कोप को प्राप्त होता है। बाहर निकल आवे तो अच्छा हो जाता है। और वही अन्य स्थान हाथ आदि में होजाता है—इससे टोंटा, लँगड़ा भी होजाता है॥

अथ बाला का यत्न॥

५ टंक हींग को शीतल जल से ३ दिन खाय तो बाला का रोग कभी न हो अथवा गौ का घृत ½ भर नित्य तीन दिन पीवे तो बाला का रोग जाय २ अथवा निर्गुण्डी का रस ३ दिन ४ पैसे भर नित्य पीवे तो बाला का रोग जाय ३ अथवा कलौंजी की जड़ शीतल जल से ७ दिन पीवे तो बाला का रोग जाय ४ अथवा अरण्ड की जड़ का रस गौ के घृत से ७ दिनतक पीवे तो बाला का रोग जाय ५ अथवा अतीस, नागरमोथा, भारंगी, सोंठि, पीपल, बहेड़े की छाल ये सब बराबर ले इन्हें महीन पीस २ टंक नित्य सात दिन गर्म पानी से ले तो बालाका रोग जाय ६ अथवा सहँजने की जड़ और पत्तों को कांजी के पानी से पीस सेंधानोन मिलावे पीछे उस पर बांधे तो बाला का रोग जाय ७ अथवा कांटेवाली जाती की कंकाजड़ को जलसे पीस बाला पर ७ दिन बांधे तो निश्चय बाला का रोग जाय। ये सब यत्न भावप्रकाश में हैं ८॥

अथवा कूट, सोंठि, सहँजने की जड़ इन्हें पानी से महीन पीस बाला के ऊपर लेप करे अथवा इन ओषधियों को पीवे तो बाला का रोग जाय ९ अथवा धतूरे के पत्ते तेल लगाय बाला के ऊपर बांधे तो बाला का रोग जाय १० अथवा बबूल के बीज को कांजी से सिझाय बाला के ऊपर बांधे तो बाला का रोग जाय ११ अथवा बाला के मन्त्र से बाला जाय। मन्त्र—विरूप

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

नाम बावन के पूत सूतकाढ़ि किये बहुत पाक फूट पीड़ा करै विरूपनाथ की आज्ञा फुरै ॥ इस मन्त्र से बाला ऊपर गुड़को ७ बार मन्त्रित कर बालावाले को खिलावे तो बाला जाय। ये यत्न वैद्यरहस्य में हैं १२ अथवा कबूतर की बीट की शहद से गोली बांध ७ दिन निगलाय दे तो बाला कभीभी न हो। यह वैद्यरहस्य में लिखा है १३ अथवा शहद में सज्जी पीस लेप करे तो बाला का रोग जाय १४—इति बालारोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

अथ विस्फोटकरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

कडुवी, खटाई, गर्म, रूखी, खारी वस्तु के खाने से, अजीर्ण से, धूप में रहने से, भोजन पर भोजन करने से, शीत, उष्ण, वर्षादि जहां बहुत हों अथवा न हों या इनकी विपरीतता से कोप को प्राप्त हुए वायु, पित्त, कफ ये दोष से शरीर की त्वचा में प्राप्त हो शरीर के रुधिर और मांस और हाड़ को दूषित करते हैं। शरीर में भयंकर फोड़े को पैदा कर पहले ज्वर को उपजाते हैं इसे विस्फोटकरोग कहिये १ ॥

अथ विस्फोटकरोग का लक्षण ॥

ज्वर को लिये फोड़े में आगसी जले ऐसा फोड़ा पके तो रक्तपित्त से उपजे फोड़े शरीर में सर्वत्र हों अथवा कहीं होयँ उसे विस्फोटक कहिये २ ॥

अथ वायु के विस्फोटक का लक्षण ॥

मथवाय हो, फोड़े में पीड़ा बहुत हो, ज्वर, तृषा और हड़-फूटन हो, व्रण काला हो ये लक्षण हों तो वायु का विस्फोटक जानिये १ ॥

अथ पित्त के विस्फोटक का लक्षण ॥

फोड़े में ज्वर, दाह, पीड़ा हो, जल्दी फूटे और पकिआवे, तृषा लगे, फोड़े के पीले, लाल व्रण हों ये लक्षण हों तो पित्त का विस्फोटक जानिये २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ कफ के विस्फोटक का लक्षण ॥

छर्दि, अरुचि हो देर से पके वह कफ का विस्फोटक है ३ ॥

अथ वात-पित्त के विस्फोटक का लक्षण ॥

बहुत पीड़ा हो और वात-पित्त के लक्षण मिलते हों उसे वात-पित्त का विस्फोटक जानिये ४ ॥

अथ वायु-कफ के विस्फोटक का लक्षण ॥

शरीर भारी हो, खुजली चले तो वायु-कफ का जानिये ५ ॥

अथ पित्त-कफ के विस्फोटक का लक्षण ॥

खुजली, दाह, ज्वर, छर्दि हो तो कफ-पित्त का जानिये ६ ॥

अथ सन्निपात के विस्फोटक का लक्षण ॥

फोड़े के बीचमें गढ़े हों और ऊंचेभी हों और फोड़े गाढ़े हों, थोड़े पकें, फोड़ों में दाह हो, ललाई बहुत हो, तृषा, मोह, मूर्च्छा हो, फोड़ों में पीड़ा और ज्वर, प्रलाप हो, शरीर कांपै ये लक्षण हों उसे सन्निपात के लक्षण का कहिये ये असाध्य हैं ७ ॥

अथ रुधिर के विस्फोटक का लक्षण ॥

जिसमें पित्त के फोड़े के सब लक्षण हों, फोड़े का चिरामिठी के सदृश वर्ण हो, रुधिर निकले, दाह हो तो यह रोग यत्न से भी अच्छा नहीं होता है ॥

अथ विस्फोटक के उपद्रव ॥

तृषा, श्वास, मांस का संकोच और उसमें दाह हो, हिचकी आवें, ज्वर हो, मर्मस्थल में फोड़े फैलजायँ ये इसके उपद्रव हैं ॥

अथ विस्फोटक का साध्यासाध्य लक्षण ॥

एकदोष का साध्य, दो दोष का कष्टसाध्य, त्रिदोष का और जिस में बहुत उपद्रव हों वह असाध्य है ॥

अथ विस्फोटकरोग का यत्न ॥

विस्फोटक रोगवाले को लंघन और वमन करावे और जुलाब देवे और पुराने शालि, चावल, यव, गेहूं, मूंग, मसूर, अरहर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

ये अच्छे हैं १ अथवा दशमूल का काढ़ा, रास्ना, दारुहल्दी, खस, कटेली, गिलोय, धनियां, नागरमोथा इनका काढ़ा दे तो बायु का विस्फोटक जाय १ अथवा दाख, खँभारि, छुहारा, पटोल, नींब की छाल, अड़ूसा, कुटकी, चावल की खील, जवासा इनका काढ़ा दे तो पित्त का विस्फोटक जाय २ अथवा चिरायता, खुरासानीबच, अड़ूसा, त्रिफला, इन्द्रयव, कुड़ा की छाल, पटोल इनका काढ़ा शहद मिलाय दे तो कफका विस्फोटक जाय ३ अथवा चिरायता, कुटकी, नींब की छाल, मुलहठी, नागरमोथा, पटोल, पित्तपापड़ा, खस, त्रिफला, कुड़ाकी छाल इनका काढ़ा दे तो सबप्रकार का विस्फोटक जाय ४ अथवा चावल, कुड़ा की छाल इन्हें जल से महीन पीस फोड़े के ऊपर लेप करे तो विस्फोटक जाय ५ अथवा गिलोय, पटोल, चिरायता, अंड़ूसा, नींब की छाल, पित्तपापड़ा, खैरसार इनका काढ़ा दे तो विस्फोटकरोग का ज्वर जाय ६ अथवा चन्दन, नागकेसर, गौरीसर, चौराई की जड़, सिरसा का बक्कल, चमेली के पत्ते इन्हें जल से महीन पीस फोड़ों के ऊपर लेप करे तो विस्फोटक जाय ७ अथवा कमलगट्टा, रक्तचन्दन, पठानीलोध, खस, गौरीसर इन्हें जल से महीन पीस लेप करे तो विस्फोटक जाय ८ अथवा जियापोता की मींगी जल से महीन पीस लेप करे तो विस्फोटक, कांखोलाई, गले की गांठि, कान की गांठि और फोड़ा, फुंसीमात्र को यह लेप दूर करता है। ये सब यत्न भावप्रकाश में हैं ९॥ अथवा दशाङ्गलेप किशोरगुग्गुल इससेभी ये रोग जाते हैं १०—इति विस्फोटकरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न॥

अथ फिरंगरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न॥

फिरंगरोग उपदंश वायु का भेद है वह बहुत गर्मीवाली स्त्रियों के सङ्ग से अथवा उसका सङ्ग किसी और ने किया हो सो जहां मूते वहां यह भी मूते अथवा उसका किसीतरह भोजनादिक

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

में सङ्ग करे तो वायु अपने कारण से कोप को प्राप्तहो इस रोग को प्रकट करे अथवा जो क्षीणपुरुष हो और मैथुन बारम्बार करे तब वह अत्यन्तक्षीण होवे तब इसके बंधेज न रहे और वायु से नानाप्रकार की शरीर में पीड़ा हो तब इसके वायु, पित्त, कफ ये सब अत्यन्त कोप को प्राप्त हों और यह आगन्तुकनाम फिरंगवायु को करें। वह फिरंगवायु तीन प्रकार की है। शरीर की मध्य नसों में धँसजाय॥

अथ शरीर की त्वचा के बाहर हो उसका लक्षण॥

लिङ्गेन्द्रिय के ऊपर फुंसी और फटने आदिके चिह्न हों और वहां थोड़ी पीड़ा हो तो सुखसाध्य है। यह यत्न करने से मिटजाय १॥

अथ शरीर की सन्धियों और नसों में धँसजाय उसका लक्षण॥

शरीर में कीड़े के काटने की सी चटें पड़ जायँ, मोरियां, जांघ, पीठ इनमें बहुत पीड़ा और सूजन हो सो कष्टसाध्य है २॥

अथ शरीर के बाहर हो उसका लक्षण॥

ये सब कहे लक्षण हों और बहुत दिनतक रहे सो महाकष्ट-साध्य है ३॥

अथ फिरंगवायु का उपद्रव॥

शरीर क्षीण पड़जाय, बल जाता रहे, नाक गलिजाय, अग्नि मन्द होजाय, मांस, रुधिर सूखिजाय, हाड़मात्र रहजायँ ये इसके उपद्रव हैं ये अच्छे नहीं हैं १॥

अथ फिरंगवायु का यत्न॥

रसकपूर के साधने की और खाने की विधि॥ रसकपूर ४ रत्ती ले गेहूं के आटे को पानी से उसन उसके बीच रसकपूर को धर उसकी गोली करे पीछे लवङ्ग को महीन पीस उसके चूर्ण में गेहूं के चून की गोली रसकपूरसमेत लपेटे पीछे उस गोली को शीतल जल से निगलजाय दांत न लगावे इसके ऊपर कत्थे

In Public Domain, Chamoli Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

चूने विना नागरबेल के पत्ते चावे और नोन, खटाई न खाय, खेद न करे, धूपमें न रहे इसीतरह ३ दिन करे तो फिरंगवायु जाय १॥

अथ संप्रसारण गुटिका ॥

पारा १ टंक, खैरसार १ टंक, अकरकरा २ टंक, शहद ३ टंक, इन सबको महीन पीस एकजीव करे पीछे इनकी ७ गोली करे १ गोली नित्य प्रभात शीतल जल से ले तो फिरंगवायु जाय और इसके ऊपर नोन, खटाई न खाय २ अथवा पारा २ टंक, आंवलासार गन्धक २ टंक, चावल २ टंक इन तीनों को खरल में महीन पीस कजली करे पीछे इनकी ७ पुड़ियां करे पीछे १ पुड़िया को नित्य इन्द्रिय में धूनी दे तो फिरंगवायु जाय ३ अथवा पीले फूल की खरेटी के पत्तों का रस १ टंक, पारा १ टंक इन दोनों को दोनों हाथों में मीस ले पारा और वह रस हाथों में जबतक दीखे तबतक चरावे पीछे हाथों को कुछ तपाय ले जहांतक पसीना आवे इसीतरह ७ दिन करे तो फिरंगवायु जाय और नोन, खटाई न खाय ४ अथवा नींब के पत्ते ८ टके, हड़की छाल ७ टके, आंवला ७ टकेभर, हल्दी १ टंक इन सब को महीन पीस ४ माशे शीतल जल से नित्य ७ दिन ले तो बाहर भीतर की फिरंगवायु जाय ५ अथवा चोखी चोबचीनी का चूर्ण ४ माशे ले शहद से १५ दिन चाटे तो यह रोग जाय इसके ऊपर नोन, खटाई न खाय और नोन खाय तो सेंधानोन खाय ६ अथवा १ टंक पाराको कसेले के रसमें खरल करे फिर इसमें गुग्गुल ५ टंक, अकरकरा ५ टंक, त्रिफला ५ टंक ये सब महीन पीस और शहद ५ टंक, गौका घृत ५ टंक मिलाय इस चूर्ण को नित्य २१ दिन तक ५ टंक खाय अथवा इसका मर्दन करे तो फिरंगवायु जाय इसके ऊपर नोन, खटाई न खाय। ये सब यत्न भावप्रकाश में हैं ७ अथवा जुलाब से अथवा रुधिर के कढ़ाने से फिरंगवायु जाय ८ अथवा पारा, शिंगरफ़, नीलाथोथा, हीराकसीस, शोधी आंवलासार

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

गन्धक ये सब बराबर ले इन्हें खरल में एकजीव कर इसका भुरकादे अथवा इसका लेप करे तो फिरंगवायु जाय ९–इति सूतक का लेप॥

अथवा १०० बार के धोये घृत का लेप करे तो फिरंगवायु जाय १० अथवा नीलाथोथा, मोम इन दोनों को घृत में पकाय इनका लेप करे तो फिरंगवायु जाय ११ अथवा कडुआ तेल १ टंक, मोम ५ टंक, कबीला, बेर ये दोनों धेलेभर ले सिन्दूर २ टंक, सोरा २ टंक, मुर्दाशंख २ टंक इन सबको महीन पीस पीतल के पात्र में मधुरी आंच से पकावे पीछे हाथों से मथ डब्बी में भर रक्खे फिर इसकी कजली दे तो फिरंगवायु के फोड़े, उपदंश इनको यह मरहम अच्छा करता है १२–इति मलहर मरहम॥

अथवा सिन्दूर आधपाव, गौ का घृत १ सेर इन दोनों को मथ शरीर में लेप करे पीछे पराल को शरीर में लपेटे इसीतरह ३ दिन करे इसके ऊपर खीर खाय तो व्रणमात्र, विस्फोटक, फिरंग के चकत्ते ये सब सूखजायँ १३ अथवा पारा, शीशा ये दोनों बराबर ले फिर इन दोनों की खरल में कजली करे और गेहूँ का तुष, कच्ची इमली, नींब के पत्ते, धमासा ये सब बराबर ले नींबू के रस से खरल करे पीछे २ टंक भर की गोली बांधे वस्त्र से शरीर को ढांककर १ गोली की धूनी ले इसीतरह ७ दिन करे तो सब प्रकार का विस्फोटक जाय इसके ऊपर खीर २१ तथा १४ दिन खाय १४ अथवा त्रिफला, खैरसार, जावित्री ये सब बराबर ले इन्हें पानी में औटाय मुख को धोवे पीछे धूनी ले तो फिरंगवायु जाय १५ अथवा कालाजीरा, कूट ये दोनों तीन तीन टंक ले और पुरानागुड़ इनसे तिगुना ले इन्हें कूटकर इनकी १५ गोली करे फिर १ गोली प्रभात और एक सन्ध्यासमय खाय तो फिरंगवायु जाय १६ और इसके ऊपर गेहूँ की रोटी घृत से चुपड़ खाय–इति फिरंगगजकेशरी रस॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथवा शिंगरफ़ ६ माशे, सुहागा १० माशे, अकरकरा १० माशे, मोम १० माशे इन्हें महीन पीस इनकी गोली १ रत्ती प्रमाण की करे पीछे १ गोली की बेर की कोंपल में ७ दिन धूनी दे तो फिरंगवायु जाय १७ अथवा सहँजने का बक्कल, बड़का बक्कल, काहू का बक्कल इनका काढ़ा ले तो ७दिन में फिरंगवायु जाय १८ अथवा शिंगरफ़ ४ माशे, मैनसिल ४ माशे इन्हें महीन पीस बेर की लकड़ी की अग्नि में २ माशेकी निर्वात स्थान में कपड़ा ओढ़ाय गुदा में धूनी दे तो फिरंगवायु जाय १९–इति हिंगुलादिधूम ॥

अथ रसकपूर से मुख आया हो उसका यत्न ॥

पीपल का बक्कल, गूलर का बक्कल, बरगद और पकरिया का बक्कल, बड़ का बक्कल, चेन का बक्कल इनका काढ़ा कर उसके कुल्ले करे तो मुखकी सूजन दूर हो २० अथवा जीरा ५ टंक, खैरसार २ टंक इन्हें जल से पीस छाले में लगावे तो मुखपाक जाय २१–इति फिरंगरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न सम्पूर्ण॥

अथ मसूरिका नाम शीतला की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

कड़ुवी, नोन की, खारी, विरुद्ध वस्तुओं के खाने, भोजन पर भोजन करने, बहुत शाकादिक और नोन शाक, मांस के खाने और दुष्ट पवन के सेवन से, दुष्टग्रह के आने से, देश में शीतला के उपद्रवों से शरीरमें रुधिर दुष्टहोकर मसूर की आकृति फुंसियों को पैदा करता है। मसूरिका नाम रोग १४ प्रकार का है। वायु १ पित्त २ कफ ३ रुधिर ४ सन्निपात ५ चर्म ६ रोमान्तिका ७ सातों-धातुगत रसगत ८ रक्तगत ९ मांसगत १० मेदगत ११ अस्थिगत १२ मज्जागत १३ शुक्रगत १४ ॥

अथ वायु की मसूरिका का लक्षण ॥

फुंसियां काली और रूखी हों, पीड़ा बहुत हो, कड़ी हों ये लक्षण हों तो वायु की मसूरिका जानिये १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ पित्त की मसूरिका का लक्षण ॥

फुंसियां लाल, पीली, काली, दाह युक्त हों, पीड़ा बहुत हो और शीघ्र पकें ये लक्षण पित्त की मसूरिका के जानिये २ ॥

अथ कफ की मसूरिका का लक्षण ॥

फुंसियां सफ़ेद और चिकनी, बड़ी हों, खुजली आवे, मन्द पीड़ा हो और देरसे पकें ये लक्षण कफ की मसूरिकाके कहिये ३॥

अथ रुधिर की मसूरिका का लक्षण ॥

जिसमें अतीसार और ज्वर बहुत हो और पित्त के भी लक्षण हों उसे रुधिर की मसूरिका कहिये ४॥

अथ सन्निपात की मसूरिका का लक्षण ॥

फुंसियां नीली और चपटी हो फैल जायँ, बीच में खाज को लिये हों, पीड़ा बहुत हो, राद पड़गई हो, देरसे पकें और बहुत हों ये लक्षण सान्निपात की मसूरिकाके कहिये ५ ॥

अथ चर्म में उपजी मसूरिका का लक्षण ॥

चर्म में उपजी मसूरिका कण्ठको रोक के अरुचि, तन्द्रा, प्रलाप और अप्रीति को करती है। यह बहुत यत्न से अच्छी होवे६॥

अथ रोमान्तिका नाम रोग में प्राप्त हुई मसूरिका का लक्षण ॥

प्रथम ज्वर हो पीछे रोम रोम में कफ, पित्तसे फुंसियां हों वे कुछ एक ऊंची हों और इसमें खांसी तथा अरुचि हो तो रोमान्तिका कहिये ७॥

अथ रस में प्राप्त हुई मसूरिका का लक्षण ॥

त्वचा में प्राप्तहुई मसूरिका पानी के बुद्बुदे के सदृश हों, इनमें स्वल्प दोष हो और वे फूटें तब उनमें पानी निकले ८॥

अथ रुधिर में प्राप्तहुई मसूरिका का लक्षण ॥

फुंसियां लाल हों, तत्काल पकें, त्वचा में होजायँ और यही दुष्ट हुई साध्य नहीं है और येही फूटी हुई रुधिर को बहाती हैं ९॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ मांस में प्राप्तहुई मसूरिका का लक्षण ॥

फुंसियां कठोर और चिकनी हों, देरसे पकैं, त्वचा में हों, गात्र में शूल चले, खुजली हो, दाह, मूर्च्छा, तृषा ये हों १० ॥

अथ मेद में प्राप्तहुई मसूरिका का लक्षण ॥

फुंसियां मण्डल के आकार, कोमल, कुछ एक ऊंची हों, उन से भयंकर ज्वर हो, वे फुंसियां बड़ी और चिकनी हों, शूल को लिये हों, जिन से मोह, अप्रीति, ताप हो तो उनमें कोई एक मनुष्य जीवे ११ ॥

अथ हाड़ व मज्जा में प्राप्तहुई मसूरिका का लक्षण ॥

फुंसियां छोटी, गात्र के समान रूखी, चपटी, कुछ एक ऊंची हों, उनमें मोह, पीड़ा और अप्रीति बहुत हो १२।१३ ॥

अथ शुक्र में प्राप्तहुई मसूरिका का लक्षण ॥

फुंसियां प्रथमही पकीसी दीखें और चिकनी हों जिनमें बहुत पीड़ा, अप्रीति, दाह, उन्माद ये भी हों तो ऐसे लक्षणवाला न जीवे १४ ॥

अथ मसूरिका का साध्य लक्षण ॥

त्वचा-रक्त में मसूरिका हों और पित्त से उपजी हों अथवा कफ से उपजी हों अथवा कफ-पित्तसे उपजी हों तो साध्य जानिये और ये विना यत्न ही अच्छी हों ॥

अथ मसूरिका का असाध्य लक्षण ॥

जो सन्निपात से उपजी हों और मूँगे के सदृश, जामुन के सदृश, रुधिर के सदृश, अलसी के फूलसदृश वर्ण हो तो मसूरिका असाध्य है। इसके अनेक वर्ण हैं ॥

अथ मसूरिका का यत्न ॥

मसूरिका के प्रारम्भ में सफ़ेद चन्दन को भिगोय ७ दिन लेप करे तो मसूरिका थोड़ी निकलें ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ वायु की मसूरिका का यत्न ॥

दशमूल, रास्ना, आंवला, खस, धमासा, गिलोय, धनियां, नागरमोथा इनका काढ़ा दे तो वायुकी मसूरिका जायँ १ अथवा मंजीठ, बड़ के अंकुर, सिरस का बक्कल, गुग्गुल का बक्कल, घृत मिलाय इनका लेपकरे तो वायु की मसूरिका अच्छी हों २ अथवा गिलोय, महुआ, दाख, मूर्वा (मुरहरी), दाड़िम का बक्कल इनका काढ़ा कर गुड़ डाल पीवे तो वायु की मसूरिका अच्छी हों पकें नहीं ३ अथवा मसूरिका में शालि के चावल, मूँग, मसूर, मिश्री आदि खाय परन्तु नोन न खाय यदि खाय तो थोड़ा सेंधा-नोन खाय ४ ॥

अथ पित्त की मसूरिका का यत्न ॥

पटोल की जड़ का काढ़ा ले अथवा पानों का रस पीवे तो पित्त की मसूरिका अच्छी हों ५ अथवा नींबकी छाल, पित्तपापड़ा, पाढ़, पटोल, दोनों चन्दन, खस, कुटकी, आंवला, अड़ूसा इनका काढ़ा मिश्री मिलाय ले तो पित्त की मसूरिका जायँ ६ ॥

अथ कफ की मसूरिका का यत्न ॥

अड़ूसा, चिरायता, त्रिफला, जवासा, पटोल, नींब की छाल इनका काढ़ा शहद डाल दे तो कफ की मसूरिका जायँ ७ ॥

अथ रुधिर की मसूरिका का यत्न ॥

इसमें रुधिर कढ़ावे तो रुधिर की मसूरिका जायँ ८ ॥

अथ सर्व मसूरिकामात्र का यत्न ॥

पाढ़, पटोल, कुटकी, दोनों चन्दन, खस, आंवला, अड़ूसा, जवासा इनका काढ़ा मिश्री डाल दे तो सब मसूरिकामात्र अच्छी हों ९ ॥

अथ मसूरिका में हुए कण्ठव्रण का यत्न ॥

आंवला, महुआ इनके काढ़े में शहद मिलाय कुल्ला करे तो कण्ठ के व्रण अच्छे हों १० ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ मसूरिका में आंखें चिपट गई हों उसका यत्न ॥

महुआ के पानी से अण्डकोश का सेंक करे तो आंखेंखुलें ११॥

अथ मसूरिका में हुये नेत्रव्रण का यत्न ॥

महुआ, त्रिफला, मूर्वा, दारुहल्दी, कमलगट्टा, खस, पठानी-लोध, मंजीठ इनका लेप करे तो नेत्रों का व्रण अच्छा हो फिर उस जगह व्रण न हो १२ अथवा बड़ का बक्कल, गूलर का बक्कल, पीपल का बक्कल इनका नेत्रों के ऊपर लेप करे तो नेत्र अच्छे हों १३ अथवा अरने उपले की राखके लगाने से मसूरिका अच्छी हों। ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं १४ ॥

अथ मसूरिका का भेद शीतला का स्वरूप ॥

प्रथम कभी विषमज्वर बहुत हो, कभी थोड़ा, कभी शीत लगे, कभी गर्मी, उसका भी नियम रहे नहीं पीछे मसूरिका के आकार फुंसियां निकलें वे बड़ी होजायँ ज्वरके ३ दिन पीछे ७ दिनतक निकला करें और पीछे ढलें उसे शीतला कहिये वह शीतला सात प्रकार की है ॥

अथ शीतला का यत्न ॥

शीतला पकी हों तो अरने उपले की राख नीचे बिछाइये १ अथवा नींब की डाली से मक्खी उड़ाइये २ इसके ज्वर में शीतलजल पिलाइये ३ शीतला को मनोहर शीतलस्थान में स्थापिये पवित्र हो शीतला का पूजन कीजे और शीतला में बहुत औषधका यत्न न कीजे ४ अथवा शीतल जल से हल्दी को पीवे तो उसके शीतला के फोड़े बहुत कम हों ५ अथवा केले के जल से सफ़ेद चन्दन को अथवा अड़ूसे के रस में महुआ को अथवा शहद के साथ महुआ को शीतला निकसने से पहले प्यावे तो उसके शीतला का कोई विकार नहीं हो ६ ॥

अथ शीतलावाले की रक्षा ॥

जिस घर में शीतलावाला रहे उस घरके द्वार में नींब के पत्ते

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बांधिये अथवा चन्दन, अडूसा, नागरमोथा, गिलोय, दाख इन का काढ़ा दीजे तो शीतला का ज्वर जाय ७ अथवा जप, होम, दान, ब्राह्मणभोजन, शिव पार्वतीजी का पूजन श्रद्धा से कराइये ८ अथवा शीतला के आगे शीतलास्तोत्र पढ़ाइये ॥

अथ शीतलास्तोत्र ॥

स्कन्द उवाच ॥ भगवन् देवदेवेश शीतलायाः स्तवं शुभम् ॥ वक्तुमर्हस्यशेषेण विस्फोटकभयापहम् १ ॥ ईश्वर उवाच ॥ वन्देहं शीतलां देवीं सर्वरोगभयापहाम् ॥ यामासाद्य निवर्तेत विस्फोटकभयं महत् २ शीतले शीतले चेति यो ब्रूयाद्दाहपीडितः ॥ विस्फोटकभयं घोरं क्षिप्रं तस्य विनश्यति ३ यस्त्वामुदकमध्ये तु धृत्वा संपूजयेन्नरः ॥ विस्फोटकभयं घोरं कुले तस्य न जायते ४ शीतले तनुजान् रोगान् नृणां हरसि दुस्तरान् ॥ विस्फोटकविशीर्णानां त्वमेकाऽमृतवर्षिणी ५ गलगण्डग्रहा रोगा ये चान्ये दारुणा नृणाम् ॥ त्वदनुध्यानमात्रेण शीतले यान्ति संक्षयम् ६ न मन्त्रो नौषधं किञ्चित् पापरोगस्य विद्यते ॥ त्वमेका शीतले धात्रि नान्यां पश्यामि देवताम् ७ मृणालतन्तुसदृशीं नाभिहृन्मध्यसंस्थिताम् ॥ यस्त्वां विचिन्तयेद्देवि तस्य मृत्युर्न जायते ८ श्रोतव्यं पठितव्यं वै नरैर्भक्तिसमन्वितैः ॥ उपसर्गविनाशार्थं परं स्वस्त्ययनं महत् ९ शीतलाष्टकमेतद्वै न देयं यस्य कस्यचित् ॥ किंतु तस्मै प्रदातव्यं भक्तिश्रद्धान्वितश्च यः १० शीतले त्वं जगन्माता शीतले त्वं जगत्पिता ॥ शीतले त्वं जगद्धात्री शीतलायै नमो नमः ११ ॥ इति स्कन्दपुराणे शीतलास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

अथ शीतला का और भेद ॥

वायु-कफ से उपजे उसे कोद्रवा कहिये कोदों की सी आकृति हो ॥ वायु-कफ की भी होजाय उसमें अङ्ग अङ्ग में गर्मी हो, सब शरीर दरदरासा होजाय यह सातदिन में अथवा बारहदिन में औषध विना ही अच्छी हो इसे लौकिकमें बोदरी और भोरी कहते

In Public Domain, Chandigarh Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

हैं इनमें गर्मी बहुत हो, शरीर में सरसों के आकार पीली पीली फुंसियां हों। ये सब बालकों के होती हैं। ये सब शीतलाओं के भेद हैं—इति मसूरिका नाम शीतला, बोदरी, भोरी की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न सम्पूर्ण ॥

इति सप्तदशस्तरङ्गः १७ ॥

अथ क्षुद्ररोगों की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

अजगल्लिका नाम फुंसी का लक्षण ॥

जो फुंसी चिकनी हो, शरीर के व्रण सदृश हो, जिसमें पीड़ा न हो और मूँगप्रमाण हो वह कफ-वायुसे उपजती है १ ॥

अथ यवप्रच्छा फुंसी का लक्षण ॥

यवके आकार हो और कड़ी, गठीली हो, मांस में रहती हो, यह कफ-वायु से उपजती है २ ॥

अथ अन्त्रालजा फुंसी का लक्षण ॥

जो फुंसी भारी, सूधी और ऊँची मण्डल सहित हो, राद जिसमें थोड़ी हो, यह कफ-वायुसे उपजती है ३ ॥

अथ विवृतानाम फुंसी का लक्षण ॥

फटे मुँह की होय जिसमें दाह बहुत हो, पक्के गूलर के फल समान हो, मण्डल के सहित हो ४ ॥

अथ कच्छपिका फुंसी का लक्षण ॥

पांच अथवा छः गांठि हों, वे भयंकर हों, कछुवासी ऊँची हों ये कफ-वायु से उपजती हैं ५ ॥

अथ वाल्मीकि फुंसी का लक्षण ॥

कुपथ्य करनेसे कन्धे, कांख, हाथ, पैर, गला इन स्थानों में बामी के आकार जो गांठि हो पीछे वह बढ़े और अनेक मुख हों उन से राद निकले, पीड़ा हो, वे ऊँची हों और विसर्परोग के मुवाफ़िक़ फैल जायँ इसका यत्न नहीं है ६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ इन्द्रवृद्धनाम फुंसी का लक्षण ॥

कमलकेबीच कर्णिकामें जो कमलगट्टे का घर है उसके आकार फुंसियां चारोंओर वायुपित्त से हों उसे इन्द्रवृद्ध फुंसी कहिये ७ ॥

अथ गर्दभिका फुंसी का लक्षण ॥

मण्डल के आकार गोल हो, ऊँची और लाल हो और उस में पीड़ा हो तो उसे वायुपित्त से उपजी गर्दभिका कहिये ८ ॥

अथ पाषाणगर्दभिका फुंसी का लक्षण ॥

यह डाढ़ी की सन्धि में सूजन को लिये या स्थिर कफयुक्त हो, इसमें पीड़ा मन्द हो और चिकनी हो उसे पाषाणगर्दभिका फुंसी कहिये ९ ॥

अथ पनसिका फुंसी का लक्षण ॥

कान के बीच में हो उसमें पीड़ा बहुत हो और वह स्थिर हो यह वायुकफ से होती है इसे पनसिका कहिये १० ॥

अथ जालगर्दभिका फुंसी का लक्षण ॥

पहले थोड़ी सूजन हो पीछे विसर्प के सदृश फैल जाय तथा पकेनहीं, दाह-ज्वरको करे उसे जालगर्दभिका फुंसी कहतेहैं ११॥

अथ इरिवेल्लिका फुंसी का लक्षण ॥

जो मस्तक में गोल फुंसी हो और जिसमें ज्वर को लिये पीड़ा बहुत हो वह सन्निपात से हुई इरिवेल्लिका होती है १२ ॥

अथ कांखोलाई का लक्षण ॥

भुजों के एकदेश में अथवा पसवाड़े के एक देशमें अथवा कन्धों के एकदेश में पीड़ा को लिये पित्तके कोप से काला फोड़ा हो उसे कांखोलाई कहते हैं और कई एक पाछने के दोष से कांखमें फोड़े हों उसे भी कांखोलाई कहते हैं १३ ॥

अथ अग्निरोहिणी फुंसी का लक्षण ॥

कांख के एकदेश में मांस को विदीर्ण करनेवाला जो भयंकर फोड़ा हो और उस फोड़े में दाह ज्वर भी हो और मानो उस

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

फोड़े में अंगारा भर दिया है वह फोड़ा सात दिन में और बारह दिन में अथवा सोलह दिन में मनुष्य को मारडालता है। यह सन्निपात से उपजी असाध्य अग्निरोहिणी है १४॥

अथ चिप्पनाम फुंसी का लक्षण॥

वायु-पित्त नख के मांस में रह करके दाह और पाक को करते हैं तब यह चिप्पनाम फुंसी पैदा होती है १५॥

अथ कुनखरोग (जिसका नख नख जातारहा हो) का लक्षण॥

वायु, पित्त, कफ ये थोड़े कोपको प्राप्त हों तब पुरुष के कुनख-रोग को करते हैं १६॥

अथ अनुसई फुंसी का लक्षण॥

जो फुंसी गम्भीर हो, जिसका आरम्भ अल्प हो, शरीर के वर्णसमान पैर के ऊपर हो, कोप को प्राप्त हो जिसमें ये लक्षण हों उसे अनुसई कहिये १७॥

अथ विदारिका फुंसी का लक्षण॥

जो फुंसी विदारीकन्द के समान गोल हो, कांख में सन्निपात से उपजी हो उसे विदारिका फुंसी कहिये १८॥

अथ शर्करानाम फुंसी का लक्षण॥

कफ का भेद वायु है वह मांस और नसों में प्राप्त हो गांठों को शहद, घृत अथवा बसा के समान करे और वह गांठ बढी, थकी होके मैले रुधिर को चलाती है और शरीर के मांस को सुखाय देती है उसे शर्करा कहिये १९॥

अथ शर्करार्बुद फुंसी का लक्षण॥

दुष्ट गांठ हो उसमें से नानावर्ण का बहुत चेप निकला करे और उसकी नसें रुधिर को स्रवाही करें उसे शर्करार्बुद कहिये २०॥

अथ व्याऊ (बेंवाई) का लक्षण॥

जिसका पैर बहुत रूखा हो और फिरा करे उसकी पगतली की वायु व्याऊ को करती है २१॥

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ कदर फुंसी का लक्षण ॥

पैर में अथवा हाथ में कांकरी चुभी हो अथवा कांटा चुभा हो उस करके बेर कीसी ऊंची गांठ होजाय उसे कदर कहिये २२॥

अथ खरवे का लक्षण ॥

दुष्ट कीचड़ के स्पर्शकरने से पैर की अंगुली के नीचे खाज हो और उस जगह दाह, पीड़ा हो उसे खरवा कहिये २३ ॥

अथ इन्द्रलुप्त (उदीलागी) का लक्षण ॥

रोम रोम में रहनेवाला पित्त वायु-कफ से बढ़े हुए बालों को दूर करता है पीछे रुधिरसहित कफ रोमों को उपजने से रोक दे उसे इन्द्रलुप्त अथवा चान्द्रला कहिये २४ ॥

अथ अरुंषिका का लक्षण ॥

केशों की भूमि में खुजली बहुत चले और वह भूमि वायु के कोप से रूखी पड़जाय इसे दारुण कहिये। कफ और रुधिर मस्तक में कुपित हों तब मनुष्य के अरुंषिका प्रकट हो २५ ॥

अथ यौवन अवस्था में सफ़ेद हुए बालों का लक्षण ॥

क्रोध से अथवा शोच से शरीर की गरमी शिर में जाय तब पित्त केशों को सफ़ेद करदेता है २६ ॥

अथ लहसुन का लक्षण ॥

काला और चिकना हो और उसमें पीड़ा नहीं हो, गोल हो यह कफ रुधिर से उपजता है और यह शरीर के साथ पैदा होता है इसे लहसुन कहिये २७ ॥

अथ मस्सों का लक्षण ॥

उसमें पीड़ा न हो, स्थिर और काला हो, शरीर में उड़द समान ऊंचा हो यह वायु से होता है इसे मस्सा कहिये २८ ॥

अथ तिल का लक्षण ॥

काला, तिल के समान हो, पीड़ा न हो, देह के बराबर हो

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तथा वायु, पित्त, कफ की आधिक्यता से हों और बहुत हों उन को तिल कहिये २९ ॥

अथ न्यच्छ का लक्षण ॥

बड़ा अथवा छोटा हो, काला अथवा सफ़ेद हो, गोल और पीड़ा रहित हो उसे न्यच्छ कहिये ३० ॥

अथ लिङ्गवार्तिका का लक्षण ॥

लिङ्गेन्द्रियके मलने से अथवा उसके दाबने से अथवा वहां चोट लगने से लिङ्गेन्द्रिय में वायु है वह घूमती, थकी लिङ्गेन्द्रिय के चमड़े को उथल दे और सुपारी के नीचे एक लम्बी पीड़ा को लिये गांठ करदे वह वायु से होती है उसे लिङ्गवर्तिका नाम रोग कहिये ३१ ॥

अथ अवपाटिकारोग का लक्षण ॥

जिस स्त्री की योनि का मुँह बहुत सूक्ष्म हो, उस स्त्रीके साथ पुरुष प्रसङ्ग करने जाय, हर्षसे अथवा अपने शरीर के बलसे बहुत प्रसङ्ग करे तब उस पुरुष की लिङ्गेन्द्रिय की चमड़ी उतर जाय उसे अवपाटिका नाम रोग कहिये ३२ ॥

अथ निरुद्धप्रकाशरोग का लक्षण ॥

लिङ्गेन्द्रियमें वायु आकर धँसे तब सुपारी की चमड़ी में रह कर सुपारी की चमड़ी से लिङ्गेन्द्रियको ढक मूत्र के मार्ग को रोकदे और वहां वायु से मिल पीड़ा करे तब उसे निरुद्धप्रकाश नाम रोग कहिये ३३ ॥

अथ मणिनाम रोग का लक्षण ॥

निरुद्धप्रकाश रोग के होने से मूत्र की धार महीन और विना पीड़ा चले और उस सोते का मुँह चौड़ा होजाय उसे मणिनाम रोग कहिये ३४ ॥

अथ सन्निरुद्धगुदरोग का लक्षण ॥

जो मनुष्य मल की बाधा के वेग को रोके उसके गुदा के बड़े

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मार्ग को वायु छोटा करदे तब छोटे मार्ग के प्रभाव से रूखा विष्ठा बड़े कष्ट से उतरे उसे सन्निरुद्धगुदरोग कहिये यह भयङ्करहै३५॥

अथ वृषणकच्छूरोग का लक्षण ॥

जो मनुष्य स्नान न करे उसके पोते में मैल बहुत होजाय जिसमें पसेव आय खुजली चले तब उसके खुजलाने से फोड़े होआवें पीछे उन फोड़ों में राद बहे तब उस जगह कफ और रुधिर के कोप से उपजा हुआ वृषणकच्छूरोग कहिये ३६ ॥

अथ गुदभ्रंशरोग का लक्षण ॥

मोड़ानिवाही और अतीसार इन दोनों से मनुष्य क्षीण पड़ जाय और शरीर रूखा पड़जाय, दुर्बल होजाय तब उस पुरुष की गुदा बाहर निकल आवे उसको कांच कहिये ३७ ॥

अथ शूकरदंष्ट्ररोग का लक्षण ॥

जिसकी त्वचा पकजाय, उस जगह पीड़ा बहुत हो, दाह लगिजाय, लाल जगह हो, वहां खुजली बहुत चले और ज्वर होआवे उसे शूकरदंष्ट्ररोग कहिये ३८ ॥

अथ क्षुद्ररोगों का यत्न ॥

अजगल्लिका आदि फुंसियों का जोंक लगाय रुधिर निकला डाले १ अथवा पके व्रणका जो यत्न पीछे लिखा है वह करे तो यह रोग अच्छा हो २ अथवा फिटकरी, सौंफ, प्याज़ इन्हें शीतलजल से महीन पीस लेप करे तो अजगल्लिका आदि फुंसियां अच्छी हों ३ अथवा मैनसिल, देवदारु, कूट इन्हें पानी से महीन पीस लेप करे पीछे शस्त्र से चीर राद काढ़ डाले पीछे जो मरहम कहे हैं उससे ये निश्चय अच्छी हों ४ अथवा सहँजना, देवदारु इन्हें जलसे पीस लेप करे तो विदारिका फुंसी अच्छी हो ५ ॥

अथ इरिवेल्लिका फुंसी का लक्षण ॥

जो पित्त के विसर्प का यत्न है सो इसका भी यत्न है ६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ पनसिका फुंसी का यत्न ॥

प्रथम नींब के पत्ते बांध इसे पकावे पीछे मैनसिल, कूट, हल्दी, तिल इन्हें महीन पीस लेप कर इसे पकावे पीछे चिराय राद निकला मरहम लगावे तो पनसिका अच्छी हो ७ ॥

अथ पाषाणगर्दभिका फुंसी का यत्न ॥

प्रथम जोंक लगाय रुधिर कढ़ाना अथवा गर्म लेप कर इसे पकावे पीछे व्रण के यत्न से इसका यत्न करे ८ ॥

अथ बाल्मीकि फुंसी का यत्न ॥

इसे पकाय चिरा दे पीछे नोन, चित्रक का लेप कर राद निकला डाले फिर अर्बुदरोग का यत्न कर इसे भरे ९ अथवा जोंक आदि से इसका रुधिर कढ़ाइये १० अथवा कुलत्थ की जड़, गिलोय, नोन, किरमाला की जड़, दात्यूणी, निसोत इन्हें पानीसे महीन पीस गर्म कर इसमें थोड़ा घृत मिलाय लेप करे तो यह पकिजाय पीछे चिरा दे और इसका मुरदा मांस निकला डाले व्रण के अच्छे होने के मरहमसे यह अच्छा हो ११ अथवा मैनसिल, इलायची, रक्तचन्दन, कूट, चमेली के पत्ते, भिलावां, मट्ठा, नींब के पत्ते इनमें तेल पकाय लगावे तो बाल्मीकि फुंसी सूजन संयुक्त अच्छी हो—इति मनश्शिलादितैल १२ ॥

अथ कांखोलाई और अग्निरोहिणी का यत्न ॥

प्रथम जोंक से रुधिर निकलावे अथवा जो पित्त के विसर्प का यत्न है वह करे १३ अथवा देवदारु, मैनसिल, कूट इन्हें बराबर ले महीन पीस जल से कुछ एक गर्म कर इसका लेप करे अथवा इसकी सुहाती सुहाती गर्म पींड़ी बांधे तो कांखोलाई अच्छी हो १४ ॥

अथ अवपाटिका का यत्न ॥

चिकनी वस्तुओं से शनैः शनैः सुहाता सुहाता सेंक करे तो अवपाटिका अच्छी हो १५ ॥

CC-0. Pandit Pannalal Bhandari Collection, Jodhpur. Digitized by eGangotri

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ निरुद्धप्रकाश का यत्न ॥

चूका के रस में तेल को पकाय उस तेल का सेंक करे अथवा शूकर के घृत का सेंक करे तो निरुद्धप्रकाश अच्छा हो १६ ॥

अथ संनिरुद्ध गुदा का यत्न ॥

गर्म सुहाता तेल का सेंक करे अथवा वायु के दूर करनेवाले तेल का सेंक करे तो संनिरुद्ध गुदा का रोग जाय १७ ॥

अथ वृषणकच्छूरोग का यत्न ॥

राल, कूट, सेंधानोन, सरसों इन्हें जल से महीन पीस उबटना करे तो वृषणकच्छूरोग अच्छा हो १८ ॥

अथ गुदभ्रंश (कांचरोग) का यत्न ॥

गोघृत आदि चिकनी वस्तुओं का सुहाता सेंक करे तो गुदभ्रंश जाय १९ अथवा कमलिनी के सूखे पत्तों में मिश्री मिलाय २ टंक नित्य खाय तो कांच निकलनी बन्द हो २० ॥

अथवा चूहे के मांस का घृत कांच में लेप करे तो कांच निकलनी बन्द हो २१ अथवा डांसरा, चित्रक, लूणख्या, बेल की गिरी, पाढ़, जवाखार ये सब बराबर ले इनका महीन चूर्ण कर २॥ टंक गौ के मट्ठे से नित्य ले तो गुदभ्रंश जाय २२ अथवा मूसे का मांस और दशमूल में पानी डाल क्वाथ करे पीछे इस क्वाथ में तेल पकाय इसका मर्दन करे तो गुदभ्रंश (कांच का रोग), गुदशूल और भगन्दर रोग जायँ ॥ इति मूषकतैल २३ ॥

अथवा छछूँदर के तेल को मूषक के तेलकी तरह कर उसका लेप करे तो गुदभ्रंश का रोग जाय २४ अथवा लूणख्या का रस, बेर की जड़ का रस, दही, मट्ठा इसमें सोंठि, जवाखार, घृत डाल पकावे पीछे इस घृत को ५ टंक नित्य खाय तो गुदभ्रंश का रोग जाय २५ इति चांगेरीघृत ॥

अथ शूकरदंष्ट्ररोग का यत्न ॥

जलभांगरे की जड़ और हल्दी को जल से पीस शूकर के

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

काटे पर लेप करे तो शूकर की डाढ़ का विष अच्छा हो २६ ॥

अथ अलसनाम खार का यत्न ॥

पटोल, मैनसिल, नींबू, गोरोचन, कालीमिरच, तिल, कटेली का रस, कांजी इनमें कड़ुआ तेल पकाय खरवे में मर्दन करे तो खरवा अच्छा हो २७ अथवा कणगचके बीज, हल्दी, हीराकसीस, महुआ, गोरोचन, हरताल ये सब बराबर ले शहद से महीन पीस लेप करे तो खरवा अच्छा हो २८ ॥

अथ ब्याऊ (बेंवाई) का यत्न ॥

गर्म तेल का सुहाता सेंक करे तो ब्याऊ अच्छी हो २९ अथवा मोम, जवाखार घृत में मिलाय गरम गरम ब्याऊ में भरे तो ब्याऊ अच्छी हो ३० अथवा राल, सेंधानोन, शहद, घृत इन सबको कड़ुए तेल में मिलाय मथे पीछे इसको ब्याऊ में भरे तो ब्याऊ अच्छी हो ३१ अथवा शहद, मोम, गेरू, घृत, गुड़, गुग्गुल, राल इन्हें महीन पीस एकजीव कर ब्याऊ में भरे तो ब्याऊ अच्छी हो ३२ अथवा धतूरे के बीज, जवाखार इन्हें कड़ुए तेल में पकाय मर्दन करे तो ब्याऊ अच्छी हो ३३ ॥

अथ कदर का यत्न ॥

जिसके पैर में कांटा, कंकरी चुभी हो उसके आटण पड़जाय तो उसको गर्म तेल से सेंके अथवा आक का दूध, गुड़ मिलाय बांधे तो कदर जाय ३४ ॥

अथ तिल का यत्न ॥

सरसों, सज्जी, हल्दी, केसर इन्हें जल से महीन पीस उबटना करे पहिले छुरी आदि से उसको रगड़े तो शरीर का तिल जाय ३५ ॥

अथ मस्से का यत्न ॥

सज्जी, चूना, साबुन इन्हें जल से पीस मस्सों में लगावे तो मस्से दूर हों ३६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ जन्तुमणिनाम लहसुन का यत्न ॥

लहसुनको पाछने से रगड़े पीछे सरसों, हल्दी, कूट, सज्जी, जवाखार, केसर इन्हें पानी से पीस उबटन करे तो लहसुन जाय ३७ ॥

अथ चेपनाम रोग का यत्न ॥

इस रोग में जोंक आदि से रुधिर कढ़ावे अथवा सुपारी की राख, पीली कौड़ी की राख, कत्था, कबीला, मुरदाशंख, नीलाथोथा इनको बुरके तो चेप जाय ३८ ॥

अथ कुनखरोग का यत्न ॥

सार १ माशे नित्य शहद से खाय अथवा कुटकी का साधन करे तो कुनखरोग जाय ३९ ॥

अथ मस्सा, तिल, लहसुन इनका दूसरा यत्न ॥

शिंगरफ़, भुना नीलाथोथा ये दोनों १ पैसे भर ले और सिंदूर १ टंक, राल ७ टंक इन सबको गौ के ६ टके भर घृत में कांसे की थाली में लोहे के घोटे से अथवा तांबे के घोटे से घोटकर ३ दिन रगड़े जब वह जलसदृश होजाय तब इसका लेप करे तो मस्सा, लहसुन, खारवा, फोड़ा, खुजली ये सब जायँ४० अथवा कालीज़ीरी २॥ टंक, नौसादर ५ टंक, सीप का चूर्ण ७ टंक, नीलाथोथा २ टके भर ले इन सबको महीन पीस अरणी के रस की ३ पुट दे पीछे जलभांगरे के रस की ३ पुट दे इन्हें धूप में सुखाय गौके बछड़े के मूत्र से इसकी गोली बांधे पीछे उसीके मूत्र से गोली को घिस लगावे तो तिल, मस्सा, लहसुन ये सब जायँ ४१ ॥

अथ खुजली का यत्न ॥

लोहे के पात्र में लोहे के घोटे से आंवलासार गन्धक १ माशे, पारा २ माशे, नीलाथोथा ३ माशे ले गौके घृत से खूब घोटकर पीछे लेप करे तो खुजली दूर हो ४२ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ चेप का और यत्न ॥

लोहे के पात्र में हड़ को हल्दी के रस से रगड़े पीछे गर्मकर लगावे तो चेप जाय ४३ ॥

अथ पलित (यौवन अवस्था के सफ़ेद बालों) का यत्न ॥

लोहे का चूर्ण १ तोले, आम की गुठली ५ तोले, आंवला २ तोले, बड़ी हड़का चूर्ण २ तोले, बहेड़ा १ तोला इन सबको महीन पीस लोहे के पात्र में भांगरे के रससे २ दिन भिगोय रक्खे पीछे सफ़ेद बालों में लेप करे तो श्याम हों ४४ अथवा केतकी की जड़ अथवा केवड़े की जड़, सहँजने के फूल, कनेर की जड़, लोहचूर, जलभांगरा, त्रिफला इन सबको तेल में पकावे पीछे लोहे के पात्र में धर पृथिवी में गाड़रक्खे १ महीने पीछे उस तेल को सफ़ेद बालों में लगावे तो सफ़ेद बाल काले हों ४५ अथवा त्रिफला, नींब के पत्ते, लोहचूर, जलभांगरे का रस, बकरी के मूत्र में इसे पीस सफ़ेद बालों में लगावे तो बाल काले हों ४६ अथवा पापड़खार १ माशे, सिंदूर १ माशे, मुरदाशंख १ माशे, खाने का चूना ८ माशे इन्हें पानी से पत्थर में ३ घड़ीतक महीन पीसे जब इसका रंग नख के ऊपर काला आवे तब सफ़ेद केशों में लगावे तो काले केश हों ४७ अथवा मोटा नया माजूफल लेके भूभल में तबतक सेंके जबतक फटे नहीं और न जलने दे पीछे माजूफल १ माशे, संगरासि १ माशे, नीलाथोथा ४ रत्ती, नौसादर ३ रत्ती, लवङ्ग ३ माशे, फिटकरी ३ रत्ती, लोहचूर १ माशे इन सबको आंवले के रस में, लोह के पात्र में लोह के घोटे से १ पहर रगड़े जब उसका रंग नखों पर काला आवे तब सफ़ेद केशों को आंवले के पानी से धोय केशों पर गाढ़ा लेप करे लेप ऊपर न आवे पीछे सफ़ेद केशों को आंवले के पानी से धोडाले तो केश काले हों ४८ अथवा खाने का चूना, अरहर की राख अथवा कौड़ियों की राख को शीशेसे रगड़े

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

और इसमें थोड़ा गोपीचन्दन डाल १ माशे मुरदाशंख डाले जब रगड़ते में नखों का रंग काला आवे तब इसका केशों पर लेप कर ऊपर से अरण्ड का पत्ता बांधे तो केश काले हों ४९॥

अथ इन्द्रलुप्त (उदरीलागी) का यत्न ॥

पटोल के पत्तों के रस में कुटकी को पीस जहां बाल गये हों वहां लेप करे तो बाल जमआवें ५० अथवा गोखुरू, तिलों के फूलों को बराबर ले शहद, घृत में महीन पीस जहां बाल गये हों वहां लेप करे तो बाल आवें ५१ अथवा हाथीदांत की राख बकरी के दूध के साथ लगावे तो बाल होआवें ५२ अथवा कमल की जड़, दाख, तेल, घृत, दूध इन सबको महीन पीस लेप करे तो बाल हों ५३ अथवा चमेली के पत्ते, कणगच की जड़, चित्रक इनमें तेल पकाय उस तेल का मर्दन करे तो बाल आवें ५४॥

अथ चेप का यत्न ॥

चिरौंजी करछुले में सज्जी जलाय लेप करे तो चेप का रोग जाय। ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं५५–इति क्षुद्ररोगों की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न सम्पूर्ण ॥

अथ मस्तक के रोगों की उत्पत्ति और लक्षण ॥

मस्तक के रोग ११ प्रकार के हैं। वायु का १ पित्त का २ कफ का ३ सन्निपात का ४ रुधिर का ५ क्षीणपने का ६ कृमि का ७ सूर्यावर्त का ८ अनन्तवात का ९ शंखनाम कनपटी दुखने का १० अर्धावभेदक ११ ये सब दुष्ट भोजन से होते हैं ॥

अथ वायु के शिरोरोग का लक्षण ॥

कारण विना मस्तक में बहुत पीड़ा हो, रात्रि में अधिक हो और औषधों के लेप या सेंकसे आराम हो तो वायुपीड़ा जानो १॥

अथ पित्त के शिरोरोग का लक्षण ॥

जिसका माथा अग्नि के सदृश जले, शिरके टूक हुये जायँ,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

नेत्रों में पीड़ा बहुत हो और शीत रात्रि में विशेष होय तो जानिये पित्त की पीड़ा है २॥

अथ कफ के शिरोरोग का लक्षण॥

जिसका मस्तक कफ से लिपा रहे, भारी और ठण्ढा हो और आंख, नासिका, मुख में सूजन हो तथा जिसका शिर जले ये लक्षण कफ की पीड़ा के हैं ३॥

अथ सन्निपात के शिरोरोग का लक्षण॥

सन्निपात की पीड़ा में पीछे कहे हुए सब लक्षण होते हैं ४॥

अथ रुधिर के शिरोरोग का लक्षण॥

जो पित्त के लक्षण कहे हैं वे सब हों और मस्तक, हाथ का स्पर्श न सहे तब जानिये कि रक्त की पीड़ा है ५॥

अथ क्षीणपने से उपजे शिरोरोग का लक्षण॥

शरीर का बल जातारहे, मस्तक खाली पड़जाय, शिर जले और बहुत पीड़ा हो तब जानिये क्षीणपने की पीड़ा है ६॥

अथ कृमि से उपजे शिरोरोग का लक्षण॥

जिसके शिर में बहुत पीड़ा हो, फड़के और जिसकी नाक में रुधिर और राद बहुत निकले तथा उसका शिर बहुत बढ़े ये लक्षण हों तो कृमि की पीड़ा जानिये ७॥

अथ सूर्यावर्तरोग का लक्षण॥

सूर्य के उदय के समय शिर में मन्द मन्द पीड़ा हो और ज्यों ज्यों दिन चढ़े त्यों त्यों दोपहरतक पीड़ा बढ़े तथा आंखों और भौंहों में पीड़ा बहुतहो और दोपहर पीछे पीड़ा मन्द होती जाय इसे सूर्यावर्तरोग कहिये ८॥

अथ अनन्तवात शिरोरोग का लक्षण॥

वायु, पित्त, कफ इन तीनों दोषों के दुष्ट होने से कन्धों, नेत्रों, कनपटियोंमें बहुत पीड़ा करे, दाढ़ोंको न हलने दे कपोलोंमें कम्प, नेत्रविकार, शिरमें पीड़ा बहुत करे इसे अनन्तवात कहिये ९॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ शंखनाम कनपटी दूखे उनका लक्षण ॥

पित्त, रुधिर और वायु ये दुष्ट होकर कनपटी में अत्यन्त पीड़ा करें और शरीर में दाह और कनपटी को लाल करदें तथा शिर का टूक करें और गलको रोंकदें इसे शंखनाम शिरका रोग कहिये इस रोगवाला तीन दिन जीवे १० ॥

अथ अर्धावभेदक शिरोरोग का लक्षण ॥

रूखी वस्तु खाने से, भोजन पर भोजन करने से, पुरवैया पवन से, बहुत मैथुन करने से, मलमूत्र रोंकने से, खेद करने से वायु कुपित हो कफ को ग्रहण करे पीछे वह वायु कन्धे, कनपटी, कान, ललाट, भौंह इन सबके आधे आधे में वज्र के लगने कीसी पीड़ा हो उसे अर्धावभेदक कहिये और यह पीड़ा नेत्र और कानमें बहुत होनेसे मनुष्यको मारडाले ११ ॥

अथ वायु के शिरोरोग का यत्न ॥

वायु के तेल का अथवा इसी तेल का मर्दन करे और वायु को दूर करनेवाली वस्तुओं को खाय तो वायु का शिरोरोग जाय १ अथवा कूट, अरण्डकी जड़, सोंठि इन्हें मट्ठे में महीन पीस गर्म कर मस्तक में लेप करे तो वायु की शिरपीड़ा जाय २ अथवा श्वासकुठाररस की नास ले तो नानाप्रकार की शिरकी पीड़ा जाय ३ अथवा उड़द के चून को उसनके रोटी करे उस रोटी को शिर में एकपहर बांधे तो शिर की पीड़ा दूर हो ४ ॥

अथ शिरोबस्ति ॥

उड़द के चून को पानी में उसन १६ अंगुल अथवा ८ अंगुलकी बाटीकर उसे गर्म तेल से पूर्णकर वह तेल १ पहर अथवा ४ घड़ी निश्चलस्थान में शिर के ऊपर रक्खे तो वायुका शिरोरोग, दाढ़, कंधे, नेत्र, कान के रोगों को और मस्तक कांपता हो उसे यह शिरोबस्ति दूर करती है ५ दिन या ७ दिन सेवन करे—इति शिरोबस्ति ५ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ पित्त के शिरोरोग का यत्न ॥

चन्दन, कमलगट्टे इन्हें शीतल जलसे पीस लेप करे तो पित्त की मस्तकपीड़ा जाय ६ अथवा सौबार के धोये घृत का लेप करे तो पित्त की मस्तकपीड़ा जाय ७ अथवा श्वासकुठाररस, कर्पूर, केसर, मिश्री, चन्दन इन्हें बकरी के दूध से पीस लेप करे तो पित्त की मस्तकपीड़ा जाय ८ अथवा सोंठि, गुड़ को पानी में पीस नास ले तो सब प्रकार की मस्तकपीड़ा जाय ९ ॥

अथ रुधिर की मस्तकपीड़ा का यत्न ॥

पित्त की मस्तकपीड़ा और इनका यत्न एकही है इसमें रुधिर छुड़ाना विशेष है १० ॥

अथ कफ की मस्तकपीड़ा का यत्न ॥

इस मस्तकपीड़ा में लंघन करना योग्य है अथवा कफहारी ओषधियों को पीस इनका गर्म लेप करे तो यह रोग जाय ११॥

अथ सन्निपात की मस्तकपीड़ा का यत्न ॥

सन्निपात को दूर करनेवाली ओषधियों का लेप करे अथवा उन्हें खाय तो यह मस्तकपीड़ा जाय १२ ॥

अथ षड्बिन्दु तैल ॥

अरण्ड की जड़, तगर, सौंफ, जीवन्ती, सेंधानोन, रास्ना, जलभांगरा, बायबिड़ंग, मुलहठी, सोंठि, तिलों का तेल इन ओषधियों से अठगुना तेल और चौगुना जलभांगरे का रस तथा तेल से चौगुना बकरी का दूध इन सबको इकट्ठा कर कराही में मधुरी आंच से पकावे जब जल सब जलजाय तेलमात्र रह जाय तब इस तेल के ६ बूंद की नाक में नास ले तो शिरोरोग और दांतरोग जायँ १३–इति षड्बिन्दुतैल ॥

अथवा क्षीणपने से हुई शिरपीड़ा को जो दूर करे ऐसा यत्न करने से मस्तकपीड़ा जाय १४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ कृमि से उपजी मस्तकपीड़ा का यत्न ॥

सोंठि, मिरच, पीपल, किरमाला की जड़, सहँजने के बीज ये सब बराबर ले इन्हें बकरी के मूत्र में महीन पीस नास ले तो मस्तक के कृमि जायँ और मस्तकपीड़ा अच्छी हो १५ ॥

अथ सूर्यावर्त (आधाशीशी) का यत्न ॥

दूध और घृत मिलाय नास ले तो आधाशीशी जाय १६ अथवा गुड़ और घृत मिलाय मालपुआ खाय अथवा खीर खाय अथवा तिलों का सेंक करावे तो आधाशीशी जाय १७ अथवा जलभांगरे का रस, बकरी का दूध बराबर ले इन्हें धूप में गर्म करे पीछे इसका नास ले तो आधाशीशी जाय १८ अथवा सिंगीसुहरा, अफ़ीम, लाखकी जड़, धतूरे की जड़, सोंठि, कूट, लहसुन, हींग इन्हें गोमूत्र में महीन पीस गर्मकर मस्तक में लेप करे तो आधाशीशी जाय १९ ॥

अथ अर्धमस्तक दूखे उसका यत्न ॥

उसको जुलाब दे तो अर्धमस्तक दुखता बन्द हो २० अथवा गर्म भोजन से यह अच्छा हो २१ अथवा बायबिड़ंग, कालेतिल ये दोनों महीन पीस लेप करे तो यह अच्छा हो २२ अथवा मिश्री, दूध, कच्चेनारियल का पानी ये सब मिलाय पीवे अथवा इसकी नास ले तो आधाशीशी अर्धमस्तक का दूखना अच्छा हो २३ ॥

अथ अनन्तवायुशिरोरोग का यत्न ॥

आधाशीशी का और इसका यत्न एकही है अथवा मस्तक की नास की फस्त लगावे तो यह अच्छा हो अथवा शहद का मालपुआ खाय तो अनन्तवात शिर का रोग जाय २४ ॥

अथ पथ्यादिक्वाथ ॥

हड़ की छाल, बहेड़ा, आँवला, हल्दी, गिलोय, चिरायता, नींब की छाल, गुड़ ये सब बराबर ले इन्हें जवकुट कर इनका

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

काढ़ा दे वा नास ले तो भौंह, कनपटी की पीड़ा और नेत्ररोग, आधाशीशी ये रोग जायँ २५–इति पथ्यादिक्काथ ॥

अथ कनपटी दुखती हो उसका यत्न ॥

दारुहल्दी, हल्दी, मंजीठ, गौरीसर, खस, कमलगट्टा इन्हें जल से महीन पीस कनपटियों में लेप करें तो कनपटी अच्छी हो २६ अथवा शीतल जल से शीतल ओषधियों का लेप करे तो कनपटी अच्छी हो २७ अथवा मुलहठी, उड़द बराबर ले और इनका चौथा हिस्सा सिंगीमुहरा ले इन्हें महीन पीस सरसों प्रमाण मात्रा ले तो सब प्रकार की शिर की व्यथा दूर हो २८ अथवा गिलोय, सीप का चूना, नौसादर इनको महीन पीस नास ले तो सब प्रकार की शिर की व्यथा जाय २९ ॥

अथ आधाशीशी का और यत्न ॥

मिश्री, केसर इन्हें घृत में सेंके पीछे इनकी नास ले तो आधाशीशी, कनपटी, भौंह, नेत्र का दुखना ये सब रोग अच्छे हों। ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं ३० ॥

अथवा सोंठि, मिरच, पीपल, पुष्करमूल, हल्दी, रास्ना, देवदारु, असगन्ध इनका काढ़ा ले तो सब प्रकार के मस्तक के रोग जायँ ३१ अथवा मिश्री और इससे आधी दाड़िम की कली ले इन्हें महीन पीस नास ले तो मस्तक की पीड़ा जाय ३२ अथवा कूट, अरण्डकी जड़ इन्हें कांजी में पीस लेप करे तो मस्तक की पीड़ा जाय ३३ अथवा मुचकुन्द के फूलों का लेप करे तो मस्तकपीड़ा जाय ३४ अथवा देवदारु, तगर, कूट, खस, सोंठि, तिल इन्हें कांजी में घोट लेप करे तो मस्तक पीड़ा जाय ३५ ॥

अथ आधाशीशी का और यत्न ॥

मिश्री, मैनफल इन्हें गोमूत्र में महीन पीस नास ले तो आधाशीशी जाय ३६ अथवा खरगोश के शोरुवे में मिरच डाल भोजन के साथ ७ दिन खाय तो आधाशीशी आदि सब मस्तक

In Public Domain, Chandigarh Archives, Panjab

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

के रोग जायँ। ये सब यत्न वैद्यरहस्य में हैं ३७ अथवा रक्तचन्दन, लवङ्ग, सोंठि इन्हें पानी में महीन पीस लेप करे तो मस्तकपीड़ा जाय ३८ अथवा आमकी छाल का लेप करे तो मस्तकपीड़ा जाय ३९ अथवा जलभांगरे का रस, गौ का मक्खन इन दोनों का लेप करे तो मस्तकपीड़ा जाय ४० अथवा पीपल, मिरच, पठानीलोध ये सब बराबर ले महीन पीस इनकी ३ दिन नास ले तो आधाशीशी आदि मस्तकपीड़ा जायँ ४१॥

अथ कपाल के कीड़े का यत्न॥

कड़ुए ककोड़े के पत्तों के रस की नास ले तो कपाल के कीड़े जायँ ४२ अथवा पीपल, आंधीझाड़ा, सरसों, आक की डोंडी के बीज इनका शीतल जल से लेप करे तो मस्तकपीड़ा जाय। ये यत्न वैद्यवल्लभ में हैं ४३॥

अथ शिर के केश बढ़ने का यत्न॥

छारछबीला, कूट, काला तिल, गौरीसर, कमलगट्टे इन्हें शहद और दूध में महीन पीस लेप करे तो शिर के केश बढ़ें ४४ अथवा जलभांगरे के रस में चिरमिटी का महीन पिसा चूर्ण और तिल का तेल पकावे फिर इस तेल में इलायची, छारछबीला, कूट इन्हें जल से महीन पीस लेप करे तो केश बढ़ें ४५ अथवा बालछड़, खरैटी, मौलसिरी की छाल, आंवला, कूट इन्हें जल से महीन पीस लेप करे तो केश बढ़ें ४६॥

अथ मस्तकपीड़ा का और यत्न॥

लवङ्ग १, मिरच ३, हींग चने प्रमाण इन तीनों का जल से नास ले तो मस्तकपीड़ा निश्चय जाय ४७॥

अथ आधाशीशी का मन्त्र॥

अर्द्धकपालीनाशय जाजा री पापिनी जाजा री हत्यारी न जाय तो तेरे गुरु की आज्ञा हनुमन्त बीर की आज्ञा गरुड़पंखड़ी की आज्ञा मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरोमन्त्र ईश्वरोवाच॥ इस मन्त्र

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

से मस्तक को शनैःशनैः २१ बार फूंक दे तो आधाशीशी निश्चय जाय। कृष्णपक्ष की १४ को शक्ति मुवाफ़िक़ इस मन्त्र का जप करे तो यह मन्त्र सिद्ध रहे ४८ ॥

अथ दूसरा मन्त्र ॥

ॐ नमो आधाशीशी हूंहूंकारी पहर पचारी मुखमूंदि पाटले-डारी अमुकारे शीश रहै मुख महेश्वर की आज्ञा फुरे ॐ ठंठं स्वाहा ॥ इस मन्त्र से २१ बार अंगुली मस्तक पर फेरे तो आधाशीशी जाय ४९—इतिमस्तकरोग की उत्पत्ति, लक्षण, यत्न ॥

अथ नेत्र के रोगों की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

नेत्रका मण्डल दो ढाई अंगुलप्रमाण है अथवा अपने अंगूठे के उदर प्रमाण है सो शार्ङ्गधर के मतसे नेत्रमण्डल में ९४ रोग हैं और कई एक आचार्यों के मत से ७८ रोग मुख्य हैं। दृष्टि में १२ रोग हैं, नेत्र में २ रोग हैं, नेत्र की काली जगह में ४ रोग हैं, नेत्र के सफ़ेद भाग में ११ रोग हैं, नेत्र के मार्ग में ९ रोग हैं, नेत्र की बाफणी में २ रोग हैं, नेत्र की सन्धि में ९ रोग हैं, सब नेत्र में १७ रोग हैं इस प्रकार नेत्रमें ७८ रोग हैं ये चरक और सुश्रुत में लिखे हैं। वायु के १०, पित्त के १०, कफ के १३, रुधिर के १६, सन्निपात के २५, नेत्र के बाहर के २ इस प्रकार ७६ रोग हैं ॥

अथ नेत्र के रोगों की उत्पत्ति ॥

धूप आदि से शरीर में गर्मी हुई हो पीछे नदी, तालाब, बावली आदि के जलमें प्रवेश करने, दूरके देखने, दिनके सोने, पसीने, नेत्रों में रजके पड़ने, नेत्रों में धुआं के जाने, छर्दि के रोंकने, बहुत वमन के करने और गर्म वस्तु के खाने से तथा कांजी, कुलत्थ, उड़द इनके खाने, अधोवायु, मल-मूत्र इनके रोंकने, ऋतु के विपरीतपने, क्लेश और बहुत मैथुन करने, अश्रु

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

के रोंकने और सूक्ष्म वस्तु के देखने से नेत्रों में ७६ रोग पैदा होते हैं॥

अथ प्रथम दृष्टिरोग का लक्षण॥

नेत्र की काली जगह में जो मसूर की दाल की बराबर एक बुन्दसा है वह पांच महाभूतों से उपजा है। वह अग्नि सा चमकदार, अविनाशी, तेजस्वरूप, सिद्ध है और चार पटलों (प्याजके छिलकेके समान नेत्र की झिल्लियों) से ढका है। नेत्र की शीतलदृष्टि जल और रुधिर के आधार है। इस दृष्टि के ४ पटल हैं। प्रथम पटल तेज और जल के आश्रय है, दूसरा मांस के आश्रय है, तीसरा मेद के आश्रय है, चौथा रुधिर, तेज, मांस, मेद, अस्थि इन पांचों के आश्रय है॥

अथ प्रथम पटल के रोग का लक्षण॥

प्रथम नेत्र के पटल की दृष्टि में जो रोग रहते हैं उनसे पुरुष को जो दीखे सो सांगोपांग यथार्थ न दीखे क्योंकि पहले पटल में दोष थोड़े रहते हैं १॥

अथ दूसरे पटल के रोग का लक्षण॥

नेत्र के दूसरे पटल में प्राप्त दोष से मक्खी, मच्छड़, केश इनका समूह न दीखे, दूर का निकट दीखे, निकट का दूर दीखे, दृष्टि भ्रमती रहे और बहुत यत्न से भी सुई का छिद्र न दीखे क्योंकि दृष्टि बहुत विह्वल होजाती है २॥

अथ तीसरे पटल के दोष का लक्षण॥

ऊंचा दीखे, नीचे का न दीखे, रूप का समूह दीखे मानो वस्त्र बीच आय गया है, कान, नाक, नेत्र ये और से दीखें। दृष्टि में दोष बहुत हों तो नीचे की वस्तु ऊपर दीखे और ऊपर की नीचे दीखे तथा नेत्र की पसलियों में बहुत दोष आ प्राप्त हों तो उसे निकट की वस्तु न दीखे और नेत्र के चारों ओर के दोष से आकुल, व्याकुल, चकचौंधी दीखे और दृष्टि के मध्य प्राप्त

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दोष से बड़ी वस्तु छोटी दीखे तथा दृष्टि में स्थित दोष से निकट की एक वस्तु की दो दीखें और बगल की दो वस्तु तीन दीखें और बगल में बहुत वस्तु हों तो उनकी गिन्ती न होसके ये लक्षण तीसरे पटल के जानिये ३ ॥

अथ चतुर्थ पटल में हुए दोषों का लक्षण ॥

चौथे पटल में उपजे दोष को लौकिक में तिमिर कहते हैं तथा कोई वैद्यशास्त्र के आचार्य लिङ्गनाशक रोग कहते हैं। लिङ्गनाश में नेत्रों की तेजोमयी पुतली नीली कांच सदृश हो जाती है उससे पटल में दोष बहुत हों, चन्द्रमा, सूर्य, नक्षत्र, आकाश, बिजली ये निर्मल तेज हैं सो भी अच्छे न दीखें, भ्रमते से दीखें इसको तिमिर कहते हैं अथवा इसे लिङ्गनाश कहिये और लौकिक में इसे नजला कहते हैं और कोई कोई मोतियाबिन्द भी कहते हैं ४ ॥

अथ और शास्त्रों के मत से लिङ्गनाश मोतियाबिन्द का लक्षण ॥

यह लिङ्गनाश मोतियाबिन्द रोग ६ प्रकार का है। वायु १ पित्त २ कफ ३ सन्निपात ४ रुधिर ५ परिम्लायिन ६ परिम्लायिन कहिये रुधिर से मूर्च्छित हुए पित्त को ॥

अथ वायु के लिङ्गनाश का लक्षण ॥

जिसके वायु का लिङ्गनाश हो उसे संपूर्ण वस्तु भ्रमती और मलीनसी दीखें तथा सब वस्तु कुछ एक लाल दीखें, कुटिल (बांकी) दीखें तो जानिये इसके वायु का लिङ्गनाश है १ ॥

अथ पित्त के लिङ्गनाश का लक्षण ॥

जिसके पित्त का लिङ्गनाश हो उसको सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र, अग्नि, इन्द्र का धनुष, बिजली ये सब भ्रमते से दीखें और सब वस्तु नीलीसी दीखें तो जानिये कि पित्तका लिङ्गनाश है २ ॥

अथ कफ के लिङ्गनाश का लक्षण ॥

कफ का लिङ्गनाश हो उससे चिकना और सफ़ेद दीखे और नेत्र जल से भरा रहे ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ सन्निपात के लिङ्गनाशका लक्षण ॥

जिसके सन्निपात का लिङ्गनाश हो उसे नानाप्रकार के आकार दीखें और अधिक व हीन अङ्ग दीखें और तेजरूप सब वस्तु दीखें तथा पीछे कहे लक्षण भी होते हैं ४ ॥

अथ रुधिर से उपजे लिङ्गनाश का लक्षण ॥

जिसके लिङ्गनाश हो उसको सब वस्तुएं लाल, सफ़ेद, हरी, काली और पीली दीखें ५ ॥

अथ परिम्लायिन से उपजे लिङ्गनाश का लक्षण ॥

परिम्लायिन से उपजे लिङ्गनाश से दशों दिशा पीलीही दीखें मानो सर्वत्र सूर्यही हैं तथा वृक्ष आदि सब वस्तुएं दग्ध हुई अग्निसदृश दीखें ६ ॥

अथ लिङ्गनाश का अन्य स्वरूप ॥

वायुका लिङ्गनाश अरुणता, पीलेपन को लिये नीला होताहै १ और ऐसाही पित्त का भी होता है २ कफ का सफ़ेद होता है ३ रुधिर का लाल होताहै ४ और सन्निपात का विचित्र होता है ५॥

अथ वायु आदि से ६ प्रकार के लिङ्गनाशों का नेत्रमण्डलगत पृथक् पृथक् स्वरूप ॥

वायु का नेत्रमण्डल अरुण, चञ्चल और कठोर हो १ पित्त के नेत्रमण्डल में बिलोसा नेत्र कांसी के वर्णसदृश और पीला हो २ कफ का मण्डल बहुत चिकना हो, शंख या कुन्द के फूल के सदृश पीला और चञ्चल हो और उस नेत्रमण्डल में सफ़ेद बूंद हों ३ ॥

अथ सन्निपात के नेत्रमण्डल का लक्षण ॥

इस नेत्रमण्डल में मूंगे के सदृश अथवा पद्म के पत्रसदृश नेत्रमण्डल हों और पीछे जो लक्षण कहे हैं वे भी हों ४ ॥

अथ रुधिर के नेत्रमण्डल का लक्षण ॥

यह नेत्रमण्डल लाल होता है ५ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ परिम्लायिन नेत्रमण्डल का लक्षण ॥

यह नेत्रमण्डल भदरंगा, कांचके सदृश पीला हो और लाल, रूखा, मैला और नीला होता है ६ ॥

अथ पित्तविदग्ध दृष्टि का लक्षण ॥

जिसके शरीर में पित्त दुष्ट हुआ हो उसकी दृष्टि पीली हो जाय और उसको सब वस्तु पीलीही पीली दीखें ७ ॥

अथ तीसरे पटल में प्राप्त दुष्टपित्त का स्वरूप ॥

उसको दिन में न दीखे, रात्रि में दीखे, चन्द्रमा के शीतलपने से कुछएक पित्त रात्रि में थोड़ा होता है ८ ॥

अथ कफविदग्ध दृष्टि का लक्षण ॥

जिसकी दृष्टि कफ करके विदग्ध हो उसे सब सफ़ेद दीखे। यह रोग प्रथम द्वितीय पटल में होता है ९ ॥

अथ नक्तान्ध नाम रतौंधी का लक्षण ॥

जब तीसरे पटल में कफ आवे तब नक्तान्ध होता है उससे दिन में दीखता और रात्रि में नहीं दीखता है इसे लौकिक में रतौंधी कहते हैं १० ॥

अथ धूमदर्शीरोग का लक्षण ॥

शोक या ज्वर से, खेद से शिर में ताप जाय प्राप्त हो तब मनुष्य की दृष्टि धुआं से व्याप्त हो और मनुष्य को सब वस्तु धुएं के सदृश दीखें उसे धूमदर्शी रोग कहिये ११ ॥

अथ ह्रस्वजात्यरोग का लक्षण ॥

जो कष्ट से बड़ी वस्तु को देखे और वह वस्तु दिन में छोटी और रात्रिमें यथार्थ दीखे उसे ह्रस्वजात्यरोग कहिये १२ ॥

अथ नकुलान्धरोग का लक्षण ॥

जिसकी दृष्टि में दोष आय प्राप्त हों तब उसको सब वस्तुएं चित्र विचित्र दीखें और नकुल की तरह नेत्र चमकें इसे नकुलान्ध कहिये १३ ॥

In Public Domain, Shambhu Archives, Delhi

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ गम्भीररोग का लक्षण ॥

जो पुरुष शीशा ले तो उसकी दृष्टि भीतर को घुसजाय और नेत्र में पीड़ा चले इसे गम्भीरनालरोग कहिये १४ ॥

अथ विना कारणही लिङ्गनाश हो उसका लक्षण ॥

जिसकी दृष्टि निर्मल अच्छी हो वह विना कारणही काली होजाय उसे विना कारण लिङ्गनाश कहिये १-इति दृष्टिरोग ॥

अथ नेत्रमण्डल के रोगों का नाम संख्या ॥

कृष्णमण्डल में ये चार रोग होते हैं। सव्रणशुक्र १ अव्रण-शुक्र २ अक्षिपाकात्यय ३ अजकाजात ४ ॥

अथ सव्रणशुक्र का लक्षण ॥

नेत्र की काली जगह में पुतली के ऊपर बूंदसी होकर तारा ढकिजाय और वह बूंद नेत्र में गड़ासा दीखे और उसमें सुई कासा चभका चले और गर्म गर्म पानी नेत्र में से गिरा करे तो उसे सव्रणशुक्र कहिये १ ॥

अथ सव्रणशुक्र का असाध्य लक्षण ॥

वह बूंद दृष्टि के समीप गाढ़ी और पकी त्वचा में न हो और आंखों में बहुत पानी नहीं पड़े और उसमें पीड़ा कम हो तथा एक आंख में हो वह तो कदाचित् अच्छा हो और इससे विपरीत लक्षण हों तो असाध्य जानिये २ ॥

अथ अव्रणशुक्र का लक्षण ॥

जिसकी कालीपुतली के तारेपर शुक्र की बूंद आई हो और वह बूंद हाले, चले और शंख, चन्द्रमा, कुन्द के फूल, आकाश अथवा बादल के सदृश हो उसे अव्रणशुक्र कहिये यह साध्य है ॥

अथ अव्रणशुक्र साध्य है परन्तु अवस्थाभेद से कष्टसाध्य होने का लक्षण ॥

जिसके नेत्र का मांस बिखरजाय और वह बूंद आड़ी हो, नसों में हुई हो, भदरंगी हो और दूसरे पटल में हो, चारों ओर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

लाल हो और बहुत दिनों का हो ऐसा अव्रणशुक्र भी असाध्य जानिये इसका यत्न न करना ३ ॥

अथ इसका और असाध्य लक्षण ॥

जिसके नेत्र में आंसू गर्म उतरें, नेत्र में फुंसियां हों, पुतलियों के ऊपर शुक्र की मूंग के समान बूंद हो और तीतर के पंखसदृश वर्ण हो तो अव्रणशुक्र भी असाध्य जानिये ४ ॥

अथ अक्षिपाकात्ययनेत्ररोग का लक्षण ॥

जिसके नेत्र की सफ़ेद जगह सब सूजजाय और अश्रुपात भी बहुत हों, उस जगह पीड़ा बहुत हो और वह नेत्रदोषों से पकजाय इसे अक्षिपाकात्ययरोग कहिये यह असाध्य है ५ ॥

अथ अजकाजात नेत्ररोग का लक्षण ॥

जिसकी आंखें बकरे की मेंगनी के सदृश होजायँ और उसमें पीड़ा चले, लाल रहें, लालही आंसू आवें इसे अजकाजात नेत्ररोग कहिये। ये चारों कृष्णमण्डलके रोग हैं ६ ॥

अथ नेत्र के शुक्लभाग में प्राप्त रोगों का नाम और संख्या ॥

नेत्र के शुक्लभाग में ११ रोग हैं। प्रस्तार्म १ शुक्लार्म २ रक्तार्म ३ अधिमांसार्म ४ स्नाय्वर्म ५ शुक्ति ६ अर्जुन ७ पिष्टक ८ शिराजाल ९ शिरापिड़िका १० बलासग्रथित ११ ये कफ करके गुथे नेत्र के शुक्लभाग में होते हैं ॥

अथ प्रस्तार्म नेत्ररोग का लक्षण ॥

नेत्र के सफ़ेदभाग में गर्मी को लिये बड़ा और काला लाल चिह्न हो उसको प्रस्तार्म नेत्ररोग कहिये १ ॥

अथ शुक्लार्म नेत्ररोग का लक्षण ॥

नेत्र का सफ़ेद और कोमल मांस बढ़े उसे शुक्लार्म कहतेहैं २॥

अथ रक्तार्म नेत्ररोग का लक्षण ॥

नेत्र के सफ़ेदभाग में पद्म के सदृश कोमल जो मांस बढ़े उसे रक्तार्मरोग कहिये ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ अधिमांसार्म नेत्ररोग का लक्षण ॥

नेत्र के सफ़ेदभाग में बड़ा और कोमल पुष्टकालजा समान चिह्न हो उसे अधिमांसार्मरोग कहिये ४ ॥

अथ स्नाय्वर्म नेत्ररोग का लक्षण ॥

नेत्र के सफ़ेदभाग में कठिन तथा फैलनेवाला, स्रावरहित मांस बढ़े उसे स्नाय्वर्मनाम नेत्ररोग कहिये ५ ॥

अथ शुक्तिनेत्ररोग का लक्षण ॥

नेत्र के शुक्लभाग में काली और मांस के सदृश बूंद हों उसे शुक्तिनामरोग कहिये ६ ॥

अथ अर्जुन नेत्ररोग का लक्षण ॥

नेत्र के शुक्लभाग में शशा के रुधिर सदृश १ बूंद हो उसे अर्जुन नाम नेत्ररोग कहिये ७ ॥

अथ पिष्टक नेत्ररोग का लक्षण ॥

नेत्र के शुक्लभाग में वायु, कफ के कोप से पिसे आटे के सदृश मांस ऊंचा हो उसे पिष्टक नाम रोग कहिये ८ ॥

अथ शिराजाल नेत्ररोग का लक्षण ॥

नेत्र के सफ़ेदभाग में नसों के समूह कठिन और पीले हो आवें उसे शिराजाल नेत्ररोग कहिये ९ ॥

अथ शिरापिड़िका नेत्ररोग का लक्षण ॥

नेत्र के सफ़ेदभाग में नसों से ढकी सफ़ेद फुंसियां हों उसे शिरापिड़िका नाम नेत्ररोग कहिये १० ॥

अथ बलासग्रथित नेत्ररोग का लक्षण ॥

नेत्र के सफ़ेदभाग में कांसी के सदृश सफ़ेद अथवा कमलवर्ण और कठोरसा चिह्न हो उसे बलासग्रथित नेत्ररोग कहिये ११—

इति नेत्र के शुक्लभाग के ११ रोग सम्पूर्ण ॥

अथ नेत्र के मर्मस्थान में रहनेवाले २१ रोगों के नाम ॥

उत्सङ्गपिड़िका १ कुम्भिका २ पोथकी ३ वर्त्मशर्करा ४

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अर्शोवर्त्मा ५ शुष्कार्श ६ अञ्जननामिका ७ बहुलवर्त्मा ८ वर्त्मबन्ध ९ क्लिष्टवर्त्मा १० वर्त्मकर्दम ११ श्याववर्त्मा १२ प्रक्लिन्नवर्त्मा १३ अक्लिन्नवर्त्मा १४ वातहतवर्त्मा १५ वर्त्मार्बुद १६ अस्रस्तनिमेष १७ शोणितार्श १८ लगण १९ विषवर्त्मा २० कुंचन २१ ॥

अथ उत्सङ्गपिड़िका नाम नेत्ररोग का लक्षण ॥

नेत्र के ढकनेवाली बाफणी (बाझनी नाम) कोया में फुंसी हों और उस फुंसी में मुँह हो, फुंसी लाल और बहुत ऊँची हो तथा रुधिर से उपजी और बड़ी हो, उसमें खुजली चले ये लक्षण हों उसे उत्सङ्गपिड़िका नाम नेत्ररोग कहिये १ ॥

अथ कुम्भिका नाम नेत्ररोग का लक्षण ॥

जिसके नेत्रमार्ग के अन्त में कुम्भिका के बीजसदृश फुंसी हो और वह फुंसी फूटकर स्रवा करे तथा सूजन को लिये हो उसे कुम्भिका नाम नेत्ररोग कहिये २ ॥

अथ पोथकी नाम नेत्ररोग का लक्षण ॥

जिसके कोये में लाल सरसों के समान फुंसी हों और वे भरें, बहुत खाज चले तथा पीड़ा हो उसे पोथकी नाम नेत्ररोग कहिये ३ ॥

अथ वर्त्मशर्करापिड़िका नाम नेत्ररोग का लक्षण ॥

जिसके कोये में तिबरसी यानी खीरा ककड़ी के बीजसदृश फुंसी हों और उनमें पीड़ा कम हो उसे वर्त्मशर्करापिड़िका नाम नेत्ररोग कहिये ४ ॥

अथ अर्शोवर्त्मा नाम नेत्ररोग का लक्षण ॥

जो फुंसी चिकनी और कठोर हो उसे अर्शोवर्त्मा कहिये ५ ॥

अथ शुष्कार्श नाम नेत्ररोग का लक्षण ॥

जिसके नेत्र के कोये में बड़े बड़े अंकुर दर्दरे, भयङ्कर हों उसे शुष्कार्श नाम नेत्ररोग कहिये ६ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Digitized by eGangotri Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ अञ्जननामिका नाम नेत्ररोग का लक्षण ॥

जिसके नेत्र के कोये में दाहलिये फुंसियां हों और लाल हों, कोमल छोटी हों और पीड़ा मन्द हो उसे अञ्जननामिका नाम नेत्ररोग कहिये ७ ॥

अथ बहुलवर्त्मा नाम नेत्ररोग का लक्षण ॥

जिसके कोये में चारोंओर एकवर्ण की बहुतसी फुंसियां हों उसे बहुलवर्त्मा नाम नेत्ररोग कहिये ८ ॥

अथ वर्त्मबन्ध नाम नेत्ररोग का लक्षण ॥

जिसके नेत्र के कोये में सूजन हो, उसमें थोड़ी खुजली चले, थोड़ी पीड़ा हो और सूजन से नेत्र रुकजायँ उसे वर्त्मबन्ध नाम नेत्ररोग कहिये ९ ॥

अथ क्लिष्टवर्त्मा नाम नेत्ररोग का लक्षण ॥

जिसके नेत्र के कोये का मार्ग अकस्मात् लाल हो और मन्द पीड़ा हो उसे क्लिष्टवर्त्मा नाम नेत्ररोग कहिये १० ॥

अथ वर्त्मकर्दम नाम नेत्ररोग का लक्षण ॥

जिसके नेत्र में कुपथ्य से पित्तसंयुक्त रुधिर दग्ध हो और आंख से कीचड़ बहुत बहे उसे वर्त्मकर्दमरोग कहिये ११ ॥

अथ श्याववर्त्मा नाम नेत्ररोग का लक्षण ॥

जिसके नेत्र के कोये के मार्ग में और बाहर काली सूजन हो, उस सूजन में पीड़ा हो, खुजली चले और कीचड़ भी आवे उसे श्याववर्त्मा नाम नेत्ररोग कहिये १२ ॥

अथ प्रक्लिन्नवर्त्मा नाम नेत्ररोग का लक्षण ॥

जिसके नेत्र के कोये के बाहर सूजन हो, उसमें पीड़ा न हो और कीचड़ बहुत आवे उसे प्रक्लिन्नवर्त्मारोग कहिये १३ ॥

अथ अक्लिन्नवर्त्मा नाम नेत्ररोग का लक्षण ॥

जिसकी आंख धोये से न खुले और मिचीही रहे उसे अक्लिन्नवर्त्मा नेत्ररोग कहिये १४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ वातहतवर्त्मा नाम नेत्ररोग का लक्षण ॥

जिसकी पलकें अच्छीतरह न मिचें और खुलीही रहें तथा पीड़ा रहे अथवा नहीं रहे और आंखें मिची रहें उसे वातहत-वर्त्मा नाम नेत्ररोग कहिये १५ ॥

अथ वर्त्मार्बुद नाम नेत्ररोग का लक्षण ॥

जिसके नेत्र भीतर को बैठिजायँ और वायु से बाफणी जला करें उसे वर्त्मार्बुद और अस्रस्तनिमेष नाम नेत्ररोग कहिये १६ । १७ ॥

अथ शोणितार्श नाम नेत्ररोग का लक्षण ॥

जिसके कोये की बाफणी के मार्ग में उपजी फुंसी के कोमल अंकुर हों उनके दूर करने के वास्ते बांधकर सोवे और अंकुर बढ़ाकरें उसे शोणितार्श नाम नेत्ररोग कहिये १८ ॥

अथ लगण नाम नेत्ररोग का लक्षण ॥

जिसके नेत्र के कोये के मार्ग में बेरप्रमाण गांठ हो और वह पके नहीं, कड़ी हो, उसमें खुजली चले और नेत्रोमें कीचड़ आवे उसे लगण नाम नेत्ररोग कहिये १९ ॥

अथ विषवर्त्मा नाम नेत्ररोग का लक्षण ॥

जिसके नेत्रों के कोये में बहुत छिद्र पड़िजायँ और कोये के ऊपर सूजन चढ़जाय, नेत्रों में आंसू बहुत आवें उसे विषवर्त्मा नाम नेत्ररोग कहिये २० ॥

अथ कुञ्चन नाम नेत्ररोग का लक्षण ॥

वायु, पित्त, कफ जिसके कोये के मार्ग को संकुचित करलें और कोये को नेत्रों से न उठने दें, न कोई वस्तु दीखे उसे कुञ्चन नाम रोग कहिये २१—इति नेत्र के कोयों का रोग सम्पूर्ण ॥

अथ नेत्र की बाफणी के रोग ॥

पक्ष्मकोप १ पक्ष्मशान्ति २ ये दो भांति के बाफणी के रोग हैं॥

In Public Domain, Chambal Archives, Pravaan

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ पक्ष्मकोपरोग का लक्षण॥

जिसके कोये की बाफणी जाती रहे, कोये में घुसजाय, बाफणी में खुजली बहुत हो यह बहुत भयङ्कर रोग वायुके कोप से होता है इसमें सूजन होती है, यह असाध्य है १॥

अथ पक्ष्मशान्ति बाफणी के रोग का लक्षण॥

नेत्रों के कोये की बाफणी जाती रहे, उसमें खुजली चले और जलती रहे यह पित्तके कोप में होता है २॥

अथ नेत्र की सन्धि के नवरोगों के नाम॥

पूयालस १ उपनाह २ पैत्तिकस्राव ३ कफस्राव ४ सन्निपातस्राव ५ रक्तस्राव ६ पर्वणीस्राव ७ अलज ८ जन्तुग्रन्थि ९॥

अथ पूयालस नाम नेत्रसन्धिरोग का लक्षण॥

नेत्र के मध्य पुतली के पास कोये के अन्त की सन्धि पीड़ा करे और पककर सूजजाय और उसमें कीचड़ राद के सदृश गाढ़ा बहुत आवे उसे पूयालस नाम नेत्र की सन्धि का रोग कहिये १॥

अथ उपनाह नाम नेत्र की सन्धि के रोग का लक्षण॥

नेत्र की सन्धिमें बड़ी गांठ होकर पके नहीं, उसमें खाज आवे, पीड़ा न हो उसे उपनाह नाम नेत्र की सन्धि का रोग कहिये २॥

अथ पैत्तिकस्राव नाम नेत्र की सन्धि के रोग का लक्षण॥

जिसकी आंखों में पीड़ा बहुत हो, रोमाञ्च होआवे, आंखोंमें खुजली हो, नेत्र कड़ुए हों, शिर बले और नेत्र की सन्धि में हल्दी के समान बहुत पीले आंसू आवें उसे पैत्तिकस्राव नाम नेत्रकी सन्धिका रोग कहिये ३॥

अथ कफस्राव नाम नेत्र की सन्धि के रोग का लक्षण॥

जिसके नेत्र की सन्धि में सफ़ेद, भदरंगे और चिकने आंसू आवें उसे कफस्राव नाम नेत्र की सन्धि का रोग कहिये ४॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ सन्निपातस्राव नाम नेत्र की सन्धि के रोग का लक्षण ॥

नेत्र की सन्धि में नासूर पड़जाय और उसमें दुर्गन्धित राद निकला करे उसे सन्निपातस्राव, नेत्रसन्धि का रोग कहिये ५ ॥

अथ रक्तस्राव नाम नेत्र की सन्धि के रोग का लक्षण ॥

जिसके नेत्र की सन्धि में बहुत गर्म रुधिर निकले उसे रक्तस्राव नाम नेत्र की सन्धि का रोग कहिये ६ ॥

अथ पर्वणीस्राव और अलज नाम नेत्रसन्धि के रोग का लक्षण ॥

जिसके नेत्रकी सन्धि तांबे के वर्णसमान लाल हो, महीन हो, दाह और शूल को लिये हो, गोल शोथ हो उसे पर्वणीस्राव नाम नेत्र की सन्धि का तथा अलज नाम नेत्र की सन्धि का रोग कहिये ७। ८ ॥

अथ जन्तुग्रन्थि नाम नेत्र की सन्धि के रोग का लक्षण ॥

जिसके नेत्रकी सन्धि की गांठ में कृमि पड़जायँ और उससे बाफणी जाती रहे, खुजली चले और नेत्रों की सन्धि में अनेक महीन मार्ग होजायँ, नेत्रों में बहुत पीड़ा हो उसे जन्तुग्रन्थि नाम नेत्रकी सन्धि का रोग कहिये ९—इति नेत्रसन्धिरोग का लक्षण सम्पूर्ण ॥

अथ नेत्र के समस्तरोगों की संख्या और उनके नाम ॥

वायु का अभिष्यन्द १ पित्त का अभिष्यन्द २ कफ का अभिष्यन्द ३ रक्त का अभिष्यन्द ४ वायु का अधिमन्थ ५ पित्तका अधिमन्थ ६ कफ का अधिमन्थ ७ रक्त का अधिमन्थ ८ सशोथपाक ९ अशोथपाक १० हताधिमन्थ ११ वातपर्याय १२ शुष्काक्षिपाक १३ अन्यतोवात १४ अम्लाध्युषित १५ शिरोत्पात १६ शिरोहर्ष १७ नेत्रों की श्यामता १८ नेत्रों की निरामता १९ ॥

अथ नेत्र की वायु का अभिष्यन्द (नेत्रपीड़ा) का लक्षण ॥

आंखों में पीड़ा बहुत हो, रोमाञ्च हो आवें, आंखों में खुजली

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

चले, नेत्र कड़े हों, मस्तक जले और अश्रु शीतल पड़ें तो इसे वाताभिष्यन्द नेत्र का रोग कहिये १ ॥

अथ पित्त का अभिष्यन्द (गर्मी की नेत्रपीड़ा) का लक्षण ॥

नेत्रों में दाह बहुत हो, आंखें पकिजायँ, नेत्रों को शीतलता सुहावे, धुआंसा निकले, गर्म आंसू पड़ें और पीले नेत्र हों तो पित्त का अभिष्यन्द नेत्ररोग जानिये २ ॥

अथ कफ के अभिष्यन्द का लक्षण ॥

आंखों में गर्मी सुहावे, नेत्र भारी हों, उन पर सूजन हो और आंखों में खुजाल और कीचड़ बहुत आवे, नेत्र बहुत शीतल रहें, बहुत झड़ें इसे कफ का अभिष्यन्दरोग कहिये ३ ॥

अथ रक्ताभिष्यन्द (रुधिर की नेत्रपीड़ा) का लक्षण ॥

नेत्रों के कोये लाल हों, तांबे के समान गर्म आंसू पड़ें, नेत्रों में दाह हो, शीतलता सुहावे तो उसे रुधिर का अभिष्यन्द नेत्ररोग कहिये ४ ॥

अथ वायु का अधिमन्थ (बड़ी नेत्रपीड़ा) का लक्षण ॥

आंखें दूखते में कुपथ्य करे तब आंखों में शूल बहुत चले और ऐसे रूले चलें मानो फूटीसी जायँ, आधाशिर नीचे होजाय, मस्तक जल उठे, आंसू शीतल आवें तब जानिये वायु का अधिमन्थ नेत्रका रोग है ५ ॥

अथ पित्त के अधिमन्थ का लक्षण ॥

आंखें दूखने आई हों तब गर्म वस्तु, खटाई आदि खाय तो आंखों में बहुत रूले चलें मानो आंखें शूल से फूटीसी जायँ, आंखों में दाह हो, पकिजायँ, शीतलता सुहावे, आंसू बहें, पीले नेत्र हों तब जानिये पित्त का अधिमन्थ नेत्ररोग है ६ ॥

अथ कफ के अधिमन्थ का लक्षण ॥

जिसकी आंखों में रूले बहुत चलें, मानो आंखें फूटी जाती

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

हैं और उसमें गर्म सुहावे, आंखों में सूजन हो, खाज आवे इसे कफ का अधिमन्थ नेत्ररोग कहिये ७॥

अथ रक्त के अधिमन्थ का लक्षण॥

जिसकी आंखें दुखती हों और रुधिर बिगड़े ऐसा कुपथ्य करे उसकी आंखों में रूले बहुत चलें मानो आंखें बैठीसी जायँ और तांबे के वर्णसदृश गर्म आंसू पड़ें, लाल आंखें हों, दाह हो, पकिजायँ तब जानिये रक्त का अधिमन्थ नेत्ररोग है। कफ का अधिमन्थ ७ दिन में और वायु का अधिमन्थ ६ दिन में तथा पित्त का अधिमन्थ तत्काल नेत्रों को फोड़ता है ८॥

अथ सशोथपाक नेत्ररोग का लक्षण॥

नेत्रों में आंसू आवें, खाज हो, नेत्र पके गूलर के फल समान पकिजायँ, सूजन हो और नेत्र लाल हों उसे सशोथ-पाक नेत्र का रोग कहिये ९॥

अथ अशोथपाक नेत्ररोग का लक्षण॥

नेत्रों के ऊपर सूजन न हो और खाज हो, पके गूलर के सदृश पकिजायँ, नेत्र लाल हों उसे अशोथपाक नेत्र का रोग कहिये १०॥

अथ हताधिमन्थ नेत्ररोग का लक्षण॥

नेत्रों से न दीखे, पीड़ा बहुत हो जैसे कमल सूखिजाय ऐसे नेत्र होजायँ उसे हताधिमन्थ नेत्ररोग कहिये ११॥

अथ वातपर्याय नेत्ररोग का लक्षण॥

जिसकी भौंह और नेत्रों में बारम्बार बहुत पीड़ा चले उसके वातपर्याय नेत्ररोग कहिये १२॥

अथ शुष्काक्षिपाकरोग का लक्षण॥

जिसके नेत्र मूंदिजायँ और जलें, लाल हों, अच्छी तरह न सूझे और रूखे होजायँ उसके शुष्काक्षिपाक नेत्ररोग कहिये १३॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ अन्यतोवात नेत्ररोग का लक्षण ॥

जिसके कन्धे, शिर, डांढ़ी, कान, भौंह, आंखें इनमें वायु की बहुत पीड़ा चले उसके अन्यतोवात नेत्ररोग कहिये १४ ॥

अथ अम्लाध्युषित नेत्ररोग का लक्षण ॥

जिसके नेत्र काले और लाल हों, पकिज़ायँ, सूजन हो, पानी आवे, उसे अम्लाध्युषित नेत्ररोग कहिये १५ ॥

अथ शिरोत्पात (सबलवायु नेत्ररोग)का लक्षण ॥

जिसकी आंखों में पीड़ा हो या न हो परन्तु आंखों की नसें चारों ओर से तांबे के सदृश लाल हों उसके शिरोत्पात नाम सबलवायु नेत्र का रोग होता है १६ ॥

अथ शिरोहर्ष नेत्ररोग का लक्षण ॥

जो अज्ञानता से सबलवायु का यत्न न करे उसकी आंखों में आंसू बारबार पड़ाही करें और उसे नेत्रों से किसी तरह भी न दीखे इसे शिरोहर्ष नेत्ररोग कहिये १७ ॥

अथ रोगयुक्त नेत्रों का लक्षण ॥

नेत्रों में बहुत पीड़ा हो, ललाई रहे, खुजली हो, शूल चले, तब जानिये नेत्रों में रोग रहता है, गया नहीं है १८ ॥

अथ नीरोग नेत्रों का लक्षण ॥

नेत्रों में कुछ भी पीड़ा न रहे और खाज, सूजन न हो, आंसू आदि न आवें, नेत्रों का अच्छा वर्ण हो, सब वस्तु यथार्थ दीखें तो उसके नेत्रों का रोग गया जानिये १९ यह परीक्षा है जबतक नेत्रों में रोग रहे तबतक इतने काम नहीं करने चाहिये—नेत्र-रोगवाला सुरमा, काजल आदि न लगावे, घृत, कषैली, खटाई आदि और पान आदि गर्म वस्तु, गरिष्ठ भोजन न खाय और न स्नान करे २०—इति समस्त नेत्ररोगों की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न सम्पूर्ण ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ समस्त नेत्ररोगों का यत्न ॥

नेत्र के रोगवाले को लङ्घन, लेप और स्वेद कर्म करावे और शिर के नस की फ़स्त छुड़ावे, जुलाब और आश्चोतनकर्म आदि यत्न करे तो नेत्रों के सब विकार जायँ ॥

अथ आंखें दूखने आई हों उसका यत्न ॥

जिसकी आंखें दुखती हों उसके ३ दिनतक अञ्जनादिक न करे क्योंकि ३ दिनतक नेत्र कच्चे रहते हैं चौथेदिन से नेत्रों में अञ्जनादि औषध करे तो नेत्र तत्काल अच्छे हों १ हेमन्त और शिशिरऋतु में मध्याह्न में अञ्जन करना, ग्रीष्म और शरद्ऋतु में मध्याह्न के पहिले तथा वर्षाऋतु में बादल न हों तब अञ्जन करना और वसन्तऋतु में सदाही सुरमा आदि का अञ्जन करे तो नेत्ररोग कभी भी न हों प्रथम बाईं आंख आंजकर पीछे दाहिनी आंजना संप्रदाय है ॥

अथ आंखें दूखने आई हों उसका लेप ॥

हड़ की छाल, सेंधानोन, गेरू, रसौंत ये सब बराबर ले जल में महीन पीस नेत्रों के ऊपर लेप करे तो सर्वनेत्रों के रोग जायँ १॥

अथ नेत्रों के अच्छे होने का दूसरा लेप ॥

लोहे के पात्र में नींबू का रस डाले उसको कुछ गाढ़ा करे पीछे नेत्रोंके ऊपर लगावे तो दूखते नेत्र अच्छे हों २ ॥

अथ नेत्रों की पीड़ा को तत्काल दूर करनेवाला लेप ॥

अफ़ीम १ माशे, फुलाई फिटकरी १ माशे, पठानीलोध १ माशे इन्हें नींब के रसमें पीस लोहे की कड़ाही में कुछेक गर्म करे पीछे नेत्रों के ऊपर लेप करे तो नेत्र दुखना तत्काल अच्छा हो ३॥

अथ नेत्रों के अच्छे होने का और लेप ॥

मुलहठी, गेरू, सेंधानोन, दारुहल्दी, रसौंत ये सब बराबर ले इन्हें जल से महीन पीस नेत्रों के ऊपर लेप करे तो नेत्र दूखने के सर्वरोग जायँ ४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ नेत्र दूखने आये हों उनके अच्छे होने की पोटली ॥

पठानीलोध १ माशे, फुलाई फिटकरी १ माशे, रसौंत १ माशे, मुलहठी १ माशे इन्हें महीन पीस ग्वारपट्ठे के रसमें अथवा पोस्तके पानी में अथवा जल में १ माशे भर की पोटली करे पीछे दूखते हुए नेत्रों के ऊपर बारम्बार फेरे तो नेत्र अच्छे हों ५ ॥

अथ नेत्रों में वायु से शूल चलता हो उसके अच्छे होने का सेंक ॥

पठानीलोध को महीन पीस कपड़े से छानकर घृतमें भूने पीछे उसका गर्म पानी से सेंक करे तो नेत्र अच्छे हों ६ ॥

अथ शार्ङ्गधर वाग्भट्टादिक के मत से नेत्ररोगों का यत्न ॥

सेंक १ आश्चोतनकर्म २ पीड़ाबन्धन ३ बिड़ालकर्म (आंखों के ऊपर लेप करना) ४ तर्पण (नेत्रों में घृत रसादिक का डालना) ५ पुटपाक ६ अञ्जन ७ शस्त्रकर्म ८ इसप्रकार नेत्ररोग का यत्न करिये। अरण्ड के पत्ते की जड़, बक्कल इन्हें औटाय इस जल को बकरी के दूध में औटावे जब वह जल जलजाय और दूध आय रहे तब उस दूधको कुछ गर्म आंखों के ऊपर १०० बार तरेड़ा दे तो वायु से दूखती आंखें अच्छी हों ७ अथवा दूध में थोड़ा सेंधानोन डाल गर्मकर सुहाता सुहाता आंखों के ऊपर तरेड़ा दे तो वायु की आंखें अच्छी हों ८ अथवा हल्दी, दारुहल्दी, सेंधानोन इन्हें दूध में पकाय इस दूध का आंखों के ऊपर तरेड़ा दे तो आंखें अच्छी हों ९ ॥

अथ गर्मी से आंखें दूखने आई हों उसका सेंक ॥

पठानीलोध, मुलहठी इन्हें महीन पीस घृत में सेंके पीछे बकरी के दूध में इन्हें पकावे फिर इस दूध का आंखों के ऊपर तरेड़ा दे तो गर्मीसे दूखती आंखें अच्छी हों १० और रुधिर के दुष्टपने से आंखें दूखें उसका भी यही यत्नहै ११ अथवा त्रिफला, लोध, मुलहठी, मिश्री, नागरमोथा इन्हें शीतल जल से महीन पीस नेत्रों के ऊपर तरेड़ा दे तो रुधिर से दूखती आंखें अच्छी हों

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथवा इमलीके पत्तों को कूटकर अफ़ीम, जवकुट हुई लवङ्ग और आग पर फुलाई हुई फिटकरी इन दवाओं की पोटली बनाकर जलाप्लुत आंख में फेरे १२॥

अथ आश्चोतन की विधि॥

आश्चोतन कर्म रात्रि में होता है आंखें उघारी राखे उनमें ओषधियों के रस की आठ बूंद डालिये। शीतकालमें गर्म और उष्णकाल में शीतल डालिये। वायु की आंखें दूखें तो गर्म औषध और कफकी आंखें दूखें तो तीक्ष्ण तथा गर्म औषध का रस डालिये १३॥

अथ वायु से आंखें दूखें उसका लेप॥

नींबके पत्तों का रस पानी डाल निकाले, उसमें पठानीलोध को पीस गर्म करे पीछे उसका आंखों के ऊपर लेप करे तो वायु के रक्त, पित्तसे दूखती आंखें अच्छी हों १४॥

अथ रक्त, पित्त और वायु से आंखें दूखें उसका यत्न॥

स्त्रीके दूध की आठ बूंद डाले तो गर्मीसे दूखती आंखें अच्छी हों १५ अथवा वायुसे आंखों में रूले चलें और यत्न से आराम न हो तो उसके ललाट की नस का कुछ रुधिर कढ़ावे अथवा भौंह के ऊपर दाह दे तो नेत्रों के रूले अच्छे हों १६ अथवा सहँजने के पत्तों की पींड़ी अथवा नींब के पत्तों की पींड़ी नेत्रों के ऊपर बांधे तो कफ के नेत्र के रूले जायँ १७॥

अथ गर्मी से नेत्र में रूले चलें उसका यत्न॥

आंवले को पानी से पीस उसकी पींड़ी बांधे अथवा बकायन के पत्तों की पींड़ी बांधे तो गर्मी से उत्पन्न नेत्रों के रूले जायँ १८ अथवा त्रिफला, लोध इन्हें कांजी के पानी में पीस पीछे घृत में तले फिर इसकी पींड़ी बांधे तो गर्मी से और कफ से हुए नेत्रों के रूले जायँ १९॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ नेत्रों में रूला, सूजन और खाज हो उसका यत्न ॥

सोंठि, नींब के पत्ते इनमें थोड़ा सेंधानोन मिलाय महीन पीस इनकी पींड़ी नेत्रों के ऊपर बांधे तो नेत्रों की सूजन, खाज और रूला ये सब जायँ २० ॥

अथ नेत्रों की गुहानी का यत्न ॥

नेत्रों की गुहानी को घृत से सेंके फिर उस गुहानी को शस्त्र से फोड़ उसके ऊपर हरताल, तगर, सेंधानोन ये सब बराबर ले इन्हें शहदसे महीन पीस लेप करे तो गुहानी जाय २१ ॥

अथ नेत्ररोग के लिये तर्पण की विधि ॥

जहां निर्वातस्थान हो वहां सूधा सुलाय उसके नेत्रों के ऊपर चौगिर्द उड़द का चून महीन पीस पानी में उसन उसकी २ अंगुल की बाटी कीजे फिर उसमें कुछ गर्म घृत सुहाता अथवा १०० बार धोया अथवा दूधकी ही १०० बार गिनती का बोले इतनी बार राखे तो नेत्रों के रोग, बांकापन, बाफणी जाती रही हों, आंखें अच्छी तरह न उघड़ें, तिमिर, फूला, मस्तकपीड़ा, वायु, रूले ये सब रोग तर्पण से दूर होते हैं। यह तर्पण बादलों में, उष्णकालमें, चिन्तामें, भ्रममें न करना २२–इति तर्पणविधि ॥

अथ नेत्रों का अञ्जन ॥

शंख की नाभि, बहेड़े की मींगी, हड़ की मींगी, मैनसिल, पीपल, कूट, खुरासानी बच ये सब बराबर ले इन्हें बकरी के दूध में महीन पीस अञ्जन करे तो फूला, तिमिर, मांसवृद्धि, कांच, पटल, रतौंधी, अर्बुद आदि नेत्रों के रोगों को यह अञ्जन दूर करता है २३–इति चन्द्रोदयगुटिका ॥

अथ लेखनी गुटिका ॥

कणगच के बीजों को महीन पीस उसमें केसू (ढाक के फूल) के रसकी बहुतसी पुट दे पीछे उसकी गोली कर पानी से घिस अञ्जन करे तो फूला आदि नेत्रके सब रोग जायँ २४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ दन्तवर्ति ॥

शूकर का दांत, गौका दांत, बकरी का दांत, घोड़े का दांत, गधे का दांत, शंख की नाभि, अनबेधा मोती, समुद्र का फेन ये सब बराबर ले इन्हें महीन पीस इनका अञ्जन करे तो सब प्रकार के फूले जायँ २५ अथवा कमलगट्टे, सहँजने के बीज, नागकेसर इन्हें महीन पीस अञ्जन करे तो नींद बहुत आती हो उसे नींद न आवे २६–इति नींदनाशक अञ्जन ॥

अथ रोपणी गुटिका ॥

तिलोंके फूल ८० पीपल के बीज ६० चमेली के फूल ५० मिरच १६ इन्हें महीन पीस गोलीकर पानी में घिस अञ्जन करे तो तिमिर, अर्जुनरोग, फूला, मांसवृद्धि आदि नेत्रों के सब रोग जायँ २७ ॥

अथ स्नेह की गुटिका ॥

रसौंत, दोनों हल्दी, चमेली के फूल अथवा नींब के पत्ते इन्हें महीन पीस गोबर के रससे अञ्जन करे तो रतौंधी जाय २८ अथवा आंवले के बीज, बहेड़े के बीज, हड़ के बीज इन्हें महीन पीस अञ्जन करे तो नेत्रों के पानी को और वातरक्त के रोगों को यह अञ्जन दूर करताहै २९ अथवा नीलाथोथा, सोनामक्खी, सेंधानोन, मिश्री, शंख की नाभि, मैनसिल, गेरू, समुद्रफेन, कालीमिरच ये सब बराबर ले इन्हें शहदमें महीन पीस अञ्जन करे तो तिमिर, नेत्रफूला, कांच इनको यह अञ्जन दूर करता है ३० ॥

अथ फूले के दूर होने का अञ्जन ॥

चीनिया कपूर का बड़ के दूध में २ माशेतक अञ्जन करे तो फूला जाय ३१ ॥

अथ नींदनाशक अञ्जन ॥

कालीमिरच को महीन पीस घोड़े की लारसे अथवा शहद से अञ्जन करे तो बहुत नींद जातीरहे ३२ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ तन्द्रा दूर होने का अञ्जन ॥

मूंगा, कालीमिरच, कुटकी, खुरासानी बच, सेंधानोन ये सब बराबर ले बछड़े के मूत्र में घिस अञ्जन करे तो तन्द्रा जाय ३३॥

अथ रसाञ्जन गुटिका ॥

रसौंत, राल, चमेली के फूल, मैनसिल, समुद्रफेन, सेंधानोन, गेरू, कालीमिरच ये सब बराबर ले इन्हें महीन पीस शहदमें अञ्जन करे तो नेत्रों की खाज, बाफणी जाती रही हो उस को यह अच्छा करे ३४॥

अथ मोतियाबिन्दु के दूर होने का अञ्जन ॥

गिलोय का रस २॥ टंक, शहद १ माशे, सेंधानोन १ माशे इनसबको इकट्ठाकर महीन पीस अञ्जन करे तो मोतियाबिंदु और तिमिर, धुन्ध आदि सब रोग जायँ ३५ अथवा साठी की जड़को स्त्री के दूध से घिस अञ्जन करे तो नेत्रों की खाज तथा शहदसे घिस अञ्जन करे तो नेत्रों से पानी पड़ता बन्द हो और घृतसे रगड़ अञ्जन करे तो फूला तथा तेल से घिस अञ्जन करे तो तिमिर एवं कांजी से घिस अञ्जन करे तो तिमिर जाय ३६॥

अथ नेत्रों में पानीपड़े उसके दूर होने का अञ्जन ॥

बबूलके पत्तों का काढ़ाकर रस निकाले पीछे रस को गाढ़ा कर उसमें शहद मिलाय अञ्जन करे तो नेत्र से पानीपड़ना बन्द हो ३७ निर्मली के फल को पानी में घिस अञ्जन करे तो नेत्र का पानी बन्द हो ३८॥

अथ नेत्र के निर्मल करने का अञ्जन ॥

निर्मली के फल को शहद में घिसे उसमें थोड़ा कपूर मिलाय अञ्जन करे तो नेत्र निर्मल हों ३९॥

अथ मोतियाबिन्दु या कांच आदि से सूझता हो उसके अच्छे होने का अञ्जन॥

काले सांपके मांसका घृत, शंखकी नाभि और निर्मली इन्हें महीन पीस नेत्रोमें अञ्जन करे तो मोतियाबिंदु आदि रोग दूर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

होकर दीखने लगे ४० अथवा मुर्गे के अण्डे का छिलका, मैनसिल, कांच, शंखकी नाभि, चन्दन, सेंधानोन ये सब बराबर ले इन्हें महीन पीस अञ्जन करे तो मोतियाबिंदु, फूली आदि नेत्र के रोग जायँ ४१ ॥

अथ नेत्र के सबरोग दूर होने का अञ्जन ॥

कालीमिरच २ माशे, पीपल २ माशे, समुद्रफेन २ माशे, सेंधानोन २ माशे, सुरमा ३६ माशे इन्हें महीन पीस चित्रा नक्षत्र के दिन इसका अञ्जन करे तो फूली, खाज, कांचआदि सब नेत्र के रोग जायँ ४२ अथवा खपरिया को महीन पीस जलमें मिला दे पीछे उसका पानी नितारले और नीचे रहे खपरिया के चूर्ण को फेंक देवे फिर उस पानी को पात्र में रख सुखाय दे पीछे उसकी पापड़ी का चूर्ण कर त्रिफले के रसकी ३ पुट दे तदनन्तर इस पापड़ी का दशवां भाग कपूर मिलाय महीन पीस अञ्जन करे तो नेत्रों के सब रोग जायँ ४३ ॥

अथ नेत्रों के सब रोग दूर होने का यत्न ॥

सुरमे को अग्नि से गर्मकर त्रिफले के रसमें ७ बार डुबोवे पीछे स्त्री के दूध में इसीतरह ७ बार डुबोवे पीछे गोमूत्र में इसी प्रकार बार बार गर्म कर सुरमेको डुबोवे फिर स्त्री के दूध में ५ बार डुबोवे पीछे इसको महीन पीस अञ्जन करे तो नेत्रके सबरोग जायँ ४४ ॥

अथ नेत्र की दृष्टि करनेवाली शलाका ॥

शीशे को अग्निमें गलाय गलाय त्रिफले के रसमें १०० बार डुबोवे पीछे इसी तरह जलभांगरे के रस में ५० बार डुबोवे पीछे इसी तरह सोंठि के रस में ५० बार डुबोवे फिर इसीतरह घृत में ५० बार डुबोवे पीछे गोमूत्र में इसीतरह २५ बार डुबोवे फिर इसीतरह शहद में २५ बार डुबोवे फिर बकरी के दूध में २५ बार

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

डुबोवे फिर इस शीशे की शलाका करे और शलाका को नेत्र में फेरे तो नेत्र के सबप्रकार के रोग जायँ ४५ ॥

अथ नयनामृत अञ्जन ॥

शोधे शीशे को गलाय उसी की बराबर उसमें पारा मिलावे पीछे सुरमा और शीशा पारे की बराबर मिलाय इन सबका दशवां भाग भीमसेनी कपूर डाले पीछे इन सबको महीन पीस अञ्जन करे तो नेत्र के सब रोग जायँ ४६ ॥

अथ सर्प आदि का विष दूर होने का अञ्जन ॥

जमालगोटे की मींगी में नींबू के रस की २१ पुट दे फिर इसकी गोली कर मनुष्य की लार में घिस नेत्र में अञ्जन करे तो सर्प आदि के विष दूर हों। वह मनुष्य मरा भी जीवे ४७—ये सब अञ्जन शार्ङ्गधर में लिखे हैं ॥

अथ दूखती आंख अच्छी होने का शाहहुजूरी का बताया नुस्खा ॥

अत्तार की दवा, जंगीहड़ ये दोनों ओषधि पानी में घिस आंखों के ऊपर चौगिर्द लेप करे तो वायु, पित्त, कफ इन तीनों आजारों में किसी विकार से आंख दुखने आई हो तो शीघ्र आराम हो यह नुस्खा अजमाया हुआ है ४८ ॥

अथ वाग्भट्ट के मत से मोतियाबिन्दु का यत्न ॥

कच्चे मोतियाबिन्दु का जाला न उतार कर शलाके से पक्के का जाला उतारना चाहिये ४९ ॥

अथ पक्के मोतियाबिन्दु का लक्षण ॥

नेत्र के तिलके ऊपर दही या मट्ठे समान बूंद आ जाय और उसको कुछ भी न दीखे, नेत्र में पीड़ादिक कुछ भी न हो तब उस नेत्र का शलाकादि से जाला उतारे। इतने मनुष्यों का जाला न उतारिये—पीनस रोगवाले का, कान और नेत्र में जिसके शूल चले और श्रावण, कार्त्तिक और चैत्र के महीने में जाला न उतारिये। साधारण काल हो तब जुलाब दे शरीर को शुद्ध कर भोजन

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

करा अच्छे निर्मल स्थान में बैठावे जहां पवनादिक न हों मध्याह्न के पहले नेत्र के रोग को दूर करनेवाले प्रवीण वैद्य के निकट नेत्र का जाला शलाका से लिवावे। वैद्य को चाहिये कि रोगी को पल्थीमार बैठावे और रोगी के पीछे चतुर मनुष्य को बैठावे वह मनुष्य दोनों हाथों से रोगी को पकड़े हिलने न दे पीछे उसकी आंख में वैद्य शलाका डाल अत्यन्त चतुरता से उसकी आंख में शलाका फेरे और शलाका से नेत्र के प्रान्तभाग में जाले को फोड़ सब नेत्र के जाले को दूरकर उस जाले में से नेत्र के तिल के ऊपर की वह विकार की बूंद गिर पड़े तब इस मनुष्य को सब वर्ण यथार्थ दीखें। शलाका के फेरने से पहले नेत्र को मुँह की बाफ से फूंक प्रस्वेदयुक्त कर ले और वैद्य अपने अंगूठे से उस रोगी के नेत्र को मसल कोमल करले पीछे शलाका से जाला ले। वैद्य भी अपना हाथ और तरह न हिलने दे। रोगी को अच्छी बातों से प्रसन्न कर फिर उसको सुलाय दे पीछे उस रोगी की आंख के ऊपर घृत का फाहा बांधे और उस रोगी को सूधा सुलावे ऐसे स्थान में जहां पवन चकचोंध आदि न आवे और रोगी का शिर, शरीर हिलने न दे। रोगी को छींक, खांसी, डकार, थूकना, बहुत पानी पीना, दातून, स्नान, खेद आदि न करने दे। और उसको अधोमुख न सोने दे, अत्यन्त हलका भोजन करावे, घृतादिक गरिष्ठ वस्तु न खाने दे इस विधि से ७ दिन करे पीछे कुछ एक घृत डाल पतला, हलका अन्न का हरीरा खवावे पीछे वायु को दूर करनेवाली मिश्री को आदि ले खवावे इसी तरह १ मण्डल तक रक्खे कुछ कुपथ्य करने न दे और पवन, तेज और महीन वस्तु आदि को न देखे और नेत्र में शीतलता हो ऐसी दूब आदि वस्तु देखने दे तो मोतियाबिन्दु आदि नेत्र के सब रोग जायँ। पीछे इसके शीतल चश्मा लगावे तो यह रोग कभी इसके न हो यह मोतियाबिन्दु का यत्न वाग्भट्ट में लिखा है ५०॥

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ पाण्डुरोग के दूर करनेवाला अञ्जन॥

हींगको दड़घल के रस में घिस नेत्र में अञ्जन करे तो पाण्डुरोग (पीलिया) जाय ५१॥

अथ नारायणाञ्जन॥

तुलसी और तुलसी के पत्तों का रस बराबर ले दोनों को कांसे के पात्र में डाल दोनों की बराबर स्त्री का दूध डाले पीछे इन तीनों को गजबेलि के घोटेसे २ पहर रगड़े फिर कांसेही के पात्रमें तांबे के घोटेसे २ पहर रगड़े पीछे इसका अञ्जन करे तो नेत्र का शूल और नेत्र का पाक तत्काल जाय ५२॥

अथ नयनामृतगुटिका॥

सोंठि, हड़ की छाल, कुलत्थ, खापरा, फिटकरी, माजूफल ये सब बराबर ले और भीमसेनी कपूर, कस्तूरी, अनबेधे मोती ये एक औषध के तोल से आधी आधी ले पीछे इन सबको खरल में महीन पीस नींब के रस में ५ दिन खरल करे पीछे इस की गोली कर उस गोलीको जल में घिस अञ्जन करे तो तिमिर और स्त्री के दूध से फूला, पटल और शहद से नेत्र से जल गिरना तथा गोमूत्र से रतौंधी और केले के रस से अञ्जन करे तो नेत्र की मांसवृद्धि जाय ५३-इति नयनामृतवटी॥

अथ नेत्रों की बाफणी जाती रही हो उनके आने का अञ्जन॥

आंधीझाड़ा (अपामार्ग) के पत्तों को गोमूत्र में पीसे पीछे उससे आधा खापरा ले इन दोनों को खरल में पीसे फिर इन दोनों के बीच जस्त का महीन पत्र धरे और कपड़-मिट्टीकर सुखाय अरने उपले में गजपुट की फूंक दे फिर स्वाङ्ग शीतल होने पर निकाल महीन पीस अञ्जन करे तो नेत्रकी बाफणी आवें ५४॥

अथ शीतला के फूले दूर होने का अञ्जन॥

गधे की दाढ़ को महीन पीस अञ्जन करे तो शीतला के फूले जायँ ५५॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ सबलवायु के दूर होने का अञ्जन ॥

आंवलासारगन्धक से मारे तांबे को महीन पीस अञ्जन करे तो सबलवायु, पटल आदि नेत्र के सब रोग जायँ। ये सब यत्न वैद्यरहस्य में हैं ५६ ॥

अथ फूला और धुन्ध के दूर होने का यत्न ॥

चोखा नीलाथोथा ५ टंक, फुलाई फिटकरी ५ टंक, भिगोये पीपल के बीज ५ टंक, मिश्री ५ माशे इन्हें महीन पीस कजली कर नेत्र में अञ्जन करे तो फूला, ढलका, धुन्ध ये सब जायँ ५७॥

अथ चन्द्रोदय गुटिका ॥

शंखकी नाभि, बहेड़े की मींगी, हड़ की छाल, मैनसिल, पीपल, मिरच, कूट, खुरासानी बच ये सब औषध बराबर ले बकरी के दूध में महीन पीस गोली करे फिर गोली को घिस अञ्जन करे तो तिमिर, नेत्र के मांस की वृद्धि, पटल, कांच, रतौंधी, फूला ये सब दूर हों ५८ ॥

अथ चन्द्रप्रभा गुटिका ॥

हल्दी, नींब के पत्ते, पीपल, मिरच, बायबिड़ंग, नागरमोथा, हड़ की छाल ये सब बराबर ले इन्हें महीन पीस बकरी के मूत्र में ३ दिन खरल करे फिर इसकी गोली कर छाया में सुखाय फिर इस गोली को गोमूत्र से घिस अञ्जन करे तो तिमिर, जल से कांच, शहद से पटल और स्त्री के दूध से घिस अञ्जन करे तो फूले को दूर करे ५९—इति चन्द्रप्रभावर्त्ति ॥

अथ द्वादशामृत हरीतकी ॥

हड़ की छाल १ भाग, बहेड़े की छाल २ भाग, आंवला ४ भाग, शतावरि २ टंकभर, मुलहठी २ टंक, तज २ टंक, सेंधानोन ५ टंक, पीपल ५ टंक इन सबकी बराबर मिश्री ले इन्हें महीन पीस २ टंक शहद और घृत के साथ ४९ दिन नित्य खाय तो तिमिर, पटल, कांच, रतौंधी, फूला, नेत्र से जल आवे,

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सबलवायु आदि सब नेत्र के रोगों को यह द्वादशामृत हरीतकी दूर करती है ६० ॥

अथ त्रिफलादि घृत ॥

त्रिफला का रस १ सेर, जलभांगरे का रस १ सेर, अड़ूसे का रस १ सेर, शतावरि का रस १ सेर, बकरी का दूध १ सेर, गिलोय का रस १ सेर, आंवले का रस १ सेर, कमलगट्टे, मुलहठी, त्रिफला, पीपल, दाख, मिश्री, कटेली इन सबका रस ५॥ सेर ले इन सबमें गौ का घृत पक्का २ सेर डाल मधुरी आंच से पकावे ये सब जलिजायँ घृतमात्र आय रहे तब इस घृतको २ टकेभर नित्य खाय तो नेत्रका तिमिर, कांच, फूला, सबलवायु आदि सब रोग जायँ ६१–इति महात्रिफलादि घृत ॥

अथ गर्मी के विकार दूर होने का अञ्जन और लेप की विधि ॥

आंख दूखे या सूजन हो तो आंख में अञ्जन वा लेप करने से आराम होताहै। शोधा सफ़ेदा १० माशे (उसके शोधने की विधि-सफ़ेदा को महीन पीस चीनी के बासन में बहुत पानी से धोवे जब सफ़ेदा नीचे बैठजाय तब उसका पानी निकाल डाले इसतरह तीन बार करलेवे), अत्तार की अंजरूत औषध ३ माशे ले (उसके शोधने की विधि–अंजरूत को महीन पीस फिर जिस स्त्री के बेटी होय उसका दूध ले और इसमें इतना मिलावे जो ८ पहर में सूखिजाय इसतरह ५ पुट दे) फिर कतीरा १ माशे, भीमसेनी कपूर ४ रत्ती, अत्तारकी निसोत औषध २ माशे, सफ़ेदगोंद १ माशे तोल मुवाफ़िक़ सब औषध इकट्ठाकर गुलाब के जल में खरल करे फिर एकजीवकर बेरप्रमाण गोली बांधे पीछे गुलाब के जल में अथवा सादे जल में घिस अञ्जन करे अथवा लेप करे तो गर्मी के सब विकार दूर हों ६२–इति गर्मी के अञ्जन लेप की विधि, नेत्र के सब रोगों की उत्पत्ति, लक्षण, संख्या, नाम और यत्न सम्पूर्ण ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ सुश्रुत के मत से कान के रोगों के नाम ॥

कर्णशूल १ कर्णनाद २ बधिर (बधिरपना) ३ कर्णक्ष्वेड ४ कर्णस्राव ५ कर्णकण्डू ६ कर्णगूथ ७ कर्णप्रतिनाद ८ कृमिकर्ण ९ चोटलगने से कर्ण में व्रण हो १० दोषों से कर्णमें व्रण हो ११ कर्णपाक १२ पूतिकर्ण १३ वायु का कर्णशोथ १४ पित्त का कर्णशोथ १५ कफ का कर्णशोथ १६ रुधिर का कर्णशोथ १७ वायु का कर्णशोथ १८ पित्त का कर्णशोथ १९ कफ का कर्णशोथ २० रुधिर का कर्णशोथ २१ वायु का कर्णार्बुद २२ पित्त का कर्णार्बुद २३ कफ का कर्णार्बुद २४ रक्त का कर्णार्बुद २५ मांस का कर्णार्बुद २६ मेद का कर्णार्बुद २७ नसों का कर्णार्बुद २८ चरक में कर्णपाली के बिषे ४ रोग अधिक कहे हैं उत्पात १ उन्मन्थक २ दुःखवर्द्धन ३ परिलेहिन ४ ॥

अथ कर्णशूल का लक्षण ॥

जिसके कान में वायु धँसिजाय और वह कोप को प्राप्त हो तब कान में बहुत शूल चलावे उसको कर्णशूल कहिये १ ॥

अथ कर्णनाद का लक्षण ॥

कान के छिद्र में वायु के घुस जाने से भेरी, मृदङ्ग, शंख आदि के से अनेक शब्द हों उसे कर्णनाद कहिये २ ॥

अथ बधिर का लक्षण ॥

जिसके कर्ण के छिद्र में वायु कफयुक्त प्रवेशकर उसमें बैठ रहे तो मनुष्यको बधिर कर दे ३ ॥

अथ बधिर का असाध्य लक्षण ॥

बालक, बूढ़ा और बहुत दिन का बधिर अच्छा नहीं होता ॥

अथ कर्णक्ष्वेडरोग का लक्षण ॥

जिसके कान में वायु, पित्त, कफ प्रवेशकर बांस के फाड़ने का सा शब्द करें उसे कर्णक्ष्वेडरोग कहिये ४ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ कर्णस्राव का लक्षण ॥

जिसके शिरमें चोट लगी हो अथवा कानमें जल पड़ा हो उसके कानसे राद बहा करे उसे कर्णस्रावरोग कहिये ५ ॥

अथ कर्णकण्डू का लक्षण ॥

जिसके कान में कफसंयुक्त वायु पैठे और कान में खाज करे उसे कर्णकण्डू कहिये ६ ॥

अथ कर्णगूथ का लक्षण ॥

जिसके कानमें पित्तकी गर्मी प्रवेशकर कफको शोषले उसके कान में मल बहुत स्रवे उसे कर्णगूथ कहिये ७ ॥

अथ कर्णप्रतिनाद का लक्षण ॥

वह कर्णगूथ पतला पड़जाय पीछे वह नाक में आय प्राप्त हो उसे कर्णप्रतिनाद कहिये ८ ॥

अथ कृमिकर्ण का लक्षण ॥

जिसके कान में पतङ्ग, कनखजूरा आदि जानवर धँसिजायँ और कान में फड़फड़ावें तथा उस मनुष्य को बहुत व्याकुल कर दें, पीड़ा करे और पीड़ाआदि सब जाती रहें उसे कृमिकर्ण रोग कहिये ९ ॥

अथ कर्णविद्रधि का लक्षण ॥

यह दो प्रकार की है। एक तो कान में चोट लगजानेसे व्रण पड़ जाय और दूसरा किसी दोष से कान में व्रण पड़जाय पीछे उस कान से रुधिर, राद आदि निकले और कान में दाह आदि सब रहें उसे कर्णविद्रधि कहिये १० ॥

अथ कर्णपाक का लक्षण ॥

जिसका कान पित्त करके पकजाय और कानमें काढ़े के सदृश राद निकले उसे कर्णपाक कहिये ११ ॥

अथ पूतिकर्ण का लक्षण ॥

जिसके कानमें व्रण पड़े पीछे उसके कानसे जल गिरा करे और उसमें राद भी पड़े उसे पूतिकर्ण कहिये १२ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथवा वायु, पित्त, कफ, रुधिर से जो हो उनके लक्षण से जानिये १३ और वायु, पित्त, कफ रुधिर के प्रभाव से मशे के रूप कान में अर्श पैदा होता है उसको वातादिक से जानलीजिये १४ और कान में वायु, पित्त, कफ, रुधिर, मांस, मेद, नसें ये सातोंही अर्बुद नाम (गांठरूप) रोग को करते हैं उसका लक्षण अर्बुदरोग में कहा है। कान में सब २८ रोग हैं। चरक के मतसे कान के नीचे ४ रोग हैं। वायु का १ पित्त का २ कफ का ३ सान्निपात का ४ ॥

अथ कर्णपाली के ५ रोग और परिपोटक का लक्षण ॥

कोमल कान की लौर को बहुत बढ़ाया करे तो कान की लौर सूजजाय और उसमें पीड़ा हो आवे उसे परिपोटक कहिये १ ॥

अथ उत्पात का लक्षण ॥

कान की लौर में भारी गहना पहिरे उसके संयोगसे अथवा किसी तरह लौर के खींचने से ऊपर सूजन होआवे, दाह और पीड़ा हो उसे उत्पातरोग कहिये २ ॥

अथ उन्मन्थक का लक्षण ॥

जो कान की पालीनाम लौर को हठ से बढ़ाया चाहे तब वहां वायु कोपकर कफसंयुक्त सूजन को करे और वहां खाज हो उसे उन्मन्थक कहिये ३ ॥

अथ दुःखवर्द्धन का लक्षण ॥

जिसके कान की लौर दुःख से बींधी गई हो और वहां दाह और पीड़ा हो तथा पकिजाय उसे दुःखवर्द्धन कहिये ४ ॥

अथ परिलेहिन का लक्षण ॥

जिसके कान की लौर के ऊपर कफ, रुधिर के कोप से सरसों सदृश फुंसियां हों और उस जगह खाज चले, दाह हो और पकिजाय उसे परिलेहिन कहिये ५ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ कर्णरोग का यत्न ॥

अदरक का रस, शहद, सेंधानोन, तेल ये सब इकट्ठाकर इन्हें गर्मकर कान में डाले तो कानकी पीड़ा, कर्णनाद, बधिरपना और कर्णक्ष्वेड ये सब रोग दूर हों १ अथवा लहसुन का रस, अदरक का रस, बरना की जड़ का रस, केले का रस इन सबको इकट्ठा गर्मकर कान में डाले तो कान की पीड़ा व रोग जायँ २ ॥

अथ कान के शूल दूर होने का यत्न ॥

आक के कोमलपत्तों को खटाई से महीन पीस उनका रस निकाले फिर इसमें तेल और नोन डाले पीछे इसको थूहर की लकड़ी में भरे और उस लकड़ी में कपड़ामिट्टीकर उसको पुटपाक करे फिर उसका रस निकाल इस रसको थोड़ा गर्मकर कान में डाले तो कान का शूल जाय ३ अथवा आकके पत्तों में घृत लगाय अग्नि से तपाय उनका रस निकाल कुछ गर्मकर कान में डाले तो शूल जाय ४ अथवा बकरे के मूत्र में सेंधानोन डाल थोड़ा गर्मकर कान में डाले तो कानका शूल जाय ५ अथवा अरलूकी जड़ के रस में मधुरी आंच से तेलको पकावे जब वह रस जल जाय और तेलमात्र आय रहे तब इस तेलको कानमें डाले तो त्रिदोष का उपजाभी कर्णशूल जाय ६ ॥

अथ बधिर आदि कानके रोगोंके दूर होने का तेल ॥

कड़ुए तेल में सोंठि, मिरच, पीपल, कूट, पीपलामूल, अपामार्ग का खार, जवाखार, बेल की जड़ का रस, गोमूत्र ये सब मधुरी आंच से पकावे पीछे जब ये सब जल जायँ और तेलमात्र रहे तब इस तेल को कान में डाले तो बधिरपना, कान में शब्द होना, कान बहना इन सब रोगों को यह दूर करे ७ इति बिल्वतैल ॥

अथवा बेल के कच्चे फलों का रस निकाल उसमें सज्जी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS

का चूर्ण डाल पीवे तो कान की पीड़ा, बधिरपना, दाह इन सब को दूर करे ८॥

अथ कान से राद बहती हो उसके अच्छे होने का तेल॥

आंवले के पत्तों का रस, जामुन के पत्तों का रस, महुआ के पत्तों का रस, बड़के बक्कल का रस, चमेली के पत्तों का रस इस में तेल डाल मधुरी आंच से पकावे जब तेलमात्र रहजाय तब इस तेलको कान में डाले तो कान बहना अच्छा हो ९ अथवा रसौंत को स्त्रीके दूधमें घिस शहद मिलाय कान में डाले तो कानका बहना बन्द हो १० अथवा कूट, हींग, बच, दारुहल्दी, सौंफ, सोंठि, सेंधानोन इन्हें महीन पीस बकरे के मूत्र में मिलाय इसमें तेल डाल मधुरी आंचसे पकावे जब ये सब जलिजायँ और तेलमात्र आय रहे तब इस तेल को कान में डाले तो राद बहती बन्द हो ११॥

अथ कान में व्रण पड़गया हो उसके दूर होने का तेल॥

मोटीसीप के चूर्ण को कडुएतेल में पकावे पीछे वह तेल कान में डाले तो कान के व्रण अच्छे हों १२ अथवा आंवलासार गन्धक १ टके भर, मैनसिल १ टके, हल्दी १ टके, कडुआतेल ८ टकेभर, धतूरे के पत्तों का रस ८ टके भर इन सबको ले इन्हें महीन पीस मधुरी आंचसे पकावे जब सब जलजायँ तेलमात्र रहे तब इस तेल को कान में डाले तो कान के व्रण अच्छे हों १३॥

अथ कानमें कृमि पड़ि गये हों उनके दूर करने का यत्न॥

कृमिके दूर होने का यत्न जो पीछे लिखा है उससे कृमिरोग जाय १४ अथवा बैंगन की जड़ के रसका धुआं सरसों के तेल के साथ कान में दे तो कान के कृमि जायँ १५ और कान की सूजन और कानके अर्बुदरोग का यत्न पीछे लिखा है उससे ये जायँ ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS

अथ बधिरपने के दूर करने का तेल ॥

मूली की जड़ का रस, कड़ुआतेल, शहद ये सब बराबर ले इन्हें कुछ गर्म कर कान में डाले तो बधिरपना जाय १६ अथवा मिश्री, इलायची इन्हें महीन पीस कान में डाले तो बधिरपना जाय १७ ॥

अथ कान की पीड़ा के दूर होने का तेल ॥

सोंठि, पीपल, सेंधानोन, कूट, हींग, बच, लहसुन, तिल का तेल इनको आक के पत्तों के रस में मधुरी आंच से पकावे ये रस आदि सब जल जायँ और तेलमात्र रहे तब इस तेल को कान में डाले तो कान की पीड़ा दूर हो १८ ॥

अथ कान के सब रोगों के दूर होने का तेल ॥

गाढ़ी और मोटी सीपों का चूर्ण, पद्माख, हींग, तूंबर, सेंधानोन, कूट, कपास की मींगी इन्हें पीस इनका काढ़ाकर इसमें कड़ुआतेल ७ टके भर डाले और हुलहुल का रस इन सबकी बराबर डाले पीछे इसको मधुरी आंच से पकावे जब रस आदि सब जलजायँ और तेलमात्र आय रहे तब इस तेल को कान में डाले तो कान के व्रण, राद, बधिरपना, कानमें शब्द होना इन सब रोगों को यह दूर करता है १९ अथवा कूकर भांगरे का रस पाव भर, हरफारेवड़ी का रस ४ पैसे भर, लहसुन का रस ४ पैसे भर, सौंफ २॥ टंक, खुरासानी बच २॥टंक, कूट २॥ टंक, सोंठि २॥ टंक, मिरच २॥ टंक, पीपल २॥ टंक, बकरी का दूध आधसेर, कड़ुआ तेल ५ टके भर इन सबको इकट्ठाकर मधुरीआंच से पकावे जब सब जल जायँ और तेलमात्र आय रहे तब इस तेल को कान में डाले तो बधिरपना, कानकी राद और कान के सब रोग जायँ २०॥

अथ कान में राद बहती हो उसके अच्छे होने की औषध ॥

समुद्रफेन, सुपारी की राख, कत्था इन्हें महीन पीस कान में डाले तो कान का बहना बन्द हो। ये सब यत्न वैद्यरहस्य में हैं २१॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Arya Samaj Foundation Trust, Delhi and eGangotri Funding by IKS

अथ कान की लौर पक गई हो उसके अच्छे होने का यत्न ॥

शतावरि, असगन्ध, दूध, अरण्ड की जड़, काले तिलों का तेल इन्हें मधुरी आंच से पकावे ये सब जल जायँ और तेलमात्र आय रहे तब इस तेल को कान की लौर में लगावे तो लौर की पीड़ा आदि सब मिटें और कान की लौर बढ़े २२ ॥

अथ परिपोटक अच्छे होने का तेल ॥

जीवन्तीगण में तेल पचाय मर्दन करे तो परिपोटक अच्छे हों २३ जोंकों के लगाने से उत्पात रोग जाय २४ सुरमा, कलिहारी, बावची, कंकपक्षी का मांस इनमें मधुरी आंच से तिलों का तेल पकावे जब रस जल जाय तेलमात्र आय रहे तब इस तेल को कान की लौर में लगावे तो उन्मन्थक जाय २५ अथवा जामुन के पत्ते, आम के पत्ते, बड़ के पत्ते इनका काढ़ा कर इस काढ़े में तेल पकावे फिर इस तेल का मर्दन करे तो दुःखवर्द्धन रोग जाय २६ अथवा गोबर के उपले से सेंके अथवा दूध से वा गोमूत्र से कपूर का लेप करे तो कान की लौर अच्छी हो। ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं २७—इति कर्णरोगों की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न सम्पूर्ण ॥

अथ नासिका के रोगों की उत्पत्ति, लक्षण, यत्न, संख्या और नाम ॥

नासिका में ३४ रोग हैं। पीनस १ पूतिनास २ नासापाक ३ पूयशोणित ४ बहुत छींक आवें ५ छींक न आवें ६ नाक जला करे ७ प्रतिनाह ८ परिस्राव ९ नासाशोष १० प्रतिश्याय ११ चार प्रकार का नासार्बुद १५ सात प्रकार का नासार्श २२ चार प्रकार का नाकशोथ २६ चार प्रकार का नासिका में ३० रक्तपित्त चार प्रकार का ३४ ॥

अथ पीनस का लक्षण ॥

जिसकी नाक से कफ करके श्वास अच्छी तरह न आवे,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

नाक रुकजाय, सूखी रहे उसमें धुआं निकले और जिसकी नाक में सुगन्ध, दुर्गन्ध की बास न आवे उसके पीनस कहिये १॥

अथ पूतिनास का लक्षण॥

जिसके गला, तालु के मूल की बायु पित्त, कफ को दूषित करे और उसके मुँह में, नासिका में वह वायु श्वास के मार्ग से दुर्गन्ध को निकाले उसे पूतिनासरोग कहिये २॥

अथ नासापाक का लक्षण॥

जिसकी नाक में पित्त दूषित हो नाक में फुंसी करे और उसको पकाय राद निकाले उसे नासापाक कहिये ३॥

अथ पूयरक्त का लक्षण॥

ललाट में किसीतरह की चोट लगनेसे कोप को प्राप्त हुए दोष नासिका के द्वारा रादयुक्त रुधिर को निकालें उसे पूयरक्त रोग कहिये ४॥

अथ क्षवथु नाम छींक बहुत आवें उसका लक्षण॥

नाक की पवन दुष्ट हो नाक के मर्मस्थानों को दूषित करे और कफसे मिलकर बहुत बार छींकों को प्रकट करे उसे क्षवथु नाम रोग कहिये ५॥

अथ क्षवथु का और लक्षण॥

जो पुरुष नाक में मिरच आदि औषध डाले अथवा सूर्य की ओर देखे अथवा नाक में सूत, तृण आदि डाले तब उसकी नाकमें छींक बहुत आवें इसे भी क्षवथु नाम रोग कहिये ६॥

अथ क्षवथुभ्रंश का लक्षण॥

जिसकी नाकमें पित्त करके कफ दग्ध होजाय और उस पुरुष को छींक न आवें उसे क्षवथुभ्रंश रोग कहिये ७॥

अथ दीप्तरोग का लक्षण॥

जिसकी नाक में पित्त कुपित होकर नाक में बहुत दाह करे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

और नाक में धुआं सा निकले तथा उस पवन करके नाक बले उसे दीप्तरोग कहिये ८॥

अथ प्रतिनाह का लक्षण॥

वायु से संयुक्त कफ नाक के स्वर को रोंक दे तो उसे प्रतिनाह रोग कहिये ९॥

अथ परिस्राव का लक्षण॥

जिसकी नाक के स्वर में गाढ़ा, पीला, सफ़ेदाई को लिये मल स्रवे उसे परिस्राव कहिये १०॥

अथ नासासंशोष का लक्षण॥

जिसकी नाक में वायु, पित्त, कफ ये तीनों दुष्ट हों और वह महाकष्ट से सांसले उसे नासासंशोष कहिये ११॥

अथ प्रतिश्याय का लक्षण॥

जिसके पीनसका रोग हो और वह आलस्य कर उसका यत्न न करे तब वह पीनस बढ़कर कोप को प्राप्त हो और स्थानों में जाय प्रकटे तब उसके बहुत नाम नजलेआदि पड़ें और वह प्रतिश्यायनाम पीनसके अनेक रोगोंको करताहै १२॥

अथ पीनसके पूर्वरूप का लक्षण॥

जिसे छींक आवे, मस्तक भारी रहे, अङ्ग जकड़बन्द होजाय, रोमांच आदि उपद्रव हों तब जानिये कि इसके पीनस का रोग होगा १३॥

अथ वायु के पीनस का लक्षण॥

नाक का मार्ग रुकजाय और उससे थोड़ा पतला गर्म पानी गिरा करे तथा गला, तालू, ओष्ठ ये सूखें और उसकी कनपटी दूखें और मुँहसे घोंघों शब्द हो उसे वायु की पीनस कहिये १४॥

अथ पित्तकी पीनस का लक्षण॥

नाकमें दाह हो, पीलाई लिये गर्म गर्म पानी गिरे, शरीर कृश

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

होजाय, गर्म रहे, नाक से अग्निरूप धुआं निकले तथा वमन भी हो उसको पित्त की पीनस कहिये १५ ॥

अथ कफ की पीनस का लक्षण ॥

जिसकी नाक से गाढ़ा, सफ़ेद कफ बहुत निकले, शरीर सफ़ेद होजाय, आंखों के ऊपर सूजन हो, मस्तक भारी रहे और गला, तालू, ओष्ठ, शिर इनमें खाज बहुत हो तब जानिये इसके कफ की पीनस है १६ ॥

अथ सन्निपात की पीनस का लक्षण ॥

जिसकी नाक में पीछे कहे हुए सब लक्षण मिलें और वह पीनस बारम्बार हो तथा यत्न करने से न दूर हो और न पके उसे सन्निपात की पीनस जानिये। यह असाध्य है १७ ॥

अथ दुष्टपीनस का लक्षण ॥

बारम्बार जिसकी नाक झरा करे और सूख जाय तथा नाक से अच्छी तरह श्वास न आवे, नाक रुक जाय और कभी खुल भी जाय तथा सुगन्ध दुर्गन्ध का ज्ञान न रहे उसे दुष्टपीनस कहिये १८ ॥

अथ रुधिर से उपजी पीनस का लक्षण ॥

जिसकी छाती में चोट लगी हो उसके रुधिर की पीनस होजाय, नाक में रुधिर पड़े और उसके पीछे कहे हुए पित्त के लक्षण हों तथा उसकी आंखें लाल हों उसे रुधिर की पीनस कहिये १९ ॥

अथ पीनस का असाध्य लक्षण ॥

आलस्य करके पीनस का यत्न न करे तो सब पीनस असाध्य होजायँ २० ॥

अथ पीनसवाले की नाक में कृमि पड़ जायँ उसका लक्षण ॥

जिसके नाक में पीनस से सफ़ेद, चिकने छोटे छोटे कृमि पड़जायँ और वे दीखें नहीं उसके शिर का रोग होजाय तथा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri, Chanakya Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

और भी रोगों को प्रकट करे बधिरपना, नेत्र के रोग, सूजन, मन्दाग्नि इन सब रोगों को यह कृमि पीनस प्रकट करता है और नाक में अर्बुदनाम गांठ ७ प्रकार की, सूजन ४ प्रकार की, अर्श ४ प्रकार का, रक्तपित्त ४ प्रकार का नाक में होता है। इन सबके लक्षण पीछे लिखे हैं २१॥

अथ पीनस के कच्चेपने का लक्षण॥

जिसका शिर भारी रहे, भोजन में अरुचि हो, नाक झड़ा करे, धीरे बोले, शरीर क्षीण पड़जाय, बहुत थूके ये लक्षण हों तो कच्चा पीनस जानिये २२॥

अथ पके पीनस का लक्षण॥

जिसकी नाक का कफ गाढ़ा निकले और नाक के छिद्र में भी रहे और वर्ण भी अच्छा होजाय तथा स्वरभी अच्छा हो और भूख आदि सब लगें उसे पका पीनस कहिये २३॥

अथ नाक के रोगों का यत्न॥

कालीमिरच, गुड़, हींग ये तीनों मिलाय अनुमान मुवाफ़िक़ खाय तो पीनस का रोग जाय १ अथवा कायफल, पुष्करमूल, काकड़ासिंगी, सोंठि, कालीमिरच, पीपल, कलौंजी इन सबको महीन पीस २॥ टंक चूर्ण अदरक के रस में ले अथवा इसका काढ़ा ले तो पीनस, स्वरभङ्ग, पाण्डुरोग, सन्निपात, कफ, श्वास, कास इन सबको यह दूर करे २ अथवा कायफल, हींग, मिरच, लाख, इन्द्रयव, कूट, बच, सहँजने की जड़, बायबिड़ंग इनका काढ़ा ले तो पीनस जाय ३॥

अथ व्योषादिगुटिका॥

सोंठि, कालीमिरच, पीपल, चित्रक, तालीसपत्र, डांसरा, अमलबेत, चव्य, जीरा, इलायची, तज, पत्रज ये सब बराबर ले महीन पीस इनकी बराबर पुराना गुड़ ले उसमें २॥ टंक भरकी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

गोली करे १ गोली नित्य १० दिन खाय तो पीनस, खांसी, अरुचि दूर हो ४ ॥

अथ पीनस दूर होने का तेल ॥

कटेली, दात्यूणी, बच, सहँजने की छाल, तुलसी के पत्तों का रस इन सबको तेलमें पकावे पीछे इस तेलकी नास ले तो पीनस जाय ५–इति व्याघ्रतैल ॥

अथवा सहँजने की छाल, कटेली, निशोत, सोंठि, मिरच, पीपल, सेंधानोन, बेल के पत्तों का रस इन सबको तेल में पकावे पीछे इसकी नास ले तो पीनस जाय ६–इति शिग्रुतैल ॥

अथ जिसे छींक बहुत आवें उसका यत्न ॥

घृत, गुग्गुल, मोम इनकी नाक में धूनी दे तो छींक बन्द हो ७ अथवा सोंठि, कूट, पीपल, बेलकी गिरी, दाख इनका काढ़ा कर तेल में पकावे पीछे इसकी नास ले तो छींक आना दूर हो ८ ॥

अथ पीनस के दूर होने का चूर्ण ॥

बायबिड़ंग, सेंधानोन, हींग, गुग्गुल, मैनसिल, खुरासानी बच इन्हें महीन पीस सूंघे तो पीनस जाय ९ ॥

अथ पीनस के दूर होने का तेल ॥

भांगरे के पत्तों का रस, सेंधानोन इनमें तेल पकावे फिर इस तेलको सूंघे तो पीनस तत्काल जाय १० ॥

अथ नाकमें अर्शनाम मस्सा हो उसके दूर होने का तेल ॥

धमासा, पीपल, दारुहल्दी, अपामार्ग के बीज, जवाखार, किरमाला की गिरी अथवा बक्कल, सेंधानोन इनमें तेल पकाय नाक के मस्से में लगावे तो मस्से दूर हों ११ और नाकके जो रोग कहे हैं उनमें इसका यत्न देख लेना। ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं। अथवा सोनेके समय अधौटा पानी पीवे तो पीनस का रोग जाय १२ अथवा जीरा, घृत, खांड़ मिलाय खाय तो

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पीनस जाय १३—इति नासिका के रोगों की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न सम्पूर्ण ॥

अथ मुख के रोगों की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

मुख के ७ अङ्ग हैं। ओठ १ मसूढ़ा २ दांत ३ जीभ ४ तालू ५ गला ६ तथा गला आदि मुखका सर्वाङ्ग ७ और जीभ का ५ तालू का ९ कण्ठका १८ सर्व मुख में फैलता ३ ॥

अथ मुख के रोगों की उत्पत्ति ॥

अनूप देशके मांस के खानेसे, बहुत दूधके पीनेसे, बहुत दही और उड़द आदि के खाने से कोपको प्राप्त हुए वायु, पित्त, कफ ये मुख के रोगों को प्रकट करते हैं १ ॥

अथ ओठ के रोगों की उत्पत्ति, संख्या ॥

ओठ के ८ रोग हैं। वायुका १ पित्तका २ कफका ३ सन्निपातका ४ रुधिरका ५ मांसका ६ मेदका ७ चोट लगनेका ८ ॥

अथ वायु के ओठरोग का लक्षण ॥

जिसके ओठ कठोर, खरदरे, गाढ़े और काले हों और उनमें पीड़ा बहुत हो, बहुत फटे हों तो वायु के कोप का ओठरोग जानिये १ ॥

अथ पित्तकोपके ओठरोग का लक्षण ॥

जिसके ओठोंमें फुंसियां हों और वे फुंसियां बहने लगजायँ, उनमें पीड़ा भी चौगिर्द हो तथा दाह हो, पकिजायँ और उनकी कान्ति पीली होजाय तब जानिये पित्तके कोप का ओठरोगहै २॥

अथ कफके ओठरोगों का लक्षण ॥

जिसके ओठ देहके वर्ण सदृश हों और वे स्रवें, उनमें फुंसियां हों और पीड़ा न हो, खाज आवे और उनसे गाढ़ा, कठोर कफ निकले उसे कफके कोपका ओठरोग जानिये ३ ॥

अथ सन्निपातकोपके ओठरोग का लक्षण ॥

कभी काले, कभी पीले, कभी सफ़ेद हों और उनमें बहुत

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

फुंसियां हों और पूर्वोक्त सब लक्षण मिलें उसे सन्निपात के कोपका ओठरोग जानिये ४ ॥

अथ रुधिरकोप के ओठरोगका लक्षण ॥

जिसके ओठों में फुंसियां बहुत हों और उनमें पीड़ा बहुत हो, उन फुंसियों का रंग छुहारे के समान हो और उनमें बहुत रुधिर निकलाकरे ये लक्षण हों तो रुधिरके कोपका ओठरोग जानिये ५ ॥

अथ मांसकोपके ओठरोग का लक्षण ॥

जिसके ओठ का मांस दुष्ट हो उसके ओठ भारी और गठीले होजायँ तथा जिसके रुधिर में जानवर डाले वह जानवर मूर्च्छित होजाय तब जानिये इसके रुधिर कोपका ओठरोग है ६ ॥

अथ मेदकोप के ओठरोगका लक्षण ॥

जिसके ओठों का रुधिर घृत अथवा माड़के समान ओठों की फुंसियों से निकले और उनमें खाज हो, ओठ कोमल हों और रुधिर सफ़ेद पत्थर के समान गाढ़ा स्रवे तब मेद के कोपका ओठरोग जानिये ७ ॥

अथ चोट लगने के ओठरोग का लक्षण ॥

ओठमें किसीतरह की चोट लगने से ओठ फटिजायँ, उनमें खाज हो, ओठ मथेसे होजायँ और उनमें पीड़ा भी हो तब चोट लगने के कोपका ओठरोग जानिये ८ ॥

अथ ओठों के रोगों का यत्न ॥

जिसके ओठोंमें रोग हो उसका जलौकासे रुधिर कढ़ाइये तो रोग जाय १ अथवा शुद्ध मोम में घृत डाल उसकी बत्तीसे अच्छी तरह सिंकावे तो ओठके रोग जायँ २ अथवा चारप्रकार के स्नेह–तेल १ घृत २ मांसका घृत ३ अथवा मांसके मध्य की मींगी ४ इन चारों स्नेहों में मोम मिलाय सुहाता सेंक करे तो ओठों के रोग जायँ ३ अथवा फूलप्रियंगु, त्रिफला, पठानीलोध

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

इन्हें महीन पीस स्नेह में मिलाय सुहाता ओठों में सेंक करे अथवा शहद से खाय तो ओठोंके रोग जायँ ४॥

अथ प्रतिसारणविधि॥

ओठों के चूर्ण, अवलेह अँगुली से शनैः शनैः लगावे उसे प्रतिसारण कहिये॥

अथ ओठोंके बहुत व्रणों का यत्न॥

जो यत्न व्रण के अच्छे होने का पीछे लिखाहै वही करे ५—इति ओठों के रोगों के लक्षण और यत्न सम्पूर्ण॥

अथ मसूढ़े के रोगों के नाम और संख्या॥

शीताद १ दन्तपुप्पुट २ दन्तवेष्ट ३ सौषिर ४ महासौषिर ५ परिदर ६ उपकुश ७ वैदर्भ ८ खल्लीवर्धन ९ अधिमांस १० पञ्चनाड़ी वायुसे मसूढ़े की नस निकले ११ पित्तसे मसूढ़े की नस निकले १२ कफसे मसूढ़े की नस निकले १३ सन्निपातसे मसूढ़े की नस निकले १४ चोट लगने से मसूढ़े की नस निकले १५ दन्तविद्रधि १६॥

अथ शीताद मसूढ़े के रोग का लक्षण॥

कारण विनाही अकस्मात् मसूढ़े के व्रण से रुधिर निकले और उस रुधिर में दुर्गन्ध बहुत आवे तथा रुधिर काला हो, मसूढ़े कोमल हों और बिखरजायँ, आपसमें पकनेलगें इस प्रकार कफ, रुधिरके दुष्टपनेसे शीतादरोग उत्पन्न होता है १॥

अथ दन्तपुप्पुट मसूढ़े के रोगका लक्षण॥

दांतों के तीन मसूढ़ोंमें सूजन बहुत होजाय इसे दन्तपुप्पुट रोग कहिये। यह कफ, रुधिर के कोपसे होता है २॥

अथ दन्तवेष्टरोग का लक्षण॥

जिसके मसूढ़े में रादको लिये रुधिर निकले और दांत हिलने लगि जायँ उसे दन्तवेष्ट रोग कहिये ३॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ सौषिर मसूढ़े के रोग का लक्षण ॥

मसूढ़े में सूजन होआवे, उसमें पीड़ा हो, लार पड़े, खाज हो उसको सौषिरनाम रोग कहिये। यह कफ वायुसे होताहै ४ ॥

अथ महासौषिररोग का लक्षण ॥

उन मसूढ़ों में दांत हिलने लगें और तालू बैठजाय अथवा तालूपर छेद पड़जायँ यह महासौषिर सन्निपात के कोप से होता है ५ ॥

अथ परिदर मसूढ़े के रोग का लक्षण ॥

जिसके दांतके मसूढ़े बिखरजायँ और उनसे रुधिर न बहे वह पित्त, रुधिर, कफ इनके कोपसे उपजा परिदर कहाताहै ६ ॥

अथ उपकुश मसूढ़े के रोग का लक्षण ॥

जिसके मसूढ़ोंमें दाह हो, पकिजायँ, दांत हिलने लगजायँ, मसूढ़े के दाबने से अथवा औषधों के घिसने से रुधिर निकले और उसमें पीड़ा न हो, मसूढ़े में दुर्गन्ध आवे यह पित्त रुधिर से उपजा उपकुश नाम मसूढ़े का रोग होता है ७ ॥

अथ वैदर्भ मसूढ़े के रोग का लक्षण ॥

जिसके मसूढ़ों में किसी तरह की चोट लगे अथवा वे घिस जायँ तब उनमें सूजन होजाय, दांत हिलने लगें और उनमें दाह, पीड़ा भी हो इसे वैदर्भ मसूढ़े का रोग कहिये ८ ॥

अथ खल्लीवर्धन मसूढ़े के रोग का लक्षण ॥

जिसके मसूढ़ों में दांत अधिक बढ़ें और वहां पीड़ा बहुत हो उसे खल्लीवर्धन मसूढ़े का रोग कहिये ९ ॥

अथ अधिमांस मसूढ़े के रोग का लक्षण ॥

जिसकी नीचे की दाढ़के अन्तमें बहुत सूजन हो और उस में पीड़ा भी बहुत हो, मुँहसे लार पड़े यह कफसे उपजा अधिमांस मसूढ़े का रोग होताहै १० अथवा मसूढ़े की नसोंमें वायु,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पित्त, कफ, सन्निपात से और चोट लगने से पांच नसों का रोग कहिये ११ ॥

अथ दन्तविद्रधि मसूढ़े के रोग का लक्षण ॥

दांत के मसूढ़े में रुधिर निकले और वहां बहुत सूजन हो, उसमें दाह और पीड़ा भी हो और राद, रुधिर को लिये बहुत स्रवे उसे दन्तविद्रधि मसूढ़े का रोग कहिये १२ ॥

अथ शीताद आदि मसूढ़े के रोगों का यत्न ॥

इस रोग में मसूढ़े का रुधिर निकलाइये पीछे सोंठि, सरसों, त्रिफला इनका काढ़ा कर कुल्ला करे तो शीताद आदि मसूढ़े के रोग जायँ १ अथवा हीराकसीस, पठानीलोध, पीपल, मैनासिल, फूलप्रियंगु, तेजबल इन्हें बराबर ले महीन पीस शहद से मसूढ़े में लगावे तो शीताद आदि मसूढ़े के रोग जायँ २ अथवा तेल वा घृत का कुल्ला करे तो शीताद आदि मसूढ़े के रोग जायँ ३ ॥

अथ दन्तपुप्पुट मसूढ़े का यत्न ॥

इस रोग में मसूढ़े का रुधिर निकलाकर पांचोंनोन, जवाखार, शहद इनका मञ्जन करे तो यह रोग जाय ४ ॥

अथ चलदन्त मसूढ़े का यत्न ॥

पठानीलोध, पतङ्ग, महुआ, लाख, बेल, सिरस का बक्कल इन्हें महीन पीस चूर्ण कर मसूढ़े पर मसले तो चलदन्त मसूढ़े का रोग जाय ५ अथवा नागरमोथा, हड़ की छाल, सोंठि, मिरच, पीपल, बायबिड़ंग, नींब के पत्ते इन्हें महीन पीस गोमूत्र में गोली करे फिर उस गोली को छाया में सुखाय सोते समय मुँह में रक्खे तो चलदन्त मसूढ़े का रोग जाय और दांत गाढ़े हों ६-

इति भद्रमुस्तादि गुटिका ॥

अथवा नीले फूल का कठसैला, धमासा, खैरसार, जामुनका बक्कल, आम का बक्कल, मुलहठी, कमलगट्टे ये सब बराबर २ टकेभर ले पीछे इन्हें १६ सेर पानी में औटाय इनका चतुर्थांश

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

राखे पीछे इसमें तेल अथवा बकरी का घृत मधुरी आंच से पकावे जब रसआदि जलजायँ और तेलमात्र रहे तब इस तेल को अथवा घृत को २ घड़ी मुँह में रक्खे तो दांत गाढ़े हों ७–इति सहचरादि घृत-तेल॥

अथ सौषिर मसूढ़े का यत्न॥

इस रोग में मसूढ़े का रुधिर निकलाकर लोध, नागरमोथा, रसौंत, शहद इन सबको महीन पीस मसूढ़े में लेप करे और पीछे दूधके कुल्ले करे तो सौषिर मसूढ़े का रोग जाय ८॥

अथ परिदर मसूढ़े के रोग का यत्न॥

मसूढ़े का रुधिर निकलाय सोंठि, सरसों, त्रिफला इनका काढ़ा कर कुल्ले करे तो परिदर और उपकुश ये दोनों मसूढ़े के रोग जायँ ९॥

अथ मसूढ़े के व्रणों का यत्न॥

गूलर के पत्ते, नोन, शहद, सोंठि, मिरच, पीपल इनका काढ़ा करे और मसूढ़े का शस्त्रादिक से रुधिर काढ़े पीछे इस काढ़े के कुल्ले करे फिर मसूढ़े पर लवण आदि का खार लगावे तो मसूढ़े का व्रण अच्छा हो और उसके कृमि मर जायँ, रोग जाता रहे १०॥

अथ खल्लीवर्धन मसूढ़े के रोग का यत्न॥

इस रोग में मसूढ़े का मांस निकलाय शहदके कुल्ले करे फिर बच, तेजबल, पाढ़, सज्जी, जवाखार, पीपल इन्हें महीन पीस मसूढ़े में लगावे तो खल्लीवर्धन मसूढ़े का रोग जाय ११॥

अथ मसूढ़े की नसों के व्रणों का यत्न॥

उन मसूढ़ों का मांस कुछ शस्त्रसे दूर करे फिर पटोल (परवर) के पत्ते, नींब के पत्ते, त्रिफला इनका काढ़ाकर गर्म सुहाते सुहाते से कुल्ले करे तो मसूढ़े की नसों का व्रण जाय १२ अथवा चमेली के पत्ते, धतूरे के पत्ते, कटेली, गोखुरू का पञ्चाङ्ग, मंजीठ, लोध, खैरसार, मुलहठी इनका काढ़ा कर इस काढ़े में मधुरी आंच से

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तेलको पकावे फिर इस तेल के कुल्ले करे तो मसूढ़ों के व्रण आदि सब रोग जायँ १३–इति मसूढ़े के रोगोंका यत्न सम्पूर्ण ॥

अथ दांतों के रोगों के नाम और संख्या ॥

दालन १ कृमिदन्तक २ भञ्जनक ३ दन्तहर्ष ४ दन्तशर्करा ५ कपालिका ६ श्यावदन्तक ७ कराल ८ ॥

अथ दालननाम दांत के रोग का लक्षण ॥

जिसके दांत में टूटे दांत की पीड़ा हो, वह पीड़ा वायु से हो इसे दालननाम दांत का रोग कहिये १ ॥

अथ कृमिदन्तक दांत के रोग का लक्षण ॥

जिसके दांत में काले छिद्र पड़जायँ,दाह हो और उसमें से कुछ रुधिर निकले, सूजन हो, विना कारणही वायु की सी पीड़ा हो उसे कृमिदन्तक रोग कहिये २ ॥

अथ भञ्जनक दांतके रोग का लक्षण ॥

जिसके दांत टेढ़े हों, टूट जायँ तो इसको कफसे उपजा भञ्जनक नाम दांत का रोग कहिये ३ ॥

अथ दन्तहर्ष दांतके रोग का लक्षण ॥

जिसके शीतल जलादिक से, रूखी वस्तु से, शीतल पवन से, खटाई से दांत खट्टे होजायँ ये लक्षण हों तो वायु पित्त से उत्पन्न दन्तहर्षरोग जानना ४ ॥

अथ दन्तशर्करा दांत के रोग का लक्षण ॥

जिसके दांतमें मैल रहे उस मलको कफ, वायु शोष ले फिर उसके दांत खरदरे लगें और रेतकीसी तरह खिलजायँ उसे दन्तशर्करा कहिये ५ ॥

अथ कपालिकानाम दांत के रोग का लक्षण ॥

जिसके दांत माटी के घड़े के कपाल समान हों और उनमें छिद्र हों और खिलें तथा उनमें मैल हो उसे कपालिका दांत का रोग कहिये ६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ श्यावदन्तक दांतके रोग का लक्षण ॥

जिसके दांत दुष्टरुधिर से मिलकर सब दग्ध होजायँ, दांत काले और नीले पड़जायँ उसे श्यावदन्तकरोग कहिये ७॥

अथ करालनाम दांत के रोग का लक्षण ॥

जिसके दांतों को वायु शनैः शनैः नष्ट कर भयङ्कर कर दे उसे कराल दांतों का रोग कहिये। यह रोग यत्न करने से भी अच्छा नहीं होता है ८॥

अथ ग्रन्थान्तर से हनुमोक्ष दांत के रोग का लक्षण ॥

जिसकी डाढ़में वायु कुपित होकर दांतों को पकड़े और दांतों में तथा डाढ़ में पीड़ा करे उसे हनुमोक्षरोग कहिये और उसमें आर्दितरोग के भी लक्षण होते हैं ९॥

अथ दांत के रोगों को दूर करनेवाला लाक्षादि तेल ॥

लाख का रस ½ भर, तिलों का तेल ½ भर, गौ का दूध ½ भर, पठानीलोध १ टकेभर, कायफल १ टके, मंजीठ १ टके, कमलगट्टे १ टके, कमलकी केसर १ टके, रक्तचन्दन १ टके, मुलहठी १ टके भर इन सबका काढ़ा कर फिर इस काढ़े में मधुरी आंच से तेल पकावे ये सब रस जलजायँ तेलमात्र आयरहे तब इस तेल को मुँहमें १ घड़ी राखे तो दांतके सब रोग जायँ और दांत गाढ़े हों १–इति लाक्षादितेल॥

अथवा वायु को दूर करनेवाले तेलों के कुल्ले करे तो दांत के रोग जायँ २॥

अथ कृमिदन्तरोग के दूर होने का यत्न ॥

हींग को थोड़ा गर्म कर दांतों के बीच में दे तो दांतों के कृमि जायँ ३ अथवा कागलहरी, नील की जड़, कड़ुवी तूंबी की जड़ इन्हें महीन पीस दांतों में मर्दन करे तो कृमि जायँ ४॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ दांत खट्टे रहें उसका यत्न ॥

सांभरनोन, नरकचूर, सोंठि, अकरकरा इन्हें महीन पीस दांतों में मर्दन करे तो खट्टे दांत अच्छे हों ५ ॥

अथ दांत के सब रोग दूर होने की औषध ॥

पांचोंनोन, नीलाथोथा, सोंठि, मिरच, पीपल, पीपलामूल, हीराकसीस, माजूफल, बायबिड़ंग इन्हें महीन पीस दांतों में मर्दन करे तो दांतों के सब रोग जायँ ६ ॥

अथ दांतों के पुष्ट होने की मिस्सी ॥

हीराकसीस, माजूफल, लोहे का चूर्ण, सोनामक्खी, मंजीठ, फुलाई फिटकरी, त्रिफला ये सब बराबर ले इन्हें खरल कर महीन पीस कज्जल समान करे फिर १ माशे दो घड़ी दांतों में मसले इसविधि से ७ दिन करे तो दांत स्याह और गाढ़े होयँ ७॥

अथ दांतों के सर्वविकार दूर होने की औषध ॥

फुलाई फिटकरी, नीलाथोथा, तेजबल, पपड़ियाकत्था, पीपल का बक्कल, लाख, सोंठि, मिरच, पीपल, आंवला, हीराकसीस, माजूफल, मंजीठ, रूमीमस्तगी, मौलसिरी का बक्कल, सेंधानोन, दक्षिणी सुपारी ये सब बराबर ले इन्हें कूट कपड़छान कर निरगुण्डी के रसकी २१ पुट दे पीछे मौलसिरी के बक्कल की २१ पुट देवे। एक एक पुट देके धूपमें सुखाता जाय पीछे उसे महीन पीस सेंधानोन थोड़ा मिलावे पीछे इसको दांतों में मर्दन करे तो दांतों के सब रोग जायँ ८ ॥

अथ दांतों के दुखने की और औषध ॥

कूट ५ टंक, सोंठि ५ टंक, मिरच ५ टंक, खुरासानी अजवायन ५ टंक, हड़ की छाल ५ टंक, कत्था ५ टंक इन्हें महीन पीस दांतों में मर्दन करे तो दांत दुखना बन्द हो ९ ॥

अथ दांत दुखने की और औषध ॥

गंगापारकी तमाखू, अकरकरा, कायफल, बायबिड़ंग, सोंठि,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मिरच, पीपल, नोन इन्हें महीन पीस दांतोंमें मर्दन करे तो दांत दुखना बन्द हो १०—इति दांतोंके सब रोगोंका यत्न सम्पूर्ण ॥

अथ जीभ के रोगों की उत्पत्ति, नाम और संख्या ॥

जीभ के रोग ५ प्रकार के हैं। वायु १ पित्त २ कफ ३ अलास ४ उपजिह्वा ५ ॥

अथ वायु के जिह्वारोग का लक्षण ॥

जिसकी जीभ कटजाय और सूजन आजाय, हरी होजाय, जीभ में कांटे पड़जायँ, मीठा आदि स्वादुका ज्ञान जाता रहे ये लक्षण हों तो वायु का जीभरोग जानिये १ ॥

अथ पित्त के जीभरोग का लक्षण ॥

जिसकी जीभ में दाह रहे, लाल वर्ण हो और कांटे पड़जायँ तब जानिये जीभमें पित्त का रोग है २ ॥

अथ कफ के जीभरोग का लक्षण ॥

जिसकी जीभ भारी दीखे, कड़ी होजाय और जीभ में सफ़ेद कांटे पड़ें तो जीभ में कफका रोग जानिये ३ ॥

अथ अलास जीभ के रोग का लक्षण ॥

जीभके नीचे बहुत सूजन हो, जीभ और डाढ़ींको लठर कर दे हिलने न दे, जीभ नीचे पकजाय यह अलासरोग कफ, रुधिर से पैदा होता है। यह असाध्य है ४ ॥

अथ उपजिह्वा का लक्षण ॥

जीभकी नोक के ऊपर सूजन हो मानो दूसरी जीभ है और जीभ में लार बहुत पड़े, खुजली और दाह हो इसे उपजिह्वा नाम जीभका रोग कहिये ५ ॥

अथ जीभ के रोगों का यत्न ॥

जीभ के सब रोगों को दूर करने के लिये रुधिर कढ़ाना योग्य है १ अथवा गिलोय, पीपल, नींब की छाल, कुटकी इनका काढ़ाकर कुल्ले करे तो जीभ के रोग जायँ २ अथवा ओठों का

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

यत्न जो पीछे कहा है उससे भी जीभ का रोग अच्छा होता है ३ अथवा सोंठि, मिरच, पीपल, जवाखार, हड़ इन्हें महीन पीस जीभ में लगावे तो जीभ के रोग जायँ ४ अथवा सोंठि, मिरच, पीपल, जवाखार, हड़ की छाल इनमें तेलको पकाय इस तेल के कुल्ले करे तो उपजिह्वा दूर हो ५—इति जीभ के रोगों के लक्षण और यत्न सम्पूर्ण ॥

अथ तालु के रोगों के नाम और संख्या ॥

तालु के ९ रोग हैं। गलशुण्डी १ तुण्डकेरी २ ध्रुव ३ कच्छप ४ तालुर्बुद ५ मांससंघात ६ तालुपुप्पुट ७ तालुशोष ८ तालुपाक ९ ॥

अथ गलशुण्डी का लक्षण ॥

तालु की जड़ से सूजन बढ़े और वह सूजन कटी खाल सदृश होजाय तब जानिये इस खाल में वायु भरी है और उसको प्यास लगे, खांसी और श्वास हो उसे गलशुण्डीरोग कहिये। यह कफ, रुधिर से उपजता है १ ॥

अथ तुण्डकेरी का लक्षण ॥

तालु की जड़ से उपजी सूजन दाह, पीड़ा और पाक को लिये हो तो कफ, रुधिर के दुष्टपने से उपजी जानिये। इसको तुण्डकेरीरोग कहते हैं २ ॥

अथ ध्रुवरोग का लक्षण ॥

तालु में ज्वरयुक्त लाल सूजन हो तो ध्रुवरोग कहिये ३ ॥

अथ कच्छपरोग का लक्षण ॥

जिसके तालु में कछुवे के आकार ऊंची सूजन हो और पीड़ा भी हो यह कफ से उपजती है इसको कच्छपरोग कहिये ४ ॥

अथ तालुर्बुदरोग का लक्षण ॥

जिसके तालु में कमल के आकार सूजन हो और जिसमें बड़े अंकुर हों और दाह हो उसे तालुर्बुदरोग कहिये ५ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ मांससंघातरोग का लक्षण ॥

जिसके तालु में दुष्टमांस बढ़े और उसमें पीड़ा न हो तो उसे मांससंघातरोग कहिये ६ ॥

अथ तालुपुप्पुटरोगका लक्षण ॥

जिसके तालु में बेरसमान सूजन हो और पीड़ा न हो तो उसे तालुपुप्पुटरोग कहिये ७ ॥

अथ तालुपाकरोग का लक्षण ॥

गर्मी से तालु पकजाय उसे तालुपाक रोग कहिये ८ ॥

अथ तालु के रोगों का यत्न ॥

गलशुण्डीरोग का चतुरवैद्य शस्त्र से विष निकाल डाले तो गलशुण्डीरोग जाय १ अथवा कूट, मिरच, खुरासानी बच, सेंधानोन, पाढ़, नागरमोथा इन्हें महीन पीस गलशुण्डी में मले तो गलशुण्डीरोग जाय २ अथवा पीपल, अतीस, कूट, बच, सोंठि, कालीमिरच, सेंधानोन इन्हें महीन पीस शहद से गलशुण्डी में लगावे तो गलशुण्डी जाय ३ अथवा पीपल, अतीस, कूट, बच, रास्ना, कुटकी, नींब की छाल इन्हें जवकुटकर इनका काढ़ा दे तो गलशुण्डी, तुण्डकेरी आदि तालु के सब रोग जायँ४ इति तालुके रोगों के लक्षण और यत्न सम्पूर्ण ॥

अथ गले के रोगों के लक्षण, यत्न, नास और संख्या ॥

गले के १८ रोग हैं। पांचप्रकार की रोहिणी—वायु की १ पित्त की २ कफकी ३ सन्निपातकी ४ रुधिरकी ५ और कण्ठशालूक ६ अधिजिह्वा ७ बलय ८ बलास ९ एकवृन्द १० वृन्द ११ शतघ्नी १२ गिलायु १३ गलविद्रधि १४ गलौघ १५ स्वरघ्न १६ मांसतान १७ बिदारी १८ ॥

अथ वायुकी रोहिणी का लक्षण ॥

सब जीभ में बहुत पीड़ा हो और जीभ के सब मांस के

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अंकुर निकल आवें और उनसे कण्ठ रुकजाय तथा वायुके सब उपद्रव होजायँ उसे वायुकी रोहिणी कहिये १ ॥

अथ पित्तकी रोहिणी का लक्षण ॥

जिसका गला पकजाय और गले में दाह, ज्वर हो उसे पित्तकी रोहिणी कहिये २ ॥

अथ कफकी रोहिणी का लक्षण ॥

जिसके गले का सोत कफ से रुकजाय और गला देर से पके और गला भारी हो उसे कफकी रोहिणी कहिये ३ ॥

अथ सन्निपात की रोहिणी का लक्षण ॥

ओंड़ा जिसका पाक हो और उसका वीर्य यत्नसे भी दूर न हो तथा सब लक्षण मिले हों उसे त्रिदोष की रोहिणी जानिये ४ ॥

अथ रुधिर की रोहिणी का लक्षण ॥

जिसके गलेमें पीड़ा होआवे और जिसमें पित्तके लक्षण मिलें उसे रुधिर की रोहिणी जानिये ५ ॥

अथ कण्ठशालूक का लक्षण ॥

जिसके गले में बेर की मींगी प्रमाण कफ की गांठ होजाय और गले में खरदरे कांटे पड़जायँ तथा उस स्थानमें पीड़ा भी हो उसे कण्ठशालूक रोहिणी कहिये ६ ॥

अथ अधिजिह्वारोग का लक्षण ॥

जिसकी जीभ की नोक के ऊपर सूजन हो, रुधिर को लिये कफ थूके, जीभ कफ, रुधिर से लिपी रहे, पकीसी हो उसे अधिजिह्वा गले का रोग कहिये ७ ॥

अथ बलयनाम गले के रोग का लक्षण ॥

जिसके गले में कफ बढ़े पीछे सूजन को करे, अन्न आदि को गले में न जाने दे, उसका मार्ग रोंक दे उसे बलय गलेका रोग कहिये। यह असाध्य है ८ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ बलासनाम गले के रोग का लक्षण ॥

जिसके कफ, वायु बढ़कर गले में सूजनकर और श्वास, कफ, वायु और पीड़ा को प्रकटकर मर्म स्थान को छेदते हुए हृदय में पीड़ा करें उसके बलास गले का रोग कहिये ९ ॥

अथ एकवृन्दनाम गले के रोग का लक्षण ॥

जिसके गले में कफ, रुधिर दुष्ट हो गले के बीच दाहको लिये गोल और ऊंची सूजन करे और वहां खुजली भी चले, गला पकजाय, भारी और कोमल हो उसे एकवृन्द गले का रोग कहिये १० ॥

अथ वृन्दनाम गले के रोगका लक्षण ॥

गले में कुपित हुए पित्त और रुधिर वायुसंयुक्त गले में गोल सूजन करें, विना पीड़ा गले में दाह करें तथा तीव्र ज्वर को पैदा करें तो इसको वृन्दनाम गले का रोग कहिये ११॥

अथ शतघ्नीनाम गले के रोग का लक्षण ॥

जिसके गले में मांस के गाढ़े, कड़े और कण्ठके रोंकनेवाले बहुत अंकुर हों और उनमें पीड़ा चले, बहुत जलें उन्हें प्राण का हरनेवाला जानिये मानो कण्ठ में रुधिर की लट्ठीडाली है यह रोग त्रिदोष के कोप से होता है। यह असाध्य शतघ्नी नाम का रोग है १२ ॥

अथ गिलायुनाम गले के रोग का लक्षण ॥

जिसके गले में आंवले की मींगी प्रमाण गांठ हो और उस में पीड़ा कम हो तथा वह गांठ कफ, रुधिर से प्रकट हो और भोजन करे तब वह बुरी लगे इसे शस्त्रसे दूर करें तब यह दूर हो इसे गिलायुनाम गलेका रोग कहिये १३ ॥

अथ गलविद्रधि का लक्षण ॥

जिसके सब गले में सूजन हो और उसमें प्राण की हरने-

In Public Domain, Chamba Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

वाली बहुत पीड़ा हो यह भी त्रिदोष के कोप से पैदा होती है इसको गलविद्रधि कहते हैं १४ ॥

अथ गलौघनाम गले के रोग का लक्षण ॥

जिसके गले के मार्ग में सूजन बहुत हो, पवन जाने से रुक जाय और उसके तीव्र ज्वर पैदा होजाय इसको कफ, रुधिर के दुष्टपने से पैदा हुआ गलौघनाम गले का रोग कहते हैं १५ ॥

अथ स्वरघ्ननाम गले के रोग का लक्षण ॥

जिसके गलेमें कफ दुष्ट हो गले के स्वरको दूर करे और दुहरा मांस लिये जाय और घोंघों बोले तथा भोजन अच्छी तरह से न कियाजाय और कफ से कण्ठकी पवन बिगड़जाय इसे स्वरघ्न गले का रोग कहिये १६ ॥

अथ मांसतान गले के रोग का लक्षण ॥

जिसके गले में क्रमसे सूजन बढ़े और सब गले में सूजन होजाय तथा प्राणों को हरनेवाली पीड़ा हो ये लक्षण त्रिदोष से हुए मांसतान गले के रोग के हैं १७ ॥

अथ विदारीनाम गले के रोग का लक्षण ॥

जिसके गले में तांबे के वर्ण समान दाह और पीड़ा को लिये बहुत सूजन हो, गला लटक जाय और पकजाय, उसमें राद पड़जाय यह पित्तके कोपसे होता है। जिस करवट सोवे उसी ओर गले के पीछे विदारीनाम गलेका रोग होताहै १८॥

अथ गले के रोगों का यत्न ॥

जिसके रोहिणी रोग हो उसके गले का जलौकाआदि से किसी तरह रुधिर निकलावे तो रोहिणी रोग जाय १ ॥

अथ गलेके सर्व रोगों का यत्न ॥

वमन करना, ओषधियों से हुक्का पीना, ओषधियों से कुल्ले करना, नास देना, रुधिर कढ़ाना, नोन का सेंक ये सब गले के

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

रोग को अच्छे हैं २ अथवा स्नेह के कुल्ले करे तो वायुसम्बन्धी गले के रोग को अच्छा है ३ ॥

अथ पित्त के गले के रोग का यत्न ॥

मिश्री, शहद, फूलप्रियंगु इनके काढ़े से पित्त से उत्पन्न हुआ गले का रोग जाय ४ ॥

अथ कफ के गले के रोग का यत्न ॥

घरका धूमस, कुटकी इनके काढ़े से कफ के गले का रोग जाय ५ अथवा कुटकी, सोंठि, पीपल, मिरच, बायबिड़ंग, दारूणी, सेंधानोन इनका काढ़ा कर उसमें तेल पकावे फिर इस तेलकी नास दे तो कफके सब रोग जायँ ६ अथवा विष्णुक्रान्ता का काढ़ा पीवे तो रोहिणीनाम गलेका रोग जाय ७ अथवा विष्णुक्रान्ता और शंखाहूली इनको घोट पीवे तो कण्ठशालूका, तुण्डकेरी, उपजिह्वा, अधिजिह्वा, एकवृन्द, गिलायु ये सब रोग जायँ ८ अथवा शस्त्रक्रिया कर गलेका रुधिर कढ़ावे तो गलविद्रधि आदि गलेके सब रोग जायँ ९ ॥

अथ कण्ठ के रोगों का यत्न ॥

कण्ठके रोग रुधिर कढ़ाने और नास देने से अच्छे होते हैं १० अथवा दारुहल्दी, नींब की छाल, इन्द्रयव, हड़ की छाल, तज इनका काढ़ाकर उसमें शहद डाल पीवे तो कण्ठ के सब रोग जायँ ११ अथवा कुटकी, अतीस, दारुहल्दी, नागरमोथा, इन्द्रयव इनका काढ़ाकर उसमें गोमूत्र डाल पीवे तो कण्ठ के सब रोग जायँ १२ अथवा हड़की छाल का काढ़ाकर शहद डाल पीवे तो कण्ठ के सब रोग जायँ १३ अथवा मुनक्का, दाख, कुटकी, सोंठि, मिरच, पीपल, दारुहल्दी, तज, त्रिफला, नागरमोथा, पाढ़, रसौंत, मूर्वा, तेजबल, हल्दी इनका काढ़ा कर शहद डाल पीवे अथवा इनके कुल्ले करे अथवा शहद से इनकी गोली बांधकर मुँह में रक्खे तो गला और कण्ठ के

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सब रोग जायँ १४–इति गले के सब रोगों की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न सम्पूर्ण ॥

अथ समस्त मुखरोगों की उत्पत्ति, लक्षण, यत्न और संख्या ॥

मुख में चार प्रकार के रोग होते हैं–वायु का १ पित्त का २ कफ का ३ सन्निपात का ४ ॥

अथ वायु के मुखरोग का लक्षण ॥

जिसके मुख में सर्वत्र छाले होजायँ और उनमें पीड़ा बहुत हो तो वायुका मुखरोग जानिये १ ॥

अथ पित्त के मुखरोग का लक्षण ॥

जिसके मुख में लाल छाले हों या दाह को लिये पीले हों उसे पित्त का मुख रोग कहिये २ ॥

अथ कफ के मुखरोग का लक्षण ॥

जिसके मुख में पीड़ा रहित सफ़ेद छाले हों और उनमें खुजली चले उसे कफ का रोग कहिये ३ ॥

अथ मुखरोग का असाध्य लक्षण ॥

जिसके ओठ में और मसूढ़े में रुधिर के कोपसे अथवा त्रिदोषके कोपसे छाले हों वह असाध्य जानिये ४ ॥

अथ समस्त मुखरोगों का यत्न ॥

मुख में वायु के छाले हों तो नोन, फिटकरी के कुल्ले कराइये १ अथवा वायुके दूर करनेवाले तेल के कुल्लों से छाले जायँ २ ॥

अथ पित्त के मुखरोग के छाले का यत्न ॥

मुलहठी, खैरसार इन्हें औटाय इसमें शहद डाल कुल्ले करे तो पित्त के मुखरोग के छाले दूर हों ३ अथवा दूधको गर्म कर उसमें थोड़ा घृत, शहद डाल कुल्ले करे तो पित्त के मुखरोग के छाले जायँ ४ ॥

अथ कफ के मुखरोग के छाले का यत्न ॥

नीलाथोथा, फिटकरी इन्हें महीन पीस छाले में लगावे और मुँहकी लार डाले तो कफ के छाले जायँ ५ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ सन्निपात के मुखरोग के छाले का यत्न ॥

इस रोगमें मुँह की नस की फ़स्त ले तो ये छाले जायँ ६ अथवा चमेली के पत्ते, गिलोय, त्रिफला, जवासा, दारुहल्दी, दाख इनका काढ़ा कर उसमें शहद डाल कुल्ले करे तो त्रिदोष के मुखरोग के छाले जायँ ७ अथवा कालाज़ीरा, कूट, इन्द्रयव इन्हें महीन पीस दांतों से उसका रस मुख में ले फिर थूक दे तो त्रिदोष का मुखपाक जाय ८ अथवा पटोल के पत्ते, नींब की छाल, जामुन के पत्ते, आमके पत्ते, चमेली के पत्ते इनका काढ़ाकर कुल्ले करे तो त्रिदोष के मुखपाक के छाले जायँ ९ अथवा पटोल के पत्ते, त्रिफला, दारुहल्दी इनका काढ़ाकर उसमें शहद डाल कुल्ले करे तो त्रिदोष का मुखपाक जाय १० अथवा खस, पटोल, नागरमोथा, हड़ की छाल, कुटकी, मुलहठी, किरमाला की छाल, रक्तचन्दन इनका काढ़ा ले अथवा इनके कुल्ले करे तो त्रिदोष के मुखपाक के छाले जायँ ११ अथवा तिलों की डांड़ी, कमलकी जड़, घृत, मिश्री, दूध, शहद इन सबको इकट्ठाकर कुल्ले करे तो त्रिदोषके मुखपाकके छाले जायँ १२ अथवा हल्दी, नींबके पत्ते, मुलहठी, कमल की जड़ इन्हें तेलमें पकावे पीछे इस तेलके कुल्ले करे तो त्रिदोषके मुखपाक के छाले जायँ। ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं १३ ॥

अथ दांत हलते हों और उनमें पीड़ा भी होती हो उसकी औषध ॥

पीपल, सेंधानोन, स्याहज़ीरा, हड़की छाल, मोचरस इन्हें महीन पीस दांतों को रगड़े तो दांत हलते बन्द हों और उनकी पीड़ाजाय १४ अथवा नागरमोथा, हड़की छाल, सोंठि, मिरच, पीपल, बायबिड़ंग, नींब के पत्ते इन्हें महीन पीस गोमूत्र की ३ पुट दे छायामें सुखाय गोली करे पीछे वह गोली रातको मुख में धर सोवे पीछे प्रभात उस गोली को थूक दे फिर कुल्ले करे तो दांत के सबरोग जायँ १५ अथवा फिटकरी, नीलाथोथा, खैर-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सार, पपड़िया कत्था, तेजबल, कच्ची लाख, बंशलोचन, मिरच, आमले, मंजीठ, रूमीमस्तगी, मोलसिरीका बक्कल, सेंधानोन, माजूफल, दक्षिणी सुपारी इन्हें महीन पीस कपड़छान कर इसमें निर्गुण्डी के रस की १ पुट और चमेली के रसकी १ पुट दे फिर धूप में सुखाय महीन पीस दांतों में रगड़े तो दांत गाढ़े हों और दांतों के सब रोग जायँ १६ ॥

अथ जीभ के रोग की पुनः औषध ॥

कचनार के बक्कल का काढ़ा कर इसमें खैरसार मिलाय कुल्ले करे तो जीभ के सबरोग जायँ १७ ॥

अथ गले के सब रोग दूर करने की गोली ॥

तेजबल, पाढ़ा, रसौंत, दारुहल्दी, पीपल इन्हें महीन पीस शहदसे गोली बांधे पीछे गोली को मुख में रक्खे तो सब प्रकार के रोग जायँ १८ ॥

अथ मुखपाक के दूर करने की गोली ॥

खैरसार, जायफल, भीमसेनी कपूर, दक्षिणी सुपारी, तज, पत्रज, नागकेसर, इलायची, कस्तूरी ये सब बराबर ले महीन पीस खैरसार के काढ़े में इनकी चने प्रमाण गोली बांधे फिर इस गोली को मुँह में राखे तो जीभ, ओठ, दांत, मुँह, गला, तालू इनके सब रोग जायँ १९ ॥

अथ दूसरी खैरसार की गोली ॥

जायफल, कस्तूरी, भीमसेनी कपूर, सुपारी इनकी बराबर खैरसार ले इन सबको महीन पीस गोली करे और मुखमें राखे तो मुख के सब रोग जायँ २० ॥

अथ दांत में रुधिर निकले उसकी औषध ॥

सेंधानोन, खैरसार, कूट, धनियां, मिरच, सोंठि, सफ़ेद भुना जीरा, भुना नीलाथोथा इन्हें महीन पीस दांतों में मर्दन करे तो दांतका रुधिर निकलना बन्द हो २१ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ मुखपाक की और औषध ॥

दारुहल्दी, गिलोय, चमेली के पत्ते, दाख, अजवायन, त्रिफला इनका काढ़ाकर कुल्ले करे तो मुखपाक जाय। ये सब यत्न वैद्यरहस्य में लिखे हैं २२ ॥

अथ मुख पर की छाया के दूर करने का यत्न ॥

पठानीलोध, धनियां, खुरासानीबच, गोरोचन, मिरच इन्हें महीन पीस मुखपर लेप करे तो मुँह की छाया जाय २३ अथवा सरसों, बच, लोध, सैंधानोन इन्हें महीन पीस मुखपर लेप करे तो मुखकी छाया जाय २४ अथवा रक्तचन्दन, मंजीठ, कूट, लोध, फूलप्रियंगु, बड़के अंकुर, मसूर इन्हें जलसे महीन पीस मुखकी छाया के लेप करे तो छाया जाय २५ अथवा जायफल को घिस लेप करे तो छाया जाय २६ अथवा आकके दूधमें हल्दी को भिगोय लेप करे तो मुखकी छाया जाय २७ अथवा मसूरको दूधमें पीस इसमें थोड़ा घृत मिलाय लेप करे तो मुखकी छाया जाय और कान्ति बढ़े २८ अथवा केसर, रक्तचन्दन, लोध, खस, मंजीठ, मुलहठी, पत्रज, कूट, गोरोचन, हल्दी, लाख, दारुहल्दी, नागकेसर, फूलप्रियंगु, बड़के अंकुर, चमेली के पत्ते, मोम, सरसों, बच इनका काढ़ाकर इसमें मधुरी आंच से तेल पकावे फिर इस तेल का मर्दन करे तो मुख की छाया, कील, तिल, मस्से आदि सब विकार जायँ २९ ॥

इत्यष्टादशस्तरङ्गः ॥ १८ ॥

अथ सब स्थावर जंगम के विषमात्र की और इनसे उपजे रोगों की उत्पत्ति, लक्षण, यत्न और संख्या ॥

विष दो प्रकार का है—स्थावर और जंगम। स्थावर विष दश जगहों में रहता है। वृक्षकी जड़में १ पत्र में २ फलमें ३ पुष्प में ४ छालमें ५ वृक्षके दूध में ६ वृक्षके रसमें ७ वृक्षके गोंदमें ८ धातुमात्र हरतालादिक में ९ कन्दनाम सिंगीमोहरादिक में १०

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तथा जंगम विष १३ जगहों में रहता है। मनुष्यादिक की दृष्टि में १ सर्पादिक की श्वास में २ श्वान, शृगालादिक की डाढ़ में ३ व्याघ्रादिक के नखों में ४ विषखपरादिकों के मलमें ५ मूत्र में ६ बन्दरादिकों के शुक्रमें ७ सिड़ीजानवर (बावले श्वान, शृगाल आदि) की गुदा में ८ सर्पादिकों के हाड़ में ९ न्यौला, मच्छर आदिके पित्ते में १० भौंरादिक के कांटे में ११ मूषक के दांत में १२ सिंहादिकों के रोम में १३ ॥

अथ स्थावरविष खाने से जो रोग होते हैं उनका वर्णन ॥

स्थावर विष के खाने से ज्वर, हिचकी हो, दांत खट्टे होजायँ, गला बँध जाय, मुख में फेना आवे, छर्दि, अरुचि, श्वास और मूर्च्छा हो ये लक्षण हों तो जानिये कि स्थावर विष खाया है १॥

अथ वृक्षादिकों की जड़ के विष के खाने का लक्षण ॥

वृक्ष की जड़ का विष खाने से वमन और मोह होता है २॥

अथ वृक्ष के पत्र के विष के खाने का लक्षण ॥

वृक्ष के पत्र का विष खाने से जम्हाई बहुत आवे, शरीर कांपे और श्वास हो ३ ॥

अथ वृक्ष के फल के विष खाने का लक्षण ॥

वृक्षमूल के विष से मुख में सूजन, शरीर में दाह हो और भोजनमात्र में द्वेष होता है ४ ॥

अथ पुष्प के खाने और सूँघने से हुए रोग का लक्षण ॥

पुष्पके खाने और सूँघनेसे छर्दि, अफरा और मूर्च्छा हो ५॥

अथ वृक्षके बक्कल के खाने या लगने के विष का लक्षण॥

विषवाला बक्कल खाने और लगने से मुख में दुर्गन्ध आवे, शरीर कड़ा होजाय, मस्तक पीड़ाहो, मुखमें कफ बहुत निकले६॥

अथ वृक्षादिक के दूध के विष के खाने का लक्षण ॥

हृदय दूखे, मूर्च्छा हो, मुख में फेना आवे, गुदा का बन्ध छूट जाय, जीभ भारी होजाय ये लक्षण वृक्षदूधके विषसे होतेहैं ७ ॥

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ हरतालादिक धातुओं के विष खाने का लक्षण ॥

हृदय दूखे, मूर्च्छा हो, शरीर में दाह लगजाय और तालू में दाह हो इस विषसे तत्काल मरे अथवा कालान्तर में मरे ८ ॥

अथ कन्दविष सिंगीमुहरा आदिके खाने आदि का लक्षण ॥

सिंगीमुहरादिक के खाने से मनुष्यादिक तत्काल मरजायँ तथा हृदय दूखे, मूर्च्छा हो, शरीर में दाह हो, तालू जले ९ ॥

अथ शुद्धहुए स्थावर विषमात्र के खाने का गुण ॥

स्थावर विषमात्र रूखा, गर्म और तीक्ष्ण है, इसका सूक्ष्म गुणहै, स्त्रीसङ्ग बहुत कराता है और सब शरीर में तत्काल फैलजाता है तथा उगआता है और तत्काल इसका परिपाक हो जाता है ये दशगुण स्थावर विष में हैं १० ॥

अथ स्थावर विष के खाने से उपजे रोगों का वर्णन ॥

विष के रूखेपने से मल बिगड़े और सब स्थानों के जोड़ों को काटे तथा विष के सूक्ष्मपने के गुण से शरीर के अङ्ग अङ्ग में वह विष बँटजाय और विषके पराक्रम से स्त्रीसङ्ग बहुत करे इस गुण से शरीर के दोषों, शरीर की धातुओं और शरीर के मल को बिगाड़ता है और विष के शीघ्रपने के गुण से शरीर को क्लेश देता है इसीसे विषका यत्न अतिकठिन है ११ ॥

अथ विष के पानी से बुझे हुए शस्त्र के लगने का लक्षण ॥

विष के पानी से बुझाहुआ शस्त्र जिसके लगे उसका घाव तत्काल पकजाय, उसमें से काला रुधिर बहुत निकले और उसमें दुर्गन्ध बहुत आवे तथा जिसका मांस बिखर जाय, तृषा लागे, ताप, दाह, मूर्च्छा हो ये लक्षण हों तो जानिये कि किसी वैरी ने विषके पानी से बुझेहुए शस्त्रसे मारा है ॥

अथ विष देनेवाले के जानने का लक्षण ॥

विष देनेवाले मनुष्य की वाणी की चेष्टा, मुख की कान्ति और सी होजाय, कोई उससे पूछे तो उसको उत्तर न दे और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

का औरही कहे क्योंकि विष देनेवाला मोह को प्राप्त होता है इससे बोला नहीं जाता है यदि बोले भी तो मूर्ख की तरह बोले, अंगुली से पृथ्वी खने, भगजाय, घर में से निकलना चाहे और इधर उधर बारंबार देखता जाय तथा उसका चित्त विपरीत होजाय ये सब लक्षण विष देनेवाले के होते हैं सो बुद्धिमान जानलें १२॥

अथ जङ्गम विष (सर्पादि के काटने) से उपजे रोगों का सामान्य लक्षण॥

जिसे ऐसे किसी जानवर ने काटा हो उसे निद्रा और तन्द्रा हो, उसका सब ज्ञान जाता रहे, दाह हो, अँधेरी आवे, उस स्थान में सूजन हो और अतीसार हो ये सब लक्षण हों तो जानिये किसी विषैले जानवर ने काटा है १३॥

अथ भोगीमण्डल (सर्प) के काटने के पृथक् पृथक् लक्षण॥

वायुकी प्रकृतिवाला भोगी, पित्तकी प्रकृतिवाला मण्डल नाम, कफ की प्रकृतिवाला राजिलनाम ये सर्प जिसे काटें उनका लक्षण कहते हैं। भोगीसर्प जिसे काटे उसके दंशकी जगह पीली पड़जाय और उसके सब वायु के रोग उपज आवें तथा मण्डलनाम सर्प जिसे काटे उसके काटने की जगह पीली पड़ जाय और कोमल सूजन हो और उसके पित्त के सब रोग हो जायँ एवं राजिलनाम सर्प जिसे काटे उसके काटने की जगह में स्थिर सूजन हो और उस स्थानमें पीले, चिकने, झागयुक्त गाढ़ा रुधिर निकले और उसके कफके सब रोग होजायँ १४॥

अथ देशविशेष और कालविशेष में जो सर्पादिक काटें उनका लक्षण॥

पीपल के स्थानमें, देहरेमें, मशानमें, ड्योढ़ीके निकट, चौहटेमें, सन्ध्याके समय, भरणी नक्षत्र और मघा नक्षत्र में, मर्मस्थानमें जो सर्पादिक मनुष्य को काटें तो मनुष्य मरजाय १५॥

अथ दर्वीकरनाम सर्प के काटने का लक्षण॥

जिसका फन हिये के सदृश अथवा छत्र, कमल, अंकुश के

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सदृश हो और वह सर्प जल्दी चले उसे दर्वीकर कहिये १६ इतने मनुष्यादिकों के सर्पादिक काटें तो यत्न न करना। अजीर्णवाले को, गर्मी के विकारवाले को, बालक को, बूढ़ेको, भूखे मनुष्यको, घायल को, प्रमेहवाले को, गर्भवाली स्त्री को और जिसके शरीर में रुधिर न हो इन मनुष्यों को सर्पादिक काटें तो असाध्य जानिये १७ अथवा जिसके मुखमें रुधिरकी धार पड़े तथा जिसकी गुदा और इन्द्रिय में रुधिर की धार पड़े सो भी असाध्य है १८॥

दूसरे विष का लक्षण॥

स्थावर और जङ्गम दो विष हैं ये बहुत दिनों के प्रभाव से और विषनाशक औषध से हतवीर्य होजाते हैं उनका गुण जाता रहता है तथा उन विषों से मूर्च्छा, भ्रम और वमनादि होजाते हैं १९॥

अथ मूसे के विष का लक्षण॥

जहां मूसा काटे उस जगह रुधिर पीला निकले और उस जगह मण्डल पड़जाय तथा ज्वर, अरुचि, रोमांच और दाह हो ये लक्षण हों तो मूसे का काटा जानिये २०॥

अथ प्राणहर मूसे के विष का लक्षण॥

जिस मूसेके काटनेसे मूर्च्छा हो, अङ्गमें सूजन और शरीर का वर्ण औरसा होजाय, शरीर में बहुत खेद हो, काटने की जगह में रुधिर बहुत पड़े, ज्वर हो आवे, शिर भारी हो, लार बहुत पड़े, रुधिर आवे तो मूसेके काटे को असाध्य जानिये २१॥

अथ गिरगिट के विष का लक्षण॥

गिरगिटके काटने की जगह सूजन हो और वह जगह काली पड़जाय, शरीर के नानावर्ण होजायँ तथा मोह हो, अतीसार होजाय तो जानो कि गिरगिट के काटने का विष है २२॥

अथ बिच्छू के काटने के विष का लक्षण॥

शरीर में जहां बिच्छू काटे उस जगह अग्नि लगजाय और ऊंचा चढ़े तथा काटने की जगह फटनेलगे २३॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ बिच्छू के काटने का असाध्य लक्षण ॥

जो बिच्छू निपट जहरी हो और नाक में काटे तो उस जगह अग्नि बहुत जले, उसकी जीभ पीड़ा से थकजाय और उस जगह का मांस गिरने लगे ऐसा मनुष्य मरजाय २४ ॥

अथ विषैले मेंढक के काटने के विष का लक्षण ॥

विषैले मेंढक के काटने से उस जगह सूजन और पीड़ा हो, उसे तृषा लगे, नींद बहुत आवे और वमन हो २५ ॥

अथ विषैली मछली के काटने के विष का लक्षण ॥

विषैली मछली जिसे काटे उसके शरीर में दाह लगे और उस जगह सूजन और पीड़ा हो २६ ॥

अथ विषैली जोंक के काटने का लक्षण ॥

उस जगह खाज और सूजन हो तथा मूर्च्छा हो तब जानिये कि यह विषैली जोंक के काटने का जहर है २७ ॥

अथ विषैली बिषखपरी ने काटा हो उसका लक्षण ॥

उस जगह दाह, सूजन और पीड़ा हो, पसीना आवे २८ ॥

अथ कनसलाई के काटने का लक्षण ॥

जिस जगह कनसलाई काटे उस जगह पीड़ा हो, पसीना आवे और दाह हो २९ ॥

अथ मच्छर के विष का लक्षण ॥

उस जगह खुजली चले, पीड़ा हो और कुछ सूजन हो ३० ॥

अथ वनके मच्छर के काटे का असाध्य लक्षण ॥

जिसे विषैला मच्छर काटे उसके पित्तीसमान लाल चकत्ते घाव समान गहरे पड़जायँ और उस जगह पीड़ा बहुत हो यह असाध्य जानिये ३१ ॥

अथ विषैली मक्खी के काटने का लक्षण ॥

जिस जगह विषैली मक्खी अथवा भँवरमक्खी काटे वह

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जगह काली पड़जाय, दाह हो, मूर्च्छा और ज्वर हो तथा वहां चकत्ते हों तो इसका काटा मरजाय ३२॥

अथ सिंह, बघेरा, चीता जिसे काटे उसका लक्षण॥

जिसे सिंहादिक काटें उसका घाव पके और उसमें राद पड़े तथा ज्वर हो आवे ३३॥

अथ बावले श्वानादि का लक्षण॥

जिसके मुँहसे लार पड़े और वह श्वान अन्धा और बहरा होजाय तथा चौगिर्द दौड़े, उसकी पूंछ सूधी होजाय, उसकी दाढ़, कन्धे और मस्तक दूखें इससे उसका मुख नीचेही रहे ऐसा श्वान अथवा स्यार, सिंह, व्याघ्रादिक भी बावला जानिये ३४॥

अथ बावले श्वानादिक जिसे काटें उसका लक्षण॥

जिसे बावले श्वानादिक काटें उसका रुधिर काला निकले, हृदय, शिर बहुत दूखे, ज्वर हो, शरीर जकड़बन्द हो, तृषा लगे, उस जगह खाज और पीड़ा हो, शरीर का वर्ण औरसा होजाय, शरीर में बहुत क्लेश हो, घुमेर आवे, दाह हो, काटनेकी जगह सूजन हो, गांठ पड़जाय, काटने की जगह फटने लगजाय और उस जगह फोड़े हों ये लक्षण बावले श्वानके काटनेके जानिये ३५॥

अथ इसका असाध्य लक्षण॥

जो पुरुष जल में, कांच में, तेलादि में स्यार और श्वान को देख पुकार उठे, टेढ़ी चेष्टा करे और डरे तो वह मरजाय ३६॥

अथ स्थावर विषमात्र का यत्न॥

जो स्थावर विष खाय उसे औषधादिक से वमन कराइये तो स्थावर विष जाय। विषमात्र गर्म हैं इसवास्ते सब शीतल यत्न अच्छे हैं १ अथवा शहद घृतसंयुक्त विष के दूर करनेवाली औषध दे तो स्थावर विष जाय २ और स्थावर विषवाले को खट्टारस खाने को और चबाने को मिरच देना ३ और उसके भोजन में साठी चावल, कोदों, सेंधानोन देवे ४॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS

अथ विष के दूर करने का लेप ॥

फूलप्रियंगु, मालकांगनी की जड़, पान का बक्कल, फूल, बीज और सिरस का पञ्चाङ्ग इन्हें गोमूत्र में महीन पीस लेप करे तो स्थावर विष का रोग जाय ५ अथवा पीपल, रोहिष, जटामांसी, लोध, इलायची, शोरा, कालीमिरच, नेत्रबाला, सोनागेरू इन्हें जल से महीन पीस लेप करे तो विष जाय। ये सब यत्न भावप्रकाश में हैं ६ अथवा चौलांई की जड़ को चावलों के पानी में पीस पीवे तो स्थावर विष का दोष दूर हो ७ ॥

अथ जंगमविष का यत्न ॥

अथ मृत्युपाश छेदघृत ॥

हड़ की छाल, गोरोचन, कूट, आक के फूल, कमल की जड़, नरसल की जड़, बेत की जड़, तुलसी, इन्द्रयव, मंजीठ, जवासा, शतावरि, सिंघाड़ा इनका काढ़ा कर उसमें गौका घृत पकावे पीछे ये सब जलजायँ घृतमात्र आयरहे तब इस घृत में बराबर का शहद डाल इसका शरीर में लेप करे तो विषमात्र का दोष, सांप का काटना आदि और सब जीवों का विष दूर हो। इस घृतको खाने में, लेप में, नास में दीजे। यह भावप्रकाश में है ८ ॥

अथ सर्प के विष के दूर होने का यत्न ॥

घृत, शहद, मक्खन, पीपल, अदरक, मिरच, सेंधानोन इन सबको महीन पीस पीवे तो काले सांप का काटा भी अच्छा हो ९ अथवा सिरस के फूलके रस में सहँजने के बीज की ७ पुटदे पीछे उसका अञ्जन करे तो सांपका काटा अच्छा हो १० अथवा सफ़ेद साठीकी जड़को पुष्यार्कके दिन लाकर चावल के पानीसे महीन पीस पीवे तो सांपका काटा अच्छा हो ११ ॥

अथ बिच्छू के विष का यत्न ॥

जमालगोटे को घिस बिच्छू के डंक ऊपर लगावे तो विष

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दूर हो १२ अथवा नौसादर, हरताल इन्हें पानी में महीन पीस बिच्छू के डंकपर लेप करे तो बिच्छू का विष दूर हो १३ अथवा पलाशपापड़ेको आकके दूधमें घिस बिच्छूके डंक में लगावे तो विष दूर हो १४ अथवा सिरसके बीजों को बकरीके दूधमें घिस बिच्छूके डंकमें लगावे तो विष जाय १५ ॥

अथ बिच्छू के विष दूर होने का मन्त्र ॥

ॐ आदित्यरथवेगेन विष्णुबाहुबलेन च ॥ सुवर्णपक्षपातेन भूम्यां गच्छ महाविष १ भोपक्षयोगपदाज्ञा श्रीशिवोत्तम प्रभु-पदाज्ञा भूम्यां गच्छ महाविष ॥ इस मन्त्रसे २१ बार डंक के ऊपर झाड़ दे तो बिच्छू का जहर जाय १ ॥

अथ कनेर के विष के दूर करने का यत्न ॥

हल्दी को दूध में महीन पीस उसमें मिश्री मिलाय पीवे तो कनेर का विष उतरे १६ ॥

अथ धतूरे के विष के दूर करने का यत्न ॥

चौलाई की जड़ अथवा गिलोय इन्हें पीवे अथवा कपास के पञ्चाङ्ग को पीवे तो धतूरे का विष जाय १७ ॥

अथ आक के विष दूर होने का यत्न ॥

हल्दी, तिल, दूब इन्हें बकरी के दूध में महीन पीस लेप करे तो आक का विष जाय १८ ॥

अथ कोंच के विष दूर होने का लेप ॥

घृत का मर्दन करे तो कोंचका विष जाय १९ ॥

अथ भिलावें के विष के दूर होने का लेप ॥

सौबारके धोये घृत के मर्दन से भिलावेंका विष जाय २० ॥

अथ मक्खी के विष के दूर होने का लेप ॥

केसर, तगर, सोंठि इन्हें जल से महीन पीस लेप करे तो मक्खी का विष जाय २१ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ भौंरामक्खी के विष के दूर होने का यत्न ॥

सोंठि, कबूतरकी बीट, बिजौरे का रस, हरताल, सेंधानोन इन्हें महीन पीस लेप करे तो भौंरामक्खी का विष जाय २२॥

अथ मूसे के विष के दूर होने का यत्न ॥

धमासा, मंजीठ, हल्दी, सेंधानोन इन्हें पानी में महीन पीस लेप करे तो मूसे का विष जाय २३ ॥

अथ मेंढक के विष दूर होने का यत्न ॥

सिरस के बीजों को थूहर के दूध में महीन पीस लेप करे तो मेंढक का विष जाय २४ ॥

अथ कनसलाई के विष दूर होने का लेप ॥

दीपक के तेल का लेप करे तो कनसलाई का विष जाय२५॥

अथ सर्प के विष दूर होने का अञ्जन ॥

जमालगोटे की मींगी में नींबके रसकी ७ पुट दे धूपमें सुखावे इसी तरह लाखके रसकी १ पुट दे पीछे इसका अञ्जन करे तो सांप का काटा अच्छा हो २६ ॥

अथ बावला कुत्ता, स्यार आदि काटें उसका यत्न ॥

ये जानवर जिस जगह काटें उस जगह का रुधिर निकला डलिये अथवा उस जगह लोहे की शलाका से दाग दे तो कुत्ता, स्यार आदि के विष दूर हों २७ अथवा धतूरे का रस १ टंक, आक का दूध १ टंक, घृत १ टंक इन्हें महीन पीस लेप करे तो बावले कुत्ते का विष जाय २८ अथवा धतूरे के फलको बीजों समेत ले चौलाई की जड़के रसमें पीस अथवा गोभी और शहद से पीस पीछे लेप करे तो बावले कुत्ते का विष जाय २९ अथवा मांस, आक का दूध, तेल, गुड़ ये सब बराबर ले पीछे १ टंक नित्य ७ दिन खाय तो इसका विष जाय ३० अथवा इस मन्त्र से एकसौ आठ आहुति दे और जिसको बावला श्वान काटे उसे चौहटे में अथवा नदी के तीर स्नान कराय आप पवित्र हो इस

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मन्त्र से एक सौ आठ आहुति दे पीछे डाभसे इसका झाड़ा दे तो उसका विष उतरे ॥

अथ मन्त्र ॥

अलर्काधिपते यक्ष सारमेय गणाधिप। अलर्कजुष्टमेतन्मे निर्विषं कुरु मा चिरात् स्वाहा ॥ इति मन्त्रः ॥

अथवा गुड़, तेल, आक का दूध इनका लेप करे तो श्वान का विष जाय ३१ अथवा कूकर की बीट का लेप करे अथवा ग्वार के पट्ठे की गिरी, सेंधानोन उसके ऊपर ५ दिन बांधे तो श्वान का विष जाय ३२ अथवा चौलाई की जड़, तुलसी के बीज, खुरासानी बच इन्हें चावलके पानीमें पीस ७ दिन पीवे तो श्वान का विष जाय ३३ अथवा चौलाई की जड़ का रस और चोखा घृत मिलाय ७ दिन खाय तो श्वान का विष जाय ३४ अथवा कड़ुवी तूंबी की जड़ ४ टंक, सोंठि ४ टंक, मिरच ४ टंक, नींब की निंबौली ४ टंक, शोधा जमालगोटा ६ टंक, निशोत ७ टंक इन्हें महीन पीस गुड़में २॥ टंक भर की गोली बांधे १ गोली गर्म पानी से ७ दिन तथा १४ दिन ले तो बावले श्वान का विष जाय ३५ अथवा कड़ुवी तूंबी की जड़, शिंगरफ़, शोधा जमालगोटा, मिरच, फुलाया सुहागा ये सब बराबर ले इनकी २ रत्ती भरकी गोली चौलाई के रस में बांधे १ गोली गर्म पानी से ७ दिन ले तो श्वानका विष जाय और जहां श्वानने काटाहो वहां इस गोलीको मूत्रमें घिस लगावे तो मन्त्रमें हो लट गिरपड़े ३६ इति श्वानादिक के विष का यत्न और स्थावर जङ्गम विषमात्र की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न सम्पूर्ण ॥

इत्येकोनविंशतितमस्तरङ्गः १९ ॥

अथ स्त्रियों के प्रदर आदि रोगों की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

अथ प्रदररोग की उत्पत्ति ॥

विरुद्ध भोजन से, बहुत मदके पीने, भोजन पर भोजन

In Public Domain, Chanakal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

करने, अजीर्ण से गर्भ के पड़ने, अतिमैथुन करने, सवारी के चढ़ने, मार्ग के चलने, शोच करने, अति तीक्ष्णपने, भार के उठाने, चोटके लगने और दिन के सोने से स्त्रियों के वायु, पित्त, कफ, सन्निपात ये सब कोपको प्राप्त हो प्रदररोगको पैदा करते हैं। वह प्रदररोग चार प्रकार का है—वायु का १ पित्त का २ कफ का ३ सन्निपात का ४ ॥

अथ प्रदररोग का सामान्य लक्षण ॥

स्त्रीकी योनि में नानाप्रकार का रुधिर विनाही ऋतु निकले और रुधिर निकलते हड़फूटन हो तथा सब शरीर में पीड़ा हो उसे प्रदररोग कहिये १ ॥

अथ वायु के प्रदर का लक्षण ॥

योनि का रुधिर रूखा हो और झागों को लिये हो और मांस के पानी सदृश हो तो वायु का प्रदर जानना २ ॥

अथ पित्त के प्रदररोग का लक्षण ॥

योनिका रुधिर पीला, नीला, सफ़ेदी को लिये लाल और गर्म बहुत जाय तथा शरीरमें दाह हो यह पित्तप्रदर का लक्षण है ३॥

अथ कफ के प्रदररोग का लक्षण ॥

जिसका रुधिर गोंदसमान चिकना और गुलाब के जल समान जाय उसे कफ का कहिये ४ ॥

अथ सन्निपात के प्रदर का लक्षण ॥

शहद अथवा घृतसमान, हरताल के सदृश, मस्तक की गूदी के समान, मुरदेकीसी दुर्गन्ध को लिये जिसका रुधिर जाय तो त्रिदोष का जानिये ५ ॥

अथ रुधिर के बहुत जाने का उपद्रव ॥

बहुत रुधिर गिरने से स्त्री दुर्बल होजाय, श्रम हो, मूर्च्छा और मद हो, तृषा बहुत लगे, दाह और प्रलापहो, शरीर पीला हो, तन्द्रा हो तथा वायुके और भी रोग होते हैं ६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ प्रदर का असाध्य लक्षण ॥

योनिसे निरन्तर रुधिर चलाकरे, बन्द न हो, तृषा लगे, दाह और शरीर में ज्वर हो, शरीर दुर्बल हो उसे असाध्य जानिये७॥

अथ शुद्धआर्तवनाम स्त्री के धर्म का लक्षण ॥

जिस स्त्री की योनि का रुधिर महीने के महीने शशाके रुधिर समान निकले, रुधिर में दाह और रुधिर निकलते पीड़ा न हो तथा पांचरात्रि तक निकले और न तो बहुत और न थोड़ा ही निकले उसे शुद्ध स्त्रीधर्म जानिये ८ और स्त्रीधर्म १६ दिन रहता है ॥

अथ प्रदररोग का यत्न ॥

सोंचरनोन, जीरा, मुलहठी, कमलगट्टे इनका काढ़ा कर शहद डाल पीवे तो वायुका प्रदररोग जाय १ अथवा मुलहठी २॥ टंक, मिश्री २ टंक इन्हें महीन पीस चावल के पानी में ले तो पित्त का प्रदररोग जाय २ अथवा रसौंत २॥ टंक, चौलाई की जड़ का रस २ टंक भर उसमें शहद मिलाय ७ दिन पीवे तो सब प्रकार का प्रदररोग जाय ३ अथवा आसापाले के बक्कलका काढ़ा कर उसमें दूध डाल पीवे तो प्रदर का रोग जाय ४ अथवा डाभ की जड़ को चावल के पानीसे पीस ३ दिन पीवे तो प्रदररोग जाय ५ अथवा कठूंबर के बक्कल के रसमें शहद अथवा मिश्री और चावल का पानी डाल पीवे तो प्रदररोग जाय ६ अथवा दारुहल्दी, रसौंत, चिरायता, अड़ूसा, नागरमोथा, रक्त चन्दन, आक के फूल इनका काढ़ा कर उसमें शहद डाल पीवे तो लाल, सफ़ेद, पीला सब प्रकारका स्त्रीका प्रदररोग जाय७— इति दार्व्यादिक्काथ ॥

अथवा गूलरके फलोंको सुखाकर उन्हें महीन पीस उसमें मिश्री, शहद डाल १ टंक भरकी गोली बांधे पीछे इस गोली को ७ दिन खाय तो प्रदररोग जाय ८ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ प्रदरभेद (सोमरोग) का लक्षण ॥

स्त्रियों के बहुत प्रसङ्ग से, शोच से, खेद से, जहरके संयोग से अतीसार की भांति स्त्रियों के अथवा पुरुष के भी सोमरोग होता है इसमें बारम्बार बहुत मूत्र उतरता है ॥

अथ सोमरोग का सामान्य लक्षण ॥

बारम्बार मूतने से दुर्बल अङ्ग और शिथिल शरीर होजाय, मुख और तालू सूखा करें, मूर्च्छा हो, जँभाई बहुत आवें, प्रलाप हो, त्वचा सूख जाय और भोजनादिक में तृप्ति न हो ये लक्षण जिसके हों उसके सोमरोग जानना ॥

अथ सोमरोग का यत्न ॥

पक्के केलेमें मिश्री लगाकर खाय तो सोमरोग जाय १ अथवा आंवले के रस में शहद डाल खाय तो सोमरोग जाय २ अथवा उड़दका चून, मुलहठी, बिदारीकन्द इन्हें महीन पीस उसमें बराबर की मिश्री मिलाय १ टकेभर दूध से नित्य १० दिन ले तो सोमरोग जाय ३ ॥

अथ सफ़ेदप्रदर का यत्न ॥

आंवले के ५ टंक बीजों को जल में भिगोय महीन पीस, छान उसमें शहद, मिश्री मिलाय नित्य १४ दिन पीवे तो सफ़ेद प्रदर जाय ४ ॥

अथ मूत्रातीसार का लक्षण ॥

सोमरोग बहुत दिन रहे तो मूत्रातीसार हो इस मूत्रातीसार में बल जाता रहे और मूत्र बहुत उतरे ५ ॥

अथ मूत्रातीसार का यत्न ॥

तालवृक्ष की जड़, छुहारा, मुलहठी, बिदारीकन्द इन्हें महीन पीस इसमें शहद, मिश्री मिलाय १ टकेभर नित्य खाय तो मूत्रातीसार जाय ६ अथवा पवांड़की जड़को चावलों के पानी से पीवे तो मूत्रातीसार जाय ७ अथवा सफ़ेद मूसली, तालवृक्ष

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

की जड़, छुहारा, पक्का केला इन्हें दूध से पीवे तो मूत्रातीसार जाय ८॥

अथ प्रदर का और यत्न॥

मूसे की २ टंक मेंगिनी में बराबर की मिश्री मिलाय दूध से ३ दिन पीवे तो स्त्रीके लाल, सफ़ेद सब तरहके प्रदररोग अच्छे हों ८ अथवा धवई के फूल, बीजाबोल, मूसेकी मेंगिनी इन सब को बराबर ले महीन पीस मिश्री मिलाय २ टंक जलसे ले तो प्रदर का रोग जाय ९—इति प्रदररोगकी उत्पत्ति, लक्षण और यत्न सम्पूर्ण॥

अथ स्त्रियों के योनिरोग की उत्पत्ति, लक्षण और संख्या॥

मिथ्या आहार, मिथ्या विहार करने से वायु, पित्त, कफ दुष्ट होकर स्त्री की योनि में बीस प्रकार के रोगों को उपजाते हैं उनके नाम ये हैं—उदावर्त १ बन्ध्या २ विप्लुता ३ परिप्लुता ४ वातला ५ लोहितक्षया ६ दुःप्रजाविनी ७ वामिनी ८ पुत्रघ्नी ९ पित्तला १० अत्यानन्दा ११ कर्णिनी १२ कर्णिका १३ अतिचरणा १४ अनार्तवा १५ अस्तनी १६ खण्डिता १७ अण्डिनी १८ महाविवृता १९ सूचीवक्त्रा २०॥

अथ स्त्रियों की योनि का लक्षण॥

जो स्त्रीधर्म हो तो बड़े कष्टसे झाग को लिये रुधिर छोड़े उसे उदावर्त योनि कहिये १ और जो स्त्रीधर्म न हो उसे बन्ध्या योनि कहिये २ और जिसकी योनिमें नित्यही पीड़ा रहे उसे विप्लुता योनि कहिये ३ और जिस स्त्रीके स्त्रीधर्म होते में बहुत पीड़ा हो उसे परिप्लुता योनि कहिये ४ और जिसकी योनि कठोर हो और योनिमें शूल चले उसे वातला योनि कहिये ५ और जिसकी योनि में दाह रहे और रुधिर निकलाकरे उसे लोहितक्षया योनि कहिये ६ जिसकी योनि चुवा करे और कुपित रहे उसे दुःप्रजाविनी (दुःखसे प्रसववाली) योनि कहिये ७ जिस

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

स्त्रीकी योनि से पवनसंयुक्त रुधिर को लिये वीर्य निकले उसे वामिनी योनि कहिये ८ और जिस स्त्रीके गर्भ रहे और फिर जाता रहे उसे पुत्रघ्नी योनि कहिये ९ और जिसकी योनि में दाह बहुत हो, पकजाय और शरीर में ज्वर रहे उसे पित्तला योनि कहिये १० तथा जिसकी योनि मैथुन से संतोष को न प्राप्त हो उसे अत्यानन्दा योनि कहिये ११ और जिसकी योनि कर्णफूल के आकार हो और उसमें कफ, रुधिर निकले उसे कर्णिनी योनि कहिये १२ तथा जिस योनि में वीर्य न रहे उसे अतिचरणा योनि कहिये १३ और जिस स्त्रीके बहुत छोटे स्तन हों उसे अस्तनी योनि कहिये १४ और जिसकी योनि खण्डिता हो और मैथुन करते कुछ नीचे लटक आवे उसे खण्डिता योनि कहिये १५ और जिसकी योनिका छिद्र सूक्ष्म हो उसे अण्डिनी योनि कहिये १६ और जिसका मुँह बढ़ा हो उसे महाविवृता योनि कहिये १७ और जिसका मुँह सुई के समान हो उसे सूचीवक्त्रा योनि कहिये १८॥

अथ योनिकन्दरोग की उत्पत्ति और लक्षण॥

दिनके सोने से, अति क्रोधके करने से, खेदसे, अति मैथुन से योनि के ऊपर किसीतरह की चोट लगने से अथवा योनिमें नखदांत के लगनेसे कफ कुपित हो योनि के बिषे योनिकन्द नाम रोग को उपजाता है॥

अथ योनिकन्दरोग का स्वरूप॥

योनिके बीच राद, रुधिर को लिये बड़हल के फल समान एक गांठ पीछे कहे हुए कारणों से होती है उसे बद और योनिकन्द रोग कहते हैं। योनिकन्दनाम रोग चार प्रकारका है—वायुका १ पित्तका २ कफका ३ सन्निपातका ४॥

अथ वायु के योनिकन्द का लक्षण॥

योनिके बीचकी गांठ रूखी हो और उसका वर्ण अच्छा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

और योनिके वर्ण समान हो तथा उस गांठ का मुख फटा हो उसे वायु का योनिकन्द कहिये १ ॥

अथ पित्त के योनिकन्द का लक्षण ॥

जिसकी योनिकी भीतरी गांठ दाहको लिये लाल हो और उसे ज्वर हो आवे उसके पित्तका योनिकन्द होता है और जिस स्त्री के योनिकन्द रोग होता है उसके स्त्री धर्म नहीं होता है २ ॥

अथ बन्ध्या स्त्री का यत्न ॥

जिस स्त्री के स्त्रीधर्म न हो वह स्त्री नित्य मछलीका मांस खाय तो स्त्रीधर्म हो ३ अथवा कांजी या तिल अथवा उड़द या दही नित्य खाय तो स्त्रीधर्म हो तब उसका बन्ध्यापन दोष दूर हो ४ अथवा साठीके बीज, कड़ुवीतूंबी, दात्यूणी, पीपल, गुड़, मेढ़ल, दारूका झाग, जवाखार, थूहर का दूध इन सबको इकट्ठाकर महीन पीस योनिमें इनकी बत्ती डाले तो स्त्रीके स्त्रीधर्म तत्काल हो और उसके बन्ध्यापन का दोष तत्काल दूर हो ५ अथवा मालकांगनी, राई, विजयसार, खुरासानी बच इन्हें महीन पीस शीतल जलसे ५ दिन पीवे तो उस स्त्रीके स्त्रीधर्म हो और उस का बन्ध्यापन जाय ६ ॥

अथ बांझ स्त्री के पुत्र होने का यत्न ॥

खरैटी, गंगेरन की छाल, महुआ, बड़के अंकुर, नागकेसर ये सब बराबर ले इन्हें महीन पीस गौ के दूधमें ५ टंक शहद डाल इस चूर्ण को नित्य १५ दिन पीवे तो बन्ध्या स्त्री के निश्चय पुत्र हो ७ ॥

अथ स्त्रीधर्म न हो उसका यत्न ॥

कालातिल, सोंठि, मिरच, पीपल, भारंगी, गुड़ इन सबको १ टंकभर औटाय इनका काढ़ाकर १५ दिन पीवे तो उस स्त्रीके स्त्रीधर्म निश्चय हो और रुधिर का गुल्म दूर होकर पुत्र

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

हो ८ अथवा असगन्ध के काढ़े में गौ का दूध और घृत मिलाय ऋतुके समय स्त्री प्रभात ही ५ दिन पीवे तो स्त्रीके गर्भ रहे ९ अथवा सफ़ेद कटेली की जड़ पुष्य नक्षत्र के दिन उखाड़कर २॥ टके भर पीस दूध के साथ ऋतु के समय ३ दिन स्त्री पीवे तो निश्चय गर्भ को धारण करे १० अथवा कटसैला की जड़, धवई, बड़के अंकुर, कमलगट्टे इन्हें महीन पीस २॥ टंक ऋतुके समय स्त्री पीवे तो निश्चय गर्भ को धारण करे ११ अथवा पार्श्वपीपल (सफ़ेदपीपल) की जड़ अथवा इसके बीज, सफ़ेदजीरा, सरफोंका ये सब बराबरले इन्हें महीन पीस २॥ टंक ऋतुके समय स्त्री दूधके साथ ले तो उस स्त्री के गर्भ रहे और निश्चय उसके पुत्र हो १२ अथवा बाराहीकन्द, कैथा और शिवलिङ्गी इन्हें महीन पीस ऋतुके समय २॥ टंक दूधके साथ ले तो स्त्री के निश्चय पुत्र हो। ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं १३ अथवा बिजौरे के बीजों को गौके दूधमें पकाय उसमें गौका घृत मिलावे और उसकी बराबर नागकेसर मिलाय ऋतुसमय ५ टंक मिश्रीके साथ ७ दिन खाय तो स्त्री गर्भको धारण करे १४ अथवा अरण्ड की अंडोली और बिजौरे के बीज इन दोनों को घृत में पीस दूध के साथ ऋतुमें ३ दिन पीवे तो स्त्री गर्भ को धारण करे १५ अथवा पीपल, सोंठि, मिरच, नागकेसर इन्हें महीन पीस ऋतु के समय स्त्री घृत के साथ ३ दिन पीवे तो स्त्री गर्भ को धारण करे। यह सर्वसंग्रह में लिखा है १६॥

अथ गर्भ नहीं रहने की औषध॥

पीपल, बायबिड़ंग, सुहागा ये बराबर ले इन्हें महीन पीस ऋतुके समय स्त्री ५ दिन जलसे ले तो स्त्री के कभी भी गर्भ न रहे १७ अथवा १ टके भर पुराने गुड़को औटाय ऋतु के समय स्त्री नित्य १५ दिन पीवे तो स्त्री कभी भी गर्भ को न धारण करे १८ अथवा निंबौली के तेलके फीहे को स्त्री ऋतुके समय

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

योनिमें ५ दिन दे तो स्त्री के कभी गर्भ नहीं रहे। यह भावप्रकाश में है १९ ॥

अथ स्त्री की योनि के रोगों का क्रम से यत्न लिखते हैं ॥

तगर, कटेली, कूट, सेंधानोन, देवदारु इनका काढ़ाकर इस काढ़े में तेल पकावे पीछे इस तेल का फीहा योनि में रक्खे तो विप्लुतायोनि का रोग जाय २० अथवा पाढ़ल के पत्तों को या उसके बक्कल को सिझाय उससे योनि को पसीना लिवावे और धोया करे तो वायुकी योनि के रोग जायँ २१ अथवा तिलों के तेल में निंबौली को पकाय उससे योनि को सेंके तो पित्त की योनि के रोग जायँ २२ अथवा पित्त को हरनेवाली औषध के घृत से योनि को सेंके तो पित्त की योनि के रोग जायँ २३ अथवा आंवले के रस में मिश्री डाल स्त्री १० दिन पीवे तो स्त्री की योनि का दाह जाय २४ अथवा कूकरभांगरे की जड़ को चावलों के पानी के साथ पीवे तो स्त्री की योनि में राद पड़ती दूर हो २५ अथवा नींब के पत्ते, किरमाला के पत्ते, खुरासानी बच, अड़ूसे के पत्ते, पटोल के पत्ते इन्हें औटाय इससे योनिको धोवे तो योनि की दुर्गन्ध जाय २६ और पीपल, मिरच, उड़द, सौंफ, कूट, सेंधानोन इन्हें औटाय इससे योनि को धोवे तो योनि के कफ के सब रोग जायँ २७ ॥

अथ योनिसंकोचन की औषध ॥

मूंग के फूल, खैरसार, हड़, जायफल, माजूफल, सुपारी इन्हें महीन पीस महीन वस्त्रसे छान स्त्री की योनिमें रक्खे तो स्त्री की योनि संकीर्ण हो २८ अथवा कोंच की जड़ के काढ़े से योनि धोवे तो स्त्री की योनि गाढ़ी हो २९ अथवा भांग को महीन पीस इसकी पोटलीकर स्त्री योनि में रक्खे तो योनि महासंकीर्ण हो ३० अथवा मोचरस को महीन पीस इसकी पोटली कर स्त्री योनिमें रक्खे तो स्त्री की योनि संकुचित हो ३१ अथवा आंवले

In Public Domain, Chanbal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

की जड़, कटसेला, बबूलकी जड़, बेर की जड़, अड़ूसे की जड़, माजूफल इन सबको औटाय इस पानी से योनि को धोवे तो योनि संकोच हो ३२ अथवा दहीसे योनिको धोवे तो योनि संकोच हो ३३ अथवा सफ़ेद फिटकरी को फुलाय माजूफल मिलाय महीन पीस पोटली कर योनिमें धरे तो योनि संकुचित हो ३४॥

अथ योनि के सब रोगों के दूर होनेका फलघृत॥

मंजीठ, मुलहठी, कूट, त्रिफला, मिश्री, खरैटी, मेद, असगन्ध, अजमोद, दोनों हल्दी, फूलप्रियंगु, कुटकी, कमल की जड़, दाख, रक्तचन्दन ये सब धेले धेले भर ले और गौ का घृत पावभर, शतावरिका रस एकसेर ले पीछे इनको मधुरी आंच से पकावे जब ये सब जलजायँ घृतमात्र आयरहे तब इस घृत को पुरुष अथवा स्त्री नित्य १ टके भर पीवे तो नपुंसक पुरुष भी महाकामी, बड़ा पराक्रमी, पुत्रों को उपजानेवाला होता है और स्त्री इस घृतको खाय तो योनि के सब रोग जायँ तथा इस घृतके प्रभाव से स्त्री के दीर्घायु, बलवान्, बुद्धिमान् पुत्र होवें ३५॥

अथ योनिकन्द का यत्न॥

गेरू, बायबिड़ंग, हल्दी, कायफल इन सबको महीन पीस त्रिफले के काढ़े में शहद मिलाय इस चूर्ण को स्त्री योनि में रक्खे तो स्त्री का योनिकन्दरोग जाय ३६॥

अथ गर्भिणी स्त्री के रोगों का यत्न॥

जिस स्त्री का गर्भ गिरता हो उसे भाऊ की जड़, अतीस, नागरमोथा, मोचरस, इन्द्रयव इनका काढ़ा कर दे तो उस स्त्री का गर्भ गिरना बन्द हो ३७॥

अथ गर्भिणी स्त्री के ज्वर का यत्न॥

मुलहठी, रक्तचन्दन, खस, गौरीसर, कमल की जड़ इनका काढ़ाकर मिश्री, शहद मिलाय पीवे तो गर्भिणी स्त्री का ज्वर जाय ३८॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ गर्भिणी स्त्री की संग्रहणी का यत्न ॥

चावलों के सत्तू को आम और जांमुनके बक्कलके काढ़ेसे ले तो गर्भिणी स्त्री की संग्रहणी जाय ३९ अथवा भाऊ वृक्षका बक्कल, अरलू का बक्कल, रक्तचन्दन, खरैटी, धनियां, कुड़ा की छाल, नागरमोथा, जवासा; पित्तपापड़ा, अतीस इनका काढ़ा कर गर्भिणी स्त्री ले तो अतीसार और संग्रहणी ज्वर को दूर करता है ४० ॥

अथ स्त्री के गर्भ के गिरने को और गर्भस्राव की उत्पत्ति और लक्षण ॥

बहुत मैथुन करने, मार्ग के चलने, ज्वर के आने, उपवास करने, चोटके लगने, अजीर्ण में भोजन करने, दौड़ने, वमन करने, जुलाब लेने और तीखी, कड़ुवी, गर्म, रूखी वस्तु के खाने से तथा विषम आसन बैठने, भय के होने और पेट में शूल चलने से स्त्री के गर्भ का गिरना और गर्भ का स्राव होता है४१॥

अथ गर्भ के गिरने का और गर्भस्राव का पूर्वरूप ॥

स्त्री के गर्भ रहे पीछे चार महीनेमें जो गर्भ गिरे तो उसे गर्भस्राव कहिये और चार महीने के उपरान्त पांच, छः महीने में गर्भ गिरे उसे गर्भपात कहिये। इस जगह दृष्टान्त है जैसे वृक्ष का फल किसी चोट के लगने से गिरपड़ता है वैसेही कच्चा गर्भ किसी तरह की चोट लगने से गिर पड़ता है ४२ ॥

अथ गर्भ स्रवता होय उसके थँभने का यत्न ॥

कमल की जड़, कमल की नाल, कमल के फूल, मुलहठी इन्हें दूध के साथ औटाय पीवे तो गर्भस्राव बन्द हो और यही गर्भिणी स्त्री के दाह, मूर्च्छा, छर्दि, अरुचि इनको दूर करता है ४३ ॥

अथ गर्भपात का उपद्रव ॥

स्त्री के गर्भ गिरने से दाह हो, शूल हो, पसुली और पीठ में पीड़ा हो, रजोधर्म बहुत हो और मूत्र उतरे नहीं ४४ और गर्भ स्थान में जाय उसके भी यही उपद्रव होते हैं ४५ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ गर्भ पड़ता हो उसके थँभने का यत्न ॥

डाभकी जड़, कास की जड़, अरंड की जड़, गोखरू की जड़ इनमें गौ का दूध औटाय गर्भिणी स्त्री पीवे तो उसके हृदय आदि का शूल जाय ४६ अथवा गोखुरू, मुलहठी, कटेली, मदनबाण के फल इन्हें गौ के घृतमें औटाय स्त्री पीवे तो गर्भ पड़ना बन्दहो और स्त्रीके शरीर की सबप्रकार की वेदना जाय ४७ अथवा कुम्हार के चाक की मिट्टी, गेरू, चमेली, मंजीठ, धवई के फूल, रसौंत, राल इनका चूर्ण कर ५ टंक शहद से स्त्री ले तो स्त्री के प्रदर आदि सब रोग जायँ ४८ अथवा भृङ्गी (भौंरा) जानवर के घर की मिट्टी, मंजीठ, लजालू, कसेरू, कमल की जड़ इन्हें गौ के दूध में औटाय स्त्री पीवे तो गर्भ गिरना बन्द हो ४९ ॥

अथ गर्भिणी स्त्री के अफरा हो उसका यत्न ॥

खुरासानी बच, रसौंत, हींग, कालानोन इनमें दूध औटाय पीवे तो गर्भिणी स्त्री का अफरा जाय ५० ॥

अथ गर्भिणी स्त्री के मूत्र न उतरने का यत्न ॥

डाभ की जड़, दूब की जड़, कास की जड़ इन्हें दूध में औटाय गर्भिणी स्त्री पीवे तो मूत्र उतरे ५१ ॥

अथ महीने के महीने ये औषध दे तो स्त्री का गर्भ न गिरे ॥

मुलहठी, शालवृक्ष के बीज, क्षीरकाकोली, देवदारु, लूणाख्य (लोनियांशाक), कालातिल, राल, पीपल, शतावरि, कमल की जड़, जवासा, गौरीसर, रास्ना, दोनों कटेली, सिंघाड़ा, कसेरू, दाख, मिश्री इन्हें औटाय महीने के महीने ७ दिन पीवे तो स्त्रीका गर्भ न गिरे और कोई उपद्रव भी न हो ये सब यत्न सात महीने तक कीजे ५२ ॥

अथ आठवें महीने का यत्न ॥

कैथा की जड़, कटेली की जड़, बेल की जड़, पटोल की जड़,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

साठी की जड़ इन्हें दूध में औटाय पीवे तो गर्भ पुष्ट रहे ५३ ॥

अथ नवें मास का यत्न ॥

मुलहठी, जवासा, क्षीरकाकोली, गौरीसर इन्हें धेले धेले भर ले फिर उसे दूध में औटाय पीवे तो गर्भ पुष्ट रहे ५४ ॥

अथ दशवें महीने का यत्न ॥

सोंठि, क्षीरकाकोली इन्हें दूध में औटाय पीवे अथवा सोंठि, मुलहठी, देवदारु, क्षीरकाकोली, कमलगट्टे, मंजीठ इन्हें जल में औटाय जलसमेत दूध में औटावे पीछे पानी जलजाय दूध मात्र रहजाय तब इस दूध को पीवे तो स्त्री का गर्भ पुष्ट हो नीरोग रहे और उसके किसीतरह का उपद्रव न उठे ५५ ॥

अथ वायु से गर्भ सूखजाने का यत्न ॥

जिस स्त्री का गर्भ वायु से सूखजाय उस स्त्री का उदर परिपूर्ण न हो, खाली रहे तब वह स्त्री पुष्टई के लिये दूध, मांसरस और पुष्टवस्तु खाय तथा दूध पीवे तब वायु दूर होकर गर्भ परिपूर्ण होता है ५६ ॥

अथ गर्भस्थ बालक के होने का महीना ॥

स्त्री नवें महीने अथवा दशवें महीने सन्तान को उपजाती है और कोई स्त्री ग्यारहवें अथवा बारहवें महीने सन्तान को उपजाती है और इन महीनों के उपरान्त जो गर्भ रहे वह गर्भ विकार का जानिये इस गर्भ को उदर के रोगों में गिन उसका यत्न करना ५७ ॥

अथ स्त्रीके सुखपूर्वक प्रसव होने का यत्न ॥

सांप की कांचली, मरुवे (नाजबोय) इन दोनों की योनि में धूनी दे तो स्त्री सुख से सन्तान जन्मे ५८ अथवा कलिहारी की जड़ को स्त्री हाथ, पैरों में बांधे तो स्त्री के तत्काल प्रसूति हो ५९ अथवा कूकरभांगरे की जड़ और पाढ़ल की जड़ को स्त्री हाथ, पैरों में बांधे तो स्त्री के तत्काल प्रसूति हो ६०

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथवा पोई की जड़ के काढ़े में तिलों का तेल डाल स्त्री गर्भ पर लेप करे तो सुख से तत्काल प्रसूति हो ६१ अथवा पीपल, खुरासानी बच इन्हें जल से महीन पीस योनि पर लेप करे तो सुखसे तत्काल प्रसूति हो ६२ अथवा अरण्ड के तेल को स्त्री की नाभिपर लेप करे तो तत्काल प्रसूति हो ६३ अथवा बिजौरे की जड़, महुआ इन दोनों को घृतसे पीस स्त्री पीवे तो तत्काल प्रसूति हो ६४ अथवा साठी की जड़ को स्त्री की कटि में बांधे तो तत्काल प्रसूति हो। ये सब यत्न भावप्रकाशमें लिखे हैं ६५ अथवा अपामार्ग की जड़ और काकलहरी की जड़ को कटि में बांधे तो तत्काल प्रसूति हो। ये योगचिन्तामणि में लिखे हैं ६६ ॥

अथ सुख से तत्काल प्रसव करने का मन्त्र और यन्त्र ॥

मुक्ताः पाशा विमुक्ताश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्तः सर्वभयाद्गर्भ एहि माचिर माचिर स्वाहा ॥ इस मन्त्र से जलको ७ बार मन्त्रित कर स्त्री को पिलावे तो तत्काल प्रसूति हो ६७ अथवा इस यन्त्र को स्त्री देखे तो तत्काल प्रसूति हो ६८ ॥

१६	६	८
२	१०	१८
१२	१४	४

अथ मूढ़गर्भ की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

स्त्री के शरीर में वायु कुपित हो योनि, उदर और कोख में शूल को करे तथा मूत्र न उतरने दे और गर्भ को योनि में चार प्रकार से टेढ़ा कर देती है ॥

अथ गर्भस्थ बालक की चारप्रकार की स्थिति ॥

कीलक १ प्रतिखुर २ परिघ ३ बीज ४ और ऊर्ध्वबाहु, चरण, शिर और पसुलियों के भेद से आठ प्रकार से बालक गर्भ में रहता है १ ॥

---

* नाड़ीऋतुवसुभिः सहपक्षदिगष्टादशभिरेव च। अर्कर्भुवनाब्धिसहितैरुभयत्रिशकमाश्चर्यम् ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ कीलक का लक्षण ॥

योनि के मुखमें कीलासा लगजाय उसे कीलक कहिये १ योनिद्वार में हाथ, पैर आड़ा आजाय उसे प्रतिखुर कहिये २ योनिके मुख में आगसी लगजाय उसे परिघ कहिये ३ योनिके मुखमें शिर आ अटके उसे बीजक मूढ़गर्भ कहिये ४ योनिके मुख में पेट आ अटके उसे ऊर्ध्वबाहु कहिये ५ योनि के मुख में पसवाड़ा आ अटके उसे चरणशिर कहिये ६ स्त्री की योनि द्वार का मुख नीचा हो ७ स्त्री की योनिके मुख में पसवाड़ा, पीठ आ अटके ८ इसप्रकार मूढ़गर्भ आठप्रकार के होते हैं ॥

अथ मूढ़गर्भ का असाध्य लक्षण ॥

जिस गर्भवती स्त्री का मस्तक सूधा न रहे, लटका जाय और जिसकी लाज जाती रहे, अङ्ग शीतल हो जायँ, शरीर की नसें नीली हो जायँ उस स्त्री का बालक मरा जानिये तथा वह स्त्री भी मरजाती है १ ॥

अथवा जिस स्त्री के गर्भ में बालक मरा हो उस स्त्री का गर्भ फड़के नहीं और उसका मुख काला, पीला नसों को लिये हो और उसकी नाक और मुख के श्वास में मरे की सी दुर्गन्ध आवे और पेटमें शूल चले ये लक्षण हों तो जानिये इसके उदर में मरा बालक है २ ॥

अथ पेट में बालक के मरने का कारण ॥

जिस स्त्री का भाई, माता, पिता, पुत्र, स्वामी आदि कोई प्यारा मरा हो अथवा उसका द्रव्यादिक किसी तरह से जाता रहे या उसके उदर में किसी तरह की चोट लगजाने से जो दुःख हो उस दुःख से उसका गर्भ बहुत दुःखी हो और उसकी कोखि में अनेक रोग पैदाहों इसकारण उसके पेट का बालक पेट में मरजाता है ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ गर्भिणी स्त्री का असाध्य लक्षण ॥

जिस स्त्री की योनि का मुख मरे बालक से ढकजाय और कुक्षि में शूल चले उस गर्भ की मकल्लक संज्ञा है और पीछे कहे उपद्रव भी होते हैं। यह असाध्य है ४ ॥

अथ मूढ़गर्भ का यत्न ॥

जिस स्त्री के गर्भसमय भगके निकट बालक बुरीतरह आय गया हो उसके वास्ते निपट चतुर जिसने बहुतसे बालक अच्छी तरह जनाये हों ऐसी दाई को बुलाइये। वह हाथ में घृत लगाय उस हाथ को चतुराई से भगमें डाल बालक को सूधाकर जीता ही तत्काल भगमें से बाहर निकाल लेवे ५ ॥

अथ गर्भ में बालक मरगया हो उसका यत्न ॥

निपट चतुर दाई चतुराई से भग में पैना छोटा नस्तर डाल उस मरे बालक का अङ्ग अङ्ग काटकर भगके बाहर निकाल ले। इस तरह भगमें से बालक को न निकाले तो वह गर्भवती स्त्री भी उसके साथ मरजाय। मरे बालक को गर्भमेंसे निकाल भग को चतुराई से गर्म पानी से धोवे और उसी समय सुहावते गर्म घृत से अथवा तेल से चुपड़े तो भग कोमल रहे और उसमें शूलादिक कोई उपद्रव न होवें पीछे कड़ुवी तूंबी के पत्ते और पठानीलोध ये बराबर ले महीन पीस इसका भग में लेप करे तो भग ज्योंकी त्यों अपने ठिकाने बैठजाय अथवा पलाशपापड़ा, पक्केगूलर का फल इन्हें बराबर ले तिलों के तेल में महीन पीस भग के लेप करे तो भग गाढ़ी होजाय और इसी तरह २१ दिन करे तो भगमें कोई रोग न हो ६ ॥

अथ इसका और यत्न ॥

सर्पकी कांचली, कूट, सरसों इन तीनों को महीन पीस कड़ुए तेलसे भगमें धूनी दे तो भग के रोग जायँ ७ अथवा कलिहारी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

की जड़ को औटाय उस पानी से हाथों और पैरों में लेप करे तो भगमेंसे मरे बालक का दोष दूर हो ८ ॥

अथ मकल्लकरोग की उत्पत्ति और लक्षण ॥

जिस स्त्री के सन्तान हुई हो और वह रूखी और वायु की करनेवाली वस्तु खावे तथा उसको तीक्ष्णद्रव्य, पीपलामूल आदि न मिलें या वह न खाय तो उसके वायु नाभि के नीचे अथवा दोनों पसलियों में अथवा पेडू में रुधिर को रोंक वायु की गांठ करती है अथवा नाभि और पेडू, उदर और पक्काशय में शूल को प्रकट करती है अथवा पेडू में अफरा कर मूत्र को रोक देती है उसको वैद्य मकल्लकरोग कहते हैं १ ॥

अथ मकल्लकरोग का यत्न ॥

जवाखार को गर्म पानी में पीस ले तो मकल्लकरोग जाय २ अथवा पीपल, पीपलामूल, मिरच, सोंठि, चित्रक, चव्य, सम्हालू, इलायची, अजमोद, सरसों, सेंकी हींग, पाढ़, इन्द्रयव, सफ़ेद जीरा, बकायन, मुरहरी, अतीस, कुटकी, बायबिड़ंग यह पिप्पल्यादिगण है इन सबको बराबर ले महीन पीस २॥ टंक गर्म पानी से ले अथवा इनका काढ़ाकर इसमें थोड़ा सेंधानोन डाल पीवे तो स्त्री के कफ या वायु के सब रोग जायँ और स्त्री के गोले, शूल, उदर के रोग और ज्वर को दूर करे और भूंख लगावे, आँव को दूर करे तथा मकल्लकरोग को निश्चयही दूर करे ३ अथवा सोंठि, मिरच, पीपल, तज, पत्रज, नागकेसर, इलायची, धनियां इन सबको महीन पीस २॥ टंक पुराने गुड़ से ले तो मकल्लकरोग जाय ४ और जिस स्त्री के प्रसूति हुई हो उस स्त्री को युक्ति से आहार-विहार करावे तथा खेद, मैथुन, क्रोध, ठंढे में रहना ये कार्य न करे। मिथ्या आचरण करने से भी उसके सूतिकारोग होगा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ सूतिकारोग की उत्पत्ति ॥

मिथ्या आहार से, बहुत क्लेश से, विषम आसन से, अजीर्ण में भोजन से सूतिकारोग होता है। जापा (सौरि) में जो रोग होते हैं वे सब भयङ्कर हैं ॥

अथ प्रसूतिकारोग का लक्षण ॥

अङ्गों में पीड़ा हो, ज्वर और खांसी हो, तृषा बहुत लगे, शरीर भारी हो और शरीर में सूजन, पेट में शूल, अतीसार, अफरा हो, शरीर का बल जातारहे, तन्द्रा और अरुचि हो इत्यादि वायु-कफ के बहुत रोग हों और बल, मांस, अग्नि जाती रहे इन सब रोगों को सूतिकारोग कहिये १ ॥

अथ सूतिकारोग का यत्न ॥

जो औषध वायु को दूर करे वह औषध सूतिकारोगों को दूर करती है २ अथवा दशमूल का काढ़ा सूतिकारोग को दूर करे ३ अथवा गिलोय, सोंठि, सहँजना, पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, नेत्रबाला इनका काढ़ा शहद डाल दे तो सूतिकारोग दूर हो ४ अथवा देवदारु, खुरासानी बच, कूट, पीपल, सोंठि, चिरायता, जायफल, नागरमोथा, हड़ की छाल, गजपीपल, धमासा, गोखुरू, जवासा, कटेली, गिलोय, कालाजीरा ये सब बराबर ले इनका काढ़ा करे और हींग, सेंधानोन की प्रतिवास दे यह काढ़ा दे तो सूतिकारोग, शूल, खांसी, श्वास, ज्वर, मूर्च्छा, मस्तकपीड़ा, तन्द्रा, अतीसार, वमन इन सब रोगों को यह दूर करता है ५–इति देवदार्वादिक्वाथ ॥

अथ पञ्चजीरकपाक ॥

कालाजीरा, सफ़ेदजीरा, सौंफ, अजवायन, अजमोद, धनियां, मेथी, सोंठि, पीपल, पीपलामूल, चित्रक, झाऊ की जड़ का बक्कल, बेरकी मींगी, कूट, कबीला ये सब औषध टके टके भर ले

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

इन्हें महीन पीस कपड़छान कर पीछे गौके १ सेर घृत में मकरोवे पीछे इस चूर्णको ४ सेर गौ के दूध के मावे में घृत से मकरोवे फिर चूर्ण को पकाय इसका खैरामावा करे फिर इस मावे को १०० टकेभर खांड़ की चाशनी में डाले पीछे एक टके भर की गोली कर नित्य प्रसूता स्त्री खाय तो सूतिकारोग, ज्वर, क्षयी, श्वास, खांसी, पाण्डुरोग, क्षीणता, वायके रोग इनको यह पञ्च-जीरकपाक दूर करे ६ ॥

अथ सौभाग्यशुण्ठीपाक ॥

सतुवा सोंठि ½ सेर महीन पीस कपड़छान कर ½ सेर गौ के घृत में मकरोवे फिर ½ सेर खांड़ की चाशनीकर इस चाशनी में ये औषध–धनियां १ टंक, सौंफ ५ टंक, बायबिड़ंग १ टकेभर, सोंठि १ टके, कालीमिरच १ टके, पीपल १ टके, नाग-केसर १ टके, नागरमोथा १ टकेभर महीन पीस कपड़छानकर डाले तथा सार ५ टंक, अभ्रक ५ टंक इसमें डाले और मेवा यथारुचि डाल पीछे १ टकेभरकी गोली बांधे। इस गोली को स्त्री खाय तो तृषा, छर्दि, ज्वर, दाह, श्वास, खांसी, पाण्डुरोग, मन्दाग्नि इनको यह दूर करे ७–इति सौभाग्यशुण्ठीपाक ॥

अथ स्तनरोग का लक्षण ॥

सब शरीर में फैलनेवाले वायु, पित्त, कफदोष ये दुष्ट होकर स्त्री के स्तन में जाय प्राप्त होते हैं और उस स्त्री के दूधसंयुक्त अथवा दूधरहित स्तनों में गांठ आदि रुधिर के रोगों को पैदा करते हैं १ ॥

अथ स्तनरोगों का यत्न ॥

वैद्य स्त्री के स्तन पर सूजन देखे तो विद्रधि का सा पीछे लिखा यत्न करे तो स्त्री के स्तन के रोग जायँ १ अथवा स्तन के ऊपर गांठ कच्चीही हो तो गांठ को दूर करनेवाली शीतल औषध

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

लगावे तो स्तन के रोग जायँ २ अथवा जोंक लगाय स्तन का रुधिर कढ़ावे तो स्तन के सब रोग जायँ ३ ॥

अथ स्तन की पीड़ा का यत्न ॥

गरडुंबा (इन्द्रायण) की जड़ को पानी में पीस लेप करे तो स्तन की पीड़ा जाय ४ अथवा हल्दी, धतूरे की जड़ इन्हें जल से महीन पीस लेप करे तो स्तन की पीड़ा दूर हो ५ अथवा बांझककोड़ी की जड़ महीन पीस जल से लेप करे तो स्तन की पीड़ा जाय ६ अथवा लोहे को गर्मकर पानी में बुझाय वह पानी स्त्री पीवे तो स्तनरोग जाय। ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं ७ ॥

अथ रांड़ स्त्री के गर्भनिवारण और गर्भपातन का यत्न ॥

ऋतु के समय चाथे दिन तालीस और गेरू २ टंक महीन पीस शीतल जल से पीवे तो स्त्री बन्ध्या हो १ ऋतु के समय चौथे दिन पलाशपापड़े को शहद, घृत से महीन पीस भग में लेप करे तो वह स्त्री गर्भ को कभी धारण न करे २ अथवा गाजर के बीज, कलौंजी इन्हें गुड़ के साथ खाय तो स्त्री का गर्भ गिर पड़े ३ अथवा चौलाई की जड़ को चावलों के पानी के साथ स्त्री ऋतु के समय ५ दिन पीवे तो वह स्त्री बन्ध्या हो ४ अथवा ऋतु के समय नींब की जड़ की युक्ति से योनि में धूनी दे तो स्त्री बन्ध्या हो ५ अथवा मेथीदाना ½ सेर गुड़ ½ सेर इन्हें पानी से औटाय यह जल ५ दिन पीवे और गरडुंबा की जड़ और राल इनकी बत्तीकर योनि में धरे तो रांड़ स्त्री का गर्भपात हो ६ अथवा कड़ुवीतूंबी और सांप की केंचुली, सरसों इन्हें कड़ुवे तेल में पीस भग में धूनी दे तो स्त्री के गर्भ का पात हो ७–इति स्त्री के सर्वरोगों की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न सम्पूर्ण ॥

इति विंशतिस्तरङ्गः ॥ २० ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ बालकों के रोगों की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न ॥

इन सूर्यादि ग्रहों से भिन्न बालकों के नवग्रह जुदे ही हैं वे नवग्रह अपवित्र बालकों को पीड़ा करते हैं इससे उन नवग्रहों से बालक की रक्षा करनी चाहिये ॥

अथ बालक के नवग्रहों के नाम ॥

स्कन्दग्रह १ स्कन्दापस्मार २ शकुनी ३ रेवती ४ पूतना ५ गन्धपूतना ६ शीतपूतना ७ मुखमण्डिका ८ नैगमेय ९ ॥

अथ नवग्रहों की उत्पत्ति ॥

ये नवग्रह स्वामिकार्त्तिक की रक्षा के लिये महादेवजी ने उत्पन्न किये हैं। इन नवग्रहों में किसी का स्वरूप महासुन्दर स्त्री का सा और किसी का सुन्दर पुरुष का सा स्वरूप है। स्वामिकार्त्तिकजी का विशाख नाम सखा अग्नि के समान शरीर की कान्तिवाला अग्नि से उत्पन्न है और अन्य शिव, पार्वती, कृत्तिका आदि से उत्पन्न हुए हैं। ये सब स्वामिकार्त्तिकजी के साथ रहते हैं। एक समय उन सबोंने मिल स्वामिकार्त्तिकजी से विनय की कि महाराज! हम भूखे हैं खाने के वास्ते कोई आजीविका बतलाइये। तब स्वामिकार्त्तिकजी ने श्रीमहादेवजी से कहा। श्रीमहादेवजी ने आज्ञा दी कि जगत् में पशुपक्षी आदि तिर्यग्योनि, मनुष्य और देवता रहते हैं। ये तीनों परस्पर उपकारी होते हैं। परन्तु देवता गर्मी, वर्षा, शीत और पवन आदि को यथाकाल प्रेरित कर सबको सुख पहुँचाते हैं और मनुष्य नमस्कार, जप होमादिक से अच्छे प्रकार देवताओं को प्रसन्न करते हैं। इससे जो मनुष्य देवता, ब्राह्मण आदि का पूजन नहीं करते हैं उनके बालकों को पीड़ित करो और उन्हें खाओ ॥

अथ बालग्रह से पीड़ित का लक्षण ॥

जिन बालकों को ये बालग्रह लगते हैं वे बालक एक क्षण में उद्वेग को प्राप्त हों और क्षण ही में डरने लग जायँ तथा एक

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

क्षण में अपनी धाय को नखों और दांतों से काटने लगजायँ, आकाश की ओर देखा करें, अपने दांतोंको चाबा करें, कराहा करें, जँभाई लिया करें, भौंह चढ़ाया करें, ओठ काटा करें, मुख में झाग आवें, वमन करें, अतीसारयुक्त भी हों और उनका शरीर क्षीण पड़ जाय, रात्रि में जागें, शरीर में सूजन आ जाय, कण्ठ का स्वर घों घों होजाय और उनके शरीर में मछली की सी दुर्गन्ध हो, शरीर दुर्बल हो, गुदा में रुधिर जाय और शरीर की संज्ञा जाती रहे ये लक्षण जिन बालकों में हों उनके बालग्रह लगा जानिये। ये बालग्रह के सामान्य लक्षण हैं॥

अथ बालग्रहों के विशेष लक्षण॥

जिसके अङ्ग शिथिल होजायँ, शरीर में रुधिर की दुर्गन्ध आवे, स्तनों का दूध न पीवे, मुँह टेढ़ा हो जाय, आधा अङ्ग रह जाय, नेत्रों में आंसू रहें तथा रोवे और ठोढ़ी, हाथ की मूठी बँधी रहे ये लक्षण जिसके हों तब जानिये कि इसे स्कन्दग्रह लगा है १॥

अथ विशाखग्रह का लक्षण॥

जिसकी संज्ञा जाती रहे और फिर संज्ञा आ जाय और कभी हाथ, पगों को नवाने लग जाय और बिन संज्ञा मल-मूत्र कर दे, जँभाई बहुत आवें, मुख में झाग आवें तब जानिये कि इसको विशाखग्रह लगा है २॥

अथ शकुनीग्रह का लक्षण॥

अङ्ग शिथिल रहे, भय से चकित रहा करे, शरीर में मछली की सी दुर्गन्ध आवे, शरीर में व्रण बहुत पड़ जायँ और दाह हो ये लक्षण हों तब जानिये कि इसके शकुनीग्रह लगा है ३॥

अथ रेवती का लक्षण॥

जिसका मुँह लाल और हरा हो, पीली देह हो, पीड़ा को

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

लिये हाथ, पैर काले हों ऐसा बालक हो जाय तो जानिये कि इसके रेवतीग्रह का दोष है ४॥

अथ पूतनाग्रह का लक्षण॥

जिसका शरीर शिथिल हो, रात-दिन सोवे नहीं, मल पतला पड़जाय, शरीर में कागलेकीसी दुर्गन्ध आवे, छर्दि हो और तृषा बहुत लगे तो जानिये कि इसके पूतनाग्रह लगा है ५॥

अथ गन्धपूतनाग्रह का लक्षण॥

जो बालक स्तन का दूध न पीवे, अतीसार हो और खांसी, हिचकी, छर्दि, ज्वर हो और शरीर का वर्ण जाता रहे और शरीर में रुधिर की सी दुर्गन्ध आवे तब जानिये कि इसको गन्धपूतना का दोष है ६॥

अथ शीतपूतना के दोष का लक्षण॥

जो बालक रोयाही करे, कांपा करे और जिसकी आंत बोलें, शरीर शिथिल होजाय और अतीसार बहुत हो ये लक्षण हों तो शीतपूतना का दोष जानिये ७॥

अथ नैगमेयग्रह के दोष का लक्षण॥

जिसके मुख में बहुत झाग आवें, बहुत कांपे, ऊंचाही देखे, बहुत पुकारे और शरीर में दुर्गन्ध आवे और संज्ञा जाती रहे तब जानिये कि इसके नैगमेयग्रह का दोष है ८ और यही लक्षण डाकिनी के दोष का जानिये ९॥

अथ सामान्यग्रह के दोषों का यत्न॥

गोरखमुण्डी, खस इनका काढ़ा कर इस काढ़े से बालक को स्नान करावे १ अथवा हल्दी, चन्दन, कूट इन्हें पीस शरीर में लेप करे तो बालक के सामान्यग्रह के दोष दूर हों २ अथवा सांपकी केंचुली, लहसुन, सरसों, नींब के पत्ते, बिलाई की बीट, बकरे के बाल, मेढ़े के सींग, घुड़बच, शहद ये सब पीस इनकी बालक के धूनी दे तो बालक के ग्रहों के सब दोष जायँ ३ अथवा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

उतारा आदि सब यत्न करे तो बालकग्रहों के दोष जायँ ४॥

अथ स्कन्दग्रह आदि बालकग्रहों के विशेष यत्न॥

वायु के दूर करनेवाले वृक्षों के पत्तों का काढ़ा कर उस बालक को स्नान करावे तो बालकग्रहों के दोष दूर हों ५ अथवा सरसों, सांप की केंचुली, बच, कागलहरी इन्हें कूट इसमें ऊंट के और बकरे के बाल मिलावे और घृत मिलाय इसकी बालक के धूनी दे तो बालकग्रहों के दोष दूर हों ६॥

अथ स्कन्दापस्मार के दोष का यत्न॥

बेल की जड़, सिरस की जड़, सफ़ेद दूब, सफ़ेद सरसों, पाढ़, सफ़ेद राई, बावची, कायफल, कसूंभी, बायबिड़ंग, सम्हालू, गूलर, खरैटी, चिरपोटण (मकोय), बकायन, कालीतुलसी, भारंगी इनके काढ़ा के पानी से बालक को स्नान करावे तो स्कन्दापस्मार आदि बालकग्रहदोष जायँ ७ अथवा गौ, बकरी, भेड़, भैंस, घोड़ा, गधा, ऊंट इन सबके मूतों में तेल को पकावे जब मूत्र जल जायँ और तेलमात्र आय रहे तब इस तेल को बालक के मर्दन करे तो स्कन्दापस्मार, बालकग्रह का दोष जाय ८ अथवा गोमूत्र, बकरी का मूत्र, मस्तककेश, हाथी का नख, बैल के रोम इनमें घृत मिलाय इसकी धूनी दे तो बालक के स्कन्दापस्मार का दोष जाय ९ अथवा जवासा, मैनसिल, कस्तूरी, कोंच की जड़ इनकी बालक के धूनी दे वा बालक के बांधे तो बालक का स्कन्दापस्मार ग्रहों का दोष जाय १० अथवा बालक को चौहटे में स्नान करावे तो स्कन्दापस्मार (विशाख) का दोष जाय ११॥

अथ शकुनीग्रह के दोष का यत्न॥

बेत की लकड़ी, आम की जड़, कैथा की जड़ इनके काढ़े के पानी से बालक को स्नान करावे तो शकुनीग्रह का दोष जाय १ अथवा झाऊ की जड़, महुआ, खस, गौरीसर, कमल की जड़,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पद्माक, पठानीलोध, फूलाप्रियंगु, मंजीठ, गेरू इन्हें जलसे महीन पीस इसका उबटना करे तो शकुनी ग्रह का दोष जाय २ अथवा स्कन्दापस्मार ग्रहका यत्न जो पीछे कहा है वह शकुनी ग्रहके दोष को दूर करता है ३ अथवा शतावरि वा इन्द्रायण की जड़ तथा नागदोन वा कटेली अथवा सहदेई इनका पूजन कर बालक के गलेमें बांधे तो शकुनी ग्रह के दोष दूर हों ४ अथवा तिल, चावल, फूलों की माला, हरताल, मैनसिल इनकी विधिपूर्वक शकुनी ग्रहको बलि दे और बालक को औषध के जल से स्नान करावे तो शकुनी ग्रह का दोष दूर हो ५ ॥

अथ रेवतीग्रह का यत्न ॥

असगन्ध, मेढ़ासिंगी, गौरीसर, साठी की जड़, सेवती के फूल, बिदारीकन्द इनका काढ़ा कर इसके पानी से बालक को स्नान करावे तो बालक के रेवतीग्रह का दोष जाय ६ अथवा बालक की देहमें तेल का मर्दन करे अथवा कूट, राल, गुग्गुल, खस, हल्दी इनकी बालकके धूनी दे तो रेवतीग्रह का दोषदूरहो ७ अथवा सुगन्धित सफ़ेद फूल, चावल की खील, दूध, शालि, दही इन्हें बालक के ऊपर डाल स्नान करावे और इन्हीं की गोशाला में बलि दे तो बालक के रेवतीग्रह का दोष दूर हो ८ ॥

अथ पूतनाग्रह का यत्न ॥

नींब की छाल, विष्णुक्रान्ता, वन की छाल इनका काढ़ाकर बालक को स्नान करावे तो पूतनाग्रह का दोष दूर हो ९ अथवा नवीन बिदारीकन्द, सफ़ेद दाख, हरताल, मैनसिल, कूट, राल इनका काढ़ा कर इनके रसमें तेल अथवा घृत पकावे पीछे इस तेल अथवा घृत का बालक के मर्दन करे तो पूतना का दोष दूर हो १० ॥

अथ गन्धपूतनाग्रह का यत्न ॥

नींबके पत्ते, पटोल के पत्ते, कटेली के पत्ते, गिलोय के पत्ते,

In Public Domain, Chanbal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अडूसे के पत्ते इनका काढ़ा कर इस पानी से बालक को स्नान करावे तो गन्धपूतना का दोष जाय ११ अथवा पीपल, पीपलामूल, दोनों कटेली इनका काढ़ा कर इसमें गौ का घृत पकावे फिर इस घृत का मर्दन करे तो बालक के गन्धपूतना का दोष दूर हो १२ अथवा केसर, अगर, कपूर, कस्तूरी, चन्दन इन्हें महीन पीस बालक की आंखों के ऊपर लेप करे तो गन्धपूतना का दोष दूर हो १३ अथवा कूकर की बीट, बालक के केश, वन की छाल, घृत इन्हें बालक के ऊपर उतार चौराहे में रक्खे तो गन्धपूतना का दोष दूर हो १४ ॥

अथ शीतपूतनाग्रह का यत्न ॥

गोमूत्र, बकरी का मूत्र, नागरमोथा, देवदारु, चन्दन आदि सब सुगन्ध ले इनमें तेल पकावे फिर इस तेल का बालक के मर्दन करे तो शीतपूतना के ग्रहका दोष दूर हो १५ अथवा कुटकी, नींब की छाल, खैरसार, ढाक की छाल, काहू की छाल इनके काढ़े में घृत पकावे फिर यह घृत बालक को खवावे अथवा लेप करे तो शीतपूतना का दोष दूर हो १६ अथवा नींब के पत्तों की बालक के धूनी दे अथवा बालकको गुंजाकी माला पहिरावे तो शीतपूतना का दोष दूर हो १७ अथवा नदी के तटके ऊपर मूंग, चावल शीतपूतना को समर्पण करे तो शीतपूतना का दोष दूर हो १८ ॥

अथ मुखमण्डिका ग्रह का यत्न ॥

कैथा, बेल, अरणी, अडूसा, सफ़ेदअरण्ड, कूट इनके काढ़े के जलसे बालकको स्नान करावे तो मुखमण्डिका का दोष जाय १९ अथवा भांगरे के तेल या रस में तेल पकावे फिर इस तेल का बालक के मर्दन करे तो मुखमण्डिका का दोष जाय २० अथवा राल, कूट इनका काढ़ा कर इनके रसमें घृत पकाय बालक के मर्दन करे तो मुखमण्डिका का दोष दूर हो २१ अथवा गौ के

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

स्थान में बलि करे और वहां इस मन्त्र से स्नान करावे तो मुख-मण्डिका का दोष दूर हो २२ ॥

अथ स्नान कराने का मन्त्र ॥

अलंकृता कामवती सुभगा कालरूपिणी ॥ गोष्ठमध्या लय-रता पातु त्वां मुखमण्डिका २३ ॥

अथ नैगमेयग्रह का यत्न ॥

बेल की जड़का बक्कल, अरणी की जड़, कंजाकी जड़ इनके काढ़े के पानी से बालक को स्नान करावे तो नैगमेयग्रह का दोष जाय २४ अथवा फूलप्रियंगु, जवासा, सौंफ, चित्रक, वृक्ष का बक्कल, गुड़हल इनका काढ़ाकर इस काढ़े के रसमें तेल पकावे फिर इस तेलके पकतेही में गोमूत्र, दही और कांजी डाले और पकावे जब ये सब जलजायँ तेलमात्र आय रहे तब इस तेलको बालक के मर्दन करे तो नैगमेयग्रह का दोष जाय २५ अथवा तिल, चावल, फूलों की माला, लड्डू आदि मिठाई बालक के ऊपर ७ बार उतार वृक्षके पास धरे तो नैगमेयग्रहका दोष दूर हो २६ ॥

अथ उतारे का मन्त्र ॥

अजाननश्चलाक्षिभ्रूः कामरूपी महायशाः। बालम्पालय भो देव नैगमेयोसि रक्षतु। ये सब यत्न भावप्रकाशमें लिखे हैं २७॥

अथ रावणकृतबालतन्त्र ॥

बालक के जन्म हुए के पीछे पहले दिन, प्रथममास और प्रथम वर्षमें मन्दानाम मातृका आदि रावण की बारह बहिन हैं वे बालक को पीड़ित करती हैं। उनके ये लक्षण हैं—बालक के ज्वर हो, बहुत रोवे अथवा बोले नहीं उसके अच्छे होनेके वास्ते बलि कहते हैं।नदी के दोनों तटों की मिट्टी ले उसका कोरी सैनकमें पुतला करे और उसके पास चावल और सात सफ़ेदफूल, ध्वजा, सात दिये, सात गुलगुले, सात पान, गन्ध, धूप, मांस, दारू

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

ये सब बालकके ऊपर उतार पूर्वदिशा की ओर चौराहे में मध्याह्न के समय बलि दे और पीपल के पत्ते मस्तक पर धर बालक को स्नान करावे तो मन्दानाम मातृका का दोष दूर हो २८इसीप्रकार चार दिन करे और बालक के सरसों, मेढ़े के सींग, नींब के पत्ते और शिवनिर्माल्य इनकी धूनी दे तो बालक अच्छा हो २९ ॥

अथ उतारे का मन्त्र ॥

ॐ नमो भगवते रावणाय हन हन मुञ्च मुञ्च स्वाहा ३० ॥

अथ बालक के जन्म से दूसरे दिन, दूसरे महीने, दूसरे वर्ष शुभदानाम रावण की बहिन बालकों के दोष करती है उसका लक्षण ॥

प्रथम ज्वर हो, नेत्र मिचैं नहीं, शरीर कांपा करे, बोले नहीं, उसके अच्छे होनेके वास्ते यह बलि (उतारा) देवे–सवासेर चावल, दही, मछली का मांस, मदिरा, तिल का चूर्ण ये सब सरवे में धर पश्चिमदिशा की ओर चौराहे में तीन दिन सन्ध्या समय बालक के ऊपर उतारा करे पीछे शालिके जलसे बालक को स्नान करावे फिर शिवनिर्माल्य, खस, बिलाई के रोम, घृत, दूब इनकी बालक के धूनी दे ॥

अथ उतारे का मन्त्र ॥

ॐ रावणाय हन हन मुञ्च मुञ्च हुं फट्स्वाहा॥ चौथे दिन ब्राह्मण-भोजन यथाशक्ति करावे तो शुभदा नाम मातृकादोष जाय ३१ ॥

अथ तीसरे दिन, तीसरे मास, तीसरे वर्ष पूतना नाम रावणकी बहिन बालक के दोष करती है उसका लक्षण ॥

प्रथम बालक के ज्वर करे, शरीर कांपे, बोले नहीं, पुकारा करे, आकाश की ओर देखा करे, उस बालक के सुखके वास्ते यह उतारा देवे–नदीके वारपारकी मिट्टी ले उसका पुतला बनावे पुतले को सरवेमें धरे उसके मध्य ताम्बूल, रक्तचन्दन, रक्तपुष्प, सात दिये, सात डब्बी, मांस, सुरा, भात धर दक्षिण दिशा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

में तीसरे प्रहर चौराहे में बलि दे पीछे शिवनिर्माल्य, गुग्गुल, सरसों, नींब के पत्ते, मेढ़े के सींग इनकी धूनी ३ दिन दे ॥

अथ उतारे का मन्त्र ॥

ॐनमो रावणाय नमःहन हन मुञ्च मुञ्च त्रासयत्रासय स्वाहा॥ चौथे दिन ब्राह्मणभोजन करावे तो बालक आराम हो ३२ ॥

अथ चौथे दिन, चौथे मास, चौथे वर्ष मुखमण्डिकानाम रावण की बहिन के दोष करने का लक्षण ॥

प्रथम ज्वर हो, कन्धा नवे नहीं, नेत्र फटे रहें, बालक बोले नहीं, रोया करे, सोवे बहुत, हाथकी मुट्ठी बांधेरहे उसके सुखके वास्ते यह उतारा देवे—नदी के दोनों तटों की मिट्टी ले पुतला बनावे उसके आगे कमल के फूल धरे और गन्ध, ताम्बूल, सफ़ेदफूल, चार दिये, तेरह पुये, मछली का मांस, सुरा, छाछ ये सब सरवे में धरे पीछे उत्तर दिशा में तीसरे पहर चौराहे में धरे तो बालक को सुख हो ॥

अथ उतारे का मन्त्र ॥

ॐ नमो रावणाय हन हन मथ मथ स्वाहा ॥ चौथे दिन ब्राह्मणभोजन करावे तो बालक अच्छा हो ३३ ॥

अथ पांचवें दिन, पांचवें महीने, पांचवें वर्ष पूतना नाम मातृका रावण की बहिन के दोष का लक्षण ॥

प्रथम ज्वर हो, शरीर कांपे, बोले नहीं और हाथ की मुट्ठी खोले नहीं ॥

अथ उसके अच्छे होने का उतारा ॥

कुम्हार के चाक की मिट्टी ले उसका पुतला बनावे उसके आगे गन्ध, ताम्बूल, चावल, सफ़ेदफूल, पांच ध्वजा, पांच दिया, बड़े ले ईशानदिशा में उतारा धरे पीछे शान्तिके जल से स्नान करावे फिर शिवनिर्माल्य, सांप की केंचुली, घृत, नींब के पत्ते इनकी धूनी दे तो बालक अच्छा हो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ उतारे का मन्त्र ॥

ॐ नमो रावणाय नमः चूर्णय चूर्णय स्वाहा ॥ चौथे दिन ब्राह्मणभोजन करावे तो बालक अच्छा हो ३४ ॥

अथ छठे दिन, छठे महीने, छठे वर्ष, शकुनीनाम मातृका रावणकी बहिन के दोष का लक्षण ॥

प्रथम ज्वर हो, शरीर कांपे, रात्रि दिन चैन नहीं पड़े, ऊंचा देखे उसके सुख के वास्ते उतारा—गेहूं के चून का पुतला करे सफ़ेदफूल, लालफूल, पीलेफूल, मदिरा, मांस, १० दिये, १० ध्वजा, दूध, जामुन इनका उतारा अग्निकोण में मध्याह्न समय धरे पीछे शीतलजल से स्नान करावे और शिवनिर्माल्य, लहसुन, गुग्गुल, सरसों, सांपकी केंचुली, नींबके पत्ते, घृत इनकी धूनी दे ॥

अथ उतारे का मन्त्र ॥

ॐ नमो रावणाय चूर्णय चूर्णय हन हन स्वाहा ॥ तीसरे दिन ब्राह्मण को भोजन करावे तो बालक अच्छा हो ३५ ॥

अथ सातवें दिन, सातवें महीने, सातवें वर्ष शुष्करेवती नाम मातृका रावण की बहिन के दोष का लक्षण ॥

प्रथम ज्वर हो, गात कांपे, मुट्ठी बँधीरहे, रोवे बहुत उसके सुखके वास्ते उतारा—नदी के तटकी मिट्टी का पुतला करे उसके आगे लाल फूल, ताम्बूल, लाल चावलकी खिचड़ी, १० दिये, मांस, दारू, १३ ध्वजा ले पश्चिमदिशा में गांव के बाहर तीसरे प्रहर उतारा धरे पीछे स्नान करावे और शिवनिर्माल्य, मेढ़े के सींग, सरसों, खस, घृत इनकी धूनी दे ॥

अथ उतारे का मन्त्र ॥

ॐ नमो रावणाय तत्तेजसे हन हन मुञ्च मुञ्च स्वाहा ॥ चौथे दिन ब्राह्मणभोजन करावे तो बालक अच्छा हो ३६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ आठवें दिन, आठवें महीने, आठवें वर्ष अर्यमा नाम मातृका रावण की बहिन के दोष का लक्षण ॥

प्रथम ज्वर हो, शरीर में दुर्गन्ध आवे, आहार ले नहीं, शरीर कांपे उसके सुख के वास्ते उतारा—लालफूल, पीली ध्वजा, रक्तचन्दन, खीर, मांस, सुरा इनकी बलि प्रभात समय दे ॥

अथ उतारे का मन्त्र ॥

ॐ नमो रावणाय त्रैलोक्यविद्रावणाय चतुर्दशमोक्षणाय ज्वर हन हन ॐ फट् स्वाहा ३७ ॥

अथ नवें दिन, नवें महीने, नवें वर्ष सूतिकानाम मातृका रावण की बहिन के दोष का लक्षण ॥

ज्वर हो, शरीर में पीड़ा हो, छर्दि हो उसके सुखके लिये उतारा—नदीके दोनों तटोंकी मिट्टीका पुतला कर सफ़ेद वस्त्र पहिरावे और सफ़ेद फूल, गन्ध, ताम्बूल, १३ दिये, १३ ध्वजा ले उत्तर दिशामें गांवके बाहर उतारा करे पीछे शान्तिके जलसे स्नान करावे और गुग्गुल, नींब के पत्ते, गाय का सींग, सरसों, घृत इनकी धूनी दे ॥

अथ उतारे का मंत्र ॥

ॐ नमो रावणाय हन हन स्वाहा ॥ चौथे दिन ब्राह्मण भोजन करावे तो बालक अच्छा हो ३८ ॥

अथ दशवें दिन, दशवें मास, दशवें वर्ष क्रियानाम मातृका रावण की बहिन के दोष का लक्षण ॥

ज्वर हो, शरीर कांपे, रोवे, मल-मूत्र करदे उसके सुखके लिये उतारा—नदी के दोनों तटों की मिट्टी का पुतला करे पीछे गन्ध, ताम्बूल, रक्तपुष्प, रक्तचन्दन, ५ ध्वजा, ५ दिये, पुवा, मांस, सुरा ले वायव्यकोण में बलि दे पीछे काकविष्ठा, गौका सींग, बिलाई के रोम, नींब के पत्ते, घृत इनकी धूनी दे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ उतारे का मंत्र ॥

ॐ नमो रावणाय चूर्णितहस्ताय मुञ्च मुञ्च स्वाहा ॥ चौथे दिन ब्राह्मणभोजन करावे तो बालक अच्छा हो ३९ ॥

अथ ग्यारहवें दिन, ग्यारहवें मास, ग्यारहवें वर्ष पिपीलिकानाम मातृका रावण की बहिन के दोष का लक्षण ॥

ज्वर हो, आहार ले नहीं उसके सुख के लिये बलि—गेहूँ के आटे का पुतला कर उस पुतले के मुख में दूध की धारदे, पीछे रक्तचन्दन, पीलेफूल, गन्ध, ताम्बूल, ७ दिये, ८ बड़े, मालपुवा, मांस, सुरा ले पूर्वदिशा में उतारा धरे पीछे शान्तिके जल से स्नान करावे और शिवनिर्माल्य, गुग्गुल, गौका सींग, सांप की केंचुली, घृत इनकी धूनी दे ॥

अथ उतारे का मन्त्र ॥

ॐ नमो रावणाय मुञ्च मुञ्च हन हन स्वाहा ॥ चौथे दिन ब्राह्मणों को भोजन करावे तो बालक अच्छा हो ४० ॥

अथ बारहवें दिन, बारहवें मास, बारहवें वर्ष कामुका नाम मातृका रावण की बहिन के दोष का लक्षण ॥

ज्वर हो, हँसे, हाथ से दूर करे, पुकारे बहुत, श्वास बहुत ले उसके सुख के लिये उतारा—मावे का पुतला करे पीछे गन्ध, ताम्बूल, सफ़ेदपुष्प, ध्वजा, ७ मालपुवा इनकी बलि दे फिर शान्ति के जल से स्नान करावे और शिवनिर्माल्य, गुग्गुल, सरसों, घृत इनकी धूनी दे ॥

अथ उतारे का मन्त्र ॥

ॐ नमो रावणाय मुञ्च मुञ्च हन हन स्वाहा ॥ चौथे दिन ब्राह्मणों को भोजन करावे तो बालक अच्छा हो। यह रावण का बनाया कुमारतन्त्र चक्रदत्त में लिखा है ४१ ॥

अथ वायु के रोगों की उत्पत्ति और लक्षण ॥

धायके भारी गरिष्ठ भोजन करने से और उसके वायु, पित्त

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

के रोगों से बालक के शरीर में दोष कोपको प्राप्त होते हैं तथा ऐसेही कुपथ्य के भोजन से धाय के स्तन में प्राप्त हो दूध के द्वारा बालक के वायुके रोग होते हैं तब वह बालक क्षीण हो जाय, मुख सफ़ेद होजाय, शरीर कृश होजाय और उसके मल-मूत्र कठिनता से उतरें इत्यादि वायुके और भी रोग होते हैं ऐसे ही पित्तसे दूषित दूध पीवे तो बालक के पित्तका रोग पैदा होता है उससे बालक के पसीना आवे, मल पतला जाय, शरीर पीला पड़जाय, तृषा बहुत लगे, शरीर गर्म रहे इत्यादि पित्तके रोग होते हैं और उसके लार बहुत पड़े, नींद बहुत आवे, शीत बहुत रहे, शरीर सुन्न होजाय और नेत्र, मुँह सब शरीर भारी रहे तथा ज्वर आदि जो रोग बड़े आदमी के होते हैं वेही बालक के होते हैं और तालुकण्टक आदि रोग बालक के ही होते हैं बड़े मनुष्य के नहीं होते॥

अथ तालुकण्टक का लक्षण॥

तालु के मांस में बालक के कफ कोप करे तब उसके तालु में कांटे पड़जायँ, तालु बैठजाय और तालुके बैठने से दूध न पीवे, मल पतला जाय, तृषा बहुत हो, आंख दूखें, कंठ और मुँह में पीड़ा हो, मस्तक उठे नहीं और वमन करे १॥

अथ महापद्मरोग का लक्षण॥

बालक के मस्तक में और गुदा में रोग पैदा हों और वायु पैदा हो तथा पद्म के वर्णसमान जिसका वर्ण हो ये तीनों दोषों के कोपसे होते हैं। प्रथम वह रोग कनपटियोंसे हृदय में आवे पीछे हृदय से गुदा में आवे ऐसेही पेडूसे गुदा में जाय और गुदासे फिर हृदय में जाय तथा हृदय से शिर में आवे २॥

अथ कुकूणकरोग का लक्षण॥

दुष्ट दूधके पीनेसे बालकके कुकूणक रोग होता है उसमें नेत्र दूखें, नेत्रों में खाज हो, आंसू बारम्बार बहुत पड़ें और वह

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS

बालक ललाट, नेत्र, नाक इन्हें घिसा करे, धूप की ओर देखे नहीं और आंख खुलें नहीं इसे कुकूणकरोग कहिये ३॥

अथ तुण्डिगुदापाकरोग का लक्षण॥

बालक की गुदा पकजाय और उसकी नाभि में पीड़ा हो उसे तुण्डिगुदापाकरोग कहिये ४॥

अथ अहिपूतनारोग का लक्षण॥

बालक की गुदा मल-मूत्र से लिपी रहा करे अथवा धोवे अथवा कपड़े से पोंछे, वायु लगे तब खाज हो और गुदा लाल रहे और वह बालक गुदा को खुजावे तब उसके फोड़े हों, उस की गुदा से पानीसा झरा करे और उसकी गुदा में भयंकर व्रण होजायँ उसको अहिपूतनारोग कहिये ५॥

अथ अजगल्लीरोग का लक्षण॥

जिसके शरीर में चिकनी, लाल वर्णकी मूंगप्रमाण बहुतसी फुंसियां होजायँ और उनमें पीड़ा नहीं हो वे कफ और वायु से उपजती हैं उनको अजगल्लिका कहिये ६॥

अथ पारिगर्भिकरोग का लक्षण॥

जो बालक गर्भिणी स्त्री का दूध पीवे तो उसके खांसी आवे, अग्नि मन्द होजाय, शरीर में दाह और तन्द्रा हो, क्षीण पड़जाय, अरुचि हो, घुमेर आवे और उसका पेट बढ़जाय उसे पारिगर्भिकरोग कहिये ७॥

अथ बालक के दांतों का रोग॥

बालकोंके दांत आने के समय ज्वर हो, पेट छूटजाय, खांसी आवे, छर्दि हो, मस्तक और आंख दूखें तथा रतुवा हो ये लक्षण दांतों के रोगों के जानिये ८॥

अथ बालकों के रोगों के यत्न॥

जो बड़े आदमियों के रोग होते हैं वेही बालकों के हों तो जो यत्न बड़े आदमियों का करे वही बालकों का करना। बालक

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

को एक वर्ष तक एक रत्ती और दूसरे वर्ष से १ माशे औषध देना यह मर्यादा है। बालक जहां हाथ लगाकर रोवे वहां रोग जानिये और उसका यत्न करिये॥

अथ बालक के ज्वर का विशेष यत्न॥

नागरमोथा, हड़की छाल, नींब की छाल, पटोल इनका काढ़ा कर उसमें शहद डाल बालक को पिलावे तो बालक का सब प्रकार का ज्वर जाय ९–इति सर्वज्वरके ऊपर भद्रमुस्तादि क्वाथ॥

अथ बालक के ज्वरातीसार का यत्न॥

नागरमोथा, पीपल, अतीस, काकड़ासिंगी इनका चूर्ण कर शहद से बालक को चटाये तो बालक का ज्वरातीसार जाय और खांसी, वमन को दूर करे १०–इति चातुर्भद्रादि॥

अथ बालक के अतीसार का यत्न॥

बेल की गिरी, धवई के फूल, नेत्रबाला, लोध, गजपीपल इनके काढ़े में शहद डाल दे तो बालकका अतीसार जाय ११॥

अथ बालक के भयङ्कर अतीसार का और यत्न॥

मंजीठ, धवई के फूल, लोध, गौरीसर इनका काढ़ा शहद डाल दे तो बालक का भयङ्कर भी अतीसार जाय १२–इति समङ्गादिक्वाथ॥

अथ बालक के आमातीसार का यत्न॥

बायबिड़ंग, अजमोद, पीपल इन्हें महीन पीस चावल के पानी से दे तो आमातीसार जाय १३–इति बिड़ंगादिक्वाथ॥

अथ बालक के रक्तातीसार का यत्न॥

मोचरस, मंजीठ, धवई के फूल, कमल के फूल इन्हें महीन पीस साठी चावल के माड़ में दे तो रक्तातीसार जाय १४॥

अथ बालक के सब प्रकार के अतीसार का यत्न॥

सोंठि, अतीस, नागरमोथा, नेत्रबाला, इन्द्रयव इनका क्वाथ दे तो बालक का सबप्रकार का अतीसार जाय १५॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ बालक के मोड़ानिवाही का यत्न ॥

चावल की खील, मुलहठी, महुआ इन्हें महीन पीस मिश्री और शहद में चटावे तो बालक की मोड़ानिवाही जाय १६ ॥

अथ बालकों की संग्रहणी का यत्न ॥

हल्दी, चव्य, देवदारु, कटेली, गजपीपल, पृष्ठिपर्णी, सौंफ़ इन्हें महीन पीस शहद, घृत के साथ चटावे तो संग्रहणी और पाण्डुरोग के ज्वरातीसार को दूर करे और भूंख लगावे १७–इति रजन्यादि चूर्ण ॥

अथ बालक की खांसी का यत्न ॥

नागरमोथा, अतीस, अड़ूसा, पीपल, काकड़ासिंगी इन्हें महीन पीस शहद के साथ चटावे तो बालक की पांचप्रकार की खांसी और श्वास जाय १८–इति मुस्तादि ॥

अथ खांसी का और यत्न ॥

कटेली के फूलों की केसर को शहद से चटावे तो बालक की खांसी जाय १९ ॥

अथ खांसी और श्वास का यत्न ॥

मुनक्का, दाख, अड़ूसा, हड़ की छाल, पीपल इन्हें महीन पीस शहद और घृत के साथ चटावे तो बालक की हिचकी और छर्दि जाय २० ॥

अथ बालक की छर्दि का यत्न ॥

आम की गुठली, चावल की खील, सेंधानोन इन्हें महीन पीस शहद से चटावे तो बालक की छर्दि जाय २१ ॥

अथ बालक के दूध गिराने का यत्न ॥

कटेली के डोंडे का रस, पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठि इन्हें महीन पीस शहद और घृत से चटावे तो बालक की छर्दि जाय २२ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ बालक के पेट में अफरा हो और शूल चले उसका यत्न ॥

सेंधानोन, सोंठि, इलायची, सेंकीहींग, भारंगी इन्हें महीन पीस गर्म पानी से ले तो बालक का अफरा और शूल जाय २३ ॥

अथ बालक का मूत्र बन्द होगया हो उसका यत्न ॥

पीपल, मिरच, छोटी इलायची, सेंधानोन इन्हें महीन पीस मिश्री और शहद से चटावे तो मूत्र अच्छी तरह से उतरे २४ ॥

अथ बालक के लार बहुत पड़े उसका यत्न ॥

गौरीसर, तिल, लोध इनका काढ़ा कर शहद डाल बालक को पिलावे तो बालक की लार पड़ती बन्द हो २५ ॥

अथ बालक के मुँह में छाले पड़े हों उसका यत्न ॥

पीपल के बक्कल और पत्तों को महीन पीस शहद में मिलाय चटावे तो बालक के मुखके छाले अच्छे हों २६ ॥

अथ बालक की नाभि में सूजन हो उसका यत्न ॥

पीली मिट्टी को अग्नि से लाल कर दूध में मिलाकर लगावे तो सूजन अच्छी होती है २७ ॥

अथ बालक की नाभि पक गई हो उसका यत्न ॥

हल्दी, लोध, फूलप्रियंगु इन्हें शहद से महीन पीस नाभि में लेप करे तो नाभि का पकना अच्छा हो २८ ॥

अथ बालक की गुदा पकगई हो उसका यत्न ॥

रसौंतको पानीमें महीन पीस बालककी गुदा में लेप करे तो गुदा पकती बन्द हो २९ अथवा शंख, मुलहठी, रसौंत इन तीनों को महीन पीस लगावे तो बालककी गुदा पकती बन्द हो ३० ॥

अथ बालक के दांत दोहरे आवें उसका यत्न ॥

धवई के फूल, पीपल इन्हें आंवले के रसमें बालक के मुँह में लगावे तो दांत अच्छीतरह आवें ३१ और लाक्षादितेल से बालक के ज्वरादिक सब रोग जायँ ॥

इत्येकविंशतिस्तरङ्गः २१ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ वाजीकरण ॥

जो औषध पुरुष को घोड़े के समान मैथुन करने में बलवान् करे उसको वैद्य वाजीकरण कहते हैं ॥

अथ नपुंसक के लक्षण, निदान और संख्या ॥

नपुंसक ७ प्रकार के होते हैं। स्त्री से रमण की इच्छा तो हो और सङ्ग हो नहीं इस कारण से लिङ्ग उठे नहीं उसे नपुंसक कहिये। कड़ुवी वस्तु, खटाई, गर्मवस्तु, नोन इनके बहुत खाने से नपुंसक हो अथवा शोक से तथा क्रोधादि के करने से वीर्य का नाश हो अथवा पुत्र, स्त्री, धन आदि के नाश से नपुंसक हो अथवा लिङ्ग में किसी तरह हाथकी चोट लगने से लिङ्ग की नस मारीजाय उससे और बहुत ब्रह्मचर्य के रहने से नपुंसकता होती है इत्यादि और भी कारण हैं ॥

अथ नपुंसकपने का यत्न ॥

नानाप्रकार के मधुर, मनोहर, अतिस्वादयुक्त भोजन करने से नपुंसकपना जाय १ अथवा सर्वाङ्ग महासुन्दर स्त्री के स्पर्श करने से नपुंसकपना जाय २ अथवा महासुन्दर स्त्री की मधुर, मनोहरवाणी के सुनने से नपुंसकपना जाय ३ अथवा तांबूल, सुन्दर आसव को पीना, उपवनका रहना, पुष्टईकी औषध दूध, मिश्रीके संयोग की और मृगाङ्क, चन्द्रोदय आदि सातों धातु, दधि, सिखरन, उड़द ये सब वस्तु नपुंसकपने को दूर करती हैं ४ अथवा अमरस आदि का भोजन, भीमसेनी कपूर और कस्तूरी के संयोग की पानकी बीड़ी आदि और भी वस्तुओं से नपुंसकपना जाय ५ ॥

अथ गोखुरादि चूर्ण ॥

गोखुरू, तालमखाना, असगन्ध, शतावरि, सफ़ेद मुसली, कौंचके बीज, मूलहठी, खरैटी के बीज, गंगेरन की छाल ये सब बराबर ले इन्हें महीन पीस इसमें मिश्री अनुमान मुवाफ़िक़

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by-IKS.

मिलाय औटाय दूध के साथ ५ टंक रात्रि में नित्य ले और पथ्य से रहे तो नपुंसकपना जाय ६ ॥

अथ सुपारीपाक ॥

दक्षिणी सुपारी ⅝॥ सेर ले उसे दोदिन जलमें भिगोवे पीछे उन्हें महीन कतर सुखाय ले फिर उसका चूर्ण करे और वस्त्र से छान बराबर घृत से मकरोय अठगुने दूध में उसका खैरामावा करे पीछे अठगुनी मिश्री की चाशनीकर उसमें सुपारी का मावा डाले और ये औषधें इसमें मिलावे–इलायची, खरैटी, गंगेरन की छाल, जायफल, लवङ्ग, जावित्री, पत्रज, सोंठि, शतावरि, मूसली, कौंच के बीज, विदारीकन्द, गोखुरू, दाख, सालबमिश्री, सिंघाड़ा, ज़ीरा, छड़, वंशलोचन, असगन्ध, केसर, कस्तूरी, कपूर, चन्दन, भीमसेनीकपूर, अगरु ये सब औषध २ टकेभर ले पीछे वैद्य अपनी बुद्धिमुवाफ़िक़ ले और मृगाङ्क, चन्द्रोदय, बङ्गसार, अभ्रक, सुगन्धद्रव्य मेवा अपनी बुद्धिमुवाफ़िक़ इसमें डाले पीछे १ टके प्रमाण इसका मोदक करे। १ मोदक नित्य खाय और पथ्य से रहे तो निश्चयही नपुंसकपना जाय ७–इति रतिवल्लभपुङ्गीपाक ॥

अथ आम्रपाक ॥

पक्के मीठे आम का रस १६ सेर, मिश्री ४ सेर और घृत १ सेर इन सबको ले मिट्टी के बासनमें पकाय गाढ़ाकर चाशनी समान करे और चांदी के बासन में धरे पीछे इसमें ये औषधें डाले–सोंठि ८ टके भर, मिरच ८ टके भर, पीपल २ टके भर, धनियां २ टके भर, ज़ीरा १ टके भर, चित्रक १ टके भर, पत्रज १ टके भर, दालचीनी १ टके भर, नागकेसर १ टके भर, केसर १ टके भर, इलायची १ टके भर, लवङ्ग १ टके भर, जायफल १ टके भर, क़स्तूरी ४ माशे, भीमसेनी क़पूर १ टंक भर, शहद पावभर पीछे इन सबको एकजीव कर अमृतबान में भर रक्खे फिर इस

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS

में से १ टकेभर नित्य खाय तो नपुंसकपना दूर हो तथा स्त्री से सङ्ग बहुत करावे और संग्रहणी, क्षयी, श्वासका रोग, अरुचि, अम्लपित्त, रक्तपित्त, पाण्डुरोग इतने रोगों को यह आम्रपाक दूर करता है ८–इति आम्रपाक ॥

अथ हथरसआदि किसी कारण से नपुंसक होगया हो उसका यत्न ॥

देशी गोखुरूका चूर्ण ५ टंक, शहद ५ टंक मिलाय बकरी के दूधके साथ २ महीने ले तो नपुंसकपना जाय ९ ॥

अथ चन्दनादितेल ॥

रक्तचन्दन, पतङ्ग, अगर, देवदारु, चीढ़, पद्माक, कपूर, कस्तूरी, केसर, जायफल, जावित्री, लवङ्ग, दोनों इलायची, कङ्कोल, तज, दालचीनी, पत्रज, नागकेसर, नेत्रबाला, खस, छड़, दारुहल्दी, मूर्वा, कचूर, नागरमोथा, सम्हालू, फूलप्रियंगु, लोहबान, गुग्गुल, लाख, नख, राल, धवई के फूल, कुसुम के फूल, पीपलामूल, मंजीठ, तगर, मोम ये सब औषध चार २ माशे ले और इनका मधुरी आंचसे काढ़ा करे फिर इनका चौथा हिस्सा राखे फिर इसमें मीठा तेल पावभर डाले फिर मधुरीआंच से पकावे जब काढ़ेका रस जल जाय और तेलमात्र आयरहे तब छानकर पात्रमें भर रक्खे पीछे इसका शरीर में मर्दन करे तो बूढ़ा भी आदमी तरुण हो और शरीर के सब रोग जायँ १०–इति चन्दनादितेल ॥

अथ वानरीगुटिका ॥

कौंच के बीज पावभर गौके पावभर दूध में शनैः शनैः पकावे फिर इनका छिलका दूर करे फिर इनका महीन चूर्णकर दूध में उसन छोटे २ इसके बड़े कर गौके घृत में तले फिर इस से दूनी मिश्री की चाशनीकर बड़ोंको पागे फिर इन बड़ों को शहद में डाले पीछे इनमें से नित्य १ टङ्क २ महीने खाय तो नपुंसकपना जाय, स्त्री के सङ्ग में उसका वीर्य देर से स्खलित हो ११–इति वानरीगुटिका ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ नपुंसकपने के दूर करने का यत्न ॥

अकरकरा, सोंठि, लवङ्ग, केसर, पीपल, जायफल, जावित्री, सफ़ेदचन्दन ये सब धेले धेले भर ले और अफ़ीम १ टकेभर ले फिर इन सबको शहद में महीन पीस उड़द प्रमाण गोली करे एक गोली रात्रि में नित्य खाय ऊपरसे दूध पीवे तो वीर्य देर से गिरे और नपुंसकपना जाय तथा बहुत स्त्रियों से भोग करे १२ अथवा बिदारीकन्द का चूर्णकर उस चूर्ण में गीले बिदारीकन्द के रसकी २१ पुट दे दे सुखाता जाय फिर उसमें मिश्री, शहद और घृत मिलाय नित्य दो टंक खाय अथवा चार माशे ले और इसके ऊपर मधुर दूध पीवे तो बूढ़ा मनुष्य भी जवान हो। यह वृन्द में लिखा है १३ अथवा आंवले का चूर्ण करे फिर इस चूर्ण में गीले आंवले के रसकी २१ पुट दे सुखा ले फिर इस चूर्ण को मिश्री, शहद से नित्य दो टंक खाय तो नपुंसकपना जाय। यह चक्रदत्त में है १४ ॥

अथ मदनमञ्जरी गुटिका ॥

सोंठि, मिरच, पीपल इन तीनोंका चार भाग करे पारेका १ भाग और बङ्ग का २ भाग करे इन सबकी बराबर शतावरि, तज, पत्रज, नागकेसर, इलायची, जायफल, मिरच, पीपल, सोंठि, लवङ्ग, जावित्री इन सबको २ भाग ले फिर सबको महीन पीस मिश्री, शहद और घृतमें ५ टंकके अनुमान गोली बांधे फिर एक गोली नित्य खाय ऊपर से दूध पीवे तो बूढ़ा भी जवान हो। यह योगतरङ्गिणी में है ॥ इति मदनमञ्जरी गुटिका १५ ॥

अथवा अफ़ीम, पारा इन दोनों को बराबर ले धतूरे के बीज के तेल में ३ दिन खरल करे पीछे मिश्री और भांग बराबर मिलाय १ रत्ती खाय ऊपर से दूध पीवे तो वीर्य न गिरे और नपुंसकपना जाय। यह सारसंग्रह में लिखा है १६ अथवा जायफल, अकरकरा, लवङ्ग, सोंठि, केसर, पीपल, कस्तूरी, भीमसेनी कपूर,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अभ्रक इन सबकी बराबर अफ़ीम ले फिर इन सबको महीन पीस मूंग प्रमाण गोली करे फिर १ गोली तथा २ गोली ले तो वीर्य न गिरे १७॥

अथ लिंगलेप की लिंगार्जुन गुटिका॥

चीनियाकपूर, सुहागा, पारा इन्हें बराबर ले अगस्त के रस में और शहद में १ दिन खरल करे फिर लिङ्ग में लेप करे १ पहर राखे पीछे लिङ्गको धोवे फिर स्त्री से सङ्ग करे तो वीर्य देरमें गिरे १८॥

अथ लिंगलेप की पट्टी॥

सफ़ेद कनेर की जड़ का बक्कल, अकरकरा, अजमोद, काले धतूरे के बीज, जायफल इन सबको जलसे महीन पीस मिरच प्रमाण गोली बांधे फिर एक गोली मनुष्य के मूत्र से घिस लिङ्ग पर लेप करे तो नपुंसकपना जाय, वीर्य देर से गिरे १९ अथवा शूकर का घृत, शहद इन दोनों को खरल में घिस १ महीने तक लिङ्गपर लेप करे तो लिङ्गकी सब कसर मिटे २० अथवा सफ़ेद कनेर की छाल को दूध में जमाय घृत काढ़े फिर इस घृत में मोहरा, जायफल, जमालगोटा अनुमान मुवाफ़िक़ मिलाय लिङ्ग पर ७ दिन लेप करे ऊपर पान बांधे और ब्रह्मचर्य से रहे तो नपुंसकपना जाय २१॥

अथ नपुंसकपना दूर करने की और औषध॥

चोपचीनी, सोंठि, मोचरस, दोनों मूसरी, मिरच, बायबिड़ंग, सौंफ़ ये सब औषध समान ले महीन पीस छानकर पैसाभर चूर्ण आधसेर अधौटा दूध के साथ ले तो बल व पुष्टता हो २२॥

अथ दूसरी औषध॥

चोपचीनी ५ पैसाभर, सोंठि, मोचरस, दोनों मूसली, मिरच, बायबिड़ंग, सौंफ़ ये सब औषध बराबर ले कपरछान कर १ सेर अधौटे दूध के साथ ले तो धातुपुष्ट हो और बल बढ़े २३॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ तीसरी औषध ॥

शहद दो पैसा भर आधसेर गौ के दूध में मिलाकर पिये तो पुरुष के अधिक शक्ति हो २४ ॥

अथ चौथी औषध ॥

मैदालकड़ी ऽ। भर ले कालीबकरी के दूध में भिजोवे फिर कपरछान कर ऽ१ गौ के दूध में भिगोय तीन दिनतक सूखने दे तिस पीछे गोखुरू ३ पैसाभर, चीनी खांड़ आधसेर मिलाय धर राखे। मात्रा १ पैसाभर ऽ॥ गौके दूध में खाय तो पुष्टता हो और नपुंसकता दूर हो २५ ॥

अथ पांचवीं औषध ॥

सफ़ेद कनेर की जड़ दो पैसा भर ले महीन कतर पांचसेर गौ के दूध में औटावे जब दूध ऽ३ शेष बचे तब उतार ठंढाकर जड़समेत जमाय दे फिर दूसरे दिन माखन निकाल ले तिस पीछे सात गरवा मँगवावे जायफल सात और नगजावित्री पैसाभर ले सातों गरवनमें भरे, पेटसेले मूड़ पावँ काट डाले फिर ऽ। भर गौके घीमें खूब खरलकर भूंजे फिर उनकी मैदा को कनेरके घी में ४ रत्तीप्रमाण गोली बांधे फिर लिङ्गमें लेप करे अथवा १५ दिन खाय तो नामर्द मर्द हो ॥

अथ छठी औषध ॥

मंजीठ ऽ१ गोखुरू ऽ१ लभेरे के फल ऽ१ ले गौके आधसेर दूधमें औटावे जब ऽ१ शेष रहे तब उतार गोखुरूको सुखाय ले फिर तीनों औषध शेष कपरछान कर आगे लिखी औषधी मिलावे–जायफल पैसाभर, मूसली दोनों ऽ। भर, शतावरि ऽ। भर, पीपलामूल ऽ= सोंठि ४ पैसा भर, भांगरा ऽ। निर्गुण्डी ऽ। ये सब औषध कपरछान कर आधसेर घी मिलाय तीन तीन पैसाभर की गोली बांधे और दोनों समय एक एक गोली १४ दिन खाय तो नामर्द मर्द हो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ सातवीं औषध ॥

वत्सनाग विष २ पैसाभर, जमालगोटा २ पैसाभर, सफ़ेद घोंघची २ पैसाभर, सफ़ेद कनेर की जड़ २ पैसाभर, बीरबहूटी २ पैसाभर, अकरकरा २ पैसाभर, मालकांगनी ½१ चिमगादर १ कुचिला २ पैसाभर, केंचुआ ½१ सरसांड़ा एक, खुरासानी अजवायन २ पैसाभर, सुहागा २ पैसाभर, मैनसिल २ पैसाभर, लवङ्ग २ पैसाभर, जायफल २ पैसाभर, दालचीनी २ पैसाभर, आककी जड़ २ पैसाभर, चमेली की जड़ २ पैसाभर, चिमगादर, शूकर और सांड़े का यन्त्र में तेल निकाले तिस पीछे सब औषध कपरछान कर बकरी के दूध में ३ दिन खरल करे तिस पीछे यन्त्रमें तेल निकाल बंगलापानमें चुपर लिङ्गपर सात दिन तक बांधे और स्त्रीभोगसे बचारहे तो नपुंसकपना दूर हो ॥

अथ आठवीं औषध ॥

कनेर की जड़ २ पैसाभर, सींगियाविष १ पैसाभर, चौराई के बीज १ पैसाभर, सालबमिश्री १ पैसाभर, निर्गुण्डी १ पैसाभर ये सब औषध कपरछान कर पांचसेर गौके दूधमें औटाय, ज़माय माखन निकाल ले फिर सुपारी बचाय उलटा बंगलापान पर लगा कर १४ दिन तक पट्टी बांधे और स्त्रीसंभोग से बचा रहे तो नामर्द मर्द हो ॥

अथ नवीं औषध ॥

हींग, धतूरे के बीज, अकरकरा, समुद्रफेन, दालचीनी ये सब औषध बराबर ले कपरछान कर ऊंटकटेड़ा के रस में १४ दिन तक लिङ्गपर लेप करे तो नपुंसकता दूर हो ॥

अथ खाने की औषध ॥

असगन्ध, जावित्री, जायफल, लवङ्ग, दालचीनी ये सब औषध बराबर ले कालेतिल ½। भर, शहद ½। भर ले गोली बांध २१ दिन खाय तो नपुंसकता जाय ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ दूसरी औषध ॥

अकरकरा पैसाभर, अफ़ीम अधेलाभर, दोनों मूसली पैसाभर, कुलींजन पैसाभर, लवङ्ग पैसाभर, बहुफली पैसाभर, असगन्ध धेलाभर, खांड़ ६ पैसाभर सब औषध कपड़छान कर खांड़के सङ्गमें १ पैसाभर की गोली बांधे और १४ दिनतक रात्रि में खाय तो नपुंसकता दूर हो ॥

अथ लेपन ॥

तेलिया सुहागा १ टंक, कूट १ टंक, मैनसिल १ टंक, चमेली के पत्तों का रस ४ टंक, तिलका तेल ½ भर ले इनसबको कपड़छान कर तेल में औटावे जब तेलमें खर होजाय तब उतार रक्खे फिर तेल की पट्टी ७ दिन बांधे तो नपुंसकता जाय ॥

अथ खाने की औषध ॥

पोस्त आधसेर, माजूफल आधसेर ले १ मनभर पानी में औटावे जब सेरभर शेष रहे तब उतार आगे लिखीहुई औषध कपड़छानकर मिलावे—जायफल १ टकाभर, लवङ्ग १ टकाभर, तज १ टकाभर, बिलारीकन्द ४ टकाभर, सेंभरके बीज आधसेर, नागकेसर १ टकाभर, सोंठि आधसेर, पुराना गुड़ २ सेर गौके दश सेर दूध में औटावे जब औटते-औटते ३ सेर शेष रहे तब गुड़ व खांड़ डालकर औटावे जब गाढ़ा होजाय तब उतार आंवले की बराबर गोली बनावे और प्रातःकाल डेढ़पैसाभर और सन्ध्या को १ पैसाभर पानी के साथ खाय तो १४ दिनमें नपुंसकता दूर हो ॥

अब हस्तक्रिया और कच्चेकुश्ताआदि के खाने और शर्दी, गर्मी या बहुत मेहनत से जो आदमी नामर्द होगया हो उसके उपाय के लिये तिला लेप अच्छी-अच्छी खाने की पुष्ट औषधों समेत आगे लिखते हैं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ तिला हथलस और सुस्ती का ॥

दालचीनी १० टंक, जायफल १० टंक, धतूरा जड़पत्ते समेत १० टंक, जावित्री १० टंक, लवङ्ग १० टंक, बीरबहूटी १० टंक, मालकांगनी १० टंक, जमालगोटा १० टंक, संखिया १० टंक, तेलिया १० टंक, चौहरनीलाल १० टंक, शिंगरफ़ १० टंक, पारा १० टंक, लोहबान १० टंक, अदरकका रस १० टंक, चमेली के पत्ते १० टंक, मैनसिल १० टंक, हरताल १० टंक, कूट १० टंक, सुहागा १० टंक, मीठातेल १० टंक, चिमगादर की चरबी १० टंक, हल्दी १० टंक, श्वेत कनेर की जड़ १० टंक, लाल कनेर की जड़ १० टंक, गिडोहे सूखे १० टंक, रेंगमाही १० टंक, शेरकीचरबी ४० टंक, अरण्ड का तेल १५ टंक, मछली का पित्ता १० टंक, मुर्ग़ का पित्ता १० टंक, चोखीदारू १॥ टंक, गधे का मग़ज़ और यह न होय तो गधे के फ़ोतों में जोंक लगाकर दश टंक रुधिर, शूकर की चरबी १० टंक ले काष्ठादिक औषधों को कपरछान कर गोली बांधे फिर उसे आतशी शीशी में धरकर मुँह पर सींक लगावे, कपरोटी करे, चपटा अधवर से फोड़े पेंदे में छेद करे, पेंदे में शीशी की नालीकर फिर तेल निकाल लेय यदि तेल न निकलसके तो गोली दो रत्ती केसर में लेप करे और यदि तेल निकल आवे तो इन्द्रीपर की सुपारी और नीचे का जोड़ बचाके तेल मले, ऊपर से बंगलापान बांधे, लंगोटबन्द रहे, परहेज़ करे और खट्टी, गर्मचीज़ न खाय तो सुस्ती दूर हो १ ॥

अथ तिला दूसरा ॥

कपड़ा बाफते का पावगज़ आक के दूध में भिगोय सुखाकर थूहर के दूध में भिगोवे और पांच पैसाभर घी उसपर लपेटे उस पर संबुलज़र्द पीस लेप कर बत्ती बनावे फिर लोहे के गज़पर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

लपेट उसका तेल निकाले वह तेल पानपर लगाय लिङ्ग के ऊपर बांधे तो नामर्द मर्द होवे २॥

अथ तिला तीसरा॥

पारा १ पैसाभर, संखिया १ पैसाभर, मीठातेलिया १ पैसाभर, भटकटैया १ पैसाभर, हल्दी का ज़हर १ पैसाभर, नागबच १ पैसाभर, संबुल १ पैसाभर, हरताल १ पैसाभर, चिरमिटी सफ़ेद १ पैसाभर, धतूरे के बीज १ पैसाभर, बीरबहूटी १ पैसाभर, मैनसिल १ पैसाभर, शिंगरफ़ १ पैसाभर, लोहबान १ पैसाभर, केंचुवा १ पैसाभर, मालकांगनी १ पैसाभर, कौंच के बीज १ पैसाभर, कनेर की जड़ १ पैसाभर, जमालगोटा १ पैसाभर इन सबको पीस शीशी में चढ़ावे फिर पातालयन्त्र कर तेल निकाले रत्तीभर लिङ्ग के ऊपर मल ११ दिन पान बांधे तो नामर्द मर्द होवे ३॥

अथ तिला चौथा॥

जायफल १ पैसाभर, सुहागा तेलिया १ पैसाभर, मैनसिल १ पैसाभर, चमेली के पत्तों का रस ३ सेर, मीठातेल आधसेर इन सबको मिलाय औटावे जब रस जलजावे और तेलमात्र रहजावे तब तेल शीशी में भररक्खे फिर ११ दिन इन्द्रियपर लेपकर पान बांधे तो नामर्द मर्द हो ४॥

अथ नस जुड़ने की पोटली॥

कान का मैल १ पैसाभर, हाथीदांत का बुरादा ६ माशे, कुल्थी ६ माशे, केंचुवे ६ माशे, बीरबहूटी ६ माशे, अकरकरा ६ माशे, जायफल ६ माशे, जावित्री ६ माशे, केसर ६ माशे, हवासलकी चरबी १ पैसाभर, मछली का भेजा १ माशे, नौसादर १ पैसाभर, शेर की चरबी १ पैसाभर, गौका घी १ पैसाभर इन सबको ले धेले भरकी पोटलीकर ११ दिन इन्द्रियपर सेंक करे तो टूटीहुई नसें फिर जुड़ें और नामर्द मर्द होजाय ५॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ नामर्द के वास्ते लेप ॥

इन्द्रयव, चिरमिटी, सफ़ेद कनेरकी छाल, मालकांगनी, धतूरे के बीज, बच, खुरासानी, कटाई के बीज, गजपीपल इन सबको बराबर ले कूट पीसकर इन्द्री पर लेप करे तो नसें जुड़ें ६ ॥

अथ लेप ॥

अरण्डी १ पैसाभर, अफ़ीम ६ माशे, अकरकरा ६ माशे, जायफल ६ माशे, दालचीनी ६ माशे, बीरबहूटी ६ माशे, लवङ्ग ६ माशे इन सबको पीस कूट लेप कर ७ दिन पान बांधे तो नामर्द मर्द हो ७ अथवा चमेली के पत्तों का रस निकाल के कूट, सुहागा और मैनसिल सबको तिली के तेल में एकत्र कर औटावे जब रंग बदलजाय तब उतार शीशी में धरे ४० दिन मले तो टूटी हुई नसें जुड़ें ८ अथवा मीठातेल, मालकांगनी, लुहारा ये सब बराबर ले गर्मकर लेप करे अथवा गंगेरन, आक, कनेर, पीपल, कूट, बच और माखन मिलाय लेप करे तो नसें जुड़ें और स्थूल हों ९ अथवा अकरकरा २ टंक, सफ़ेद कनेरके फूल आधा टंक, जायफल १ टंक, सफ़ेद गोंद आधाटंक महीन पीस मर्दन करे तथा महिषी के दूध में मिलाय लेपन करे तो नसें जुड़ें तथा इन्द्रिय कठोर हो १० ॥

अथ खाने की औषध ॥

कोंच के बीज और जड़ को कूट, पीसकर ४माशे दूध के साथ मिश्री मिलाकर दोनों समय कुछ दिनतक सेवन करे तो बल, वीर्य बहुत हो और सहस्र स्त्री से भोग करे, सुखपावे अथवा उड़द का चून, यव का चून, गोखरू के बीज, शतावरि इन सबको बराबर ले दूध में माड़कर घृत में बड़ी करे। सन्ध्यासमय ६ मास पर्यन्त १ बड़ी खाय और ऊपर से दूध मिश्री पीवे तो बूढ़ा भी जवान हो, वीर्य बँधे १ अथवा त्रिफला, धवईके फूल बराबर लेकर पीस एकरस की भावना दे ७ दिन धूपमें सुखावे फिर सन्ध्यासमय

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मिश्री और शहदमें मिलाय चाटे ऊपर से दूध पीवे इसका कुछ दिन सेवन करे तो शत स्त्री से भोग करे, काम बँधे, भूख लगे, पुष्ट हो, महाकामी हो २ अथवा किवांच की जड़, तिल, असगन्ध, बिदारीकन्द, सांठी चावल इन सबको बराबर ले पीस ऽ१ दूध में पचावे फिर प्रातसमय ५ टंक प्रमाण नित्य खाय और परहेज़ करे तो महाकामी हो और रति में सुख उपजे ३ अथवा बिदारीकन्द और गोखुरू इन दोनों को ५ टंक ले फिर पीस के मिश्री और दूध के साथ फांके तो बूढ़ाभी जवान और महाकामी हो तथा प्रमेह और बिन्दुकुशाद भी जाय ४ अथवा जायफल, जावित्री, लवङ्ग, केसर, असगन्ध, काले तिल और अफ़ीम सबों को दो दो माशे ले खरल करे और २ माशेकी शहद में गोली बांधे। प्रभातसमय सात दिन तक खाय तो नामर्द मर्दहो५ अथवा उड़द, यव, असगन्धके पांचबीज, शतावरि, तालमखाना, सेंभर की छाल ये सब समान भाग ले पीस कर दूध के साथ खाय तो शत स्त्री भोग करे, धातु बँधे परन्तु पथ्यसेरहे ६ अथवा यव और उड़दका चून ८ पैसाभर दूध और मिश्री के साथ पीवे तो वीर्यवृद्धि और धातु पुष्ट हो ७ अथवा अधेले भर आंवले को एकरस की भावना देकर छाया में सुखावे पीछे शहद और मिश्री से ४ टंक खाय तो धातु बँधे, महाकामी हो अथवा अकरकरा ३ टंक, तेजबल ३ टंक, जावित्री ३ टंक, नागकेसर ३ टंक, जायफल ३ टंक, लवङ्ग ३ टंक, इलायची समूची ३टंक, सफ़ेद मूसली ३ टंक, शर्करा ४ टंक, नागरपान२५ले फिर बड़े बेर समान पानों के साथ गोली बांधे। प्रातसमय खाय तो निर्वीर्य भी वीर्यवान् हो ८॥

अथ इन्द्रिय सूख गई हो उसका यत्न॥

गौ का घृत १ पैसाभर, श्वेतकनेर की जड़ की छाल ३० टंक, लवङ्ग ३ टंक, मालकांगनी ५ टंक, कूट ५ टंक, अजवाइन खुरा-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सानी ५ टंक, अकरकरा ५ टंक, सफ़ेद गुंजा ५ टंक, कुचिला ५ टंक, इसबन्द ५ टंक, कनकबीज ५ टंक, पीपल ५ टंक, जायफल ५ टंक, जावित्री ५ टंक, अफ़ीम ३ टंक, कटेरे के बीज १५ टंक, मूसलीबीज ५ टंक घृत में मिलाय कूट राखे फिर सात दिन शीशी में भर पातालयन्त्र चुवावे। ४ रत्ती प्रमाण नित्य खाय तो अतिकामीहो, खट्टा न खाय परहेज़ करे॥

अथ इन्द्रिय के बांकापन जाने का इलाज॥

बिनौले की मींगी और बकरे की चरबी मिलाय लेप करे तो बांकापन जाय और स्थूल हो १ अथवा सुहागा, कूट, मैनसिल बराबर ले कपड़छानकर दमड़ीभर चमेली के पत्ते का रस मीठे तेल में पकावे फिर कपड़छानकर तेल शीशीमें रक्खे। इन्द्रिय लेपन करे अथवा मले तो एकमास में बांकापन जातारहे २ अथवा समुद्रफल, दारुहल्दी, मुलहठी, शहद गधे के पेशाब में घिसकर मले तो बांकापन जाय, स्थूल हो और बढ़े॥

अथ स्तम्भन औषध॥

जावित्री, सफ़ेद कनेरकी छाल, समुद्रशोष, खुरासानीअजवायन, अफ़ीम, जायफल, पीपर, चीनी खांड़ ये सब बराबर लेकर कपड़छानकर गुड़ में गोलीबांधे। १ टंक प्रमाण १ गोली रात को खाय तो १२ घड़ीतक स्तम्भनहो। दूधपिये तब स्खलितहो॥

अथ दूसरी विधि॥

सफ़ेद कनेर की छाल २ टंक, सफ़ेद कबूतर की विष्ठा २ टंक ले और २ टंक के प्रमाण शहद में गोली बांधे फिर पोस्त के पानी से घिसकर लिङ्गपर लेप करे तो दो घड़ीतक स्तम्भनहो तथा तालमखाना, मूसली, शतावरि, खुरासानीबच ये सब औषध ५ टंक और विजया १५ टंक, घी ४० टंक, खांड़ ३६ पैसाभर ले विजया पीसके बँगलापानकी तीनपुटदे फिर खांड़

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

का पाक कर २ टंक प्रमाण गोली बांधे। १ गोली सन्ध्यासमय में खाय तो काम वृद्धि हो॥

अथ तीसरी विधि॥

चौपई॥

एक टंक जो केसर करे। दोय टंक लौंग ल धरे॥
तीन टंक जायफल सुलेय। चारि टंक अहिफेन करेय॥
दो रत्ती कस्तूरी करे। मधुसे बांधि जो गोली धरे॥
टंक टंक गोली परमान। सांझसमय ये खाय सुजान॥
स्तम्भनकरकायाबलहोय। दिन दिन रूपसवायो सोय॥
उपजेअग्निक्षुधाअधिकाय। मनसों मिटे न रतिकी चाय॥

अथ चौथी विधि॥

भांग ६ माशे, अफ़ीम ६ माशे, पोस्त ६ माशे, छुहारा १ तोला, बादामकी गिरी १ तोला, मोठकी जड़ १ तोला, धतूरे के बीज ६ माशे इन सबको कूटपीसकर माजूम बनावे फिर ३ माशे खाय तो बंधेज करे अथवा अफ़ीम १ माशे, भांग २ माशे, शहद २ माशे, खांड़ २ माशे ले पीस गोली धेलाभर की बनाय खावे और ऊपर से दूध पीवे तो बंधेज होवे॥

अथ पञ्चम विधि॥

दोनों मूसली १ तोला, तालमखाने ६ माशे, बीजबन्ध ६ माशे, कनेर की जड़की छाल ६ माशे, गूलर की छाल ६ माशे, गोंदनी की छाल ६ माशे, बड़की जटा ६ माशे, लसोढ़ा ६ माशे, सेलखड़ी ६ माशे इन सबको कूट पीस छानकर पुराने गुड़ में गोली बांधे १ माशे २ घड़ी पहिले खावे तो बंधेज होवे फिर सेंधानोन से छूटे॥

अथ बंधेज की छठी विधि॥

जायफल ३ माशे, रूमीमस्तगी ६ माशे, लवङ्ग ६ माशे,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

इलायची के बीज ६ माशे ले पीसकर शहदमें बेर प्रमाण गोली बांधे १ गोली खावे तो बंधेज होवे ॥

अथ बंधेज की सप्तम विधि॥

आक के फूल ६ माशे, धतूरे के फूल ६ माशे, काली मूसली १ तोला, इसबन्द १० माशे, जायफल ६ माशे इनसबको पीसकर शहद में बेर समान गोली बांधे दो घड़ी पहिले खावे ऊपरसे जलेबी खावे और दूध पीवे तो बंधेज होवे अथवा उटंगन के बीज पैसाभर, कोंचकी मींगी पैसाभर, निशास्ता पैसाभर ले पीस छान पानी से ३ माशे शामको फांके तो स्तम्भन करे॥

अथ बंधेज की अष्टम विधि ॥

लवङ्ग, अफ़ीम, भांग, छोटी इलायची, जायफल, जावित्री, कमलगट्टा इन सबोंको महीन कर पान के रसमें गोली बांधे। २ माशे प्रमाण खाय तो स्तम्भन करे विना खटाई न छूटे अथवा ज़िमींकन्द और तुलसी की जड़ इन दोनों को बराबर ले महीन कर पानके रसमें गोली बांधे फिर बीड़ी के साथ खाय तो बहुत स्तम्भनकरे १ अथवा दालचीनी और कालेतिल बराबर ले फिर महीन कर शहद में ७ माशे प्रमाण गोली बनावे। सोते समय १ गोली खाय तो मैथुन के पीछे १ पहर इन्द्रिय की प्रबलता रहे २ अथवा कोंच की जड़ १ अंगुल भर ले अपने मुखमें रख रस चूसे। जबतक मुख में रहे कभी न छूटे ३ ॥

अथ बंधेज की नवम विधि ॥

कनेरकी जड़ ३ टंक, अफ़ीम १ टंक, आदी के रससे इन्द्रिय पर लेपकरे तो स्तम्भन हो। पान खाय तब छूटे १ अथवा खिरनी के बीज की मींगी और महुआके बीजकी मींगी दोनों को पानी से पीस बत्ती सी बनाय सुपारी के बीच में रक्खे तो मत्रस्तम्भन हो २ अथवा सफ़ेद कनेरकी जड़ और त्वचा छाहँमें सुखाय कपड़छानकर जायफल ५ टंक, तेलिया २॥ टंक, अफ़ीम चोखी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

१ टंक, बच्छनाग विष १ टंक इन सबको बड़की जड़के रस में हल कर झरबेरी के बेर प्रमाण गोलीबांध छाया में सुखाय धरराखे फिर गोली को पोस्त के पानी में घिसकर लिङ्गपर लेप करे तो स्तम्भन हो ॥

अथ बंधेज की दशवीं विधि ॥

चौपई ॥

जातीफल विजया अरु नाग। मिश्री मेलहु द्वादश भाग ॥
कुचिला समुद्रशोष के बीज। ऊँटकटाई लौंगहु दीज ॥
पहिले तीन बराबरि चारि। गोली बांधो मधुको डारि ॥
रही पांच की बांधहु बरी। क्रीड़ा हरि राधा सों करी ॥

अथवा सूखी अद्रक १ टंक, तेजबल १ टंक, नकछिकनी १ टंक, गुड़ ३ टंक मिलाय एकत्र कर २ टंक प्रमाणकी गोली बनावे इस गोली को सन्ध्या समय खाय ऊपरसे चार पैसाभर दही बड़े खावे तो चारघड़ी के वास्ते स्तम्भन हो ॥

अथ बंधेज की ग्यारहवीं विधि ॥

कोंचके बीज ५ टंक, बंगामूढ़ ५ टंक, मिरच ५ टंक इन सबों को बकरी के दूधसों लिङ्गपर लेपन करे तो बहुत स्तम्भन करे अथवा चने आधे कच्चे आधे पक्के और चूना दोनों एकत्र कर नींबूकी फांक में रख अग्नि में पकावे पांचघड़ी पीछे निकालकर चूसे फिर भोजन करे तो सातघड़ी को स्तम्भन हो फिर सादा नींबू चूसे तब छूटे ॥

अथ बंधेज की बारहवीं विधि ॥

बेलगिरी, सौंफ और सफ़ेदा तीनोंको एकत्र कर कूट पीस कपड़छान कर खाय तो जल्दी न छूटे अथवा केसर १ टंक, लवङ्ग २ टंक, जायफल १ टंक, कस्तूरी १ टंक इन सबको एकत्र कर गोली बनावे फिर एक गोली रति से ३ घड़ी पहिले खाय तो ६ घड़ी स्तम्भन हो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ मृत्तिका मदनगुटिका बंधेज की तेरहवीं औषध॥

इलायची, केसर, तज, लवङ्ग, जायफल, जावित्री, रूमीमस्तगी, अकरकरा, नागरमोथा, पीपल, अफ़ीम, चन्दन, कस्तूरी और कपूर इन सबको एक एक टंक ले पीस शहद में २ माशे भरकी गोली बांधे। सन्ध्यासमय खांय तो बंधेज करे ऊपर से दूध पीवे यह बहुत गुण और पराक्रम करता है॥

अथ बंधेज की चौदहवीं औषध॥

कपूर १ माशे, अफ़ीम ८ माशे, केवांच के बीज ८ माशे, अकरकरा ८ माशे, लवङ्ग ८ माशे, गुजराती इलायची ८ माशे, शोधाबच्छनाग २ माशे, मालकांगनी ८ माशे, शोधा शिंगरफ़ ३ तोला इन सब ओषधियोंकी १०० पानों के रसमें ३ रत्ती गोली बनावे फिर रात्रि को खाय ऊपर से दूध पीवे। यदि गर्मी करे तो घी खाय और ऊपर से दूध पीवे। धातु स्खलित न हो तो कागज़ी नींबू चूसने से तुरन्त स्खलित हो॥

अथ बच्छनागशोधनक्रिया॥

बच्छनाग का टुकड़ा करे और गाई के गोती में ७ दिनतक भिजो रक्खे परन्तु गोती नित्य नई हो और पुरानी फेंक दे फिर सातवें दिन गौ के दूध में औटाय निकालकर छाहँ में सुखावे तब शुद्ध हो॥

अथ शिंगरफ़शोधनविधि॥

शिंगरफ़ को भेड़ के दूध में डोलयन्त्र कर औटावे तब शुद्ध होती है शुद्ध की हुई स्तम्भन औषधि में मिलावे॥

अथ बंधेज की पन्द्रहवीं विधि॥

जायफल ५। टंक, जावित्री ५। टंक, कनकबीज ५। टंक, मुलहठी ५। टंक, पारा ५। टंक, अकरकरा ५। टंक, लवङ्ग ५। टंक, अफ़ीम ५। टंक इन सबको एकत्र कर शहद में गुंजाप्रमाण गोली बांधे सोते समय खाय तो १ पहरतक बंधेज रहे फिर नींबू

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

से छूटे अथवा लजालू का बीज १ तोला दूधमें पीसकर गोड़के तलुए में लेप करे तो निस्सन्देह बंधेज हो जब धोवे तब छूटे ॥

अथ बन्धेज की सोलहवीं विधि ॥

सफ़ेद घोंघची का तेल निकालकर पैरों के नखों में लगावे तो सूक्ष्म स्तम्भन हो और नींबू चूसे अथवा नोनकी डली मुँह में डाले तब छूटे अथवा शिंगरफ़ ३। माशे, अजवाइन खुरासानी ३। माशे, अफ़ीम ३ माशे, जायफल ३ माशे, जावित्री ३ माशे, अकरकरा १ माशे इन सबको एकत्र कर पुराने पानके रसमें मटर बराबर गोली बांधे फिर रात्रिको सोतेसमय खाय तो अति बंधेज करे फिर नोन से छूटे ॥

अथ बन्धेज की सत्रहवीं विधि ॥

दोहा ॥

मुंडी इसबँध जायफल जावित्री अहिफेन।
विजया अजवायन दुनी सातो स्तम्भन मैन ॥
पीपर कुमकुम जायफल चन्दन नागर जानि।
मिर्च अकरकराकंकोलही येसबसमकरिआनि॥
द्वादश मास जो खावई अरु मेले अहिफेन।
नित्य खाय जो प्रात उठि द्रवे न तत्क्षण मैन ॥

छप्पय ॥

शशि १ केसर दृग २ लौंग राम ३ जातीफल जानत।
वेद ४ टंक अहिफेन गुंज द्वै मृगमद आनत ॥
सकल पीस इक ठौर शहद सूं बटी बनावत।
रती द्वैक परिमाण रसिक सन्ध्या को खावत ॥
बटी एक मुंजत पुरुष अति आनँद तिय होतजस।
तबलग मनोज मुंचेनहींजबलगखात न अम्लरस ॥

सोरठा ॥

चतुर गुंज अहिफेन टंक एक हरिबल्लभा।
रहै थकितह्वै मैन ज्यों बारिदऋतु शरदमें ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ बंधेज की अठारहवीं विधि ॥

गीतिका छंद ॥

बिम्बफल इक टोरि मध्य द्वै टंक पीपरि डारिये।
लपटाय पट पिंडोर ताको सकलमूंदि सँवारिये ॥
आगि में वह डारिके मध्यमहिं आंच पकाइये।
औषध सँपूरण करि सुचूरण झीन अम्बर छानिये ॥
सम दालचीनी चारुले फिटकरी अर्क रलाइये।
पुनि आध टंक प्रमाण मधु सोंबरी सुन्दर ठानिये ॥
रति आदिमुख जलधोइ तासों लिङ्ग लेपन कीजिये।
हृदय को आनन्द उपजे तियन को सुख दीजिये ॥

अथ बंधेज पर माजून ॥

केसर १ तोला, लवङ्ग १ तोला, जावित्री १ तोला, अकरकरा १ तोला, रूमीमस्तगी १ तोला, मूसली दोनों ४ तोले, चोपचीनी २ तोले, इलायची २ तोले, दालचीनी १ तोला, पीपल १ तोला, हड़ और अतीस १ तोला, शतावरि २ तोले, बेखबलधी २ तोले, मदनमर्त ४ तोले, लालमिरच और अजवाइन खुरासानी १ तोला, कबाबचीनी १ तोला, अफ़ीम २ तोले, पिस्ता ४ तोले, बादाम ४ तोले, सालबमिश्री ४ तोले, चांदीका वर्क़ ४ तोले इन सब औषधोंको पीस छानकर बराबरकी चीनी की चाशनीमें सबों को मिलाय माजून बनावे फिर अमृतबान में भररक्खे। सन्ध्यासमय ६ माशे खाय और ऊपरसे दूध पीवे तो अति बंधेज करे और बलको बढ़ातीहुई अनेक गुण करती है ॥

अथ बंधेज पर माजून दूसरी ॥

दालचीनी १ पैसेभर, जायफल १ पैसेभर, जावित्री १ पैसे भर, लवङ्ग १ पैसेभर, गुजराती इलायची १ पैसेभर, कस्तूरी १ माशे, जेठीमधु १ पैसेभर, केसर १ माशे, सालबमिश्री १ पैसे भर, तीखुर ८ पैसेभर, गोखुरू ८ पैसेभर, बंशलोचन १ पैसेभर,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

शतावरि १ पैसाभर, किवांच १ पैसाभर, भीमसेनी कपूर ३ माशे, बादाम का घी १ पैसाभर, भांग का काढ़ा ½ सेर, घी गाय का ½ सेर, दूध १ सेरभर इन सब औषधों को इकट्ठा करके मिश्री की चाशनी कर उसमें मिलाय थाली में माजून जमा दे और कतर ले फिर सन्ध्या को १ कतरा खाय तो स्तम्भन खूब हो और गर्मी कम हो॥

अथ बंधेजपर तीसरी माजून॥

कस्तूरी १ तोला, जावित्री १ तोला, कबाबचीनी १ तोला, कौंचके बीज, मुण्डी और मोथा १ तोला, बीजबन्द और गोखुरू १ तोला, मिर्च सुर्ख़दराज़ १ तोला, केसर १ तोला, नागकेसर १ तोला, इलायची १ तोला, चोपचीनी १ तोला, गाजर के बीज १ तोला, मालकांगनी १ तोला, मदनमर्त १ तोला, समुद्रसोली १तोला, बनफ़शा की जड़ १ तोला, कहरवा १ तोला, लवङ्ग १ तोला, जौज़ १ तोला, दालचीनी १ तोला, उटंगन के बीज १ तोला, रूमीमस्तगी १ तोला, मोचरस १ तोला, स्याहमूसली १ तोला, पीपरामूल १ तोला, इन्द्रयव १ तोला, शतावरि १ तोला, अकरकरा १ तोला, गुड़ तिबरसा ८ पैसेभर इन सबको पीस छान जायफल प्रमाण गुड़ में गोली बांधे। सोते समय १ गोली खाय ऊपर से दूध पीवे अगर दूध न हो तो शक्कर से गोली खाय तो अतिस्तम्भन करे॥

लड़कपन में बहुत से पुरुषों की धातु लाल मिर्च अथवा अधिक खटाई खाने, धूप में रहने और बहुत मेहनत करने से पतली पड़ जाती है इस कारण से वे स्त्रीप्रसङ्ग में रमणी को आनन्द देने में असमर्थ होते हैं और वीर्य जल्दी पतन होने से वे कुछ भी रति का आनन्द नहीं जानते इससे कुछ अच्छी अच्छी धातुपुष्ट की औषधें कहते हैं॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ धातुपुष्ट के यत्न ॥

मदनमोदक गुटिका ॥ असगंध नागौरी, कूट, गेरू, छड़ीला, अजमोद, त्रिफला, सोंठि, मुल्तानी, बिदारीकन्द, धनियां, मोथा, मोचरस, गजपीपल और सेमर का मूसरा, कचूर, दोनों मूसली, पीपल, दोनों कटाई, पत्रज, सोंठि, गेहूंका सत, दोनों जीरे, जटामांसी, भारंगी, करंजकी मींगी, मुलहठी, कमलगट्टा, सिंघाड़ा, काकड़ासिंगी, नागकेसर, पुष्करमूल, शतावरि, तालीस, लवङ्ग, जायफल, जावित्री, दालचीनी, सुपारी, अगर, दोनों चन्दन, चीनियांकपूर, भांगरा, निर्गुण्डी और चूक ये सब औषध बराबर ले कपरछानकरे फिर पांच सेर गौके दूधका खोवाकरे जब दोसेर शेष रहे तब उतार ये औषधें मिलावे—लवङ्ग, चिरौंजी, गिरी, छुहारा, बादाम, असगन्ध, दोनों इलायची, दाख, भांग आधसेर ले पोटली बांध दूधमें डारिके औटावे पीछे सब औषध मिलाय दो दो पैसेभर की गोली बांधे एक गोली प्रभात समय खाय तो धातु पुष्ट हो, भूख बढ़े, क्षीणता मिट जाय ॥

अथ धातुपुष्ट की दूसरी विधि ॥

कुचिलादि गुटिका ॥ कुचिला १ पैसाभर, सोंठि ५ पैसेभर और अकरकरा, जायफल, लवङ्ग, जावित्री, रूमीमस्तगी ये सब औषध धेला धेला भर ले कपरछान कर ½ २ सेर बँगलापान के रस में ४ प्रहर खरल करे पीछे छदाम छदाम भर की गोली बांधे। १ गोली पान के साथ खाय तो धातु पुष्ट हो, भूख बढ़े, उच्चाट मिटे, बल बढ़े, स्त्री की शक्ति हो ॥

अथ धातुपुष्ट की तीसरी विधि ॥

सेमरके बीज ½ सेर ले ५ सेर दूध में औटावे फिर बीज सुखाय ये औषध डाले—जावित्री, जायफल, लवङ्ग, दालचीनी २ पैसेभर, दोनों मूसली पावभर, निर्गुण्डी, मुण्डी, भारंगी और भांगरा ये दो दो पैसेभर ले सब कपरछान कर दो दो पैसेभर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

की गोली बांधे। १ गोली सोतेसमय आधसेर दूधके साथ खाय तो धातु पुष्ट हो और वृद्ध भी तरुण हो॥

अथ धातुपुष्ट की चौथी विधि॥

धातुपुष्ट पर माजून॥ जायफल, जावित्री, लवङ्ग, रूमी-मस्तगी, चीनियांकपूर, अकरकरा, दालचीनी, तज, पत्रज, अगर, तगर, वंशलोचन, चन्दन, खस, कचूर, असगन्ध, पीपल, सोंठि, मिर्च, तिल, कोंचके बीज, सालबमिश्री, इलायची, बादाम, अखरोट, छुहारा, कपास के बीज, मूली के बीज, तालमखाना, बीजबन्द, गोखुरू, दोनों मूसली, इन्द्रयव, मुलहठी, नागकेसर, सुगन्धबाला, मोचरस, बिदारीकन्द, कुलींजन, दोनों जीरे, कास की जड़, कमलगट्टा, धनियां, शिलाजीत ये सब औषध पैसा पैसा भर ले और रोहूमछली का तेल १ पैसाभर, लोहबानका तेल १ पैसाभर, गिरी ७ पैसेभर, गौ का घी ½ १ सेर चीनी खांड़ ½ २ सेर ये सब औषध कपरछान कर घी में भूने फिर खांड़ मिलाय आंवलेप्रमाण गोली बांधे। १ गोली प्रभात और १ सन्ध्याको खाय तो बहुत पुष्टता हो॥

अथ धातुपुष्ट की पांचवीं विधि॥

नागौरी असगन्ध १६ टंक कपरछान कर आठ टंकभर घी में भूने पीछे घी निचोय ½ ५ सेर दूधमें औटावे फिर ये औषधें मिलावे—सोंठि, तज, पीपल, मिरच, पत्रज, इलायची, सिंघाड़ा, केलाकी जड़, काकड़ासिंगी, दोनों चन्दन, बङ्ग, शिलाजीत, जायफल, नागकेसर, मोथा, कचूर, जावित्री, वंशलोचन, दोनों जीरे, चीनियांकपूर, सुगन्धबाला, अभ्रक, रूमीमस्तगी, सार, कोंचके बीज, तालमखाना, बीजबन्द, कमलगट्टा, तवाखीर, दोनों मूसली, निर्गुण्डी, भांगरा, चीनी खांड़ ½ ३ ये सब औषध कपरछान कर उसी दूध में मिलाय खांड़ की चाशनी कर दो पैसेभर के

In Public Domain, Chamba Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

प्रमाण गोली बनावे। १ गोली प्रभात समय खाय तो प्रमेह दूर हो, वीर्य को प्रवाह थँभे और अतिपुष्ट हो॥

अथ धातुपुष्ट की छठीं विधि॥

चोपचीनी, मुलतानी, सोंठि, मिरच, मोचरस, बायबिड़ंग, सौंफ ये सब औषध पैसा पैसा भर ले कपरछान कर ⅀१ गौके दूध में औटावे जब आधसेर शेष रहे तब सम्पूर्ण औषध और ⅀॥ शहद मिलाय टकाभर की गोली बांधे। १ गोली प्रभात खाय तो धातु पुष्ट हो॥

अथ धातुपुष्ट की सातवीं विधि॥

असगन्ध १ पैसाभर, ब्रह्मदण्डी १ पैसाभर, निर्गुण्डी १ पैसाभर ले खांड़ ⅀। भर मिलाय बकरी के दूध के साथ ७ दिन ले तो धातु बन्द हो अथवा वंशलोचन, विजयसार की गाद, खांड़ ये तीनों बराबर ले पीवे तो धातु बन्द हो॥

अथ धातुपुष्ट की आठवीं विधि॥

मोचरस, मिरच, दोनों मूसली, मुलहठी, दोनों ज़ीरे, असगन्ध, रूमीमस्तगी, शंखाहूली, इलायची, निर्गुण्डी, गिलोय, उड़दकी दाल, पीपल, भारंगी, लवङ्ग, शतावरि, सोंठि, मुण्डी, भांगरा, दालचीनी, तज, चिरौंजी, दाख, छुहारा, बीजबन्द, तालमखाना, बिदारीकन्द, त्रिफला ये सब औषध पैसा पैसा भर ले कपरछान करे फिर॥ ⅀५ गौके दूध का खोवा करे जब दो सेर शेष रहे तब सब औषधें मिलाय पावभर घी और पावभर शहद मिलाकर आंवले के प्रमाण गोली बांधे। १ गोली प्रातःकाल और १ सन्ध्या समय खाय तो धातुकी पुष्टता हो और भूख बढ़े॥

अथ धातुपुष्ट की नवीं विधि॥

आधसेर बिदारीकन्द में तुलसी के रसकी तीन पुट दे फिर छाया में सुखाय गौ का दूध ⅀५ औटावे जब ⅀२ शेष रहे तब

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

उतारकर बिदारीकन्द और ⅝॥ खांड़ मिलाय सात भाग करसात दिन खाय तो धातु पुष्ट हो और ७ स्त्री से भोग करनेकी शक्ति हो॥

अथ धातुपुष्ट की दशवीं विधि॥

कस्तूरी, केसर, जावित्री, दालचीनी, अकरकरा, लवङ्ग, असगन्ध, मूली के बीज, रूमीमस्तगी, मिरच, तज, पत्रज, दोनों मूसली, पीपल, सालबमिश्री, बीजबन्द, गोखुरू, अजमोद, मालकांगनी, समुद्रफेन, समुद्रशोष, गिलोय, चीते की छाल, उटंगन के बीज, कौंचके बीज, इन्द्रयव, इसबन्द, पीपलामूल, कमलगट्टा ये सब औषध पैसा पैसा भर ले कपरछान कर ⅝१ चीनी खांड़ मिलाय पैसा पैसा भर दोनों समय खाय तो धातु पुष्ट और अधिक हो तथा शक्ति बढ़े १ अथवा चोपचीनी, मोचरस, बायबिड़ंग, सौंफ़, गजपीपल, गाजर के बीज, सलगमके बीज, तेजबल, इन्द्रयव, नागकेसर, दोनों मूसली, सेमर का मूसरा, लसोढ़े के बीज, सालबमिश्री, ऊँटकटाबाकी जड़, तालमखाना, दालचीनी, शतावरि, दोनों गोखुरू, भारंगी, भांगरा, चिरौंजी, कमलगट्टा, कौंचके बीज ये सब औषध पैसापैसा भर ले और गौका दूध ⅝५ औटावे जब सेरभर रहे तबकपरछानकर सब औषध मिलावे फिर सेर भर खांड़ मिलाय दो पैसे भर की गोली बनाय खाय तो धातुकी पुष्टता हो और बल बढ़े २ अथवा दोनों गोखुरू, कौंचके बीज, बीजबन्द, शतावरि, बिदारीकन्द, तालमखाना, असगन्ध, अड़ूसे की जड़, उटंगन के बीज, गिलोय, रक्तचन्दन, तज, पत्रज, इलायची, पीपल, त्रिफला, नागकेसर, सेमरका मूसरा, ऊंटकटावाकी जड़, कुड़ा की जड़, ऊंख की जड़ ये सब औषध पैसा पैसा भर ले कपरछान कर ⅝५ गौके दूधमें औटावे जब १ सेर शेष रहे तब उसमें तीन सेर खांड़ और सब औषधें मिलाय २ पैसेभरकी गोली बांधे। १ गोली सन्ध्या और १ गोली सबेरे खाय तो धातुको पुष्टकरे और पराक्रम को बढ़ावे॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ धातुपुष्ट की ग्यारहवीं विधि ॥

मूसली काली १ पैसाभर, मूसली सफ़ेद १ पैसाभर, रत्नज्योति १ पैसाभर, अजमोद १ पैसाभर, सेमर का मैदा १ पैसाभर, शतावरि १ पैसाभर, मोचरस १ पैसाभर, समुद्रशोष १ पैसाभर, तालमखाना १ पैसाभर, बीजबन्द १ पैसाभर, पिस्ता का फूल १ पैसाभर, धनियांके चावल १ पैसाभर, दक्षिणी गोखुरू १ पैसाभर, रूमीमस्तगी १ पैसाभर, वंशलोचन १ पैसाभर, सालब-मिश्री १ पैसाभर, शकाकुल १ पैसाभर, उटंगन के बीज २ माशे, चिरचिरे की गिरी १ पैसाभर, धावे के फूल १ पैसाभर, जाय-फल ३ माशे, इलायची ३ माशे, दालचीनी ३ माशे, शीतल-चीनी ३ माशे, सेलखड़ी ६ माशे, चुनियांगोंद ६ माशे, कीकरका गोंद ६ माशे, पिस्ता १ पैसाभर, अखरोट की गिरी १ पैसाभर, नारियल की गिरी १ पैसाभर, बादाम की मींगी १ पैसाभर, तरबूज़केबीज १ पैसाभर, चिरौंजी १ पैसाभर इन सब औषधोंको कूट पीसकर शहद में माजून पकावे। तोले तोलेभर की गोली बांध खाय तो धातु पुष्ट और बल करे तथा और भी गुणकरे ॥

अथ धातुपुष्टकी बारहवीं विधि ॥

तालकेश्वर २ माशे, बङ्ग ३ माशे, दूधी ७ माशे, तिलकूट ९ माशे, पवांर के बीज ९ माशे, बीजवन्द ९ माशे, गोखुरू ९ माशे, सोंठि ८ माशे, मिर्च ९ माशे, गुड़ ५ पैसेभर इन सब को कपरछान कर गुड़ में गोली बांधे। १ गोली नित्य प्रातःकाल खाय और खट्टे, मीठेसे परहेज़ रक्खे तो धातु पुष्ट हो ॥

अथ धातुपुष्ट की तेरहवीं विधि ॥

अजवाइन खुरासानी, चीनियांकपूर, जायफल, लवङ्ग, बीज-बन्द, अकरकरा, शिंगरफ़, माजूफल, फिटकरी, सुहागा इन सब औषधियों को बराबर ले कपरछान करे परन्तु कपूर पीछे से डाले फिर नींबूके रसमें झरबेरी बेर की समान गोली बांधे। १ गोली

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

प्रातसमय खाय तो सब धातुव्याधि जायँ। और गेहूं, चने और घी खाय। खटाई आदि से परहेज़ करे अथवा बादाम, केसर, माजू छोटी, जावित्री, शहद मीठेतेल में पीस पिस्ते के फूल और गुड़ में झरबेरी प्रमाण गोली बांधे फिर १ गोली प्रातःकाल खाय तथा खटाई और गर्म चीज़ों से परहेज़ करे तो धातु पुष्ट हो॥

अथ धातुपुष्ट की चौदहवीं विधि॥

हनद गूंद और गिलोय बराबर ले चूर्ण कर सबेरे गौ के घृत और दूध से खाय। पथ्य-गेहूं और चने की अलोनी रोटी का करे तो धातु पुष्ट हो १ अथवा बबूर की फली, दूधी, झरबेर की जड़की छाल ये सब समान ले उसमें चीनी मिलाय २ पैसेभर नित्य दूध के साथ सबेरे खाय तो धातु पुष्ट हो २ अथवा तालमखाना, गोखुरू, समुद्रशोष, सुपारी का फूल, अफ़ीम, पारा, बबूल का गोंद, सेमर की छाल, स्याह मूसली, श्वेत मूसली, बीजबन्द, कमलगट्टा ये सब औषध २ टंकभर ले उसमें २१ पैसे भर सिंघाड़े का आटा और २६ पैसेभर चीनी मिलाय १ पैसा भर नित्य खाय तो धातु पुष्ट हो। परहेज़ से रहे ३ अथवा तालमखाना १ पैसाभर, गोखुरू १ पैसाभर, शिलाजीत १ पैसा भर इन सबको एकत्र पीस ३ पैसेभर चीनी मिलावे फिर ७ दिनतक धेला धेला भर नित्य खाय और परहेज़ करे तो धातु पुष्ट हो ४ अथवा तालमखाना ५ पैसेभर, तज ५ पैसेभर, चीनीगोंद ५ पैसेभर सबको पीस राखे फिर उसमें दुगुना शहद मिलाय २ पैसेभर नित्य दूधके साथ निगलजाय। इसका सेवन २५ दिनतक करे और दूध ६ पैसेभर से शुरू करे और सेरभरतक नित्य बढ़ाता जाय तो धातु अतिपुष्ट हो—इति वाजीकरणाधिकार नपुंसकपनेके दूर करने की विधि सम्पूर्ण॥

इति द्वाविंशतितमस्तरङ्गः २२॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ शरीर की पुष्टाई का यत्न ॥

बूढ़ेपने को दूर करने के लिये सात धातु और सात उपधातु तथा चन्द्रोदय आदि रसोंकी क्रियाएं और उनके खानेकी विधि ॥ सोना १ रूपा २ तांबा ३ पीतल ४ सीसा ५ रांगा ६ लोहा ७ ॥

अथ मृगाङ्ककी विधि ॥

सोने का पतला वर्क़ कराय गर्मकर तेल, कांजी, मट्ठा, त्रिफला, गोमूत्र, कुलत्थ इनके काढ़े में दो दो बार बुझावे फिर सोने से दूना पारा ले और सोने के वर्क़ों को खटाई के साथ खरल करे पीछे उसका गोला कर फिर उन दोनों की बराबर आंवलासार गन्धक उस गोलेके नीचे ऊपर दे सरवे के संपुटमें धर कपड़मिट्टी दे गजपुट में फूंक दे इसतरह इसमें ३ पुट दे तब यह मृगाङ्क चोखाहो १ अथवा सोनेका चोखा वर्क़ ले उसका सोलहवां हिस्सा सीसा डाले फिर इन दोनों को खटाई से खरल करे पीछे इसके नीचे ऊपर शोधीगन्धक इसकी बराबर दे और सरवे में धर उसको कपड़मिट्टी कर गजपुट में फूंक दे इसतरह सात पुट दे तो चोखा मृगाङ्क बने २ अथवा सोने का वर्क़ मँगाय उसकी बराबर उसमें खटाई से खरल में पारा चढ़ावे पीछे उसमें कचनार के रसकी १ पुट दे पीछे उसमें अग्निलाल के रस की ३ पुट दे फिर करिहारी की जड़के रसकी १ पुट दे पीछे उसमें सोने के वर्क़ से चौथे हिस्से मोती डाले और खरल करे पीछे उसमें सबकी बराबर शोधीगन्धक डाल २ दिन खरल करे फिर उसका गोला कर, सरवे में धर, कपड़मिट्टी कर गजपुट में फूंक दे स्वांग शीतल होनेपर निकाले तो मृगाङ्क चोखा बने ३ ॥

अथ मृगाङ्कमारणकी द्वितीय विधि ॥

रांगा १ पैसाभर, सीसा १ पैसाभर ले एक नये ठीकरे में चूल्हे पर चढ़ाय नीचे बबूल की लकड़ी जलावे जब ये तीनों पिघल जायँ तब उसमें विषखपराकी सूखी जड़ के छोटे छोटे टूक

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

डालताजाय और करछी से चलाता जाय जब वह भस्म होजाय तब एकत्रकर दाब रक्खे शीतल हो तब उतारे और १ रत्ती पान के साथ खाय तो दाह जाय और धातु बढ़े ॥

अथ मृगाङ्क के खाने की विधि ॥

१ रत्ती मृगाङ्क और २॥ टंक शहद में १ पीपल मिलाय खाय तो खांसी, श्वास, क्षयी, अरुचि आदि सब रोगों को दूर करे। २ महीने खाय तो शरीर को पुष्ट करे। पथ्य से रहे, खटाई आदि न खाय-इति मृगाङ्क की विधि ॥

अथ रूपरस की विधि ॥

चांदी का वर्क ३ भाग और हरताल का वर्क १ भाग ले पीछे इन दोनों को खटाई से खरल करे फिर इनका गोला कर सरवे के संपुट में धर गजपुट में फूंक दे इसीतरह १४ पुट दे तो रूपरस निपट चोखा बने। एक रत्ती नित्य खाय तो बहुत गुण करे अथवा चांदी के पत्तों के नीचे ऊपर रूपामक्खी बराबर कर दे और सरवे के संपुट में फूंक दे तो रूपरस चोखा हो। १ रत्ती १ महीने तक खाय तो बहुत गुण करे ॥

अथ दूसरी विधि ॥

रूपा २ पैसेभर और जस्ता धेलाभर ले नीलाथोथा से १ पहर शोधे, १ पहर नींबूके रसमें शोधे, १ पहर गौके मट्ठे में शोधे, १ पहर खरगोश के मूत्रमें शोधे, फिर तांबे के पात्रमें धर के फूंक दे तो रूपा सिद्ध होजाय। १ रत्ती नित्य आमले के मुरब्बे में खाय तो बहुत गुण करे ॥

अथ तीसरी विधि ॥

खजूर का रस १० सेर, चूना २ सेर और १ शंख मँगाय कपरछान करे फिर इन तीनों को मिलाय ४ पहर कपरछान करे पीछे इन सबको १ शंखके भीतर भर उसमें २ पैसेभर शुद्धरूपा धरे फिर शंखपर ३ कपरौटीकर उसे एक मटके के भीतर थोड़ासा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

चूना डाल बीचमें लटकावे और मटके के पेट में छेदकर उसमें १ नली लगावे फिर उसका मुँह मूंद कपरौटी करे और नली के मार्ग से मटके के भीतर खजूर का रस डाले तथा नली का मुँह मूंद गढ़ा खोद घोड़े की लीद में ८ दिन गाड़ रक्खे तो रूपा सिद्ध हो। चावल प्रमाण पानमें प्रातसमय खावे तथा दूध और घृत का सेवन अधिक करे तो भूख लगावे, शरीर को पुष्ट करे और भी अनेक गुण करें॥

अथ चौथी विधि॥

१ गोह मार उसमें जितना समावे उतना रांगा भर मूड़ और पूंछ काट दोनों मार्ग सी दे फिर उसको एक कुम्हड़ा मँगाय ऊपर सात कपरौटी कर सुखावे जब वह सूख जाय तब उसमें गोह भरे और उसके मुँहपर ३ कपरौटी कर गजपुट में कंडा की आंच से फूंकदे जब शीतल हो तब निकाले तो सिद्ध हो। यह १ रत्ती तोले भर रांग को बेधे और ५० वर्ष की अवस्था पर खाय तो बहुत गुण करे और धातु बढ़ावे॥

अथ पांचवीं विधि॥

रांग ६ पैसेभर ले ढांक की लकड़ी में टांकी दे ऐसा छेद करें कि जिसमें १ सेर रांग समा जाय फिर उसमें नोन बिछावे उसके ऊपर नकछिकनी बिछाय रांग धरे फिर ऊपर नोन बिछाय और वज्रमुहाकर उस पथली में चारों ओर से कंडा भर आंच दे जब शीतल हो तब निकाले तो सिद्ध हो। यह १ रत्ती तोलेभर रांग को बेधे और खाय तो पूर्ववत् गुण करे॥

अथ छठी विधि॥

गन्धक १ पैसाभर, शोरा १ पैसाभर, गोभी का रस १२ टका भर ले फिर प्याले मँगाय उनमें चार चार टकाभर गोभी का रस डाले पीछे शोरा और गन्धक ले गोभी के रस में २ पहर खरल करे फिर उसको प्याले में डाल चूल्हे पर चढ़ाय दे और

In Public Domain, Champal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

करछा से टालतेजाय जब रस जलजाय तब दूसरा प्याला चढ़ाय दे फिर तीसरा प्याला चढ़ावे और ऊपरसे रस डालता जाय जब पिघल जाय तो भस्म हो। यह १ रत्ती तोले भर रांग को बेधे और पूर्ववत् बहुत गुण करे॥

अथ सातवीं विधि॥

पारा और रूपे के ताव दोनों बराबर ले फिर इनको तेल, मट्ठे, गोमूत्र, कांजी और कुल्थी के क्वाथ में शोधकर त्रिफला के क्वाथ से शोधे फिर इनको खरल में जबतक पिट्ठी के प्रमाण न होजावे तबतक घोटे फिर गन्धक और हरताल ये दोनों बराबर ले उस में मिलाय नींबू के रस से घोटे तदनन्तर करवे में धरके कपरौटी कर आंच दे तो रूपा सिद्ध होजाय। यह अनेक गुण करता है- इति रूपरस की विधि सम्पूर्ण॥

अथ तांबेश्वर की विधि॥

चोखे तांबेके पत्र गाढ़े कराय तेल में, मट्ठे में, त्रिफले के रस में सात बार शोध ले पीछे उन पत्रों की बराबर रूपामक्खी महीन पीस उनके नीचे ऊपर धर सरवे में संपुट कर गजपुट में फूंक दे तो तांबेश्वर चोखा बने पीछे इसे १ रत्ती नित्य १ महीने तक खाय तो श्वास, खांसी आदि सर्व रोग जायँ और बहुत गुण करे॥

अथ दूसरी विधि॥

तांबा ५ तोले ले पत्र कराय प्रथम गोमूत्र में ७ बार फिर माठामें ७ बार बुझावे पीछे इमली के फूल मँगाय १ हांड़ी में भरे उसके बीच में परत दे तांबे के पत्र में धरे और पानी डाल बारह पहर की आंच दे पीछे पत्ररेतके कढ़ाई में डाल नींबू के रसमें खरल करे फिर ५ तोले पारा मँगाय कागजी नींबू के रसमें २ पहर खरल कर तांबेमें चराय दे पीछे सात तोले गन्धक मँगाय नींबू के रस में खरल कर उसकी गोली बनावे। गोली

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

के भीतर तांबा धरे फिर उसके ऊपर नींबू के रस से ७ कपरौटी कर मटकी मँगाय मटकी के ऊपर ७ कपरौटी करके सुखाय उसमें बालू भर बीच में यन्त्र धरे और वज्रमुहा कर भट्ठी पर चढ़ाय २४ पहर की आंच दे जब शीतल हो तब उतारे। इस की १ रत्ती मात्रा खाय तो ५ सेर की भूख हो, सर्दी दूर हो, नामर्द मर्दहो और कास,श्वास,वात, पित्त जाय और वात दूरहो॥

अथ तीसरी विधि॥

तांबा ५ पैसेभर ले पत्र करावे फिर उन्हें तपाय सरसों के तेल, नकछिकनी के रस, धिकुआरके रस और आक के दूध में सात सात बार बुझावे पीछे इमली के फूलों में १२ पहर औटावे फिर खटाई की हांड़ी में बन्दकर ३ दिन अग्नि करता जाय चौथे दिन रेतवावे और इस तांबे के चूर्ण में २॥ पैसे भर पारा मिलाय कड़ाही में डाल नींबू के रस में खरल कर पारा चराय दे फिर उसमें १ पैसाभर गन्धक डाल नींबू के रस में गोली बनावे तदनन्तर कुम्हार से कटोरा सा संपुट बनवाय उसमें चौराई की जड़ पीसके बिछावे उसपर गदापुरैना की जड़ पीस गोली के ऊपर लपेटे फिर चौराई की जड़ पीस संपुट के भीतर बिछावे और उस पर गन्धक डाल भीतर गोला धर संपुट को बन्दकर ऊपरसे ७ कपरौटी करे और उसे मोटी हांड़ी में धरे। हांड़ी पर ७ कपरौटी कर पेंदी में छेदकर उसमें बालू भरे उस बालू के बीच में तांबे के गोले को धर हांड़ी के मुँह पर परिया धर वज्रमुहा करे उस पर भी ७ कपरौटी करे फिर उसे भट्ठीपर चढ़ाय नीचे २४ पहर तक तेज अग्नि लगावे जब स्वाङ्गशीतल होजाय तब उतारे तो औषध सिद्ध हो फिर उसमें अकरकरा, लवङ्ग और कुटकी मिलाय बँगलापान के रस में ऐसी गोली बांधे जिसमें गोली पीछे २ रत्ती तांबा आवे। १ गोली खाय तो खांसी, कफ, ऊर्ध्वश्वास, आमवात और धातुक्षीणता दूर हो

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तथा काम की वृद्धि हो। जो इस औषध को नियम कर खाय तो वृद्धदेह तरुण हो और देह के वातविकार जायँ, नेत्रों में ज्योति बढ़े और बहुत गुण करे॥

अथ चौथी विधि॥

एकसेर तांबे के पत्र कराय गोमूत्र और मट्ठे तथा तेल में तीन तीन बार बुझावे फिर पारा पाव सेर, गन्धक पाव सेर इन दोनों को घिकुआर के रस में एक दिन घोट तांबे के पत्रों पर लेप करे फिर सुखाय दूसरीबार लेपकर हांड़ी में धरे और ऊपर परिया से मुँह बन्द कर हांड़ी को चूल्हे पर चढ़ाय नीचे से ८ पहर अग्नि जलावे जब लाल होजावे तब निकाल ले तो तांबेश्वर सिद्ध हो। १ रत्ती प्रतिदिन पान में खाय तो सर्व रोग जायँ और गुण करे॥

अथ पांचवीं विधि॥

तांबे के पत्र करावे फिर पारा और गन्धक बराबर ले नींबू के रस में घोट उन तांबे के पत्रों पर लेप करे फिर उन्हें संपुट में धर ऊपर सात कपरौटी कर बकरी की लेंड़ी की आंच में ७ बार गजपुट दे जब स्वाङ्ग शीतल हो तब निकाले तो तांबेश्वर सिद्ध हो। मात्रा १ रत्ती पान के साथ ले तो सर्वरोग जायँ अथवा तांबेश्वर तीन रत्ती, तज, पत्रज, खुरासानी बच, नागकेसर, लवङ्ग, जायफल, जावित्री, त्रिकुटा, अकरकरा, मंजीठ ये औषध चार चार माशे ले घिकुआर के रस में गोली बांधे अथवा शहद और मिश्री में गोली बांधे। यह प्रतिदिन खाय तो धातु बढ़े और कास, श्वास, बीसों प्रमेह, आमवात, क्षयी, अजीर्ण, रक्तपित्त और दाह ये सब रोग जायँ और भी अनेक गुण करे॥

अथ छठी विधि॥

तांबा १ पैसाभर, नैनियांगन्धक १ पैसाभर ले डिबिया में धर कपरौटी कर अरने कंडों में दहका दे जब शीतल हो तब

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS

निकाल पथरसंगा और मूली का रस धेला धेला भर डाल खरल करे फिर आंच दे तो तांबेश्वर सिद्ध हो और ये सब औषधें बङ्ग में डाल खरल कर फूंक दे तो बंगेश्वर सिद्ध हो ॥

अथ सातवीं विधि ॥

४ पैसेभर तांबे की कटोरी बनवाय गर्म कर १०१ बार नींबू के रस में बुझावे पीछे २ सेर काले धतूरे के पत्तों की २ रोटी बनावे उनमें से एक हँड़िया की पेंदी में बिछाय उस पर ४ पैसे भर आमलासार गन्धक पीसके धरे उसके ऊपर वह रोटी औंधावे फिर दूसरी रोटी कटोरी के ऊपर धर दोनों का मुख बन्द कर दे फिर हँड़िया का मुख बन्दकर १२ पहर की आंच दे जब स्वाङ्ग शीतल हो तब निकाले तो तांबेश्वर सिद्ध हो। मात्रा १ सरसों की बराबर पान में २१ दिनतक खाय तो कायाकल्प हो, ज्वर जाय और बहुत गुण करे ॥

अथ आठवीं विधि ॥

तांबा १ पैसाभर, रांग धेलाभर, नकछिकनी छदामभर इन सबको घरिया में धर फूंक दे तो तांबा भस्म होजाय फिर उसमें पिसीहुई पथरसंगा की जड़, नकछिकनी समेत पारा गन्धक मिलाय घरिया में धर फूंक दे तो तांबेश्वर सिद्ध हो ॥

अथ नवीं विधि ॥

दोहा ॥

घोरि जँभीरी रङ्ग सों पारा गन्धक दोय।
पत्र लपेटै ताम्र के तासों यह विधि होय ॥
सरवा मध्ये पत्र धरि कपरौटी करवाय।
तीन बार इमि आंच दे ताम्र भस्म होजाय ॥

अथ दशवीं विधि ॥

प्रथम अधोतर या गजी की चद्दर ले चने के खेत में कई दिन तक प्रातःकाल फेरे जब उसमें चनों की नोनी लग जाय तब

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

उसकी नोनी झार ले पीछे सात चुकरिया मँगाय उनमें नोनी भर बीचमें एक एक पैसा धरे फिर उनके मुँह दीवालों से बन्द कर ऊपर से कपरौटी कर सुखावे और गढ़ा खोद उसमें कंडा भर बीच में चुकरिया धर फूंक दे जब अग्नि शीतल हो तब निकाल ले तो वह १ रत्ती तोले भर रांगा को बेधे। यह सदाशिव का कहा हुआ है—इति बङ्गेश्वरविधि ॥

अथ नागेश्वर की विधि ॥

शीशे को गलाय तेल में, मट्ठे में, गोमूत्र में, कांजी में, त्रिफले के पानी में और आकके दूधमें ७ बार बुझावे पीछे कड़ाही में धर चूल्हे पर चढ़ाय नीचे अग्नि जलावे पीछे शीशेके ऊपर पीपल के छिलके का चूर्ण और इमलीके छिलके का चूर्ण शीशे से चौथाई ले उस शीशे के ऊपर थोड़ा थोड़ा डालता जाय और लोहेकी कड़छी के पेंदेसे उसे १ दिन निरन्तर रगड़ता जाय पीछे इसे जीरे से उसन गजपुट में फूंकदे पीछे इसीतरह जम्भीरी के रसकी १० पुट दे पीछे नागरबेल के पत्तोंके रसकी १० पुट दे फिर शीशे के बराबर मैनसिल ले उसे कांजी से खरल करे पीछे टिकड़ी बांध सरवे में धर गजपुट में फूंक दे। स्वाङ्ग शीतल होनेपर निकाले इसीतरह ६० पुट दे तो नागेश्वर चोखा हो, बहुत गुण करे, सब रोगों को दूर करे। खाने की मात्रा १ रत्ती तथा २ रत्ती ॥

अथ दूसरी विधि ॥

शीशे को शोध कड़ाही में चढ़ाय नीचे अग्नि जलावे फिर केवड़े के घोटे से १ दिन निरन्तर रगड़ता जाय तो वह भस्म लाल हो। उसकी मात्रा १ रत्ती नित्य २१ दिन खाय तो बहुत गुण करे ॥

अथ तीसरी विधि ॥

शीशा ५ पैसे भर, मैनसिल १ पैसा भर, छालिया गन्धक

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

१ पैसाभर लेकर शीशे के पांच पत्र करावे पीछे दो संपुट मँगाय दोनों औषध महीन पीसकर उनमें बिछावे उस पर परत देके शीशे के पत्र धरे फिर ऊपर से और औषध दे ऊपर से दूसरा दिया धर ७ कपरौटी करे फिर उस संपुट को एक अँगीठी में धर अरने कण्डों से गजपुट में फूंक दे जब शीतल हो तब निकाले। १ रत्ती खाय तो धातु बढ़े और भूंख बहुत हो॥

अथ बङ्गेश्वर की विधि॥

रांग को गलाय गलाय तेल में, मट्ठे में, गोमूत्र में, कांजी में और त्रिफले के पानी में ७ बार बुझावे फिर आक के दूधमें सात बार बुझावे पीछे कड़ाही में धर चूल्हे पर चढ़ाय रांगे से चौथाई पीपलका छिलका और चौथाई इमलीका छिलका महीन पीस रांग के ऊपर डालताजाय और कड़ाही के पेंदेसे २ पहरतक रगड़ता जाय तब वह रांगा भस्म होताहै पीछे रांगे के बराबर हरताल ले खटाई से खरल कर गजपुट में फूंक दे इसीतरह १० पुट दे तब बङ्गेश्वर सिद्ध हो। मात्रा १ रत्ती की अथवा बङ्ग और पारा पावपावभर ले इनको एकजीव कर पत्र करे पीछे एक बड़ा उपला ले उसमें कसेला का चूर्ण पावभर बिछाय उसके ऊपर रांगे का टुकड़ा धरे फिर ऊपर कसेले का चूर्ण धर आस पास उपले धरे और विना पवन की जगह में फूंक दे तो उस रांग के फूले होजायँ। यह बहुत गुण करता है॥

अथ दूसरी विधि॥

आधसेर रांग को कड़ाही में पिघलावे पीछे ऽ३ अजवायन और हल्दी ऽ। भर ले एकत्र पीस कड़ाही में रांगपर बुरकता जाय और ढांक की लकड़ी से चलाता जाय तो रांग मरे। इस के खाने की विधि यह है कि ३ तोले बङ्ग और लवङ्ग, इलायची, जायफल, जावित्री, सोंठि, मिरच, पीपल, तज, पत्रज, नागकेसर ये सब औषध बराबर ले १ टंककी गोली बांधे। १ गोली

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

प्रतिदिन खाय तो शुक्रवृद्धि हो और कृशता, हड़फूटन, दाह, मूत्रकृच्छ्र और ज्वर ये सब रोग जायँ ॥

अथ तीसरी विधि ॥

रांगा और पारा बराबर ले अग्नि दे तो रांगा मरे और जो गुण स्वर्ण के खाने से हों वे ही बङ्गेश्वरसे होते हैं ॥

अथ चौथी विधि ॥

रांगा ५ पैसाभर, हल्दी १५ पैसाभर, दोनों अजवायन १५ पैसाभर ले कपरछान कर रांगेको गर्म करके कोरे खपरा में चढ़ाय पिघलावे और ऊपर से थोड़ी थोड़ी औषध डालता जाय जब सिद्ध होजाय तब सब समेट एक दीवा में बन्दकर कड़ी आंच दे जब शीतल हो तब निकाले फिर लवङ्ग, इलायची के अनोपान से खाय तो जलन जाय, भूंख बढ़े। सोंठि से ले तो वात जाय, भूंख बढ़े और अनेक गुण करे ॥

अथ पांचवीं विधि ॥

रांगा को लोहे की कड़छी में तपाय गौ का मट्ठा, तिलका तेल और गोमूत्र को बहेड़ेकी कठौती में डाल इक्कीस इक्कीस बार बुझावे पीछे गजभर लंबा और गजभर चौड़ा गढ़ा खोद उसमें अरने कंडे भर ऊपर से पीपल की छाल बिछाय उसके ऊपर रांगा धर पीपलकी छाल धरे फिर और कंडा धर फूंक दे तो भस्म हो ॥

अथ छठी विधि ॥

टाट पर भांग बिछाय रांग के पत्र धरे इसी भांति कई परत देके गजपुट में फूंक दे तो बङ्ग सिद्ध हो ॥

अथ सातवीं विधि ॥

चौपाई ॥

पहिले दूध आक को लावे। तासों ले हरताल पिसावे ॥
रांग पत्रसों वह हरताला। लपिटावे इत उत ततकाला ॥
ता ऊपर पीपल को बकला। सूखो कूटि देय पुनि सकला ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

धरि सरवा में करि कपरौटी। गजपुट आंच देय पुनि मोटी॥
सात बार यहि विधि पुट देवे। पीपल बकला फिर के लेवे॥
बार बार इमि आंच दिखावे। मरे बङ्ग सो कामे आवे॥

अथ सार की विधि॥

गजबेलि के लोहे का चूर कराय उसे तेल में, मट्ठे में, गोमूत्र में और कांजीमें सात सात बार बुझावे पीछे छीलर के रस में खरल कर गजपुट में फूंक दे पीछे ग्वार के पट्ठे की तीन पुट और आक के दूधकी, थूहरके दूधकी, त्रिफलेके रसकी और डोड़ा के पत्तेके रसकी सात सात पुट दे इसी तरह पुट दे दे भस्म कर पत्थरके ऊपर पीसे जबतक वह जल ऊपर तिरे तब तक भस्म करे तो बहुत गुण करे अथवा गजबेलि के चूर में नींबू के रसकी और नौसादर की २१ पुट दे गजपुट में फूंकता जाय और पीसता जाय तो सार चोखा हो और गुण बहुत करे। मात्रा १ रत्ती नित्य खाय तो सब रोगों को दूर करे॥

अथ दूसरी विधि॥

चौपाई॥

करि सरिया गजबेलि रितावे। ताको चूर्ण तौलि मँगवावे॥
सो चूरण का द्वादश अंशा। ईंगुर डारे विधि औ शंशा॥
घृतकुमारि को डारे नीरा। दोय पहर लों घोटे धीरा॥
सरवा मधि धरि करि कपरौटी। आंच देय गजपुट की मोटी॥
फिर फिर घोटे फिर फिर आंचा। बार बार इमि करिये सांचा॥
तब लोहा मरि जाय निदाना। होय सिद्ध औषध परमाना॥

अथ रसमारण विधि॥

लोह और चूना ५ पैसाभर, मैनसिल धेलाभर, कसीस धेलाभर ये दोनों औषध सूखी पीसे फिर औषधों के तीन भाग करे एक भाग चुकरिया में पानी डालके डारे फिर लोह और चूना दोनों को लोह के बासन में डाल लोहे के घोटेसे घोटे और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

औषधों का पानी डालताजाय इस भांति सात दिन घोटे पीछे सात आंच दे जब शीतल हो तब उतारे तो सिद्ध हो। अनुपान–सोंठि १ टकाभर, मिश्री १ टकाभर ये दोनों औषधें मिलाकर २१ पुड़िया बांधे और क्षीणधातुवाले को दे ऊपर से १ सेर गौ का दूध पिलावे तो धातुवृद्धि हो॥

अथ दूसरी विधि॥

सार २ पैसाभर ले मूंगा के रस में ७ बार बुझावे फिर मूली के रस में ७ बार बुझावे पीछे धेलाभर नौसादर ले सार में मिलाय सूखे खरल करे और थोड़ासा पानी गेर चुकरिया भर के ३ दिन राखे तो सार सिद्ध हो। शीशा धातु को १ सेर दूध के अनुमान से १ रत्ती दे तो धातु बढ़े–इति सारविधि॥

अथ उपधातुओं के मारण की विधि॥

उपधातुएं ये हैं–सोनामक्खी और रूपामक्खी १ अभ्रक २ मैनसिल ३ हरताल ४ पारा ५ खपरिया ६ सुरमा ७॥

अथ सोनामक्खी का शोधन॥

सोनामक्खी ३ भाग, सेंधानोन १ भाग ले इन दोनोंको लोहेके करछुले में धर बिजौरे के रसमें और जँभीरी के रसमें जहां तक लोहे के पत्र लाल होजायँ तबतक पकावे तो सोनामक्खी शुद्ध हो १॥

अथ सोनामक्खी का मारण॥

सोनामक्खी को कुलत्थ के काढ़े में पीस सरवे के सम्पुट में धर गजपुट में फूंक दे अथवा तेल में पीस गजपुट दे या मट्ठेमें पीस गजपुट दे अथवा बकरी के दूध में पीस गजपुट दे तो सोनामक्खी मरे। इसकी मात्रा १ रत्ती खाय तो गुण करे २॥

अथ अभ्रक के शोधन और मारण की विधि॥

काले भोडल को अग्नि में तपाय दूध में बुझावे अथवा चौलाई के रस में बुझावे या खटाई में बुझावे तब अभ्रक शुद्ध

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

हो पीछे अभ्रक का पृथक् पृथक् पत्र कर उन्हें कूट महीन कर सुखाय दे पीछे उन्हें कम्बल में धरे और उसमें भूसीसमेत शालि मिलाय अभ्रक को शालिसमेत मसल मसल महीन कम्बल से पानी कर पृथक् बासन में रस निकाले तब यह धान्याभ्रक हो पीछे इस अभ्रक को आकके दूध में खरल कर इसकी टिकड़ी बांधे पीछे सुखाय आकके पानी में लपेट कपड़मिट्टी दे विना सरवे गजपुट में फूंक दे इसीतरह ७ पुट दे और इसीतरह थूहर के दूध की ७ पुट दे तथा इसी प्रकार ग्वार के पट्ठे की ७ पुट दे और चौलाई के रसकी ७ पुट दे अथवा नागरमोथा के काढ़ेकी, कांजीकी, चित्रकके काढ़े की, जँभीरी की, त्रिफलेकी अथवा गोमूत्र की इन सबकी सात सात पुट दे तो अभ्रक बहुत अच्छी बने। यह अभ्रक नित्य १ रत्ती २ महीने तक खाय तो प्रमेह आदि सब रोग जायँ और शरीर को बहुत पुष्ट करे और नपुंसकपना दूर हो॥

अथ अभ्रक की दूसरी विधि॥

सफ़ेद भोडल की बराबर गुड़ को पानी में घोलकर भोडल के पत्रों में गाढ़ा गाढ़ा लेप करे और उन पत्रों के ऊपर शोरा बुरकाता जाय। शोरा भोडल से आधा ले और भोडल की तह करता जाय उस भोडल की तहको उपलों में फूंक दे वह भोडल खिलजाय निश्चन्द्रहो तो यह भी गुण करे।मात्रा १रत्तीकी॥

अथ अभ्रक मारने की तीसरी विधि॥

डेढ़ तोले अभ्रक लेकर टाट की थैली में बांधकर खूब मले जब वह मैदासी होजावे तब उसमें डेढ़ तोला गुड़ और डेढ़ तोला क़लमीशोरा मिलाकर खरल करे फिर उसके चार भाग करे और चारोंको चार बड़े बड़े उपलों में खोदकर रक्खे और उन पर एक एक उपला और रक्खे फिर एक गढ़ा हाथभर गहरा खोदकर उसमें जितने अरने उपले आवें भरकर उन चार

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

उपलोंको रक्खे फिर आंच लगादे जब शीतल हो तब निकाले इसीप्रकार से हर दफ़े गुड़ और क़लमीशोरा मिलाकर चार दफ़े फूंके तो सिद्ध होजाय। २ रत्तीप्रमाण मुनासिब ओषधियों के साथ खावे तो हर एक बीमारी को आराम करे॥

अथ चौथी विधि॥

श्याम अभ्रक को दूध, तेल, कांजी और कुल्थी के क्वाथ में इक्कीस इक्कीस बार बुझावे फिर शोराको गर्म पानी में १०१ बार बुझावे फिर खरल कर टिकिया बांध सुखावे पीछे टिकिया की बराबर पारा दे गजपुट की आंच दे तो सिद्ध हो यदि कच्चा रहे तो फिर आंच दे फिर और औषध के साथ खाय तो सर्दी और गर्मी के सब विकारों को दूर करे॥

अथ पांचवीं विधि॥

भुड़हर १० टंक और पुराना गुड़ ⅝ शोरा ⅝ लेकर पुराने गुड़ और दोनों को ऊपर नीचे चढ़ाय। ⅝ कंडों में फूंक दे जब शीतल हो तब सावधानी से निकाल लेवे—इति अभ्रकविधि॥

अथ हरताल का शोधन॥

पीले हरताल का पत्र कर पोटली बांध हांड़ी में कांजी भर दोलायन्त्र में १ पहरतक पकाइये पीछे चूने की कली के पानी में पोटली कर दोलायन्त्र से ४ पहर पकाइये इसीतरह हरताल को पकावे तो हरताल शुद्ध हो॥

अथ हरताल का मारण॥

शोधे हरताल को खरल में महीन पीस दूध के रस में २ दिन खरल करे पीछे खरैटी के रसमें २ दिन खरल करे पीछे इसका गोला कर छाया में सुखावे तदनन्तर छीले की राख को हांड़ी में दाब दाब भरे उसके बीच में इस हरताल के गोले को धर हांड़ी को चूल्हे पर चढ़ाय नीचे ३ दिनतक निरन्तर क्रमसे मन्द, मध्य और तेज अग्नि जलावे और उसका धुआं न

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

निकलने दे यदि धुआं निकले तो धुएंको छीलेकी राखसे मूंदता जाय पीछे स्वाङ्गशीतल होने पर उस हरताल को हांड़ी में से निकाले तब यह हरताल सिद्ध और सफ़ेद हो। खाने में मात्रा १ रत्ती खाय तो सब रोगमात्र को यह दूर करे और भूंख बढ़ावे—इति हरतालमारणविधि॥

अथवा प्रथम हरतालको इस विधि से शोध ले पीछे इस हरताल को ग्वारके पट्ठे के रसमें ३ दिन खरल करे पीछे चूल्हेपर चढ़ाय उसके नीचे ४ पहर अग्नि जलावे फिर स्वाङ्गशीतल होने पर निकाले और वह पूरी तौल उतरे तथा निर्धूम हो उसे पान में १ रत्ती खाय तो यह कोढ़को दूर करता है। खाने में मोठ, चना की रोटी अलोनी खाय तो कोढ़ जाय॥

अथ हरताल की दूसरी विधि॥

हरताल २ पैसाभर, पारा २ पैसा भर ले २ पहर सूखा खरल करे पीछे मूंगाके रसमें, आकके दूध में, सहिंजना के रसमें और मकुना सेंहुड़के दूधमें बारह बारह पहर खरल करे पीछे माटीकी घरिया में भर १०१ कपरौटी करके खूब सुखावे तदनन्तर माथे बराबर गढ़ा खोद उसमें बहुतसी लकड़ी और कंडे भर उसके बीच में उस हरताल के यन्त्र को धरकर फूंक दे जब शीतल होजाय तब युक्ति से निकाले यन्त्र फूटने न पावे। जाड़े में पान के साथ खावे तो ५ सेर की भूंख करे। गर्मी में मक्खन के साथ खाय तो रात्रिभर में सात स्त्रियों से भोग करे॥

अथ तीसरी विधि॥

हरताल ५ पैसाभर ले गोमूत्र में ८ पहर भिजोवे पीछे गोमूत्र, सेंहुड़का दूध, सहदेईका रस, आकका दूध, राई का रस, चिरचिरा का रस, गुवार का रस, बकरी का दूध, नकछिकनी का रस, नींबू का रस और बड़ का दूध इनमें क्रम से तीन तीन दिन खरल करे पीछे चँदिया बांध ७ दिन सुखावे फिर मोटी हांड़ी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मँगाय सात कपरौटी कर सुखाय उसमें पीपल की लकड़ी की राख भर उसके बीचमें भोडल के २ पत्र मँगाय उनके बीचमें उस चँदिया को धर ऊपर से फिर उसी राख को हाथ से दबाय भरे फिर हांड़ी के मुखपर परिया धरके वज्रमुद्रा करे तदनन्तर बड़े चूल्हेपर चढ़ाय ३२ पहरकी आंच दे। प्रथम दीपक कीसी आंच २ पहरतक, मशाल कीसी आंच ४ पहर, खिचरी कीसी आंच ६ पहर, बैंगन कीसी आंच १२ पहर फिर दीपक कीसी आंच ८ पहर तक दे पीछे स्वाङ्गशीतल होजाय तब उतारे। मात्रा २ चावलभर पानके साथ खाय तो सकल कुष्ठ दूर हों॥

अथ चौथी विधि॥

हरताल १ पैसाभर ले पोटली बांध ⅝ गौ के दूध में ४ पहर औटावे फिर उसमें से निकाल हल्दी और त्रिषमें ४ पहर खरल करे फिर नकछिकनी के रस, भोगी के रस, पथरचटा के रस और भांगराके रसमें चार चार पहर खरल करे फिर ⅝ पीपलकी छाल मँगाय उसकी मैदा कर घरिया बनाय उसमें हरताल भर २ घरियों के भीतर धर घरियापर तीनकपरौटीकरेफिर अंगीठी में कंडा भर गजपुट की आंच दे जब स्वाङ्गशीतल हो तब उतार १ रत्ती पान के साथ खाय तो सकल कुष्ठ दूर हों॥

अथ पांचवीं विधि॥

हरताल और पारा धेलाभर ले नींबूके रसमें ४ पहर तक खरल करे फिर चँदिया बांधकर पीपल की राख मँगाय उसे केला के रसमें भिजोय १ हांड़ीमें भरे उसके बीचमें हरताल की टिकिया धरे ऊपर से कुम्हार के आंवां की भांति बन्द करे और नीचे अग्नि जलावे जब शीतल हो तब निकाले परन्तु यंत्र फूटने न पावे तब सिद्ध हो। इसकी १ रत्ती तोलेभर रांगको बेधे॥

अथ छठी विधि॥

हरताल १ पैसाभर लेकर पुराने कंडा को खोल उसकी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS

घरिया बनाय उसमें धरे फिर उसपर कुचिला के पत्तों का रस निचोवे जो हरे पत्ते न मिलें तो सूखे पत्तों को भिगोकर निचोवे पीछे अग्नि दे इस भांति आठ बार करे जब सुहागे कीसी खील होजाय तब बन्द करे तो हरताल की शुद्ध भस्म हो और १ रत्ती तोलेभर रांगको बेधे ॥

अथ सातवीं विधि ॥

हरताल २ पैसाभर और पारा २ पैसाभर ले दोनों को १ पहर खरल करे पीछे मूंगा के रसमें, सहँजने की जड़के रसमें, आकके दूधमें और मकुना सेंहुँड़के दूधमें बारहबारह पहर खरल करे पीछे चँदिया बनाय १२ पहर सुखावे पीछे सरवों के यन्त्र में धर १०१ कपरौटी करे तदनन्तर खूब सुखाकर माथे बराबर गढ़ा खोद उसमें बहुतसी लकड़ी और कंडा भरे उसके बीच में यन्त्र धर कुम्हार के आंवांके समान बनाय आंच दे जब स्वाङ्गशीतल हो तब युक्ति से निकाले जिसमें यन्त्र न फूटे। इसकी मात्रा १ रत्तीभर खाय तो भूख बहुत बढ़े ऽ५ भोजन करे और जबतक जीवे तबतक भूंख न घटे ॥

अथ आठवीं विधि ॥

हरताल ६ पैसाभर और फिटकरी ९ पैसाभर ले सूखी २ पहर खरल करे पीछे आकके दूध में ४ पहर खरल करे फिर चँदिया बनाय ८ पहर सुखावे पीछे उस चँदिया को २ सरवों में धर ३ कपरौटी चढ़ाय सुखावे और कमर बराबर गढ़ा खोद आधे में कंडा भर सरवा धरे उसके ऊपर से और कंडा भर अग्नि दे ऊपर से ढांपि दे जब स्वाङ्गशीतल हो तब निकाल उसमें ये औषधें कपरछान कर मिलावे—लवङ्ग, जायफल, दालचीनी, अकरकरा, कुटकी, जावित्री और अदरक के रसमें २ रत्ती के प्रमाण हरताल, पारा इसकी १ माशाकी गोली बांधे और ४९ दिन खाय तो सकलकुष्ठ दूर हों, देहकी सूजन जाय, धातु पुष्ट

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

हो, देहके मण्डल दूरहों। पथ्य—चनाकी रोटी खाय ४९ दिनपर्यन्त ॥

अथ नवीं विधि ॥

हरताल १० टंक महीन पीसे पीछे २५ टंक सीसे को खपरा में चढ़ाय नीचे अग्नि जलावे जब पिघलजाय तब उसमें हरताल का चूर्ण डाल कड़छी से चलावे जब उसमें अग्नि उठे तब औटेहुए सरफोंका के पानी से बुझावे और १ रत्ती अजवायन के साथ खाय तो नामर्द मर्द हो ॥

अथ दशवीं विधि ॥

हरताल २ पैसाभर ले धिकुआर के रसमें ८ पहर खरल करे फिर सहिंजना की जड़ के रसमें ८ पहर खरल कर गोली बांध सुखाय १ कागजी नींबू के भीतर धरे और ऊपर से सात कपरौटी कर गोला बनावे पीछे पीपल की लकड़ी की राख बनाय हांड़ी में धरे उसके बीच में गोला धर ऊपर से मुँहतक दाबके खूब भरे और हांड़ीपर ७ कपरौटी करे फिर हांड़ी के मुखपर परिया धर वज्रमुद्रा करे तिसपर ३ कपरौटीकर सुखाय भट्ठीपर चढ़ाय २४ पहर आंच दे जब शीतल हो तब उतारे तो हरताल सिद्ध हो। मात्रा १ रत्ती पानके साथ खाय तो काया शुद्ध हो, छठयें दिन खाय तो आगम जाने, सतयें दिन खाय तो तीनों लोक देखे, आठवें दिन खाय तो महादेव को आशीर्वाद होवे, नवें दिन खाय तो धन देखे, दशवें दिन खाय तो हरिणकीसी चौकड़ी फांदे और ग्यारहवें दिन खाय तो सिद्ध हो ॥

अथ ग्यारहवीं विधि ॥

हरताल १ पैसाभर ले तांबा की डिबिया में भरे उसमें ६ पैसाभर बड़े गोखुरू को रस डाल बन्दकर ऊपर कपरौटी करे फिर राखमें गाड़ के ऊपर से आग जलावे और प्रातःकाल उखारले फिर उसमें नींबूका रस और आंवलासारगन्धक डाल अग्नि दे तो हरताल मरे ११ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ बारहवीं विधि॥

तबकिया हरताल ले नींबू के रसमें ३ दिन राखे चौथे दिन निकाल टिकिया बनाय मटका के भीतर पेंदी में धरे ऊपर से सरवा औंधाय उसके चारोंओर फिटकरी बिछावे उसके ऊपर मटका के मुँहतक बालू भरके नीचे अग्नि जलावे जब ऊपर की बालू गर्म हो तब उतारले और चाहे जिस काम में लावे १२॥

अथ तेरहवीं विधि तिजारी के ऊपर॥

तबकिया हरताल १ पैसाभर ले ग्वार के रस में १ पहर खरल करे फिर हरताल से चौगुनी फिटकरी ले १ चुकरिया में नीचे २ पैसाभर फिटकरी धरे और उसपर हरताल धर ऊपर से फिर २ पैसाभर फिटकरी धरे और उसका मुँह बन्दकर ऊपर से कपरौटी कर सवाहाथ गहरा डेढ़ हाथ चौड़ा गढ़ा खोद उस में अरनेकंडे भर बीचमें चुकरिया धरे उसके ऊपर और कंडा धर फूंकदे जब जलकर बुझायजाय और शीतल होजाय तब निकाल इसमें से १ रत्ती बताशे में खाय तो तुरन्त तिजारी जाय २ घड़ी पीछे दूध, भात खाय और जो सन्निपातवाले को दे तो चावलभर अथवा डेढ़चावल भर पान और १ लवङ्ग में खवावे तो चैतन्य हो जो सन्निपात में बहुतही डूबा हो तो पान और लवङ्ग के रस में चटादे तो निस्सन्देह बोध हो १३॥

अथ हरताल के गुण॥

चौबोला॥

श्रीहरताल गुणौघ बतावत चावल एक प्रमाण जो खावे।
पानमें खात हरे सब व्याधिन दूध औ भात जो भोजन पावे॥
होय जो पुष्ट बने अतिबीरज बीरज राखि समाधि लगावे।
और गुणन की गम्य नहीं पर जानत यह सब रोग भगावे॥

अथ चौदहवीं विधि॥

हरताल २ भाग, पारा २ भाग, फिटकरी ५ भाग लेकर शुद्ध

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by.Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

ऋद्धिनाम औषध के रस में घोलकर संपुट में बन्दकर गजपुट में फूंक दे तो हरतालकी भस्म हो॥ इति हरतालमारणविधि॥

अथ चन्द्रोदय की विधि॥

सोने का चोखा वर्क़ १ टकेभर और शोधापारा ८ टकेभर ले अथवा शिंगरफ़ का निकाला पारा ८ टकेभर, शोधा आंवला-सार गन्धक १६ टकेभर ले फिर तीनोंको खरल में डाल नांदण-बरि (नर्मे के फूल) के रससे ३ दिन खरल करे फ़िर ग्वार के पढे केरससे ३ दिन खरल करे फिर इसको सुखाय कांचकी आतशी शीशी में कपड़मिट्टी दे सुखाय इस शीशी में ये सब औषध सोने के वर्क़समेत भरे फिर शीशी का मुँह बांध दे और बालुकायन्त्र में धर चूल्हेपर चढ़ावे नीचे अग्नि जलावे प्रथम मन्द, मध्य और तेज अग्नि दे इसीतरह ३२ पहरकी आंच दे फिर स्वाङ्ग शीतल होने पर बालुकायन्त्र में से शीशी को निकाल चन्द्रोदय को डिब्बी में भर रक्खे इसका रंग शिंगरफ़ सदृश लाल हो पीछे इसमें से मात्रा १ रत्ती ले और इसमें जायफल, भीमसेनी कपूर, समुद्रशोष, लवङ्ग, कस्तूरी ये सब ४ माशे मिलाय नित्य खाय तो गुण बहुत करे ऊपर से औटाय मिश्री के संयोग से रुचि मुवाफ़िक रात्रि में दूध पीवे और मांस आदि पुष्टाई की वस्तु खाय और खटाई न खाय तो बहुत स्त्रियों से संभोग करे तथा यह चन्द्रोदय नपुंसकपने को दूर करता है और वीर्यका बन्धेज करता है—इति चन्द्रोदयरसके बनाने और खाने की विधि सम्पूर्ण॥

अथ स्वर्ण भस्म॥

शुद्ध सोना और उसका दूना शुद्ध पारा नींबूके रसमें घोट गोली कर गोली के समान गन्धक पीस नीचे ऊपर धरे फिर मिट्टीके दो सरवाले एकमें गोला धर दूसरा ऊपरसे ढक दे उसपर कपरौटी कर बिनुवां कंडा की आंच दे। इसे सरावसंपुट कहते हैं।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

इसीप्रकार आगसे निकाल निकाल संपुटकर चौदह बार आंच दे ऐसे प्रति आंचमें गन्धक देनेसे स्वर्णभस्म निर्भय होताहै अथवा माशे भर सोना गलाय उसमें माशे भर सीसा डाल उतार ठण्ढा कर चूर्ण करे फिर नींबूके रसमें गोला बांधे नीचे ऊपर गन्धक धर गोले के समान सरावसंपुट करे फिर गोटाकी आंच दे तो सोना भस्म हो अथवा कचनार के रसमें पारा, गन्धक समान मिलाय खरल करे जब कजली हो तब सोनेके पत्रपर लगावे फिर कचनार की छाल मीसिके उस गोलीपर बहुतसी लपेटे फिर दो घड़िया मिट्टी की बनाय एकमें धर दूसरी ऊपर ढांप कसकर कपरौटी कर सुखाय बड़ी आंच दे इसीतरह प्रथम कही रीतिसे तीन आंच दे जब जिलानेसे न जिये तो उत्तम है फिर उसकी भस्म जैसे कचनारविधानमें कही तैसेही करे। यह करिहारी से भी मरता है। ऐसेही ज्वालामुखी (अरणी) से भी मरता है अथवा मैनसिल से सिंदूर मले फिर मदार के दूध में शतावरि घोट घोट सुखावे तब दश माशे सोना गलावे जब वह चक्कर खाने लगे तब वह मैनासिल सिंदूर का चूर्ण सोनेमें छोड़कर बुकनी देकर तीव्र आंच दे और जबतक वह बुकनी न जलजाय तबतक आंच देतारहे इसी प्रकार से बुकनी दे दे तीन आँच दे तो सोना भस्म हो अथवा कबूतर वा कुक्कुट की बीट दोनों को सोने के पत्रपर लपेटे और उसीके समान गन्धकचूर्ण भी दोनों ओर धरे तब संपुट करे फिर थोड़ीसी भूमि खोद पांच कंडे में फूंक दे इसी प्रकार नौ आंच दे दशवींबार बड़ी आंच ३० कंडे की दे इस प्रकार से सोना भस्म होता है। परंतु ऊपर लिखीहुई विधि करने के पहले वैद्यको उचित है कि स्वर्ण को कांजी, गोमूत्र, कुल्थी क्वाथ इन सबमें तीनतीन बार बुझाकरधातुको शुद्धकरले ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ सुवर्ण के शोधन मारण की क्रिया

दोहा ॥

कूटछान कचनार को रस कढ़ाय गजवाय ॥
तीनबार सोनो तहां डारु सुहागो जाय १
वा सोने की तबक करि पारा तबक समान ॥
डारि खल्ल मधि घोटिके गोला करे निदान २
सोना पारा दोयके सम गन्धक जो लेय ॥
गन्धक गोला के तरे अरु ऊपर वह देय ३
तब गोला वामें धरे कपरौटी करवाय ॥
सुखे आंच गजपुट करे बन के ऊपर लाय ४
तो सोना या यत्न सों भस्म होय मरिजाय ॥

अथ रससिन्दूर की विधि ॥

इसको हरगौरीरस भी कहते हैं। प्रथम पारे को शोध कर खरल में डाल हल्दी, ईंट धूमसा और नींबू का रस इनमें ३ दिन खरल करे तब इसकी सातों कांचली दूर हों पीछे त्रिफला, कांजी, चित्रक, ग्वार के पट्ठे, सोंठि, मिरच, पीपल इनमें ३ दिन खरल करे पीछे लहसुन के रस और जंभीरी के रस में तीन तीन दिन खरल करे तदनन्तर हांड़ी में धर दूसरी हांड़ीका मुख जोड़े फिर मुँह को खाम चूल्हे पर चढ़ावे और ऊपर की हांड़ी की पेंदी पर गीला कपड़ा रक्खे नीचे अग्नि जलावे तब वह पारा ऊपर की हांड़ी की पैदी में जाय लगे तब पारे को निकाल ले अथवा शिंगरफ़ का पारा विधि से निकाल बांझक-कोड़ेके रस में खरल करे पीछे हांड़ी में बांझककोड़ेका रस डाल उस रसमें ये वस्तुएं और डाले—सरफ़ोंका की जड़, ज़मीकन्द का रस, भांगरे का रस, सांभर नोन, सेंधानोन और कांजी ये सब हांड़ी में डाल फिर इसमें डोलकयन्त्र कर कपड़े में पारा बांध ४ पहर पका ले तब वह पारा शुद्ध हो ॥ इति पारा शुद्ध करने की विधि ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथवा हज़ार नींबू के रसमें सोंठि, मिरच, पीपल, राई, सांभरनोन, चित्रक और हींग ये सब औषधें डाल २१ दिन तक इस रसमें पारे को खरल करे तब वह पारा शुद्ध हो। शोधा पारा ५ टकेभर, शोधा आंवलासार गन्धक ५ टकेभर, नौसादर २ टंक, फिटकरी २ टंक इन सबको ३ दिन खरल करे पीछे आतशी शीशी के ७ कपड़मिट्टी दे उसमें औषध भरे फिर शीशी का मुँह खामकर बालुकायन्त्र में धरे और भट्ठी के ऊपर चढ़ावे। नीचे क्रमसे मन्द, मध्य और तेज अग्नि जलावे इसीप्रकार ३२ पहरकी अग्नि दे पीछे स्वाङ्ग शीतल होनेपर बालुकायन्त्र में से शीशी निकाल उसमें से रससिंदूर को निकाल ले। १ रत्ती नित्य पान के साथ खाय और पथ्य से रहे तो यह सब रोगोंको अलग अलग अनोपान से दूर करता है, भूंख लगाता और शरीर को पुष्ट करता है—इति हरगौरीरसकी क्रिया॥

अथवा शिंगरफ़ से निकाला पारा अथवा यही शोधा पारा और आंवलासार गन्धक इन दोनों को बराबर ले और इन्हें बड़ की जटाके रसमें १ दिन खरलकर फिर आतशी शीशी के कपड़मिट्टी दे उसमें भरे फिर इस शीशी को पतली ईंटसे खाम दे और बालुकायन्त्र में शीशी को धर उसे भट्ठीपर चढ़ाय क्रम से २१ पहर मन्द, मध्य और तीक्ष्ण अग्नि दे पीछे स्वाङ्ग शीतल होनेपर रससिन्दूर को निकाले। इसका रंग शिंगरफ़ समान होता है। १ रत्ती पान में खाय तो सब रोगों को दूर करे—इति रससिन्दूरकी क्रिया॥

अथ पारा मारने की विधि॥

पारे को खरल में डाल गूलर के दूध में १ पहर खरलकरे और गोली बांधे फिर गूलर के दूध में चोखी हींग घिस उसकी २ मूसी (घरिया) बनावे और पारे की गोली को मूसी में धर दूसरी मूसी का मुँह जोड़ खाम दे पीछे सुखाय १ सेर ऊपले

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

की भूभल में पकावे जब वह पारा सफ़ेद खिलजाय तब इसकी भस्म हो। यह भस्म सब रोगमात्र को दूर करती है—इति पारा मारने की क्रिया॥

अथवा अपामार्ग के बीजों को महीन पीस उसकी २ मूसी बनावे पीछे गूलर के दूधमें पारे को खरल कर गोली बांधे। गोली मूसी में धर उसके नीचे ऊपर दड़घल के फूल, बायबिड़ंग और खैर इनका चूर्ण रक्खे फिर इस मूसी की गोली कर उसको धवनी से कोयले में धँवावे फिर इसके कपड़मिट्टी दे गजपुट में फूंक दे तब इसकी भस्म पूरीतोल उतरे। यह भस्म सब रोगों को दूर करती है—इति पाराभस्म की क्रिया॥

अथ दूसरी विधि॥

पारा ७ तोला, गन्धक ७ तोला, सोनामक्खी ७ तोला इन तीनों को इकट्ठे कर नींबूके रसमें खरल करे पीछे आतशी शीशी में भर उस शीशी को बालूके यन्त्र में धर ८ पहर आंच देवे फिर उतारकर गन्धक २४ माशे, राई ७ तोले डालके ४ दिन खरल करे फिर दूसरी शीशी में डाल बालूके यन्त्र में चढ़ाय ७ दिन आंच दे जब शीतल हो तब उतारे। मात्रा १ चावलभर पान के साथ खाय तो ऽ५ की भूंख हो। इस विधि से सात शीशी भरे तो सवामनकी भूंख हो॥

अथ तीसरी विधि॥

पारा २ पैसेभरले स्याह धतूरेके रसमें ३ पहर खरल करे फिर करिहारीके रसमें ३ पहर खरल कर पीछे शीशीपर ७ कपरौटीकर औषध भरकर मुख मूंद अरने कंडों से गजपुटमें फूंक दे जब शीतल हो तब निकाले इस विधिसे थोड़ी कंडाकी आंच अंगीठीमें दे तो सिद्ध हो। गुड़बहुतकरे, भूंख ऽ५कीलगे और७स्त्रीसेभोगकरे॥

अथ वसन्तमालती रसकी क्रिया॥

सोने का वर्क १ माशे, मोती २ माशे, शिंगरफ़ ३ माशे,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मिरच ४ माशे, सूरतखापरा ८ माशे खापरेको गोमूत्र में १६ पहर गोलकयन्त्र से पकावे फिर इन सबको खरल में डाल मक्खनसे खरल करे जितना मक्खन सोखे उतना मिलावे फिर नींबू के रस में खरल करे जिससे मक्खन सूख जाय और चिकनाई दूर होजाय इस प्रमाण चाहे जितना करे फिर इसकी गोलीकर इसे १ रत्ती २ पीपल और शहद के संयोग से नित्य खाय तो विषमज्वर आदि सब रोगों को दूर करे और इसे पुष्टाई के संयोग से खाय तो शरीर को पुष्ट करे—इति वसन्तमालतीरस ॥

अथ शिंगरफ़शोधन विधि ॥

नींबू के रसकी ७ पुट दे और भेड़ के दूधकी ७ पुट दे तो शिंगरफ़ शुद्ध हो ॥

अथ शिंगरफ़ मारण विधि ॥

चोखे शिंगरफ़ की ४ पैसेभर की डली ले इसे कड़छुले में धर इस डली के ऊपर नींबू का ऽ। भर रस सुखावे पीछे शिंगरफ़ के ऊपर प्याज का रस ऽ५ सुखावे फिर इस डली को निकाल कड़छुले में धरे। इस डली के नीचे ऊपर ऽ। भर प्याज़ की लुगदी दे पकावे फिर इस डली को अलग निकाले पीछे ऽ। भर कुचिला, ऽ। भर राई, ऽ। भर मालकांगनी, ऽ१ प्याज़, ऽ१ घृत, ऽ१ शहद इन सबको महीन पीस एक लुगदी कर कड़ाही में धरे और लुगदी के बीच में सिंगरफ़ की डली धरे और इस के नीचे ८ पहर अग्नि जलावे तब यह शिंगरफ़ सिद्ध हो और तोल में पूरा उतरे। रंग लाल हो। खाने की मात्रा आध रत्ती की अथवा १ रत्ती पानमें खाय पथ्यसे रहे तो यह सब रोगोंको दूर करे, भूंख बहुत लगावे और नपुंसकपने को दूर करे ॥

अथ दूसरी विधि ॥

शिंगरफ़ ४ पैसाभर, पीपल ४ पैसाभर दोनों मिलाय १ पहर खरल करे पीछे काले धतूरे के रसमें २१ पहर खरल करे। पीछे

In Public Domain, Chamba Archives Srinagar

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

चँदिया बांध उस पर धेलाभर वत्सनाग विष पानी से पीसके लपेटे फिर उस चँदिया को सुखाय महीन कपरा में बांधे फिर ½ गौका दूध मँगाय हँड़ियामें भर उसमें चँदिया डारे और हँड़िया के मुखपर परिया धर उड़द के चूनसे चारों ओर बन्दकर चूल्हेपर चढ़ाय ६ पहर तक मध्यम आंच करे जब शीतल हो तब उतार दूध पृथ्वी में गाड़ दे और शिंगरफ़ निकाल ले। मात्रा ४ रत्ती पान के साथ खाय तो देह में बल बढ़े, सुखीं बढ़े, झोलमिटे, भूंख बढ़े और पुरुष शक्तिमान् हो॥

अथ तीसरी विधि॥

गोमूत्र ½८ कड़ाहीमें चढ़ावे उसमें विषका डेला डाल कड़छी से चलाताजाय जब गाढ़ा होकर ½। शेष रहे तब उसमें १ पैसा भर इंगुर खरलकरे।जैसेगाढ़ा होताजाय वैसे गोमूत्र डालताजाय जब सूखकर गाढ़ा होजाय तब टिकिया बनाय सरबाके संपुट में धर ४ कपरौटी कर गजपुट में फूंक दे। शीतल होनेपर निकाल १ रत्ती पानमें खाय तो पुष्टता और सुखीं करे और खांसी जाय॥

अथ चौथी विधि॥

शिंगरफ़ को थूहर की पुंगरिया में धरकर १०१ बार रेंड़ी की आंच में बुझावे फिर आंवलासार गन्धक डाल कुम्हड़ा में धर आवां में धरे तो सिद्ध हो–इति शिंगरफ़ मारने की बिधि सम्पूर्ण॥

अथ सुम्बलखार मारण विधि॥

सुम्बलखार २ पैसाभर ले गधेका मूत्र ½२ थूहर का दूध ½२ इन दोनों को एक हँड़िया में भर दोलायन्त्र में सुम्बलखार लटकावे और मध्यम आंच करे जब दोनों का खार होजाय तब निकाले फिर १०१ इन्द्राणी के फल मँगाय एक फल में भर दो कपरौटी करे थोड़े से कंडोंमें आंच दे इस भांति प्रत्येक फल में १०१ आंचदे तो सुम्बल सिद्ध हो।१रत्ती तोले भर रांगकोबेधे॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS

अथ पीतर, कांसा मारने की विधि ॥

दोहा ॥

घोट जँभीरी रंग सों पारा गन्धक दोय।
पत्र लपेटै दुहुँनके तासों यह विधि होय ॥
सरवा मध्ये पत्र धरि कपरौटी करवाय।
तीनबार इमि आंच दे उभय भस्म होजाय॥

अथ कनकसुन्दररस ॥

कालीमिरच, शोधाहुआ शिंगरफ़, सुहागा, गन्धक, शुद्ध सींगिया विष, शुद्ध पीपल, धतूरे के बीज इन सबों को खरल में डाल के भांग के रस में २ पहर घोटे तो कनकसुन्दर नाम रस हो यह महारस अतिउत्कट संग्रहणी रोग को दूर करता है तथा अतीसार और मन्दाग्नि को दूर करता है ॥

अथ बड़वानलरस ॥

हरताल १ भाग, पारा १ भाग, शीशे की भस्म १ भाग, शुद्ध गन्धक २ भाग, मिरच १६ भाग इन सबको पीसकर १ रत्ती घी के साथ खाय तो विसूची, सब प्रकार के शूल, प्लीह और उदररोग दूर हों तथा गुल्म, संग्रहणी, श्वास, खांसी, कफवात और मन्दाग्नि आदि अनेक रोगों को यह बड़वानलरस दूर करता है ॥

अथ वह्निरस ॥

जावित्री ३ कर्ष, मिरच १ पल, गन्धक आधा कर्ष, पारा आधा कर्ष, लौंग आधा कर्ष, रिष आधा कर्ष इन सब औषधों को इमिली के पत्तों के रसमें पीस कर गोली बनावे। १ माशे की गोली के सेवन से अग्नि ऐसे बढ़ती है जैसे कि अग्नि की विद्यासे अग्नि बढ़जाती है और शूल आदि समस्त रोगों को यह वह्निरस दूर करता है ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ शंखवीरस ॥

पारा १ भाग, गन्धक १ भाग, शंख की भस्म ४ भाग, कौड़ी की भस्म ६ भाग, मिरच १२ भाग और पारेसे चौथाई सुहागा इन सबको पीसकर ४ माशे घी के साथ खाय तो क्षयीरोग दूरहो॥

अथ शंखद्रावरस ॥

आक, सेंहुड़, थूहर, इमिली, ढांक, कालेतिल, अपामार्ग, गोखुरू, कौड़ी, शंख इन सबोंकी भस्म से उत्पन्न खार, पारा, पांचों नोन ५ खार ये सब बराबर ले और सबों से तिहाई गन्धक और रेहू मिट्टी, सोरा, कसीस, नौसादर ये चारों चीजें सब औषधों की बराबर ले फिर इन सबोंकी कजली करके नींबू के रस में घोटे पीछे नलिकायन्त्र में चढ़ाकर चारपहर की आंच देवे उसमें से सुई का गलानेवाला जो रस टपके उसको ले ले और उसमें से ३ रत्ती या ६ रत्ती नलिकासे दे तो गुल्म, बवासीर, प्लीह आदि रोगों को नाश करे। यह शंखद्राव प्रत्यक्ष फल का दिखानेवाला है इसमें संदेह नहीं ॥

अथ शीतारिरस ॥

चौपई छन्द ॥

ताम्र सुहागा गन्धक लीजै। विष पारद हरताल धरीजै ॥
भांग तूतिया दोय मिलाय। ये सब लीजै शुद्ध कराय ॥
घटिका एक ताहि पिसवाय। घोटि करेला रंग मिलाय ॥
जाको नाम शीतअरिजानि। शंभु शिवासों कहेउ बखानि ॥
मिसरी जीरा में सहदेइ। सकल सुयश याको सुनि लेइ॥
शीतज्वर अति जाय नशाय। इक दोई चौथाई जाय ॥

अथ पञ्चामृत परपटीरस ॥

दोहा ॥

लोहा अभ्रक पारदै अर्क शुद्ध सब लेह।
दूनों गन्धक सबनि ते लोहपात्र भरिदेह ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

चौपाई ॥

बदरी काष्ठ आंच मृदु दीजै। सिद्धजान पुनि ये विधि कीजै॥
गोमय ते फिर भूमि लिपाऊ। तामें कदली पत्र बिछाऊ॥
रस उतारि तापर सब नावै। फिर कदली के पत्र उढ़ावै॥
या विधिसों रस सिद्ध प्रमाना। पञ्चामृत परपटी बखाना॥
संग्रहणी अतिसार नशाई। जीर्णज्वर यक्ष्मा मिटि जाई॥
प्लीहपाण्डु ज्वर अर्श नशाई। अम्लपित्त अरु अग्नि बढ़ाई॥

दोहा ॥

जीरा सैंधव हींगमें संग्रहणी अनुपान।
केवल जीरासंग में पाण्डु रोग में जान॥
शहद पीपली संगही जीर्णज्वर मिटजाय।
सर्व रोगमें दीजिये बुध हनुमान बताय॥

अथ विलासिनीवल्लभरस॥

दोहा ॥

गन्धक पारौ भाग द्वै कनकबीज सम लेइ।
काढ़ि धतूरे तेल में शुद्ध सो घोटन देइ॥
कहेउ विलासिनिवल्लभै याको नाम सुहाय।
दोय वल्ल मिश्री शहद देत प्रमेह बहाय॥
करै मनोज प्रकाश अति वीर्यबन्ध सो होइ।
हरै मानिनी मान को जो यह सेवै कोइ॥

अथ हीरा की शोधन और मारण विधि॥

कुल्थी और कोदों के क्काथको दोलायन्त्र में भर उसमें भट-कटैयाकी जड़ की लुगदीमें हीरा रखकर कपड़े में बांध तीन दिन सिद्ध करे तब हीरा शुद्ध हो फिर आगमें तपाय खरमूत्र में २१ बार बुझावे ७४ मत्कुण (खटकिरवा) और हरताल पीस गोलाकर उसमें हीरा धर तीव्र आंच दे मूषायन्त्रमें राख भाथी में फूंक दे फिर अश्वमूत्र में २१ बार बुझावे हरताल गोलामें

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

धर फूंके इसीतरह २१ बार अश्वमूत्रमें बुझाय बुझाय फूंके यह इसप्रकार से भस्म होताहै। इसका चूर्ण सर्वत्र साध्य है अथवा हींग, सेंधानोन, कुल्थीके क्वाथ में डाल उसमें यह तपाय २१ बार बुझावे तो हीरा मरे अथवा मेढक कांसे के पात्र में मूंदे और उसे डरावे जब वह भयसे मूते उस मूत्र में हीरा तपाय बहुत बुझावे तो खिलकर चूर्ण हो॥

अथ वैक्रान्ति की शोधन और मारण विधि॥

वैक्रान्ति नाम कच्चे हीरे का है काला हो वा लाल उसको १४ बार बुझाइ लाल करकर हीरेकी तरह शोधे फिर उसे मेढ़ासिंगी के पञ्चाङ्ग के गोलेमें रख कर मूषायन्त्र में भर संपुट कर फूंक दे इसीप्रकार से सात बार करे तो वैक्रान्ति भस्म हो इस को हीरे की जगह दे॥

अथ सर्वरत्नों की शोधन और मारण विधि॥

अच्छे मोती, माणिक्य और मूंगा अरणी रसदे दोलायन्त्र में १ पहर सिद्ध करे तो शुद्ध हों। घिकुआर और चौराई या स्त्री का दूध इन तीनों में सात सात बार माणिक्यादि तपाय तपाय बुझावे। मूंगा, मुक्तादि सब क्षणभर में वर्ण पलट जाते हैं संशय नहीं मूंगा और मोती सोनामक्खी की रीति से भी मरते हैं और सब रत्न हीरे की तरह शोधै और मारै॥

अथ शिलाजीत शोधन विधि॥

ग्रीष्मके तापसे पर्वत से चुआ शिलाजीत लाय गौके दूध और त्रिफलाक्वाथ तथा भंगरेके रसमें पहरभर घोट दिनभर घाममें धरे जब सूखजाय तब शुद्ध हो अथवा अच्छे शिलाजीत की शिला ले छोटे छोटे टूक कर अतिउष्ण जलमें पहरभर राखे तब उतार ले उसेही क्षारक कहते हैं यह सफ़ेद होताजाता है और सब पानी न जरे तो क्वाथ सम रहता है। ये दो प्रकार के सार वैद्यजन औषध में देते हैं। कुरैया, पलाश, बकायन,

CC-0. In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बहेड़ा, अमलतास, मदार, अलसी, सेंहुड़, चिरचिरा, पाढ़, केला, जमालगोटा, सहिंजन और मूली इत्यादि क्षारवृक्ष हैं ॥

अथ तूतियाशोधन विधि ॥

बिलाई की बीट और तूतिया का दशांश सुहागा दे घोर मध्यम आंच दे फिर दही की पुटदे फूंके उसके उपरान्त शहद की पुटदे फूंके तब शुद्ध हो ॥

अथ सुरमा की शोधन और मारण विधि ॥

सुरमा चूर्ण कर जंभीरी नींबू के रस में घोलकर एकदिन घाम में धरे तो सबकार्य लायक होता है उसीप्रकार से गेरू, कसीस, सुहागा, कौड़ी, शंख, फिटकरी और चोक ये सब शुद्ध होते हैं ॥

अथ मैनसिल की शोधन और मारण विधि ॥

बकरी के मूत्रमें दोलायन्त्रसे तीन दिन पकाय बकरी के पित्ते में सात भावना दे तब मैनसिल शुद्ध होताहै अथवा अगस्त-पत्र के रस में सात भावना दे तो मैनसिल कार्य साध्य होताहै ॥

अथ खपरियाशोधन विधि ॥

खपरिया ले गोमूत्र से दोलायन्त्र में शुद्ध करे तो कार्य साध्य हो ॥

अथ सब धातुन के सत निकालने की विधि ॥

लाही, लघुमीना, छगरीपय, सुहागा, मृगशृङ्ग, पीली सरसों, सहिंजन, लालगुंजा, गुड़, सैन्धव, यव, कटुकाघृत, मधु इनमें जो एक दो न हों तो चिन्ता नहीं जिस धातुमें चाहे उसमें दे। अन्धमुखयन्त्र कर आंच दे तो सब धातुका सत निकलता है ॥

अथ गन्धकशोधन विधि ॥

लोहेकी कड़ाही और घी दोनोंको अतितप्त कर घी के समान गन्धकचूर्ण छोड़े जब गलजाय तब चतुर्गुण दूध में गर्महीं छोड़ कर बुझावै तो गन्धक शुद्ध हो। यह सर्वकार्य योग्य है ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu·Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ शिंगरफ़से पारा निकालने की विधि ॥

शिंगरफ़ को नींबू के रस अथवा नीम के पत्तों के रस में १ पहर घोटे फिर उसे डमरूयन्त्र कर उतारले तो पारा शुद्ध हो। पारा उड़ालेनेसे भी शुद्ध हो सर्वकार्यकारक होता है ॥

अथ पारेके मुखकरण की विधि ॥

कालकूट, बच्छनाग, सींगिया, प्रदीपन, हलाहल, ब्रह्मपुत्र, हरदिया, सुक्कक, सौराष्ट्रक ये नव विष हैं और मदार, सेंहुड़, धतूरा, करियारी, लालकनेर, घुंघची और अफ़ीम ये सात उपविष हैं। इन सब विषों में मर्दन करने से पारा पक्षहीन होता है और समस्त धातुओं के भक्षण करनेको समर्थ होता है अथवा त्रिकुटा, दोनों खार, राई, पांचों नमक, लहसुन, नवसादर और सहँजने की छाल ये सब बराबर ले चूर्ण करे फिर पारे के समान ले जंभीरी के रस वा नींबू के रस अथवा कांजीमें गर्म कर तीन दिन रात खरल करे तब पारा सब धातुओं को खावे और तोल न बढ़े और पारे के मुख हो अथवा छरबुन्दा वा बीरबहूटी में तीन दिन घोटे फिर पांचों नोन और नींबू के रस में घोटे तो पारे का मुख खुले और धातु भक्षण करे ॥

अथ द्वितीय ज्वरांकुशरस ॥

हरिण का सींग चूर्ण कर बराबर जैतका रस ले मिटी के बासन में धर मुँह मूँद दो और १ पहर की आंच दे उतार लो फिर आठवां अंश त्रिकुटा दे पीसे फिर चाररत्ती पान के रसके साथ दे तो वातपित्तज्वर नाश हो। यह ज्वरांकुशरस सर्वज्वरों को हित है ॥

अथ ज्वरारिरस ॥

पारा, खपरिया, हरताल, तूतिया, सुहागा और गन्धक ये सब समान ले शोध कर करेले के रस में एक दिन घोट कर ताम्रपात्र मे अर्ध अंगुल मोटा लेस पात्र का मुख मूंद कपरौटी कर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS

बालूके यन्त्र में धर यन्त्रमुख खुला राख कर आंच दे जब उस बालू में धान डालने से खील होजाय तब जानिये कि रस सिद्ध भया। जब वह स्वभाव से ठण्ढा हो तब उसको पात्र से छुड़ा ले फिर इस ज्वरारिरस के समान मिरच मिलाय पीस कर माशे भर के पानके टूकमें धर खिलावे तो ज्वरका नाश करे ॥ तीन दिन खाने से अतिकठिन, अन्तरिया, तिजारी, चातुर्थिक आदि ज्वरों को नाश करे ॥

अथ शीतज्वरारिरस ॥

हरताल, तूतिया, तांबाभस्म, शोधा पारा, शुद्ध गन्धक, मैनसिल ये सब कर्ष कर्ष भर ले त्रिफला के रस में घोटकर गोला बांधे फिर मिट्टी से कपरौटी कर खूब फूंक मदारके दूधमें सात भावना दे फिर जमालगोटा की जड़के काढ़े में और निशोत के काढ़े में सात भावना दे। १ माशे रस और पचास मिरच, छः माशे गुड़; दो तुलसीदल भक्तिपूर्वक तीन दिन खाय। इस रस का नाम शीतारि है और बहुत दुर्लभ है। इसमें पथ्य-दूध भात दे तो जूड़ी, दाह, ज्वर, तिजारी, चातुर्थिक, अन्तरिया, नित्य और ज्वर जनितविकार सब नाश हों ॥

अथ ज्वरघ्नगुटिका ॥

शुद्धपारा १ भाग, एलुआ, पीपल, जंगीहड़, अकरकरा, कड़ुआतेल, शोधा गन्धक, इन्द्रायण ये चार चार भाग ले इन्द्रायण के रसमें मिलाय माष प्रमाण गोली बांधे। इस ज्वरघ्न गुटिका को तरुण ज्वर में गुर्च के रसके साथ दे तो ज्वर जाय॥

अथ लोकनाथरस।

पारा बुभुक्षित और धातुभक्षक दो भाग ले दोनोंको खरल कर कजली करे और पारे से चौगुनी पारे की भस्म और पारेके समान सुहागा गौके दूध में घोटे और पारे से अठगुनी शंख की भस्म शुद्धले सब पीस दो सरवोंके भीतर लेस कर दोनों का

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

संपुट कर वस्त्र लपेट मिट्टी लगाय गजपुट में फूंकदे जब ठंढा हो तब निकाले फिर खुरचकर खरल करे। यह रस ६ रत्ती ले मिरच के साथ खरल करे और वातरोग में घी तथा पित्तमें मक्खन साथ और कफरोग में शहद से दे एवं अतीसार, छर्दि, अरुचि, ग्रहणी, दुर्बलता, मन्दाग्नि, कास, श्वास, गुल्म इन रोगों में शहद युक्त दे इस लोकनाथ पर प्रथम तीन कौर घी भात खाय फिर क्षण भर विना तकिये, बिछौने खाटपर उताना सोवे उसके उपरान्त जिसप्रकार चाहे सोवे और खटाई छोड़ मधुर दही अच्छे घृत के साथ अन्न खाय और जंगली मृगादि पशु, पक्षी आदि का मांस घृत में अच्छीतरह भूंजकर अवश्य खाय और संध्या के समय पक्का अर्धावशेष दूधभात भोजन करे और मूंग के मोदक अधिक घृत में बनेहुए भोजन के साथ खाय तथा तिल, आंवला पीस उबटना लगाय वा घी मर्दनकर अन्हावे अथवा उष्णोदक से कमर तक स्नान करे तैल को न छुवे और बेल, करेला, मछली, इमली, श्रम, स्त्रीभोग इत्यादि को त्यागदे और मद्य, अचार, हींग, सोंठि, उड़द, मसूर, पेठा, राई, बेर और कांजी तजे तथा सम्पन्न न सोवे, कांसे में न खाय, ककारादि आम के फल और साग तजे यह लोकनाथरस शुभमुहूर्त, पूर्णातिथि, शुक्लपक्ष और बलवान् चन्द्रमा देख, कुमारी जिमाय, दान दे, दुघटिका साधकर भक्षण आरम्भ करे इसके खानेपर तप आती है उसके वास्ते मिश्री, गुर्च का सत, वंशलोचन इन सबको मिलाकर दे कचूर, अनार, दाख, ऊंख की गँडेरी दे तो रसताप दूर हो अथवा धानकी खील घृत में भूंज चूर्णकर मिश्री मिलाय खिलावे उसी ताप में धनियां और गुर्च का काढ़ा दे अथवा खसरूखे का काढ़ा मधु मिश्री मिलाकर दे इससे रक्तपित्त, कफ, कास, श्वास और स्वरभङ्ग ये सब अच्छे हों और भांगको भूंज लोकनाथरस संयुक्त खिलावे रातको नींदनाश में, अतीसार में,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

संग्रहणी में, मन्दाग्नि में भी यह दियाजाता है। और सोंचर, हड़, पीपल के साथ खिलावे और गर्म पानी पिलावे तो शूल और अजीर्ण दूर हो और पीपल तथा शहदयुक्त दे तो पिलही, वातरक्त, छर्दि और अर्श को दूर करे और नासास्तु, अरण, अनार के रसमें दे बेर, सिमी, मोरपंख की भस्म, मिश्री और शहदयुत खाय तो छर्दि, हिचकी दूर हो। ये भांति भांति के अनोपान लोकनाथ रसके कहे सो सब पूरे करे। इसमें भी उसीप्रकार देना जैसे मृगाङ्क, हेमगर्भ, मौक्तिकाक्षा और पञ्चरत्नादि पोटली का रस इन सबों में लोकसदृश पथ्य करे तो सम्पूर्ण रोग अच्छे हों॥

अथ मृगाङ्कपोटली रस॥

सोने का वर्क यत्न समान बनाय उसके बराबर पारा मिलाय खरल करे और कचनाररस वा अरणीरस अथवा करियाररस में घोटे जब गोला बँधजाय तब चौथाई सुहागा दे और स्वर्ण का दूना मोती का चून दे तथा इन सबके समान गन्धक दे फिर सबको खरल कर गोला बांध सूतका कपड़ा लपेटे उस पर मिट्टी लगा, सुखाकर, सरवासंपुट कर लोनपूरित पात्र में संपुट धरे फिर उसको सुखाय गजपुट में फूंक दे फिर ठण्ढा होनेपर निकाल सोनेके प्रमाण पारा और गन्धक ले पूर्ववत् रसमें खरलकर फिर उसी क्रिया से गजपुट में फूंक दे जब ठण्ढा हो तब निकाल कर दो गुंजा रस, आठ मिरच वा तीन पीपल के साथ दे और ओषधि को विचारकर रत्तीभर न्यूनाधिक विचारकर दे और घी अथवा शहद के साथ दोष विचार कर देना चाहिये और पथ्य इसमें लोकनाथ के सदृश देना चाहिये चित्त एकाग्रकर अति पवित्र हो खाय तो श्लेष्मा, ग्रहणी, कास, श्वास, क्षयी, अरुचि इन सबरोगों को यह रस दूर करताहै, बलहीन को बलवान् करता है, दुर्बल को मोटा करता है॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ कफक्षयी पर हेमपोटलीरस ॥

पारा और पारेकी चौथाई सोना ले खरल करे जब पीठी हो जाय तब दोनोंसे दूनी गन्धक दे फिर कचनारके रसमें घोट गोला करे उसे मूषायन्त्र में भर संपुट कर, वस्त्र लपेट, मिट्टी लगाय, सुखाय भूधरयन्त्र में फूंक दे॥ भूधरयन्त्र—एक हाथ लम्बा और एक हाथ चौड़ा गढ़ा खोदे उसमें एक छोटासा गढ़ा खोदे उस छोटेसे गढ़े में औषध रख मिट्टीसे दाब तिसपर बिनुवां कण्डों की करसी कर बड़े गढ़े में भर तीन दिन आंच दे जब स्वभाव से शीतल हो तब निकाल समान गन्धक ले अदरक अथवा चीतेके रसमें घोट बड़ी पीली कौड़ीमें भर औषध का अष्टमांश सुहागा और सुहागे का आधा सिंगिया दोनों को सेहुँड़के दूधमें पीस कौड़ीका मुखबंदकर फिर मिट्टीके पात्रमें चूना लगा कौड़ी में भर दूसरे दिवस बंदकर, मुद्रितकर, गजपुट में आंच दे जब ठण्ढा हो तब निकालकर लोकनाथ की रीति से खिलावे और मृगाङ्क की रीतिसे तीन दिन पथ्यदे लोन वर्जित है और जो छर्दि हो तो गुर्चका रस वा क्वाथ मधुयुक्त दे और कफार्ति में गुड़, अदरकरस युक्त दे और अतीसारमें भूनी भांग ही दोनों के साथ दे। कास, श्वास, ग्रहणी, क्षयी और अरुचि इनमें दही और भांग के साथ दे यह हेमपोटली रस अग्नि-दीपन और कफवातनाश करता हुआ बहुत श्रेष्ठ है॥

अथ हेमगर्भरस कास पर॥

पारा ४ भाग, सोना ४ भाग इन दोनोंकी पीठीकर द्वादश भाग गन्धक दे और तीनोंकी कजली कर १६ भाग मोती, २४ भाग शंख, १भाग सुहागा ये सब एकत्रकर पक्के नींबूके रसमें घोटे फिर गोला बांध, मूषा पुटमें धर, मुद्रा साध, सुखाय हाथभर भूमि खोदकर उसमें धरकर हाथभर कण्डा भराय फूंक दे जब शीतल हो तब निकाल धरे। चाररत्ती रस और उन्तीस मिरच गोघृत में

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पीस चांदी व मिट्टी तथा कांचके पात्रमें धर खिलावे और लोकनाथरस समान पथ्य बतावे इस यत्नसे कास, श्वास, क्षयी, वात, कफ, ग्रहणी और अतीसारवाले को दे। यह हेमगर्भपोटली इन सबरोगों को हरलेती है ॥

अथ द्वितीय आनन्दभैरवरस ॥

शुद्ध शिंगरफ़, सिंगिया, मिरच, सुहागा और पीपल ये सब समान ले महीन चूर्ण करे यह आनन्दभैरवरस रोगी का बल देखकर एक जुवार वा दो गुञ्जा रस इन्द्रायण, कुरैयाछाल दोनों दश माशे पीस रसयुक्त शहद में मिलाय चटावे तो त्रिदोष जाय व अतीसार दूर हो और गऊका दही, मट्ठा और घृत पथ्य भात के साथ खाय, ठण्ढा पानी और भांग अच्छी तरह धोय बनाय रात को पिलावे ॥

अथ सन्निपात पर लघुसूचिकाभरण ॥

सिंगिया १ पल और पारा ४ माशे दोनोंको खरल कर दो परई कांचके लुक करीहुई में धरके मुद्राकर सुखाय चूल्हेपर चढ़ाय मन्द मन्द दोपहर की आंच दे दोनों जुदाकर ऊपर के सरवे में लगे हुए रसको छील जिस पात्र में पवन न जासके ऐसी सूचीमुख शीशी में रक्खे फिर उस शीशी से जितना रस निकले उसे सन्निपात मूर्च्छितका शिरमुड़ाय पछने दे जो रक्त निकले उसी घावपर उस रसको अँगुली से मले जो रुधिर और रसमें मिल जाय तो मूर्च्छित जागे उसीप्रकार से सांपका काटा हुआभी जागे फिर इसे इस उपचारसे तप आवे तब उस रोगी को मधुर अर्थात् गँडेरी, अनार, छुहारा और दाखआदि खिलावे॥

अथ सन्निपात पर जलबुन्दरस ॥

पारेकी भस्म समान गन्धक और चौथाई मैनासिल, सोनामक्खी, पीपल, सोंठि, मिरच ये सब समान ले और खरल कर मछली के पित्तेमें सात भावना दे इसीप्रकार से मयूरपित्ते में भी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सात भावना दे सुखाय दो गुञ्जा श्वेत मुसली के रसमें खवावे और पञ्चकोल—पीपल, पीपलामूल, चव्य, सोंठि, चीता इनके काढ़ेमें भी दे। यह जलबुन्दरस सन्निपात को दूर करता है। जल ठण्ढा पिये, ठण्ढे जलसे हाथ मुँह धोवे, जल का स्पर्श राखे तो औषध बल पाती है और सन्निपात को दूर करती है॥

अथ सन्निपात पर पञ्चवक्त्ररस॥

शुद्धपारा, सिंगिया, गन्धक, मिरच, सुहागा, पीपल इनको धतूरे के रसमें १ दिन मर्दन करे घाममें सुखावे। यह पञ्चवक्त्ररस दो गुञ्जा सन्निपात में दे तो सन्निपात दूर हो तथा मदारमूल-क्काथ, सोंठि, मिरच और पीपल के साथ दे यही अनोपान है। पथ्य—दही और भात दे। इसको शहदके साथ खाय तो कफ-जनित उपद्रव दूर होते हैं और अदरक तथा शहदके साथ दे तो अग्निदीपन करे और यथायोग्य घृत, मांस खाय तो अग्नि को प्रबल करे॥

अथ सन्निपात पर उन्मत्तरस॥

पारा, गन्धक समभाग ले धतूरे के फलके रसमें १ दिन खरल करे फिर इसमें इसके समान त्रिकुटा डालकर पीसे इस उन्मत्त रसका नास देने से सन्निपात दूर होता है॥

अथ शूल पर नाराचरस॥

शुद्ध पारा, सुहागा समभाग कर समान मिरच, गन्धक, पीपल और सोंठि दोदो भागले खरल करे फिर सबके समान शुद्ध जमालगोटा ले सबको एकत्रकर खरल करे और गुञ्जाभर देनेसे रेचन हो यह नाराचरस आध्मान, मलविष्टम्भ, उदावर्त आदि सब रोगों का नाश करता है॥

अथ शूल पर इच्छाभेदीरस॥

शुद्ध शिंगरफ़, सुहागा, सोंठि और पीपल कर्ष कर्ष भर, चोष पलभर, जमालगोटा पलभर सबको खरलकर गोदूधमें तीन

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

गुञ्जा रेचनार्थ दे इस इच्छाभेदीरस से विष्टम्भ और आध्मान ये दूर हों॥

अथ क्षयी पर राजमृगाङ्करस॥

पाराकी भस्म ३ भाग, सोनेकी भस्म १ भाग, तांबेकी भस्म १ भाग, मैनसिल, शुद्धगन्धक, हरताल दो दो भाग इन सबको घोटकर कौड़ी में भर बकरी के दूधमें सुहागा पीस कौड़ी का मुख मूंद मिट्टी के पात्र में धर, संपुटकर, सुखाय गजपुट में फूंक दे जब शीतल हो तब खरल करे इस राजमृगाङ्करस को ४ गुञ्जा दे तो क्षयी क्षय हो। इसका अनोपान २९ मिरच के साथ अथवा पीपल और शहद के साथ दे॥

अथ खराग्निरस॥

शुद्ध पारे से दूनी शुद्ध गन्धक खरलकर कजली करे दोनों के समान पोलादभस्म ले सब घिकुवार के रसमें दोपहर घोट बासन में भर एरण्डपत्र से ढांप पहर भर धूपमें धरे। उष्ण हो तब नाजकी राशि में १ दिन १ राति रखकर निकाल ले फिर खरल कर वस्त्र में छान ले तब जल पर डारे तो तिरेगी॥

अथ स्वयमग्निरस॥

त्रिकुटा, त्रिफला, इलायची, जायफल और लौंग ये सब ९ भाग ले सबको खरल कर शहद के साथ दो निष्क खाय। यह स्वयमग्निरस क्षयी और कास को नाश करता है॥

अथ श्वास पर सूर्यावर्त्तरस॥

पारेकी आधी गन्धक २ पहर घिकुवार के रसमें घोटे फिर दोनों सम तांबे के पत्रले उस पर यह कजरी लेप करे फिर १ दिन थालीयन्त्रमें पकाय ऐंच ले अथवा थालिकायन्त्र मिट्टी की हांड़ी में लोन भर उसपर तांबेका पात्र धर मुख मूंद कपरौटी कर फूंक दे। यह सूर्यावर्त्तरस पीस दो गुञ्जा खवावे तो श्वास को नाश करे॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ द्वितीय स्वच्छन्दभैरवरस ॥

शुद्धपारा, मरा लोहा, सोनामक्खी, गन्धक, हरताल, हड़, अरणी, मेवड़ी, त्रिकुटा, भुना सुहागा और सिंगिया ये सब समान मिलाय खरल कर फिर १ दिन गोरखमुण्डी के रस में खरल करे फिर दो गुञ्जा समान गोली करे यह स्वच्छंदभैरवरस वातरोगी को खिलावे। रासना, गुर्च, देवदारु, सोंठि, एरण्ड की जड़ इनका काढ़ा कर गुग्गुलयुक्त गर्म उसके साथ पिलावे यह अनोपान सुखदायी है ॥

अथ त्रिविक्रमरस अश्मरी पर ॥

मरा तांबा, बकरी का दूध समान ले किसी पात्र में धर आंच दे दूध उतार धरे तब तांबे के समान शुद्ध पारा और गन्धक ले मेवड़ी रसमें १ दिन घोट, गोलीकर, मूषा यन्त्रमें धर, बालुका-यन्त्र में आंच दे तब दो गुञ्जा खिलावे बिजैणकी जड़ को समेवा काढ़ेमें यह रस दे। इस रसका नाम त्रिविक्रम है माशे-भर सेवन करे तो पथरी दूर हो ॥

अथ महाहरतालेश्वर ॥

हरताल, सोनामक्खी, मैनसिल, शुद्धपारा, सैन्धव, सुहागा ये सब समान खरलकर पारेसे दूनी गन्धक ले और गन्धक के तुल्य मरा तांबा जम्भीरी के रसमें ५ दिन घोट, सरावसम्पुट में धर, कपरौटी कर भूधरयन्त्रमें फूंक दे इसीप्रकार से ६ बार फूंके फिर निकालकर विजयसार में ५ दिन पूर्ववत् घोटे तब ६ पल रस ले मरा तांबा २ पल, मरा लोहा ४ पल ये तीनों जम्भीरी के रस में १ दिन घोट दश गोइठा में आंच दे इस भस्मका तीसवां अंश सिंगिया दे खरल करे तब दो माशे भैंसके रसमें नित्य खाय इसके पीछे बकुची का चूर्ण दशमाशे मधुयुक्त घी के साथ खाय तो सब प्रकारके कुष्ठ नाश हों इसका नाम महाहरतालेश्वर है ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS

पारे की भस्म, गन्धक, मराहुआ लोहा, ताम्र, गुग्गुल, त्रिफला, बकायन, चीता, शुद्धशिलाजीत इन सबको १६ शाण ले और कच्चे रेंजेके बीजों का चूर्ण ६४ शाण तथा अभ्रकभस्म ६४ शाण ले इन सब औषधों को इकट्ठी कर समान घृतमें सान कर घृतभांड में भरकर रखछोड़े फिर आठमाशे खिलावे तो सब प्रकारके कुष्ठोंको दूर करे। इस कुष्ठकुठाररस से गलितकुष्ठ भी अच्छा होजाता है॥

अथ उदयादित्यरस॥

शुद्धपारा, दूनी गन्धक ले घिकुवारके रसमें १ दिन मर्दन करे फिर उसका गोला बांध मिट्टी के पात्रमें धर उसके ऊपर १ कटोरी जो पारेसे तिगुने लांबे की गहरी बनी हो ढक दे और ढकने से चारों तरफ़ राखभर चूल्हेपर चढ़ा दे तथा दोपहरकी आंच दे और उस तांबे की कटोरीपर गोबर मिलाहुआ जल छोड़ता जाय अन्तमें तीव्र आंच दे ठण्ढा कर उतार ले फिर कठगूलर, चीता, त्रिफला, अमलतास, पत्रबिड़ंग, बकुची के बीज इनका क्वाथ कर इसकी भावना दे २१ दिन घोटे। २ गुञ्जा प्रमाण इस उदयादित्यरस के खिलाने से विचर्चिका, दाद, श्वेत कुष्ठ ये सब अच्छे हों। इसका अनोपान खदिरसारक्वाथ वा गौ का दूध अथवा त्रिफले के क्वाथमें तीन शाण बकुचीका चूर्ण मिला दे इस रससे तीन दिनमें फूट, काककुष्ठ और ७ दिनमें श्वेतकुष्ठ दूर होता है॥

अथवा यह लेप लगावे। नीलपत्र, गुञ्जक, कसीस, धतूरा, हंसपद, सूर्यमुखी, छोटी लुनिया ये सब समान भाग ले जहां फूटा हो तहां लेप कर दे तो सात दिनमें गलितकुष्ठ अच्छा हो और श्वेतकुष्ठ साध्य अथवा असाध्य कैसाही हो दूर हो इसी पर महात्मालोगोंने और भी लेप कहा है घुंघुची और चीता जल में पीस लेप करे तो श्वेतकुष्ठ दूर हो अथवा मैनसिल, चिर्चिरा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

और राख पीस पानीके साथ लेप करनेसे श्वेतकुष्ठ दूर होता है॥

अथ कुष्ठ पर सर्वेश्वररस॥

शुद्धपारा १ पल और गन्धक ४ पल ले १ पहर खरल करे फिर मरा तांबा, अभ्रक, लोह, शुद्ध ईंगुर एक एक पल ले और मरा सोना और चांदी भी एक एक पल ले और १ माशे हीरा, २ पल हरतालका सत ले जम्भीरी, धतूरा, कसा, सेंहुड़, मदार, बकायन, कुचिला, करैरमूल इन सबके रसमें एक एक दिन भावना दे घोटे इसीप्रकार से ७ दिन करे फिर सुखाय कपरौटी कर बालूके यन्त्रमें ३ दिनतक मन्द मन्द आंच दे पकावे इसको निकाल चूर्णकर एक पल सौंगीया और २ पल पीपलका चूर्ण ले मिलावे फिर २ गुञ्जा शहद के साथ खिलावे तो श्वेतकुष्ठ दूर हो और इसके ऊपरसे बकुची और देवदारु का चूर्ण कर्षभर रेंड़ी के तैलमें मिलाय चाटे॥

अथ मेहबद्धरस॥

मरा पारा, कांतीभस्म, लोहभस्म, शिलाजीत, शुद्ध सोनामक्खी, शुद्ध मैनसिल, शुद्ध त्रिकुटा, त्रिफला, झरबेर की गूदी, कैथा और हल्दी इन सबका चूर्ण भांगरे के रस में घोटे जब सूखजाय तब ४ माशे रस शहद मिलाय नित्य खाय तो प्रमेह नाश हो और बकायन के ६ बीज ले ४ पैसा भर चावलका धोवन और आठ माशे घी इन सबको मिलाय पिये तो दिनी प्रमेह दूर हो॥

अथ जलोदर पर वन्यरस॥

पारा ४ पल, गन्धक ८ पल, हल्दी, त्रिफला, हड़ इन सबोंको दो दो पल ले और निशोथ, जयपाल, चीता इन सबोंको तीन तीन पल ले और त्रिकुटा, जमालगोटेकी जड़, श्वेतजीरा ये आठ आठ पल ले फिर सबको मिलाय खरल करे फिर जयन्तीरस, सेंहुड़का दूध, भांगरेका रस अथवा काढ़ा और रेंड़ीका तेल

In Public Domain, Chamba Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

इन सबों में क्रमसे सात भावना दे इस महावन्यरस को ४ माशे मुँहमें धर गर्म पानी से उतार जाय फिर जब मल गिरजाय तब सन्ध्याको रोचन होनेपर मट्ठा, भात और सैन्धव पथ्य दे तथा गर्म जल पिये तो पेटके सब रोग दूरहों, मूढ़वात भी जाय ॥

अथ विद्याधररस ॥

शुद्ध गन्धक, हरताल, सोनामक्खी, मरा तांबा, मैनसिल, पारा इन सबको समान ले खरल करे फिर पीपल के क्वाथ में दिन भर खरल कर १ दिन सेंहुड़ के दूधमें खरल करे फिर २ माशे शहद में चाटे तो गुल्म, प्लीहा दूर हों इस रसको खा ऊपर से दूध पिये ॥

अथ त्रिनेत्ररस ॥

सुहागा, हिरन का सींग, मराहुआ सोना, तांबा और पारा इनको एक दिनतक अदरकके रसमें घोटे फिर गजपुट में फूंक दे इस त्रिनेत्ररसको माशेभर घृत और शहदमें चाटे और उसके ऊपर सैन्धव, ज़ीरा, हींग, घृत और शहद भी चाटे इसप्रकार से महीने भर नियम करे तो पसली की सब पीड़ा जाय ॥

अथ गजकेसरीरस ॥

शुद्ध पारासे दूनी शुद्ध गन्धक ले दोनोंको बलपूर्वक घोट दोनों के तुल्य शुद्ध तांबा ले कजली में मिलाय सम्पुट करे फिर मिट्टी के बर्तन में नोनके बीच में सम्पुट रख गजपुट की आंच दे जब ठण्ढा होजाय तब निकाल ले फिर खरलकर पक्के पानके रस में खवावे तो पेट का शूल दूर हो और उसीपर भूनीहींग, सोंठि, ज़ीरा, बच, मिरच इसके चूर्णको उष्णोदक के साथ पिये तो असाध्य शूल भी नाश हो ॥

अथ अधितुण्डीरस ॥

शुद्ध पारा, विष, गन्धक, तीनों अजमोद, त्रिफला, सज्जी, जवाखार, चीता, सैन्धव, ज़ीरा, कालानोन, बायबिड़ंग, गंगा-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

लोन, त्रिकुटा इन सबको समान भाग ले और सबके समान कुचिला ले जम्भीरी के रसमें छोटी मिरच सम गोली बांध खाय तो मन्दाग्नि दूर हो ॥

अथ अजीर्णकण्टक रस ॥

पारा, सिंगिया, गन्धक तीनों शुद्ध और समान ले खरल कर सबके समान मिरच दे भटकटैया के रस में भिगोय २१ बार घोट तीन रत्तीभर की गोली बनाय खाय। इस गोली से अजीर्ण शान्त हो और सूचिका जाय ॥

अथ मांपान भैरव ॥

मराहुआ पारा और तांबा, हींग, पुष्करमूल, सैन्धव, शुद्ध गन्धक, हरताल, कुटकी सबोंको बराबर ले खरल करे और गदापुरैना, बन्दाल, मेवड़ी, चौराई, करुई तोरई इन सबोंके रसमें क्रम से बलपूर्वक घोटे फिर माशेभर शहद के साथ खाय और ऊपर से निम्बादिक क्वाथ पिये तो कफरोग जाय ॥

अथ वातनाशकरस ॥

शुद्ध पारा, शुद्ध सोना, शुद्ध लोहा, शुद्ध हीरा, शुद्ध सोनामक्खी, शुद्ध हरताल, शुद्ध सुरमा, शुद्ध तूतिया, अफ़ीम ये सम भाग ले और १ भागमें पांचों नमक ले सबको सेंहुड़ के दूध में खरल कर संपुटमें रख भूधरयन्त्र में पचावे फिर माशेभर अदरक के रसमें खाय तो सब वायु नाश हों अथवा पीपरामूल के क्वाथ में पीपल मिलाय खाय तो सब दादविकार दूर हों ॥

अथ कनकसुन्दररस ॥

सोने की भस्म ८ भाग, पारेकी भस्म १२ भाग, शुद्धगन्धक १२ भाग, ताम्रभस्म २ शाण, अभ्रक की भस्म ४ शाण, सोनामक्खी की भस्म २ शाण, बङ्गकी भस्म २ शाण, सुरमा की भस्म ३ शाण, लोहकी भस्म ८ शाण, विषकी भस्म ३ शाण, करियारी पलभर इन सबोंको आंवले और जम्भीरी के रस में खरलकर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

संपुट में थोड़ी आंच दे फूंके फिर खरल कर माशेभर खिलावे तो सन्निपात दूर हो और अदरक अथवा लहसुन के रसमें खिलावे तो कुष्ठ, विसर्प, भगन्दर, ज्वर और विषविकार ये सब जायँ॥

अथ भैरवरस॥

पारा ३ निष्क, गन्धक ३ निष्क इन दोनों को घोट कजली कर तांबा, चांदी, पीतल, बङ्ग, पोलाद आदि की कर्ष कर्ष भर भस्म ले सहिंजने की जड़का रस, सोंठिका काढ़ा, बेलके फलका रस, चौराई का रस आदिमें पहरभर घोटकर गोला बांधे फिर इस गोले को नोनपूरित दो कांच के प्यालों के संपुट में रख उसके ऊपर से कपरौटीमिट्टी करे फिर इसको एक मिट्टी के पात्र में धर बालुकायन्त्र कर २ पहर की आंच दे जब ठण्ढा हो तब निकालकर उसमें १ कर्ष मूंगेका चूर्ण, विष शाण भर काले सर्पके ज़हरयुक्त एक दिन खरल करे फिर कांच की शीशी में भर दोपहरकी आंच दे जब ठण्ढा हो तब निकालकर चूर्ण करे फिर तगर, मुसली, जटामांसी, चूक, जगन्नाथी, पीपल, नील, नीमकी पत्ती, इलायची, चीता, कटसरैया, सौंफ, वनतोरई, धतूरा, अगस्त, मुण्डी, महुआ, चमेली, मैनफल आदिके रस में अथवा काढ़ेमें एक एक बार घोट सुखाय रक्खे फिर इस रस को सन्निपात में मिरच दो गुञ्जा, जम्भीरी अथवा अदरक के रस में दे। यह रस शार्ङ्गधर में लिखा है॥

अथ ग्रहणीकपाटरस॥

चांदी, मोती, सोना और लोह इनकी भस्म एक एक भाग, शुद्ध गन्धक २ भाग, शुद्ध पारा ३ भाग ले खरल करे फिर इसको कैथे के रस में खरलकर हिरन के सींग में भर ३० गोइँठा की आंच दे जब ठण्ढा हो तब निकाल बरियारे के रस में ७ बार खरल करे पीछे चिर्चिरे के रस में ३ बार खरल करे फिर पठानी-लोध, अतीस, मोथा, धवपुष्प, इन्द्रयव और गुर्च इनके रसमें

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

क्रम से तीन तीन बार खरल करे और माशे माशे भर शहद और मिरच मिलाय चाटे तो सब अतीसार और संग्रहणी दूर हों तथा अग्नि दीपन हो ॥

अथ वज्रकपाटरस ॥

पारे और अभ्रककी भस्म, शुद्ध गन्धक, जवाखार, सुहागा, अरणी, बीजबोल और खुरासानी बच इन सबको समान भाग ले यह रस जम्भीरी और भांगरेके रस में तीन तीन दिन घोट, गोला कर, सुखाय, लोहेकी कड़ाही में धर, ऊपरसे मिट्टी का पात्र ढांप ४ घड़ी तक मन्द मन्द आंच दे फिर उसको उतार कर उसके समान उसमें अतीस, मोथारस डाल कैथे और भांगरे के रस में ७ बार घोटे फिर धवपुष्प, इन्द्रयव, मोथा, लोध, बेल और गुर्च इनके रसमें एक एक बार घोट कर सुखाय ले फिर इस रसको शाण भर शहद के साथ खाय और ऊपर से चीता, सोंठि, पांगानोन, बेल, सैन्धव इन सबका समानभाग चूर्णकर उष्णजल के साथ खाय तो ग्रहणी दूर हो ॥

अथ मदनकामदेवरस ॥

चांदी, हीरा, सोना, तांबा आदिकी भस्म, पारा, गन्धक, लोहा तीनों शुद्ध ले इन सातों को क्रमसे बढ़ती भाग ले और घिकुआरके रसमें घोटकर शीशी में भर कपरौटी करे और मिट्टी के पात्र में नीचे ऊपर नोन पूरकर बीच में शीशी धर संपुट बनाय चूल्हे पर धर मन्द मन्द आंच दिनभर जलावे फिर निकालकर मदारके दूधमें खरल करे फिर असगन्ध, काकोली, बिनाभी असगन्ध, किवांच, मुसली, तालमखाना और शतावरि इनके रसमें तीन तीन भावना दे फिर कमल की जड़ ले कसेरू और कांस इनमें तीन भावना दे और कस्तूरी, त्रिकुटा, कर्पूर, शीतलचीनी, इलायची, लौंग आदि को पीसे फिर पूर्वचूर्ण जो भावनादिसे सिद्ध कियाहै उसका अष्टमांश कस्तूर्यादि चूर्ण

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS

युक्तकर सबके समान शक्कर मिलाय ५ शाण भर खाय ८ पैसा भर दूध पिये पथ्य मधुर करे इसके खानेसे बहुत स्त्रीगमन करे और धातु न घटे॥

अथ कन्दर्पसुन्दररस॥

पारा, शुद्ध हीरा, मोती, चांदी, सोना, कृष्णाभ्रक इन पांचों की भस्म कर्ष कर्ष भर लेकर खैर के क्वाथ में १ दिन घोटे फिर मूंगेका चूर्ण, शुद्ध गन्धक दो दो कर्ष मिलाय असगन्ध के रसमें एक दिन घुटाय मृगके सींगमें भर कपरौटी कर थोड़ी आंच में धर फूंक दे उसपर धवफूलके रस अथवा क्वाथ में भावना दे फिर काकोली, विना आसन मुलेठी, जटामांसी, बरियारा, गुलसकरी, ककई, भसींड़, हिंगवट, मुनक्का, पीपल, काबादी, कटसरैया, वनमूंग, मुग्धपर्णी, फालसा, कसेरू, महुआ, किवांचके बीज इन सबके रसमें एक एक भावना दे सुखाय खरलकर धर राखे और इलायची, तज, पत्रज, वंशलोचन, लवङ्ग, अगर, केसर, मोथा, कस्तूरी, पीपल, सुगन्धबाला और कपूर इनका चूर्ण कर शाणभर ले और शाणभर पूर्वोक्त कन्दर्पसुन्दररस और खांड़, आंवला, बिदारीकन्द इन सबको मिलाय कर्षभर घी रात्रिमें विषयी पुरुष खाय दूध पिये तो बहुत स्त्री के साथ भोग करे और वीर्यहानि न हो॥

अथ लोहरसायन॥

पारा और गन्धक दोनों को शुद्ध एक एक भाग ले घोट कजली करे फिर तीन भाग शुद्ध पोलाद का चूर्ण ले कजली के साथ पहरभर घोटे पीछे घिकुआरके रसमें ३ दिन तक घाम में बैठकर घोटे फिर घाम और घोटनेकी गर्मीसे बहुत धुआं उठे और कड़ा हो तब गोला बांध एरण्डपत्र लपेट तांबे के पात्र में राख घाममें तीन दिन गाड़ रक्खे फिर निकाल घाम में धर सबुजाके रसकी ३ भावना दे जब सूखजाय तब सोंठि, मिरच,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पीपल तीनों के तीन क्वाथ कर तीन भावना दे फिर रूसा, गुर्च, चीता इनको एक एक के रसमें तीन तीन भावना दे जल से निकाल लोहपात्र में धर त्रिफला में घोटकर मेवड़ी, अनार का छिलका, भर्सींड़, भंगरा, कटसरैया, पलाश, केले के वृक्षका रस, विजयसारके रसका क्वाथ, नील, मुण्डीरस, बबूलफली, फालसा इन सबके रस अथवा क्वाथ में ३ भावना दे फिर बरियारा, शतावरि, गोखुरू, छरहट इनके रसमें तीन तीन भावना दे यदि सब मिलिजायँ फिर प्रभात समय ८ माशे रस घृत और शहद में खिलावे और ऊपर से पल भर त्रिफला का क्वाथ पिये यही इसका अनोपान है। तीन माशे सेवन करे तो बाल श्वेत न हों और त्वचापर झुर्री न परे तथा मन्दाग्नि, श्वास, खांसी, पाण्डु, कफ, वायुविकार इन सबके लिये त्रिफलायुक्त खाय और पीपल तथा शहद में खाय तो बल, सुन्दरता और आयु बढ़ावे एवं लोह खानेवाला श्वेत कुम्हड़ा, तिल का तेल, उड़द, राई, मद्य, खटाई ये पदार्थ छोड़ दे॥

इति त्रयोविंशतिस्तरङ्गः २३॥

अथ आसव बनाने की विधि लिखते हैं॥

अथ दशमूलासव की विधि॥

सरिवन, पिथवन, दोनों कटेली, गोखुरू, बेल, अरणी, अरलू, खम्हारि, पाढ़ल इन सबकी जड़ ५ टके, चित्रक २५ टके, पुष्करमूल २५ टके, लोध २० टके, गिलोय २० टके, आंवले १६ टके, धमासा १२ टके, खैरसार १२ टके, विजयसार १२ टके, हड़की छाल १२ टके, कूट ९६ टके, मंजीठ १२ टके, देवदारु २ टके, बायबिड़ंग २ टके, मुलहठी २ टके, भारंगी २ टके, कैथ २ टके, बहेड़े की छाल २ टके, सांठी की जड़ २ टके, पद्माक २ टके, नागकेसर २ टके, नागरमोथा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS

२ टके, चव्य २ टके, बड़छड़ २ टके, फूलप्रियंगु २ टके, गौरीसर २ टके, कालाज़ीरा २ टके, निशोत २ टके, सम्हालू २ टके, रासना २ टके, पीपल २ टके, सुपारी १ टके, कचूर १ टके, हल्दी २ टके, सौंफ २ टके, इन्द्रयव २ टके, काकड़ासिङ्गी २ टके, काकोली २ टके, क्षीरकाकोली २ टके, ऋद्धि २ टके, वृद्धि २ टके, मुनक्का, दाख ६० टके और शहद ३२ टकेभर, धवई के फूल ५ सेर, बेरझारी ५ सेर और बेलकीछाल १५ सेर इन सबको अठगुने पानी में औटाय उसका चौथा हिस्सा रक्खे अथवा इन सबको जवकुट कर बड़े मटके में धर इसके अनुमान मुवाफ़िक़ पानी डाले और पानी में चोखा गुड़ पक्का १ मन मिलावे फिर घूरेकी ज़मीन में इस मटके को गाड़ दे और मटके का मुँह ढांपदे २१ दिन पीछे जब इसका जावा उठे तब उस जावे को अन्य मटुके में भर दारू काढ़ने के यन्त्र से और बासन में इस आसव को निकाल ले फिर उस यन्त्र के मुँहपर ये सुगन्धित औषधें पोटली कर डाले खस, चन्दन का चूर, जायफल, लवङ्ग, दालचीनी, इलायची, पत्रज, केसर, पीपल इन सबको दो दो टकेभर और कस्तूरी ४ माशे ले पोटली कर धरे फिर इसको पुराना कर २ टके भर अनुमान मुवाफ़िक़ मदात्यय के प्रकरण में लिखी विधि के अनुसार पीवे तो क्षयीरोग, संग्रहणी, अरुचि, शूल, श्वास, कास, भगन्दर, वायुके सब रोग, कोढ़, बवासीर, प्रमेह, मन्दाग्नि, उदरके सब रोग, पथरी और मूत्रकृच्छ्र इन सबको यह दूर करे तथा भूखको बढ़ावे और नपुंसकपने को दूर करे एवं शरीरको पुष्ट कर शरीरमें वीर्यको बढ़ावे। इति दशमूलासव की विधि सम्पूर्ण॥ और इसीतरह सब आसव दाख, अंगूर आदि के बनालेवे॥

अथ मुसलीपाक बनाने की विधि॥

सफ़ेद मुसली पावभर, कौंचके बीज २॥ टंक, बिदारीकन्द

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

२॥ टंक, गोखुरू २॥ टंक, शतावरि २॥ टंक, खरैटी के बीज १ टंक, गंगेरनकी छाल १ टकेभर, सोंठि २ टकेभर इन सबको महीन पीस इनकी बराबर गोघृत में इन्हें मकरोय १० सेर दूध में पकावे जब दूधका कड़ा मावा होजाय तब १ सेर खांड़ की (लड्डुओं कीसी) चाशनी कर उसमें वह मावा मिलाय ये औषधें डाले—मिरच २ टंक, पीपल २ टंक, सोंठि २ टके, दालचीनी १ टके, पत्रज २॥ टके, इलायची १ टके, नागकेसर २ टके, कस्तूरी ४ माशे, लौंग १ टके, जायफल १ टकें, जावित्री १ टके और वंशलोचन १ टके भर इन औषधों को जुदी जुदी पीस इस चाशनीमें डाले और सारबङ्ग, अभ्रक, मृगाङ्क और हरगौरीरस ये भी अनुमान मुवाफ़िक़ चाशनी में डाले पीछे इन को एकजीव कर १ टके भरकी गोली बांधे। प्रभात और सन्ध्या समय एक एक गोली खाय तो शरीरको पुष्ट कर प्रमेहादिक सब रोगोंको दूर करतीहै—इति मूसली पाककी विधि सम्पूर्ण॥ और सब पाक इसी तरह कर लेवे॥

अथ शिलाजीत के शोधने की विधि॥

शिलाजीत अथवा जिसमें से वह निकला हो उस पत्थर को ले फिर उस शिलाजीत को गौके दूध अथवा त्रिफले के काढ़े या भांगरे के रसमें भिगोवे १ दिन पीछे उस वासन में उसन खूब मसले फिर उसको कपड़छान कर धूप में सुखायले तब वह शुद्ध होताहै अथवा शिलाजीत के कांकरे को ले उन्हें पीस गर्म पानी में २ पहर रक्खे फिर उसको मसल और मट्टी के पात्रमें वस्त्रसे छानले पीछे उस पात्रको धूप में धरे ऊपर का पानी उस-का दूसरे पात्र में नितारले इसीतरह बारम्बार दो महीने तक करता जाय तब वह शिलाजीत शुद्ध होताहै। अग्नि में निर्धूम हो और अग्नि में धरने से लिङ्गोपम खड़ा होजाय तब शुद्ध

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS

जानना। शोधा शिलाजीत प्रमेह आदि बहुत रोगों को दूर कर शरीर को पुष्ट करता है—इति शिलाजीत शोधन ॥

अथ जवाखार आदि सब खारों के बनाने की विधि ॥

कच्चे जवोंको काट कर सुखाले फिर उसको जलाय राख कर बासन में २ दिनतक भिगो दे पीछे टिकठी के कपड़ा बांध उस कपड़े में उस राख को डालकर पुटली बांध पानी में डाल दे जबतक उसमें से खारा पानी निकले तबतक और पानी डालता जाय पीछे उस पानीको कड़ाहीमें चढ़ाय जला देवे जब उस कड़ाही में उस पानीका नोन समान खार जम जाय तब निकाल ले इसी तरह सब खार बना लेवे—इति जवाखार आदि बनाने की विधि ॥

अथ चनाखार के बनाने की विधि ॥

चतुर आदमी माघ के महीने में चनेके खेत के ऊपर महीन कपड़ा ३ या ४ घड़ी के तड़के फेर लावे फिर वही कपड़ा १५ दिनतक फेरे और नित्य सुखाता जाय जब वह कड़ा हो तब उस कपड़ेको पानी में भिगो कर कपड़े से वह पानी छान ले पीछे कड़ाही में वह नितरा पानी डाल चाशनीसमान गाढ़ाकर बासनमें भर राखे तो वह चोखा चनाखार हो यह बहुत खट्टा होताहै—इति चनाखार बनाने की विधि ॥

अथ स्नेहविधि ॥

स्नेह चार प्रकार का है। घृत १ तैल २ बसा (मांस) में मिली चरबी ३ और हाड़के भीतर की मज्जा ४ वैद्य को उचित है कि इन चारों को सूर्योदय के समय मनुष्य को पिलावे। इनमें भी दो भेद हैं। १ स्थावर २ जंगम। स्थावर का अर्थ अचर है (जहां उपजे वहीं स्थिर रहै) इस प्रकार से स्नेह अनेक प्रकार के हैं और जंगम का अर्थ चर है (जो श्वास सहित हो) इसमें घृत श्रेष्ठ है ॥

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ स्नेहभेद ॥

घी और तेल मिलावे उसे यम और घी, तेल और वसा मिलावे उसे त्रिवृत् तथा घी, तेल, वसा और मज्जा संयुक्त हों उन्हें महान् कहते हैं ॥

अथ स्नेहपान ॥

कृमि रोगी को घृत तीन दिन, तेल चार दिन, वसा पांच दिन, मज्जा छह दिन, घृतादि स्नेह सात दिन पिलावे क्योंकि अधिक दिन पान कराने से आहार होकर गुण नहीं करता है ॥

अथ स्नेहमात्रा प्रकार ॥

वातादि दोष, ऋतुकाल, जठराग्नि, अवस्था, निर्बल, सबल और समबल का विचार कर अल्प, मध्य अथवा ज्येष्ठ मात्रा रोगी को घृत, स्नेह आदि की देनी चाहिये। मात्रा, प्राण और विना दोष समझे और बिना बल जाने न्यूनाधिक मात्रा तथा अकाल वा विपरीत भोजन और विहार करने से सूजन, अर्श, ऊंघना, निद्रा और असावधानता ये रोग होते हैं। दोनों समय घट बढ़ विना रुचि देश काल विरुद्ध खाने को मिथ्याहार कहते हैं और अकाल परिश्रम करना, ऋतु से विपरीत (गर्मी में धूप खाना, सर्दी में बहुत जलाभ्यास और विना वस्त्र) इत्यादि को मिथ्या विहार कहते हैं ॥

अथ मात्रा प्रमाण ॥

दीप्ताग्निवाले को घृतादि स्नेह की मात्रा पलभर मध्यमाग्नि मनुष्य को ३ कर्ष प्रमाण और मन्दाग्निवाले मनुष्य को २ कर्ष प्रमाण मात्रा का देना उचित है। ऋषि लोग घृतादि पानकी सामान्य मात्रा कहते हैं। ये तीन प्रकार की हैं—एक महती (जो आठ पहर में पचे) दूसरी मध्यमा (जो दिनभर में पचे) तीसरी अल्प (जो दो पहर में पचे) इन तीनों मात्राओं में

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तिलका प्रमाण नहीं है जैसा पचे वैसाही दे। सब मात्राओं से अल्प सुखदायी है ॥

अथ अल्पादि मात्राओं का गुण ॥

अल्पमात्रा दो कर्ष की है—अग्नि दीप्त करती है और इससे स्त्री प्रसंग की इच्छा होतीहै और जो थोड़े वातादि कुपित हों उन्हें शान्त करती है और मध्यम मात्रा तीन कर्ष की है—शरीरपुष्टि, धातुवृद्धि और श्रमको शान्त करती है तथा ज्येष्ठ मात्रा पलभर की है इस मात्रा से बीस प्रकार का कुष्ठरोग, उन्माद, भूत-प्रेत बाधा और मृगी ये रोग दूर होते हैं ॥

अथ दोषोचित अनोपान ॥

पित्तकोप में केवल घृत, वायुकोप में सैंधव संयुक्त घृत और कफकोप में सोंठि, मिरच, पीपल और सार पीस कर घृतमें युक्त कर पिलावे और रुखाई, उरःक्षत, विषार्ति और वातपित्त दोष, हीनबुद्धि और सुधि भुलाना इन सबों में घृत अवश्य पिलाना चाहिये तथा कृमिविकार, वायुवृद्धि, शरीरमें कफ और मेदवृद्धि इन सबों में तेलका देना उचित है और जो तेल उसे स्वाभाविक ही अहित हो तो अग्नि भी दीप्त करेगा और जो मनुष्य परिश्रमकर दुर्बल और पीड़ितहो, धातुक्षीण, शुष्करक्त, शरीरपीड़ा, भस्मक, आक्षेपकादि वायु और बलिष्ठ वायु इनमें वसा पिलाना योग्य है तथा दुष्ट कोष्ठ क्लेशित, वायुपीड़ित और प्रबलाग्निवाले को मज्जा का पिलाना योग्य है यह सब शरीर को हित है ॥

अथ स्नेहपानसमय ॥

शीतकाल में दिन में, उष्णकाल में रात को, अधिक वात व पित्तवाले को रात में और अधिक वात और कफवाले को दिनमें पिलावे। घृतादिकर्म विशेष कर नासके कारण, मर्दन को, कुल्ली को, मस्तक में दाबने को, कान और आंखिमें डालने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

को घृत अथवा तेल वातादि दोष और सबल निर्बल का विचारकर वैद्य युक्ति से देवै ॥

अथ स्नेहपानानुपान ॥

घृत उष्णोदक के साथ पिये, तेल यूष के साथ पिये और चरबी, हाड़ और मज्जा माड़युक्त पीनेसे सुखदायी है और जिस को स्नेह न भावे उसे अन्नके साथ दे तथा बालक, बूढ़ा, सुकुमार, दुर्बल और मृदुतायुक्त मनुष्यको गर्मी में भात के साथ दे ॥

अथ स्नेहयवागू ॥

तिलको भली प्रकार कूटकर थोड़ासा चावल का चून डाल थोड़ा घृत और जल देकर पतला पकाले तब गुनगुना खाय तो धातु को बहुत उत्पन्न करे और शरीर को चिकना करे ॥

अथ धारोष्णदुग्धविधि ॥

दोहनी के भीतर मिश्री पीस घृत मिलाय तप्त करे उसमें दुहा दुग्ध तुरन्त गर्म गर्म पिलावे तो धातु जल्द पैदा हो और स्नेह पीनेपर परिश्रम करने वा कफकृत पदार्थ खानेसे स्नेह न पचा हो वा मलावरोध किया हो तो उष्णजल से वमन करावे तो अजीर्ण दोष मिटे जो स्नेहअजीर्ण की शंका हो तो तप्त जल प्यावे जब शुद्ध डकार आवे और अन्नपर इच्छा करे तो जाने कि अजीर्ण शान्त भया और पित्तप्रकृतिवाले को स्नेह पानसे गर्मी होती है और प्यास विशेष लगती है उसे शीत जल पिलावे, वमन करावे तो प्यास और ऊष्मा शान्त हो और स्नेहनिषेध अजीर्ण उदररोग में, तरुणज्वर में, दुर्बल को, अरुचिको, अतिस्थूल को, मूर्च्छा में, मदार्तिको, बस्तिकर्म भये को, विरेचनभये को, वमन को, परिश्रमी को और गर्भगिरी स्त्री को स्नेह न प्यावे। स्नेहयोग्य औषध दे और जिसे स्वेद निकला हो, रेचन कराया हो, मद्य पीनेवाले को, मैथुनश्रमी को, बाल और वृद्ध को, रूक्षशरीर को, रक्तधातुक्षीण को, वातार्ति

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

को और तिमिररोगी को घृतादि स्नेह पिलाना योग्य है॥

अथ स्नेहगुणादि लक्षण॥

जो स्नेहपान से गुण भया हो तो शरीर में वायु शुद्ध करता है, अग्निको दीपन करताहै। दस्त खुलकर होताहै, तनुकोमल, तेजयुक्त, चिकना होता है तथा मनुष्य ग्लानिरहित होजाता है। उपद्रव विना शरीर हल्का, इन्द्रिय निर्मल होना अच्छे स्नेह के लक्षणहैं और रूखे लक्षण हों तो स्नेह पान विपरीत समझना॥

अथ स्नेह बहुत पीने के उपद्रव॥

अन्न न भावे, मुख में पानी छूटे, मलमार्ग में जलन रहे और मल बहे तथा तन्द्रा, अतीसार और पीला शरीर होना ये सब अतिस्नेह के लक्षण हैं॥

अथ स्नेह रूक्ष और रूक्षस्निग्ध का प्रतीकार॥

रूक्ष मनुष्य को विना मक्खन निकाला मट्ठा, तिलका कल्क और यव का सत्तू खिलाय स्निग्ध करे और स्निग्ध के समान चावल चनादि खिलाय रूखा करे॥

अथ स्नेह सेवन के गुण॥

स्नेहसेवन से अग्निदीप्त, शुद्ध कोष्ठ, धातुपुष्ट, इन्द्रिय दृढ़, जरारहित, बल और कान्तियुक्त लक्षण होते हैं। स्नेह सेवनमें ये बातेंमनाहैं—श्रम न करे, ठण्ढे पदार्थ तजे, मल-मूत्र न रोंके, बहुत न जागे, दिनमें न सोवे और कफकृत पदार्थ तथा रूक्षान्न न खाय॥

अथ स्वेदविधि॥

स्वेद चार प्रकार का है। १ ताप २ उष्ण ३ उपनाह ४ द्रव-स्वेद। ताप और उष्णस्वेद कफ के रोगों को दूर करते हैं। बालूरेत, नोन, वस्त्र, गर्म हाथ, टकनी, अंगीठी इत्यादि से सेंक कर पसीना लिवावे उसे तापस्वेद कहते हैं १ लोह की पीड़ी, ईंट आदि के तपाने से पसीना आवे उसे उष्णस्वेद कहिये २ ताप और उष्ण इन दोनों के मिलने से जो पसीना

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

आवे उसे उपनाहस्वेद जानना ३ शरीर को वस्त्रसे ढांक कर शरीर के ऊपर गर्म खटाई के पानी से सींचे अथवा वायुको दूर करनेवाली ओषधियों का गर्म पानी शरीर के ऊपर डाले तो पसीना बहुत आवे इसको द्रवस्वेद कहते हैं ४ ये चारों प्रस्वेद वायु के रोगों को दूर करते हैं ॥

अथ महासाल्वण स्वेद ॥

कुलत्थ, उड़द, गेहूं, अलसी, तिल, सरसों, सौंफ़, देवदारु, सम्हालू, जीरा, अरण्ड, अरण्डकी जड़, रास्ना और सहँजनेकी जड़ इन सबको नोनसमेत कांजीसे अथवा किसी खटाई से महीन पीस गर्मकर शरीर में जहां वायु भरी हो वहां सेंके तो वायु के सब रोग जायँ–इति महासाल्वणस्वेद ॥ इति स्वेदविधि ॥

अथ वमनविधि ॥

शरद्, वसन्त और वर्षा इन ऋतुओं में मनुष्यमात्र को वमन और जुलाब लेना योग्य है। जिसके शरीर में कफ के रोग हों, हृदय आदि दूखे, विष का दोष हो और श्लीपद, कोढ़, विसर्प, प्रमेह, अजीर्ण, भ्रम, श्वास, खांसी, पीनस, मृगी, उन्माद, रक्तातीसार तथा नाक, तालू, ओठ और कान पाकिगये हों, दो जीभ होगई हों, अतीसार हो, पित्त कफ के रोग हों, मेद बढ़गया हो, शिर के रोग हों, पसुलियां दूखें, तत्काल ज्वर हो और अरुचि हो इन सब रोगों में वमन करना हितदायक है और तिमिर के रोग में, गोलेके रोगमें, उदर के रोग में तथा दुर्बल और बूढ़ेको, गर्भिणीको, स्थूल को, चोट खाये हुए को, मेदवाले को, भूखेको, उदावर्ती को और वायुके रोगी को वमन न कराना चाहिये ॥

अथ वमन की विधि ॥

भेदड़ी राबड़ी पतलीको पेटभर खवाइये और भेदड़ीमें दूध,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS

मट्ठा और दही ये डाल कण्ठपर्यन्त खवाइये पीछे सेंधानोन, शहद, बच ये खवाय ऊपर गर्म पानी पिलाय गलेमें अंगुली डाल वमन करावे अथवा कुटकी और तीखी वस्तु अथवा मेढ़ल का चूर्ण गर्म गर्म पानीसे ले अथवा फिटकरी तम्बाकू आदि गर्म पानीसे ले तो वमन हों अथवा नींब आदि कड़ुवे द्रव्यों से वमन करावे तो पीछे कहे हुए सबरोग जायँ। वमन करने के अनन्तर जीभ में ज़ीरा अथवा बिजौरा आदि अच्छी वस्तु लगावे और अतर आदि सुगन्ध सूंघे और हितदायक भोजन करे—इति वमनविधि॥

अथ गण्डूषविधि॥

गण्डूष चारप्रकार का है। स्नेहक १ शमन २ शोधन ३ रोपण ४ इसीप्रकारसे कवल भी ४ प्रकार का है॥

अथ स्नेह का गण्डूषभेद॥

चिकने और उष्णपदार्थ को स्नेह कहते हैं यह वायुकी प्रबलता में देना चाहिये और ठण्ढे पदार्थ को शमन कहते हैं इसे पित्तके विकार में देना चाहिये तथा कड़ुआ, खट्टा और उष्ण पदार्थ शोधन कहातेहैं इन्हें कफके विकारमें देना चाहिये और कषाय, कटु, मधुर और तप्त किये पदार्थको रोपण कहते हैं इन्हें व्रणादिमें देना चाहिये इसीप्रकार से कवलमेंभी जानना चाहिये॥

अथ गण्डूष और कवल की रीति॥

गीला काढ़ा आदि मुँहमें भर खूब गुलगुलानेको गण्डूष और कल्क कर मुखमें धर इधर उधर फेरने को कवल कहते हैं॥

अथ उभय द्रव्यप्रमाण॥

गण्डूष में जो क्वाथ दियाजावे उसके द्रव्य का प्रमाण कोल कोलमात्र है और कवल कर्ष कर्ष प्रमाण है। गण्डूष और कवल से योग्यावस्था पांचवर्ष के ऊपरहै इसको चित्त सावधान कर रोगों के निवारण के लिये कपोल, गला, मुख आदि को

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कुल्ल सेंक कर तीन, पांच वा सातवें दोषके नाशपर्यन्त गण्डूष करे और जबतक मुखमें कफ न भर आवे अथवा तीनों दोष शान्त न होजावें अथवा नेत्र और नाक से जल न टपकने लगे तबतक गण्डूष करे॥

अथ वातरोगस्नेह गण्डूष॥

मनुष्य को वात की प्रबलता में तिलकल्क, पानी, दूध वा तिलादि स्निग्ध गण्डूष देना चाहिये॥

अथ पित्तशमन गण्डूष॥

तिल, नीलकमल, घृत, खांड़, दूध और शहद आदि युक्त कर कुल्ला करने से पित्त से उत्पन्न दाह दूर होता है॥

अथ व्रणादि पर गण्डूष॥

शहद के कुल्ले करने से मुखक्षत, रसज्ञान, चटकना, दाह और प्यास आदि उपद्रव दूर होते हैं और मुख शुद्ध होता है॥

अथ विषादि पर गण्डूष॥

घृत वा दूध के कुल्ले करने से विषविकार तथा चूनेसे फटा और अग्नि से जला मुख अच्छा होता है॥

अथ दांतों को पुष्टकारक गण्डूष॥

जिस मनुष्य के दांत हिलते हों वह तिल के तेल में सैन्धव मिला कुल्ले करे तो दांत हिलना बन्द हो॥

अथ मुखशोष पर गण्डूष॥

जिस मनुष्य का मुख सूखता हो अथवा फीका फीका रहता हो तो कांजी के कुल्ले करने से अच्छा होता है॥

अथ कफदोष पर गण्डूष॥

अदरकके रसमें सैन्धव, त्रिकुटा और राई आदि पीस मिलाकर कुल्ला करने से कफदोष मिटे॥

अथ कफ-रक्तपित्त पर गण्डूष॥

त्रिफलेके चूर्णको शहद में डाल कुल्ला करे तो मुखमें कफ-रक्तपित्त दोष कदापि न रहे॥

In Public Domain, Chamba Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ मुखरोग पर गण्डूष ॥

दारुहल्दी, गुर्च, त्रिफला, दाख, चमेली और जवासा ये समान ले क्वाथ करे फिर उसमें उसके छठवें भागके तुल्य शहद डाल कुल्ले करे तो त्रिदोष का मुखपाक जाय ॥

विशेष ॥

जो द्रव्य गण्डूष करनेवाली है उसको प्रतिसारण और कवल में भी देना योग्य है ॥

अथ कवलविधान ॥

केसर, बिजौरा की गूदी, सैंधव और त्रिकुटा इन सबका कौर बनाय मुख में बिलोवे तो मुखकी कठोरता और कफ-वात की अरुचि दूर हो ॥

अथ प्रतिसारण प्रकार ॥

प्रतिसारण में औषध देनेके ३ प्रकार हैं। कल्क १ अवलेह २ चूर्ण ३ जैसा मुख में रोग देखे उसीप्रकार की औषध ले अंगुली के अग्रभाग से मुख के भीतर मले ॥

अथ प्रतिसारण चूर्ण ॥

कूट, दारुहल्दी, धवपुष्प, पाढ़ा, कुटकी, हल्दी, तेजबल, मोथा और लोध इनका चूर्ण जीभ और दांतों की जड़ में बार बार मलकर लार गिरावे तो दांतों की पीड़ा, रक्त का गिरना, मसूढ़ोंका सूजना और दाह ये रोग दूर हों ॥

अथ गण्डूषादि हीन वृद्ध भये से उपद्रव के लक्षण ॥

कफकी न्यूनाधिक्य, स्वाद और अज्ञान होता है अन्न से अरुचि, अतियोग से मुख पकना, पीरका होना, मुखशोष और ग्लानि आदि उपद्रव होते हैं ॥

अथ सम्यक्गण्डूषलक्षण ॥

मुखव्याधिनाश, चित्त प्रसन्न, निर्मल मुख, लहलका, जीभ के स्वाद आदि से सम्यक् गण्डूष जानना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ विरेक नाम जुलाब की विधि ॥

विधिपूर्वक वमन कराकर पाचन द्रव्य देवे जिनसे शरीर के कफरोग पचिजायँ और शरद् और वसन्त ऋतु में जुलाब देने से सब रोग दूर होते हैं। रोगानुसार सब ऋतुओं में जुलाब दिया जासक्ता हैं। इतने रोगवाले मनुष्योंको निश्चय जुलाब देना चाहिये। अजीर्णज्वर, शरीर में मल का संग्रह, वायु, रक्त, भगन्दर, बवासीर, पाण्डुरोग, उदररोग, गोला, हृद्रोग, अरुचि, योनि का रोग, गर्मी का रोग, कान और नासिकाका रोग, प्रमेह, फोड़ा, विसूचिका, नेत्ररोग, शूल, शिरोरोग, मुखरोग, शोथ और मूत्राघात ये रोग जुलाब लेने से अच्छे होते हैं। इन रोगवालों को जुलाब देवे। बूढ़ा, जिसका शरीर बहुत चिकना हो, शस्त्र लगनेसे क्षीण पड़जाय, भयभीत, खेदयुक्त, पिपासित, स्थूल पुरुष, गर्भिणी स्त्री, तत्कालज्वर चढ़ा हो, तत्काल की प्रसूता स्त्री, मन्दाग्निवाला, मेदक रोगवाला और रूखे शरीरवाला। पित्तकी प्रकृतिवाले को कोमल और कफकी प्रकृतिवाले को मध्यम तथा वायुकी प्रकृतिवाले को कड़ा जुलाब देना हितदायक है ॥

अथ मृदुजुलाब ॥

दाख, दूध और हड़ आदि का कोमल जुलाब है ॥

अथ मध्यम जुलाब ॥

निशोत, कुटकी और किरमाला आदि ॥

अथ तीक्ष्ण जुलाब ॥

थूहरका दूध, चोख, दात्यूणी, जमालगोटा और इच्छाभेदी आदि का कड़ा जुलाब होता है ॥

अथ पुनः जुलाब लेने की विधि ॥

प्रथम पांच सात दिन तो पुरुष मुंजिस ले फिर सोनामुखी २॥ टंक, ज़ीरा १। टंक, सौंफ़ २॥ टंक, मुनक्का दाख २॥ टंक,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS

गुलाब के फूल २॥ टंक, पाढ़ १० टंक इन सबको तीन पाव पानी में औटाय पावभर रक्खे पीछे इस पानी को छान नित्य ४ दिन पीवे तो उदर का मल पचे और थोड़ा थोड़ा निकला करे। नित्य चावलकी खिचड़ी घृतसमेत खाय और पांचवें दिन सोनामुखी १० टंक, निशोत १० टंक, गुलाब १० टंक, ज़ीरा २॥ टंक, सौंफ़ ५ टंक, पाढ़ १० टंक इन्हें औटाय नित्य ४ दिन ले और घृत समेत खिचड़ी खाय तो जुलाब अच्छा उतरे और इससे सब रोग जायँ। खट्टा, खारा न खाय। जुलाबमें ३० दस्त आवें तो उत्तम और २० दस्त आवें तो मध्यम तथा १० दस्त आवें तो हीन जुलाब जानिये १॥

अथ छओंऋतु के पृथक् पृथक् जुलाब॥

वसन्तऋतु में सोनामुखी, निशोत, गुलाब के फूल, सौंफ़, ज़ीरा, खांड़ चीनी इनका जुलाब लीजे और ग्रीष्मऋतु में निशोत और मिश्री इन दोनों को बराबर ले जुलाब ले तो सब रोग जायँ और शरीर शुद्ध हो २॥

अथ वर्षाकाल का जुलाब॥

निशोत, पीपल, दाख, सोंठि और शहद का जुलाब ले ३॥

अथ शरदृऋतु का जुलाब॥

निशोत, धमासा, नागरमोथा, दाख, नेत्रबाला, मुलहठी, चन्दन, सोनामुखी और मिश्री इनका जुलाब रोगनाशक है ४॥

अथ हिमऋतु का जुलाब॥

निशोत, चित्रक, पाढ़, चोखी सोनामुखी और बच इनका जुलाब गर्म पानी से ले तो सब रोग जायँ ५॥

अथ शिशिरऋतु का जुलाब॥

निशोत, पीपल, सोंठि, सेंधानोन, शहद और सोनामुखी इनका जुलाब ले तो सब रोग जायँ ६॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ अभयादि मोदक ॥

हड़की छाल, मिरच, सोंठि, बायबिड़ंग, आमला, पीपल, पीपलामूल, तज, पत्रज, नागरमोथा ये सब बराबर ले और इनसे तिगुनी दात्यूणी ले तथा इन सबसे अठगुना निशोत ले और इन सब से छःगुनी मिश्री ले फिर इन सबको महीन पीस शहद में २॥ टंक प्रमाण की गोली बांधे। एक गोली प्रभात ही शीतल जलसे ले तो जुलाब अच्छा उतरे। जबतक बहुत गर्म पानी नहीं पीवे तबतक जुलाब लगा करे और इससे बहुत जुलाब लगे तो मनुष्यके ये सब रोगजायँ–विषमज्वर, मन्दाग्नि, पाण्डुरोग, खांसी, भगन्दर, प्रमेह, राजयक्ष्मा, नेत्र-रोग, बवासीर, कोढ़, गण्डमाला, उदररोग, वायुके रोग, अफरा, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, जांघ और कटि की पीड़ा इन सब रोगों को अभयादिमोदक दूर करता है और जवान करता है–इति अभयादिमोदक १ ॥

अथ जुलाब लेनेवाला इतना काम करे ॥

जुलाब लगे पीछे शीतलजलसे आंख धोवे, अतर सूंघे, पानखाय, पवनके स्थान में न रहे, शीतलजल से न नहाय, गर्म जल बारंबार पीवे जबतक पूरा जुलाब लगे और बीच में ये न करे तो नाभि और कुक्षि में शूल चले पीछे मल न उतरे और पवन न सरे, पित्ती आदि रोग होजायँ, शरीर भारी रहे, दाह और अफरा हो, घुमेर आवें, छर्दि हो तो पीछे उसको पाचनादि दे शुद्ध करे तो ये सब रोग जायँ और भूख लगे, शरीर हल्का रहे और जुलाब बहुत लगे तो मूर्च्छा हो, गुदा बाहर निकल आवे, शूल चले, अतीसार आदि और भी रोग हों तब उसे शीतल जलसे स्नान करावे और चावल, मिश्री, शहद, शिखरन, दही ये सब खवावे और बकरीका दूध मिश्री

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

डाल पिलावे और साठी के चावल और मसूर ये खवावे तो बहुत जुलाब बन्द हो॥

अथ अच्छा जुलाब होने का लक्षण॥

मन प्रसन्न रहे, वायु सरे, सब इन्द्रियों में बल होवे, बुद्धि निर्मल हो, भूख अच्छीतरह लगे और सब शरीर में बल हो—इति विरेचन नाम जुलाब की विधि सम्पूर्ण॥

अथ छओं ऋतुओं में हड़खाने की विधि॥

ग्रीष्मऋतु में १ हड़ की छाल का चूर्णकर उसमें बराबर का गुड़ मिलाय नित्य ६० दिनतक खाय तो रोग न हो। वर्षा ऋतु में २ हड़ का चूर्ण कर सेंधानोन के साथ खाय तो रोग न हो। शरद्ऋतु में मिश्री के साथ ३ हड़ का चूर्ण खाय तो रोग न हो। हेमन्तऋतु में ४ हड़ का चूर्ण सोंठि के साथ खाय तो रोग न हो। शिशिरऋतु में ५ हड़ का चूर्ण पीपल के साथ खाय तो रोग न हो और वसन्तऋतु में ६ हड़का चूर्ण शहद के साथ खाय तो रोग नहीं होता है—इति छओं ऋतुओं में हड़ खाने की विधि॥

अथ बस्तिकर्म (पिचकारी) की विधि॥

जिस रोगी का मल-मूत्र वायु के रोग से रुकगया हो उसके इन्द्रिय में पिचकारी दे। पिचकारी जस्तकी नली लगाय बकरे के अंडे की बनावे अथवा सुवर्ण आदि धातुओं की नली गोपूछ के आकार बनती है इसमें औषधोंका जल भर इन्द्रिय में या गुदामें बस्तिकर्म करे तो वायुके सब रोग जायँ। यह बस्तिकर्म २ प्रकार का है। अनुवासन नाम १ निरूह नाम २ तेल घृत आदिक की पिचकारी देने को अनुवासन बस्तिकर्म कहते हैं। निरूहबस्ति का भेद एक उत्तरबस्ति है १ और अनुवासन का भेद मात्राबस्ति है २ उसकी तौल दो टकेभर जल की है। इतने रोगवाले को अनुवासन बस्ति न देना। भस्मक, केवल

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

वायु का रोग, मूर्च्छा, अरुचि, खांसी, श्वास, क्षयी इन रोगवालों को और भयभीत को अनुवासन बस्ति न देना चाहिये। और इन रोगवालों को अनुवासन बस्ति करावे। एक वर्ष से ले छः वर्षतकवाले को छः अंगुल पिचकारी की बस्ति और बारह वर्षवाले को आठ अंगुल की और बारह वर्षके उपरान्त बारह अंगुल की पीछे बुद्धि के अनुमान से बस्ति दी जाती है। पिचकारी में घृत लगाकर बस्ति देना और बस्तिकर्म से शरीर में बल बढ़े व रोग जाय। शीतकाल में और वसन्तऋतुमें स्नेह की बस्ति देना और ग्रीष्म, वर्षा, शरद्ऋतु में रात्रिको अनुवासन बस्तिकर्म करिये और बहुत चिकना भोजन न करावे हलका भोजन करावे और स्नेहमें सौंफ़का जल, सेंधानोन डाल गुदामें बस्तिदीजे। गर्म पानीमें भोजन कराय और फिराय और मल-मूत्रादिक कराय, बायें पसवाड़ेकी तरफ़ सुवाय और बाईं जांघ ऊंचीकर गुदा में स्नेह की पिचकारी दे तथा बायें हाथ से पकड़ और दाहने हाथसे दाबे तब गुदा में पिचकारी का जल और स्नेह जावे और पिचकारी दे तो वह देनेवाला पुरुष और लेनेवाला पुरुष इतनी वस्तु न करे। जम्हाई, खांसी, छींक ये ले नहीं जबतक ३० ताली बजावे तबतक बस्ति करे अथवा मुख से १०० तककी गिनती करे पीछे सब शरीर को पसार सूधा सोवे फिर दोनों पांवों की अंगुली और अंगूठे को चतुर मनुष्य से खिंचवावे फिर सेज के ऊपर सूधा सोवे नींद ले इसीतरह करे तो बस्ति वायुके सब रोगों को दूर करे और गुदामें ली हुई बस्ति मलसमेत गुदामेंसे सब मलको और वायुके रोगों को दूर करती है और अनुवासन बस्तिकर्म इस विधि से छः, सात, आठ, नव बार एक एक दिनके अन्तर करने से सब वायुके रोगों को दूर करे। अनुवासन बस्तिकर्म के पीछे निरूह करिये और जिसके मलाशय में अथवा पक्वाशय में अनुवासन

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बस्ति चलाने से उसी जगह उसका स्नेहयुक्त जल आजाय, पेडूको मसलनेसे भी गुदामेंसे न निकले तो निरूहबस्ति और कीजे उस औषध की बत्तीकर गुदामें चलावे तो वायु सरे और उसका मल निकल जाय और शरीर शुद्ध हो अथवा जुलाब दे निकालिये ॥

अथ अनुवासनबस्ति के देने का तेल ॥

गिलोय, अरण्ड की जड़, कणगच की जड़, भारंगी, अडूसा, रोहिष, शतावरि, सहँजना, कागलहरी इन्हें टके टके भर ले और यव, उड़द, अलसी, बेलकीजड़, कुलत्थ ये एक एक सेर ले इन सब औषधों को ६४ सेर पानी में औटाय इनका चौथा हिस्सा रखकर उसमें मीठा तेल ४ सेर पकालेवे जब रस जलजाय तेलमात्र आयरहे तब इसे छान १ टकेभर तेल गुदा में देवे तो सब वायु के रोग दूर हों–इति अनुवासन तैल ॥ इति अनुवासनबस्तिविधि ॥

अथ निरूहबस्ति करने की विधि ॥

निरूहबस्ति बहुत प्रकार की है और इसके बहुत से कारण हैं इसका स्थापन भी नाम है। निरूहबस्ति का अधिक देने का प्रमाण है। इतने रोगवाले को निरूहबस्ति दीजिये–जिसका शरीर चिकना बहुतरहे और हृदयमें चोट लगी हो, शरीर क्षीण हो, अफरा, छर्दि, हिचकी, बवासीर, श्वास, खांसी, गुदाकी सूजन, अतीसार, विसूचिका, उदावर्त, वातरक्त, विषमज्वर, मूर्च्छा, तृषा, उदररोग, अफरा, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, चरणरोग, मन्दाग्नि, शूल, अम्लपित्त और हृदय के रोग इन रोगों में से कोई भी रोग हो उसको दीहुई निरूहबस्ति रोगोंको दूर करती है और निरूहबस्ति के देने की विधि अनुवासनबस्ति की विधि में लिखी है। यह निरूहबस्ति भी दो चार बार एक एक दिनके

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अन्तर से पीछे लिखी विधि के अनुसार दे। केवल वायु का विकार हो तो कषैली, कडुवी, स्नेहसंयुक्त दे और पित्तका विकार हो तो दूधसंयुक्त दो बस्ति दीजे और कफका विकार हो तो कषैले, कडुए और मूत्र आदि से निरूहबस्ति दीजे और सुकुमार, बालक और बूढ़े को मृदुबस्ति देनी चाहिये॥

अथ उत्क्लेशनबस्ति की विधि॥

अरण्ड, महुआ, पीपल, सेंधानोन, बच, झाऊरूख का बक्कल इन्हें औटाय बस्ति देवे–इति उत्क्लेशनबस्ति॥

अथ दोषहरबस्ति की विधि॥

सौंफ़, मुलहठी, बेल, इन्द्रयव इन्हें कांजी और गोमूत्र में पीस दे तो सर्वदोष जायँ–इति दोषहरबस्ति॥

अथ लेखनबस्ति॥

त्रिफले का काढ़ा, गोमूत्र, शहद और जवाखार ये देवे तो दोष जायँ–इति लेखनबस्ति॥

अथ शोधनबस्ति॥

हड़, किरमाला आदिका जुलाब या पिचकारी देने को शोधन बस्ति कहते हैं॥

अथ शमनबस्ति॥

फूलप्रियंगु, मुलहठी, नागरमोथा और रसौंत इन्हें दूध में पीस इनकी पिचकारी दे उसे शमनबस्ति कहिये॥

अथ बृंहणबस्ति॥

पुष्टई की ओषधियों का काढ़ाकर उसमें मीठा द्रव्य मिलाय और घृत मांसादि इनकी पिचकारी दे उसे बृंहणबस्ति कहिये॥

अथ पिच्छिलबस्ति॥

बेरी के पत्ते, शतावरि, लहसुवा और मोचरस इन्हें दूधमें पकाय उसमें शहद डाल बस्ति दे उसे पिच्छिलबस्ति कहिये॥

In Public Domain, Chamba Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ निरूहबस्ति की तोल का प्रमाण ॥

प्रथम तो किंचित् सेंधानोन डाले पीछे उसमें ½ शहद और ½ सेर घृत डाले इन तीनोंको खूब मथि इसकी पिचकारी पांच सात बार एक दिन के अन्तर से चतुराई से दे। यह निरूह बस्ति के तोल का प्रमाण है–इति निरूहमात्राविधि ॥

अथ मधुनैलबस्ति की विधि ॥

अरण्ड की जड़का काढ़ाकर उसमें शहद और मीठातेल १० टके भर डाले और सौंफ़ १ पैसेभर, सेंधानोन अधेलेभर इन्हें पीस कर मथे और इनकी पिचकारी दे तो मेद, गोला, कृमि, फिया, मल के रोग और उदावर्त इन रोगोंको यह बस्ति दूर करे और शरीर में बलको बढ़ावे–इति मधुतैलबस्ति ॥

अथ स्थापनबस्ति ॥

शहद, घृत, दूध और तेल दो दो पैसे भर ले इनमें झाऊके बक्कल का रस और सेंधानोन अधेलाभर डाले इन सबको एक-जीव कर पिचकारी दे उसे स्थापनबस्ति कहिये ॥

अथ सिद्धिबस्ति ॥

पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठि इनका काढ़ा कर उसमें तेल, शहद, सेंधानोन, मुलहठी इन्हें औटाकर मिलाय इसकी पिचकारी दे उसे सिद्धिबस्ति कहिये ॥

अथ फलबस्ति ॥

गुदा में और बाहर घृत लगाय अपने अंगूठे प्रमाण पुष्ट डंडी १२ अंगुल की आधी गुदा में डाले और इसकी चतुराई से पिचकारी दे उसे फलबस्ति कहिये और निरूहबस्ति का भेद उत्तरबस्ति है। बस्तिकर्म करानेवाला गर्मपानी में स्नान करे और दिनमें सोवे तथा अजीर्ण और कुछ भी कुपथ्य न करे–इति अनुवासन और निरूहबस्ति आदि की विधि सम्पूर्ण ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ हुक्का आदि धूमपान की विधि ॥

धूमपान छः प्रकार का है। शमन १ बृंहण २ कासहर्ता ३ वमनकर्ता ४ व्रणधूपन ५ तीक्ष्ण औषधियों के धूमपान को शोधन कहिये ६ धूमपान का निषेध। खेदसंयुक्त, भयभीत, दुःखी, दांत का रोगी, रात्रि में जगाहो, तृषित, दाहवाला, तालू के रोग, उदर के रोग, मस्तक के रोग, छर्दि, अफरा, घाव के रोग, प्रमेह और पाण्डु इन रोगवालों को, गार्भिणी स्त्री, क्षीण पुरुष, बालक, वृद्ध इन सबको धूमपान न करावे। धूमपान वायु और कफ के सब रोगों को दूर करता है और सब इन्द्रियों को और मन को प्रसन्न करता है तथा केशों और दांतों को पुष्ट करता है और इलायची आदि के धुएं को शमनधूम कहते हैं १ राल आदि के धुएं को बृंहणधूम कहिये २ तीक्ष्ण औषधियों के धुएं को रेचन कहिये ३ मिरच आदि के धुएं को कासघ्न कहिये ४ खाल के धुएं को वमनकर्ता कहिये ५ नींब और बच आदि का धुआं व्रणादिक के दीजे उसे व्रणधूपन कहिये ६ ॥

अथ अपराजितधूप ॥

मोर के पंख, नींब के पत्ते, कटेली का डोडा, मिरच, हींग, बालछड़, कपास, बकरे का बाल, सांप की कांचुली, बिलाई की विष्ठा और हाथीदांत इन्हें पीस घृत मिलाय धूनी दे तो भूत, पिशाच, राक्षस, प्रेत, डाकिनी आदि के सब दोष दूर हों और ज्वर को दूर करे—इति अपराजितधूप ॥

अथ माहेश्वरधूप ॥

हींग, देवदारु, बेलपत्र, गौ का घृत, कुक्कुट का हाड़, सरसों, नींब के पत्ते, मस्तक के केश, सांप की कांचुली, बिलाई की विष्ठा, गौ का सींग, मेढ़ल, दोनों कटेली, कपासतुष, बकरे का रोम, चन्दन, मोरपंख और बकरे का मूत्र इन्हें पीस मनुष्य के धूनी दे तो भूत, पिशाच, राक्षस, डाकिनी, प्रेत और चुड़ैल

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

आदि के सब दोष दूर हों और सब प्रकार का ज्वर इस धूपसे दूर हो २–इति माहेश्वरधूप॥ इति हुक्का आदि धूमकी विधि सम्पूर्ण॥

अथ रुधिर छुड़ाने की विधि॥

मनुष्य के शरीर में रुधिर के विकार को भले प्रकार देख उसका रुधिर ⅝ १ सेर तथा ⅝॥ सेर या ⅝। भर अथवा ⅝= पाव निकलावे और शरद्ऋतु में विकार हो तो थोड़ा रुधिर निकलावे तो मनुष्य के रुधिर का विकार न हो १॥

अथ शुद्धरुधिर का स्वरूप॥

रुधिर का मीठारस लालवर्ण हो, शीतल और गर्म न हो तथा भारी, चिकना और दुर्गन्ध को लिये हो तो यह दूधहुआ रुधिर गर्मी के सब विकारों को करता है और शरीर में रुधिर दुष्ट हो तब पीड़ा हो, शरीर पाकिजाय, दाह हो, शरीर में चकत्ते पड़जायँ, खाज पड़जाय तो खटाई और मिठाई की वाञ्छा रहे, मूर्च्छा आवे, शरीर रूखा रहे और शरीर की नसें शिथिल होजायँ २॥

अथ वायु से दुष्टहुए रुधिर का लक्षण॥

अरुणरंग हो, झाग आवे, कठोर हो और जिसकी उतावली सूक्ष्मधार चले, सुई समान शरीर में चुभके चलें और लाल हों ये सब लक्षण हों तो जानो कि रुधिर वायु से दुष्ट हुआ है ३॥

अथ पित्तसे दुष्टहुए रुधिर का लक्षण॥

रुधिर पीला, हरा, नीला और काला हो, दुर्गन्ध बहुत आवे, चले नहीं, गर्म हो, मक्खी और कीड़े खायँ नहीं जिस रुधिर में ये लक्षण हों उसे पित्त से दुष्टहुआ जानिये ४॥

अथ कफसे दुष्टहुए रुधिर का लक्षण॥

रुधिर शीतल और बहुत चिकना हो, गेरू के रंग समान

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

हो, मांस की पोटली सदृश हो, धीरे चले ये लक्षण जिस रुधिर में हों उसे कफ से दुष्टहुआ जानिये ५ ॥

अथ सन्निपात से दुष्टहुए रुधिर का लक्षण ॥

जिसमें ये सब लक्षण मिलें और कांजी समान रंग हो उस रुधिर को सन्निपात से दुष्टहुआ जानिये ६ ॥

अथ विष दूषित रुधिर का लक्षण ॥

जिसका रुधिर काला हो और नाक में बहुत चले, दुर्गन्ध बहुत आवे, कांजी का सा रंग हो जिससे कोढ़ होजाय, सावन की कीड़ी के समान जिसका रंग हो और शरीर में सूजन तथा दाह हो और शरीर पकि जाय ये लक्षण जिसमें हों उसे विषसे दुष्टहुआ जानिये ७ ॥

अथ इतने रोगों में रुधिर निकलाना योग्य है ॥

सूजन और शरीर में दाह हो, अङ्ग फोड़े और फुंसियों से पकिजाय, शरीर का वर्ण लाल होजाय, वात-रक्त का रोग और ब्याऊ आदि रोग हों, स्तनका रोग हो, शरीर भारी रहे, नेत्र लाल हों, तन्द्रा आवे, नासिका और मुख के रोग हों तथा फिया, गोला, विसर्प और विद्रधि हो तथा छाले आदि रोग, मस्तकपीड़ा, उपदंश (गर्मीका रोग) और रक्त-पित्त इन सब रोगों में रुधिर निकलाना योग्य है। सींगी अथवा जोंक या तूंबी लगावे अथवा शिरा छुड़ावे तब मनुष्य के रोग जायँ ८ ॥

अथ इतने रोगियों का फस्त से रुधिर निकलाना अयोग्य है ॥

क्षीणपुरुष, बहुत विषयी, नपुंसक, भयभीत, गर्भिणी स्त्री, प्रसूता स्त्री और पाण्डुरोगी इन सबको और जुलाब आदि पञ्चकर्म जिसने न किये हों उसको, बवासीर, सर्वाङ्गशोथ, खांसी, श्वास, छर्दि इन रोगवालेको और पसीनायुक्तशरीरवाले को और १६ वर्ष की अवस्थावाले को तथा ७० वर्ष से अधिक अवस्थावाले को शिरा छुड़ाना योग्य नहीं है ९ और इन रोगों में रुधिर निकलाने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS

से रोग जाय तो जोंक लगाकर रुधिर निकलावे और विषसे दुष्ट हुआ रुधिर हो तो शिरा छुड़ाना योग्य है अथवा पछना दे रुधिर निकलाना योग्य है और वायु, पित्त और कफ से दुष्ट हुए रुधिर को सींगी, जोंक, तूंबी आदि से निकलाना योग्य है। जोंक एकहाथ का रुधिर सोखे, सींगी और तूंबी १२ अंगुल को सोखे, पछना एक अंगूठे प्रमाण को सोखे और शिरा शरीर के सर्वांग का सोखे। शीतऋतु में इतने रोगों में रुधिर न कढ़ावे। क्षुधा और मूर्च्छावाले को, नींद, भ्रान्ति, मद, मल-मूत्र का जिसके वेग हो इन पुरुषों का रुधिर न कढ़ावे १० और जलौकादि से जिसका रुधिर न निकला हो तो उस व्रण के मुँह को कूट, सोंठि, मिरच, पीपल, सेंधानोन इनसे मसले तो रुधिर अच्छीतरह निकले। रुधिर अच्छे समय में निकलावे बहुत शीत और बहुत धूप न हो तथा भोजन हलका कराय रुधिर निकलावे॥

अथ बहुत निकलते हुए रुधिर के बन्द होने का यत्न॥

लोध, राल, रसौंत, यव, गेहूँ का आटा, धव का बक्कल, गेरू, सांप की कांचुली, रेशमी वस्त्र की राख, साम्हर की पाल इन्हें व्रण में लगावे तो रुधिर बन्दहो और भी व्रण का शीतल यत्न करे अथवा शिराछुड़ाने की नस के ऊपर दाग दे अथवा उस नस में खार लगावे या नस में कषैली वस्तु का लेप करे और बायें अण्ड के सूजन हो तो दाहिने हाथ की नीचे की नसको दग्ध करे और दाहिने अण्ड के सूजन हो तो बायें हाथ के अंगूठे की नीची नस को दग्ध करे अथवा बायें अंगूठे के सूजन हो तो दाहिने हाथ की शिरा छुड़ावे और दाहिने अण्ड के सूजन हो तो बायेंहाथ की शिरा छुड़ावे तो वह सूजन और विसूचिका जाय ११॥

अथ फस्त छुड़ाने से अधिक रुधिर निकले तो ये रोग हों॥

अन्धा हो, आधा अङ्ग सुन्न होजाय, तृषा के रोग हों, अन्धेरी आवे, मस्तकपीड़ा हो, श्वास और खांसी हो, हिचकी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

आवें, दाह और पाण्डुरोग हो तथा रुधिर बहुतही छूटे तो मनुष्य मरजाय। शरीर में रुधिर ही से जीवन है शरीर में रुधिर न रहने से मृत्यु होती है इससे शरीर के रुधिर का तत्काल प्रबन्ध करे और रुधिर निकलने से सूजन हो तो थोड़ा घृत गर्मकर उसको सेंके तो पीड़ा और सूजन दूर हो और रुधिर बहुत निकले तो हरिण के मांस का अथवा बकरे के मांस का शोरुआ देना अथवा उसमें दूध पीना तथा साठी के चावल की खीर खाना योग्य है। जबतक पीड़ा शान्त, शरीर हलका और मन प्रसन्न न हो तबतक यह खाना चाहिये॥

अथ रुधिर छुड़ाने का कुपथ्य॥

मैथुन, क्रोध, शीतलजल से स्नान, बाहर की बहुत पवन, एकासन बैठना, दिनमें नींद, नोन और खट्टीवस्तु, कड़ुवीवस्तु, शोच, वाद, अजीर्ण में भोजन ये सब वस्तु रुधिर छुड़ानेवाला न करे और जहांतक शरीर में बल आवे तहांतक कुपथ्य न करे— इति फ़स्त आदि से रुधिर छुड़ाने की विधि सम्पूर्ण॥

इति चतुर्विंशतिस्तरङ्गः २४॥

अथ अनुभूतावलेहकल्पना॥

द्रव्य को क्वाथसदृश औटाय फिर विशेष आंच देवे जब गाढ़ा हो तब अवलेह होता है कोई कोई लेह भी कहते हैं। इसकी मात्रा ४ मुद्राभर है। इसमें चूर्ण से द्विगुण मिश्री लेना चाहिये और गुड़ दूना और द्रव्यादि चौगुने यह रीति सर्वत्र है। जब आंच देनेपर तार बँधे और पानी में पाक की बूंद न डूबे और न घुलें तब सिद्ध जाने तथा अंगुली के दबाने से कुछ दबे तब सुगन्धित रसादि डाले। इसका अनोपान यह है। दूध से, ऊख से, उत्पत्ति वस्तु यूषसे, पञ्चमूलक्वाथ से इन अनोपानों से देना अथवा और कोई रोगोचित अनोपान हो उसके साथ देना चाहिये॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ हिचकी और कासश्वास पर भटकटैयावलेह ॥

भटकटैया ४ सेर ले द्रोणभर जल में औटावे जब चौथाई रहे तब उसमें चूर्ण डाले। गुर्च, चाब, चीता, मोथा, काकड़ासिंगी, त्रिकुटा, जवासा, भारंगी और कचूर ये सब पलपल भर ले चूर्ण करे शक्कर बीस पल, घृत ८ पल, तेल ८ पल ये सब काढ़े में औटावे फिर जब ऊपर कही हुई रीति के अनुसार अवलेह सिद्ध हो तब ८ पल शहद, ४ पल वंशलोचन, ४ पल पीपली का चूर्ण मिलाय उत्तम पात्र में रख छोड़े। इस अवलेह से हिचकी, कास और श्वास दूर होते हैं ॥

अथ क्षयादि पर च्यवनप्राशावलेह ॥

बेलकी छाल, अरनी की छाल, टैटू (स्योनाक) की छाल, कंभारी की छाल, पाढ़र (पाटला) की छाल, खरैटी, सालपर्णी, पृष्ठपर्णी, माषपर्णी, मुद्गपर्णी, पीपल, गोखुरू, बड़ी कटेली, छोटी कटेली, काकड़ासिंगी, भूमिआंवला, दाख, जीवन्ती, पुहकरमूल, अगर, हड़, गिलोय, ऋद्धि, जीवक, ऋषभक, कचूर, नागरमोथा, पुनर्नवा, मेदा, छोटी इलायची, कमलगट्टा, लाल चन्दन, विदारीकन्द, अड़ूसे की जड़, काकोली और काकजंघा ये सब चार चार तोले लेवे और बड़े बड़े पांचसौ आंवले लेवे इनको कपड़े की ढीली पोटली में बांधे फिर बड़े मिट्टी के पात्र में एक द्रोण जलमें सब औषधें डाल उसमें आंवलोंकी पोटली को लटकाकर खूब औटावे जब चौथाई जल शेष रहे तब उतार लेवे। आंवलों को अलग निकालकर उनकी गुठली दूर कर ६ टकेभर घृत और ६ टकेभर तेल में आंवलों को भूनकर शिलबट्टे से महीन पीस लेवे तदनन्तर ५० टकेभर मिश्री पहले किये हुए क्वाथ में डालकर पिसेहुए आंवले मिलाय पाक बनावे जब अवलेह सिद्ध होजाय तब वंशलोचन ४ पल, पीपल २ पल, दालचीनी २ तोले, तेजपात १ तोले, छोटी इलायची के

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बीज १ तोला, नागकेसर १ तोला इन सबका चूर्णकर उस अवलेह में डाले फिर कलछी से एकजीवकर उतार लेवे। शीतल होने पर ६ पल शहद डालकर घी के चिकने बासन में भरकर रख देवे। इसकी मात्रा २ तोले की है और अनुपान बकरी का दूध है। इसके सेवन से राजयक्ष्मा, स्वरभङ्ग, खांसी, श्वास, हृद्रोग, छाती का रोग, वातरक्त, प्यास तथा शुक्र और मूत्र के दोष नष्ट होते हैं। यह अवलेह व्रणशोषी, वृद्ध और बालकों के अङ्गों को बढ़ाता और आयुवृद्धि, मेधा, स्मरणशक्ति तथा कान्ति को करता है। इन्द्रियों में बलकर्ता, अग्नि उद्दीपनकर्ता और स्त्रीरमण की इच्छा प्रकट करता है। इसके सेवन से वृद्ध भी युवा होजाता है। च्यवनऋषि ने इसी के प्रताप से यौवन प्राप्त किया था। जहां मिश्री या चीनी न मिले और साधारण खांड़ही मिले वहां आंवले बहुत कम भूने। प्रायः सर्वत्र चतुर्थांश जल रहने पर द्रव्यों का रस उसमें आजाता है। यह भावप्रकाश में कहा है॥

अथ रक्तपित्त पर कूष्माण्डपाक॥

कुम्हड़े को छीलकर १०० टुकड़े करे फिर उसे दूने पानी में पचावे जब आधा रहे तब उतारकर उन टुकड़ों को वस्त्र में बांधकर निचोड़, धूप में सुखा, गुदनी से गोदे फिर उसको ७ पल घी में तांबे की कड़ाही में भूने और उसका निचुड़ाहुआ पानी उसी में डाल दे फिर सौ पल खांड़ दे पकाय सोंठि, पीपल, जीरा ये दो दो पल। धनियां, पत्रज, इलायची, मिरच और चाब ये आधा आधा पल ले इनका चूर्ण और घृतका आधा शहद डाल बलानुसार रक्तपित्त, ज्वर, क्षयी, प्यास, कास, श्वास और छर्दि आदि रोगवाले पुरुषों को दे तो रोग अवश्य जाय॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS

अथ अर्श पर खण्डकूष्माण्डावलेह ॥

पेठा और आतमीकन्द के छोटे छोटे टुकड़े कर दोनों को एकत्र करे फिर उसीरीति से अवलेह बनाकर खिलावे तो अर्श, मन्दाग्नि और मूढ़वात ये सब रोग अच्छे हों ॥

अथ क्षयी पर अगस्त्यहरीतकी ॥

बड़ी हड़ें १०, यव आढ़कभर, दशमूल २० पल और चीता, त्रिफला, लजालू, पाढ़ाबेलि, इन्द्रयव, बच, भिलावां, अतीस, बिड़ंग, सुगन्धबाला इनको पल पल भर ले तथा घृत कुड़वप्रमाण ले और ठण्ढा होनेपर कुड़वभर शहद डाले। यह अवलेह सर्वार्श को वेगही नाश करता है और दुर्गमरोग अतीसार, अरुचि, ग्रहणी, पाण्डु, रक्तपित्त, कमलपित्त, शोथ और प्रवाहिका इन सब रोगोंको दूर करता है। इसका अनोपान बकरी का दूध, मट्ठा, दही और घी तथा उसीका पानी और औषध भोजनके पाचनसमय खाय ॥

अथ सर्वातीसार पर कुरैयाष्टक ॥

आधातोला कुरैया की छाल द्रोणभर पानी में पकावे जब चौथाई रहे तब यह चूर्ण डाले। लजालू, धवफूल, बेल, पाढ़ा, मोचरस, मोथा और अतीस इन सबको पल पल भर ले औटावे जब कलछी में लगने लगे तब सिद्ध जानो फिर इसे बकरी के दूध या पानी अथवा माड़ तथा केसर में पीवे तो सर्वातीसार की घोर वेदना दूर हो। सब भांति रक्तवाह, सर्वार्श और प्रवाहिका का नाश करे ॥

अथ श्वास, कासहित कफज्वर पर अवलेह ॥

श्वास और कास के साथ जो कफज्वर हो तो मेढ़ासिंगी, पीपल, कायफल और कूट इन चारों को कूटकर चूर्ण करे उसको वर्णमाक्षिक वा साधारण मधुके साथ मिलाकर चाटे तो श्वास और कास के सहित कफज्वर नष्ट हो। इसमें कुछ शङ्का नहीं है ॥

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ श्वास पर अवलेह ॥

१ पल आठ तोले का है इस परिमाणसे एकसौ तोलेभर बकरी का मूत्र और एकसौपल बहेड़ा इनको मधु के साथ पकावे जब पक कर चाटने योग्य क्वाढ़ा हो तब उतारकर धर रक्खे और प्रातःकाल में चाटा करे तो खांसी, श्वास और कफ के रोग बलवान् भी होगये हों तो भी तुरन्त जातेरहें और रोगीसुखपावे॥

अथ आसव कल्पना ॥

उदकादिद्रव्य वस्तु में औषध देकर पात्र में भर मुँह मूंद कर मासभर रखने से औषध उत्तम होती है उसका नाम आसव अथवा अरिष्ट है। इनमें भेद यह है कि उदकादि पदार्थ में जो औषध पूर्वोक्त रीति से सिद्ध करे उसे आसव कहते हैं और जो किसी द्रव्य के क्वाथ में उसी रीति से सिद्ध करे उसे अरिष्ट कहते हैं इसके खाने की मात्रा ४ रुपये भर है। इसमें जलादि पदार्थ द्रोणभर, गुड़ तुलाभर और शहद अर्धतुला देना उचित है और द्रव्यका चूर्ण गुड़ जितना है उसका दशांश दे॥

अथ शीधुमद्यभेद ॥

जो कच्चे ऊखरसादि मधुर पदार्थ में सिद्ध करे उसे शीतरस-शीधु कहते हैं और जो पकायके रस में सिद्ध करे उसे पक्करस-शीधु कहते हैं। सुरा प्रसन्नादि कर अग्निबलत्रय से उतारे उसे सुरा कहते हैं। सुरा के फेन को प्रसन्ना कहते हैं और फेन रहित जो नीचे रहे उसे कांदबरी अथवा धन कहते हैं। जो सुरा के नीचे रहे उसे जगल कहते हैं और जगल के घनेभाग को मेदक कहते हैं। मेदक पकाने से जो सार निकले उसे सुरा-बीज कहते हैं और ताड़ अथवा खजूरका रस अग्नियन्त्र का योग कर वा कच्चा ले मद सिद्ध करे उसे वारुणी कहते हैं। कन्द-मूल, फल, घृत, तैल आदि स्नेह और लवण ये सब द्रव्य-पदार्थ में अग्नि अथवा यन्त्रयोग से मथन करे उसे सूक्त कहते

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

हैं और जो विनिष्ट अर्थात् चलितरस लेके खंमीर, मद्य वा तुरन्त मधुरद्रव में द्रव्यचूर्ण डाल मासभर सन्धित की हो उसे चुक्र कहते हैं अथवा गुड़, पानी, तेल, कन्दमूल और फल इन्हें पूर्वोक्त रीतिसे कर मासभर में सिद्ध करे उसे गुड़सूक्त कहते हैं। इसीप्रकार ऊखरस और दाखका सूक्त भी होता है और यवों को पानी के साथ एक दिनतक सन्धित करे उसे तुषाव कहते हैं और यवघूघरी पानी में सिझाय एकदिन सन्धितराखे उसे सौवीर कहते हैं। कुरथी अथवा चावल पानी में सिझावे उसे मांड़ कहते हैं और उस मांड़ में सोंठि, राई, ज़ीरा, हींग और नोन डालकर तीन चार दिन सन्धित राखे उसे कांजी कहते हैं और मूली के उबाले हुये पानी में हींग, सरसों, ज़ीरा, सेंधा और अदरक डाल चार पांच दिन राखे उसे सण्डाकी और आसव कहते हैं। आसव और अरिष्ट बनानेकी यह रीति है॥

अथ रक्तपित्त पर खसासव॥

खस, सुगन्धबाला, कमलपत्र, खंभारी, नीलकमल, पद्माक, मालकांगनी, पठानीलोध, मंजीठ, जवासा, पाढ़ा, चिरायता, कुटकी, बट, यव, गुलरी, कचूर, पित्तपापड़ा, श्वेतकमल, परवर, कचनार, जामुन और सेमर का गोंद इन सबको पल पल भर ले फिर चूर्णकर दाख २० पल, धवके फूल १५ पल, २ द्रोणजल, तोलाभर शक्कर, तोलाभर शहद लेवे फिर जटामांसी और मिरच इनका धुआं दे बासन में सब औषधें भर महीना भर तक रक्खे। इसको उशीरासव कहते हैं। यह रक्तपित्तको नाश करता है और पाण्डु, कुष्ठ, प्रमेह, अर्श, कृमि और सूजन इनके दोषोंको भी अच्छा करता है॥

अथ क्षयी पर पिप्पली आसव॥

पीपल, मिरच, चाब, हल्दी, चीता, मोथा, बिड़ंग, सुपारी, लोध, पाढ़ा, आंवला, छरीला, खस, सफ़ेद चन्दन, कूट, लवङ्ग,

CC-0. In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तगर, जटामासी, दालचीनी, इलायची, तेजपात, पुष्पप्रियंगु वा गोंदी, नागकेसर इन सबको आधा आधा पल ले महीन पीस तीन तोला गुड़सहित दो द्रोण जलमें डाले और दश पल धवपुष्प, साठिपल दाख इन सबको मिट्टीके पात्रमें एकमास रक्खे जब जाने कि सब औषधें एकतन होगईं तब खिलावे परन्तु अग्निबल देखले। इस पिप्पली आसव के खाने से क्षयी, पेट-रोग, दुर्बलता, ग्रहणी, पाण्डु और अर्श इन सब रोगों को बहुत शीघ्र दूर करता है॥

अथ पाण्डु पर लोहासव॥

लोहचूर्ण, त्रिकुटा, त्रिफला, अजवायन, बिड़ंग, चीता और मोथा इन सबको चार चार पल ले फिर सबका चूर्ण कर चौसठपल शहद, तोलाभर गुड़ और दो द्रोण जल दे फिर घृत-पात्रमें इसे १ मास रक्खे। यह लोहासव पीने से पाण्डु, शरीर फूलना, गुल्म, अर्श, कुष्ठ, पिलही, खाज, श्वास, कास, भग-न्दर, अरुचि, ग्रहणी और हृद्रोग ये सब नाश हों॥

अथ ज्वर पर कुरैयारिष्ट॥

कुरैया की छाल और दाख आधा आधा तोला, महुआ और खंभारी की छाल दश दश पल ले फिर इसे चार द्रोण पानी में पचावे जब द्रोण भर रहे तब उतार उसमें २० पल धवके फूल और तोलाभर गुड़ डाल मिट्टीके पात्र में मासभर तक रक्खे। यह कुटजारिष्ट सब ज्वरोंको दूर कर अग्निको तीक्ष्ण करता है॥

अथ विद्रधि पर बिड़ंगारिष्ट॥

बिड़ंग, पीपलामूल, रासना, कुरैयाकी छाल, पाढ़ा, एलुवा, बालछड़ और आंवला ये सब पांच पांच पलले ८ द्रोण जलमें औटावे जब द्रोणभर रहे तब उतार ले जब ठण्ढा होजाय तब ३०० पल शहद, २० पल धवफूल और तज, पत्रज तथा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

इलायची ये दो दो पल ले और गोंदी, कचनार, लोध ये पल पल भर ले और त्रिकुटा ८ पल चूर्ण कर डाले फिर इनको घृत के पात्र में एकमास तक भर रक्खे फिर जैसा अग्निबल देखे उसी प्रमाण से पिलावे तो विद्रधि, प्रमेह, ऊरुस्तम्भ, पथरी, प्रत्यष्ठीला, भगन्दर, गण्डमाला और हनुस्तम्भ आदि रोग इस बिड़ंगारिष्ट से दूर होते हैं ॥

अथ प्रमेह पर देवदारु अरिष्ट ॥

आधा तोला देवदारु, रूसा २० पल, मंजीठ, इन्द्रयव, दात्यूणी, तगर, दोनों हल्दी, रासना, बिड़ंग, मोथा, सिर्सर, बेर और अर्जुन ये सब दश दश पल ले और अजवायन, कुरैया, चन्दन, गुर्च, कुटकी और चीता ये आठ आठ पल ले इसको ८ द्रोण पानी में पचावे जब द्रोणभर रहे तब उसमें ये औषधें डाले धवपुष्प १६ पल, शहद ३ तोले, त्रिकुटा २ पल तथा तज, पत्रज और इलायची ये चार चार पल, प्रियंगु ४ पल, नागकेसर २ पल इन सबका चूर्णकर घीके बर्तन में मास भर रक्खे फिर इसे पिये तो दुर्जय प्रमेह भी नाश हो और वातरोग, ग्रहणी, अर्श और मूत्रकृच्छ्र इनको नाश करे यह देवदारु अरिष्ट दाद और कुष्ठ को भी अच्छा करता है ॥

अथ कुष्ठ पर खदिरारिष्ट ॥

खैर आधा तोला, देवदारु आधा तोला, बकुची १२ पल, हल्दी २० पल, त्रिफला २० पल इनको ८ द्रोण जल में पचावे जब द्रोणभर रहे तब ठण्ढाकर नीचे लिखी औषधें डाले। शहद २ तोला, खांड़ १ तोला, धवफूल २ पल और कंकोल, नागकेसर, जायफल, लवङ्ग, इलायची, तज, पत्रज ये सब एक एक पल और पीपल ४ पल ले फिर इसको घीके बर्तन में मास भर रखकर पिये तो महाकुष्ठ, हृदयरोग, पाण्डु, अर्बुद, गुल्म,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

ग्रन्थि, कास तथा पिलही ये सब रोग जायँ। यह एक खदिरारिष्टही सब कुष्ठों को बहुत शीघ्र नाश करता है॥

अथ क्षयी पर बबूलारिष्ट॥

बबूल की छाल २ तोला ले ४ द्रोण पानी में पचावे जब द्रोण भर रहे तब उतार ठण्ढाकर तोलाभर गुड़ दे और १६ पल धव के फूल, २ पल पीपल और जायफल, शीतलचीनी, तज, पत्रज, केसर, लवङ्ग और मिरच ये पल पल भर ले फिर इनको पीस मासपर्यन्त मिट्टी के पात्र में रक्खे। इस बबूलारिष्ट से क्षयी, कुष्ठ, अतीसार, प्रमेह, श्वास और कास इन सब रोगों का नाश होता है॥

अथ उरःक्षत पर द्राक्षारिष्ट॥

आधा तोला दाख दो द्रोण जल में पचावे जब चौथाई रहै तब उतार ठण्ढाकर ये औषधें डाले गुड़ २ तोले और तज, इलायची, पत्रज, केसर, फूलप्रियंगु अथवा मकरा, मिरच, पीपल और बिड़ंग ये सब एक एक पल ले मिट्टी के पात्र में धर एक अङ्क कर बासन के मुखपर मुद्राकर मासभर रक्खे फिर पिये तो उरःक्षत, क्षयी, कास और गले के भीतरी रोग दूर हों। यह द्राक्षारिष्ट बल करे और मल शोधे॥

अथ रोहितारिष्ट अर्श पर॥

हरद्वारीकुशा १ तोला ले ४ द्रोण पानी में पकावे जब चौथाई रहै तब उतार ठण्ढाकर २०० पल गुड़, १६ पल धव के फूल और सोंठि, पीपल, पीपलामूल, बच, चीता, पत्रज, इलायची, तज तथा त्रिफला इन सबको पल पल भर ले फिर चूर्ण कर सब द्रव्यों को बासन में भरकर धरे तदनन्तर उसको महीना भर पीछे पीवे तो कांच के रोग, ग्रहणी, पाण्डु, हृदयरोग, पिलही, गुल्म, कुष्ठ और अरुचि आदि रोग इस रोहितारिष्ट से निस्सन्देह दूर होते हैं॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS

अथ क्षयीप्रमेह पर दशमूलारिष्ट ॥

दशमूल पांच पांच पल ले, चीता और पुष्करमूल पच्चीस पच्चीस पल ले, लोध २० पल, गुर्च २० पल, आंवला १६ पल, जवासा १२ पल तथा खैर, बिजयसार और हड़ आठ आठ पल और कूट, मंजीठ, देवदारु, बिड़ंग, भारंगी, कपित्थ, बहेड़ा, गदापुरैना, चाब, जटामासी, मकरा, सरिवन, कृष्णजीरा, निशोथ, मेवड़ी, कांजी, रासना, पीपल, सुपारी, कचूर, हल्दी, सौंफ़, पद्माक, नागकेसर, मोथा, इन्द्रयव, सौंठि, दोनों कटसरैया, मेदा, महामेदा, काकोली, ऋद्धि और वृद्धि ये सब दो दो पल ले इन सब ओषधियों का अठगुना जल औटावे जब चौथाई रहजाय तब उतार मिट्टी के पात्र में धरे फिर दाख ८ पल ले चौगुने पानी में औटावे जब चौथाई जलजाय और तीनचरण रहे तब ठण्ढाकर पहिले क्वाथ के साथ मिलावे और शहद ३२ पल, गुड़ ४०० पल, धवके पुष्प ३० पल तथा शीतलचीनी, खस, चन्दन, जायफल, लवङ्ग, तज, इलायची, पत्रज, केसर और पीपल इन सबका चूर्ण दो दो पल, कस्तूरी ४ माशे इन सबको इकट्ठा कर उसी में डाल धरती खोदकर गाड़े फिर उसमें का रस पिये। निर्मली डाले तो रस निर्मल होजाता है। इसके पान करने से ग्रहणी, अरुचि, शूल, श्वास, कास, भगन्दर, वातव्याधि, क्षयी, छर्दि, पाण्डु, कमल, कुष्ठ, अर्श, प्रमेह, मन्दाग्नि, उदररोग, सिकताप्रमेह, पथरी, मूत्रकृच्छ्र और धातुक्षय ये रोग जायँ। दुर्बल मोटा हो, बांझ पुत्र जने यह दशमूलारिष्ट तेज और धातुबल देता है॥

इति पञ्चविंशतिस्तरङ्गः २५॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ घृत और तैल का साधन ॥

कल्क से चतुर्गुण घृत अथवा तेल और क्काथादि द्रव्य भी चौगुने देने उचित हैं। इसकी मात्रा पलभर है। जिस द्रव्य का क्काथ देना हो तो चौगुने जल में औटावे जब चतुर्थांश रहजाय तब उसे उतार छान ले फिर उसमें घृत, तेल आदि सिद्ध करे और कोमल द्रव्यों में चौगुना जल और कठोर में अठगुना और अत्यन्त कठोरमें सोलहगुना जल देना चाहिये। जो द्रव्य अति कोमल और कठोर न हो उसमें अठगुना जल देना चाहिये अथवा रुपया भरसे ४ रुपया भरतक सोलहगुना पानी देकर क्काथ करे और पलसे कुड़व तक अठगुना तथा प्रस्थ से खारी पर्यन्त चौगुना दे और जो केवल कल्क पानी, घी अथवा तेल में सिद्ध करे तो चतुर्थांश कल्क दे यथा सेरभर तेल हो तो पाव भर कल्क हो और जो कल्क काढ़े के साथ घी और तेल पकावे तो घृत और तेल का षष्ठांश कल्क देना जैसे तीनपाव में आध पाव। और जब कल्क रसके साथ घी अथवा तेल में पकावे तो तेल का अष्टमांश कल्क देना चाहिये यथा सेर भर में आधपाव। घृत और तेलप्रमाण यहीहै। दूध, दही, रस, मट्ठा इनमें अष्टमांश कल्क देना और कल्क को अच्छीप्रकार पकाने के कारण जल चौगुना देना चाहिये और जहां कल्क, घृत, तेल, क्काथ और फांट ये पांचों हों वहां स्नेहादिक के समान देना चाहिये तथा जल चौगुना देना जब सड़ीघुणी द्रव्य घृत अथवा तेल में पकानी हो तो जल में द्रव्य पीस गोली अथवा कल्क कर चौगुने पानी में पचावे और जो केवल काढ़े में कहा हो वहां उसी क्काथ की द्रव्य का कल्क कर घृत अथवा तेलयुक्त वह काढ़ा और चौगुना पानी दे पकावे और जहां कल्करहित है वहां केवल द्रव्यवस्तु दूध पानी देकर पका लेना। जब फूलके कल्क में स्नेह सिद्ध कहेंगे तब चौगुना जल देंगे और जब स्नेहसे स्नेह सिद्ध कहेंगे तब

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS

स्नेहका अष्टमांश दूसरा स्नेह ले पुष्पकल्कयुक्त पकालेना चाहिये फिर जब वह स्नेहपाक अंगुली में लेके मलने से बत्ती बनजाय और उसे अग्नि पर डाले और जलसे चिर्चिराहटका शब्द न करे तब सिद्ध भया जानना। तेलको फेन उठने से सिद्ध जानना और घृत में फेन शान्ति होनेसे सिद्ध जानना। जब गन्ध आवे और घृत अथवा तेल निर्मल होजाय और रस उत्पत्ति करे तब घृत अथवा तेल सिद्ध हुआ जानियें। स्नेहपाक तीनप्रकार का है मृदु १ मध्य २ खर ३। जो कल्क मोमवत् रहे तो मृदु जानिय और निरस हो कुछ कोमल रहे तो मध्य जानिये तथा निरस और कठोर होजाय वह खर है और जो इस प्रमाण से अधिक जलजाय तो समझलेना चाहिये कि स्नेह बिगड़गया और अकार्थ गया जो कच्चा रहे और उसका सेवन करे तो मन्दाग्नि हो और भारी हो। नास लेने को नरम हित है और मध्यम सर्वकार्यसाधक है और खर मर्दनके अर्थ है जहां जैसा चाहे वहां उसी प्रकार का बनाले। तेल, घृत और गुड़ ये एक दिनमें न साधे दिनान्तर दे करे तो अधिक गुण करें॥

अथ पिलही पर क्षार॥

पीपल, पीपलामूल, चाब, चीता, सोंठि और सैंधव इन सबको पल पल भर और दूध चौगुना ले प्रस्थ भर घी में पचावे जब सिद्ध हो तो यह घृत प्लीह को नाश करताहै। विषम-ज्वर और मन्दाग्नि को दूर करता है तथा रुचिकारक है॥

अथ संग्रहणी और अतीसारपर चाङ्गेरी घृत॥

पीपल, पीपलामूल, चीता, गजपीपल, गोखुरू, सोंठि, धनियां, पाढ़ा, बेलि, अजवायन ये सब पल पल भर और घृत चौंसठपल तथा चाङ्गेरी (छोटीलुनियां) का रस २५६ पल और २५६ पल दही ले फिर मन्द मन्द आंचसे पकाय सिद्ध करे। इस चाङ्गेरीघृत के सेवन से वात, कफ, ग्रहणी, अर्श, पेट

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

फूलना, कांच का निकलना, मूत्रकृच्छ्र और प्रवाहिका ये सब नाश होते हैं॥

अथ अतीसार पर मसूरघृत॥

१०० पल मसूर ले द्रोण भर जल में उसका क्वाथ करे जब चौथाई रहे तब उस काढ़े में ८ पल बेलकी गूदी दे और प्रस्थ भर घृत दे पचावे। इससे सब अतीसार, ग्रहणी और बिथरा मल गिरना तथा प्रवाहिका ये सब दूर हों॥

अथ रक्तपित्त पर कामदेवघृत॥

असगन्ध १०० पल, गोखरू ५० पल और शतावरि, बिलाईकन्द, वनउर्दी, बरियारा, गुर्च, पीपल, कारिगुसा, रक्त कमलगट्टा, गदापुरैना, खंभारिपुष्प, कालेउड़द इन सबको दश दश पल ले द्रोणभर जलमें पचावे जब चतुर्थांश रहे तब आढ़क भर घृत दे पचावे फिर दाख, पद्माक, पीपल, रक्तचन्दन, पत्रज, नागकेसर, किवांचके बीज, हिरमिजी, नीलकमल का फूल, सरिवन, पिथवन, जीवगशा ये सब द्रव्य कर्ष कर्षभर ले पूर्वोक्त औषधें न मिलें तो केवल बरियारा देना और शक्कर २ पल और पौंड़ाका रस आढ़कभर ये सब इकट्ठाकर उसमें पचावे जब केवल घी रहजाय तब छानले। यह रक्तपित्त, ऊरुस्तम्भ, क्षीण, कमल, वातरक्त, हलीमक इनको हरे, सुवर्ण हो और स्वरक्ष, मूत्रकृच्छ्र, उदर, पसुलीपीड़ा को दूर करे। यह घृत रमणी को दे तो बांझ भी पुत्रवती हो, दुर्बल को दे तो मोटा हो। यह घृत श्रेष्ठ और बलकर्ता है। शरीर की रंगत अच्छी कर हृदय को प्रिय हो पुष्ट करता है। रसायनरूप यह तेज, बल, आयु और प्राणको बढ़ाता है। दुर्बलेन्द्रिय पुरुष को बलयुक्त कर सब रोगोंको नाश करता है। जैसे सींचने से वृक्ष तरुण होताहै उसी प्रकार से मनुष्य का शरीर भी नवीन होता है। यह कामदेव घृत बड़ा गुणदायी है॥

१—इसके अभाव में कमलगट्टा लेना।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ अपस्मार पर कल्याणघृत ॥

त्रिफला, दोनों हल्दी, रेणुका, सरिवन, पिथवन, मकरा, वनउर्दी, वनमूंग, देवदारु, एलुवा, तगर, इन्दारुण, जमालगोटे का बीज, अनार, नागकेसर, नीलकमल, इलायची, मंजीठ, बिड़ंग, पद्माक, कूट, मालती अथवा चमेलीपुष्प, श्वेतचन्दन, तालीसपत्र, वृद्धभटकटैया ये सब कर्ष कर्ष प्रमाण ले पानी में पीस कल्क कर चौगुना पानी दे उस पानी में प्रस्थभर वह घृत और वह कल्क देकर पकावे फिर रोगीको दे तो मृगी, चित्तभ्रम, ज्वर, क्षयी, वातरक्त, कास, मन्दाग्नि, नाक टपकना, कटिपीड़ा, तिजारी, चातुर्थिक, मूत्रकृच्छ्र, विसर्पिका, खजुली, पाण्डुरोग ये सब अच्छे हों, बांझ पुत्र जने, भूत और राक्षसबाधा दूर हो। इस घृतका नाम पानीकल्याण प्रसिद्ध है॥

अथ वातरक्त पर अमृतादिघृत ॥

गुर्च का कल्क और गुर्च का क्वाथ दूध के साथ घृत में पचावे इससे वातरक्त और कोढ़ अवश्य दूर होता है॥

अथ वातकुष्ठादि पर महातिक्तादिघृत ॥

छितौनी, अमलतास, अतीस, कुटकी, पाढ़, मोथा, खस, त्रिफला, पित्तपापड़ा, पटोल, नींब, मंजीठ, पीपल, पद्माक, कचूर, चन्दन, जवासा, इन्दारुण, दोनों हल्दी, गुर्च, सरिवन, पिथवन, मुर्रा, रूसा, शतावरि, त्रायमाण (सफ़ेदकटेली), इन्द्रयव, मुलेठी, चिरायता इन सबको कर्ष कर्ष भर ले और घी चौगुना दे तथा घीका दूना आंवले का रस दे और अठगुना जल दे। इस सिद्ध घी को सब वातरक्त के विकारों, अठारहों कुष्ठ और रक्तपित्त में देना। यह रक्तार्श, पाण्डु, हृद्रोग, गुल्म, विसर्प, प्रदर, गण्डमाला, क्षुद्ररोग और ज्वर इनको दूर करे। इसका नाम महातिक्त है॥

१—अभाव में सुगन्धबाला।

CC-0. In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ कुष्ठ, दाद और खाज पर कसीसादिघृत ॥

कसीस, दोनों हल्दी, मोथा, हरताल, मैनासिल, कबीला, गन्धक, बिड़ंग, गुग्गुल, मोम, मिरच, कूट, तूतिया, पीतसरसों, रसौंत, सिन्दूर, राल, लालचन्दन, खैर, नींब का पत्ता, करञ्ज, सरिवन, बच, मंजीठ, महुआछाल, जटामासी, सिरस, लोध, पद्माक, गदापुरैना, हड़ ये सब एक एक कर्ष ले इनका चूर्ण कर ३० पल घृत में साने फिर उसे ताम्रपात्र में भर सात दिन धूपमें धरे। इस घी के लगाने से कुष्ठ, दाद, खाज, विचर्चिका, शुक्रदोष, विसर्प, शीतला, वातपित्तजनित रोग, मस्तकघाव, गर्मी, नासूर, शोथ, भगन्दर और लूता ये सब दूर हों तथा घाव अति शुद्ध हो पूरिआवे और घाव का चिह्न भी न रहे ॥

अथ घाव पर जातीघृत ॥

चमेली, नींब, परवल इनकी पत्ती, दोनों हल्दी, कुटकी, मंजीठ, मुलेठी, मोम, करञ्ज, खस, सरिवन, तूतिया इन सबको समान ले इनकी लुगदी कर घृतमें पचावे। इस घी के लगाने से घाव, नासूर और मर्मस्थान का दुःखदायी गम्भीर घाव तथा पीड़ा ये सब दूर हों ॥

अथ उदररोग पर बिन्दुघृत ॥

चीता, शंखाहूली, हड़, कबीला, दोनों निशोथ, बिधारा, अमलतास, जमालगोटा, त्रिफला, कटुतरोई, देवदाली (बंदाल), नील की पत्ती, कौवाशुण्ठी, सेहुँड़ की छीमी, पीपलामूल, बिड़ंग, कुटकी, चोकरा ये सब कर्ष कर्ष भर ले इनका कल्क कर प्रस्थभर घी में पचावे फिर सेहुँड़ का दुग्ध ६ पल, मदार का दुग्ध दो पल डाले। यह सिद्ध घृत दे तो गुल्म, कुष्ठ अच्छा हो। शूल, उदावर्त, शोथ, पेटफूलना, भगन्दर, आठों उदररोग दूर हों और आठ बूंद पानी से वा दूध से या ऊंटनी के दूध से

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथवा कुलथी के क्वाथ से, गर्म पानी से जो बूंद पिये तो दस्त हों। इस बिन्दुघृत का नाभिपर लेप करने से दस्त आते हैं॥

अथ नेत्रों पर त्रिफलाघृत॥

त्रिफले का रस १ प्रस्थ, रूसे का १ प्रस्थ, भांगरे का १ प्रस्थ, बकरी का दूध १ प्रस्थ, घी कर्षभर और त्रिफला, पीपल, दाख, चन्दन, सैंधव, बरियारा, दोनों काकोली[1], मेदा, मिर्च, सोंठि, खांड़, श्वेतकमल, रक्तकमल, गदापुरैना, दोनों हल्दी, मुलेठी इनका कल्क कर घी में पचाय भोजन के आदि या मध्य अथवा अन्त में खाय तो नक्तान्ध, नकुलान्ध, खाज, पिल्लरोग, नेत्रस्राव, पटल, तिमिर, नीलबिन्दु ये सब अच्छे हों। इस त्रिफलादि घृत को खाय अथवा नास ले तो यथोचित अनोपान करे॥

अथ घाव पर गौर्यादिघृत॥

दोनों हल्दी, मुर्रा, सरिवन, दोनों चन्दन, मुलेठी, कमलकेसर, कमल, नीलकमल, खस, मेदा, त्रिफला, आम्र, वट, पीपल, पाकर, गूलर इनकी छाल ये सब कर्ष कर्ष भर ले कल्क कर प्रस्थ भर घी में पचावे। यह गौर्यादिघृत विसर्पिका, अग्निआसन, शीतला, कीटविष और क्षत इन सबको अच्छा करे॥

अथ शिरोरोग पर मयूरघृत॥

बरियारा, मुलेठी, रासना, दशमूल और त्रिफला ये सब दो दो पल ले द्रोणभर जलमें पकावे फिर आंत, ओझरी, पित्त, पांव के विना मयूरमांस पानी में गलावे जब चौथाई रहे तब उतार ले फिर इसकी बराबर इसमें क्षीर डाले और प्रस्थ भर घी में जीवनीगण तथा सब काढ़ा पचावे। इस घृतसे शिररोग, मन्या, व्यथा, पृष्ठिग्रह, लकवा, कर्ण, नाक, नेत्र, जीभ, गला

१—काकोली और क्षीरकाकोली के अभाव में असगन्ध लेना और महा मेदा तथा मेदा के अभाव में मुलेठी लेना।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

आदि के सब रोगों को दूर करे इस घृत को खाय, सूंघे, मले, कान में डाले और इसका सेवन हेमन्त, शिशिर, वसन्त आदि ऋतुओं में करे। यह बड़ा गुणदायक घृत है॥

अथ बन्ध्या के लिये फलघृत॥

त्रिफला, मुलेठी, कूट, दोनों हल्दी, कुटकी, बिड़ंग, पीपल, मोथा, कायफर, मेदा, महामेदा, दोनों काकोली, सरिवन, पिथवन, मकरा, सौंफ़, हींग, रासना, दोनों चन्दन, चमेलीके फूल, वंशलोचन, कमल, शक्कर, अजमोद और दतून ये कर्ष कर्ष भर ले इनका कल्क कर जिस गाय के बछड़ेका भी रंग गाय का सा हो उसका प्रस्थ भर घृत और चौगुना दूध ले बिनुवाकंडा की मन्द मन्द आंच दे पचावे तदनन्तर शुभ तिथि और पुष्य नक्षत्र में मिट्टी या तांबे के पात्र में स्त्री अथवा पुरुष शुभ दिन में पिये तो पुरुष वृषभतुल्य कामी और बलवान् हो। बांझ के पुत्र हो और जिस स्त्रीके पुत्र मरजाते हों उसके भी पुत्र हों। इस घृत के सेवन से शतवर्ष की आयु होती है। यह घृत भारद्वाज ऋषि का कहा हुआ है। वैद्यलोग इसके साथ लक्ष्मणा बूटी की जड़ को विना कहे देते हैं॥

अथ योनिदोष पर त्रिफलादिघृत॥

कटसरैया, गुर्च, गदापुरैना, सिरस, दोनों हल्दी, रासना, मेदा, शतावरि इनका प्रस्थभर कल्क ४ प्रस्थ घी में पकावे जब यह सिद्ध हो तब स्त्री इसे पान करे तो सब योनि दोष दूर हों और पलित, चलित, मिश्रित विकृत, पित्तयोनि, विभ्रान्तखण्ड योनि आदि योनि के रोग मिटें और गर्भ टिके। यह फलघृत योनिदोष को बहुत अच्छा है॥

अथ विष पर पंचतिक्तघृत॥

रूसा, नींब, गुर्च, भटकटैया, पटोल इनके काढ़े और कल्क

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS

में घृत पकाय खाय तो विषमज्वर जाय और पाण्डु, कुष्ठ, विसर्प, कृमि और अर्श ये भी दूर हों ॥

अथ कुष्ठ पर भूनिम्बादिघृत ॥

चिरायता, त्रिफला, खस, नींबकी छाल, मोथा, अरूसा, मुलेठी, सरिवन, कुटकी, अतःमणी, रसौत, गिलोय, पीपल, पद्माक, कचूर, इन्द्रायण के फल, इन्द्रयव, मूर्वा, पिथवन, अतीस, हल्दी, शतावरि ये सब औषधें धेला धेला भर ले और इन सब औषधों के दूने आलि के फल ले अठगुने पानी में काढ़ा करे फिर काढ़ा और घृत मिलाय अग्निपर चढ़ावे जब काढ़ा जलजाय और घृतमात्र शेष रहे तब उतारले। १ पैसाभर प्रातःकाल पिये तो कुष्ठ, उन्माद, ज्वर, पेटकी ग्रन्थि, गलशोथ, गण्डमाला और गलग्रह आदि सब रोग निस्संदेह जायँ ॥

अथ बिन्दुघृत ॥

कम्पिल्लत्रिवृतोः समं स्नुहिपयः सर्वैः समानो रसो
धात्र्याः सर्वसमानकं घृतमदस्तुल्यं पयः सैन्धवम्।
स्वल्पांशं विपचेदिदं विजयते कर्षप्रमाणं घृतं
गुल्माञ्शूलपरिग्रहादिसहितान् प्लीहोदरं कच्छपम् ॥

अथ टीका ॥

कबीला और निसोत इन दोनों की बराबर सेहुँड़ का दूध और उतनाही आंवले का रस तथा सबकी बराबर घी और घीकी बराबर दूध और सेंधानमक डालकर मन्द अग्नि से औटाकर घृत बनावे। यह बिन्दुघृत १ कर्ष प्रमाण खानेसे गुल्म और शूलादि उपद्रव सहित प्लीहोदर और कछुइया को दूर करता है ॥

अथ अनुभूत तैल प्रकरण ॥

अथ लाक्षादितैल ॥

एक आढ़क (३ सेर और ६ रुपया भर) लाख ले चार आढ़क पानी में काढ़ा करे जब चौथाई रहे तब उतार कर उसमें

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

प्रस्थ भर तैल दे (६४ रुपये भरका प्रस्थ होता है) और दही का जल आढ़कभर दे फिर सौंफ़, असगन्ध, हल्दी, देवदारु, कुटकी, मेवड़ी, बीजमुर्रा, कूट, मुलेठी, चन्दन, मोथा, रासना ये सब कर्ष कर्ष भर ले इनका चूर्ण कर तैलमें मध्यम आंच दे सिद्ध करे। इस तैल के लगाने से विषमज्वर नाश हो तथा कास, श्वास, नाक बहना, शरीरपीड़ा, पीठ जकड़ना, वात-पित्तज मृगी, यक्ष राक्षसी उन्माद, खाज, पेटपीड़ा, दुर्गन्ध और देहफूटन ये सब रोग दूर हों तथा गर्भिणी मले तो गर्भ पुष्ट हो॥

अथ वायु पर नारायणतैल॥

असगन्ध, परिया, बेल, पाढ़ा, भटकटैया, दोनों गोखुरू, ककई, नींब, सोहनपत्ती, गदापुरैना, गन्धप्रसारिणी, अरणी ये सब द्रव्य दश दश पल ले फिर सबको चार द्रोण (१३ सेर और १ छटांक) पानी में पकावे जब एक द्रोण रहे तब एक आढ़क तैल में गीली शतावरि का रस एक आढ़क दे जो सूखी हो तो काढ़ा करके दे और तैलका चौगुना गौ का दूध दे उसमें कल्क दे धीरे धीरे पचावे फिर कूट, इलायची, चन्दन, सुगन्धबाला, जटामासी, छरीला, सेंधानोन, असगन्ध, बरियारा, रासना, सौंफ़, देवदारु, सरिवन, बनउर्दी, बनमूंग, तगर ये सब दो दो पल लेकर कल्क करे और तैल में साधि ले फिर उस तैल को नास दे, शरीरपर मले, पिचकारी आदि कर्म में दे। यह तैल पक्षाघात, ठोड़ी जकड़ना, गल जकड़ना, कूबरा, बहिरा, लँगड़ा कमर जकड़ना, देह का सूखना, नपुंसकत्व इन सब रोगों को अच्छा करता है और ज्वर, क्षय, अण्डवृद्धि, अन्त्रवृद्धि, दन्त-रोग, शिरोरुज, पसुलीपीड़ा, पंगुत्व, गृध्रसी, बुद्धिहानि, विषम वात और सब देहकी बाई जायँ। इस तैलके प्रभावसे बन्ध्या के पुत्र हो। यह तैल मनुष्य, घोड़ा, हाथी आदि सबको हित है।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS

जैसे नारायण दुष्ट दैत्यों को नाश करते हैं उसी प्रकारसे यह तैल भी दुष्ट वात के रोगोंको नाश करता है॥

अथ वात पर बरियारा तैल॥

बरियारा की जड़ का क्वाथ, कुरथीक्वाथ, यवक्वाथ, झड़बेरी-क्वाथ इन सबको आठ आठ सेर ले और सेरभर तैल ले तथा जीवनीयगण, शतावरि, इन्द्रारुण, मंजीठ, कूट, छरीला, तगर, अगर, सैन्धव, बच, गदापुरैना, जटामासी, सरिवन, पिथवन, तेजपात, सौंफ़, असगन्ध इन सबको मिलाकर पचावे जब तैल-मात्र रह जाय तब उतार कर रक्खे। यह गर्भिणी स्त्री, धातु-क्षीण, अतिश्रमी पुरुष और प्रसूती को दे। यह बरियारातैल सब वातविकारों को हरता, राजा और सुखी पुरुषों के लिये है॥

अथ प्रसारिणीतैल॥

गन्धप्रसारिणी १०० पल (एक पंसेरी) भर ले द्रोण भर जलमें पचावे जब चौथाई रहे तब उतारकर उसमें काढ़े के बराबर दही और तैल दे तथा तैलके समान कांजी और तैल का चौगुना दूध तथा तैलका आठवां भाग आगे लिखी हुई सब द्रव्योंको ले। मुलेठी, पीपलामूल, सेंधानोन, चीता, बच, गन्ध-प्रसारिणी, देवदारु, रासना, गजपीपल, भिलावां, सौंफ़, जटा-मासी इन सबका कल्क तैलमें पचावे। यह तैल अत्युत्तम है। वातश्लेष्म रोगको नाश करता है और कुबड़ा, अङ्गभङ्ग और पंगु आदि को हित है तथा गृध्रसीवायु, हनु, पृष्ठ, शिर, ग्रीव और कटि इनका जकड़ना और कठिन वातरोग को नाश करे॥

अथ वायु पर माषतैल॥

उड़द, यव, अलसी, भटकटैया, केवांच, कुरैया, गोखुरू, स्योनाक इन सातोंको पलपल भर ले फिर इसको चौगुने पानी में पचावे जब चौथाई रहे तब उतारले और बिनौले की गूदी, बेर, सनई के बीज, कुरथी इन सबको चौदह चौदह पल ले फिर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

इसे चौगुने पानी में पचावे जब चौथाई रहे तब उतारले और प्रस्थ भर छागमांस चौंसठ पल जल में पचाय उतार छान ले तब प्रस्थभर तैलमें सब क्वाथ और मांसजूस देकर पचावे और आगे लिखा हुआ कल्कभी इसके साथ पचावे। गुर्च, सोंठि, गदापुरैना, रासना, एरण्ड, पीपल, बरियारा, गन्धप्रसारिणी, जटामासी, कुटकी ये सब आधा आधा पल ले घी में आंच दे उस तैलमें पकावे। इस माषतैल से ग्रीवा जकड़ना, बाहुव्यथा, अर्द्धाङ्ग सूखना, आक्षेप, ऊरुस्तम्भ, पतानक, सर्वाङ्गकम्प, शीतरस आदि रोग नाश हों और सब वातविकार दूर हों॥

अथ शतावरितैल॥

शतावरि, सुगन्धबाला, नेत्रबाला, दोनों पर्णी, एरण्ड, असगन्ध, गोखुरू, बेल, कास, कुरैया ये सब डेढ़ डेढ़ पल ले कल्क कर चौगुने जलमें पचावे जब चौथाई रहे तब उतार ले फिर प्रस्थभर तैल और प्रस्थभर दूध में पचावे और एक प्रस्थ शतावरिरस प्रस्थभर पानी पचावे फिर शतावरि, देवदारु, जटामासी, तगर, चन्दन, सौंफ़, बरियारा, कूट, इलायची, छारछरीला, कमल, ऋद्धि, सिद्धि, *मेदा (जो दोबार कहीहै वह दुगुनी लेना) काकोली, जीवक ये सब कर्ष कर्ष भरले इनका कल्ककर गोबरकी आंच में पचावे। इस तैल के माथे में लगाने से पुरुष स्त्रियों में वृषभ तुल्य रहे, स्त्री पुत्र जने और स्त्री के सर्व योनिविकार नाश हों, अंगशूल, शिरःशूल, कमल, पाण्डु, गृध्रसी, प्लीह, सब प्रमेह, दण्डापतानक, वायु, दाहसहित वातरक्त, वातपित्त, मद, कानरुधिर, आध्मान, रक्तपित्त ये सब रोग दूर हों। यह शतावरितैल कृष्णजी से आत्रेयजी ने कहा है॥

अथ अर्श पर कसीसतैल॥

कसीस, करिहारी, कूट, सोंठि, पीपल, सैन्धव, मैनसिल, कनेर,

* ऋद्धि और सिद्धि तथा जीवक के अभाव में वाराहीकन्द लेना।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

बायबिड़ंग, चीता, अड़ूसा, जमालगोटा, बनतुरई, बीजचोक, हरताल ये सब कर्ष कर्ष भर ले इनका कल्क कर प्रस्थ भर तैल में पकावे और २ पल सेहुँड़का दूध, २ पल मदार का दूध और तैलका चौगुना गोमूत्र देकर अच्छीतरह से पकावे। यह तैल खारनाद आचार्य्यने कहा है। इस तैलके लगानेसे बवासीर का मस्सा गिरपड़ता है और क्षारकर्म कष्ट सहित नहीं होता॥

अथ वातरक्त पर पिण्डतैल॥

मंजीठ, सरिवन, राल, मुलेठी, मोम ये पल पल भर ले इनको तैल में पचावे फिर उतारकर धर रक्खे। इस तैल के लगाने से वातरक्त निस्सन्देह दूर हो॥

अथ कण्डू पर मदारतैल॥

ग्वारपत्र का रस और हल्दी का कल्क सरसों के तैल में पकाकर लगाने से खुजली, दाद, विचर्ची आदि सब रोग दूर हों॥

अथ कुष्ठ पर मरिचतैल॥

हरताल, निशोत, रक्तचन्दन, मोथा, मैनसिल, जटामासी, दोनों हल्दी, देवदारु, इन्द्रारुण, कनेर, कूट, मदारका दूध, गोबर का रस ये सब कर्ष कर्ष प्रमाण ले और आधापल संखिया और प्रस्थभर तैल, गोमूत्र दूना, जल दूना दे पचावे। मरिचादि तैल से कुष्ठ के घाव अच्छे हों, श्वेतरक्त और कृष्णदाग मिटें तथा खसरा, सेहुआं, कटीला और भैंसही दाद ये सब दूर हों॥

अथ धातु पर त्रिफलातैल॥

नींब, चिरायता, दोनों हल्दी और रक्तचन्दन इनका बना तैल लगाने से मनुष्य को बहुत गुण करता है॥

अथ पलित पर निम्बतैल॥

नींब के बीज की मींगी को भङ्गरा के रस में भावना दे फिर रासनारस में दे फिर उसका तैल निकाल नास ले तो अकाल के पके हुए बाल काले हों और इसमें दूध और भात का पथ्य

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दे अथवा मुलेठी और कच्चे आंवले का कल्क, चौगुना दूध, चौगुना तैल दे पकावे उसके उपरान्त चौगुना पानी दे पकावे जब केवल तैल रहे तब उतारकर इसका नास ले तो केश सघन हों॥

अथ इन्द्रलुप्त पर करञ्जतैल ॥

कञ्जा, चीता, चमेली और कनेर में तैल पकाय लगावे तो वातक्षारा दूर हो ॥

अथ पलित पर नीलकादितैल ॥

नीलकेतकी, मूलभांगरा, कटसरैया, अर्जुनफूलन का हार, चमेली, काले तिल, तगर, कमल का सर्वाङ्ग, लोहचूर्ण, मालकांगनी, अनार की छाल, गुर्च, त्रिफला, कमल के जड़की मिट्टी इन सबोंको कर्ष कर्ष भर ले उसमें त्रिफलेके क्वाथसहित तैल पचावे और इसमें भांगरेका रसभी डाले जब सिद्ध हो तब उतार ले फिर इसे लगावे तो बाल स्थित हों, अकालपलित अच्छा हो और दारुण उपजिह्वक, शिरोरोग ये सब अच्छे हों ॥

अथ पलित पर भृंगराजतैल ॥

भांगरे के रस में लोहचूर्ण अथवा कीट, त्रिफला, सरिवन इन के कल्क में तैल पचावे। इस तैल से पलित, खाज और इन्द्रलुप्त ये सब रोग दूर हों ॥

अथ मुख और दन्तरोग पर इरिमेदादितैल ॥

खैर छाल १८० पल कूटकर द्रोणभर जल में पचावे जब चौथाई रहे तब उतारले और उसमें आधाआढ़क तैल दे फिर खैर, लवङ्ग, गेरू, अगर, पद्माक, मंजीठ, लोध, मुलेठी, लाही, वट की जड़, मोथा, तज, जायफल, कपूर, कंकोल, खदिरसार, पतङ्ग, धवपुष्प, इलायची और नागकेसर ये सब कर्ष कर्ष ले इसमें तैल को पचाय लगावे तो मुखरोग दूर हों और मुखका मांस बढ़ना, दांत हिलना, दांतफूटना, मुख और कानका बिकार,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri, Funding by IKS

दांतोंका ठण्ढा होना, दांतगिरना, दन्तकृमि, दांत टूटना, दुर्गन्धि रोग, तालूरोग और ओष्ठरोग ये सब दूर हों ॥

अथ कर्णशूल पर हिंगुतैल ॥

सरसों का तैल ½ महुआ का तैल ½ अंडी का तैल ½ भांगरेका रस ½॥ गौ का घी ½॥ ले सबको तैल में एकत्रकर चढ़ाय दे जब तैल खरा होजाय तब सब औषधें गौ के ½ दही में सानकर औटावे जब सिद्ध हो तब लगावे तो वात, स्त्री का प्रसूतिरोग, देह के सकल रोग और सब प्रकार का ज्वर और अग्निवात ये सब दूर हों ॥

अथ वात पर पंचस्नेहीतैल ॥

सोंठि, पीपल, मिरच, कूट, अरणीके पत्तोंका रस, कञ्जा, अजमोद, त्रिफला, हींग, खुरासानी बच, कायफल, सरसों, बायबिड़ंग, अजवाइन, मोथा, राई, मंजीठ, सुगन्धबाला, जटामासी, पपराबीज, पान, गजपीपल, शतावरि, हल्दी, देवदारु, धनियां, लहसुन, विष, मैनसिल, निर्मली ये सब औषधें दो दो पैसेभर ले तिलका तैल ½ सरसों का तैल ½ अण्डी का तैल ½॥ गौ का घी ½ मालकांगनी का तैल ½॥ इन सब तैलों को एकत्र कर चढ़ावे फिर औषधें कपरछान कर जब तैल खरा होजाय तब उसमें औटाय सिद्ध करे। देहमें लगाने से प्रसूतिरोग, अंग की पीड़ा, हाथ-पांव और कटि की पीड़ा तथा उचाट वायु इन सब रोगों को दूर करता है ॥

अथ झोला पर अठरंगातैल ॥

सहँजनेकी जड़, बकायन की जड़, धतूरे की जड़, पुराने अण्ड की जड़, आक की जड़, गुलसकरी की जड़, कनेर की जड़, करिहारी की जड़, घोंघची की जड़, नींब की जड़, छोटीबड़ी कटेली की जड़, अरसीकी जड़, असगन्ध, महुआ, विष ये सब औषधें पैसा पैसा भर ले चंदिया बनावे फिर ½ तिल का तैल

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

ले आगपर चढ़ावे जब तैल खरा होजाय तब उसमें चंदिया छोड़दे जब औटते औटते चंदिया तैल के ऊपर आजायँ तब हींग, तुम्बर, सोंठि इनको कडुए तैल में पचावे। यह कान में डालने से पीड़ा को दूर करता है॥

अथ बधिरत्व पर बिल्वतैल॥

छोटे बेलका गोमूत्र में कल्क कर तैल और बकरी का दूध पानी सहित पकाय कान में डालने से बहिरापन दूर हो॥

अथ कान बहने पर क्षारतैल॥

लघुमूली का खार, सज्जी, जवाखार, पांचोंनोन, हींग, सहिंजन, सोंठि, देवदारु, बच, कूट, सौंफ़, रसौंत, पीपलामूल, मोथा ये सब कर्ष कर्ष भर ले इनका कल्क कर प्रस्थभर तैल में केले और बिजौरे के रस सहित पकावे और चौगुना मधुसूक्तदे। इस तैल से कान से पीबका गिरना, शब्द होना, पीड़ा, बहिरापन आदि कानके और मुख के रोग दूर हों॥

अथ मधुसूक्त बनाने की विधि॥

जंभीरी नींबूका रस प्रस्थभर, शहद कुड़वभर और पीपल पलभर इन सबको इकट्ठाकर बचका काढ़ा, अदरक का रस, गुड़ इन सबको भी मिश्रितकर मिट्टी के पात्रमें मूंदि धान्यराशि में तीन रात्रि रखकर निकालले। इसको मधुसूक्त कहते हैं॥

अथ पीनस पर पाढ़ादितैल॥

पाढ़ा, दोनों हल्दी, मुर्रा, पीपल, चमेलीपत्र और दात्यूणी इनके तैलसे दुष्टपीनस अवश्य दूर हो॥

अथ नाकरोग पर भटकटैया तैल॥

भटकटैया, दात्यूणी, बच, सहिंजन, तुलसी, सोंठि, मिर्च, पीपल, सैन्धव इनके तैल से नाक से पीब का गिरना आदि नाक के अनेक रोग दूर होते हैं॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS

अथ छिक्का पर कूठादि तैल ॥

कूठ, बेल, पीपल, सोंठि और दाख इनका काढ़ा या कल्क तैल अथवा घृत में पचाय नास ले तो छींकरोग दूर हो ॥

अथ नासार्श पर बृहद्धूमादितैल ॥

रसोई के स्थान का धुआं, पीपल, देवदारु, जवाखार, करञ्ज, सैन्धव, चिवड़ाबीज इनका तैल नाकरोगों को बहुत शीघ्रही हरता है ॥

अथ सब कोढ़ों पर तैल ॥

छिमियां सेहुँड़का दूध, मदार का दूध, धतूरे और चीते का रस, भैंसके गोबर का रस इन सबको तिल के तैल में पचावे जब केवल तैल रह जाय, तब उसमें चतुर्गुण गोमूत्र दे फिर पचावे जब तैल रहे तब प्रस्थभर तैल में गन्धक, भिलावां, चीता, मैनसिल, हरताल, बायबिड़ंग, दोनों अतीस, कटुतुरई, कूट, जटामासी, बच, त्रिकुटा, दारुहल्दी, मुलेठी, सज्जी, जीरा, देवदारु ये सब कर्ष कर्ष भर ले तैल को सिद्ध करे। इस तैल के लगाने से सब कुष्ठ नाश हों ॥

अथ रोमशातन पर कनेर का तैल ॥

कनेरकी मूल, दंतीकी मूल, निशोत, कटुतुरई, केलाक्षार और केलेका पानी इनमें तैल सिद्ध कर लगावे तो रोम गिरपड़ें ॥

अथ पित्तज्वर पर तैल ॥

दोहा ॥

हल्दी लाख मँजीठ को, कल्क करे बुध धीर।
लेय तैल षटगुण बहुरि, और दही को नीर ॥
छाछि कल्क वा तैल में, डारै वैद्य पचाय।
तैल लगावै अङ्ग में, दाह शीतज्वर जाय ॥

अथ अन्य लाक्षादितैल ॥

सज्जी १ पैसाभर, सोंठि १ पैसाभर, उपलोट १ पैसाभर,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

चोवा १ पैसाभर. पिलवनी १ पैसाभर, पीपलकी लाख ६ पैसे भर, हल्दी ६ पैसेभर, मंजीठ ४ पैसेभर इन सब औषधों को कपरछान करे फिर औषधियोंसे ६ गुणा मट्ठा ले डेढ़ सेर सरसों के तैल में औटावे जब खरा होजाय तब उसमें औषधें डाल औटाय सिद्ध करे। यह तैल देह में लगाने से शीतज्वर और दाहज्वर को हरता है और स्त्री के गिरते हुए गर्भ को रोकता है॥

अथ विजयनारायणतैल॥

सरसों, बायबिड़ङ्ग, मंजीठ, बच, कूट, जायफल, चाब, कचूर, अजमोद, पुष्करमूल, दोनों चन्दन, राई, मोथा, कलौंजी और चिरायता ये सब औषधें पांच पांच टंक ले कपर छान कर तिल के १ सेर तैल में पचावे फिर उतारकर देह में लगावे तो झोला बाई और गठिया तथा तेरहों सन्निपात जायँ॥

अथ मरिचादिबृहत्तैल॥

निशोत की जड़, दन्ती की जड़, आक का दूध और पत्तों का रस, देवदारु, हल्दी, दारुहल्दी, जटामासी, रक्तचन्दन, इन्द्राणी की जड़, कनेर की जड़, हरताल, मैनसिल, चीते की छाल, मुलहठी, बायबिड़ङ्ग, पँवार के बीज, लहसुन, करिकचिहाऊ की जड़, सिरस की छाल, सुमान थूहर का दूध, गिलोय, अमलतास, कञ्जा, मोथा, खैर, पीपल, बच, जावित्री, सेव की जड़ ये सब औषधें बराबर ले और औषधों से दूना सरसों का तैल और चौगुना गोमूत्र ले। प्रथम तैल में गोमूत्र पचावे तदनन्तर पानी में सब औषधें पीस उस तैल में औटावे जब सिद्ध हो तब उतार लगावे तो २० प्रकार के कोढ़, कान की पीड़ा और अङ्ग के मण्डल जायँ॥

इति षड्विंशतितमस्तरङ्गः॥ २६॥

In Public Domain, Gurukul Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ अनेक रोगों पर अनुभूत काढ़े ॥

क्वाथ (काढ़ा) पांच प्रकार का है। स्वरस (अङ्गरस) १ कल्क २ क्वाथ ३ हेम ४ फांट ५ ये सब क्रम से एक से एक गुण में न्यून हैं यथा स्वरस से कल्क लघु होता है ॥

अथ स्वरसविधि ॥

किसी द्रव्य को उत्तम भूमि से उखाड़ कर विना पानी डाले कूटकर कपड़ेमें रखकर रस निचोड़ले उसको स्वरस (अङ्गरस) कहते हैं और किसी द्रव्य को सोलह तोले कूटकर द्विगुण जल में रात्रि दिन भिगो रक्खे उस रसको भी स्वरस कहतेहैं। जो हरी द्रव्य न मिले तो सूखी द्रव्य अठगुने पानीमें औटावे जब चौथाई रहे तब लेवे। ओदी द्रव्यका रस भारी होता है इससे कार्य में आधा पल लेना उचित है और सूखी द्रव्य रात की भीजी का रस हलका है इससे वह पलभर लेना चाहिये। स्वरस अथवा काढ़ा वा यन्त्र का निकाला रस इनमें शहद, शक्कर, गुड़, खांड़, जीरा, नमक, घृत, तैल और चूर्ण ये सब आठ माशे युक्त करना। गुरच का रस शहद युक्त खाने से सब प्रमेह नाश हों और आंवले का रस, हल्दी का चूर्ण और शहद मिश्रितकर खाने से भी प्रमेह नाश होते हैं ॥

अथ वासास्वरस रक्तपित्तादि पर ॥

रूस का स्वरस शहद मिलाय पीने से रक्तपित्त, ज्वर, खांसी, क्षयी, कमल, कफ और पित्त इन रोगों को नाश करे ॥

अथ त्रिफलादिस्वरस कमल पर ॥

त्रिफले का रस और शहद अथवा बड़ी हल्दी का रस और शहद अथवा नींब का रस और शहद अथवा गुरच का रस शहदयुक्त पिये तो कमलरोग निस्सन्देह नाश हो ॥

अथ तुलसी आदि स्वरस विषमज्वर पर ॥

तुलसीका रस, मिरच का चूर्ण, अथवा मूंगा का रस और मिरच साथ पिये तो विषमज्वर दूर हो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ जवादिस्वरस रक्तातीसार पर ॥

जामुन, आंब, आंवला इन तीनों की पत्ती का रस शहद, घृत और दूधसहित पिये तो पुराना रक्तातीसार दूर हो ॥

अथ बबूरादिस्वरस अतीसार पर ॥

बबूर की छाल का रस शहदयुक्त पिलावे तो सात भांति का अतीसार जाय। बाकुरे का रस अथवा करील का रस शहद के साथ पिये तो अतीसार जाय ॥

अथ अदरकस्वरस अण्डकोश और श्वास पर ॥

अदरक का रस और शहद पिये तो वाताण्डवृद्धि पचे तथा श्वास, खांसी, अरुचि, नाक बहना ये सब रोग दूर हों ॥

अथ बीजपूरस्वरस पार्श्वादिशूल पर ॥

बिजौरा नींबू का रस, शहद और जवाखार सहित पिये तो पसुली का शूल, हृदय का शूल, पेडू की पीड़ा और कोष्ठवृद्धि इन सब रोगों से निर्मुक्त हो ॥

अथ शतावरिरस पित्तशूल पर ॥

शतावरि का स्वरस शहद युक्त पिये तो पित्तशूल नाश हो ॥

अथ घिकुवाररस प्लीह पर ॥

घिकुवार का रस हल्दीचूर्ण युक्त पिये तो पिलही, अपची और पेट की गांठि ये सबरोग निस्सन्देह दूर हों ॥

अथ मुण्डीस्वरस गण्डमाला और अपची पर ॥

मुण्डी के स्वरस को आठ तोले पिये तो गण्डमाला, अपची और क्यांवल ये रोग नाश हों ॥

अथ मुण्डीस्वरस सूर्यावर्तादि पर ॥

मुण्डीस्वरस को उष्ण कर मिरचचूर्ण के साथ सात दिन पीवे तो सूर्यावर्त, आधाशीशी आदि रोग निस्सन्देह दूर हों ॥

अथ उन्माद पर ब्राह्म्यादिस्वरस ॥

ब्राह्मी, श्वेतकुम्हड़ा, कचूर, कौंघांला इनका स्वरस भिन्न

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri, Funding by IKS

भिन्न शहद और कुष्ठ के साथ पिये तो सर्व उन्माद जायँ और श्वेत कुम्हड़े का रस पुराने गुड़संयुक्त पीने से दुष्टकोदव का उन्माद नाश होता है॥

अथ बरियारे का स्वरस घाव पर॥

शस्त्र के लगे घाव में तुरन्तही बरियारे का रस लगावे तो घाव अच्छा हो॥

अथ पुटपाकस्वरसविधि॥

ओदी द्रव्य को पीसकर गोला बांधे उसपर एरण्ड अथवा बरगद या जामुन का पत्ता लपेटे फिर कपरौटी कर दो अंगुल मिट्टी लेसे फिर अग्नि में रक्खे जब लाल होजाय तब बाहर निकाल उसका रस निचोड़ ले इस रस को पुटपाक कहते हैं। यह ४ रुपये भर रस रुपयाभर शहदसंयुक्त पिये और जो कल्क, चूर्ण, पतली द्रव्य मिश्रित करना हो तो पुटपाकरस के यथा योग्य देना चाहिये॥

अथ कुरैयापुटपाक सर्वातीसार पर॥

४ तोले कुरैया की छाल चावल के धोवन में पीसकर गोला बांध जामुनके पत्ते लपेट फिर सूत से बांधकर गेहूं का आटा लपेट उसपर मिट्टी लगावे फिर उसे गाय के गोबर में फूंक दे जब अंगार सा होजाय तब निकाल, रस निचोड़, शीतल कर शहद मिलाय पीवे तो बहुत दिनों का कठिन अतीसार दूर हो॥

अथ चावल धोवने की क्रिया॥

चार रुपयी भर शुद्ध चावल अठगुने पानी में धोवे वही चावल का धोवन सर्वत्र लिया गया है॥

अथ पुनः पुटपाक॥

अरलू अथवा करील वा सोहनपाता का पुटपाक अग्नि को दीपन करता है। जब शहद और मोचरस मिलाय कर दे तब अतीसार दूर हो॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ पुनः पुटपाक ॥

बड़, पीपल, गूलर, पाकर, जगन्नाथी पीपल इनकी छाल पानीमें पीस गोला बांध श्वेत तीतर का पेट चीर उसकी अँतड़ियों में वह गोला रखकर पुटपाक करे फिर पके पर गोला निकाल के रस को निचोड़ ले फिर वही रस शहद के साथ दे तो सब अतीसार जायँ ॥

अथ अन्य पुटपाक ॥

पक्के अनार का पुटपाक बनाय उसका रस शहद मिलाय दे तो सब अतीसार दूर हों ॥

अथ बिजौरापुटपाक उबाकी पर ॥

बिजौरा नींबू, जामुन की पत्ती वा जड़ के पुटपाक का रस शहदके साथ दे तो सब प्रकार की छर्दि दूर हो ॥

अथ वासापुटपाक रक्तपित्त, कास और ज्वर पर ॥

रूसे का पुटपाकरस शहद के साथ पीने से रक्तपित्त, कास, छर्दि और ज्वर इन सबको दूर करता है ॥

अथ भटकटैया कासश्वास पर ॥

भटकटैया के पञ्चाङ्ग का पुटपाकरस पीपल का चूर्ण डालकर दे तो कास, श्वास और कफ ये सब दूर हों ॥

अथ बिभीतकपुटपाक कासश्वास पर ॥

बहेड़े के ऊपर घी चुपड़ कर उसके ऊपर आटा लपेट अंगारपर पुटपाक बनावे फिर उसका छिलका मुखमें रखने से कास, श्वास, स्वरभङ्ग आदि सब रोगों को दूर करे ॥

अथ शुंठीपुटपाक आमातासार पर ॥

सोंठि को चूर्णकर उसकी गोली घृत के साथ बनावे फिर उसे एरण्डपत्रमें लपेट मन्दाग्नि में पुटपाक करे फिर उस चूर्ण को सबेरे शरबतके साथ खाय तो आमातीसार की पीड़ा दूर हो अथवा सोंठिके चूर्ण को एरण्डकी जड़के रसमें सान पुटपाककर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

रस निकाल शहद के साथ खाय तो आमवातकी पीड़ा दूर हो॥

अथ सूरणपुटपाक बवासीर पर॥

जिमीकन्द का पुटपाक बनाकर नमक और तैल के साथ खाय तो अर्श नाश हो॥

अथ हरिणशृंगपुटपाक हृदय शूल पर॥

हरिण के सींग को शराब के पुटपाक में जलाकर गोघृत में डालकर पिये तो हृदयशूल निस्सन्देह जाय॥

अथ क्वाथ॥

चार रुपयाभर द्रव्य और चौंसठ रुपयाभर पानी मिट्टीपात्र में भर मन्दाग्नि से औटावे जब आठ रुपया भर रहे तब उतारले फिर कुछ गर्म रहे तब पिये। इस क्वाथ के चार नाम हैं। सृत१ क्वाथ २ कषाय ३ निर्यूह ४ आहार का रस पके पर वृद्धवैद्य के उपदेश से दो पल काढ़ा पिये॥

क्वाथ में मधु और मिश्री डालने का प्रमाण॥

जो वायुप्रधान हो तो मिश्री थोड़ी देना, पित्त में अष्टमांश, कफ में षोड़शांश, वायु में षोड़शांश, पित्त में अष्टमांश और कफ में चौथा अंश देना चाहिये॥

अथ जीरादि अनेक वस्तु डालने का प्रमाण॥

जीरा, गुग्गुलक्षार, सैन्धव, शिलाजीत, हींग और त्रिकुटा ये काढ़े में चार माशे दे और ज्यादा और कम देना चाहे तो समय और बल का विचार कर ले और दूध, घी, गुड़, तैल, गोमूत्र, स्वरसादि और चूर्णादि ये सब बल और समय देख कर दश दश माशे देना उचित है॥

अथ गुर्चादि काढ़ा सर्वज्वरों पर॥

गुर्च, धनियां, नींब की छाल, पद्माक, रक्तचन्दन इनके क्वाथ के पीने से सर्वज्वर नाश होते हैं। यह क्वाथ दीपन है दाह, तृष्णा, लार और उबकाई इन सबको दूर करता है॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ गुर्चादिपाचन वातज्वर पर ॥

गुर्च, पीपलामूल, सोंठि इनका काढ़ा वातज्वर में सदैव देना ॥

अथ काढ़ा वातज्वर पर ॥

माषपर्णी (बनउर्दी), बरियारा, रासना, गुर्च, सरिवन इनका काढ़ा पिये तो तीव्र वातज्वर जाय अथवा खंभारि, सरिवन, दाख, त्रायमाण, गुर्च इनका काढ़ा गुड़ डाल कर पिये तो वातज्वर जाय ॥

अथ कटुफलादिपाचन पित्तज्वर पर ॥

कायफल, इन्द्रयव, पाढ़ा, कुटकी, नागरमोथा इनका काढ़ा पित्तज्वर में दश दिन दे तो पित्तज्वर दूर हो ॥

अथ पित्तपापड़ादिक्वाथ पित्तज्वर पर ॥

पित्तपापड़ा, रूसा, कुटकी, चिरायता, जवासा, प्रियंगु दाना पीतसरसों सा होता है इनका काढ़ा चीनी डालकर पिये तो तृषा, दाह, रक्तपित्त और ज्वर ये सब दूर हों अथवा दाख, हड़, मोथा, कुटकी, अमलतास, पित्तपापड़ा इनका क्वाथ कर दे तो पित्तज्वर, तृष्णा, मूर्च्छा, दाह और रक्तपित्त इन सब रोगों को शमन और भेदन करता है ॥

अथ बिजौरीपाचक कफज्वर पर ॥

बिजौरा की जड़, हड़, सोंठि, पीपलामूल इनका काढ़ा जवाखार डाल कर कफज्वर के बारहें दिन पिये तो जल्दी पाचन करे तथा चिरायता, नींब, पीपल, कचूर, शतावरि, गुर्च, भटकटैया इनका काढ़ा भी कफज्वर को नाश करता है अथवा पटोल, त्रिफला, कुटकी, कचूर, रूसा, गुर्च इनके काढ़े में शहद मिलाकर पीवे तो कफज्वर नाश हो ॥

अथ पित्तपापड़ाक्वाथ वातज्वर पर ॥

पित्तपापड़ा, मोथा, गुर्च, सोंठि, चिरायता इन औषधों का काढ़ा करे। यह पञ्चभद्र काढ़ा वात और पित्तज्वर को नाशे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ छोटी भटकटैयाकाथ वातकफज्वर पर ॥

भटकटैया, सोंठि, पुष्करमूल इनका काढ़ा कफवातज्वर को नाशता है और सन्निपातज्वर में पिये तो कास, श्वास, अरुचि इन सबोंको तथा सुपारी की पीड़ा को हरता है ॥

अथ अमलतासादिकाथ कफवातज्वर पर ॥

अमलतास, पीपलामूल, मोथा, कुटकी इनका काढ़ा वातकफज्वर को वेगही नाश करता है तथा आम और शूल को शमन करता है और गोटा गिरावे, अग्नि दीपन और पाचन करे ॥

अथामृताष्टक काथ ॥

गुर्च, नींब, कुटकी, मोथा, इन्द्रयव, सोंठि, पटोल, रक्तचन्दन इनका काथ और पीपल का चूर्ण डालके पीने से पित्तकफज्वर नाश होता है और उबकाई, अरुचि, हृल्लास, दाह और तृषा इनको भी निवारण करता है ॥

अथ भटकटैयादिकाथ सब ज्वरों पर ॥

दोनों भटकटैया, सोंठि, धनियां, देवदारु इन औषधों का काढ़ा पाचन है और सर्वज्वरों को हरता है ॥

अथ दशमूलकाथ वात कफ पर ॥

बनउर्दी, बनमूंग, दोनों भटकटैया, गोखुरू, बेल की जड़, अग्निमन्थ, सोहनपत्ता, खम्भारी, पाढ़ा, इन दशों मूलों का काढ़ा पीपल के चूर्णके साथ पिये तो वातकफज्वर नाश हो और सन्निपात, ज्वर, सूतिकादोष, मुख सूखना, शीतल अङ्ग, भ्रम, पसीना, श्वास और कास को नाश करे तथा हृदयशूल, पार्श्वपीड़ा और तन्द्रा ये सब मुक्त हों ॥

अथान्य हरीतकीकाथ सन्निपातज्वर पर ॥

हड़,मोथा,धनियां,रक्तचन्दन, पद्माक, रूसा, इन्द्रयव, खस, गुंर्च, अमलतास, पाढ़े की जड़, कुटकी इनका काढ़ा पीपल के चूर्ण समेत पिये तो सन्निपातज्वर, तृष्णा, दाह, कास, भ्रम,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

श्वास, तन्द्रा आदि रोगों को नाश करे। यह क्काथ दीपन और पाचनभी करता है और वायु से मलमूत्ररोध, वमन, कण्ठदोष और अरुचि इन उपद्रवों को नाश करता है॥

पुनः भूनिम्ब दशमूलक्काथ॥

चिरायता, कुटकी, मोथा, धनियां, इन्द्रयव, सोंठि, दशमूल, देवदारु इनका क्काथ गजपीपल समेत पिये तो पसुली की पीड़ा, सन्निपात, ज्वर, कास, श्वास, वमन, हिचकी, तन्द्रा और हृदय-रोग ये सब नाश हों॥

अथ कायफलक्काथ कासज्वर पर॥

कायफल, मोथा, भारंगी, धनियां, खस, पित्तपापड़ा, हड़, काकड़ासिंगी, देवदारु और सोंठि इनका काढ़ा कासज्वर तथा श्वास, कफ और कण्ठरोग इनको दूर करे॥

अथ अन्य क्काथ॥

गुर्च का काढ़ा पीपलयुक्त पीनेसे जीर्णज्वर छूटता है और पित्तपापड़े का क्काथ पीपलयुक्त पीनेसे पित्तज्वर नाश होता है तथा भटकटैया में पीपल डालकर पिये तो कास, श्वास, पीनस, अरुचि, गला बैठना, शूल, जीर्ण, कफज्वर ये सब रोग दूर हों॥

अथ सर्वशीतज्वरों पर भटकटैयाक्काथ॥

भटकटैया, धनियां, सोंठि, गुर्च, मोथा, पद्माक, रक्तचन्दन, चिरायता, पटोल, रूसा, मोचरस, कुटकी, इन्द्रयव, नीम, भारंगी और पित्तपापड़ा इनका क्काथ प्रातःकाल पीवे तो सर्व-शीतज्वर नाश हों॥

अथ विषमज्वर पर मोथाक्काथ॥

मोथा, भटकटैया, गुर्च, सोंठि, आंवला और शहद पीपल युक्त पिये तो विषमज्वर नाश हो॥

अथ नित्य आते ज्वर पर पटोलक्काथ॥

पटोल, त्रिफला, नींब, दाख, अमलतास, रूसा इनके

In Public Domain, Chanwal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

क्काथ को शहद और खांड़युक्त पीने से एकाहिकज्वर दूर हो॥

अथ तृतीयज्वर पर गुडूच्यादिक्काथ॥

गुर्च, धनियां, मोथा, रक्तचन्दन, खस, सोंठि इनका काढ़ा शक्कर और शहदयुक्त पिये तो तृतीयज्वर, प्यास और दाह ये सब उपद्रव दूर हों और रोगी अच्छा हो॥

अथ चतुर्थज्वर पर देवदारुक्काथ॥

देवदारु, हड़, रूसा, शालिपर्णी, सोंठि, आंबला, इन्द्रयव इनका काढ़ा मिश्रीयुक्त पीने से चातुर्थिकज्वर और श्वास, कास, मन्दाग्नि आदि रोगों को दूर करता है॥

अथ ज्वरातीसार पर गुडूच्यादिक्काथ॥

गुर्च, धनियां, खस, सोंठि, सुगन्धबाला, पित्तपापड़ा, बेल, अतीस, पाढ़ा, रक्तचन्दन, कुरैया, चिरायता, मोथा और इन्द्रयव इन द्रव्यों का काढ़ा ठण्ढा कर शहद और मिश्रीयुक्त पीवे तो ज्वरातीसार और रक्तपित्त नाश हो॥

अथ अन्य क्काथ॥

सोंठि, कुरैया, मोथा, गुर्च और अतीस इनके काढ़े को पीने से सर्व ज्वरातीसार नाश हों॥

अथ धान्यपञ्चकक्काथ आमशूल पर॥

धनियां, सोंठि, बेल, मोथा और खस इनके क्काथसे आम और शूल शीघ्र दूर हो। यह क्काथ ग्राही, दीपन और पाचन है। अथवा शहद, धनियां और सोंठि का क्काथ भी दीपन और पाचन है और जो एरण्डकी जड़ युक्त करे तो आमवात दूर हो॥

अथ आमातीसार पर कुरैयाक्काथ॥

कुरैया की मूल, अतीस, बेल, मोथा और खस इन द्रव्यों का काढ़ा पीनेसे अतीसार अवश्य नाश होता है॥

अथ कुटजाष्टक्काथ॥

कुरैया, मूल, अतीस, पाढ़ामूल, धवफूल, लोध, मोथा,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

हाऊबेर, अनार इनका काढ़ा मधु और मोचरसयुक्त पिये तो सब अतीसार जायँ। यह क्वाथ दाह, रक्त, कठिनशूल आदिको भी दूर करता है॥

अथ अतीसार पर हाऊबेरक्वाथ॥

हाऊबेर, धवफूल, लोध, लजालू, कुरैया, धनियां, अतीस, मोथा, गुर्च, बेल और सोंठि इनका काढ़ा पीनेसे बहुत कालका भी अतीसार दूर होजाता है और अरोचक, आमशूल आदिको भी हरता है तथा पाचन और दीपन भी है॥

अथ बालकों के सर्वातीसार पर क्वाथ॥

धवफूल, बेल, लोध, सुगन्धबाला, गजपीपल इनका काढ़ा मधुयुक्त देने से अथवा इसका अवलेह बनाकर देनेसे बालकों के सर्वातीसार नाश होते हैं॥

अथ संग्रहणी पर बनउर्दीक्वाथ॥

बनउर्दी, बरियारा, बेल, धनियां और सोंठि इनका काढ़ा देनेसे पेटशूल, नाभिशूल और वातसहित संग्रहणी को दूर करे॥

अथ चतुर्भद्रक्वाथ॥

गुर्च, अतीस, सोंठि, मोथा इनका क्वाथ असाध्यतर ग्रहणी को दूर करता है और दीपन और पाचन भी है॥

अथ सर्वातीसार पर इन्द्रयव क्वाथ॥

इन्द्रयव, धनियां, पटोल इनका काढ़ा खांड़ और शहद के साथ खाय तो छर्दि और अतीसार जायँ। अथवा आमकी गुठली और बेलका काढ़ा, शहद और मिश्रीयुक्त पीने से सब अतीसार दूर होते हैं॥

अथ कृमि पर त्रिफलाक्वाथ॥

त्रिफला, देवदारु, मोथा, मूसाकरणी, सहिंजन इनका क्वाथ पीपल और बिड़ङ्गयुक्त पीने से कृमिज उपद्रव दूर हों॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS

अथ कमल पर त्रिफलादिक्काथ ॥

त्रिफला, गुर्च, कुटकी, नींब, चिरायता, रूसा इनका क्काथ शहद के साथ पीने से कमल और पाण्डुरोग नाश होते हैं ॥

अथ पाण्डु पर गदापुरैनाक्काथ ॥

गदापुरैना, हड़, नींब, दारुहल्दी, कुटकी, पटोल, गुर्च, सोंठि इनका काढ़ा पिये तो पाण्डु, कास, उदररोग, श्वास, उदर-शूल और सर्वाङ्गसूजन ये सब रोग दूर हों ॥

अथ रक्तपित्त पर रूसाक्काथ ॥

रूसा, दाख, हड़ इनका काढ़ा शहद अथवा मिश्रीके साथ पिये तो रक्तपित्त की दारुण पीड़ा, कास और श्वास ये सब रोग नाश हों। अथवा रूसे का काढ़ा शहद के साथ पिये तो रक्त-पित्त, कास, श्वास, क्षयी और कफपित्तज्वर ये सब रोग दूर हों ॥

अथ कासज्वर पर रूसाक्काथ ॥

रूसा, भटकटैया, गुर्च इनको मधुयुक्त खाने से कासज्वर मिटे। भटकटैया का काढ़ा पीपलके चूर्णसंयुक्त दे तो खांसी जाय ॥

अथ कास और श्वास पर क्षुद्रादि क्काथ ॥

भटकटैया, कुरथी, रूसा, सोंठि, पुष्करमूल इनका क्काथ पीने से कास और श्वासरोग दूर होते हैं ॥

अथ हिक्का पर मेवड़ीक्काथ ॥

मेवड़ी, कांजी, पीपल, भुनी हींग युक्त पीने से पांचों प्रकार की हिचकी जायँ ॥

अथ उबकाई पर बिल्वादिक्काथ ॥

बेलकी छाल अथवा गुर्च का काढ़ा मधुयुक्त पीने से त्रिदोष-जन्य छर्दि मिटती है और जो पित्तपापड़ा और शहदयुक्त पीवे तो पित्त और छर्दि नाश हो ॥

अथ गृध्रसीवायु पर दशमूलक्काथ ॥

हींग और पुष्करमूल का चूर्ण दशमूलक्काथ में युक्त कर पिये

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तो गृध्रसीवायु जाय और जो मेवड़ीकाथ में हींग वा एरण्डमूल का चूर्ण मिलाय पिये तो गृध्रसीवायु तुरन्त दूर हो ॥

अथ वायु पर रासनपञ्चककाथ ॥

रासना, गुर्च, देवदारु, सोंठि, एरण्डमूल इनका काढ़ा पीने से सप्तधातुगतवात और सब अङ्गवायु दूर हों अथवा रासना, गोखुरू, एरण्ड, देवदारु, पुरैना, गुर्च, अमलतास इनका काढ़ा कर सोंठि के चूर्ण के साथ पीने से जांघ, कटि, पसुली और छाती की पीड़ा तथा भारी आमवात ये सब दूर हों ॥

अथ संपूर्णवायु पर महारासनादिकाथ ॥

दो भाग रासना और एक भाग में जवासा, बरियारा, एरण्ड, देवदारु, कचूर, बच, रूसा, सोंठि, हड़, चाब, मोथा, गदापुरैना, गर्बबिधारा, सौंफ़, गोखुरू, असगन्ध, अतीस, अमलतास, शतावरि, पीपल, इन्द्रयव, धनियां और दोनों भटकटैया इनका काढ़ा सोंठिचूर्ण डाल पाक वा पीपल का चूर्ण या योगराजगुग्गुल के साथ अथवा अजमोदादि चूर्ण के साथ तथा रेंड़ी के तैल के साथ दे तो सर्वाङ्गकम्प, कूबड़, पक्षाघात, बाहुक, गृध्रसी, आम, फ़ीलपांव, अपतन्त्र, अण्डवृद्धि, पेटफूलना, जङ्घपीड़ा, धातुरोग, बन्ध्याकी योनिदुष्टतादि सब रोग दूर हों। यह महारासनादिकाथ ब्रह्मा ने कहा है। इसमें बहुत मनुष्य सब औषधों का दूना रासना लेते हैं सो अनुचित है ॥

अथ छाती की पीड़ा पर एरण्ड का काथ ॥

एरण्ड, बिजौराकी जड़, गोखुरू, दोनों भटकटैया, पाषाणभेद, बेलकी लकड़ी इन सब जड़ों का काढ़ा रेंड़ी का तैल, हींग, जवाखार और सैन्धवयुक्त पिये तो स्तनपीड़ा, कण्ठ और हृदय की पीड़ा मिटे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Arya Samaj Foundation Trust, Delhi and eGangotri Funding by IKS

अथ वातशूल पर शुण्ठीकाथ ॥

सोंठि, एरण्डमूल, इन्द्रयव इनका काढ़ा, भुनी हींग और कालानमक युक्त पीने से वातशूल दूर होता है ॥

अथ पित्तशूल पर त्रिफलाकाथ ॥

त्रिफला और अमलतास इनके काढ़े में शक्कर शहदयुक्त कर पिये तो रक्तपित्त, दाहपित्त और शूल ये सब रोग जायँ ॥

अथ कफशूल पर एरण्डमूलकाथ ॥

एरण्डकी जड़ २ पल लेकर १६ पल जलमें काढ़ा करे जवाखार डालकर पिये तो कफजन्य पार्श्व और हृदयपीड़ा नाश हो ॥

अथ हृदयरोग पर दशमूलकाथ ॥

दशमूल का काढ़ा जवाखार और सैन्धवयुक्त पीने से हृदयरोग, वायुगोला, कास और श्वासादि सब रोग नाश हों ॥

अथ मूत्रकृच्छ्र पर हरीतकीकाथ ॥

हड़, जवासा, अमलतास, पाषाणभेद और गोखरू इनका काढ़ा कर शहदयुक्त पीने से दाहसहित मल और मूत्ररोध रोग अच्छा हो ॥

अथ मूत्ररोग पर अर्जुनकाथ ॥

आकाशबवँरि, काश की जड़, तीनों कटसरैया, दोनों कुश, नरकटमूल, गोंदी, शिवलिङ्गी, अरणीचूर्ण, हालवारी, पाषाणभेद वा करील, गोखरू, चिरचिरा, कमलपत्र यह परितरु श्रेष्ठगण है । इस क्वाथ के पीने से शर्करा, पथरी, मूत्रकृच्छ्र और मूत्राघात ये सम्पूर्ण रोग नाश हों ॥

अथ अश्मरी शर्करादि पर एलाकाथ ॥

इलायची, मुलहठी, गोखरू, मेवड़ीबीज, एरण्ड, रूसा, पीपल और पाषाणभेद इनका काढ़ा शिलाजीत संयुक्त पिये तो शर्कराप्रमेह और मूत्रकृच्छ्र ये सब रोग नाश हों ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ मूत्रकृच्छ्र पर गोखुरूकाथ ॥

गोखुरू के पञ्चाङ्ग का काढ़ा मिश्री और शहद संयुक्त पिलावे तो मूत्रकृच्छ्र और उष्णवायु ये रोग अच्छे हों ॥

अथ मूत्रकृच्छ्र पर त्रिफलाकाथ ॥

त्रिफला, दारुहल्दी, मोथा, देवदारु इनका काढ़ा शहद युक्त पिये तो प्रमेह नाश हो अथवा कुरैया, त्रिफला, दारुहल्दी, मोथा, ककई इनका काढ़ा शहद के साथ पीवे तो प्रमेह नाश हो ॥

अथ प्रमेह पर त्रिफलाकाथ ॥

त्रिफला, मोथा, दारुहल्दी, इन्द्रायण की जड़ इनका काढ़ा हल्दी के चूर्णयुक्त पिये तो सकल प्रमेह नाश हों ॥

अथ प्रदर पर दारुहल्दीकाथ ॥

दारुहल्दी, रसौंत, मोथा, भिलावां, तेल, रूसा और चिरायता इनका काढ़ा ठण्ढाकर मधुसंयुक्त पिये तो स्त्री का पीत, श्वेत, कृष्ण, लाल प्रदरसहित शूल, उदररोग ये सब अच्छे हों ॥

अथ तत्क्षणादि पर वटादिकाथ ॥

वट, पाकर, वेतस, बेर, तुनि, जेठीमधु, चिरौंजी, लोध, गुलरी, पीपल, धूप, जगन्नाथी पीपल, पलाश, दोनों तन्दुक, जामुन, आम्र, हड़, कदम्ब, अर्जुनतरु, भिलावां और कायफल जो द्रव्य इसमें न मिले सो त्याग दे। यह न्यग्रोधादिगणक्काथ बहुत ग्राही है। जो घाव खराब होगया हो तो अच्छा हो। योनिदोष, दाह, मेद, प्रमेह और विषरोग ये सब नाश हों। वेतसको कहीं जगन्नाथी पीपल कहते हैं ॥

अथ मेदरोग पर बेलकाथ ॥

बेल, अरणी, सोहनपात, खंभारी इन सबका काढ़ा शहद के साथ पिये तो मेददोष मिटे अथवा त्रिफले का काढ़ा शहद युक्त पिये तो मेददोष जाय अथवा उष्णजल ठण्ढा कर शहद के साथ पिये तो मेदरोग जाय ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ उदररोग पर चाबकाथ ॥

चाब, चीता, सोंठि, देवदारु इनका काढ़ा निशोथचूर्ण और गोमूत्र के साथ पिये तो उदररोग दूर हों ॥

अथ पेटफूलने पर गदापुरैनाकाथ ॥

गदापुरैना, गुर्च, देवदारु, सोंठि इनका काढ़ा गोमूत्र और गुग्गुलयुक्त पिये तो पेट की सूजन मिटे ॥

अथ पिलही पर हरीतकीकाथ ॥

हड़, अगियाखार इनका काढ़ा जवाखार और पीपलयुक्त पीने से प्लीहा, वायुगोला, यकृत अच्छी हो ॥

अथ शोथ पर गदापुरैनाकाथ ॥

गदापुरैना, दारुहल्दी, सोंठि, गुर्च, चीता, भारङ्गी, देवदारु इनके काथ से हाथ, पांव, उदर, छाती और मुख की सूजन ये सब रोग जायँ ॥

अथ अण्डवृद्धिसूजन पर त्रिफलाकाथ ॥

त्रिफला के काढ़े में गोमूत्र मिलाय पीने से वातकफजन्य अण्डवृद्धि जाय ॥

अथ आंतवृद्धि पर रासनकाथ ॥

रासना, गुर्च, बरियारा, मुलहठी, गोखुरू, अरण्ड इनके काढ़े में रेंड़ी का तैल मिलाकर पीने से आंतवृद्धि मिटे ॥

अथ गण्डमाला पर कचनारकाथ ॥

कचनार की छाल का काढ़ा सोंठियुक्त पीवे तो गण्डमाला निस्सन्देह नाश हो ॥

अथ फ़ीलपांव पर सहोड़ाकाथ ॥

सहोड़े का काढ़ा गोमूत्रयुक्त पीवे तो फ़ीलपांव और मेददोष निस्सन्देह नाश हो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ अन्तर्विद्रधि पर गदापूर्णक्वाथ ॥

गदापुरैना, वरुणा इनका क्वाथ पिये तो भीतर का फोड़ा वा पिड़की अच्छी हो ॥

अथ वरुणादिगणक्वाथ ॥

वरुणपत्र, मौलसिरी वा बिजगरी, आबेलि, चिर्चिरा, चीता, दोनों अरणी, दोनों सहिंजन, दोनों भटकटैया, तीनों कटसरैया, अमुर्समेषशृंगी, चिरायता, बनकुंदुरू का मूल वा पल्लव, करञ्ज, शतावरि इनका काढ़ा करे। इस वरुणादिगणक्वाथ से मेदोदोष शुद्ध हो और गुल्म, शिरःशूल, अन्तर्विद्रधि और पीनस ये सब दूर हों। मेढ़ासिंगी प्रसिद्ध है ॥

अथ भगन्दर पर खदिरादिक्वाथ ॥

खैर, त्रिफला का काढ़ा, भैंस का घृत, बायबिड़ंग के चूर्ण संयुक्त पिये तो भगन्दर निस्सन्देह अच्छा हो ॥

अथ गर्मी पर पटोलादिक्वाथ ॥

खैर, त्रिफला का काढ़ा, पटोल, त्रिफला, बच, चिरायता, काही, रासना इन औषधों का क्वाथ गुग्गुल के साथ पिये तो सब उपदंश दूर हों ॥

अथ रक्तपित्तातीसार पर मोथादिप्रमथ्या ॥

मोथा और इन्द्रयव का प्रमथ्या दोपल ठण्ढा कर मिश्रीयुक्त पिये तो रक्तातीसार नाश हो ॥

अथ यवागूविधान ॥

सोलह तोले द्रव्य में उसका सोलहगुना पानी ले फिर आग पर रखने से जब आधा जल जाय तब द्रव्य छानकर फेंक दे जो पानी रहजाय उसे यवागू कहते हैं। इस पानी में रोगी को पथ्य देते हैं। इस प्रकार जो शेष पानी रहा उसमें पथ्य पकावे जब रस को सोख ले तब देवे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ यूषकविधि ॥

सोंठि का कल्क औषध एक पल उसमें पीपल पांच माशे प्रस्थभर पानी में पचाय उसमें अन्न खूब गलाय के दे तो उसे यूषक कहते हैं ॥

अथ सन्निपात पर सप्तमुष्टिकयूष ॥

कुरथी, यव, बेर, मूंग, मूली की पेंदी (जो पत्तों के पास होती है) इन सब सूखे द्रव्यों का यूष सोंठि और धनियांयुक्त पीवे तो कफ और वात नाश हो। इस सप्तमुष्टिकयूष से सन्निपातज्वर, आमवात, कण्ठ, हृदय और मुख के रोग दूर हों ॥

अथ पानादिकल्पना ॥

पलभर कूटी द्रव्य चौंसठपल पानी में औटावे जब आधा रह जाय उस पानी को भक्त कहते हैं। इसे भोजन समय दे अथवा थोड़ा थोड़ा कर दे ॥

अथ ज्वरतृषा पर उशीरादिपान ॥

खस, पित्तपापड़ा, सुगन्धबाला, मोथा, सोंठि, रक्तचन्दन इन्हें पकाय पानी ठण्ढाकर दे तो प्यास और ज्वर नाश हो ॥

अथ उष्णोदक ॥

रात को उष्णोदक पीने से कफ, आमवात, मेदा, बस्तिशोधन, दीपन, श्वास, कास और ज्वर ये रोग जाते हैं ॥

अथ क्षीरपाकविधि ॥

द्रव्य का अठगुना दूध और दूध का चौगुना पानी एकत्रकर औटावे जब पानी जल जाय तब दूध पिये तो आमशूल दूर हो ॥

अथ अन्नप्रकार ॥

अन्न को यवागू से छहगुना जल देकर पकावे उसे कृश और धना कहते हैं। चावल, मूंग, माष और तिल इनका यवागू ग्रहणी को बल देता है। तृप्ति और वायु नाश करता है और पलभर अन्नमें चौगुना अन्न पकावे उसे विलेपी कहते हैं। यह

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अन्न तृप्ति व मन प्रसन्न करता, प्रिय, मधुर और पित्तनाशक है॥

अथ पय॥

अन्न को चौदह गुने पानी में सिद्ध करे पतला मट्ठा न हो जो पिया जाय उसे पय कहते हैं उससे कुछही गाढ़े को यूष कहते हैं। यह यूष हल्का है। ग्रहणी को शुद्ध करता, धातुपुष्ट करता, बल करता, कण्ठ शुद्ध करता, लघुपाक और कफहारक है॥

अथ भातविधि॥

चावल से चौदहगुना पानी लेकर उसमें चावलों को पकावे उसका माड़ निकाले सो मीठा और हल्का है उसे भक्तमण्ड कहते हैं। उसीमें सोंठि और सैन्धव डालके पिये तो दीपन और पाचन करे तथा अष्टगुण माड़—धनियां, त्रिकुटा, सैन्धव, मट्ठा, तैल की भुनी हींग और तक्रयुत माड़ का अष्टगुणमाड़ नाम है। यह प्राणदाता, बस्तिशोधन, रक्तवर्धन, ज्वरघ्न और सब दोषों को हरण करता है॥

अथ यवमण्ड॥

यव को कूट भूनकर चुरवै उसको वाद्यमण्ड कहते हैं। यह कफ पित्त को हरता हुआ कण्ठ को शुद्ध करता है और रक्तपित्त को नाश करता है॥

अथ लाजामण्ड॥

धान का लावा, कूटी द्रव्य वा भूजे धान का बनावे इसको लाजामण्ड कहते हैं। यह कफ और पित्त को हरता है, ग्राही है तथा तृष्णा और ज्वर को नाश करता है॥

अथ अजीर्ण से उत्पन्न हुए ज्वर पर काथ॥

पीपल, पीपलामूल, सोंठि, अजवाइन, बायबिड़ंग, देवदारु और दोनों कटेली इनका काढ़ा देने से अजीर्णज्वर दूर हो अथवा पीपल, पीपलामूल, सोंठि, मिरच, छोटीहड़, लवङ्ग, धनियां, अमलतास और देवदारु इन द्रव्यों का अष्टावशेष काढ़ा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दे तो ज्वर जाय अथवा सोंचरनोन और बकाइनका काढ़ा दे तो ज्वर जाय अथवा पीपल, पीपलामूल, गिलोय, सोंठि इनको बराबर ले इनका क्काथ करके दे तो ज्वर जाय अथवा पीपल, पीपलामूल, सोंठि, अजवाइन, बायबिड़ंग, देवदारु, चव्य, दोनों कटेली इन सबको बराबर ले क्काथकर दे तो ज्वर दूर हो ॥

अथ सन्निपात पर काढ़ा ॥

भारङ्गी, मिरच, सोंठि, कूट, अकरकरा, अतीस, बच, कलौंजी, अंतःमनि, चिरायता, अजमोद, अजवाइन, पीपलामूल, काकड़ासिंगी, दवागूमी, बायबिड़ंग, दोनों कटेली, चाब, चित्रक, पाढ़ा, सरिवन, पिथवन, आक की जड़ ये सब औषधें दो दो टंक ले फिर उसके तीन भाग करे और एक भाग का अष्टावशेष क्काथ कर दे तो १३ सन्निपात दूर हों ॥

अथ सन्निपात पर कायफलादिक्काथ ॥

कायफल, नागरमोथा, बच, पाढ़ा, पुष्करमूल, पित्तपापड़ा, देवदारु, हड़ का काढ़ा, काकड़ासिंगी, पीपल, चित्रक, सोंठि, भारङ्गी, इन्द्रयव, कुटकी, कचूर, धनियां, रोहिष, बेल, खम्भारी, बहेड़ा, दोनों कटेली, गोखुरू, सरिवन, पिथवन ये सब औषधें दो दो टंक ले तीन भाग करे एक भाग का अष्टावशेष क्काथ दे तो सन्निपात, कर्णमूल, हिचकी और पित्त ये सब दूर हों ॥

अथ वातरक्त पर गुडूच्यादिक्काथ ॥

गुर्च, एरण्ड की मूल, रूसा इनका क्काथ एरण्ड के तैल के साथ पिये तो सर्वाङ्गप्रवर्ती वातरक्त निश्चय करके दूर हो अथवा परवल, त्रिफला, कुटकी, गुर्च, शतावरि इनका काढ़ा पिये तो दाहयुक्त वातरक्त आराम हो ॥

अथ श्वेतदाग़ जाने का काढ़ा ॥

आंवला और खैरसार इन दोनों का काढ़ा बकुचीचूर्णयुक्त

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

थोड़े दिनों के भये कुष्ठपर अभ्यास कर पिये और पथ्य यथावत् करे तो श्वेतदाग निस्सन्देह मिट जायँ ॥

अथ वातरक्तकुष्ठ पर लघुमञ्जिष्ठादिक्काथ ॥

मंजीठ, त्रिफला, कुटकी, बच, दारुहल्दी, गुर्च और नींब इनका क्काथ कर पिये तो वातरक्त, कण्डू, गलितकुष्ठ और रक्तमण्डल ये दूर हों ॥

अथ सर्वकुष्ठवृद्धि पर मञ्जिष्ठादिक्काथ ॥

मंजीठ, मोथा, कुरैया, गुर्च इनको कूटकर सोंठि, भारङ्गी, भटकटैया, बच, नींब, दोनों हल्दी, त्रिफला, परवल, कुटकी, मूर्वा, बायबिड़ंग, रासना, चीता, शतावरि, त्रायमाण, पीपल, इन्द्रयव, रूसा, भांगरा, देवदारु, पाढ़, खदिरसार, रक्तचन्दन, निशोथ, वरुणा, चिरायता, बकुची, अमलतास, सहोरा, बकायन, करञ्ज, अतीस, खस, इन्द्रारुण, जवासा, सारिवा और पित्तपापड़ा ये सब द्रव्य समान लेकर काढ़ाकर पीपल और गुग्गुल मिश्रितकर पिये तो अठारहों कोढ़ और वातरक्तपीड़ा, उपदंश, फ़ीलपांव, शून्यवायु, पक्षाघात, मेदादोष और नेत्ररोग इन रोगों को यह मञ्जिष्ठादिक्काथ निस्सन्देह नाश करता है ॥

अथ शिरश्शूल और नेत्र पर हरीतकीक्काथ ॥

हड़, बहेड़ा, आंवला, भूनिम्ब (चिरायता), हल्दी, निम्ब, आंबाहल्दी, गुर्च इनके काढ़े में गुड़ मिश्रितकर पिये तो शिरःशूल, भौंह, कान, आधाशीशी, सूर्यावर्त, लेवाड़ी, दन्तपातरोग, रतौंधी, पटल, फूली, नेत्ररोग और नेत्रपीड़ा ये सब दूर हों ॥

अथ नेत्ररोग पर अरूसादिक्काथ ॥

रूसा, सोंठि, गुर्च, हल्दी, रक्तचन्दन, चीता, चिरायता, नींब, कुटकी, परवल, त्रिफला, नागरमोथा, यव, इन्द्रयव, कुरैया इनके क्काथ से सर्वनेत्ररोग नाश हों तथा स्वरभङ्ग से कण्ठ खुजलाना, पीनस, श्वास, कलेजे का घाव जाता रहे अथवा गुर्च, त्रिफला

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

का काढ़ा शहद और पीपलसंयुक्त ठण्ढा कर पीने से सर्व नेत्र-रोग बिनाश हों ॥

अथ तक्षक पर पिप्पल्यादिक्वाथ ॥

पीपल, गूलर, पकरिया, बेर, वेतस इनका काढ़ाकर घाव धोवे तो उपदंश (गर्मी), घाव और सूजन सब अच्छेहों अथवा औषध पीसकर गोली बनाय अठगुने पानी में डाल काढ़ा करे जब चौथाई पानी रहे तब उतार ले उसे प्रमथ्या कहते हैं। इसके पानी की मात्रा दो पल है ॥

अथ सन्निपात पर अन्य काढ़ा ॥

भारङ्गी, सोंठि, मिरच, अजमोद, अजवाइन, हींग, पीपला-मूल, काकड़ासिंगी, दूब, मूंगा, बायबिड़ंग, दोनों कटेली, चाब, चीते की छाल, पाढ़ा, सरिवन, पिथवन, मदार की जड़ ये सब औषधें बराबर ले तीनभाग कर एकभाग का अष्टावशेष काढ़ा कर दे तो सन्निपात दूर हो ॥

अथ सन्निपात पर चित्रकादिक्वाथ ॥

चित्रक, पीपलामूल, पीपल, बच, चाब, सोंठि, अतीस, ज़ीरा, पाढ़, सरसों, मिरच, कायफल, पुष्करमूल, बायबिड़ंग, दोनों कटेली, जवासा, अजवाइन, अजमोद, गजपीपल, मदार की जड़, बकाइन की जड़, हींग ये सब औषधें ढाई ढाई टंक ले तीन भाग करे एकभाग का अष्टावशेष क्वाथकर दे तो शीत-ज्वर दूर हो और तेरहों प्रकार के सन्निपात जायँ ॥

अथ अतीसार पर काढ़ा ॥

धनियां, सोंठि, नागरमोथा, बेलगिरी, मूंजकी जड़ ये सब औषधें पैसा पैसा भर लेकर तीनभाग करे एकभाग का अष्टा-वशेष क्वाथ दे तो अतीसार दूर हो अथवा सोंठि, अजवाइन, अतीस, हींग, नागरमोथा, बेलगिरी और गिलोय ये सब बराबर ले क्वाथ कर दे तो अतीसार जाय ॥

CC-0. In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ प्रसूति पर काढ़ा ॥

पीपल, देवदारु, मोथा, अगर, पीपलामूल, कलौंजी, बायबिड़ंग ये सब दो दो टंक ले काढ़ा कर दे तो प्रसूतिरोग अच्छा हो अथवा देवदारु, बच, कूट, लवङ्ग, पीपल, सोंठि, कायफल, मोथा, चीते की छाल, मूंज की जड़, कुटकी, धनियां, हड़, गजपीपल, जवासा, अतीस, कलौंजी, गोखुरू ये सब औषधें पैसा पैसा भर ले तीन भाग करे एक भाग को काढ़ा कर २ रत्ती हींग और २ रत्ती सेंधानमक डाल कर दे तो प्रसूति जाय ॥

अथ श्वेतकुष्ठ पर काढ़ा ॥

आंब की जड़ २१ पैसाभर, कोंचकी जड़ २१ पैसाभर, बेर की छाल २१ पैसाभर, मंजीठ २१ पैसाभर ये सब बराबर ले १ पैसाभरका काढ़ा २१ दिन पीवे और देह में वायु न लगने पावे तो श्वेतकुष्ठ दूर हो ॥

अथ ज्वर पर क्वाथ ॥

पहले दिनके ज्वर को सात दिन लंघन कराय देवदारु, धनियां, छोटी बड़ी भटकटैया और सोंठि ये सब दो तोला ले सोलहगुने जल में क्वाथ करे पीछे जब चौथाई रह जाय तब मन्दोष्ण होने पर पान कराय दे तो तीन अथवा पांच दिन में ज्वर नष्ट होजाय ॥

अथ क्रमसे वातपित्तकफज्वरों में क्वाथ ॥

वात के ताप में गिलोय, सोंठि, मोथा और धमासा (जवासा) इन चारों का क्वाथ पीवे और पित्त के तापमें चिरायता, कुटकी, मोथा, पित्तपापड़ा और जवासा इन पांचों का क्वाथ पीवे तथा कफ के ज्वर में सोंठि, अडूसा, नागरमोथा और जवासा इन पांचों का क्वाथ पीवे एवं गिलोय, सोंठि और पीपलामूल इन तीनों का क्वाथ वातज्वर को नष्ट करता है। गिलोय,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पित्तपापड़ा, मोथा और चिरायता इनका काढ़ा पीने से वातपित्त का ज्वर नष्ट होता है॥

अथ अन्य काथ॥

दाख, पित्तपापड़ा, स्योनाक (अमलतास), कुटकी, मोथा, हड़ इन द्रव्यों का काढ़ा मूर्च्छा, राजयक्ष्मा, पसीना, प्यास, घबड़ाना और भ्रान्ति इन संयुक्त पित्तज्वर को नाश करे और जवासा, कंगुनी, चिरायता, कुटकी, अडूसा, पित्तपापड़ा इन छओं का काथ तृष्णा, शरीर में दाह, अश्रु, पित्तरोग और पित्त का ज्वर इनको नष्ट करे अथवा गिलोय, आंवला और पित्तपापड़ा इनका काढ़ा पीने से पित्तज्वर अवश्य नष्ट होता है॥

अथ अन्य काथ॥

रक्तचन्दन, पद्माक की त्वचा, धनियां, गिलोय और नींब इनका काथ पीने से पित्त और कफ से उत्पन्न ज्वर और प्यास, वमन और मन्दाग्नि ये सब नष्ट हों॥

अथ अन्य काथ॥

दाहके साथ ऐसे ज्वर में प्यास हो तो सुगन्धबाला, बीरण-मूल (खस), मोथा, पित्तपापड़ा, सोंठि और रक्त चन्दन इनका काथ करे जब शीतल होजाय तब उसे पिला दे तो ज्वर की तृष्णा नष्ट हो॥

अथ ज्वर में मुख का कड़वापन जाने का काथ॥

जिसको बुखार आता हो उसे कुटकी का काथ करके दे तो पित्तज्वर से हुआ कड़ुवामुख अच्छा हो॥

अथ मुखरोग और खांसी पर काथ॥

कायफल का तृण (रामकपूर), मोथा, धनियां, काकड़ा-सिंगी, बच, हड़ जिसमें पांच रेखा हों, भारङ्गी, पित्तपापड़ा, सोंठि, देवदारु इन औषधों का काथ करके छान ले पीछे उसमें चारमाशे हींग भूनकर उसे पीस ले और दो तोले शहद इन दोनों

In Public Domain, Chanakya Archives, Varanasi

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

को क्वाथ में डालके पीवे तो खांसी, श्वास रोग, मुख के रोग और ज्वर का वेग तथा कफकी वृद्धि और कण्ठ की पीड़ा ये सब नष्ट होजायँ ॥

अथ बुद्धिभ्रंश, पसीना, शीत और अनर्थ बोलने पर क्वाथ ॥

पीपलामूल, इन्द्रयव, सेहुँड़ अथवा देवदारु, गुग्गुल, बायबिड़ंग, भारङ्गी, दालचीनी, सोंठि, मिरच, पीपल, चीता, कायफल, पुष्करमूल, रासना, जैत के बीज, हड़, दोनों कटहरी, अजवाइन, जटामासी, चिरायता, घुड़बच, चाब और पाढ़ा इन ओषधों का काढ़ा पीनेसे सकल सन्निपात, बुद्धिभ्रंश, पसीना, शीतका लगना, अनर्थका बोलना, शूल, अधोवायु रुकने से पीड़ा के साथ पेट फूलना, हृदय का विस्फोटक, कफयुक्त वायु और प्रसूतिवायु के सब रोग नष्ट हों ॥

अथ प्रसूतावातव्याधिहरण क्वाथ ॥

अर्कमूल, जवासा, चिरायता, देवदारु, रासना, जैत के बीज, सँभालू, घुड़बच, अरणी, सहिंजना, पीपलामूल, पीपल, बच, चीता, सोंठि, अतीस, भांगरा इन औषधों का क्वाथ दुःसह सन्निपात के ज्वरों को, धनुर्वायुको, दांतों के बन्ध को, असह्य शीत से शरीर के कांपने को, कास और श्वास को और प्रसूता स्त्री की वातव्याधि को हरण करता है ॥

अथ सकलसन्निपात पर क्वाथ ॥

कुटकी, चिरायता, पित्तपापड़ा, गिलोय, कचूर, रासना, जैतके बीज, पीपल, पुष्करमूल, त्रायन्ती (त्रायमाण), बहुला, भटकटैया, देवदारु, सोंठि, हड़, जवासा और भारङ्गी इन औषधों के क्वाथके पीने से सारे सन्निपात, दिनकी नींद, रात्रि का जागना, प्यास, मुख का सूखना तथा देह का दाह, खांसी और सब प्रकार के श्वास के रोग नष्ट हों ॥

In Public Domain, Chamoli Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ हिचकी, प्यास, वमन और जलन पर क्वाथ ॥

रक्तचन्दन, दोनों खस, कुटज की छाल, पाढ़ा (जिसे पर्वती पयरुड़ कहते हैं), कमल, धनियां, गिलोय, चिरायता, मोथा, सुगन्धबाला, बेलगिरी, अतीस और सोंठि इनका क्वाथ पीने से हुचकी, प्यास, वमन, जलन, अन्त में अरुचि और सब भांति के अतीसार ये रोग जायँ ॥

अथ पंचमूलादि क्वाथ ॥

लघुपञ्चमूली, पाढ़ा, मोथा, बरियारा, इन्द्रयव, कुटज की छाल, खस, कुटकी, गिलोय, सोंठि, बेलगिरी इन औषधों का काढ़ा वमन, खांसी, श्वास और शूल इनके साथ ज्वरातीसार को दूर करता है ॥

अथ शोकातीसार पर क्वाथ ॥

देवदारु, अतीस, पाढ़ा, बिड़ंग, मोथा, मिरच और कुटज की छाल इनका क्वाथ पीनेसे शोक से भया अतीसार चला जाय अथवा सुगन्धबाला, बेलगिरी, मोथा, धनियां और सोंठि इन पांचों का क्वाथ भी अतीसार को दूर करता है अथवा धनियां, सुगन्धबाला, बेलगिरी और मोथा इनका क्वाथ शीतल कर पीवे तो अतीसार रोग नष्ट हो ॥

अथ श्वासहरण क्वाथ ॥

बांसा, हल्दी, पीपल, गिलोय, भारङ्गी, रुद्रजटा, सोंठि, कटहली की जड़ इन आठों का काढ़ा करे उसमें पीसीहुई मिरच डालकर पीवे तो श्वास का रोग शान्त हो अथवा सोंठि का काढ़ा भी पीनेसे श्वासरोग शान्त होता है ॥

अथ कासहरण क्वाथ ॥

पीपलका चूर्ण मिलाकर कटहली की जड़के बक्कल का काढ़ा पीने से कास का रोग शीघ्रही दूर होता है अथवा सोंठि और भारङ्गी का काढ़ा पीवे तो कास और श्वास दोनों रोग दूर हों ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ बालातीसार में क्वाथ ॥

धवई के फूल, लोध, बेलागिरी, मोथा, मंजीठ और सुगन्धबाला इनका क्वाथ वा चटनी पिलाने अथवा चटाने से बालक के अतीसार को दूर करती है ॥

अथ फाण्ट ॥

कुटीहुई द्रव्य पलभर एक कुड़व पानी मिट्टी के पात्र में अच्छी तरह तप्तकर उतार ले फिर उस द्रव्य को उष्णोदक में डाल ढकदे जब ठण्ढा हो तब छान ले उसे फाण्ट कहते हैं। इस फाण्ट की मात्रा आठ रुपयेभर है और मिश्री, शहद और पुराना गुड़ इसमें उसी प्रकार से पड़ता है जिस प्रकार से काढ़े में डालते हैं ॥

अथ पित्तज्वर पर मधूकफाण्ट ॥

महुआ, मुलेठी, फालसा, चन्दन, नीलकमल, लोध, नागकेसर, त्रिफला, सरिवन, दाख, लावा ये सब तप्तजल में डाल मिश्री और शहदसंयुक्त पिलावे। इस फाण्ट वा हेमसे वातपित्तज्वर, दाह, प्यास, मूर्च्छा, मतिभ्रम, रक्तपित्त और मद ये सब दूर हों। इस कार्य में कुछ विचार नहीं ॥

अथ प्यास पर आम्रादिफाण्ट ॥

आम, जामुन की कोंपल, वट, डिंगसा और जटा, खस इनका फाण्टकर पिये तो ज्वर, प्यास, छर्दि, अतीसार और मूर्च्छा ये सब रोग निस्सन्देह दूर हों ॥

अथ पित्ततृषा पर मधूकफाण्ट ॥

महुआ, चन्दन, खंभारी, खस, धनियां, सुगन्धबाला, दाख इनका फाण्ट शक्कर मिलाकर पिये तो तृष्णा, दाह, मूर्च्छा और भ्रम ये सब जायँ ॥

अथ मन्थफाण्टभेद ॥

द्रव्य का चौगुना जल मिट्टी के पात्र में डाल मथे उस पानी को छान दो पल पिये। खजूर, अनार, दाख, तिन्तड़ी,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इमली, आंवला और फालसे इनका मन्थ सकल मदनाशक है॥

अथ उबकाई पर मसूरआदि मन्थ॥

मसूरिका, सतूश, शहद और दाड़िमरस इनका मन्थ पिलावे तो सन्निपातजनित छर्दि जाय॥

अथ तृष्णा पर यवमन्थ॥

यव का सत्तू ठण्ढे पानी में मथकर पिये तो तृष्णा, दाह और रक्तपित्त इन सबको दूर करता है परन्तु बहुत गाढ़ा न हो॥

अथ हेम॥

पलभर कुटीहुई द्रव्य छह पल जलमें सांझको भिगोय राखे फिर प्रातःकाल निचोड़कर छान ले इसको हेम कहते हैं और कोई कोई शीतकषाय भी कहते हैं। इसकी मात्रा भी फाण्टकी तरह दो पल है। यह सर्वत्र निश्चय जानो॥

अथ रक्तपित्त पर आम्रादि हेम॥

आम्र, जम्बू, अर्जुन इनको कूटकर पानी में भिगोवे फिर उसका हेम प्रातःकाल शहद मिलाय पीवे तो रक्तपित्त जाय॥

अथ तृष्णा पर मरीच्यादि हेम॥

मिरच, मुलेठी, कठगूलरकी कोंपल और नीलकमल इनका हेमकर पीने से तृष्णा, छर्दि आदि रोग नाश होते हैं॥

अथ पित्त पर नीलकमलादि हेम॥

नीलकमल, बरियारा, दाख, महुआ, मुलेठी, खस, पद्माक, खंभारीफल, फालसा इनका शीतकषाय पीने से हेमवात, पित्त, ज्वरप्रलाप, भ्रम, छर्दि, मोह और तन्द्रा ये सब रोग दूर हों॥

अथ जीर्णज्वर पर गुडूच्यादि हेम॥

गुर्च का हेम पीने से जीर्णज्वर नाश होता है और वासा के हेमको पान करने से पित्तज्वर दूर होता है तथा कासरक्त नाश होताहै और धनियां का हेम शक्कर डाल पीने से अन्तर्दाह, तृष्णा और मूत्रावरोध ये सब रोग नाश होते हैं॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ रक्तपित्त पर धनियां हेम ॥

धनियां, आंवला, रूसा, दाख, पित्तपापड़ा इनके हेमसे रक्तपित्तज्वर, दाह, तृषा, कण्ठशोष ये सब रोग नाश हों ॥

अथ कल्क ॥

सूखी द्रव्य को जल में पीसे ओदी व निर्जल रहे उसको कल्क और प्रक्षेप कहते हैं। इसकी मात्रा दश माशे है। कल्क में मधु, घृत और तैल मात्रा से दूना देना। मिश्री और गुड़ मात्रा के समान और ओदी पतली चौगुनी देना ॥

अथ पाण्डु पर वर्धमानपीपल ॥

पीपल तीन अथवा पांच या सात बढ़ावे और जै पीपल से आरम्भ करे तै प्रतिदिन दश दिन तक बढ़ावे फिर उतनीही प्रतिदिन घटावे इस प्रकार से बीसवें दिन प्रथम दिन की मात्रा पूरी करे। इस वर्धमानपीपल के सेवन से पाण्डु, कास, श्वास, अरुचि, उदरविकार, क्षयी, कफ, वात और छाती जकड़ना ये सब दूर हों और जो पानी या दूधके साथ पिया चाहे तो तीन दिन तक दो अथवा तीन तोले दूध लेना फिर कल्क से चौगुना लेना ॥

अथ घाव पर निम्बकल्क ॥

नींबपत्र की लुगदी घावपर लगावे उससे घाव साफ़ हो पूरता है। जहां लुगदी न लगसके उसको घाव नहीं कहते वह नासूर है उसकी विधि दूसरी है। और खाने से छर्दि, सर्व कुष्ठ, पित्त ये क्रम क्रम से अच्छे हों ॥

अथ गृध्रसी पर बकायनकल्क ॥

बकायन की जड़की छाल का कल्क गृध्रसी वायुको दूर करता है और एक लहसुन की पिट्ठी कर उसमें तिलका तैल मिश्रित कर खाय तो तीव्रवात और विषमज्वर नाश हो ॥

अथ वातरोग पर दूसरा कल्क ॥

पक्के लहसुन के जवा छील भीतर के अंकुर निकालकर तक

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri Funding by MoE

में डाल रात्रिभर राखे तो उसकी दुर्गन्ध जाय फिर तक्र से निकाल पीसकर इस चूर्णका पञ्चमांश जो आगे कहते हैं वह डाले। काला नमक, अजवाइन, भूनी हींग, सैन्धव, त्रिकुटा और जीरा इन सबको बराबर कूट ले यह चूर्ण और लहसुन की लुगदी मिलाकर दूश माशे खाय तो अग्नि प्रबल हो। रोगी की शक्ति विचार ऋतु के अनुसार मात्रा दे। अनोपान एरण्ड की जड़की छालका काढ़ा देना। सर्वाङ्ग और एकान्तवात, मृगी, उन्माद, गठिया, गृध्रसी, छाती, पीठ, करिहांव, पसुली, कोख-पीड़ा और कृमिदोष नाश हों और रोगी को उचित है कि लघु-भोजन, घामत्याग, अक्रोध और जल थोड़ा पिये। दूध और गुड़ का त्याग करे और इस औषध का भोगी पथ्य शराब, मांस और खटाई खाय॥

अथ ऊरुस्तम्भ पर पिप्पल्यादिकल्क॥

पीपल, पीपलामूल और भिलावें की लुगदी शहद से युक्त कर दे तो गठिया निस्सन्देह दूर हो॥

अथ परिणामशूल पर विष्णुक्रान्ताकल्क॥

विष्णुक्रान्ता की जड़ का कल्क, मिश्री, शहद और घीयुक्त सात दिन पिये तो परिणामशूल जाय। अथवा सोंठि, गुड़, तिल दूधमें पीस सेवन करे तो इस कल्क से परिणामशूल मिटे और आमवात जाय॥

अथ रक्तार्श पर चिर्चिरादिकल्क॥

चिर्चिरा का चावल चावल के धोवन में पीसकर पीने से रक्तार्श दूर हो॥

अथ रक्तातीसार पर बेरकल्क॥

बेर, मूल की छाल और तिलका कल्क शहद तथा दूध में पीने से रक्तातीसार निश्चय नाश हो॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ रक्तक्षयी पर लाहीकल्क ॥

एक कर्ष लाही पेठा के रस में पीसकर पीने से रक्तक्षयी, क्षतीक्षत और क्षय निस्सन्देह जाय ॥

अथ रक्तप्रदर पर चौराईकल्क ॥

चौराई की जड़ चावल के धोवन में पीस कर शहद और रसौंतके साथ पीवे तो रक्तप्रदर दूर हो ॥

अथ अतीसार पर अङ्कोलकल्क ॥

अङ्कोल की मूल की छाल को चावल के धोवन में पीसकर शहद डालकर पीवे तो अतीसार और विष दूर हो ॥

अथ विष पर खिखसाकल्क ॥

खिखसा अथवा सिरसमूल या बेरमूल का कल्क घी के साथ खाने से विष नाश हो ॥

अथ दीपन पाचन पर हरीतकीकल्क ॥

हड़, सोंठि, सैन्धव और पीपल का कल्क तीनों दोषों को निस्सन्देह हरता है अथवा हड़, सोंठि और सैन्धव का कल्क दीपन और पाचन है ॥

अथ कृमि पर निशोतकल्क ॥

निशोत, पलाश, बांदा, खुरासानी अजवाइन, कबीला, बायबिड़ङ्ग इन सबको समान ले मट्ठे के साथ खानेसे कृमिरोग बहुत शीघ्र दूर होता है और नैनू, मिश्री, नागकेसर के कल्क से रक्तार्श नाश होता है तथा मसूर का काढ़ाहुआ यूष चेलफल इनका कल्क उस यूषके साथ पीनेसे संग्रहणी नाश हो एवं भट-कटैयाफलका कल्क मट्ठे के साथ पीनेसे संग्रहणी नाश होती है ॥

इति सप्तविंशतितरङ्गः ॥ २७ ॥

अथ नवदुर्गाचूर्ण ॥

अनारदाना ½ जीरा स्याह १५ माशे, जीरा सफ़ेद

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

३० माशे, सोंठि १५ माशे, तन्तरीक १५ माशे, हड़ का बकला १५ माशे, छोटी हड़ १५ माशे, निशोत १५ माशे, लाहौरी नोन ३ माशे इन सब औषधों को कूट पीस और कपड़छान कर चूर्ण बनावे फिर नित्य भोजन के पश्चात् तीन माशे खाय तो मन्दाग्नि जाय और भूख बढ़े ॥

अथ दूसरा चूर्ण ॥

पोस्त, हड़, सौंफ़, सोंठि इन सबोंको बराबर ले फिर सौंफ़ और हड़ को घृत में भून ले और फिर उन दोनों को भी मिलाय दो पैसाभर मिश्री मिलावे तदनन्तर दो पैसाभर नित्य पांच दिन तक ठण्ढे पानीसे खावे तो आंव, लोहू और मरोड़ा सब दूरहों ॥

अथ तीसरा चूर्ण ॥

हड़, आंवला, चीता, पीपल, सेंधानोन इन पांचों औषधों को बराबर ले कूट पीसकर चूर्ण बनावे। फंकी गर्म पानी से ले तो सब उदरविकारों को दूर करे और पाचन होकर भूंखबढ़ावे ॥

अथ बाई का चूर्ण ॥

सोंठि, पीपल, सनाह, हड़, बहेड़ा, आंवला, चीता, सेंधा नमक, सांभर नमक, खारी नमक, काली मिरच, निशोत, पोदीना, सौंफ़, अनारदाना, अजवाइन, अजमोद, मेथी, तेलिया सुहागा ये सब दवाइयां छह माशे और हींग १ माशा ले फिर सब को कूट पीस नींबू और अदरक के रस में गोली बनावे। एक तथा दो नित्य खाय तो वायु के सब विकारों को दूर करे ॥

अथ दूसरा चूर्ण ॥

सोंठि २ माशे, सुहागा तेलिया २ माशे, पीपल २ माशे, कालीमिरच २ माशे, हड़ ६ माशे, पांचोंनोन ५ तोला, अजवाइन ६ माशे इन सब औषधों को ले कूट पीस सहँजने के रस में गोली बांधे। एक तथा दो नित्य खाय तो चौंसठवायु दूर हों ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ अग्निदीपक चूर्ण ॥

पारा १ टंक, सुहागा २ टंक, गन्धक १ टंक, मीठातेलिया ३ टंक, शंख ४ टंक, कौड़ी ज़र्द जली हुई ४ टंक, सोंठि १ टंक, कालीमिरच १ टंक इन सबकी नींबू के रसमें सात पुट देकर मूंग बराबर गोली बांधे। फिर नित्य खावे तो अजीर्ण और मन्दाग्नि को दूर कर क्षुधाको बढ़ावे तथा अर्धाङ्गशूल और विसूचिका को दूर करे ॥

अथ नागरादि चूर्ण ॥

सोंठि, मोथा, अजवाइन, जावित्री, तज, पत्रज, श्वेतज़ीरा, कालाज़ीरा, पीपल, कालीमिरच, जायफल, आंवला, चीता, लवङ्ग इन सब औषधों को बराबर ले कूट, पीस, छान कर चूर्ण बनावे। नित्य खाय तो अनेक गुण करे ॥

अथ अमृत चूर्ण ॥

हड़, बहेड़ा, आंवला, सोंठि, कालीमिरच, पीपल, लवङ्ग, जावित्री, बायबिड़ंग, जायफल, सफ़ेदज़ीरा, धनियां, अजवाइन, अनारदाना, पांचों नोन इन सब औषधों को बराबर ले कूट, पीस, छान चूर्ण बनावे। नित्य खाय तो बहुत गुण करे ॥

अथ ज्वर का चूर्ण ॥

आंवला, चीता, हड़, पीपल और सेंधानमक इन सबको बराबर ले कूट, पीस, छान चूर्ण बनावे। गर्म पानी से फंकी करे तो सब ज्वरों को दूर करे ॥

अथ आमवात और शूल का चूर्ण ॥

सोंठि, हड़, बायबिड़ङ्ग, सेंधानमक, पीपल इन सबको कूट, पीस, छानकर चूर्ण बनावे फिर टंक प्रमाण खाय तो तीन दिन में आमवात जाय ॥

अथ हिंग्वष्टक चूर्ण ॥

हींग १ तोला, अजमोद ३ तोले, ज़ीरा ३ तोले, सोंठि ३ तोले,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कालीमिरच ३ तोले, पीपल ३ तोले, सेंधानोन १ तोला, सांभर नोन १ तोला इन सब औषधों को कूट, पीस, छान चूर्ण बनावे फिर भोजन के ग्रास में घृत और चावल के साथ खाय तो शूल, अर्धाङ्ग और अजीर्ण इन रोगों को दूर कर भूंखको बढ़ावे ॥

अथ वायु का चूर्ण ॥

सोंठि, मिरच, पीपल, हड़, सहँजनेके बीज, लवङ्ग इन सब औषधों को एकत्र कर सहँजने के रसमें बेरप्रमाण गोली बांधे। नित्य खाय तो चौंसठ वायु और बहत्तर शूलोंको दूर करे॥

अथ वायु का दूसरा चूर्ण ॥

पीपल, सौंफ़, लवङ्ग, लोटकसज्जी, सोंठि, सेंधानोन इन सब औषधों को तोले तोले भर लेकर कूट, पीस, छान चूर्ण बनावे फिर नित्य खाय तो वायु को दूर करे॥

अथ वायु का तीसरा चूर्ण ॥

लवङ्ग, इलायची, तज, पत्रज, तगर, कङ्कोल, कालाअगर, नागकेसर, जायफल, सोंठि, जावित्री, सफ़ेदज़ीरा, स्याहज़ीरा, सौंफ़, पीपल, मिरच, पुष्करमूल, नरकचूर, हड़, बहेड़ा, आंवला, चीता, तालीस, देवदारु, धनियां, अजवाइन, मुलहठी, वंशलोचन, अजमोद, काकड़ासिङ्गी, पीपलामूल, भूनी हींग, मोथा, अतीस, शतावरि इन सब औषधोंको तोल तोलेभर ले पीस, छान कर चूर्ण बनावे उसमें बराबरकी मिश्री मिलाय प्रातःकाल नित्य खाय तो वायुको दूर करे तथा और भी अनेक गुण करे ॥

अथ सुदर्शन चूर्ण ॥

हड़, बहेड़ा, आंवला, सोंठि, कालीमिरच, पीपल, हल्दी, दारुहल्दी, गिलोय, कूट, मोथा, जवासा, काकड़ासिङ्गी, कटहरी की जड़, पीपलामूल, कचूर, बच, पुष्करमूल, मुलहठी, कुड़ा की छाल, सौंफ़, कमलगट्टा, इन्द्रयव देवदारु, मंजीठ, पद्माक,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

खस, तज, गोखरू, सालबमिश्री, अजवाइन, अतीस, बेलगिरी, पत्रज, चीता इन सब औषधों को तोले तोले भर ले पीस, छान कर चूर्ण बनावे फिर गर्म जलसे फंकी करे तो सर्व ज्वरोंको दूर करे और सन्निपात, अजीर्ण और शूलविरेचिका भी जाय॥

अथ लवङ्गादि चूर्ण॥

लवङ्ग, अगर, कपूर, कमलगट्टा, सफ़ेदचन्दन, स्याहज़ीरा, सफ़ेदज़ीरा, खस, इलायची, मोथा, जटामासी, तगर, वंशलोचन, पीपल, कङ्कोल, कालीमिरच, जायफल, तज, नागकेसर इन सब औषधों को तोले तोले भर ले कूट, पीस, छान चूर्ण बनावे और आधी मिश्री मिलावे फिर ३ माशे नित्य फंकी करे तो मन्दाग्नि १ त्रयोदशवायु २ पित्तकफ ३ कण्ठरोग ४ कास ५ श्वास ६ अतीसार ७ गुल्म ८ प्रमेह ९ संग्रहणी १० इतने रोगों को दूर करे॥

अथ भास्कर चूर्ण॥

पीपल, पीपलामूल, सांभरनोन, सेंधानोन, कालानोन, कचनोन, मनियारीनोन, सफ़ेदज़ीरा, स्याहज़ीरा, बायबिड़ङ्ग, पत्रज, तालीस, चव्य, कालीमिरच, सौंफ़, तज, इलायची, अनारदाना इन सब औषधों को ले कूट, पीस, छान चूर्ण बनावे फिर नित्य खाय तो उदर के सब विकारों को दूर करे और गर्म जलसे फांके तो अजीर्ण और सन्निपात जाय॥

अथ चन्दनादि चूर्ण॥

चन्दन, लवङ्ग, कपूर, अगर, कमलगट्टा, सफ़ेदज़ीरा, स्याहज़ीरा, अनारदाना, कालानमक, इन सब औषधों को तोले तोले भर ले कूट, पीस, छान चूर्ण बनावे फिर नित्य खाय तो उदर के सर्व विकारों को दूर करे॥

अथ गंगाधर चूर्ण॥

मोथा, सोंठि, इन्द्रयव, धवई के फूल, लोध, मोचरस, पेठे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

के बीज, राल, लजालू की जड़, अतीस, पोस्त इन सब औषधों को तोले तोले भर ले कूट, पीस, छान चूर्ण बनावे फिर चावल के धोवन के साथ फंकी करे तो पेट के रोग, अतीसार और संग्रहणी दूर हों ॥

अथ नागकेसरादि चूर्ण ॥

नागकेसर, चन्दन, लोध, खस, बेलगिरी, मोथा, इन्द्रयव, सोंठि, अतीस, धाय के फूल, सौंफ़, तीनवर्ष की आमकी पुरानी गुठली, जामुनकी गुठली, सोंचरनोन, कमलगट्टा, मञ्जीठ, छोटी इलायची, अनारदाना, तज इन सब औषधों को तोले तोले भर ले कूट, पीस, छान चूर्ण करके मिश्री मिलावे फिर चावल के धोवन से फांके तो संग्रहणी, अर्श, बवासीर और अतीसार ये सब रोग नाश हों ॥

अथ दूसरा चूर्ण ॥

चीता, हड़, बहेड़ा, आंवला, बायबिड़ङ्ग, पोलादसार इन सब औषधों को तोले तोले भर ले कूट, पीस, छान चूर्ण करे फिर ३ माशे शहद में ३ माशे चूर्ण मिलाय खावे तो भगन्दर, बवासीर, मन्दाग्नि, अरुचि और अनेक रोगों को दूर करे ॥

अथ पुरुष चूर्ण ॥

अकरकरा, सोंठि, कङ्कोल, केसर, पीपल, जायफल, लवङ्ग, चन्दन इन सब औषधों को तोले तोले और अफ़ीम माशे भर या ६ रत्ती ले चूर्ण कर शहद से सन्ध्यासमय खाय और रात्रि को स्त्रीसेवन करे तो अतिपुष्ट बंधेज होवे ॥

अथ कर्पूरादि चूर्ण ॥

कपूर, तज, कङ्कोल, जावित्री, लवङ्ग, नागकेसर, सोंठि, कालीमिरच, पीपल इन सब औषधों को तोले तोले भर ले पीस, कूट, छान चूर्ण बनावे और मिश्री बराबर की मिलावे फिर तोला

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

भर नित्य खाय तो श्वास, कास, गुल्म और छर्दि इन सब रोगों को नाश करे ॥

अथ तालीसादि चूर्ण ॥

तालीस, सोंठि, पीपल, कालीमिरच, वंशलोचन, छोटी इलायची, तज, खस इन सब औषधों को तोले तोले भर ले कूट, पीस, छान चूर्ण बनावे और बराबर की मिश्री मिलावे फिर जलसे फांके तो कास, श्वास, तप, संग्रहणी और अतीसार इतने रोगों को नाश करे ॥

अथ अजवायनादि चूर्ण ॥

अजवायन, तन्तरीक, सोंठि, कालीमिरच, पीपल, अमलबेत, अनारदाना, सोंचरनोन, ज़ीरा, बायबिड़ङ्ग इन सब औषधों को तोले तोले भर ले कूट, पीस, छान चूर्ण बनावे फिर ३ माशे नित्य खाय तो जिह्वारोग, हृदय का रोग, पार्श्वरोग, पसुली का शूल, कुष्ठ, कास, श्वास, संग्रहणी और रक्तविकार इतने रोग जायँ ॥

अथ वायखाण्डव चूर्ण ॥

धमासा, जवाखार, सोंठि, कालीमिरच, पीपल, पेठेके बीज, हड़, बहेड़ा, आंवला, लोध इन सब औषधों को तोले तोले भर ले कूट, पीस, छान चूर्ण बनावे और शहद से खाय तो कण्ठ के सब रोग जायँ ॥

अथ एलादि चूर्ण ॥

इलायची, लवङ्ग, नागकेसर, झड़बेरी की मींगी, धान की खील, तज, नागरमोथा, चन्दन, पीपल, भूनी हींग, गेरू, हड़, नारियल के जटाओं की राख, तुलसीपत्र इन सब औषधों को एक एक तोला कूट, पीस, छान चूर्ण बनावे और शहद से चाटे तो त्रिदोष की छर्दि नाश करे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ सरस्वती चूर्ण ॥

कूट, अजमोद, असगन्ध, सफ़ेदज़ीरा, स्याहज़ीरा, सोंठि, पीपल, कालीमिरच, हल्दी इन सबको एक एक तोला ले कूट, पीस, छान चूर्ण बनावे। शहद से चटावे तो बुद्धि निर्मल हो और विद्या आवे ॥

अथ सिद्धार्थ चूर्ण ॥

सफ़ेदसरसों, बच, भूनी हींग, करञ्ज के बीज, देवदारु, मंजीठ, हड़, बहेड़ा, आंवला, सफ़ेदचमेली की छाल, मालकांगनी, तज, सोंठि, कालीमिरच, पीपल, सिरस की छाल, हल्दी, दारुहल्दी इन सब औषधों को एक एक तोला ले कूट, पीस, छान चूर्ण बनाय गोमूत्र से खाय तो सन्निपात और आठों ज्वर दूर हों ॥

अथ पेट के दुःख का चूर्ण ॥

पटोल, हल्दी, बायबिड़ङ्ग, हड़, बहेड़ा, आंवला, कमलगट्टा, नीलकी जड़, निशोत इनको एक एक तोला ले कूट, पीस, छान चूर्ण बनावे। दूध से फांके तो पेट का दुःख दूर हो ॥

अथ निम्बादिक चूर्ण ॥

नींब की कोंपल, नींब की छाल, नींब के फूल, नींब की जड़, नींबकाठा, हड़, बहेड़ा, आंवला, सोंठि, कालीमिरच, पीपल, भारङ्गी, गोखुरू, पुष्करमूल, चीता, बिड़ङ्ग, ब्रिदारीकन्द, सारकुश्ता, गिलोय का सत, हल्दी, दारुहल्दी, बावची, कूट, इन्द्रयव इन सबको तोले तोले भर ले एकत्र कर विजयसार की ७ पुट दे फिर भांगरा के रस की ७ पुट दे फिर खाय तो रक्तपित्त, रक्तवायु, भगन्दर, नाड़ीव्रण, मुख का रोग और दुःख इन अनेक रोगों को दूर करे ॥

अथ शृङ्गादिक चूर्ण ॥

काकड़ासिंगी १ तोला, निगन्ध १ तोला, त्रिफ़ला ३ तोले, खरेटी की जड़ १ तोला, भारङ्गी १ तोला, पुष्करमूल १ तोला,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

नोन ५ तोले इन सबको एकत्र कर कूट, पीस, छान चूर्ण बनाय गर्म जल से फंकी करे तो हड़फूटन, पीनस, नजला, वायु और शरीर के दुःखों को दूर करे॥

अथ पथरीमूत्रकृच्छ्र का चूर्ण॥

बड़ की जटा, पीपल की जटा, खस, चीता, पुरानी आम की गुठली, जामुन की गुठली, चिरौंजी, आलूबुखारा, धव का गोंद, महुआ, मुलहठी, लोध, बरने की छाल, नींब की कोंपल, पँवाड़ की जड़, हड़, इन्द्रयव, भिलावां इन सबको एकत्र कर पीस, छान चूर्ण बनाय शहद के साथ खाय तो मूत्रकृच्छ्र और पथरी जाय॥

अथ अग्निमुख चूर्ण॥

चीता, पाढ़ा, लोटकसज्जी, जवाखार, करञ्ज के बीज, समुद्रफेन, इलायची, पद्माक, भारङ्गी, बिड़ङ्ग, पुष्करमूल, नरकचूर, दारुहल्दी, निशोत, मोथा, बच, इन्द्रयव, हाऊबेर, अनारदाना, त्रिकुटा, भिलावां, अजमोद, अजवाइन, देवदारु, अतीस, हड़, तिलका खार, सहँजने का खार, बावची का खार, ढाक का खार, कीटीकुश्ता इन सब औषधों को तोले तोले भर लें एकत्र कर अदरक के रस में १२ पहर खरल करे फिर दूध के साथ फांके तो गुदा के सब रोग जायँ। भोजन दूध भात करे॥

अथ भगन्दरविजय चूर्ण॥

त्रिकुटा, बच, हींग, पाढ़ा, जवाखार, सज्जी, हल्दी, हड़, चिरायता, इन्द्रयव, चीता, गजपीपल, नमक, पीपलामूल, बिड़ङ्ग, अजमोद, त्रिफला, सफ़ेदज़ीरा, स्याहज़ीरा इन सब औषधों को एक एक तोला ले एकत्र कर कूट, पीस, छान चूर्ण करे फिर गर्म पानी के साथ खाय तो वायु, शोथ, अर्श, भगन्दर, हृदयशूल, पार्श्वशूल, अरुचि, प्लीह, प्रमेह, कमलवायु, पाण्डुरोग, आमवात, संग्रहणी और प्रसूति के रोग इन सबको दूर करे॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS

अथ अतीसार का चूर्ण ॥

समुद्रशोष, मायी, राल, माजू, पत्रज, जायफल, छोटी इलायची, सेलखड़ी, बेलगिरी इन सब औषधों को तोले तोले भर ले एकत्र कर कूट, पीस, छान चूर्ण बनावे फिर पानी से फंकी करे तो अतीसार जाय ॥

अथ संग्रहणी और अतीसार का चूर्ण ॥

कालीमिरच, पीपल, तमालपत्र, पीपलामूल, इलायची, दालचीनी, जायफल, नेत्रबाला, वंशलोचन, चन्दन इन सबको एकत्रकर तोले तोले भरले कूट, पीस, छान चूर्ण बनावे फिर २माशे नित्य की फंकी करे तो संग्रहणी, पुरानाज्वर और अतीसार दूर हो॥

अथ वायुशूल का चूर्ण ॥

बड़ी हड़का बक्कल, सोंठि, सनाय, गुजराती इलायची, निशोत, पुरानी सौंफ़, स्याह नमक इन सब औषधों को पैसे पैसे भर ले एकत्र कर कूट, पीस, छान चूर्ण कर गर्म पानीसे फंकी करे तो तत्काल वायुगोला जाय। पथ्य मूंग की दाल भात या रोटी अथवा खिचड़ी खाय और चीज़ों से परहेज़ करे ॥

अथ कालचूर्ण की विधि ॥

सोंठि १। पीपल १। कालीमिरच १। सफ़ेदज़ीरा १। स्याहज़ीरा १। हींग १। सेंधा नमक १। सांभरनमक १। कचनमक १। अमचूर सेरभर, चूक ½ भर सबको एकत्र कर चूर्ण बनावे। इसके खाने से पाचनशक्ति बढ़ती है ॥

अथ शीतज्वर का चूर्ण ॥

पीपल, सोंठि, गिलोय, पीपलामूल इनका चूर्ण कर जल से फंकी करे तो शीतज्वर दूर हो ॥

अथ तालीसादि चूर्ण ॥

तालीस, तज, पत्रज, इलायची, नागकेसर, सोंठि, मिरच, पीपल, पीपलामूल, सारिवा के बीज, त्रिफला, जायफल, जावित्री,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पुष्करमूल, चीतेकी छाल, दोनों अजवाइन, असगन्ध नागौरी, नागरमोथा, बंशलोचन, दोनों ज़ीरे, कलौंजी, धनियां, काकड़ासिङ्गी, सार, बङ्ग ये सब औषधें दो दो टंक ले एकत्र कर कूट पीस छान ३॥ कच्ची खांड़ मिलाय बासन में धर रक्खे फिर टंकाभर मात्रा खाय तो ज्वर जाय, पित्त पचिजाय, भूख लगे, खांसी जाय, बल बढ़े और पुष्टता हो॥

अथ तुम्बुरुआदि चूर्ण॥

तुम्बुरु, सोंचरनमक, सारिवा, अजमोद, जवाखार, पीपल, मिरच, बच इन सब औषधों को तीन तीन टंक ले एकत्र कर पीस कूट कपरछान कर चूर्ण बनावे फिर अधेलाभर गर्म पानी के साथ खाय तो सातप्रकार के ज्वर दूर हों॥

अथ गुडूच्यादि चूर्ण॥

गिलोय, तेजबल, अतीस, मोथा, पीपल, काकड़ासिङ्गी इनको बराबर ले चूर्णकर मट्ठाके साथ दे तो ज्वर, खांसी और अतीसार ये सब रोग जायँ॥

अथ तालीसादि चूर्ण॥

तालीस, ब्रह्मदण्डी, मोचरस, सोंठि, वंशलोचन, गजपीपल, इलायची, तज ये सब औषधें टंके टंके भर ले चूर्ण कर ३२ टंके भर खांड़ मिलाय अधेलाभर खाय तो ज्वर, खांसी, मस्तकशूल और अजीर्ण ये सब रोग जायँ॥

अथ अतीसार पर चूर्ण॥

अतीस, गजपीपल, कुड़ा की छाल, जायफल, इलायची, मोचरस, बेलगिरी, धाय के फूल, नागरमोथा, काकड़ासिंगी, सुगन्धबाला ये सब औषधें दो दो टंक ले कपरछान कर पैसे भर शहद के साथ खाय तो अतीसार और शूल जाय। रक्त बन्द हो॥

अथ तेरहों सन्निपात पर सिद्धार्थ चूर्ण॥

सरसों, बच, कूट, पीपल, मिरच, सोंठि, कुटकी, कायफल,

In Public Domain, Chamba Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

चीते की छाल, बायबिड़ंग, मंजीठ, ज़ीरा, कलौंजी, अजवाइन, अजमोद, भारङ्गी, पाढ़ा, हींग, जायफल, पीपलामूल ये सब औषधें पांच पांच टंक ले कूट छानकर गोमूत्र से मर्दन करे तो १३ सन्निपात, शीत, उच्चाट, वायु, सर्दी और पसेव ये सब रोग दूर हों॥

अथ आमातीसार पर चूर्ण॥

सेंधानोन, कालानोन, हींग, बच, हड़, अतीस इनको बराबर ले अधेला भर गर्म पानीके साथ खाय तो अतीसार जाय॥

अथ द्वितीय चूर्ण॥

नागकेसर, तवाखीर, रक्तचन्दन ये सब बराबर ले चूर्ण कर शीतल जल के साथ खाय तो अतीसार जाय॥

अथ हिंग्वष्टकचूर्ण सर्वरोग पर॥

हींग, दोनों ज़ीरा, कालीमिरच, सोंठि, पीपल, सेंधानमक, गजपीपल, अजमोद ये सब बराबर ले अदरक के रस में गोली बांधे या अदरक के रससे चूर्ण खाय तो सर्वरोग जायँ॥

अथ दूसरा हिंग्वष्टक चूर्ण॥

हींग, सोंठि, मिरच, पीपल, पीपलामूल, त्रिफला, अजवाइन, अजमोद, खुरासानी अजवाइन, कायफल, बच, चीते की छाल, बायबिड़ंग, रेंडुका, पत्रज, पुष्करमूल, गजपीपल, सेंधानोन, कालानोन, सांभरनोन, सज्जी, जवाखार, अकरकरा, सुहागा भूना ये सब बराबर पैसे पैसे भर ले कपरछान कर चकची ३ पुट दे मिट्टी के कोरे पात्र में धरे फिर ३ टंक खाय तो ७ प्रकार के शूल जायँ और वायुगोला, हिचकी, पेट का भारीपन, खांसी तथा कफ ये सब रोग जायँ॥

अथ द्वितीय तालीसादि चूर्ण सर्वरोग पर॥

तालीस, लवङ्ग, पत्रज, पीपल, पुष्करमूल, बायबिड़ंग, जायफल, जावित्री, खैरसार, भारङ्गी, बच, दोनों ज़ीरे, काय-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

फल, कुचिला, गजपीपल, कलौंजी, असगन्ध, मिरच, अकरकरा, अजवाइन, अजमोद, खुरासानी अजवाइन, भूनी फिटकरी, सोंठि, चिरायता, हींग, कूट, त्रिफला, कुटकी, काकड़ासिंगी, हड़ छोटी बड़ी, बंग, अभ्रक, सार, सेंधानोन ये सब औषधें पैसे पैसे भर ले कपरछान करे फिर चार सेर दूध औटावे जब दूध ⅄१ सेर शेष रहे तब दूध में सब औषधें मिलाय दो दो पैसे भर की गोलियां बांधे। १ गोली प्रातःकाल खाय तो बल बढ़े, पुष्टता हो, पुरुषशक्ति अधिक होवे। खटाई का परहेज़ करे॥

अथ मिरचादिचूर्ण सब प्रमेहों पर॥

मिरच, कङ्कोल, लवङ्ग, खस, रक्तचन्दन, कमलगट्टा, कलौंजी, अगर, नागकेसर, पीपल, सोंठि, सोंचर, सुगन्धबाला, चीनियांकपूर, जायफल, वंशलोचन, छिकुरा की छाल, तज़, पत्रज, केला की जड़, कोंच के बीज, असगन्ध, मोचरस, नागरमोथा, सिंघाड़ा, उड़द की धुली दाल, गंगेरन, अञ्जीर, दोनों सेमरका मूसरा, शतावरि, दोनोंमूसली, निर्गुण्डी, मुण्डी, भांगरा ये सब औषधें दो दो टंक ले अभ्रक १० टंक, सार १० टंक, बंग १० टंक इन सबको कपरछान कर कच्ची खांड ⅄१ सेर मिलाय के धर रक्खे फिर पांच टंक प्रातःकाल और संध्यासमय खाय तो सकल प्रमेह दूर हों, मूत्रका प्रवाह थँभे, दाह जाय, पुष्टता हो तथा खांसी, शूल और वात जाय। स्त्री खाय तो पीड़ा दूर हो। यह चूर्ण राजाओं के योग्य है॥

अथ पुष्टिकरण चूर्ण॥

मुलहठी, बिदारीकन्द, तज, लवङ्ग, गोखरू, गिलोय, सफ़ेद मूसली इन सब औषधों को बराबर ले कूट पीस छानकर चूर्ण बनावे फिर धेला भर नित्य ⅄॥ सेर दूध के साथ खाय तो पुरुष के सदा बल रहे॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS

अथ मधुयष्टीचूर्णविधि ॥

मुलहठी, गिलोय, त्रिफला, बिदारीकन्द, दोनों मूसली, नागकेसर, शतावरि ये सब औषधें बराबर ले कपरछान कर चूर्ण बनावे फिर घृत और शहद मिलाय ४ माशे भर २५ दिन तक नित्य खाय तो वृद्धपुरुष भी ७ स्त्री भोग करे ॥

अथ प्रमेहनाशक चूर्ण ॥

शंखाहूली, इलायची, शिलाजीत ये तीनों बराबर ले तथा तवाखीर और कच्ची खांड़ ये दोनों दूनी ले फिर सबको एकत्र कर कूट पीस छान चूर्णकर धेलाभर नित्य शीतल जलके साथ ले तो प्रमेह दूर हो ॥

अथ खण्डादिचूर्ण ॥

खांड़ ऽ॥ मिरच, लवङ्ग, दाख, बादाम, चिरौंजी, तज, पत्रज, इलायची, रक्तचन्दन, पीपल, दोनों ज़ीरे, सोंठि, धनियां, पीपलामूल, कोंच के बीज, मोथा, वंशलोचन, कमलगट्टा, तवाखीर, दोनों मूसली, शतावरि ये सब औषधें पैसे पैसे भरले फिर कूट पीस कपड़छान कर २५ दिनतक नित्य खाय तो सकल प्रमेह दूर हों और धातु बढ़े तथा पुष्टता हो ॥

अथ असगन्धादि चूर्ण ॥

असगन्ध, बिधारा, स्याहमूसली, सफ़ेदमूसली, तालमखाना, बिदारीकन्द, बीजबन्द, सेमर का मूसला, बड़ा गोखरू ये सब औषधें टके टके भर ले कूट पीस कपड़ छान कर चूर्ण बनावे फिर उसमें बंग १० टंक, अभ्रक १० टंक, सार १० टंक, खांड़ ऽ३, शहद ऽ१, गौका घी ऽ१, गौका दूध ऽ५ ये सब औषधें कपड़छान कर दूध में खोआ करे जब दो सेर रहे तब उतार सब औषधें मिलाय २ पैसा भरकी गोली बांधे। एक गोली प्रभात समय खाय तो धातु की पुष्टता हो, देह में बल बढ़े और वातरोग दूर हो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ प्रसूतिका चूर्ण ॥

देवदारु, अजमोद, बायबिड़ंग, सोंठि, चित्रक, मिरच, सेंधानोन, कालानोन, सौंफ़, हल्दी ये सब औषधें पैसे पैसे भर ले ६ पैसा भर पुराने गुड़ में अधेला भर की गोली बांधे। एक गोली दोनों समय खाय तो प्रसूतिका रोग जाय ॥

अथ श्वेतकुष्ठ का चूर्ण ॥

कठूमर और कठि अञ्जीरका बकला ५। भर, बकुची ५। भर इन तीनों औषधों को एकत्र कर चूर्ण करे फिर पैसे पैसे भर नित्य दोनों समय पानी के साथ खाय तो श्वेतकुष्ठ जाय ॥

अथ लाहीचूर्ण ॥

त्रिजातकव्योषवरारसेन्द्रगन्धाजमोदामिसिवेल्लरात्रयः। बिल्वानलाजाजिलवङ्गधान्यगजोपकुल्यामधुकं वदन्ति ॥ १ ॥ कुबेरहिंग्वाह्वयमोचसाराः क्षारौजयासर्वचतुर्थभागाः। इदं हि चूर्णं विनिहन्ति तूर्णं प्रसूतिकासंग्रहणीविकारम् ॥ २ ॥ समस्तरोगान्तकमग्निकर्तृभ्राजिष्णुनाकारि सुतक्रपीतम्। इमम्प्रयोगं बहुधानुभूतं चकार धात्री किल कापि लाही ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ त्रिजात अर्थात् तज, पत्रज, इलायची, व्योष (सोंठि), मिरच, पीपल, त्रिफला (हड़, बहेड़ा, आंवला), पारा, गन्धक, अजमोद, सौंफ़, बायबिड़ंग, हल्दी, बेलगिरी, चीते की छाल, ज़ीरा, लवङ्ग, धनियां, गजपीपल, मुलहठी, पांचों नोन अर्थात् सेंधा १ काला २ बिड़ ३ सामुद्र ४ गर ५ कञ्जाकी मींगी, हींग, मोचसार, सज्जी, जवाखार और सब औषधों से चौथाई भाग इन सब औषधों को कूटकर चूर्ण बनावे और रोगी को मट्ठा के साथ दे तो शीघ्रही संग्रहणीरोग दूर हो यह सबरोगों का नाशक तथा अग्नि का और कान्तिका बढ़ानेवाला है। यह प्रयोग बहुत अनुभूत है इस को लाही नाम किसी धाय ने बनाया है ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS

अथ बृहन्निम्बादि चूर्ण ॥

भुजङ्गप्रयात छन्द ॥

हिंगुवाछार वै सिंधु सौवर्चले। कञ्ज गूदी मिलै पीपरीमूल लै ॥
चाब चीते बचा मिर्च जीरागरै। चेतकी सोंठि ह्रीबेर मोदा धरै ॥
सटी पीपली धान्य लै पुष्करै। अम्लबेतै बिड़ंगै समै लै धरै ॥
चूर्ण सेवै यथाशक्ति भाषै गुनै। अश्मरी अर्श प्लीहा सदा लै हनै॥
आम बंधै विबंधै औ मूलै हरै। पांडु गुल्मै हृदै रोग सोई जरै ॥
विरसता आननै अग्निमंदै महा। कासश्वासै सहिक्का विनाशै कहा॥

दोहा ॥

भोजन प्रथमै घीवसे, सेवन करै जो कोय।
वात गुल्महा क्षुधाकर, त्रिकुटादिक है सोय ॥

अथ त्रिकुटादि चूर्ण ॥

दोहा ॥

त्रिकुट हींग अजमोद लै, पुनि जीरायुग लेइ।
सैंधव नोन मिलाय कै, चूरणसम करु सेइ ॥

अथ रुचिक्यादि चूर्ण ॥

चौपाई ॥

सोंचर सैंधव चित्रक लीजै। त्रिकुट, चैल भारंगी दीजै ॥
शिवा और युगजीरा आनै। बायबिड़ंग जवाइन जानै ॥
अजमोदायुत चूरण करै। मातुलुंग अमलीरस परै ॥
तामें गुटिका लेय बनाय। अग्निमन्द अतिदेय नशाय ॥
सकल बदनकी शूलनशावै। पचै अन्न अतिक्षुधा बढ़ावै ॥

अथ शुण्ठ्यादि चूर्ण ॥

त्रोटक छन्द ॥

शुंठी युग तीनि सुभाग धरै। पीपल पुनि तामहँ चारि परै ॥
अजमोद जवाइन भाग परै। युगभागसो सैन्धव आनिठरै ॥
सबचूरणके समडारि शिवा। शुण्ठ्यादिप्रसिद्धसोनामभवा॥
लोलिंबसोराज विचारिकहै। मल तापप्रलाप को वेगिदहै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

उदरै पुनि शूल अनेक टरै। सब वातव्यथा अरुवात हरै॥
निशिवासर भोजनचित्तबसै। नानाविधि भोजनदोषनसै॥

अथ बृहद्बड़वानल चूर्ण॥

दोहा॥

शुण्ठी पीपल चीतलै, पूतबिड़ंग मिलाय।
कंजकि गूदी हर्रई, समशर्करा मिलाय॥
अग्नि बढ़ावै क्षुधाकर, वातगुल्म सब जाय।
बड़वानल चूरण कहेउ, ग्रन्थनको मत पाय॥

अथ अमलवेत लवणभास्कर चूर्ण॥

सोंचरनोन, समुद्रनोन, सांभरनोन, सेंधानोन पैसा पैसाभर, पीपल २ पैसाभर, पीपला मूल २ पैसाभर, स्याह ज़ीरा १ पैसा भर, पत्रज २ पैसाभर, नागकेसर २ पैसाभर, तालीस २ पैसा भर, कालीमिरच १ पैसा भर, ज़ीरा सफ़ेद २ पैसाभर, सोंठि १ पैसाभर, अनारदाना १ पैसाभर, इलायची २ पैसाभर, लवङ्ग १ पैसाभर, दालचीनी ८ माशे, जवाखार २ पैसाभर, खुरासानी अजवाइन २ पैसाभर, कलौंजी २ पैसाभर, त्रिफला ३ पैसाभर, मूली के बीज १ पैसाभर, अमलवेत की गिरी को निकालकर फिर उसमें और सब दवाइयों को कूट पीस भरे उसको रीता न रक्खे जबहीं रीता हो उसमें निचोड़ता जाय और प्रातः घाम और रात्रिको छाया में सुखावे फिर ३ माशे नित्य खाय तो सब उदरविकार दूर हों, भूख बहुत लगे और अन्न पचे॥

अथ संचलक्रिया॥

सोंचर ½ भर, सेंधा ½ भर, जंगरोनोन ½ १ सेर, सांभर ½ भर, आंवला ½ १ सेर इनको पीस पान और गोमूत्र के साथ हांड़ी में भर चूल्हे पर चढ़ावे नीचे अग्नि दे शीतल हो तब हांड़ी फोड़ फेंकदे फिर उसे नित्य खाय तो रोग अवश्यही जाय॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ वायुशूल का चूर्ण ॥

त्रिकुटा, अजमोद, सेंधा, स्याहज़ीरा, सफ़ेदज़ीरा, भुनी हींग इन सबोंको एकत्र कर पीस कूट चूर्ण बनावे फिर ४ माशे नित्य भोजनके पहिले ग्रास के साथ दोनों समय खाय और घृत खाय तो वायुशूल जाय ॥

अथ सामुद्र चूर्ण ॥

सेंधानोन, सोंचरनोन, समुद्रनोन, खारीनोन, अजमोद, जवाखार, बायबिड़ंग, हड़, पुष्करमूल, पीपल, सोंठि, अजवाइन, निशोत इन सब औषधों को बराबर लेकर पीस कूट छान चूर्ण बनावे फिर एक टंक गर्मपानीके साथ ले तो गुल्म, क्षयीकी आंटी, पवनबधवाई इन सबको दूर कर भूंख बढ़ावे ॥

अथ पाचक चूर्ण ॥

त्रिफला, त्रिकुटा, बायबिड़ंग, लवङ्ग, पीपल, तज, सुहागा, शुभ्रफूला इतने नोन तीनों शोरा, चित्रक इन सबको समान ले पीस कूट छान चूर्ण बनावे फिर २ माशे भर नित्य खाय तो पाचक होकर भूंख को बढ़ावे ॥

अथ चित्रादि चूर्ण ॥

खुरासानी अजवाइन, हड़, बिहारी सतुआ, सोंठि, लवङ्ग, पीपल, मधुबहेड़ा, आंवला, मिर्च, सोंचर, सेंधा, जवाखार इन सबकी नींबू के रस में तीनपुट दे फिर छायामें सुखाय बेर प्रमाण गोली बांधकर खाय तो बहुत गुण करे ॥

अथ कण्ठक चूर्ण ॥

चौपाई ॥

मिर्च कुलिंजन सम करि राखै। खट्टा मिट्ठा ज़रा न चाखै ॥
वर्ष एक जो साधै कोय। पिकसम कण्ठ ताहि कर होय ॥

अथ मन्दाग्निनाशक चूर्ण ॥

चौपाई ॥

सेंधा सोंचर बायबिड़ंग। त्रिफला त्रिकुटा तुवर लवङ्ग ॥

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

चित्रक हिंग अजवाइन मानि। जीरे अनारदाने आनि॥
इन औषध का चूरण करी। तीन निम्बुपुट उसमें धरी॥
टंक दोय जब प्रातहि खाय। मन्द अग्नि तबहीं मिटि जाय॥

अथ कण्डूनाशन चूर्ण॥

दोहा॥

हल्द बावची निम्ब फल, अरु आंवला मिलाय।
टंक दोय गोमूत्रसन, पीवत कण्डू जाय॥

अथ प्लीहा को चूर्ण॥

सेंधा, सोंचर, जवाखार, हींग, हड़, पीपल, अजमोद, बायबिड़ंग, सज्जी इन सबको एक एक टंक ले एकत्र कर चूर्ण बनावे फिर ७ माशेभर नित्य पांच पैसा भर गौके घृत के साथ मिलाय कर खाय तो प्लीहारोग जाय॥

अथ अग्निकर चूर्ण॥

मीठा चूक४पैसाभर, मिश्री पावभर, लवङ्ग ४पैसाभर, पीपल १ पैसाभर, कालीमिर्च १ पैसाभर, बड़ी इलायची १ पैसाभर इन सबको पीस चूक में मिलावे फिर इसे करवे में मले और ६ माशेभर खूराक खाय तो गर्मी, चिनग, ज्वर, जर्दी इतने रोग जायँ और भूंख बहुत लगावे॥

अथ अफरे का चूर्ण॥

सोंठि का सत १ पैसाभर, पीपल १ पैसाभर, अजमोद ३ टंक, अजवाइन १ टंक, सेंधा २ टंक, हड़ें १४ सबको अलग अलग पिसाय रक्खे फिर प्रातसमय ताज़े पानी से पहिले हड़ें और सेंधा नमक मिलाय खाय पीछे सबको मिलाय खाय यदि गुण करे तो और अधिक खाय तथा सन्ध्यासमय खिचड़ी खाय तो अफरा जाय॥

अथ हड़क्रिया॥

हींग २ टंक, सोंचर २० टंक, सेंधा १६ टंक, सांभर १२ टंक

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

ये चारों पानी में मिलाय पहिले तैयार करे त्रिकुटा सर्व मिलाय पानी में डाले उसका मुँहबांध चार दिनतक धूप में सुखावे फिर पाव भर आंवला डाले फिर तीसरे दिन चूक डाले चूक न हो तो नींबूका रस डाले फिर सबको हड़ों समेत बांध ले फिर हड़ों को जितने पानी में डूब जायँ छोड़ दे तो हड़ें बनें॥

अथ अपूर्व चूर्ण॥

त्रिफला, त्रिकुटा, हींग, सुहागा, सेंधा, सोंचर, लवङ्ग, चीता सबको बराबर ले हींग और सुहागे को भून ले फिर सबको एकत्र कर सहँजने के रस में गोली बांधे। चने प्रमाण जब चाहे खाय। यह क्षुधा बढ़ाता और अन्न पचाता है॥

अथ ज्वर पर पीपल चूर्ण॥

पीपल को कूट पीसकर शहद के साथ चाटे तो ज्वर, कास, श्वास, हिचकी, कण्ठरुज, पिलही आदि सब रोगोंको नाश करे॥

अथ प्रमेह पर त्रिफला चूर्ण॥

हड़ १ भाग, बहेड़ा २ भाग, आंवला ४ भाग इन सबका चूर्ण प्रमेह, शोथ और विषमज्वर आदि को नाशता है। दीपन, कफपित्तनाशन तथा कुष्ठहरण रसायन है। यही त्रिफला, शहद और घृतयुक्त खाने से नेत्ररोगों को नाशता है॥

अथ त्रिकुटा चूर्ण॥

पीपल, मिरच, सोंठि इनको ऊषण और त्रिकुटा भी कहते हैं इसका चूर्ण दीपन है कफ, कुष्ठ, पीनस, आम, अरुचि, प्रमेह, गुल्म और कण्ठरोग इन सबको दूर करता है॥

अथ कफादि पर पञ्चकोल चूर्ण॥

पीपल, चाब, सोंठि, पीपलामूल, चीता इनको पञ्चकोल कहते हैं। इसका चूर्ण खाने से पाचन और दीपन होता है तथा आनाह, पिलही, गुल्मशूल, कफ, उदररोग इन सबको नाश करता है॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ त्रिगन्ध चूर्ण ॥

पत्रज, तज, इलायची इनको त्रिगन्ध कहते हैं। इसका चूर्ण रूखा और उष्ण है। यह चूर्ण कुक्षिपित्तकारक है। कान्ति और रुचिकर्ता तीक्ष्ण है तथा विष और कफको नाश करता है॥

अथ जीवनीयगण ॥

काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, जीवन्ती, दूधिया, लताकी छीमी (जिसकी तरकारी होती है), मुलहठी, मूंगफली, उर्दफली इनका चूर्ण स्थितिकारक, भारी, दुग्धवर्धक, धातुपोषक और धातुशोधक है। स्निग्ध, ठण्ढी, तृष्णा, रक्तपित्त, क्षयी, शोष, ज्वर, दाह, वायु इन सबको हरताहै॥

अथ विड्सूत्र पर लवणपञ्चक चूर्ण ॥

सेंधानोन, कालानोन, बिड़नोन, खारीनोन, गड़नील, सांभरनोन ये पांच क्रम से जानो इनमें सेंधा मुख्य है जहां किसी नोन का नाम न लिखा हो वहां सेंधानमक लेना चाहिये इनके चूर्ण का पाक मधुर है। मल-मूत्र पकायके गिराता है। चिकना, वशकर्ता, बलहर्ता, धातु को गर्मकर्ता, दीपन, तीक्ष्ण, पित्त को बढ़ाता है और गुल्मादि दो खार हैं सज्जी और जवाखार। ये दोनों अग्नि समान दीपक हैं॥

अथ वृद्धसुदर्शन चूर्ण ॥

त्रिफला, हल्दी, दोनों भटकटैया, कचूर, त्रिकुटा, पीपलामूल, मुर्रा, गुर्च, जवासा, कुटकी, पित्तपापड़ा, मोथा, त्रायमाण, नेत्रबाला, नींबकी छाल, पुष्करमूल, मुलहठी, कुरैया, अजवाइन, इन्द्रयव, भारङ्गी, सहँजने का बिया, भुनी फिटकरी, बच, तज, पद्माक, खस, श्वेतचन्दन, अतीस, बरियारा, बनउर्दी, बनमूंग, बायबिड़ंग, तगर, चीता, देवदारु, चाव, पटोल, जीवन्ती, ऋषभक, लवङ्ग, वंशलोचन, कमलपत्र, काकोली, तेजपात, जावित्री, तालीसपत्र इन सब औषधियों को समान ले चूर्ण

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

करे फिर उसमें सब चूर्ण का आधा चिरायता डाले तदनन्तर इस वृद्ध सुदर्शनचूर्ण के खाने से त्रिदोष के सर्वज्वर नाश होते हैं। यह एकाहिक, द्वन्द्वज, त्रिदोषमानस आदि सर्व ज्वरों को दूर करताहै तथा शीतज्वर, जूड़ी, अन्तरिया, तृतीयक, चातुर्थिक, मोह, तन्द्रा, भ्रम, तृषा, कास, पाण्डु, हृदयरोग और रीढ़पीड़ा, कटि, पांव, जांघ, पसुली इन अङ्गोंकी पीड़ा को नाश करता है। जैसे सुदर्शनचक्र दैत्यों को नाश करता है उसी प्रकार वृद्ध-सुदर्शन चूर्ण भी सर्व ज्वरों को नाश करता है॥

अथ कासश्वासज्वर पर त्रिफलादि चूर्ण॥

त्रिफला और पीपल दोनों को कूट पीस चूर्ण बनाकर शहद के साथ चाटे तो कासश्वासज्वर को नाश करे अग्नि को बढ़ावे॥

अथ कफज्वर पर कायफलादि चूर्ण॥

कायफल, मोथा, कुटकी, कचूर, काकड़ासिंगी, पुष्करमूल, इन्द्रायण इनको कूट पीस छान चूर्ण बनाय शहद और अदरक के रस के साथ चाटे तो कण्ठ शुद्ध हो। ज्वर, कास, श्वास, अरुचि, ताप, शूल, छर्दि और क्षयी इन सबों को दूर करे॥

बालक की खांसी और ज्वर पर काकड़ासिंगी आदि चूर्ण॥

काकड़ासिंगी, अतीस, पीपल इन सबोंको कूट पीस छान मधुसे चटावे तो बालककी खांसी, ज्वर और छर्दि दूर हो॥

अथ आमातीसार पर शुण्ठ्यादि चूर्ण॥

सोंठि, अतीस, हींग, मोथा, कुरैया और चीता इन सब औषधों को ले कूट पीस छान चूर्ण बनाय उष्णपानी के साथ खाने से आमातीसार दूर हो॥

अथ आमवात पर हरीतक्यादि चूर्ण॥

हरीतकी, सेंधानोन, कालानोन, बच, हींग इन सब औषधियों को ले कूट पीस छान चूर्ण कर ठण्ढे जलके साथ पिये तो

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

आमवातातीसार जाय यह चूर्ण ग्राही और अबल अग्नि को दीपन करता है ॥

अथ सर्वातीसार पर लघुगंगाधर चूर्ण ॥

मोथा, इन्द्रयव, बेल, लोध, मोचरस, धवफूल इन सब ओषधियों को ले कूट पीस छान चूर्ण कर मट्ठा से गुड़ डालकर ले तो सब अतीसारप्रवाह बन्द करे। यह चूर्ण परमग्राही है ॥

अथ अतीसार पर अन्य वृद्धगंगाधर चूर्ण ॥

मोथा, सोंठि, कुरैया, धवफूल, सुगन्धबाला, बेल, मोचरस, पाढ़ा, इन्द्रयव, मधुकटैया, आम की बिजली, अतीस, लजालू इन सब ओषधियों को कूट पीस छान चूर्ण बनाय शहद और चावल के धोवनसंयुक्त ले तो प्रवाहिक और सब अतीसार, ग्रहणी जल्दी आराम हो। यह चूर्ण सरितप्रवाह को रोंकसक्ता है। मट्ठा, मिरचचूर्ण, चीता, कालानोन संगोपने से ग्रहणी नाश हो तथा उदररोग, प्लीहा, मन्दाग्नि, गुल्म, अर्श इन सब रोगों को अच्छा करता है ॥

अथ ग्रहणी पर कपित्थाष्टक चूर्ण ॥

पक्काकैथा ८ भाग, खांड़ ६ भाग, अनार, इमली, बेल, धवफूल, अजमोद, पीपल इन सब ओषधियों के तीन तीन भाग ले और मिरच, श्वेतज़ीरा, धनियां, पीपलामूल, सुगन्धबाला, अजवाइन, तज, पत्रज, इलायची, नागकेसर, चीता, सोंठि इन सबोंको एक एक भाग ले फिर सबको कूट पीस छान महीन चूर्ण बनावे। इस कपित्थाष्टक चूर्ण के खाने से गले के रोग, अतीसार, क्षयी, गुल्म, ग्रहणी आदि सब रोग अच्छे हों ॥

अथ ग्रहणी पर दाड़िमाष्टक चूर्ण ॥

अनार ८ रुपयेभर, शक्कर ३२ रुपयेभर और तज, पत्रज, इलायची ये तीनों मिलाकर ४ रुपयेभर, त्रिकुटा १२ रुपयेभर इन सब ओषधियों को ले एकत्र कर कूट पीस छान चूर्ण करे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

इसके खाने से रोचन, दीपन, कण्ठशुद्ध और ज्वर नाश होता है। यह चूर्ण ग्राही है॥

अथ अतीसार पर वृद्ध दाड़िमाष्टक चूर्ण॥

अनार ८ पल, पीपल, पीपलामूल, अजवाइन, धनियां, श्वेत ज़ीरा, सोंठि ये सब पल पल भर ले वंशलोचन दश माशे, पत्रज, एला, नागकेसर इनको पांच पांच माशे ले। यह दाड़िमाष्टक चूर्ण अतीसार, गुल्म, संग्रहणी, जलाग्रह, मन्दाग्नि और पीनस इन सब रोगों को नाश करे॥

अथ सुकुमार लवंगादि चूर्ण॥

लवङ्ग, शुद्ध कपूर, इलायची, नागकेसर, जायफल, खस, सोंठि, कृष्णज़ीरा, कृष्णअगर, वंशलोचन, जटामासी, नीलकमल, पीपल, चन्दन, तगर, सुगन्धबाला, कंकोल इन सब औषधियों को ले कूट, पीस छान चूर्ण करे इसकी आधी मिश्री मिलावे तब यह चूर्ण तैयार हो। इसके खाने से रोचन और तृप्ति होती है तथा धातु को पुष्ट करता, त्रिदोष को हरता और बल करता है। कण्ठ, हृदय, कास, हिचकी, पीनस, क्षयी, तमक, श्वास, अतीसार, उरःक्षत, प्रमेह, अरुचि, गुल्म और ग्रहणी इन सबको दूर करता है॥

अथ जातीफलादि चूर्ण॥

जायफल, लवङ्ग, इलायची, तज, पत्रज, नागकेसर, कपूर, चन्दन, तिल, वंशलोचन, तगर, आंवला, तालीसपत्र, पीपल, हड़, चीता, कालाज़ीरा, सोंठि, बिड़ंग और मिरच सबके समान मोथा लेना फिर इन सब औषधियों को कूट पीस छान चूर्ण कर उसमें चूर्ण के समान खांड़ मिलावे फिर कर्षप्रमाण खाय तो ग्रहणी, कास, श्वास, अरुचि, क्षयी, वात, कफ, नाक टपकना ये सब रोग शीघ्र नाश हों॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ अरुचि पर महाखाण्डव चूर्ण ॥

मिरच, नागकेसर, तालीसपत्र, पांचोंनोन इन सबको समान भाग लेना और ग्रन्थि, चित्रक, तज, पीपल, इमली और ज़ीरा ये सब दो दो भाग ले और धनियां, अमलबेत, सोंठि, बड़ी इलायची, बेर, अजमोद, मोथा इनको तीन तीन भाग ले इन सब औषधों की चौथाई अनार ले और आधी मिश्री मिला कर खाय तो रोचन दीपन करे यह हृदय को बलप्रद है। अतीसार, हृदयरोग, कण्ठजलन, मुखरोग, शीतरस, पेट फूलना, अर्श, गुल्म, कृमि, छर्दिपञ्चविध और सब श्वासों को नाश करे॥

अथ उदररोग पर नारायण चूर्ण ॥

चीता, त्रिफला, सोंठि, पीपल, मिरच, ज़ीरा, हड़, बेर, बच, अजवाइन, ग्रन्थि, सौंफ़, असगन्ध, अजमोद, कचूर, धनियां, बिड़ंग, कालाज़ीरा, चूक, पुष्करमूल, दोनों खार, पांचों नमक इन सबको समान ले और इन्द्रायण दो दो भाग, निशोत ३ भाग, जमालगोटा ३ भाग तथा पीतपुष्प और सेहुँड़-मूल ४ भाग ले फिर इन सबको एकत्र कर कूट पीस छान चूर्ण बनावे। कठिन कोढ़रोगी को प्रथम पाचन और स्वेदन कर यह चूर्ण रेचनार्थ दे तो हृदयरोग, पाण्डुरोग, कास, श्वास, भगन्दर, मन्दाग्नि, ज्वर, कुष्ठ, ग्रहणी और कण्ठरुज इन सब रोगों को नाश करता है॥

इसका अनोपान इस प्रकार है। पेट फूले तो मद्य से, गुल्म में बेरकाथ से, मलफोरनेमें दही या जल से, अजीर्ण में उष्णोदक से, पेटरोग में आमला से, कठोदरादि में उष्ट्रीदुग्ध अथवा गोतक्र में, वातरोग में, सुरामण्ड में, अर्श में अनाररस के साथ और दोनों विष में घी के साथ देना। यह नारायण चूर्ण दैत्यरूपी दुष्ट रोगों को नाशनेवाला है॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS

अथ अजीर्ण पर हबुषादि चूर्ण ॥

हाऊबेर, त्रिफला, त्रायमाण, पीपल, चूक, निशोत, पीतपुष्प, सेहुँड़की जड़, कुटकी, बच, नील की पत्ती, सेवन, कालानमक इन औषधों को लेकर कूट पीस छान चूर्ण बनावे फिर इसको उष्णोदक, गोमूत्र, अनार का रस, त्रिफला का रस अथवा मांसरस आदि किसी के साथ रोगानुसार दे तो अजीर्ण, प्लीह, गुल्म, शोथ, अर्श, विषमाग्नि, हलीमक, कमल, पाण्डु, कुष्ठ, पेट फूलना, उदररोग आदि सब रोगों को दूर करता है ॥

अथ शूलादि पर पंचसम चूर्ण ॥

सोंठि, हड़, पीपल, निशोत, कालानमक इन सब औषधों को समभाग लेकर कूट पीस छान चूर्ण बनावे फिर खाय तो बड़ा शूल, पेट फूलना, जठरसम्बन्धी रोग, अर्श और आमवात इन सबको दूर करे ॥

अथ नाराच चूर्ण ॥

पीपल १० माशे, निशोत ४ रुपयेभर, खांड़ पलभर इन सबको एकत्र कर चूर्ण बनावे फिर कर्षप्रमाण शहद के साथ खाय तो पेट फूलना, गोटउदर, कफ, पित्त, शूल आदि सबको नाशै ॥

अथ प्लीहादि पर लवणत्रितयादि चूर्ण ॥

तीनों लवण, दोनों खार, सौंफ़, सोवाबीज, अजमोद, ममरी, हाऊबेर, दोनों ज़ीरे, मिरच, पीपलामूल, पीपल, हुरहुरा, कचूर, मगरैल, सोंठि, चीता, चाब, बिड़ंग, अमलबेत, अनार, इमली की छाल, निशोत, जमालगोटा, शतावरि, इंदोरन, भारङ्गी, देवदारु, अजवाइन, धनियां, लुम्बुरु, पुष्करमूल, बेर और हड़ ये सब समान ले कूट पीस छान चूर्ण बनावे फिर अदरक और बिजौरे के रस में भावना दे फिर इसको घी अथवा पुरानी मद्य या उष्णोदक अथवा बेर का क्वाथ या मट्ठा अथवा उष्ट्रीपय या

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

दही के तोड़ के साथ ले तो यकृत्, प्लीह, कटिशूल, गुदा, कोख और हृदयरोग, अर्श, मन्दाग्नि, मलस्तम्भ, गुल्म, प्लीह, उदर-रोग, हिचकी, पेटफूलना, श्वास और कास इन सबको दूर करता है अथवा वैद्य इनका घी बनाकर दे तो भी ये सब रोग जायँ॥

अथ शूल पर तुम्बुरुआदि चूर्ण॥

तुम्बुरु, तीनों लवण, अजवाइन, पुष्करमूल, जवाखार, हड़, हींग, बिड़ंग इन सब द्रव्यों को बराबर ले और निशोत तीन भाग ले फिर कूट पीस छान चूर्ण बनावे। उष्णोदक अथवा यवक्काथ के साथ पिये तो सब शूल, गुल्म और पेटफूलना ये सब रोग दूर हों॥

अथ मन्दाग्नि पर चित्रकादि चूर्ण॥

चीता, सोंठि, हींग, पीपल, पीपलामूल, चाब, अजमोद, मिरच इन सबोंको कर्ष कर्ष भर ले और दोनों खार, सेंधा, काला, पांगा, कटीला, सांभर इनको कोल कोल भर ले फिर सबका चूर्णकर बिजौरे के रस में गोली बांधकर धूप में सुखाय ले। यह चूर्ण गुल्म, ग्रहणी और आमरोग को हरता, अग्नि को दीप्त करता, रुचि को बढ़ाता और कफ को नाश करता है॥

अथ मन्दाग्नि पर अग्निदीपन चूर्ण॥

सेंधानमक, पीपलामूल, पीपल, चाब, चीता, सोंठि, हड़ इन सबको क्रम से एक एक भाग अधिक ले कूट पीस छान चूर्ण बनावे। इसके खाने से सकल मन्दाग्नि नाश होजाती है॥

अथ वातादि पर अजमोद चूर्ण॥

अजमोद, बिड़ंग, सेंधानमक, देवदारु, चीता, पीपलामूल, सौंफ़, पीपल, मिरच इन सब द्रव्यों को कर्ष कर्ष प्रमाण ले और हड़ ५ कर्ष, बिधारा १० कर्ष, सोंठि १ कर्ष ले फिर इन सब औषधों का कूट पीस छान चूर्ण करे तदनन्तर गुड़मिश्रित कर उष्णोदक से खाय तो सूजन दूर हो। यह चूर्ण आमवात,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri Foundation

गांठिपीर, गृद्रसी, वायु, कटिपीड़ा, पीठ, गुदा, जांघ, पीरतूनी, वायुप्रतूनी, वायु, विश्वाची, कफरोग और वायुरोग इन सब रोगों को नाश करता है ॥

अथ शूलादि पर हिंग्वादि चूर्ण ॥

हींग, पाढ़ा, हड़, धनियां, अनार, चीता, कचूर, अजमोद, त्रिकुटा, हाऊबेर, अमलबेत, ममरी, इमली की छाल, ज़ीरा, पुष्करमूल, बच, चाब, दोनों खार, पांचों नमक इन सब औषधों को ले कूट पीस छान चूर्ण बनावे फिर भोजनादि अथवा पुरानी भंग में खाय तो यह चूर्ण वातकफ का गुल्म, कोष्ठबद्ध, अष्ठीलिका, हृदय, पेड़ू, पसुली, गुदा, योनि आदि के सर्वशूलों को और मूत्रकृच्छ्र, पेटफूलना, पाण्डु, अरुचि, हिचकी, यकृत्, प्लीह, श्वास, कास, गलरोग, ग्रहणी और अर्श इन रोगोंको दूर करे। बिजौरे के रसकी सात भावना दे गोली बांध ले इससे वात कफ के रोग नाश हों ॥

अथ अरुचि पर जवानीखांड़ चूर्ण ॥

अजवाइन, अनार, सोंठि, इमली की छाल, अमलबेत इन सबोंको चार चार शाण ले और मिरच ढाई शाण, पीपल १० शाण तथा तज, कालानमक, धनियां, ज़ीरा ये सब दो दो शाण और शर्करा ६४ शाण ले इन सबको कूट पीस छान चूर्ण बनावे। इस चूर्ण में जो शाण कहा है वह ४ माशे का होता है। इस चूर्ण के खाने से पाण्डु, हृदयरोग, ग्रहणी, छर्दि, शोष, अतीसार, प्लीह, पेटफूलना, कोष्ठबद्ध, अरुचि, शूल, मन्दाग्नि, अर्श, जीभरोग और गलरोग ये सब नाश हों ॥

अथ अरुचि पर तालीसादि चूर्ण ॥

तालीस १ कर्ष, मिरच २ कर्ष, सोंठि ३ कर्ष, पीपल ४ कर्ष, वंशलोचन ५ कर्ष ले और इलायची तथा तज आधा आधा कर्ष ले, खांड़ ३२ कर्ष ले फिर इनका चूर्ण बनाय खावे तो

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पाचन और रोचन करे और कास, श्वास, ज्वर, छर्दि, अतीसार, शोष, पेटफूलना, प्लीह, ग्रहणी, पाण्डु इन सब रोगों को नाश करे॥

अथ कासक्षयपित्तादि पर सितोपलादि चूर्ण॥

मिश्री १६ कर्ष, वंशलोचन ८ कर्ष, पीपल ४ कर्ष, छोटी इलायची २ कर्ष, तज १ कर्ष इनका चूर्ण कर शहद और घी मिलाय चाटे तो श्वास, कास, क्षयी, हाथ और पांव का तपना, मन्दाग्नि, जीभ सूखना, पसुलीपीड़ा, अरुचि, ज्वर, रक्तपित्त ये सब रोग नाश हों॥

अथ ग्रहणी गुल्म पर लवणभास्कर चूर्ण॥

पांगानमक ८ रुपयेभर, कालानमक ५ रुपयेभर और बिड़, सेंधा, धनियां, पीपल, पीपलामूल, कालाज़ीरा, पत्रज, नागकेसर, तालीस, अमलबेत इन सबोंको दो दो कर्ष तथा मिरच, ज़ीरा, सोंठि ये कर्ष कर्ष भर, अनार ४ कर्ष भर, इलायची और तज पांच माशे इन सबोंको एकत्रकर कूट पीस छान चूर्ण बनावे फिर इसकी एक शाण मात्रा मद्य, मट्ठा अथवा दही के तोड़ के साथ दे तो वात, कफ, गुल्म, प्लीह, पेटरोग, छर्दि, अर्श, ग्रहणी, कुष्ठ, कोष्ठबद्ध, भगन्दर, सूजन, शूल, श्वास, कास, आमदोष, हृदयरोग, मन्दाग्नि आदि सब रोगों को दूर करता है और दीपन पाचन भी है। इस चूर्ण को श्रीभास्कर ने सब लोगों के लिये हितकारक कहा है॥

अथ वातपित्तकफ छर्दि पर एलादि चूर्ण॥

इलायची, प्रियंगु, मोथा, बेरकी मींगी, पीपल, श्वेतचन्दन, लावा, लवङ्ग, नागकेसर इन सबको एकत्र कर कूट पीस छान चूर्ण करे फिर इसमें शहद और मिश्री मिलाय चाटे तो वातपित्तकफजन्य छर्दि नाश हो॥

अथ कुष्ठ पर निम्ब चूर्ण॥

महीन पिसा नींबके पञ्चाङ्ग का चूर्ण १५ पल और लोहभस्म,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

हड़, चाब, बड़नींब, चीता, भिलावां, बिड़ंग, खांड़, आंवला, हल्दी, पीपल, मिरच, सोंठि, बकुची, अमलतास, गोखुरू इन सब औषधों को पल पल भर ले कूटपीस छान चूर्ण बनावे फिर उसमें भांगरे के रसकी भावना दे फिर खैर और आसन सेरभर पानी में काढ़ाकर अष्टमांश रहने दे उसमें उसकी भावना दे फिर सूखा चूर्ण रख छोड़े। इसको एक कर्ष प्रमाण खैर आसन के क्वाथ, दूध अथवा घी के साथ एक मासपर्यन्त ले तो सब कोढ़ों को नाश करे। यह चूर्ण रसायन है और सब रोगों को नाश करता है॥

अथ पुष्टि पर शतावरि चूर्ण॥

शतावरि, गोखुरू, किवांच के बीज, गुलशकरी, बरियारा, तालमखाना इन सब औषधों को बराबर ले कूट पीस छान चूर्ण बनावे फिर गोदुग्ध में नित्य पिये तो स्त्री से तृप्ति कभी न हो और जो स्त्रीप्रसङ्ग न करे तो बल और श्वेतवर्ण हो॥

अथ पुष्टि पर अश्वगन्धादि चूर्ण॥

नागौरी असगन्ध ४० तोला, बिधारा ४० तोलाभर ले दोनों का चूर्णकर घृत के बर्तनमें रक्खे। १० माशे चूर्ण दुग्ध में पिये तो स्त्री से कभी तृप्ति न हो॥

अथ धातुवृद्धि पर नवायसादि चूर्ण॥

चीता, त्रिफला, मोथा, बिड़ंग, त्रिकुटा इन सबोंको समान ले और पोलादभस्म १। २ इनका चूर्ण शहद और घृत के साथ चाटे अथवा गोमूत्र या मट्ठा के साथ पिये तो पाण्डु, हृद्रोग, भगन्दर, सूजन, कोढ़, उदररोग, अर्श, मन्दाग्नि, अरुचि और कृमि आदि रोगों को नाश करे॥

अथ स्तम्भन पर अकरकरादि चूर्ण॥

अकरकरा, सोंठि, कङ्कोल, मिरच, केसर, पीपल, जायफल, लवङ्ग, श्वेतचन्दन इनको कर्ष कर्ष भर ले फिर कूट पीसकर पल

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

भर अफ़ीम दे कपड़छान करले और सबकी बराबर खांड़ मिलावे फिर माशे भर शहद से चाटे तो वीर्यस्तम्भन करे पुरुष स्त्री को सुख देता है कामी पुरुष इसका रात्रि में सेवन करे ॥

अथ चन्द्रकलाभिध चूर्ण ॥

चिरायता, कुटकी, मोथा, इन्द्रयव, सौंठि, मिरच, पीपल इनको समान भाग ले और इन्द्रयव के वृक्ष की छाल का सोलहवां भाग और चीते की छाल के दो भाग ले फिर कूट पीस छान कर चूर्ण बनावे। इस चूर्ण से दूना पुराना गुड़ पानी में मिलाकर फंकी करे तो पाण्डुरोग, ज्वर, अतीसार, अरुचि, कामला, ग्रहणी, वायुगोला और प्रमेह ये सब रोग नष्ट हों और रोगी सुखी हो ॥

अथ अन्य चूर्ण ॥

सज्जी, जवाखार, खारीनमक, कालानमक, सेंधानमक, सोंठि, मिर्च, पीपल, चाब, अजमोद, चीता, पीपलामूल, हींग, ज़ीरा, सौंफ़ इन सबको समान भाग ले कूट पीस छानकर चूर्ण बनावे फिर इसको गर्म पानी के साथ अथवा झड़बेरी के बेरों के औटे जलके साथ या मट्ठे के साथ पीवे तो हृद्रोग, क्षुधा की मन्दता, वायुगोला, अर्श, संग्रहणी आदि रोग दूर हों ॥

अथ अन्य चूर्ण ॥

सज्जी, जवाखार, पीपलामूल, पीपल, चाब, चीता, सोंठि, मिरच, सेंधानमक, सांभरनमक, खारीनमक, समुद्रनमक, हींग, अजवाइन इन सबको समान ले कूट पीस छानकर चूर्ण बनावे। इसमें अमलबेत अथवा बिजौरा नींबू का पानी तथा आमला इन तीनों में से किसी एक के रसकी भावना देके बनाय रक्खे। यह चूर्ण अतिदीपन पाचन है और कफ, बादी, संग्रहणी और अर्शरोग आदि को नाश करता है ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS

अथ अन्य चूर्ण ॥

चीता, बच, बेलगिरी, सोंठि इनको कूट पीस छानकर चूर्ण बनावे। इसको तक्र के साथ ले तो दुष्ट संग्रहणी दूर हो ॥

अथ अन्य चूर्ण ॥

कालानमक, चीता और मिरच इनके चूर्ण को तक्र के साथ पीने से संग्रहणी, उदररोग, वायुगोला, अर्श, क्षुधा की मन्दता और प्लीह ये सब रोग नाश हों ॥

अथ चिन्तामणि चूर्ण ॥

जैत के बीज, बरियारे की जड़, पद्माक, काहू, देवदारु, त्रिफला, सोंठि, मिरच, पीपल, बिड़ंग इन सबों को समान ले कूट पीस छानकर चूर्ण बनावे। इस चूर्ण को विषम मधु, घृत के साथ खाया करे तो श्वास और कासरोग को दूर करे ॥

अथ अन्य चूर्ण ॥

पीपल, पीपलामूल, बहेड़े का बक्कल, सोंठि इनके चूर्ण को शहद के साथ चाटने से खांसी का रोग शान्त होता है ॥

अथ अन्य चूर्ण ॥

सोंठि, मिरच, पीपल इन्हें समभाग ले चूर्ण करे उसके समान गुड़ और दुगुना घी मिलायकें चाटने से श्वास का रोग बहुत शीघ्र नष्ट होता है ॥

अथ अन्य चूर्ण ॥

त्रिफला, गिलोय, चीता, रायसन, बायबिड़ंग, सोंठि, मिरच, पीपल इनको बराबर ले कूट पीस छानकर चूर्ण बनावे। जितना चूर्ण हो उसमें उतनी ही शक्कर घोलकर सेवन करे तो खांसी का रोग जाय ॥

अथ लोलिम्बराज चूर्ण ॥

सोंठि ५ भाग, पीपल ४ भाग, अजमोद ३ भाग, अजवाइन २ भाग, नमक १ भाग इन पन्द्रह भागों के तुल्य हड़ ले

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कूट पीस छान चूर्ण बनाकर खाय तो पेटकी गुड़गुड़ाहट, पेट शूल, आमरोग, वायुगोला और मलरोग दूर हों ॥

अथ अमलबेत चूर्ण ॥

संचलनमक, समुद्रनमक, सांभरनमक, सैंधानमक ये सब पैसे पैसे भर, पीपल, पीपलामूल, स्याहजीरा, पत्रज, नागकेसर, तिल ये दो दो पैसे भर, मिरच १ पैसा भर, जीरा सफ़ेद २ पैसाभर, सोंठि १ पैसा भर, अनारदाना १ पैसाभर, इलायची २ पैसाभर, लवङ्ग १ पैसाभर, दालचीनी २ पैसाभर, जवाखार २ पैसाभर, खुरासानी अजवाइन २ पैसाभर, कलौंजी २ पैसाभर, त्रिफला ३ पैसाभर, मूली के बीज १ पैसाभर ले फिर अमलबेत की गिरी निकाल इन सब औषधों को कूट पीस गिरी में भरे फिर जितना खाली होता जाय उसमें नींबू निचोड़ता जाय कभी खाली न होने देवे और जब प्रातः घाम में रात्रि को छाया में सुखाचुके तब ३ माशे खाय तो सर्व उदरविकार जायँ तथा भूख लगे और पाचन करे ॥

अथ संचल क्रिया ॥

संचल ½ भर, सेंधा ½ भर, जंगरानमक ½ सेर, सांभर ½ भर, आमला ½ सेर इन सबको पीस छान ले फिर गोमूत्र हांड़ी भर चढ़ावे नीचे आंच दे जब शीतल हो तब हांड़ी में से निकाल कर रक्खे। इसको खाय तो रोग जाय ॥

इति अष्टाविंशतिस्तरंगः ॥ २८ ॥

अथ वटी कल्पना ॥

वटी (गोली) कई नामों से प्रसिद्ध है जैसे वटिका, गुटिका, वटी, मोदक, पिण्डी और गुण्डी इत्यादि। गोली विना आग के योग के गुग्गुल से बँध जाती है, और शहद से भी बँधती है। गोलियों में मिश्री चौगुनी, गुड़ दूना और चूर्ण लिखे प्रमाण

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

देना। गुग्गुल और शहद बराबर देना। द्रव्यवस्तु दूनी देना। इसी रीति को सद्वैद्य करते हैं इसके खाने का प्रमाण कर्षमात्र है अथवा देहबल और दोष देखकर जैसा उचित हो खिलावे॥

अथ अर्श पर इन्दारु की गुटिका॥

इन्दारु, मोथा, सोंठि, जमालगोटा की जड़ की छाल, हड़, निशोत, कचूर, बिड़ंग, गोखरू, चीता इन सबोंको दो दो कर्ष ले और जमींक़न्द ८ पल, निधास ४ पल और भिलावां ४पल ले द्रोणभर पानी में औटावे जब चौथाई रहे तब उतार ले फिर छानकर उसका तिगुना गुड़ दे पकावे जब वह पककर नितरि उठे तब उसमें यह चूर्ण डाले—चीता, निशोत, जमालगोटा की जड़, बच ये सब पल पल भर त्रिकुटा, इलायची, बड़ा तज ये तीन तीन पल ले इनको पीस छान कर प्रस्थ भर शहद में पूर्वोक्त चूर्णयुक्त बँधने मुवाफ़िक़ हो तैसा मिलावे तब बाहुशाल गुड़ सिद्ध हो। यहसर्वार्श, गुल्म, वातोदर, आठ वायु, नाक टपकना, क्षयी, पीनस, हलीमक, पाण्डु और प्रमेह ये सब नाश हों॥

अथ कास पर मरिचादि गुटिका॥

मिरच और पीपल कर्ष कर्ष भर, जवाखार पांच माशे, अनार ८ कर्ष इनकी ८ कर्ष गुड़ में चार चार माशे की गोली बांधे। इस गोली को मुख में धर रक्खे तो खांसी रोग दूर हो॥

अथ श्वास पर गुड़ादि गुटिका॥

गुड़, सोंठि, हड़, मोथा इन सबकी गोली जितने गुड़ में बँधे उतने में एक एक माशे भर की बांध मुँह में रक्खे तो सब श्वास-कासों को हरे। मुख में केवल बहेड़ा रखने से भी यह रोग दूर होता है॥

अथ प्यास पर आंवलादि वटी॥

आंवला, कमल, कूटला, बटजटा इन्हें पीस शहद में गोली बांधि मुखमें रक्खे तो महातृषा और मुख सूखना दूर हो॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ सन्निपात पर संजीवनी गुटिका ॥

बिड़ंग, सोंठि, पीपल, हड़, आंवला, बहेड़ा, बच, गोखरू, भिलावां, शुद्ध सिंगिया इन सबको बराबर ले गोमूत्र में खरल करे फिर घुँघचिल समान गोली बांध अदरक के रसमें खिलावे। अजीर्ण में १ गोली, विसूचिका में दो गोली दे इसीप्रकार सांप के डसे को सन्निपात में चार देवे। इस वटी का नाम संजीवनी (मनुष्य को जिलानेवाली) है ॥

अथ पीनसादि पर त्रिकुटादि वटी ॥

त्रिकुटा, अमलबेत, बच, तालीसदल, चीता, ज़ीरा, इमली की छाल इन सबको कर्ष कर्ष भर और तज, पत्रज, इलायची चार चार माशे तथा गुड़ कर्षभर ले। इसका व्योषादिगुटिका नाम है। पीनस, श्वास, कासको नाशकर रुचि को बढ़ावे, कण्ठ-स्वर शुद्ध करे, नाक पकना बन्द करे। यदि आमदोष हो तो सोंठि और गुड़की गोली देना। अजीर्ण में गुड़ और पीपल। कृच्छ्रमें गुड़ और ज़ीरा। अर्शमें गुड़ और हड़की गोली देना॥

अथ अर्श पर वृद्धदारुमोदक ॥

बिधारा, भिलावां और सोंठि पीस गुड़ में गोली बांध देइ तो छओं भांति के अर्शों को दूर करे ॥

अथ अर्श पर सूरनवटिका ॥

सूखे सूरन का चूर्ण ३२ भाग, चीता १६ भाग, सोंठि ४ भाग, मिरच २ भाग इन सबका चूर्ण कर गुड़ में गोली बांधकर खिलावे तो सब अर्श नाश हों। अथवा सूरन और बिधारा सोलह सोलह भाग, मूसली ८ भाग, चीता८भाग तथा त्रिफला, बिड़ंग, सोंठि, पीपल, भिलावां, पीपलामूल, तालीस ये सब चार चार भाग ले। तज, इलायची और मिरच ये दो दो भाग ले इन सबका चूर्ण कर दूने गुड़ में गोली बांध कर खिलावे तो अग्नि प्रबल हो। यह रसायन अर्श, वातकफजन्य ग्रहणी,

In Public Domain, Chandigarh Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

श्वास, कास, क्षयी, प्लीह, फ़ीलपांव, शोथ, प्रमेह, भगन्दर, बालोंका श्वेत होना इन रोगोंको दूरकर धातु और बुद्धि बढ़ातीहै॥

अथ कामलादि पर मंडूरवटी॥

त्रिफला, त्रिकुटा, चाब, पीपलामूल, चीता, देवदारु, सोनामक्खी, हल्दी, मोथा, मंजीठ इनको कर्ष कर्ष भर ले और मंडूर शोधकर सबसे दूना ले अष्टगुण गोमूत्र में पकाय गोली बांध मट्ठे के साथ खाय तो कामला, पाण्डु, अर्श, शोथ, प्रमेह, कुष्ठ, कफरोग, गठिया, अजीर्ण और प्लीह इन सबको नाश करे॥

अथ चंद्रप्रभागुटिका॥

कपूर, बच, मोथा, चिरायता, गुर्च, देवदारु, हल्दी, अतीस, दारुहल्दी, पीपलामूल, चीता, धनियां, त्रिफला, बच, बिड़ंग, गजपीपल, त्रिकुटा, सोनामक्खीभस्म, सज्जीखार, जवाखार, सेंधा, काला और पांगानमक ये द्रव्य चार चार माशे। निशोत, दात्यूणी, पत्रज, तज, इलायची, वंशलोचन ये सब कर्ष कर्ष भर और लोहेकी भस्म २ कर्ष ले इन सबका चूर्णकर मिश्री ४ कर्ष, शुद्ध शिलाजीत ८ कर्ष इन सबको एकत्र कूट कर सुन्दर गुटिका बनावे। यह चन्द्रप्रभागुटिका कास, प्रमेह, कृच्छ्र, मूत्राघात, पथरी, विड्बन्ध, पेटफूलना, शूल, इन्द्रीफूलना, ग्रन्थि, अर्बुद, अण्डवृद्धि, कटिशूल, श्वास, कास, कुष्ठ, मेद, अन्त्रवृद्धि, पाण्डु, कमल, सर्वार्श, खुजली, प्लीह, उदररोग, भगन्दर, दन्तरोग, नेत्ररोग, स्त्री के ऋतुरोग, पुरुष का धातुरोग, मन्दाग्नि, अरुचि, वात, पित्त, कफ इन सब रोगों को नाशकर बल और धातु को बढ़ाती है। यह रसायन है इसको १० माशे या १६ माशे दोष और बल विचार के खाना चाहिये॥

अथ गुल्म पर कांकायनगुटिका॥

अजवाइन, धनियां, जीरा, मिरच, कृष्णाकान्ता, अजमोद,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

मगरेला ये सब चार चार शाण ले भूनी हींग ६ शाण तथा दोनों खार, पांचोंनमक, निशोत ये सब आठ आठ शाण और दात्यूणी, कचूर, पुष्करमूल, बिड़ंग, अनार, हड़, चीता, अमलबेत, सोंठि ये सब सोलह सोलह शाण ले फिर इसका चूर्ण कर बिजौरा के रसमें वटी बांधे फिर घृत, दूध, मद्य, नींबूका रस और उष्णोदक इनके साथ कांकायन बनाकर पिलावे तो गुल्म को नाश करे। वातगुल्म में मद्य से, पित्तगुल्म में गोक्षीरसंग, कफगुल्म में गोमूत्र के साथ, त्रिदोषगुल्म में दशमूल के क्वाथ के साथ और स्त्रीके रक्तगुल्ममें उष्ट्रीदुग्ध संग दे॥

अथ वातरोग पर कैशोर गुग्गुल॥

त्रिफला ३ प्रस्थ, गुर्च १ प्रस्थ इन सबको कूटकर डेढ़ द्रोण जल में औटावे जब अर्धजल रहे तब छानकर शुद्ध गुग्गुल चार प्रस्थ डाले फिर लोहपात्र में लोहे की करछी से घोटि गुड़पाक सम गाढ़ाकर ये औषधें डाले—आंवला, बहेड़ा आधा आधा पल, गुर्च १ पल, त्रिकुटा ६ कर्ष, बिड़ंग आधापल, दात्यूणी १ कर्ष, निशोत १ कर्ष इनसबको गुड़पाक में सानकर पिण्ड बांध घी के पात्र में धरे फिर इसकी गोली शाणप्रमाण दे अथवा दोष विचारकर दे। इसका अनोपान गर्मजल, दुग्ध, मंजीठक्वाथ, अथवा वैद्य जो उचित समझे उसके साथ दे तो सब कुष्ठ जायँ। त्रिदोषजन्य वातरक्त जाय। सब तरह के व्रण, गुल्म, प्रमेह, पिड़िकाप्रमेह, उदररोग, मन्दाग्नि, कास, सूजन, पाण्डु, आमरोग ये सब रोग इसके खानेसे निस्संदेह नाश हों। यह भी एक रसायन है। इस क्वाथ को कैशोरकऋषि ने कहा है इससे इसका नाम कैशोरगुग्गुल है। यह गुग्गुल कान्तिप्रद है। यह रूसादिक्वाथ के साथ खाने से नेत्ररोग, वरुणादि क्वाथ के साथ गुल्मरोग, खदिरादि क्वाथ के साथ व्रणरोग और कुष्ठ दूर करती है।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS

खट्टी, तीक्ष्ण वस्तु, मैथुन, श्रम, घाम और क्रोध इन सबको त्याग करे और संयम से रहे॥

अथ भगन्दर पर त्रिफलागुग्गुल॥

त्रिफला चूर्ण ३ पल, पीपलका चूर्ण पलभर, शुद्ध गुग्गुल ५ पल इन सबको एकत्रकर गोली बांधकर रोगी को अग्नि विचार के दे तो भगन्दर, गुल्म, शोथ और छओं अर्श दूर होती हैं॥

अथ प्रमेह पर गोक्षुरादिगुग्गुल॥

२८ पल गोखरू का छह गुने पानी में काढ़ा कर अर्धशेष ले फिर ७ पल गुग्गुल डाल पकावे जब गुड़पाकसा हो तब आगे लिखीहुई द्रव्योंको उसमें डाले--त्रिफला, त्रिकुटा, मोथा ये सातों पल पल भर मिलाय पिण्डीकर गोली बांधे फिर प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, प्रदर, मूत्राघात, वातरक्त, वातरोग, शुक्रोग और पथरी इन सबको नाश करे॥

अथ कुष्ठ पर त्रिफलामोदक॥

त्रिफला ८ पल, भिलावां ४ पल, बकुची ५ पल, बिड़ंग ४ पल और लोहभस्म, निशोत, गुग्गुल, शिलाजीत ये एक एक पल, पुष्करमूल अर्धपल, चीता अर्धपल, मिरच २ शाण तथा सोंठि, पीपल, मोथा, तज, इलायची, पत्रज, केसर इन सबको शाण शाण भर ले फिर चूर्णकर सबके समान खांड़ ले पाककर चूर्ण डाल पल पल भर की गोली बनावे फिर अग्निबल देख रोगी को खिलावे तो सब कुष्ठों को नाश करे तथा त्रिदोष, सर्व आमरोग, भगन्दर, प्लीहा, गुल्म, जिह्वा, कण्ठरोग, ग्रीवा और पृष्ठरोग ये सब नाश हों। शरीर के नीचे के रोगों में भोजनान्त में औषध देना। मन्दाग्निजनित में, भोजन के मध्य में देना तथा शिवबन्धीरोगों में, भोजनान्त में देना चाहिये॥

अथ गण्डमाला पर कचनारगुग्गुल॥

कचनार की छाल १० पल, त्रिफला ६ पल, त्रिकुटा ३ पल,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

वरुण १ पल, इलायची और पत्रज कर्ष कर्ष भर इन सबको एकत्र कर चूर्ण करे फिर सब चूर्णसमान गुग्गुल पीस कर चूर्ण मिलाय पिण्ड बनाय ४ माशे की गोली बनावे। रोग और औषध बल देख रोगी को प्रातसमय दे तो गण्डमाला, अपची, अर्बुद, घाव, ग्रन्थि, कुष्ठ, भगन्दर आदि सब रोगों को नाश करे और इसका अनोपान मुण्डीरस, हड़ का क्वाथ अथवा उष्णोदक के साथ है॥

अथ धातुपुष्ट पर माषादिमोदक॥

धुली उड़द की दाल का चूर्ण, गेहूं का चूर्ण, यवकी गूदी का चूर्ण, सांठीचावल का चूर्ण, पिपलीचूर्ण ये सब पल पल भर ले फिर सब चूर्ण का आधा घृत लेकर भूंजे तदनन्तर चूर्ण के समान खांड़ ले सबका दूना जल डाल मन्द मन्द आंचदे घोटे जब सिद्ध हो तब पल पल भरके लड्डू बांध संध्यासमय खाय उसके ऊपर से चारपल दुग्ध पिये फिर क्षार और खटाई दो रस न खाय। स्त्रीप्रसङ्ग करे तो वीर्य न द्रवे और देह पुष्ट रहे॥

अथ सूरनवटिका॥

सूखा ज़िमीक़न्द ८ भाग, चीते की छाल ४ भाग, हड़ ५ भाग, सोंठि५भाग, मिरच और पीपल २ भाग, गुड़१४ भाग ले गोली बनावे। यह गोली रुचि की देनेवाली है और मन्दाग्नि, बवासीर, क़ब्ज़ियत तथा उदर रोगों को दूर करती है। ऐसेही गीले पीलू के फलों के खाने से बवासीर, कृमि, संग्रहणी और गुल्म ये रोग दूर होते हैं॥

अथ आदित्यवटी॥

चौपाई॥

बच औ सोंठि हींग विष आन। जीरा मिर्च चीत तज जान॥
समकरि भृंगराज रस लीजै। ताहि एक क्षण मर्दन कीजै॥
चना सरिस गुटिका त्यहि करै। आदितवटी नाम शुभ धरै॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

वात रोग हिय रोग बहावै। अष्टशूल अरु गुल्म नशावै॥
पचै अन्न अति अग्नि बढ़ावै। अर्शमात्र को खोजि घटावै॥

अथ कासश्वास पर गुटिका॥

मोथा, सोंठि, हरीतकी इन तीनों को पीसकर गोली बांधे और उसे तीन दिनतक मुख में रक्खा करे और से धूरा करे तो श्वासरोग और कासरोग ये दूर हों॥

अथ लवंगादिगुटिका॥

लवङ्ग, मिरच, बहेड़े का बक्कल इन तीनों के समान भाग लेकर कूट पीस इकट्ठे करले और इन सबके समान खैरसार भी पीसकर ले ले इसके पीछे बबूल की छाल को औटाकर उसका पानी गेरकर उसकी गोली बांध ले। इस गोलीके खानेसे ८ घड़ी के पीछे सब प्रकार की खांसी को दूरकर रोगी को सुखी करती है॥

अथ सन्निपात पर गोली॥

लवङ्ग, जायफल, जावित्री, तज, पत्रज, जमालगोटा, भुना सुहागा, हड़ का छिलका, घृत की भुनीहुई हींग इन सब औषधों को धेला धेला भर ले फिर कूट पीस कपरछान कर सहँजने के रस में गोली बांधे। एक गोली गर्मपानी के साथ खाय तो दस्त लगे, पेट का भारीपन जाय, ज्वर और शीत जाय। इस गोली को १० वर्षपर्यन्त खाय तो कुष्ठ जाय॥

अथ सन्निपात पर दूसरी गोली॥

मिरच५टंक, विष२टंक इनको कूट धेलाभरबच, ५ धेला भर मोथा इनको कपरछान कर अदरकके रसमें २ पहर खरलकर पीछे १ रत्ती प्रमाण गोली बनावे।१गोली दे तो सन्निपात जाय॥

अथान्य वटिका॥

अकरकरा १ टंक, हड़ की छाल १ टंक, विष १ टंक, मिरच ३ टंक, बच७टंक, बायबिड़ंग७टंक, बहेड़े की छाल ½ सेर इन सब औषधों को कपरछानकर ½ बहेड़े की छाल के रसमें १ रत्ती

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

प्रमाण गोली बांधे। १ गोली दे तो सन्निपात दूर हो और वात, खांसी, गला और माथे का शूल, हड़फूटन ये सब रोग जायँ॥

अथ दाहयुक्त अतीसार पर गोली॥

जावित्री, जायफल, नागकेसर, लवङ्ग, अफ़ीम इन सब औषधों को एक एक टंक ले महीन पीस पानी में एक रत्ती प्रमाण गोली बांध ज़ीरा और सोंठिके अनोपान से खिलावे तो अतीसार दूर हो और दाह मिटे॥

अथ अतीसार पर लीलावती गोली॥

बच, रूमीमस्तगी, अनार की कली, वंशलोचन, आम की गुठली, लोध, मुलहठी, धाय के फूल, मोचरस, कुड़े की छाल, जायफल, बबूर की कली, माई ये सब औषधें धेला धेला भर ले और इन सबसे दूना खैर ले तथा खैर से द्विगुण कुम्हड़ा के बीज ले इन सब औषधोंको कपरछानकर पोस्तके पानी में चार चार माशे की गोली बांधे। १ गोली चावल के धोवन के साथ दे तो सात प्रकारका अतीसार जाय। पथ्य दही और भात है॥

अथ अजमोदादि गुटिका॥

अजमोद ½ भर, हड़, बहेड़ा, आंवला, सोंठि, मुलतानी, बिदारीकन्द, धनियां, मोथा, मोचरस, गजपीपल, लवङ्ग, जायफल, पीपल, चीत की छाल, अनारदाना, भारङ्गी, कमलगट्टा, मिरच, दोनों ज़ीरे, कुटकी, अजवाइन, पीपलामूल, रेणुका, बायबिड़ंग, बच, कायफल, पित्तपापड़ा, तिधारा, दतूनियां, कुरदानासार ये सब औषध कपरछान करे फिर बीस वर्ष का पुराना गुड़ ½१ सेर भर ले पाककर सब औषधें मिलाय दो दो पैसा भर की गोली बनावे। एक गोली गर्मजल से प्रातसमय खाय तो कछुई, पेट का भारीपन और उदरविकार जाय॥

अथ अपर अजमोदादि गुटिका पृष्ट पर॥

अजमोद, हड़, बहेड़ा, आंवला, बिदारीकन्द, सोंठि, धनियां,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS

मोचरस, मोथा, गजपीपल, लवङ्ग, जायफल, पीपल, मुलतानी, विजया, अनारदाना, दोनों ज़ीरे, चित्रक, भारङ्गी, कमलगट्टा, कोंच के बीज, मुलहठी, शिलाजीत, काकड़ासिंगी, केसर, नागकेसर, पुष्करमूल, शतावरि ये सब औषधें बराबर पैसे पैसे भर ले कपरछान कर फिर पांच सेर गौ का दूध मँगाय औटावे जब एक सेर शेष रहे तब एक सेर खांड़ और सब औषधें मिलाय दो पैसे प्रमाण गोली बांधे। एक गोली नित्य खाय तो बल बढ़े और पुष्टता अधिक हो॥

अथ जमालगोटे की गोली आमवात पर॥

जमालगोटा धेला भर, सज्जी, सांभरनोन, सोंचरनोन, सेंधानोन धेला धेला भर ले सोंठि ५ टंक, गौ का दही २ सेर ले इन सब औषधों को कपरछान कर दही डाल आंवले के प्रमाण गोली बांधे। १ गोली प्रभात समय खाय तो आमवात, पेट का भारीपन और देह के शोथ जायँ तथा दोनों समय खाय तो पेट के कृमि जायँ॥

अथ भूख बढ़ने की गोली॥

सेंधानमक, हड़, सज्जी, जवाखार, सोंचरनमक, सांभरनमक, खारीनमक, सोंठि, ज़ीरा, मोथा, अजवाइन, पीपल, मिरच, चीते की छाल, अजमोद, बायबिड़ंग, धनियां, तिंतिरीक ये सब औषधें पैसे पैसे भर ले कपरछान कर चूक और अदरक के रस में धेले धेले भर की गोली बांधे। एक गोली नित्य खाय तो अन्न बहुत पचे, वात दूर हो और भूख बढ़े॥

अथ कफ़ और भूख पर चित्रकादि गोली॥

चीते की छाल, पीपलामूल, अजवाइन, भुना सुहागा, पांचोंनमक, सोंठि, पीपल, मिरच, हींग, अजमोद ये सब औषधें बराबर ले कपरछान कर बिजौरा नींबू के रस में धेले धेले भर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

की गोली बांधे। १ गोली खाय तो कफ दूर हो और भूख लगे तथा अन्न पचे॥

अथ मुखपाक पर खैरसार गोली॥

जायफल, कस्तूरी, भीमसेनी कपूर और सुपारी इन सब के बराबर खैरसार ले महीन पीस गोली बनाय मुख में धरे तो मुख के सब रोग दूर हों अथवा खैरसार, जायफल, भीमसेनी कपूर, दक्षिणी सुपारी, तज, पत्रज, नागकेसर, इलायची, कस्तूरी ये सब बराबर ले महीन पीस खैरसार के काढ़े में चने प्रमाण गोली बनावे। एक गोली मुख में राखे तो जीभ, ओंठ, दांत, मुख, गला और तालू इन सबके रोग दूर हों॥

अथ पाचक की गोली॥

पावभर आक की मुँहमूंदी कली, पावभर मिरच, सेंधानमक २ पैसाभर इन सबको मिलाय महीन पीस झरबेरी के बेर प्रमाण गोली बनावे। १ गोली जल के साथ खाय तो अजीर्ण, अफरा आदि उदर रोग दूर हों और भूख बहुत बढ़े॥

अथ शंखवटी॥

शंख को सात बार तपा तपाकर मट्ठा में बुझावे तो शंख की भस्महो फिर शेषभस्म छटांकभर, सोंठि आधपाव, ज़ीरा सफ़ेद २ टके भर, चौकिया सुहागा २ टके भर, पोदीना २ टके भर, अमलबेत २ टके भर, जवाखार १ टके भर, जिरिश्क २ टके भर, भूनी हींग १ पैसा भर, सेंधानमक २ टके भर, कचलोन २ टके भर, कालानमक २ टके भर इन सबको महीन पीस कपरछान कर ½ सेर सहँजने के रस में घोटे फिर ½ सेर नींबू के रस में घोटकर झरबेरी के बेरसमान गोली बनावे। एक गोली प्रातःकाल तथा सन्ध्यासमय खाय तो अफरा आदि उदररोग सब दूर हों और पाचन हो तथा भूख की वृद्धि हो॥

In Public Domain, Chandigarh Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ गन्धकवटी ॥

शुद्धगन्धक २॥ टंक, चित्रक २ टंक, कालीमिरच २ टंक, पीपल २ टंक, जवाखार २ टंक, सेंधानमक २ टंक, कालानमक १ टंक, सांभर नमक १ टंक इन सबको पीस नींबू के रस में ७ दिन खरल करे पीछे १ टंक प्रमाण की गोली बनाय एक गोली जल के साथ ले तो अजीर्ण, शूल, आम का दोष, वायु-गोला और अफरा ये सब रोग निस्सन्देह दूर हों ॥

इति एकोनत्रिंशत्तमस्तरङ्गः ॥ २९ ॥

अथ लेपन विधान ॥

लेप के तीन नाम हैं। लिप्त, लेप और लेपन। ये तीनों सुखलेप, दोषघ्न, विषघ्न और वर्णप्रद हैं। इनका प्रमाण भी तीन प्रकार का है जो लेप अंगुल भर मोटा हो वह दोषघ्न कहलाता है और पौन अंगुल मोटे लेप को विषघ्न कहते हैं तथा अर्धांगुल लेप को वर्णप्रद कहते हैं। सब लेप रोग को हरते हैं और सूखने पर कान्ति को दूर करते हैं ॥

अथ दोषघ्न लेप ॥

गदापुरैना, देवदारु, सोंठि, सिरस, सहिंजनत्वचा इन पांचों को समभाग ले कांचीपर पीस सूजनपर लेप करे तो सूजन दूर हो। बहेड़े की मींगी के लेप से भी दाह और पीड़ा दूर होती है ॥

अथ दशांग लेप ॥

सरसों, मुलहठी, तगर, लालचन्दन, इलायची, जटामासी, हल्दी, दारुहल्दी, कूट, नेत्रबाला इन दशों को समभाग ले चूर्णकर पञ्चमांश घृत मिलाय पानी में पीस लेप करे तो विसर्प, विषदोष, विस्फोटक, सूजन और दुष्ट फोड़ा ये सब नाश हों ॥

अथ विषघ्न लेप ॥

बकरी के दूध को तिल के साथ पीसकर मक्खन मिलाय लेप

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

करे। अथवा काली मिट्टी और तिल का लेप करे तो विषसम्भव सूजन और भिलावांसूजन दूर हों॥

अथ अन्य लेप॥

करियारी, अतीस, दूधिया, कटुतोरई, मूली तीनों के बीज पांचों को समान कांजी में पीसकर कीटदंश और विस्फोटक पर लगावे तो इनका दोष मिटे॥

अथ कान्तिकारक लेप॥

रक्तचन्दन, मंजीठ, कूट, मालकांगनी, बटांकुर, मसूर इन सबको समान ले जल में पीस लेप करे तो व्यङ्गरोग मिटे और कान्ति बढ़े अथवा बीजपूर की जड़ घृत मसिल गोमयरस मिलाय लेप करे तो कान्ति बढ़े और व्यङ्गरोग दूर हो॥

अथ तरुणपिटिका पर लेप॥

तरुण मनुष्य के मुखपर जो छोटी छोटी पिटिकाएं उठती हैं उनको तरुणपिटिका कहते हैं। लोध और धनियां को पीस लेप करे अथवा गोरोचन और मिरच पानी में पीस लेप करे या सरसों, बच, लोध और सैन्धव ये सम भाग ले जल में पीस लेप करे तो मुँहपरकी तरुण पिटिकाएं अच्छी हों॥

अथ तरुणपिटिका पर लेप॥

वट का पीलापत्र, चमेली, रक्तचन्दन, कूट, दारुहल्दी और लोध इन सबको पीस लेप करे तो तरुणपिटिका, व्यङ्ग और झाईं दूर हों॥

अथ व्यंगरोग पर लेप॥

अर्जुन की छाल या मंजीठ अथवा श्वेत घोड़े के नख भस्म आदि में से कोई द्रव्य ले शहद संयुक्त लेपकरे तो व्यङ्गरोगजाय॥

अथ मुख पर की झाईं पर लेप॥

मदार के दूध में हल्दी को घिसकर लगाने से बहुत दिन की भी हुई झाईं निश्चय दूर हो॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS

अथ रूखी पर लेप ॥

पुराने तिल या उसकी लकड़ी और कुकुटबीट दोनों गोमूत्र में पीस लेप करे तो रूखी दूर हो अथवा खैर, नींबू, जामुन इन तीनों की छाल गोमूत्र में पीस लेप करे तो रूखी दूर हो ॥

अथ दारुणरोग पर लेप ॥

चिरौंजी, मुलहठी, कूट, माष, सैंधव इन सबको समान भाग ले पीसकर शहद मिलाय लेप करे तो दारुणरोग दूर हो अथवा खसखस को दूध में पीस लेप करे अथवा आम की बिजली और छोटी हड़ दूध में पीस लेप करे तो दारुणरोग नाश हो ॥

अथ इन्द्रलुप्त पर लेप ॥

कड़ुये परवल की पत्ती के रस को तीन दिन लेप करे तो बादखोरा दूर हो अथवा भटकटैया और शहद लेप करे या घुँघची के पत्र या फल का रस शहद के साथ लेप करे अथवा भिलावें का रस और शहद दोनों को लेप करे तो बादखोरा दूर हो ॥

अथ केशवर्धन लेप ॥

गोखुरू और तिल के पुष्प दोनों को बराबर ले चूर्णकर फिर समान घृत और शहद में फेंटकर लगावे तो बार बढ़ें ॥

अथ बालों के उगने की लेप ॥

हाथीदांत को जलाय रसौंत और बकरी के दूध में पीस लेप करे तो जहां बाल न हों वहां भी बाल जमें ॥

अथ इन्द्रलुप्त पर द्वितीय लेप ॥

मुलहठी, कमल, दाख तीनों को घृत या तिल का तेल और गौ के दूध में लेप करे तो बादखोरा दूर हो अथवा चतुष्पद चर्म, रोम, नख, सींग और हाड़ इनकी भस्म तिल के तेल के साथ लेप करे तो नष्टबाल भी जमें ॥

अथ कृष्णकरन लेप ॥

इन्द्रायण के बीज का तेल पातालयन्त्र से निकाल सफ़ेदबालों

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

पर लगावे तो काले हों अथवा लोहचूर्ण, भांगरा, त्रिफला, काली मिट्टी इन सबको चूर्णकर उष्णरसमें सान मासभर राख कुछ दिन तक लेप करे तो अकाल के पके बाल काले हों अथवा आंवले ३ हड़ २ बहेड़ा १ आम की बिजुली ५ लोहचूर्ण एक कर्ष ले सबको कड़ाही में खूब घोटे और उसको दिन रात्रि उसीमें रहने दे फिर लेप करे तो श्वेत केश काले हों अथवा त्रिफला, तिल के पत्ते, लोहे का चूर्ण और भांगरा सबको समभाग ले बकरे के मूत्र में पीस पके हुए बालों पर लेप करे तो बाल काले हों। अथवा त्रिफला, लोह का चूर्ण, अनार की छाल, कमल की नाल इनको पांच पल ले उसमें भांगरे का रस छह प्रस्थ निचोड़ लोहे की कड़ाही में खूब घोटे और एक मास तक उसमें रक्खे तदनन्तर बकरी के दूध में पीस श्वेत बालों पर लेप करे और अरण्ड के पत्ते बांधे फिर रात्रिभर बँधे रहने दे और प्रभात स्नानसमय धो डाले इस प्रकार से तीन दिन लेप करे तो सफ़ेद बाल काले हों॥

अथ लोमशातन प्रकार॥

अथ बाल गिराने का लेप॥

शंखचूर्ण २ भाग, हरताल १ भाग, मैनसिल आधा भाग इन सब औषधों को पानी में पीस जहां के बाल गिराने हों वहां लेप कर दे और बाक़ी बालों को कपड़े से ढँक दे फिर लेप के पहिले बाल दूरकर उस जगह में यह लेप सात बार करे तब सब बार गिरें और फिर न हों अथवा हरताल, शंखचूर्ण, पलाशक्षार ये दो दो शाण लेके दण्ड अथवा आकपत्र के रस में पीस लेप करे तो बाल गिरें। यह लेप बाल गिराने को अच्छा है॥

अथ सफ़ेदकुष्ठ पर लेप॥

पीली चमेली, गजपीपल, कसीस, बिड़ंग, मैनसिल, गोरोचन, सैन्धव इन सबको बराबर ले गौ के मूत्र में पीस लेप करे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

तो सफ़ेदकुष्ठ दूर हो अथवा काकटोटी, कूट, पीपल इन सबको समान ले खसी के मूत्र में पीस लेप करे तो श्वेतकुष्ठ दूर हो अथवा बकुची, अमलबेत, सलाष, कठगूलर, पीपल, रसौंत, लोहचूर्ण, कालेतिल आठों को समभाग ले गोपित्त में पीस लेप करे तो श्वेतकुष्ठ दूर हो ॥

अथ सेहुआं पर लेप ॥

आंवला, राल, जवाखार इन सबको सौवीर अथवा कांजी में पीस लेप करे तो सेहुआं दूर हो अथवा दारुहल्दी, मूली के बीज, हरताल, देवदारु और पान ये सब कर्ष कर्ष भर ले और शंखचूर्ण शाणभर ले पानी में पीस लेप करे तो सेहुआं दूर हो ॥

अथ नेत्र पर लेप ॥

हड़, सैन्धव, गेरू, रसौंत इन चारों को समान ले पानी में पीस पलक पर लेप करे तो सब नेत्ररोग दूर हों अथवा रसौंत, सोंठि, मिरच, पीपल इन चारों को समान ले पानी में पीस गोली बनाय पलक पर लेप करे तो नेत्रकी खुजली और गुहांजनी और छोटी छोटी पिटिकाएं दूर हों ॥

अथ खुजली पर लेप ॥

चकौड़ के बीज, बकुची, सरसों, तिल, कूट, हल्दी, दारुहल्दी और मोथा इन आठों को समभाग ले मट्ठे में पीस लेप करे तो खुजली, दाद, विचर्चिका, पांवफूटना आदि रोग दूर हों ॥

अथ सूखी खाज पर लेप ॥

चाक, बिड़ंग, शिंगरफ़, गन्धक, चकौड़ के बीज, कूट, सिंदूर इन सातों को समान ले नींब के पत्ते, धतूरा के पत्ते और पान तीनों का रस निकाल अलग अलग पूर्वोक्त द्रव्यरस में पीस लेप करे तो सूखीखाज, दाद, विचर्चिका, पदफूटना, खाज, रक्तकुष्ठ ये सब नाश हों अथवा दूब, छोटी हड़, सैंधव, चकौड़

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

के बीज और कटसरैया इन पांचों को मिट्टी में पीस लेप करे तो खुजली, दाद आदि दूर हों ॥

अथ रक्तपित्त पर लेप ॥

लालचन्दन, खस, मुलहठी, बरियारा, व्याघ्र के केश और कमल ये छहों सम भाग ले पानी में पीस लेप करे तो रक्त-सम्बन्धी शिर के रोग जायँ ॥

अथ उदररोग पर लेप ॥

सरसों, हल्दी, कूट, चकौड़ के बीज और तिल ये सब समान ले कड़ुये तेल में पीस लेप करे तो शीत पित्तसम्बन्धी उदररोग दूर हों ॥

अथ वातविसर्प पर लेप ॥

रासना, नीलकमल, देवदारु, रक्तचन्दन, मुलहठी और बरियारा इन सबको बराबर ले दूध में पीस घृत मिलाय लेप करे तो वातविसर्प दूर हो ॥

अथ पित्तविसर्प पर लेप ॥

कमल की नाल, रक्तचन्दन, पठानीलोध, खस, कमल, कोकाबेली, सरिवन, आंवला, जंगीहड़ ये सब बराबर ले पानी में पीस लेप करे तो पित्तविसर्प अवश्य दूर हो ॥

अथ कफविसर्प पर लेप ॥

त्रिफला, पद्माक, खस, धव के फूल, कनेरमूल और जवासा ये सब सम ले पीस लेप करे तो कफविसर्प दूर हो ॥

अथ पित्तवातरक्त पर लेप ॥

सोरफली, नीलकमल, पद्माक, सरसों के फूल इनका चूर्ण सौ बारके धोये घृतमें मिलाय खूब फेंटकर लेप करे तो वातरक्त जाय॥

अथ नाकरक्तस्राव पर लेप ॥

आंबले को घृत में भूनकर कांजीके पानी में लेप करे तो नाक से रुधिर गिरना बन्द हो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ वातजशिरपीड़ा पर लेप ॥

कूट या मुचकुन्द के पुष्प को कांजी के जल में पीस अरण्ड का तेल मिलाय मस्तक पर लेप करे तो वातजन्य शिर की पीड़ा मिटे अथवा देवदारु, तगर, कूट, सुगन्धबाला इन पांचों को समान ले कांजी में पीस अरण्ड का तेल मिलाय मस्तक पर लेप करे तो वातसम्भव शिरपीड़ा दूर हो ॥

अथ पित्तजशिरोरोग पर लेप ॥

आंवला, कसेरू, सुगन्धबाला, कमल, पद्माक, रक्तचन्दन, दूबजड़, खस, नरकट की जड़ इन सबको बराबर ले पानी में पीस माथे पर लेप करे तो पित्तसम्बन्धी और रक्तपित्तसम्बन्धी मस्तकपीड़ा दूर हो ॥

अथ कफसम्भव शिरपीड़ा पर लेप ॥

मेवड़ी के बीज, तगर, बालछड़, मोथा, इलायची, अगर, देवदारु, जटामासी, रासना और एरण्डमूल ये सब पानी में पीस गर्मकर माथेपर लेप करे तो कफ की पीड़ा जाय ॥

अथ सूर्यावर्त पर लेप ॥

सरिवन, कूट, मुलहठी, पीपल, नीलकमल इन सबको कांजी में पीस अरण्ड का तेल मिलाय लेप करे तो सूर्यावर्त (आधाशीशी) दूर हो ॥

अथ शंखक, अनन्तवात और सर्वशिरोरोग पर लेप ॥

छतारी, नीलकमल, दूब, काले तिल और गदापुरैना इन पांचों को समान ले पानी में पीस लेप करे तो शङ्खक, अनन्तवात और सब शिरपीड़ा मिटे ॥

अथ पित्तशोथ पर लेप ॥

मुलहठी, रक्तचन्दन, मुर्ग, नरकट की जड़, पद्माक, खस, नेत्रबाला, कमल ये सब समान ले पानी में पीस लेप करे तो पित्तशोथ नाश हो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ कफशोथ पर लेप ॥

पीपल, पीना, सहिंजने की छाल, बालू या खांड़ इन सब को गोमूत्र में पीस गुनगुना लेप करे तो कफशोथ दूर हो ॥

अथ आगन्तुक और रक्तशोथ पर लेप ॥

हल्दी, दारुहल्दी, रक्त और श्वेतचन्दन, हड़, दूब, गदापुरैना, खस, पद्माक, लोध, गेरू, रसौंत ये सब समान भाग ले पानी में पीस आगन्तुक और रक्तजशोथ पर लेप करे तो उक्त रोगदूरहों॥

अथ व्रण पकाने पर लेप ॥

सनकी जड़, मूली, सहिंजने के बीज, तिल, सरसों, यव, लोह-कीट, अलसी ये आठोंसमानले पानीमें पीस लेप करे तो व्रणपके॥

अथ व्रण फोड़ने पर लेप ॥

लटज़ीरा की जड़, चीते की जड़ अथवा छाल, सेहुँड़, मदार का दूध, गुड़, भिलावां, कसीस, सैन्धव ये औषधें दूध में पीस व्रण पर लेप करे तो अवश्य फूटे अथवा करञ्ज की मींगी, भिलावां, दात्यूणीमूल की छाल, चीता, कनेर ये पांचों कबूतर या कुञ्ज अथवा गिद्ध आदि की बीट के समान ले लेप करे तो फोड़ा फूटे अथवा सज्जी और जवाखार दोनों का लेप करे या चोख की जड़ की छाल ले लेप करे तो फोड़ा फूटे ॥

अथ व्रणशोधन लेप ॥

तिल, सैन्धव, मुलहठी, नींब के पत्ते, हल्दी, दारुहल्दी, निशोथ ये सब समान भाग ले चूर्ण कर घी में घेप फूटे हुए फोड़े पर लगावे या इनके कल्क की टिकिया बनाय घी में छोड़ जलावे जब टिकिया जल जाय तब उतार टिकिया फेंक दे और घी रख छोड़े। इन दोनों प्रकार से व्रण शुद्ध होता है ॥

अथ व्रणशोधन पर लेप ॥

नींब के पत्ते, घृत, मधु, दारुहल्दी, मुलहठी और तिल इन सबको पीस लेप करे तो व्रण शुद्ध हो और पूर आवे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS

अथ कृमिनिवारण लेप ॥

करञ्ज, नींब, बकायन तीनों को घिस कृमि के स्थान में भरे तो कृमि मरजायँ या लहसुन अथवा हींग भरे वा हींग और नींब के पत्ते भरे तो कृमि नाश हों ॥

अथ व्रणशोधनरोपण पर लेप ॥

नींब के पत्ते, तिल, दात्यूणी की जड़, सैन्धव ये सब समान पीस शहदयुक्त लेप करे तो व्रण शुद्ध होकर पूर आवे ॥

अथ पेटपीड़ा पर नाभि लेप ॥

मैनफल और कुटकी कांजी में पीस कुछ गर्म कर नाभि पर लेप करे तो पेटशूल मिटे ॥

अथ वातविद्रधि पर लेप ॥

सहिंजने की छाल, बकायन के पत्ते, एरण्डमूल, यव, गेहूँ, मूंग ये सब बराबर पीस सुखोष्ण लेप करे तो विद्रधि दूर हो ॥

अथ पित्तविद्रधि पर लेप ॥

लावा और मुलहठी को शक्कर तथा घी में लेप करे अथवा असगन्ध, खस, रक्तचन्दन दूधमें पीस लेपकरे तो विद्रधि दूर हो ॥

अथ कफविद्रधि पर लेप ॥

ईंट, बालू, लोहकीट, गोबर इन चारों को गोमूत्र में पीस लेप करे तो कफविद्रधि दूर हो ॥

अथ आगन्तुकविद्रधि पर लेप ॥

रक्तचन्दन, मंजीठ, हल्दी, मुलहठी ये सब समान ले दूध में पीस चोट अथवा रुधिरविकार पर लेप करे तो अच्छा हो ॥

अथ वातगलगण्ड पर लेप ॥

बेत और सहिंजने के बीज समान ले जल में पीस शीत, गर्म और प्रदेहसंज्ञक लेप करे तो रोग दूर हो इसी तरह दशमूल का लेप करे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ कफगलगण्ड पर लेप ॥

देवदारु, इन्द्रायण दोनों को नौ नौ ले लेप करे तो गण्डमाला दूर हो ॥

अथ अपची पर लेप ॥

सरसों, नींब के पत्ते और भिलावां तीनों को बराबर ले मेष के मूत्र में लेप करे तो अपची जाय ॥

अथ गण्डमाला, अर्बुद और गलगण्ड पर लेप ॥

सरसों और सहिंजने के बीज, सनई के बीज और अरसी, यव तथा मूली के बीज ये सब औषधें समान भाग ले मट्ठे में पीस लेपकरे तो गण्डमाला, अर्बुद और गलगण्ड ये रोग दूरहों॥

अथ अपबाहुक पर लेप ॥

केवल वातपीड़ित कोई अङ्ग अपने स्वाभाविक कर्म में पीड़ा करे वहां के रोम दूर कर घुंघची पीस सुखोष्ण लेप करने से अपबाहुक, वायु, विस्वाची, हाथ की गृध्रसी और जंघा की वायुसंभव पीड़ा दूर हो ॥

अथ फ़ीलपांव पर लेप ॥

धतूरा, एरण्ड, मेवड़ी तीनों की पत्ती, गदापुरैना, सहिंजने की छाल, सरसों ये छहों पीस अतिकाल के भये फ़ीलपांव पर लेप करे तो अच्छा हो ॥

अथ उपदंश पर लेप ॥

कनेर की जड़ पानी में पीस इन्द्रिय पर लेप करे तो उपदंश सम्बन्धी असाध्यपीड़ा दूर हो ॥

अथ कुरण्ड रोग पर लेप ॥

कालाजीरा, हाऊबेर, कूट, एरण्डमूल, बेर की छाल ये पांचों समान ले कांजी के पानी में पीस अण्डकोशपर लेप करे तो अच्छे हों अथवा त्रिफला कड़ाही में जलाय राखकर शहद में फेंटि लेप करे तो गर्मी के घाव शीघ्र पूर आवें अथवा रसौंत,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

सरसों दोनों समान पीस शहद में घेप उपदंशसम्बन्धी राद बहते हुए व्रणपर लेप करे तो उपदंश दूर हो ॥

अथ अग्निदग्ध पर लेप ॥

वंशलोचन, पाकरि, रक्तचन्दन, गेरू, गुर्च ये पांचों पीस घी में मिला जरे पर लगावे अथवा घी को चौराई के क्वाथ में मिला लेप करे तो जरे की व्यथा दूर हो अथवा यव की राख तिल के तेल में घेप लगावे तो दग्धव्रण पूर आवे ॥

अथ योनिसंकीर्ण लेप ॥

पलाशफल और गूलर के फल तिल के तेल में पीस शहद मिलाय योनि में लेप करे तो दृढ़ और संकुचित हो अथवा माजू, कपूर पीस शहद में फेंटि लेप करे तो गिरी हुई योनि तन आवे ॥

अथ पुरुष की इन्द्रिय कठोर करने का लेप ॥

मिरच, सैन्धव, पीपल, तगर, भटकटैया के फल, लटज़ीरे के बिया, कालेतिल, कूट, यव, उड़द, असगन्ध ये सब समान पीस शहद मिश्रित कर नित्य इन्द्रिय पर मला करे तो इन्द्रिय मोटी हो और स्त्री के स्तनों पर लगाया करे तो स्तन कठोर पड़ जायँ तथा पुरुष के भुजदण्ड और कानों पर मलना अच्छा है अथवा श्वेतफूल का असगन्ध और सैन्धव दोनों महीन पीस चौगुना घृत और घृत का चौगुना भेड़ का दूध एक कर आंचपर दूध जलाय या छान इन्द्रिय पर लगावे तो इन्द्रिय मोटी हो ॥

अथ योनिद्रव लेप ॥

इन्दूरन के पत्तों का रस ले पारा को रक्तकनेर के सोंटे से घोटे बार बार रस डाले जब पीठी के समान कजली हो तब इन्द्रिय पर लेप स्त्रीप्रसङ्ग करे तो स्त्री सुख पावे और पहिले वीर्य पात करे॥

अथ देह दुर्गन्ध निवारण लेप ॥

पानों को हड़ और पानी में पीस लेप करे तो दुर्गन्ध दूर हो अथवा भूनी हुई कुलथी, कूट, जटामासी, श्वेतचन्दन का बुरादा, भूने चने इनको पीस छानकर धूरा करे तो दुर्गन्ध जाय ॥

CC-0. In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ वशीकरण लेप ॥

बच, कालानोन, कूट, हल्दी, दारुहल्दी, मिरच ये सब समान पानी में पीस देह में लगावे तो अच्छा है ॥

इति त्रिंशत्तमस्तरङ्गः ॥ ३० ॥

अथ षड्ऋतु वर्णन ॥

हिमऋतु १ शिशिरऋतु २ वसन्तऋतु ३ ग्रीष्मऋतु ४ वर्षाऋतु ५ शरद्ऋतु ६ ये सब दो दो महीने की हैं। अगहन, पौष हिमऋतु। माघ, फाल्गुन शिशिरऋतु। चैत्र, वैशाख वसन्तऋतु। ज्येष्ठ, आषाढ़ ग्रीष्मऋतु। श्रावण, भादौं वर्षाऋतु। आश्विन, कार्त्तिक शरद्ऋतु हैं ॥

अथ अन्यमत से ॥

मेष और वृष की संक्रान्ति ये दोनों ग्रीष्मऋतु हैं १ मिथुन, कर्क की संक्रान्ति को प्रावृट् ऋतु कहिये। इस ऋतु में बादलों से अम्बर छाया रहे मरोड़े को लिये थोड़ा बरसे भी यह ऋतु वर्षाऋतु का भेद है २ सिंह और कन्या की संक्रान्ति को वर्षाऋतु कहिये ३ तुला और वृश्चिक की संक्रान्तिको शरद्ऋतु कहिये ४ धन और मकर की संक्रान्ति को हेमन्तऋतु कहिये ५ कुम्भ और मीन की संक्रान्ति को वसन्तऋतु कहिये ॥ ६ ॥

अथ छहों ऋतु में वायु, पित्त और कफ का संचय, प्रकोप और शान्ति ॥

ग्रीष्मऋतु में वायु का संचय, वर्षाऋतु में वायु का कोप, शरद्ऋतु में वायु की शान्ति, वर्षाऋतु में पित्त का संचय, शरद्ऋतु में पित्त का कोप, हिमऋतु में पित्त की शान्ति, शिशिरऋतु में कफ का संचय, बसन्तऋतु में कफ का कोप, ग्रीष्मऋतु में कफ की शान्ति होती है समय में वायु, पित्त, कफों के प्रकोप और शान्ति आहार-विहार से होती है और ये बिना समय आपही शान्त होते हैं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri Funding by IKS

अथ वायुकोपकारक आहार-विहार ॥

यह विना समय हलकी, रूखी, थोड़ी और अतिशीतल वस्तु से अतिखेद से संध्यासमय मैथुन करके शोच, भय और चिन्ता से तथा रात्रि के जागने से, चोट के लगने से, अन्न के अजीर्ण होने से धातु के क्षीणपने से और इसी प्रकार,के अन्य कारणों से भी वायु का कोप होता है। बायु के कोप को दूर करने का यत्न करे तो वायु की शान्ति होती है ॥

अथ पित्तकोपकारक आहार-विहार ॥

कड़ुवी, खट्टी, गर्म और तीक्ष्ण वस्तु के बहुत खाने से, क्रोध से, धूप आदि की गर्मी से, मध्याह्नसमयमें क्षुधा और तृषा के रोकने से, अन्न के अजीर्ण से आधीरात के समय पित्त कोप को प्राप्त होता है। यह पित्तनाशक यत्न करने से शान्त होता है ॥

अथ कफकोपकारक आहार-विहार ॥

मीठी, चिकनी द्रव्य के खाने, शीतल भोजन करने, दिन के सोने, अग्निमन्द होने और प्रभात के समय भोजन करे पीछे खेद आदि कारणों से कफ कोप को प्राप्त होता है। कफनाशक यत्नों से कफ की शान्ति होती है ॥

अथ हिमऋतु के सेवन का आहार-विहार ॥

नवीन भैंस और गौ का घृत, मीठा गुड़, मीठा दही, नोन, तेल का मर्दन, तिल, गेहूं, उड़द, मिश्री आदि मीठी द्रव्य, सोंठि संयुक्त हड़, अग्नि, निर्वातस्थान, नूतनवस्त्र, नवीनस्त्री आदिका सेवन हितकारकहै—इति हिमऋतुके आहार-विहार १॥

अथ शिशिरऋतु के आहार-विहार ॥

पीपलसंयुक्त हड़, मिरच, अदरक, नवीनघृत, सेंधानोन, बड़े, गुड़, दही और हिमऋतु में जो कहे हैं वे सब इसमें सुख-दायक हैं—इति शिशिरऋतु की विधि २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ वसन्तऋतु के आहार-विहार ॥

वसन्तऋतु में कोप को प्राप्त हुआ कफ रोगों को उत्पन्न कर जठराग्नि को नाश करता है इसलिये शहदसंयुक्त हड़ खाय तो कफ दूर होकर शरीर में बल होता है तथा इस ऋतुमें त्र्यूषण और चित्रक का खाना पथ्य है। कफहारी द्रव्य भी अच्छे हैं-इति वसन्तऋतु की विधि ३ ॥

अथ ग्रीष्मऋतु के आहार-विहार ॥

ग्रीष्मऋतु में सूर्य सर्व प्राणीमात्र का बल हर लेते हैं इसलिये वृक्षादिक की सघनछाया की सेवा योग्य है। गुड़संयुक्त हड़, शीतलजल आदि द्रव्य, मधुर और हलका भोजन, दाख, चिकनी द्रव्य, शिखरन, सत्तू, मिश्री का शर्बत, शीतलजल में पैरना, खस खाना, फ़व्वारा आदि का छुड़ाना, कपूर और चन्दनादिक का लेपन, दिन का सोना, खस का पंखा, क्षीर का भोजन इत्यादि और भी अच्छी वस्तुएं इस ऋतु में पथ्य हैं। कड़ुवी, तीक्ष्ण, नोन, खटाई, दाह को करनेवाली वस्तु, खेद, दारू और धूप ये कुपथ्य हैं-इति ग्रीष्मऋतु की विधि ४ ॥

अथ वर्षाऋतु के आहार-विहार ॥

सेंधानोनसंयुक्त हड़, चिकनी द्रव्य, नोन, खटाई, सालब-मिश्री, सोंठि, मिरच, पीपल, पीपलामूल, चित्रक, सेंधानोन इन संयुक्त दही का मट्ठा, गर्मपानी, कुएं का जल, सफ़ेदवस्त्र, भ्रमण, हलका भोजन और जुलाब ये इस ऋतु में पथ्य हैं तथा दिन का सोना, खेद, धूप में रहना, तालाब का जल, दही, वन, ध्यान और मैथुन ये कुपथ्य हैं-इति वर्षाऋतु की विधि ५ ॥

अथ शरदृऋतु के आहार-विहार ॥

वर्षाऋतु में उपजा पित्त शरदृऋतु में कोप करता है उसके दूर करने के लिये मिश्रीसंयुक्त हड़ का सेवन, मिश्री आदि मीठी वस्तु, साठीचावल, मूंग, सरोवर का जल और औटा दूध ये

In Public Domain. Sarayu Trust. eGangotri, Delhi

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

पथ्य हैं तथा तीक्ष्णवस्तु, नोन, खटाई, आसव, धूप, दूध, दिन का सोना और पूर्व की पवन ये शरद् ऋतु में कुपथ्य हैं। ऋतु उतरने में सात दिन तक उसी ऋतु की विधि करे और आठवें दिन से प्रारम्भवाली ऋतु की विधि करे—इति छहों ऋतु के आहार-विहार की विधि सम्पूर्ण ६ ॥

अथ दिनचर्या विधि ॥

मनुष्य को चाहिये कि चार घड़ी के तड़के उठके अपने इष्ट-देव या और देवता का ध्यान करे फिर यह विचारे कि आज क्या करना है पीछे शय्या से उठ मल-मूत्र का त्याग करे और इनका वेग न रोंके। दिन में उत्तर दिशा की ओर तथा रात्रि में दक्षिण दिशा की ओर मुखकर मल-मूत्र करे परन्तु मल-मूत्र करते समय बोले नहीं। फिर सूधे वृक्ष मौलसरी आदि की अपने हाथ की कनिष्ठिका अंगुली समान पतली और सूधी बारह अंगुल की दँतून कर उसको फाड़कर जीभ को शोधे और शीतलजल से १२ कुल्ले करे पीछे शीतलही जल से मुख धोवे तो मुखके सब रोगजायँ। सेंधानोन आदि में सोंठि और भुनाज़ीरा मिलाय महीन पीस नित्य मर्दन करे तो दांतों में रोग न होवे। शरीरमें नारायणादि तैलको मर्दन करे उसकी चिकनाई दूर करने के लिये चने का आटा और कठोरल आदि का उबटन करे पीछे शरीर के बलानुसार कुश्ती करे तदनन्तर श्रम दूर कर सुहाते सुहाते गर्म पानी से कमर ऊपर से स्नान करे तो रोग न हों ॥

अथ स्नान के गुण ॥

स्नान शोच, गर्मी के रोग, हृदय का ताप, रुधिर का कोप और शरीर की दुर्गन्ध इनको दूर करता है। कान्ति और तेज को बढ़ाता, पाप और मन की ग्लानि को दूर करता है एवं क्षुधा, रुचि और बुद्धि, धर्म, सुख, द्रव्य इन सबको बढ़ाता है। शरीर को आनन्द देता, शरीरकी कृशता और मार्गके खेद को दूर करता है।

In Public Domain, Chanakya Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

ये स्नान में गुणहैं। इतने रोगवाला मनुष्य स्नान न करे— नींदसे उपरान्त, नींद आती हो और ज्वर, खेद और हिचकी के रोगवाला, भोजन करके, क्षीण पुरुष, कफ और वायु तथा वमन के रोगवाला स्नान न करे। स्नान करके संध्यावन्दन तथा देवता, गो, ब्राह्मण, आचार्य, गुरु और अतिथि आदि का पूजन करे पीछे शक्तिमुआफ़िक़ दान दे फिर मध्याह्न के समय बलिवैश्वदेवादिक कर किसी अतिथि को वित्तानुसार भोजन कराय कुटुम्ब समेत आप भोजन करे। प्रथम मधुर, चिकना, हितकारी और चावल, मूंग, गेहूं आदि की रोटी घृत-संयुक्त अच्छी तरकारी के साथ खाय और शनैः शनैः भोजन करे। भोजनमें शीघ्रता न करे और भोजन के अन्तमें मिश्री के संयोग से दूध पीवे दही न खाय। भोजन बहुत थोड़ा और बहुत अधिक न खाय। अपनी रुचि के अनुसार भोजन करे और भोजन करते समय माता, पिता, मित्र, वैद्य, पाक का कर्ता, मोर, चकोर, कुक्कुट, श्वान और वानर इनको बैठा ले। इनकी दृष्टि अच्छी है। अगस्त्य १ कुम्भकर्ण २ शनैश्चर ३ बड़वानल ४ भीमसेन ५ इन पांचोंका स्मरण करने से भोजन अच्छी तरह पच जाता है। भोजन के उपरान्त सुगन्धित फूलों की मालां, इतर, अच्छे वस्त्र इनको धारण करे और खसके पंखे आदि से पवन करावे तथा शीतल छाया में रहे। भोजन के उपरान्त २ घड़ी पीछे शीतल और मीठा जल थोड़ा थोड़ा पीवे। अधिक पीवे तो रोग होताहै क्योंकि भोजन के आदि में जल पीवे तो अग्निकी मन्दता और भोजन के अन्त में पीवे तो विष का सा गुण करता है। अजीर्ण में जल पीवे तो अजीर्ण पच जाय। अन्न पचे पीछे जल पीवे तो शरीर में बल हो। रात्रि के अन्त में जल पीवे तो सब रोग जायँ। भोजन कर बैठजाय तो शरीर में भारीपना हो और भोजन कर सूधा सोवे तो बल हो।

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS

भोजनकर बाईं करवँट सोना आयुर्बल बढ़ाता और भोजन कर दौड़ना मृत्युका बुलाना है। भोजन करे पीछे बाईं करवँट २घड़ी सोवे नींद ले नहीं अथवा भोजन करे पीछे १०० पग चले अथवा भोजन के अन्त में गौ की छांछ पीवे तो गुण करे। अच्छा रात्रि का जमाया भैंस अथवा गौ के दही को मथकर वस्त्र में छान ले फिर उसमें मिश्री का बूरा, मिरच, इलायची, भीमसेनीकपूर आदि अनुमान मुआफ़िक़ मिलाय इस शिखरन को पीवे तो शुक्र और बल को बढ़ावे और रुचि करे तथा वात-पित्त के रोग को दूर करे—इति शिखरन करने की विधि॥ भैंस के दही को छान उसमें सोंठि, मिरच, पीपल, राई, नोन इन्हें महीन पीस मिलाय अनुमान मुआफ़िक़ खाय तो कफ-वात को दूर करे। और बल करे। शीतकाल में दही खाना अच्छा है—इति मठा करने की विधि॥

संध्या के समय इतनी वस्तु करे नहीं भोजन १ मैथुन २ निद्रा ३ पढ़ना ४ भोजन करने से रोग होता है और संध्या में मैथुन करे तो भयंकर सन्तान, निद्रा आवे तो दरिद्री और पढ़ने से आयुर्बल की क्षय होती है॥

अथ रात्रिचर्या॥

रात्रि में चांद की चांदनी में सोने से कामदेव की वृद्धि हो और शरीरका दाह दूर हो और अँधेरी रात आनन्दादिक को दूर करती है। रात्रि के प्रथम पहर में भोजनादिक करे पीछे शयन करे। सुन्दर स्थान में अच्छी यौवनवती स्त्री से शक्तिमुआफ़िक़ संभोग करे और शक्ति न हो तो संभोग न करे। संभोगकी आदि में भैंस का अथवा गऊ का दूध औटाय मिश्रीके संयोग से पीवे और संभोग के अन्त में भी रुचिमुआफ़िक़ पीवे तो पुरुष के जरापने का रोग कभी न हो॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ छह वस्तुएं प्राण को, तत्काल हरती हैं॥

सड़ा मांस १ वृद्धा स्त्री २ धूप का सोना ३ तत्कालका जमाया दही ४ प्रभात समय मैथुन ५ प्रभात समय निद्रा ६ ये छह तत्काल प्राण को हरते हैं॥

अथ छह वस्तुएं मनुष्य को तत्काल आनन्द देती हैं॥

तत्काल का मांस १ नवीन अन्न २ बाला स्त्री ३ क्षीर का भोजन ४ नवीन घृत ५ उष्णोदक से स्नान ६ ये छह वस्तु प्राणी को तत्काल आनन्दित करती हैं॥

अथ छहों ऋतुओं में इस विधि से स्त्रीसंभोग करे॥

हिम और शिशिरऋतु में अपने शरीर की शक्तिमुआफ़िक़ वारंवार स्त्री से संभोग करे तो रोग न हो शरीर में आनन्दही रहे और वसन्तऋतु में तीसरे दिन तथा शरद्ऋतु में तीसरे चौथे दिन स्त्रीसेवन करे तो रोग न हो और वर्षा में पांचवें और ग्रीष्मऋतु में छठें या पन्द्रहवें दिन स्त्री से संभोग करे तो रोग न हो। शीतऋतु में, रात्रि में तथा ग्रीष्मऋतु में, दिन में एवं वर्षाऋतु में, दिन में और रात्रि में जब मेघ गाजे तथा बरसे उस समय स्त्री से संभोग़ करे तो रोग न हो। शरद्ऋतु में काम देव जागे तब संभोग करे तो रोगरहित रहे॥

अथ इतनी स्त्रियों से संभोग न करे॥

रजस्वला स्त्री से १ रोगवाली स्त्रीसे २ वृद्धा स्त्रीसे ३ जिस स्त्री के कामदेव न जगे उससे ४ मलीन स्त्री से ५ सात महीने की गार्भिणी से ६ जिस स्त्री की योनि में गर्मी का रोग हो उस से ७ संभोग न करे॥

अथ और तरह भी मैथुन वर्जन॥

भययुक्त १ अधीर २ क्षुधित ३ रोगी ४ तृषित ५ बालक६ वृद्ध ७ मल-मूत्र आदि का जिसके वेग लग रहा हो ८ इतने पुरुष मैथुन न करें॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ अतिमैथुन से इतने रोग होते हैं ॥

शूल चले १ खांसी आवे २ विषमज्वर हो ३ क्षीण पड़जाय और वायु के पक्षाघातादिक रोग हों ४ मैथुन के उपरान्त स्नान कर मिश्री के संयोग का गर्म दूध पीवे, मांसादिक मीठा रस खाय, आसव पीवे, खस के व्यजन से पवन करावे, शयन करे और रात्रि को न बहुत जागे और न दिनमें बहुत सोवे। रात्रि के अन्तमें ५ घड़ी के तड़के आठ अञ्जलि प्रमाण शीतलजल पीवे पीछे ४ घड़ी के तड़के उठे इस विधि से सदा करे तो उस पुरुष के कभी भी रोग न होवे सदा आरोग्य रहे। ये सब विधियां भावप्रकाश और शार्ङ्गधर में लिखी हैं—इति रात्रिचर्या की विधि सम्पूर्ण ॥

अब मनुष्य के शरीर में जो वायु, पित्त, कफ, धातु, उपधातु और शरीर की उत्पत्ति और नाश आदि का यथार्थ स्वरूप अति संक्षेप से अपनी बुद्ध्यनुसार लिखता हूं ॥

मनुष्य के शरीर में इतनी वस्तुएं हैं—कला ७ आशय ७ धातु ७ उपधातु ७ सातों धातुओं के मल ७ त्वचा ७ दोष ३ देह में मांस, हाड़ और मेद इन सबके बांधने की नसैं १०० हैं और दो सौ दस इसमें हाड़ हैं और कई एक आचार्यों के मत से २०० हाड़ हैं, १०७ मर्मस्थान हैं, नसें ७० हैं, रसके बहनेवाली धमनी नाड़ी २४ हैं, मांस की पिण्डी ५०० हैं, स्त्रियों के मांस की पिण्डी ५२० हैं, सबसे बड़ी नाड़ी शरीरव्यापिनी १६ हैं उन्हें कंडरा कहते हैं। मनुष्य के शरीर में १० और स्त्री की देह में १३ छिद्र हैं। स्त्रियों के देह में शास्त्र के अनुसार अपनी बुद्धि के मुआफ़िक़ जो कुछ है वह लिखते हैं ॥

अथ कला का स्वरूप ॥

धातु और आशय इनके बीच जो झिल्ली है जिसमें बालक रहता है उसको कला कहते हैं। वह कला ७ प्रकार की है-मांस,

In Public Domain. Ghambal Ambians. Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

रुधिर और मेद इन तीनों के बीच एक झिल्ली है १ इनके और फिया के बीच में एक झिल्ली है २ आंतों के बीच एक झिल्ली है ३ एक झिल्ली उदर की अग्नि को धारण कर रही है ४ एक झिल्ली वीर्य को धारण कररही है ५ इन्हें सात कला कहिये ॥

अथ सात आशय ॥

हृदय में आशय नाम स्थान कफ का घर है १ हृदय के नीचे आम का स्थान २ नाभि के ऊपर बाईं ओर अग्नि का स्थान ३ अग्नि के ऊपर तिल है नाभि के नीचे पवन का स्थान ४ पवन के स्थान के नीचे पेडू में मल का स्थान ५ पेडू के लगताही कुछ नीचे मूत्र का स्थान है उसे बस्ति कहते हैं ६ हृदय के कुछ ऊपर जीव का और रुधिर का स्थान ७ ये सम्पूर्ण स्त्री और पुरुषों के आशय हैं और स्त्री के ३ आशय अधिक हैं। एक गर्भ का स्थान १ दो दूध के स्थान स्तन २॥

अथ सात धातु ॥

रस १ रुधिर २ मांस ३ मेद ४ अस्थि ५ मज्जा ६ शुक्र ७ ये सातों धातु पित्त के तेजकर पची हुई एक महीने में वीर्य को पैदा करती हैं चौथे चौथे दिन एक एक धातु पैदा होती है जो अन्न-पानी खाया जाताहै वह पित्तके तेजसे रस होता और पित्तके तेज से पककर रुधिर होजाता है। इसी तरह सातों धातु जानिये॥

अथ सात उपधातु ॥

जीभ, नेत्र और कपोल का मल ये तीनों रसधातु की उपधातु हैं १ रंज, कफ, पित्त ये रुधिर की उपधातु हैं २ कान के मल को मांस की उपधातु जानिये ३ जीभ और दांत के मल को उपधातु जानिये ४ बीसों नखों को हाड़ों की उपधातु जानिये ५ नेत्र में कीचड़ आवे उसे उपधातु जानिये ६ मुख ऊपर चिकना पन और कालापन हो यह शुक्र की उपधातु है ७ और स्त्री के २ धातु और हैं एक तो स्तनों में दूध १ और एक स्त्रीधर्म २

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

ये दोनों समय में होते हैं और समय में ही जाते रहते हैं। और अन्य भी सातों धातु से पैदा होते हैं जैसे—शुद्ध मांस से पैदा हुए घृत को बसा कहिये ३ पसीना ४ दांत ५ केश ६ ओज ७ ये सब शरीर में रहते हैं सो चिकने और शीतल हैं शरीर में बल और पुष्टता के करनेवाले हैं॥

अथ सातों त्वचा॥

ऊपर की त्वचा अवभासिनी नाम चिकनी है और विभूति का स्थान है १ दूसरी लाल है जिसमें तिल पैदा होता है २ तीसरी त्वचा सफ़ेद है उसमें चर्मदल नाम रोग पैदा होताहै ३ चौथी त्वचा तांबे के रंग समान है उसमें सफ़ेद कोढ़ पैदा होता है ४ पांचवीं त्वचा वेदिनी नाम है उसमें सब कोढ़ पैदा होते हैं ५ छठी त्वचा रोहिणी है उसमें गूमड़ी गण्डमालादिक पैदा होती हैं ६ सातवीं त्वचा स्थूल नाम है उसमें विद्रधि रहती है ७ ये सातों त्वचा दो यव के प्रमाण मोटी हैं॥

अथ तीनों दोषों का स्वरूप॥

वायु १ पित २ कफ ३ इन्हें दोष और मल कहते हैं। एक एक पांच प्रकार के हैं और पृथक् पृथक् स्थान में रहते हैं। इन तीनों में वायु बलवान् है। वह वायु शरीर में सब वस्तुओं का विभागकर सब शरीर में नसों के द्वारा पहुँचावे है। पित्त और कफ पगुले हैं। वायुही इस शरीर में बलवान् होकर सब रसादिकों को सब देह में पहुँचावे है। वायु रजोगुणमय सूक्ष्म, शीतल, रूखा और हलका है और मल के आशय में १ कोष्ठ में २ अग्नि के स्थान में ३ हृदय में ४ कण्ठ में ५ इन स्थानों में रहता है ये तो मुख्य स्थान हैं परन्तु सब शरीर में है। गुदा में अपान १ नाभि में समान २ हृदयमें प्राण ३ कण्ठ में उदान ४ और सब शरीर में उसका व्यान नामहै ५ इति वायुका स्वरूप॥

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथ पित्त का स्वरूप ॥

पित्त गर्म, पतला, सत्त्वगुणमय और कड़ुवा है और दग्ध हुआ खट्टा होता है यह पांच स्थानों में रहता है। अग्न्याशय में तिल प्रमाण अग्निस्वरूप होकर रहता है १ त्वचा में कान्तिका करनेवाला है २ नेत्रों में रहकर सबको देखनेवाला है ३ यकृत् में रहकर सब वस्तु को पचाय खाये हुए रस को रुधिर कर देता है ४ और हृदय में रहकर बुद्ध्यादिक को करता है ५ इस पित्त के पाचक १ भ्राजक २ रञ्जक ३ आलोचक ४ साधक ५ ये नाम हैं ॥

अथ कफ का स्वरूप ॥

कफ चिकना, पिच्छिल और तमोगुणमय है यह दग्ध हुआ खारी होता है। आमाशय १ मस्तक २ कण्ठ ३ हृदय ४ सन्धि ५ ये इसके मुख्य स्थान हैं इनही में रहता है। देह में रहता हुआ देह की स्थिरताको और सब अङ्गोंको कोमल करताहै। क्लेदक १ स्नेहन २ रसन ३ अवलम्बक ४ बोधक ५ ये इसके नाम हैं ॥

अथ स्नायु (नसों) का स्वरूप ॥

शरीर में मांस, हाड़ और मेद इनके बांधने के लिये स्नायु (नसें) कही हैं ॥

अथ हाड़ों का स्वरूप ॥

ये देह के आधार हैं। इनके विना देह खड़ा नहीं रह सक्ता क्योंकि सार यही हैं ॥

अथ मर्मस्थानका स्वरूप ॥

जीव को धारनेवाला मर्मस्थानही है ॥

अथ नसों का स्वरूप ॥

सब सन्धियां इनसे बँधी हैं और वायु, पित्त, कफ और ७ धातुओं को भी यही नसें धारण करती हैं ॥

अथ धमनी नाड़ी का स्वरूप ॥

धमनी नाड़ी रस और पवन को धारती है ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS

अथ मांसकी पिण्डी का स्वरूप ॥

मांस की पिण्डी शरीर में बल करती हुई शरीर को धारतीहै॥

अथ कण्डरा का स्वरूप ॥

सबसे बड़ी नसों को कण्डरा कहते हैं वे १६ हैं देह के सब अङ्गों को प्रसारण और संकोचन करती हैं ॥

अथ रसरन्धों का स्वरूप ॥

नाक में दो, नेत्रों के दो और कानों के दो छिद्र हैं। लिंग, गुदा और मुख के एक एक छिद्र हैं। दशवां मस्तक में है ये पुरुषों के रन्ध्र हैं और स्त्रियों के ३ अधिक हैं दो स्तनों में तथा एक गर्भाशय में है। इस शरीर के रोम रोम में छोटे छोटे अनन्त छिद्र हैं। नाभि के पास बाईं ओर फुप्फुस २ हैं। उदान वायु के आधार को फुप्फुस २ कहते हैं और प्लीह नाम क्रियाहै तथा नाभि के पास दाहिनी ओर यकृत् है और रुधिर के बहनेवाली नसों का मूल भी प्लीह (फिया) है और रञ्जक नाम पित्त के स्थान में जो रक्त का स्थान है उसको यकृत् कहते हैं। नाभि के बायें भाग में आमाशय के ऊपर जो तिल है वह जल के बहने वाली नसों का मूल है वही तिल उसको ढांक देता है। और कुक्षि में जो दो गोले हैं उन्हें वृक्क कहिये वे दोनों जठरके मेद को पुष्ट करते हैं। वृषण (फ़ोते) वीर्य को ले चलनेवाली नसों के आधार हैं और यही पुरुषार्थ को ले चलनेवाले हैं। लिङ्ग गर्भ को देनेवाला, वीर्य, मूत्र और ओज का घर है तथा हृदय, मन, चित्त, बुद्धि और अहंकार इनका स्थान है तथा नाभि धमनी आदि नसों का स्थान है क्योंकि सब शरीर में नाभि से ही सब नसें फैलती हैं और यहां की वायु और सब धातुओं के संयोग से नाभि की जो वायु है वह सब शरीर को पुष्ट करती है। नाभि ही की पवन हृदय के कमल में जाय उसका स्पर्शकर कण्ठ के बाहर आकर विष्णुपद का अमृत पीने को नासिका के द्वारा

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, Chennai. Digitized by eGangotri

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

जाता है पीछे वह नासिका की पवन आकाश के अमृत को पीकर फिर मुख, नासिका आदि के द्वारा वेग से उदर में आय प्राप्त होती है तदनन्तर सम्पूर्ण देह, जीव और जठराग्नि को पुष्ट करती है। शरीर की और हृदय की प्राणपवन का जो संयोग है उसको आयुर्बल कहते हैं और किसी समय इन दोनों का संयोग दूर हो उसको मरण कहते हैं॥

इस पृथ्वी पर कोई प्राणी अमर नहीं है इससे मृत्यु अनिवार्य है। वैद्य रोग को दूर कर सक्ता है पर मृत्यु को नहीं दूर कर सक्ता है। मनुष्य के रोग साध्य हैं परन्तु पथ्यादिक नहीं करे तो उसका साध्यरोग ही याप्य होजाता है यदि फिर भी कुपथ्यही करा करे तो याप्यरोग भी असाध्य होजाता है और वह असाध्य रोग कुपथ्य के करनेवाले मनुष्य को निश्चय मार डालता है इससे चतुर मनुष्य को चाहिये कि रोगों से शरीर की रक्षा करे। कर्मविपाक के जाननेवाले को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों का साधन कहा है सो इनका कारण मनुष्य का शरीरही है। जो पुरुष इस मनुष्यशरीर को मारता है वह सबको मारता है और जो इस शरीर की रक्षा करता है वह सबकी रक्षा करता है। सातों धातु और सातों धातुओं का मल, वायु, पित्त और कफ ये सब बराबर शरीर में रहकर शरीर को पुष्ट करते हैं और ये सब घटे, बढ़े और कुपित हुए शरीर का नाश करते हैं। इति सातों कला आदि का विचार सम्पूर्ण॥

अथ सृष्टि के उपजाने का कथन॥

इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का कारण इच्छासहित सच्चिदानन्दस्वरूप ब्रह्म परमात्मा की प्रकृतिनाम माया है वह परमात्मा की माया नित्य है जैसे सूर्य की प्रतिच्छायानाम प्रकाश है। वह परमात्मा की माया है तो जड़; परन्तु चैतन्य परमात्मा के संयोग से इस अनित्य संसार को नट के ख्याल की तरह यह रचती है।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

इस संसार की माया (प्रकृति) प्रथम बुद्धि को उपजाती है। फिर उसका इच्छामयी महत्तत्वरूप है महत्तत्व से अहंकार होता है वह रजोगुण, सत्वगुण और तमोगुण इन भेदों से तीन प्रकार का होता है पीछे सत्वगुण, रजोगुण से मिल दश इन्द्रियों को पैदा करता है और मन भी इन दोनों ही से पैदा होता है॥

अथ दश इन्द्रियों का स्वरूप॥

कान १ त्वचा २ नेत्र ३ जिह्वा ४ नासिका ५ ये पांच ज्ञानेन्द्रिय हैं और वाक् १ हाथ २ पग ३ लिङ्ग ४ गुदा ५ ये पांच कर्मेन्द्रिय हैं। तमोगुण सत्वगुण से मिल अहंकार से पञ्चतन्मात्रा को उत्पन्न करता है॥

अथ पञ्चतन्मात्रा का स्वरूप॥

शब्द १ स्पर्श २ रूप ३ रस ४ गन्ध ५ इनको तन्मात्रा कहते हैं पीछे पञ्चतन्मात्रा से पांच महाभूत उत्पन्न होते हैं। शब्दतन्मात्रा से आकाश १ स्पर्शतन्मात्रा से वायु २ रूपतन्मात्रा से अग्नि ३ रसतन्मात्रा से जल ४ गन्धतन्मात्रा से पृथ्वी पैदा होती है ५॥

अथ ज्ञानेन्द्रियों का विषय॥

कान का विषय शब्द १ त्वचा का विषय स्पर्श २ नेत्र का विषय रूप ३ जिह्वा का विषय स्वाद ४ नासिका का विषय सुगन्ध दुर्गन्ध का ग्रहण है ५॥

अथ कर्मेन्द्रियों का विषय॥

वाणी का विषय बोलना १ हाथ का विषय ग्रहण करना २ पैरों का विषय चलना ३ लिङ्ग का विषय मैथुन करना ४ और गुदा का विषय मल का अच्छी तरह त्याग करना है ५॥

अथ प्रकृति नाम॥

महत्तत्वनाम महाअहंकार १ पञ्चतन्मात्रा ५ प्रकृति १७ इन्द्रियां १० मन १ महाभूत ५ ये १६ विकार हैं ये सब मिल-

CC-0. Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कर २४ तत्त्व होते हैं पीछे पांच तत्त्वों का यह शरीररूपी घर बनता है इस घरमें जीवात्मा शुभाशुभकर्मों के आधीन मनरूपी दूत के वशहो शरीररूपी घर में आकर बसता है तब जीवसंयुक्त इस शरीर को बुद्धिमान् देही कहते हैं। यह देही पाप, पुण्य, सुख और दुःखादिकों से व्याप्त हुआ है और जीवात्मा मन से बँधा हुआ अपने किये हुए कर्मबन्धन से बँधा है और काम १ क्रोध २ लोभ ३ मोह ४ अहंकार ५ दश इन्द्रिय १० बुद्धि १ ये सब अज्ञान हुए जीवात्मा के बन्धन के अर्थ हैं। जीवात्मा को आत्मज्ञान हो तो उसकी मुक्ति होती है और जिसमें दुःख उपजे उसे व्याधि कहते हैं। जिसमें सुख उपजे उसे आरोग्य कहते हैं॥ इति सृष्टि की उत्पत्ति॥

अथ आहार और परिपाक तथा गर्भ की उत्पत्ति और बालक के पोषणादि का लक्षण॥

जो भोजनादिक करे वह हृदय की प्राणपवन से प्रेरित हो प्रथम आमाशय में प्राप्त होता है तब वही षट्रस का आहार मधुरपने को और फेनभाव को प्राप्त होता है। वही आहार पच कर पित्त के प्रभाव से कुछ एक पका अम्लपने को प्राप्त होकर नाभि की समान नाम पवन से प्रेरित छठी ग्रहणीकला में प्राप्त होता है तदनन्तर कोष्ठ की अग्नि से ग्रहणीकला में पचकर कडुआ होजाता है। वही आहार कोष्ठ की अग्नि से पचकर रस होजाता है। वह अच्छे प्रकार पके नहीं और कच्चा रहे तो उसी आहार का आंव होता है। कोष्ठ की अग्नि बलवान् हो तो आहार का रस मधुर होकर चिकनेपने को प्राप्त होता है तथा वही रस भले प्रकार पका हुआ इस शरीर की सम्पूर्ण धातुओं को पुष्ट करता है तबही यह रस अमृत की उपमा को प्राप्त होता है। यह आहार रस मन्दाग्नि से दग्ध हो तो उदर में कडुआ रस होजाय अथवा खट्टारस होजाय अथवा यही रस विष के स्वभाव को प्राप्त हो

In Public Domain. Chambal Archives Trust

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अथवा यही रस रोगों के समूहों को उत्पन्न कर शरीर में सूजन कर देता है। आहार का रस ही इस शरीर में सार (बल) है। सारहीन होने से मल पतला होजाता है सो अच्छा नहीं। पिये हुए जल के सार को नसों के द्वारा वायु शरीर में पहुँचा देता है और इसके निस्सार को पेडू में प्राप्त कर मूत्र कर देता है वह मूत्र लिङ्ग के द्वारा बाहर निकलता है और उसी आहार का रस नाभि की समान नाम पवन से प्रेरित हो मनुष्य के हृदय में जाय प्राप्त होता है। वही रस पित्त से पचकर लाल रंग हो रुधिर होजाता है। रुधिर ही सब शरीर में रहता है और वही जीव का उत्तम आधार है। रुधिर चिकना, भारी, बलवान् और मीठा है तथा दग्ध हुआ पित्त की तरह होता है। एक एक धातु सवा चार चार दिन में पैदा होते हैं। पुरुष के महीने में भोजन किया आहार वीर्य होजाताहै और स्त्रियोंके भोजन किया आहार १ महीने में स्त्रीधर्म द्वारा रज होजाता है फिर स्त्री और पुरुष दोनों मिल मैथुन करें तब स्त्री की भग का शुद्ध रुधिर और पुरुष का शुद्ध वीर्य ये दोनों उस समय मिलकर गर्भस्थान में जाय गर्भ होजाते हैं। वह गर्भ भग के द्वारा नवें महीने में बाहर निकलता है तब उसको बालक कहते हैं। मैथुनसमय स्त्री का रज अधिक हो तो कन्या और पुरुष का वीर्य अधिक हो तो पुत्र होता है। यदि स्त्री और पुरुष इन दोनों के रज और वीर्य बराबर हों तो नपुंसक सन्तान पैदा होती है फिर परमेश्वर की जैसी इच्छा हो वही होता है॥

अथ बालक को औषध देने की मात्रा॥

१ महीने का बालक हो तो दूध, शहद, मिश्री और घृत के साथ १ रत्ती औषध देना पीछे जैसे जैसे बालक बढ़े वैसेही औषध एक वर्ष तक बढ़ाता जाय पीछे १ माशे औषध १६ वर्ष तक दीजे फिर औषधमात्रा ७० वर्षतक इतनीही रखिये। फिर बालक की

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

तरह औषध की मात्रा घटा दीज़िये यह तो विधि कल्क चूर्णादिक की है और काढ़ा की तौल इससे चौगुनी जान लीजिये। बालक को काजल, उबटना, स्नान कराया कीजे और महीने के महीने बालक को वमन कराय दीजे तथा हड़ घिस उसकी घूटी नित्य दे और अन्न का ग्रास पांचवें वर्ष दीजे। जुलाब १६ वर्ष के उपरान्त और मैथुन २० वर्ष उपरान्त कराइये। इस विधि से मनुष्य चले तो उसके कभी रोग नहीं होगा और वृद्धावस्था नहीं व्यापेगी। ३० वर्षतक शरीर का मोटापना रहता है, ४० वर्षपर्यन्त मनुष्य के बुद्धि का आगम रहता है, ५० वर्षपर्यन्त त्वचा का गाढ़ापना रहता है, ६० वर्षपर्यन्त नेत्र की ज्योति अच्छी तरह प्रकाशित रहती है, ७० वर्षपर्यन्त मनुष्य के शरीर में वीर्य का अधिकपना रहता है, ८० वर्षपर्यन्त मनुष्य के शरीर में पराक्रम अधिक रहता है, ९० वर्षपर्यन्त अच्छी तरह ज्ञान और १०० वर्षपर्यन्त बोलने और हाथ पगों में बल, मल-मूत्र के त्याग की संज्ञा रहती है। ११० वर्षपर्यन्त स्मरणमात्र का स्थान रहता है और १२० वर्षपर्यन्त प्राणमात्र शरीर में रहते हैं। मनुष्य का शरीर नीरोग रहे तो आयुर्बल का प्रमाण १२० वर्ष का है—इति आहार परिपाक, गर्भ की उत्पत्ति और बालक के पोषणादिक सम्पूर्ण ॥

अथ वायु की प्रकृति का लक्षण ॥

छोटे केश, शरीर कृश और रूखा, वाचाल मन और आकाश में रहनेवाले स्वप्न हों तो वायु-प्रकृति जानिये १ ॥

अथ पित्त की प्रकृति का लक्षण ॥

युवा अवस्था में सफ़ेद बाल आवें, बुद्धिमान् हो, पसीना बहुत आवे, क्रोधी हो और स्वप्न में तेज देखे ये लक्षण हों—तो पित्त की प्रकृति जानिये २ ॥

CC-0. In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ कफ की प्रकृति का लक्षण ॥

जिसकी बुद्धि गम्भीर हो, अङ्ग स्थूल हो, चिकने केश हों, बलवान् हो और स्वप्न में जलाशय देखे ये लक्षण जिसमें हों उसे कफ की प्रकृति कहिये ३ ॥

अथ मेद का लक्षण ॥

कफ और तमोगुण अधिक हो तो मूर्छा हो १ वायु, पित्त और रजोगुण अधिक हो तो घुमेर और भ्रान्ति हो २ कफ और तमोगुण अधिक हो तो भौंर आवे भ्रान्ति हो ३ कफवायु और तमोगुण अधिक हो तो तन्द्रा हो ४ बल जाता रहे तो ग्लानि हो तथा दुःख, अजीर्ण और खेद से भी ग्लानि होती है ५ बल थके और उत्साह न हो उसके आलस्य जानना ६ इत्यादि बुद्धिमान् पुरुष और भी जान लें—इति शरीर का संक्षेप निरूपण सम्पूर्ण ७॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजराजेन्द्रश्रीसवाईप्रतापसिंहजीविरचिते अमृतसागरे एकत्रिंशत्तमस्तरंगः ॥ ३१ ॥

इति अमृतसागर (संशोधित संस्करण) सम्पूर्ण ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

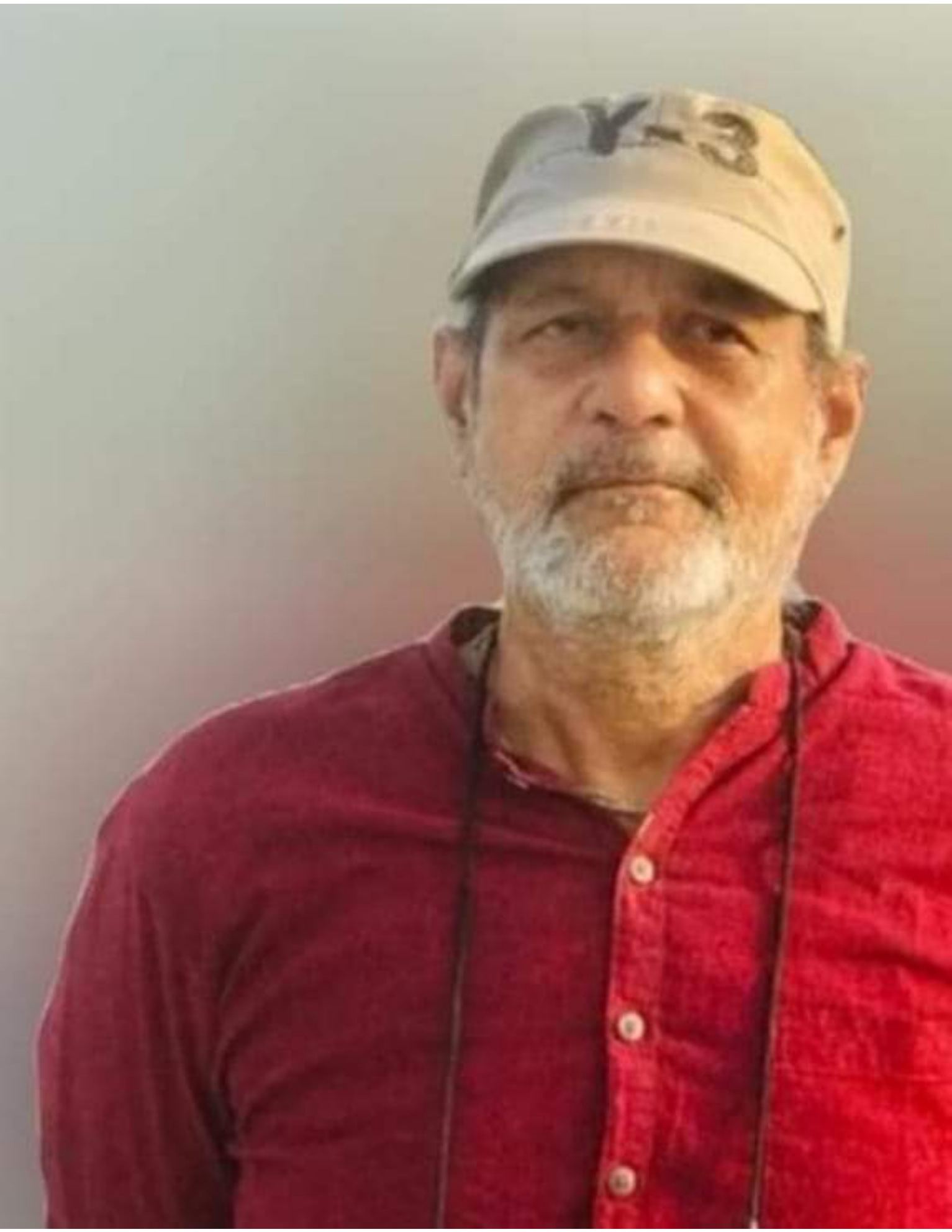

This PDF you are browsing is in a series of several scanned documents from the Chambal Archives Collection in Etawah, UP

The Archive was collected over a lifetime through the efforts of Shri Krishna Porwal ji (b. 27 July 1951) s/o Shri Jamuna Prasad, Hindi Poet. Archivist and Knowledge Aficianado

The Archives contains around 80,000 books including old newspapers and pre-Independence Journals predominantly in Hindi and Urdu.

Several Books are from the 17th Century. Atleast two manuscripts are also in the Archives - 1786 Copy of Rama Charit Manas and another Bengali Manuscript.Also included are antique painitings, antique maps, coins, and stamps from all over the World.

Chambal Archives also has old cameras, typewriters, TVs, VCR/VCPs, Video Cassettes, Lanterns and several other Cultural and Technological Paraphernelia

Collectors and Art/Literature Lovers can contact him if they wish through his facebook page

Scanning and uploading by eGangotri Digital Preservation Trust and Sarayu Trust Foundation.